यू जी सी अनुमोदित पत्रिका
ISSN 0523-1418

वार्षिकी 2022

वार्षिकी 2022

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार



वार्षिकी – 2022
भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी 'देशगव्हाणकर'

परामर्श मंडल
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित
सुश्री ममता कालिया
प्रो. सत्यकाम
प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय
प्रो. पूरनचंद टंडन
प्रो. शैलेंद्र शर्मा
डॉ. एम. गोविंदराजन
डॉ. जे.एल.रेड्डी
श्री रविशंकर 'रवि'

संपादक
डॉ. अनिता डगोरे

सह–संपादक
डॉ. किरण झा
मीनाक्षी जंगपांगी

सहायक संपादक
श्री प्रदीप कुमार ठाकुर

कार्यालयीन व्यवस्था
विक्रान्त हुड्डा
संजीव कुमार

ISSN 0523-1418
वार्षिकी : 2022

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.chdpublication.education.gov.in
www.chd.education.gov.in
ई–मेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011-26105211/12

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक,
प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस,
दिल्ली - 110054
वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : acop-dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/ 9689

बिक्री केंद्र :
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.chdpublication.education.gov.in
www.chd.education.gov.in
ई–मेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011–26105211 / 12

शुल्क सीधे www.bharatkosh.gov.in → Quick Payment → Ministry (007 Higher Education) → Purpose (Education receipt) में digital mode से जमा करवाई जा सकती है।

	मूल्य	
देश में Inland	₹ 250	(डाक खर्च सहित)
विदेश Foreign	$ 3.02	
	€ 2.39	

वार्षिकी : 2022

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय
आलेख

1. असमिया साहित्य	कविता कर्मकार	9
2. उर्दू साहित्य	ज़ुबेदा एच. मुल्लाँ	16
3. ओडिया साहित्य	अरुण होता	28
4. कन्नड़ साहित्य	टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	41
5. कश्मीरी साहित्य	महाराजकृष्ण भरत	56
6. कोंकणी साहित्य	चंद्रलेखा डिसौज़ा	63
7. गुजराती साहित्य	हरीश मंगलम डी. एम. भद्रेसरिया	81
8. डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	89
9. तमिल साहित्य	पी राजरत्नम	109
10. तेलुगु साहित्य	जी. मोहन राव ए. के. अर्चना	120
11. नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	131
12. पंजाबी साहित्य	फूलचंद मानव	143
13. बांग्ला साहित्य	सुब्रत लाहिड़ी	160
14. बोडो साहित्य	स्वर्णप्रभा चैनारी	175
15. मणिपुरी साहित्य	ह. सुवदनी देवी	192
16. मराठी साहित्य	सुवर्णा अशोक जाधव	201
17. मलयालम साहित्य	बी. अशोक	211
18. मैथिली साहित्य	वैद्यनाथ झा	222
19. सिंधी साहित्य	रवि प्रकाश टेकचंदानी	235
20. हिंदी आलोचना	कुमार वीरेंद्र	244
21. हिंदी उपन्यास	तरसेम गुजराल	256

22. हिंदी कविता	कृष्ण कुमार 'कनक'	275
23. हिंदी कहानी	अवध किशोर प्रसाद	305
24. हिंदी गज़ल साहित्य	रोहिताश्व कुमार अस्थाना	331
25. हिंदी गद्य की विविध विधाएँ	शंभु गुप्त	342
26. हिंदी पत्रकारिता और नई प्रौद्योगिकी	राम प्रवेश राय	350
27. हिंदी पत्र पत्रिकाएँ	राकेश कुमार सिंह	362
28. हिंदी बाल साहित्य	सुरेंद्र विक्रम	398
29. हिंदी भाषाविज्ञान	त्रिभुवननाथ शुक्ल	423

संपर्क सूत्र **430**

निदेशक की कलम से



भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सर्वप्रथम 14 भारतीय भाषाओं को समाहित किया गया। सिंधी भाषा को 1967 में संविधान संशोधन के उपरांत आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया। वर्ष 1992 में संविधान संशोधन कर कोंकणी, नेपाली और मणिपुरी को समाहित कर अष्टम अनुसूची में कुल 18 भाषाएँ हुई। वर्तमान में 22 भारतीय भाषाएँ संविधान स्वीकृत भाषाएँ हैं। वर्ष 2003 में सम्मिलित डोगरी, बोडो, मैथिली और संताली भाषा सहित सभी 22 भारतीय भाषाएँ परस्पर भारतीय सांस्कृतिक विरासत और धरोहर को सहेजते हुए वैविध्यपूर्ण भाषाई साहित्य संसार को समृद्ध करती हैं।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की महत्वपूर्ण प्रकाशन योजना के अंतर्गत 'भाषा', 'वार्षिकी', एवं 'साहित्यमाला' का प्रकाशन किया जाता है। वार्षिकी पत्रिका का कलेवर भारतीयता की छवि को समृद्ध करता है। समस्त 22 भारतीय भाषाओं में वर्षभर में विभिन्न विधाओं में सृजित रचनाओं की सर्वेक्षणपरक जानकारी एक ही स्थान पर प्राप्त होती है। इस पुस्तक में उपलब्ध सर्वेक्षणात्मक ज्ञानपरक साहित्य अन्यत्र कहीं और उपलब्ध नहीं होता। तेजी से बदलते समय और परिस्थितियों में प्रकाशन का स्वरूप भी प्रभावित होता है। आज डिजिटल रूप में पठनीय सामग्री पाठकों तक सहज सुलभ हो रही है। प्रौद्योगिकी के इस बदले परिवेश में ज्ञान संपदा को समेकित रूप में सहेज कर रखा जा रहा है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वार्षिकी पत्रिका में देश भर से विभिन्न भाषाविदों और भारतीय भाषा के विद्वानों द्वारा संबंधित भाषाओं में विभिन्न विधाओं में किए गए सृजनात्मक कार्यों का सर्वेक्षणपरक लेखा–जोखा प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार इस पत्रिका में संविधान स्वीकृत सभी भारतीय भाषा साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। चूँकि यह पत्रिका संपूर्णतः देवनागरी लिपि में प्रकाशित होती है अतः विविध भाषाभाषी जिज्ञासु साहित्यप्रेमी को पत्रिका में एक ही स्थान पर सम्मिलित सभी भाषा साहित्य की सुरूचिपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। विभिन्न भाषा साहित्य के साथ ही साथ हिंदी की विभिन्न विधाओं यथा आलोचना, कहानी, उपन्यास, गज़ल, कविता, कथेतर साहित्य, पत्र–पत्रिकाएँ, पत्रकारिता, भाषा विज्ञान, बाल साहित्य आदि संबंधी वर्ष भर के साहित्य सृजन की समीचीन जानकारी भी यहाँ प्राप्त होती है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा वर्ष 1970 से वार्षिकी पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप में किया जा रहा है। शोधपरक और सर्वेक्षणपरक जानकारी सहित यह पत्रिका शोधार्थियों और शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करती है। विभिन्न उपयोगी और साहित्यिक सामग्रियों सहित वर्ष 2022 की वार्षिकी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। आशा है यह पत्रिका ज्ञान पिपासुओं, विद्वानों एवं पाठकों के लिए उपयुक्त और उपयोगी सिद्ध होगी।

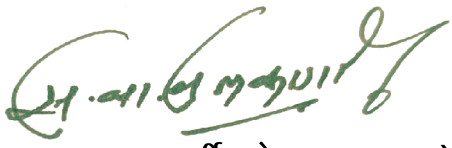

(प्रो.सुनील बाबुराव कुलकर्णी 'देशगव्हाणकर')

संपादकीय

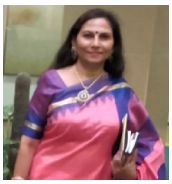

भारत वर्ष के संविधान की आठवीं अधिसूची में उल्लिखित भाषाओं में प्रतिवर्ष प्रकाशित हो रहे साहित्य का सर्वेक्षण 'वार्षिकी' के रूप में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा वर्ष 1970 से नियमित रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। वार्षिकी 2022 में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्य का सर्वेक्षण आलेख प्रस्तुत किया गया है जिसमें असमिया, ऊर्दू, ओडिया, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बांग्ला, बोडो, मराठी, मलयालम, मैथिली, हिंदी कहानी, हिंदी कविता, हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ, हिंदी आलोचना, हिंदी गज़ल, हिंदी गद्य की विविध विधाएं, हिंदी बाल साहित्य प्रौद्योगिकी व भाषाविज्ञान इत्यादि विषयों पर सर्वेक्षण आलेख प्रस्तुत किए गए हैं। जो प्रशंसनीय हैं। इन आलेखों के पठन–पाठन से भारतीय भाषाओं में हो रही प्रगति व समृद्धि का भी बोध होता है।

मौलिक लेखन के साथ–साथ कहानी, उपन्यास व कविता का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में किया जाना अपने आप में एक विशिष्ट व महत्वपूर्ण कार्य है जो पाठक को भाषा के माध्यम से उनकी संस्कृति सभ्यता आदि की जानकारी से अवगत करवाता है। जिसके अंतर्गत आशा पूर्णा देवी का बांग्ला उपन्यास 'मोनेर झाँपी' का मैथिली भाषा में अनुवाद कमला चौधरी ने 'मोनक पौती' नाम से किया है, जो प्रसंशनीय है।

'वार्षिकी' पत्रिका हिंदीतर भाषी लेखकों व रचनाकारों के लिए एक अच्छा साहित्यिक आधारीय मंच है जहाँ वे अपनी मातृभाषा में होने वाले साहित्यिक रचना व उनसे जुड़े अनुवादों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। इसी क्रम में मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि हिंदीतर भाषी जिन लेखकों व रचनाकारों को वर्ष 2022 में उनकी लेखनी के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है– असमिया साहित्य में जिंतुगीतार्थ को उनकी कहानी संग्रह 'मन मरा तोरा' के लिए वर्ष 2022 का साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कन्नड़ साहित्य के उपन्यासकार एस.एल. भैरप्पा जी को 'पद्मभूषण' से, श्री तम्मण्ण बीगार जी को उनकी रचना 'बावली गुडे' (बावली गुडा) उपन्यास के लिए वर्ष 2022 का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार। वेषिश वैदेही को वर्ष 2022 का नृपतुंग प्रशस्ति सात लाख नकद पुरस्कार। मराठी साहित्य में संगीता बर्वे के उपन्यास 'पिहुची वही' के लिए इस वर्ष बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा की गई। कोल्हापुर में शिवाजी विश्वविद्यालय के अधीक्षक लघु कथाकार डॉ. किरण गुरव को उनकी कहानी की पुस्तक 'बाळच्चा अवस्थंताराची' एवं डायरी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार घोषित हुआ है। मराठी के युवा लेखक प्रवण सखदेव और संजय वाघ को युवा साहित्य पुरस्कार और बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मराठी युवा लेखक उपन्यासकार प्रवीण दशरथ वांदेवर जी को 'उसव्या सोंडेच्या बाहुल्या' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन सभी विद्वानों को 'भाषा' पत्रिका की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अनिता

(डॉ. अनिता डगोरे)

किताबें

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक–एक पल की।
खुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
सुनोगे नहीं क्या
किताबों की बातें?
किताबें, कुछ तो कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़िया दीखे चहचहाती,
कि इनमें मिलें खेतियाँ लहलहाती।
किताबों में झरने मिलें गुनगुनाते,
बड़े खूब परियों के किस्से सुनाते।
किताबों में साईसं की आवाज़ है,
किताबों में रॉकेट का राज़ है।
हर इक इल्म की इनमें भरमार है,
किताबों का अपना ही संसार है।
क्या तुम इसमें जाना नहीं चाहोगे?
जो इनमें है, पाना नहीं चाहोगे?
किताबें कुछ तो कहना चाहती हैं?
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं!

सफ़दर हाशमी

1

असमिया साहित्य



कविता कर्मकार

कविता कर्मकार कवि, कहानीकार और अनुवादक। असमिया, हिंदी और अंग्रेजी में भी समानांतर लेखन। असमिया और बांग्ला में दो कविता संग्रह प्रकाशित। बंशी गोगोई मेमोरियल अवॉर्ड, अंतरराष्ट्रीय तथा गत–सृजन सम्मान तथा जनकवि मुकुट बिहारी सरोज सम्मान से सम्मानित। संप्रति– साहित्य और अनुवाद के क्षेत्र में स्वतंत्र लेखन।

असमिया साहित्य का इतिहास बहुत ही समृद्ध है। समकालीन सभी भारतीय भाषाओं में जितना समृद्ध साहित्य रचा जा रहा है उसी तरह असमिया साहित्य में विभिन्न विधाओं में उच्च स्तरीय रचनात्मक क्रम चल रहा है। भाषिक क्षेत्र में सामाजिक आचरण में भाषा ने जो रूप स्थापित किया है वही है साहित्य। असम में लेखक असमिया साहित्य के माध्यम से असमिया जाति की ज्ञान, उपलब्धि और सामाजिक मूल्यबोध को प्रतिफलित करने में सफल हो रहे हैं। असमिया सभ्यता–संस्कृति की विशेषताएँ जानने के लिए असमिया साहित्य का अध्ययन करना अनिवार्य है। प्रागैतिहासिक काल से प्राचीन कामरूप अथवा प्राग्ज्योतिषपुर नाम के भूखंड में असमिया भाषा का विकास हुआ। सन् 1826 में अंग्रेज़ों के द्वारा उत्तर पूर्व भारत अथवा असम को अधीन करने के बाद कुछ राजनीतिक षडयंत्र से असम में बंगला भाषा को सरकारी भाषा के रूप में स्वीकृति देकर असमिया भाषा की गरिमा को कम करने की भरपूर कोशिश की गई थी लेकिन एक सबल संग्रामी आंदोलन के जरिए असमिया भाषा की स्वकीयता को फिर स्थापित किया गया। असमिया भाषा की गरिमा को अक्षुण्ण रखा गया। असमिया भाषा ने कई स्तर के अतिक्रमण करके आज का यह पूर्ण विकसित रूप ग्रहण किया है। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक विविधता के उपरांत शक्तिशाली रूप से अपनी अस्मिता को कायम रखा है। असमिया साहित्य में हर साहित्यिक विधा में राजनीतिक पृष्ठभूमि, अर्थ–व्यवस्था की पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से लेकर रूपांतर तक सभी विषयों को प्रतिफलित किया गया है।

असमिया साहित्य के गौरवपूर्ण इतिहास की कड़ी को आगे बढ़ाने के क्रम में पिछले दो–तीन वर्षो में कई नई कड़ियाँ जुड़ी हैं। हर विधा में कई नई किताबें

प्रकाशित हुई हैं। विषय और प्रसंग को नज़र में रखते हुए पिछले चार–पाँच सालों में प्रकाशित कुछ किताबों का उल्लेख करना चाहेंगे यथासंभव संक्षिप्त परिचय के साथ। लेकिन इस सूची को संपूर्ण न माना जाए क्यूँकि हजारों से अधिक किताबें प्रकाशित हुई हैं हर विधा में, लेकिन हर किताब को इस संक्षिप्त आलेख में समेटना असंभव है।

शुरुआत करना चाहेंगे इस साल यानी 2022 के साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त लेखक मनोज कुमार गोस्वामी की 'भूल–सत्य' नामक किताब से। मनोज कुमार गोस्वामी ने पिछले कई दशकों से असमिया साहित्य को अपने कहानियों से समृद्ध किया है। उनकी कहानियाँ पाठकों को आकर्षित करने में सक्षम हैं। कहानीकार और एक उपन्यासकार होने के साथ–साथ मनोज कुमार गोस्वामी एक सफल पत्रकार भी हैं जो लंबे समय से पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं। मनोज कुमार गोस्वामी की कहानियों में उत्तर आधुनिकतावाद, पूँजीवाद के निर्मित असुरक्षित अर्थव्यवस्था और असीम भोगवादी लालसा से जो प्रबल असुरक्षित मानसिकता समाज को दीमक की तरह खोखली कर रही है उस विषय को बहुत ही प्रभावशाली रूप से वर्णित किया है। मनोज कुमार गोस्वामी अनिश्चित समाज की छवि उकेरने में सफल रहे हैं। उनकी कहानियों में समृद्ध सोच–विचार के साथ–साथ यथार्थ को उकेरा गया हैं। सुरुचिपूर्ण रूप से मानव संवेदनाओं को विभिन्न घटनाक्रमों के जरिए पाठक समाज के समक्ष रखा है। उनकी जीवंत भाषा शैली वैश्विक दृष्टिकोण को भी सार्थक रूप से परिभाषित करती दिखाई देती है।

असमिया भाषा के विशिष्ट साहित्यकार राजीव बोरा का हाल ही में प्रकाशित उपन्यास 'जलजाह' असमिया भाषा की एक अनोखी कड़ी है। उपन्यास में वर्णित घटनाक्रम वास्तविक हैं। बस कुछ–कुछ जगहों पर लेशमात्र कल्पना है वह भी रचनाधर्मिता को साकार रूप देने के लिए। इस उपन्यास के चरित्र भी वास्तविक समय और समाज से लिए गए हैं। उपन्यास के जरिए बाढ़ का प्रकोप झेलते–झेलते जर्जर होती नदी द्वीप माजुली की अगणित शोकगाथाओं का सत्य लिपिबद्ध किया गया है। अनेकानेक विपर्यय और संघर्ष–संग्राम को वर्णित किया गया है। बाढ़ग्रस्त अंचल माजुली में जन्मे लेखक ने बचपन से ही चेतन–अवचेतन रूप से अपनी जन्मभूमि को लेकर संचित की गई उपलब्धियों को इस उपन्यास के मूलाधार के रूप में रखा है। बाढ़ की समस्या प्रांतीय जनसमूहों के लिए त्रासदी है, एक हाहाकार है। उपन्यास में एक ऐसे संघर्ष के बारे में लिखा है जहाँ प्रकृति के विरुद्ध मानव जाति का निरंतर संग्राम है, जहाँ शेष परिणति मनुष्य की अनिवार्य पराजय है। महाबाहु ब्रह्मपुत्र में किस तरह पूरे के पूरे गाँव किस तरह जल समाधि में समाधिस्थ होते हैं, जन–धन के साथ–साथ संजोए हुए सपनों की मृत्यु परिलक्षित होती है लेकिन फिर भी जीवन का संघर्ष अनवरत चलता रहता है। एक प्रकार से ये कालचक्र की गाथा है, समय का दस्तावेज है। उपन्यास पढ़ते हुए एक कहानी के भीतर एक दूसरी कहानी को साँस

लेते हुए हम महसूस कर पाते हैं। नदी जिस प्रकार जीवन का संचार करती है उसी प्रकार क्षण भर में सबकुछ छीन लेती है, यह उपन्यास इसकी जीवंत दलील है। क्रूर वास्तविकता के साथ–साथ प्रांतीय निम्नवर्गीय मनुष्य की चेतना व विचार इस उपन्यास में प्रतिफलित हुआ है सफल रूप से। उपन्यास को पढ़ते हुए एक दरिद्र किसान के जीवन में घटित घटनाक्रम हमें चिंतित–विचलित करता है। बाढ़ग्रस्त जनजातीय समुदाय के संघर्ष के जर्जर परिप्रेक्ष्य में कहानी उच्च वर्णवादी विचार, जातिवाद, छुआछूत आदि भी पाठक समाज के लिए यथार्थ रूप में सामने लाने की कोशिश की गई है। नदी द्वीप माजुली को समग्रता से दर्शाता असमिया साहित्य का यह पहला उपन्यास है जिसके लिए लेखक को माखन हजारिका स्मारक पुरस्कार से नवाजा गया है।

2022 का साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार दिया गया है जितुं गीतार्थ को, उनकी कहानी संग्रह 'मन मरा तोरा' के लिए। असमिया साहित्य में ये भी एक अभिनव संयोजन है। इस कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ कूईयर समूह के संघर्ष और उनके प्रति समाज में घृणा और अवहेलना के बारे में है। इन कहानियों में कहानीकार ने मानवीय मनःस्ततः, नगरीय जीवन के एकाकीपन से विध्वस्त समाज, दरिद्र और भूख से आतुर लेकिन आर्थिक स्वावलंबन के प्रति आंकाक्षा के साथ–साथ स्वप्न भंग, मृत्युचेतना को भी प्रगट किया है। लेखक ने मनुष्य के अंतर्मन और विशाल पृथ्वी के बहुस्तरीय शेड्स को अपनी कथनशैली में वर्णन करने में सफलता पाई है।

'नन् डिजिटल गल्पबुर' नवजित सेलेगं की कहानियों का पठनीय संकलन है। युवा पीढ़ी के शक्तिशाली स्वर हैं नवजित सेलेगं। जीवन के वास्तविक अनुभव से स्वकीय शैली में वे अपनी कहानियों को रंग रूप और दिशा प्रदान करते हैं। व्यक्तिगत कहानियों को सामूहिक स्वर देना और बहुत सारे पाठको के मन मस्तिष्क को छूना कहानीकार की उपलब्धि है। दक्ष कहानीकार ने सरल रूप से समाज के जटिलतर चरित्र को परिभाषित करते हुए दार्शनिक रूप से प्रतीक और आंगिक के जरिए साकार रूप दिया है।

'नदीर बुकूत बाटि रूआ आंगूली' रत्ना भराली तालुकदार का एक विशेष कहानी संग्रह है जो हाल ही में प्रकाशित होकर पाठको के बीच पहुँचा है। इन कहानियों में कुछ जीवित स्त्री चरित्र हैं जो उनके जीवंत घटनाक्रम के लिखित रूप हैं। बलात्कार से पीड़ित स्त्रियों की कहानी, बाल विवाह की बलि होती नाबालिग लड़की की कहानी और जनजातीय समुदाय की डायन जैसी कुप्रथा की बलि बनी कम आयु की एक लड़की की कहानी है बल्कि ज्वलंत गाथा है। रत्ना भराली तालुकदार एक राष्ट्रीय स्तर की पत्रकार होने के साथ–साथ कहानीकार, बाल कथाकार, उपन्यासकार के साथ एक अनुवादक भी हैं। लेखिका ने अपनी सामाजिक दायित्व का निष्ठा से पालन करते हुए सामाजिक व सांस्कृतिक विविध परिप्रेक्ष्य को साहित्य में उकेरा है। प्रांतीय

अंचल की जीवनचर्या, आर्थिक सामाजिक व्यवस्था को संवेदनशीलता से वर्णित किया है। लोककथाओं से लेकर सांप्रतिक नीतिहीन, अतीत वर्तमान की संकटपूर्ण स्थिति, एन.आर.सी के दौरान असम के मुसलमान जनसमूह की विषम परिस्थिति, चाय बागान के आदिवासी समुदाय की चाय पत्तियाँ तोड़ती महिलाओं के अवर्णनीय संघर्ष को शब्दों से उकेरा है। उनकी कहानियाँ पाठकों को इसलिए भी ज्यादा आकर्षित करती हैं क्योंकि लेखिका की विशेषता है कि वे ज़मीनी स्तर पर पीड़ितों से मिलकर उनकी पीड़ा को सामने लाती हैं।

असमिया समकालीन युवा पीढ़ी की एक अन्य प्रतिभावान लेखिका हैं जुरि बरूआ। उनका कहानी संग्रह 'प्रांक्तन'। जुरि बरूआ की रचनात्मक बुद्धिमत्ता सीमित लेकिन तीक्ष्ण आवेगिक प्रकाशभंगी आकर्षक है। उनकी कहानियों की विषय–वस्तु भिन्न है, किस्सागोई विशेष है। सामाजिक, राजनीतिक चेतना उनकी कहानियों का मूल विषय होता है वे रिश्तों की गहराई और संवेदनाओं को सूक्ष्म रूप से बयां करती हैं।

प्रतिभाशाली कथाकार अर्चना बरठाकुर का पहला कहानी संग्रह 'होठाट् भालपुआई कोले' 2022 में पाठको के पास पहुँची है और पाठकों कहानियो द्वारा सराहा भी गया है। संग्रह की कहानियों में जीवन है, समय का परिवर्तित रूप भी है। कहानियों के चरित्र और उन चरित्रों की यातना, प्रेम, अभिमान, द्वंद्व, सत्य अथवा भ्रम की गाथा हमारे ही आस–पास से ली गई है। ये हमारे समाज के परिचित चेहरे हैं। कहानियाँ कुछ ऐसी हैं जैसे कुछ आपकी कुछ हमारी। जीवन में जिस समय हम खुद को गढ़ते हैं उस गढ़ने के क्रम में हम टूटते हैं, बिखरते हैं फिर से उठकर चलते हैं, भ्रमित भी होते हैं और खुद से रुबरू होते हैं। ये कहानियाँ कुछ अपनी सी लगती हैं।

'केंसरर कैलेंडरत तुमि' प्रभात गोस्वामी द्वारा लिखित इस उपन्यास में प्रतिष्ठित लेखक ने कैंसर रोग के दौरान विषम और जटिल विपरीत परिस्थिति से किस प्रकार साहस के साथ लड़ा जा सकता है उसके विषय में चरित्र और घटनाक्रम के जरिए विस्तारित रूप से वर्णन किया हैं।

वरिष्ठ और प्रतिष्ठित उपन्यासकार गीताली बरूआ का उपन्यास 'हायेना' इसी साल प्रकाशित हुआ है। उपन्यास का नाम 'हायेना' यानि लकड़बग्घा का एक बिंब के रूप में प्रयोग किया है। 20वीं सदी के नौवें दशक से हमारे सामाजिक जीवन में चलते आ रहे नैतिक मूल्यबोध का अपक्षय और सामाजिक दर्शन को दरकिनार कर भोग और क्षमता की लालसा सर्वस्व से एक श्रेणी का उत्थान हुआ है जिस कारण आर्थिक–सामाजिक दिशा में जो भी परिवर्तन आए हैं, अन्याय और गैर बराबरी पर केंद्रित पूँजीवादी व्यवस्था किस तरह हमारे देश और समाज के सांस्कृतिक परिपार्श्विक स्थिति को तबाह कर रही है इस विषय पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है। उपन्यास की कहानी में बीते समय में किस तरह क्रूरतापूर्ण इतिहास गढ़ा गया है इसको केंद्र में

रखकर कहानी को आगे बढ़ाया है। सामाजिक इतिहास की बहुत सारी बातें और विषय इतिहास के पन्नों में लिपिबद्ध नहीं होते हैं ऐसे में साहित्य और उपन्यास तथा समाज और इतिहास एक विकल्प धारा के रूप में सामने आते हैं। ये केवल घटनाक्रम नहीं हैं, उस घटनाक्रम के समय और सामाजिक, राजनीतिक परिदृश्य का प्रतिफलन हैं। लेखिका द्वारा असम के उग्रवादी संगठन के कार्यकलाप से लेकर सरकारी स्तर पर हुए शोषण अनियम, दुर्नीति, धन और क्षमता को लेकर लालसा किस तरह एक जटिल समाज व्यवस्था निर्माण के कारक बने हैं, इसका सार्थक वर्णन है।

गीताली बरुआ असम की समकालीन लेखिकाओं में अन्यतम है। जीवन की उपलब्धि से चुनी हुई कुछ घटनाओं को रेखांकित किया है उनके अभी–अभी प्रकाशित 'अंतरतम' उपन्यास के जरिए। घटनाक्रम के जरिए अंधकार, प्रकाश, उदासीनता के हाहाकार को प्रगट रूप में व्यक्त किया है। इस उपन्यास में शारीरिक विकारग्रस्त एक शिशु की पीड़ा को, यातना को शब्दों के जरिए एक साकार रूप देकर पाठकों तक पहुँचाया गया है। विशेष रूप से सक्षम संतान के माता–पिता किस प्रकार नियति और यथार्थ का परिहास करके अपने विशेष रूप से सक्षम संतान का जीवन खुशहाल बनाने की एक जोरदार कोशिश ही इस कहानी को आगे बढ़ाती है। यातनाग्रस्त जीवन संघर्ष को जीते हुए व्यक्ति किस अंतरतम यातना, क्षोभ, प्रेम, जिद और प्रार्थना के जरिए उभरने की कोशिश करते हुए बार बार फिसलकर गिर पड़ने के बाद भी किस तरह पुनः उठकर चलने के हौंसले को कायम रखते हैं और ये सब करते हुए किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसी का लिखित रूप है 'अंतरतम'। इस कहानी को अत्यंत जीवंत रूप देने में लेखिका इसलिए भी सक्षम रही हैं क्योंकि ये उनके जीवन की सत्य घटना पर आधारित है।

इसी कालखंड में प्रकाशित चदंना पाठक का उपन्यास 'पाथंशाला'। कवि, कहानीकार, गीतकार चंदना पाठक द्वारा रचित इस उपन्यास में गंभीर जीवनबोध और जीवनमुखभूता को दर्शाया गया है। जीवन की सरलता के नए प्रकाश से प्रकाशमान इस उपन्यास के पन्नों में प्रेम की तीव्र अनुभूति के गंभीर बिंदु में आवाह्न करते हुए हमारे मन मस्तिष्क को झकझोरते अनेक प्रश्नों को उकेरा गया है। जो प्रश्न कहीं न कहीं हम अपने अंदर भी हर पल पालते हैं। जो अनुत्तरित रह जाते हैं। इस उपन्यास ने भी पाठकों को आकर्षित किया है जो लेखिका के लिए सफलता भी है।

नीलोत्पल बरूआ असमिया साहित्य का एक उभरता हुआ नाम है। उनका हाल ही में प्रकाशित कहानी संग्रह 'गांधी फाग्ला' है। नीलोत्पल बरूआ की कहानियों की एक विशेषता है उनकी कथनशैली। उनकी कहानियों में श्लेषपूर्ण भाषा–व्यवहार करते हुए देखा जाता हैं। सामयिक काल में जिस तरह भाषा के व्यवहार के क्षेत्र में एक बेपरवाह ढंग देखा जाता हैं उसी तरह नीलोत्पल बरूआ ने अपने इस संग्रह में अत्यंत कुशलतापूर्वक सायास बेपरवाह भाषा का व्यवहार किया है। नई कथनशैली और नए

विचारों से सराबोर इस संग्रह की सभी कहानियाँ जीवन के छोटे–छोटे विषयों के कई ऐसे पहलूओं को सामने लाने का प्रयास हैं। समकालीन समाज के विभिन्न चित्रों को बिना किसी अभिजात वर्णन के, साधारण बोलचाल के जरिए बिना किसी प्रचलित लेखन शैली का अनुकरण करते हुए लिखा है। कहानियों में जिन–जिन चरित्रों से हम मिलते हैं वे हमारे आस–पास के ही हैं। चरित्रों के माध्यम से जितना बोलना आवश्यक है लेखक ने उतना ही बोला है अनावश्यक रूप से कहीं कोई वर्णन नहीं है इसलिए कहानियों को पढ़ते हुए किसी प्रकार की विरक्ति नहीं आती, सामान्य जनसमूह द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सामान्य बोलचाल की भाषा में ही सबकुछ व्यक्त किया है जिस कारण इन कहानियों में हम खुद को देख पाते हैं।

इसी बीच प्रकाशित रंत्नोतमा दास बिक्रम का उपन्यास 'अवार्चीन' है। ये उपन्यास बाकी उपन्यासों की तुलना में एक प्रकार से अपवाद है। असमिया उपन्यास का इतिहास बहुत समृद्ध, गौरवपूर्ण और पुराना है लेकिन असमिया साहित्य के इतिहास में इस विषय का उपन्यास नहीं लिखा गया है। एक प्रकार से ये एक परीक्षण है। इस उपन्यास का विषय कुछ अलग है व्यक्ति विशेष की काल्पनिकता और स्मृति। अपने शिशुकाल की संचित स्मृति के आधार पर इस कहानी को आगे बढ़ाया गया है। अपने पिता से सुनी हुई एक कविता की पंक्तियाँ ही कहानीकार की चेतना को कहानी बोलने पर विवश करती है। अस्थिर समय से परित्राण पाने की इच्छा में अपनी कल्पना के माध्यम से एक नई दुनिया, नए राज्य की कल्पना करती है। ये बिना जाने कि ऐसे राज्य की स्थिति और संभावना कितनी है। उपन्यास की पटकथा व आधार लेखिका की कल्पना मात्र है। इतिहास के पन्नों के कुछ जले हुए पृष्ठों से लाई गई कुछ टुकड़ों के साथ–साथ वर्तमान के कुछ ऐसे पहलू सामने लाने की कोशिश करती है, वास्तविक और प्रासंगिक कुछ प्रश्नों के उत्तर खोजने की कोशिश करती है।

'अकनबाला दास आरू हातत लैम्प लोई फुरा अक्लांत संग्रामीजन' शीर्षक प्रियम डि ज्योत्सना की 2022 में प्रकाशित एक किताब है जिसमें सत्रह अध्याय हैं। स्वतंत्रता के पूर्व असम ढकूवाखाना अंचल के स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यकलाप के बारे में सफल वर्णन किया है। पिछड़े क्षेत्र से ही चंद्रशेखर और अकनबाला किस तरह भारत वर्ष को स्वतंत्र करने का स्वप्न देखते हैं उसी का सार्थक विश्लेषण किया है। किस तरह चंद्रशेखर और अकनबाला ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था सक्रिय रूप से। स्वतंत्रता संग्राम में त्याग और संघर्ष करती हुई एक सशक्त स्त्री अकनबाला और चंद्रशेखर की जीवनगाथा को विस्मृत पन्नों से खोज निकाला है जिसे मुख्यधारा के इतिहासकारों ने अनदेखा किया था। जिसे स्वतंत्रता के 75 साल बाद इन दो स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन को प्रणालीबद्ध और सार्थक रूप से लिखकर पाठकों तक पहुँचाया।

ये पुस्तक युवा लेखकों के लिए प्रधानमंत्री की मैंटरशिप योजना (युवा, उदीयमान और प्रतिभाशाली लेखक) के अंतर्गत तैयार की गई पुस्तकमाला का अंश है। यह पुस्तकमाला योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय आंदोलन विषय पर आधारित है, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका निभाने वाले अल्पज्ञात नायकों एवं अज्ञात और विस्मृत स्थानों की कथा कथेतर या जीवनचरित आदि शैलियों में प्रस्तुत किया है जिसके लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत सरकार द्वारा छात्रवृत्ति सहयोग सहित प्रतिष्ठित लेखकों, विषय विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शित किया गया था। इसी योजना के तहत एक और किताब भी प्रकाशित हुई है जिसके लेखक विकास दीहिगींया, किताब का नाम 'गमधर' स्वाधीनता आंदोलनर बाटकटीया गमधर कुँवर आत्मकथा' है। इस किताब में गमधर कुँवर की जीवनगाथा को कई अध्यायों में यानी बचपन से लेकर जीवन के आखिरी समय तक के घटनाक्रम का खूबसूरती से वर्णन किया है। गमधर कुँवर के जीवन को दर्शाती इन बातों को अब तक इतने विस्तृत रूप से इससे पहले नहीं लिखा गया था। असम के आहोम संप्रदाय की कई लोक परंपरा के बारे में भी युवा लेखक ने वर्णन किया है। मुआमरीया और मान के असम आक्रमण करने के समय में किस प्रकार अंग्रेजों ने कुटिलता से असम अपने अधीन किया था इसके बारे में और इसके बाद स्वतंत्रता संग्राम के बारे में भी विस्तृत रूप से वर्णन किया है। ये दोनों किताबें असमिया इतिहास साहित्य से जुड़े दो प्रमुख अध्याय हैं जिसे याद रखा जाएगा।

पिछले तीन–चार सालों में नए पुराने, ख्यात–अख्यात कवियों द्वारा हज़ार से भी अधिक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं, उल्लेख करना जरूरी है कि असमिया कविता का स्वर समग्र भारतीय कविता के परिप्रेक्ष्य में समृद्ध है। इनमें से प्रमुख हैं आनिस उज जामान की 'नोईखन कलोई गोइसे तुमिउ नाजाना मईउ नाजानू', 'आत्मज', चेनिराम गगई 'घरगुना', राजीव बोरा 'एईफालेउ कवि आसे', दिलीप फूकन 'दैवात् एहालि देउहाँह', नीलाभ सौरभ 'कथाबुर कोई थाकिब लागिब', प्रदीप सईकिया 'भात', अनुभव तुलसी 'ब्रेईल सिलट', निलीमा ठाकूरिया हक 'अनुराग अनुवाद आरू चित्रशालात वाश्वूर बैंग', जुनमनि दास 'कैलाश टुकावही', नीलकातं सईकिया 'नैतिक अनैतिक', माखन कलिता 'सेउज शंख', मेत्रयी फूकन 'डिंगित गजा पानी–मगंह', मृदुल हालोई 'तार परा उभटि आहिसू जत आमि नासिलू 'आदि।

उल्लिखित किताबों के अलावा और भी बहुत सी नई नई किताबें प्रकाशित हुई हैं।

❑❑❑

2

उर्दू साहित्य



ज़ुबेदा एच. मुल्लाँ

कहानीकार और अनुवादक। प्रमुख कृतियाँ– 'काव्यांग–विश्लेषण', 'ऐसा भी होता हैं', 'अबाबील' (कहानी संग्रह), और 'हमारे राष्ट्रीय प्रतीक' आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित। पाँच राष्ट्रीय और दो अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

हर नया साल नई उमंग, नई योजना और नया उत्साह के साथ प्रारंभ होता है। वही मनुष्य सफल होता है, जो प्रारंभ से अपनी सकारात्मक सोच के अनुसार अपनी योजनाओं और सपनों को साकार करने का प्रयास करता है। मनुष्य सामाजिक जीव है और साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। साहित्यकार समाज का दिशा–निर्देशक भी होता है। वह भूतकाल के अनुभवों को अपना पैमाना मानता है। इस तरह वह वर्तमान में अपने अनुभवों को साहित्य का स्वरूप प्रदान करता है और भावी पीढ़ी को अपने वर्तमान समाज के अनुभवों का दस्तावेज प्रदान करता है। सवाल यह उठता है कि साहित्यकार सालभर समाज कल्याण के उद्देश्य से जो कुछ लिखता–रचता हैं, उनका लेखन समाज में किस हद तक प्रचारित व प्रसारित होता है? सवाल सरल है, परंतु जवाब बड़ा गंभीर है। आज के इस गूगल युग में मानव जीवन इतनी तीव्र गति से प्रगति की ओर अग्रसर है कि मनुष्य के पठन–पाठन की प्रवृत्ति भयंकर रूप से प्रभावित हो रही है। पाठकों के पास गंभीरता से अध्ययन करने का न तो अवकाश है और न साहस है। आज का मनुष्य ठीक तरह से जी भी नहीं पा रहा है।

देर रात तक दफ़्तरों में फैक्ट्री और कारखानों में काम करने वाले लोग प्रातःकाल के सौंदर्य को निहारने से वंचित रहते हैं और दिनभर विभिन्न स्थानों पर काम करने वाले लोग मधुर चाँदनी रातों के दर्शन से वंचित रह जाते हैं। ए.सी लगे कमरों में काम करने वाले अफसर श्रमिकों के श्रम से परिचित नहीं हैं। ऐसे संदर्भों में सहित्यिक बुद्धिजीवी लोग ही संवेदनशील प्राणी होते हैं, जो अपने लेखन (साहित्य) के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग को समझने और समझाने का कार्य करते हैं तथा साहित्य कहानियों के माध्यम से समाज के रहस्यों का उद्घाटन करते हैं। भारत की प्रत्येक भाषा इस बात की साक्षी है।

भारत में जन्मी उर्दू भाषा भारत की गंगा–जमुनी संस्कृति की पोषक व रक्षक है, जिसने प्रारंभ से अपने देशवासियों को अमन व भाईचारा तथा प्यार व शांति का संदेश दिया है। उर्दू साहित्य इस बात का साक्षी है। आज जिस अमन व शांति की आवश्यकता सारी दुनिया को है, उसका समाधान उर्दू साहित्य में उपलब्ध है। उर्दू भाषा में मिठास के साथ त्याग, बलिदान, देशप्रेम, भाईचारा, अपनापन और प्रगति की ओर अग्रसर होने का संदेश निहित है। उर्दू साहित्यकारों ने जाति–पाँति, धर्म, रीति–रिवाजों की विविधता से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को प्रधानता देते हुए राष्ट्रहित में अपनी लेखनी चलाई है। आज उर्दू भाषा का परचम विश्वपटल पर लहरा रहा है।

सन 2022 जनवरी के अंक 'माहनामा' तथा 'उर्दू दुनिया' के संपादक डॉ. शेख अक़ील अहमद ने 'हमारी बात' के अंतर्गत उर्दू साहित्य के महत्व को उजागर करते हुए उर्दू के प्रचार का महत्व समझाते हुए लिखा है– ''उर्दू भाषा के प्रचार का अर्थ राष्ट्रीय एकता और अपनेपन की भावना का प्रचार करना है क्योंकि उर्दू भाषा की कजीर में राष्ट्रीयता, वतनीयत और गंगा–जमुनी संस्कृति की कल्पना विद्यमान है। गोयाकि उर्दू भाषा की सेवा न केवल भाषा की सेवा है, बल्कि गंगा–जमुनी संस्कृति और देश व समुदाय की भी सेवा है। यह समय की माँग भी है कि राष्ट्रीय एकता की भावना की ऊर्जा को शातक क्षीण होने न दिया जाए।'' यद्यपि आज उर्दू पुस्तकें ख़रीदकर पढ़ने वाले पाठकों की संख्या मोबाईल और गूगल के कारण घटती जा रही है, तथापि लिखने वाले साहित्यकारों की लेखनी साहित्य की प्रत्येक विधा में चल रही हैं।

हर साल की तरह इस वर्ष सन 2022 में उर्दू साहित्य का प्रारंभ एक सकारात्मक सोच के साथ हुआ। आज भी उर्दू साहित्य की जड़े अपनी प्रत्येक विधा में पनप रही हैं। इसके साहित्य का वातावरण पाठकों के अभाव के बावजूद फलता–फूलता, प्रेम व आदर्श का संदेश देता हुआ राष्ट्रीय एकता और भाईचारा को बढ़ावा देने के प्रयास में सतत संलग्न है।

बाल साहित्यः– उर्दू भाषा का बाल साहित्य भारत में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। राष्ट्रीय परिषद उर्दू भाषा प्रगति नई दिल्ली इस विख्यात संस्था की ओर से बच्चों के किए प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'माहनामा बच्चों की दुनिया' बाल साहित्य के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुई है। इस पत्रिका में बच्चों की रूचि, समझ–बूझ और संप्रेषण का ध्यान रखते हुए रोचक एवं नीतिपूर्ण कहानियाँ, प्यारे–प्यारे गीत, ज्ञानवर्धक लेख, किस्तवार धारावहिक के रूप में छोटे छोटे उपन्यास तथा मनोरंजन से भरपूर चुटकुले और पहेलियाँ आदि प्रकाशित होती हैं। 'कहकशाँ के अंतर्गत बच्चों को ऐतिहासिक स्थानों की सैर कराई जाती है। उर्दू फेसबुक के माध्यम से बच्चों के मस्तिष्क का व्यायाम कराया जाता है। नन्हे फनकार के अंतर्गत डाकघर,

रेल, उपवन आदि का परिचय कराया जाता है। भारत में सबसे ज़्यादा छपने वाली यह बाल पत्रिका बच्चों के साथ–साथ बड़ों का भी ज्ञान बढ़ाती है। देशभर में व्याप्त उर्दू अकादमी कहानियाँ भी बाल साहित्य के क्षेत्र में कई बाल–पत्रिकाएँ सन 2022 में प्रकाशित हुई हैं।

3 जनवरी 2022 को मुंबई में जिला परिषद उर्दू स्कूल वसई में विज्ञान और उर्दू साहित्य के योग से बाल साहित्य की पुस्तक 'पिकनिक' का लोकार्पण उर्दू स्कूल के वरिष्ठ विद्यार्थियों के हाथों संपन्न हुआ। इस पुस्तक की लेखिका शाहताज खान ने अपनी इस पुस्तक में विज्ञान के विषयों को जोड़कर बच्चों में पुस्तक पठन की रुचि को बढ़ाया है। निस्संदेह विज्ञान से जुड़ी इस पुस्तक की कहानियाँ आज के बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न करती हैं।

सन 2022 में राष्ट्रीय परिषद, उर्दू प्रगति, नई दिल्ली से प्रकाशित अब्दुल वदूद अंसारी कहानियों लिखित 'आओ सांइसी क़त पढ़ें' बाल साहित्य में एक अत्यंत ज्ञानवर्धक पुस्तक सिद्ध हुई है। इस पुस्तक में लेखक ने विज्ञान से संबंधित पत्रों को संग्रहित किया है। दो भागों में विभक्त यह पुस्तक बाल साहित्य में एक नया प्रयोग है। प्रत्येक भाग में 12 बाल पत्र हैं। पहले भाग में पहला पत्र 'मुसलमान बादशाहों की सांइसी किदमात' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है, जिसमें सन 833 ई. में कलीफ़ा मामून रशीद के विज्ञान के संबंध में किए गए प्रयासों का मार्मिक उल्लेख हुआ है। कलीफ़ा मामून रशीद ने सबसे पहले अपने दौर में विज्ञान अकादमी संस्थान की स्थापना की थी। लेखक अब्दुल वदूद ने वार्तालाप शैली में मुग़ल बादशाहों के विज्ञान के क्षेत्र में किए गए प्रयासों का उल्लेख किया है। उन्होंने मुगल सम्राट जहाँगीर को प्रथम वैज्ञानिक बादशाह सिद्ध किया है। इस बादशाह ने हाथी, पोलकॉर्ट, बंदर आदि जानवरों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की थी। पेड़–पौधों के संबंध में भी जहाँगीर बादशाह को व्यापक ज्ञान था। पुस्तक के दूसरे भाग में नोबेल पुरस्कार प्राप्त मुसलमान वैज्ञानिकों का उल्लेख हुआ है। गणितशास्त्र पर आधारित पत्रों को भी इस भाग में संग्रहित किया गया है। वस्तुतः बाल मस्तिष्क की जिज्ञासा को ध्यान में रखकर इस पुस्तक को रचा गया है।

सन 2022 फ़रवरी में लखनऊ के विख्यात उर्दू के कवि असगर लखनवी की सुपुत्री नसीम फ़ातिमा कहानियों संपादित बाल कविता संग्रह 'कशकूल नसीम' का लोकार्पण हुआ। इस काव्य संकलन में देश के बच्चों का ज्ञानवर्धन करने वाली छोटी, सुंदर, सहज–सरल कविताओं को संग्रहित किया गया है।

अता आब्दी उर्दू साहित्य के उभरते हुए एक सुलझे हुए बाल साहित्यकार हैं, जिनकी नवीन पुस्तक 'बच्चों की किताबें : तआरूफ़ व तज़किरा' सन 2022 में पाठकों में उपलब्ध है, जिसमें लेखक ने बाल मन की उत्सुकता, जिज्ञासा एवं रुचि के संबंध

में अपनी लेखनी चलाकर साहित्यकारों को इस क्षेत्र में गद्य–पद्य लिखने के लिए प्रेरित किया है।

शायरी (काव्य) काव्य के क्षेत्र में उर्दू शायरी विश्वभर में प्रसिद्ध है। जनवरी 2022 में अनवर कैफ़ी का काव्य–संग्रह 'उफ़क़ के पार' पाठकों में उपलब्ध है। काव्य अथवा पद्य रचना एक सूक्ष्म भावात्मक रचना का नाम हे। वास्तक में काव्य भावनाओं को उत्तेजित करने की क्रिया है। 'उफ़क़ के पार' अनवर कैफ़ी का दूसरा काव्य संग्रह है, जिसमें उर्दू शायरी के फ़न (कला) के संबंध में तीन विषयों को संकलित किया गया है। प्रथम विषय सीन, शीन कॉलम का है, द्वितीय विषय डॉ. मीना नकवी का है और तृतीय विषय डॉ. मुहम्मद अतहर मसऊद खाँ का है। इन विषयों के लेखों में अनवर कैफ़ी के काव्य पर हम्द न नात तथा गज़लों पर प्रकाश डाला गया है।

इस वर्ष लखनऊ में ख़्वाजा तौसिफुद्दीन तौसीफ का काव्य संकलन 'धूप का सफ़र' उर्दू दुनिया में ख्याति प्राप्त कर चुका है। इस संकलन की कविताएँ पाठकों के मन–मस्तिष्क को तरोताजा करती हैं और दिल के बंद दरवाज़ों को खोलकर हर एक का स्वागत करती हैं। इस संकलन की कविताओं को बार–बार पढ़ने और सुनने का मन करता है। इस वर्ष शायर अख़्तर शाहजहाँ पुरी का पाँचवाँ काव्य संग्रह 'तशकील' पाठकों में बहुचर्चित है, जिसमें 13 लेखों के अतिरिक्त हम्द व नाअत, नज्मों और गज़लों को संग्रहित किया गया है। संग्रह में प्रस्तुत 13 लेखों में अख़्तर शाहजहाँ पुरी की शायरी पर प्रकाश डाला गया है। इनकी गज़लों में चिंतन मनन को महत्व दिया गया है। सादगी, सहजता और संप्रेषण अख़्तर शाहजहाँ पुरी की गज़लों की जान व शान है। इनकी छोटी–छोटी गज़लों में बला की कशिश है, जिनमें जीवन की वास्तविकता के दर्शन होते हैं–

रेत की तरह मुट्ठी में बंद, लम्हा–लम्हा बिखर रहा हूँ मैं।।
हवा मुझको बहुत भटका रही है, समझती है कि सहरा की सदा हूँ मैं।।
हवा के दोश पर उड़ता है अक़्तर जो वत्ता शाक से टूटा हुआ हूँ मैं।।
प्रस्तुत संकलन में 7 आज़ाद कविताएँ भी संकलित हैं–
इस सदी का अज़ाब देख लिया हमने, गिनती के चंद सालों में।।

इस वर्ष मेवात में दो उर्दू काव्य संकलनों का लोकार्पण हुआ, जो तेलंगाना से प्रकाशित हुए हैं। नई दिल्ली में इस वर्ष रवींद्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' का उर्दू अनुवाद उर्दू के नामवर शायर सुहेल अहमद फारूक़ी ने एलबम के रूप में प्रस्तुत किया है। मार्च 2022 में आरह शहर में प्रसिद्ध शायर सरफराज शहर का काव्य संकलन 'ख्वाबों का इक जज़ीराह' का लोकार्पण हुआ। सहारनपुर देवबंद अदाकार ग्रुप की ओर से इस वर्ष पाँच काव्य संकलनों का उर्दू पाठकों को उपहार प्राप्त हुआ है। तलत जहाँ सरूहा के दो काव्य संकलन 'दर्द–सहरा' और 'काविश तलत' हैं। महाराष्ट्र बंबई की कवयित्री तबस्सुम नाड़कर कहानियों रचित काव्य–संग्रह 'रूह तबस्सुम' और

'अक्स तबस्सुम' पाठकों के लिए उपलब्ध है। आफ़ताब अजमीरी का काव्य संकलन 'किरनें आफ़ताब की' यह संकलन भी पाठकों के सामने है।

नई दिल्ली में मुंबई के फिल्मी पटकथा लेखक की पुस्तक 'असरी अकसांचा' का लोकार्पण हुआ, जो बाल गद्य–पद्य की एक श्रेष्ठ पुस्तक है। पुस्तक विमोचन के शुभ अवसर पर प्रो. ख़ालिद महमूद ने कहा कि ''असल में बाल साहित्यकार ही उर्दू भाषा के रक्षक हैं। नई नसल उर्दू सिखेगी तो उर्दू फले फूलेगी।'' इस वर्ष कर्नाटक के गुलबर्गा शहर में मार्च के महीने में उर्दू के उभरते हुए मशहूर शायर इजीनियर युसूफ़ शेख का काव्य संकलन 'चाँद पिघलता रहा' का लोकार्पण हुआ। इसी शहर में कर्नाटक की विख्यात कवयित्री डॉ. शाइस्ता यूसुफ़ बरसगीर की कविताओं की पुस्तक 'आब आईना' का भी लोकार्पण संपन्न हुआ। इस संग्रह की कविताएँ पाठकों को वर्तमान स्थिति का आईना दिखाकर भाव–विभोर करती हैं।

इस वर्ष नई दिल्ली में आदिल ज़ैदी का काव्य–संकलन 'ख़र्ज जाँ' पाठकों को उपलब्ध हुआ है। आदिक जैदी उर्दू साहित्यकारों की पंक्ति और सूची में नहीं हैं, किंतु फिर भी उनका उर्दू से बड़ा गहरा संबंध है। पेशे से ताज़िर (व्यापारी) होने के बावजूद उन्होंने उर्दू भाषा से तिज़ारत नहीं, सच्चा प्रेम किया है। इसी प्रेम का सबूत उनका काव्य संकलन 'खर्ज खाँ' है, जिसमें कवि ने बड़ी सुंदर कविताओं को संजोकर अपने प्रेम का परिचय दिया है।

इस वर्ष आसनसोल में शाजिया नियाज़ी की सुंदर कविताओं का संकलन 'लफ्जों की साजिश' पाठकों में चर्चा का विषय बना है। इसमें नारी मन की कोमल भावनाओं की प्रतिबिंब कविताएँ संकलित की गई हैं। मुंबई में मार्च 2022 में कमर सिद्दकी का काव्य संकलन 'शब–आवीज' का लोकार्पण हुआ। इस संकलन की नज्मों और गज़लों में वर्तमान युग की गतिविधियों की झलक देखने को मिलती है। कटक के आदीशा में उर्दू के विख्यात शायर बदर मुहम्मदी का काव्य संकलन 'हम असरी–शायरी जहालत' का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष अलीगढ़ में दसवीं कक्षा का छात्र मुहम्मद अय्यान कहानियों लिखित काव्य संकलन का भी विमोचन हुआ। लखनऊ में डॉ. सुलतान शाकिर हाशमी की पद्य पुस्तक 'सिंहासन बत्तीसी' का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष नई दिल्ली में युवा कवि सफ़ीर–सिद्दीकी की मृत्यु और मृतकों पर लिखी हुई कविताओं का संकलन 'ख्वाबों के मरसिरा' पाठकों के बीच चर्चित है। देवबंद में इस वर्ष उर्दू के युवा साहित्कार अब्दुररहमान सैफ़ उस्मानी की दो उर्दू की पुस्तकें 'चाहतों का शहर' और 'फिलहाल' का लोकार्पण संपन्न हुआ।

'निशात शऊर' शायर बेकल उत्साही का इस वर्ष का श्रेष्ठ काव्य संकलन है, जिसमें हम्द, नाअत, गज़ल, नज्में, गीत और दोहों को संग्रहित किया गया है। शायर का पूरा नाम हसानल हिंद मुहम्मद शाफ़ी खाँ कोधी अल मारूफ़ बेकल उत्साही है। भारत सरकार ने बेकल उत्साही को 'पद्मश्री' के पद से सम्मानित किया है। हिंदी पद

रचना की शैली के आधार पर बेकल उत्साही ने उर्दू में अपनी लेखनी चलाई, जिस पर हिंदी के विख्यात कवि अमीरखुसरो, जायसी, तुलसी, कबीर, मीरा, रहीम व रसखान का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। बेकल उत्साही के व्यक्तित्व और साहित्य में आस्था और विश्वास कूट–कूट कर भरा हुआ था–

ऐ खुदा तेरा करम राह को मंजिल कर दे,
डूबती नाव के मंझधार को साहिल कर दे।।

'निशात शऊर' में बच्चों के लिए भी बेकल उत्साही के गीत, नज्में और दुआ संग्रहित किए गए हैं। कवि की नज़र में बच्चों का मार्गदर्शन अत्यंत आवश्यक है। ईश्वर पर आस्था, माँ बाप की सेवा, देशप्रेम और पर सेवा का पाठ तथा बच्चों को पढ़ाने के उद्देश्य से बेकल उत्साही ने कई पद लिखे हैं–

किताब ज़िंदगी पढ़ा दे यारब,
दिया छोटा हूँ, मेरी लौ बढ़ा दे यारब।।

बेकल उत्साही को अपने शहर कलकत्ता और अपनी भाषा उर्दू से बहुत प्यार था–

फैली जहाँ से उर्दू वो है यही कलकत्ता,
दिल को लुभाए गेसू वो है यही कलकत्ता।।

इस वर्ष नई दिल्ली में शाहिद अनवर का काव्य संग्रह 'इशारत' का लोकार्पण हुआ। यह पहला काव्य संग्रह है, जिसमें तीन अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में हम्द, नाअत और सलाम संग्रहित हैं दूसरे अध्याय में गज़लों को संग्रहित किया गया है और तीसरे अध्याय में गीत, नज्मों और नगमों को संग्रहित किया गया है। शाहिद अनवर की शायरी में भावनाओं का सागर उमड़ता नज़र आता है–

हमारे शहर की खामोंशियाँ निराली हैं,
सुकून बख़्श हैं चेहरे मगर सवाली हैं।।
हम अपने ज़हन पर वो ग़म सह चुके शाहिद,
दवाएँ जंगी ज़माने ने अब निकाली हैं।।

नई दिल्ली में डॉ. अमीर मंजूर कहानियों संपादित पुस्तक 'हिंदुस्तान उर्दू शायरी के हवाले से' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में उर्दू शायरी के संदर्भ में यह बात स्पष्ट की गई है कि उर्दू में प्रेम की मधुरता के साथ देश से प्रेम और देश से संबंधित सभी वस्तुओं से प्रेम का अपनाइयत का पैगाम पाया जाता है। लखनऊ में इस वर्ष मोमिन साहित्य अदब कहानियों उर्दू के विख्यात कवि रहमत लखनवी का प्रथम काव्य संग्रह 'असास फ़िक्र' का लोकार्पण हुआ। आधुनिक युग के विख़्यात उर्दू के कवि रहमत लखनवी की शायरी बुद्धि, शिक्षा तथा प्रयोग पर आधारित है। मन मोह लेने वाली गज़लों से भी इनकी शायरी भरी हुई है।

कथा साहित्यः

खैसर तमकीन उर्दू के विख्यात कहानीकार थे। 'गोमती से हीमज तक' उनका उल्लेखनीय कहानी संग्रह है, जिसे डॉ. अहसन अय्यूबी ने ख़ैसर तमकीन के नौ कहानी संग्रहों से 17 कहानियाँ संग्रहित करके उनके देहांत के उपरांत प्रकाशित किया है। डॉ. अहसन अय्यूबी ने खैसर तमकीन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पीएचडी की है। अतः उनकी रोचक कहानियों का चयन करके 'गोमती से हीमज़ तक' शीर्षक प्रदान किया है। ख़ैसर तमकीन का जन्म लखनऊ में हुआ था। बचपन लखनऊ में बीता, बाद में वे लंदन में जाकर बस गए। लखनऊ के मध्य शहर से गोमती नदी बहती है, जो यहाँ के वासियों के लिए जीवनदायिनी है। सागर टीमज़ लंदन का सौंदर्य है। ख़ैसर तमकीन लखनऊ की गोमती नदी के किनारे से लंदन की दरिया हीमज़ के किनारे तक जा बसे थे। उनकी कहानियों में दोनों देशों की संस्कृति पाई जाती है। संपादक डॉ. अहसन अय्यूबी ने बड़ी खूबी और लगन के साथ दोनों देशों की संस्कृतियों को जोड़कर सन् 2022 में इस कहानी संग्रह को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

रामपुर में इस वर्ष उर्दू के विख्यात कहानीकार अयस फ़ज़ीलत का कथा संग्रह 'टूटे सपनों का कर्ब' का लोकार्पण लेखक के मरणोपरांत संपन्न हुआ। कथा संग्रह की उत्तम कहानियों के लिए इस कहानी संग्रह को रामपुर रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसे लेखक की सुपुत्री जेना खान ने ग्रहण किया। इस वर्ष भारत में असलम जमशेदपुरी का कथा संकलन 'अफ़साँचा और अफ़साँचा निगार का लोकार्पण हुआ। इस कथा संग्रह की प्रशंसा से यह साबित हुआ है कि आज के इस मशीनी दौर में भी उत्तम कहानियों को लोग पढ़ते और समझते हैं। ऐसे उत्साही पाठकों के कारण ही तो आज के इस गूगल युग में साहित्य फलफूल रहा है।

इस वर्ष नई दिल्ली में कारवान कुलूस अमरूह की कहानियों की पुस्तक 'पीकरे इंसानियत' पाठकों में उपलब्ध है। इस संग्रह की सभी कहानियाँ पाठकों में एक आदर्श जगाती हैं। इस वर्ष नई दिल्ली में हिंदूस्तान और ईरान की सभ्यता व संस्कृति पर आधारित उर्दू की श्रेष्ठ पुस्तक 'यात्रा वृत्तांत' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक के लेखक फमसा निज़ामी ने ब्राह्मण और ईरान के इतिहास का उल्लेख करके पाठकों का ज्ञान बढ़ाया है।

सन 2022 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद के भूतपूर्व उर्दू विभागाध्यक्ष ने संपादक रेशा कमर कहानियों गफऩकर के कथा साहित्य पर केंद्रित संपादित पुस्तक 'आबयाज़ा' को प्रकाशित किया, जो इस वर्ष की उर्दू साहित्य की एक प्रसिद्ध पुस्तक सिद्ध हुई है। गफनकर उर्दू साहित्य की सभी विधाओं में लेखनी चलाने की महारत रखते हैं। कहानी, उपन्यास, लेख आदि गद्यात्मक विधाओं में उनकी लेखनी सतत चलती ही है, उनकी शायरी भी पाठकों पर गजब ढाती है।

'कहानी खतम हुई' अबूललैस का पाँचवाँ कहानी संग्रह है, जो सन 2022 में दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। प्रारंभ में अबूललैस जावीद की कहानियाँ उर्दू की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'बीसवीं सदी' में प्रकाशित होती थीं। बाद में उन्होंने अपनी कहानियों, को संग्रहों में प्रकाशित किया। 'कहानी खतम हुई' संग्रह में दस कहानियाँ जो समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान करती हैं और लोगों को शांति का संदेश देती हैं।

'मिडल क्लास' मुहम्मद ज़ाकिर का इस वर्ष का उर्दू का विख्यात उपन्यास है, जिसमें आज के नौजवानों पर समाज में जात–पात के आधार पर जो अत्याचार, अन्याय और अनीतिपूर्ण व्यवहार किया जाता है, उसको बदलने का आग्रह किया गया है।

'बनफूल' 102 उर्दू कहानियों का (2022 में कोलकत्ता से प्रकाशित) संग्रह है। ये सभी कहानियाँ अनूदित हैं। उर्दू साहित्य में अनुवाद का भी बड़ा महत्व है। अहमद कमाल इन कहानियों के अनुवादक हैं, जिन्होंने भारत की विभिन्न भाषाओं की 500 कहानियाँ पढ़ने के उपरांत 102 कहानियों का उर्दू में अनुवाद किया है। क़ाके (रेखाचित्र) 'आसमान कैसे कैसे' डॉ. फारूख आजम कासमी का इस वर्ष का विख्यात उर्दू रेखाचित्र संग्रह है, जो नई दिल्ली से प्रकाशित है। भारत की प्रत्येक भाषा के साहित्य में रेखाचित्र का विशेष महत्व है। सन 2008 से लेकर 2022 तक के श्रेष्ठ व्यक्तियों के व्यक्तित्व को इस पुस्तक में उजागर किया गया है। पुस्तक का शीर्षक अमीर मीनाई के प्रसिद्ध पद के आधार पर रखा गया है–

हुए नामवर बेनिशाँ कैसे कैसे, ज़मीं खा गई आसमाँ कैसे कैसे''।

इस वर्ष मेरठ में प्रो. असलम जमशीदपुरी कहानियों संपादित कहानी संग्रह 'बारूद और कोपंल' का लोकार्पण हुआ। संपादक महोदय ने आरीफ़ नक़वी की श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह करके इस पुस्तक को उर्दू दुनिया को भेंट स्वरूप है, जो इस वर्ष की श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक है।

गद्य साहित्यः– जनवरी 2022 में नागपुर में अंजूमन महिला पद्वी कॉलेज की ग्रंथपालिका डॉ रूहीना सैय्यद कहानियों लिखित पुस्तक 'लाइब्रेरी की तारीख़ और बैनल अख़वामी लाइब्रेरियाँ' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक को राष्ट्रीय परिषद परोय करूग उर्दू, नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से प्रकाशित किया गया है। इस वर्ष हरिद्वार में उर्दू भाषा व साहित्य के प्रेमी स्वर्गीय मुंशी अब्दुल गफूर की चौथी पुस्तक 'गोहर–नायाब' का लोकापर्ण संपन्न हुआ।

सन 2022 में जमशेदपुर के उभरते हुए उर्दू के साहित्यकार अलहाज हाफ़िज़ अहमद हाशमी क़ादरी सिद्दीकी मिस्वाही की दो गद्य पुस्तकें पाठकों के लिए उपलब्ध हैं। 'पानी बचाव, जिंदगी बचाव', और 'निकाह का इस्लामी तस्सवर'। पहली पुस्तक में जल और उसके सही उपयोग व महत्व पर प्रकाश डाला गया है। दूसरी पुस्तक में देश में फैले दहेज का लालच, कन्याओं का दर्द और शादियों में होने वाली

फ़िज़ूलखर्ची और दिखावे का उल्लेख हुआ है। नई दिल्ली में वरीक़्ता फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजीव सराफ कहानियों लिखित पुस्तक 'उर्दू–शायरी में मुहब्बत का नुकसान' नामक पुस्तक पाठकों का एक नई देन है। इस पुस्तक में उर्दू के श्रेष्ठ बारह सौ कवियों की तरफ ध्यान दिया गया है। इस पुस्तक–विमोचन के शुभ अवसर पर फिल्म गीतकार जावेद–अख़्तर ने कहा कि उर्दू को सबसे ज़्यादा हानि देश के विभाजन से हुआ है।

इस वर्ष दिल्ली में जामिया नेशनल फ़ाउन्डेशन में 'यूनानी मेडिसिन इंडेक्स' नामक पुस्तक का विमोचन हुआ, जिसमें हर छोटी–बड़ी बीमारियों की औषधियों का उल्लेख है। इस शैली में उर्दू की यह पहली पुस्तक है, जिसमें डॉक्टर और हकीमों के लिए बहुत लाभदायक ज्ञान उपलब्ध है। सन् 2022 के प्रारंभ में नई दिल्ली में डॉ. तख़ी आबदी की नवीन पुस्तक 'गुलिस्ताने हिंद' का लोकार्पण संपंन हुआ[1] इस पुस्तक के मूल लेखक मुंशी बाल मुकुंद बेसबर हैं, जिन्होंने इस पुस्तक को सन 1871 में लिखा था, जो अब तक डॉ. तखी आबादी के निजी ग्रंथालय में सुरक्षित थी। मुंशी बालमुकुंद बेसबर ने इस पुस्तक की रचना सईद शीराज़ी की 'गुलिस्तान' की शैली के आधार पर की थी। डॉ. तखी आबदी ने इस पुस्तक से प्रभावित होकर आधुनिक गद्य शैली में नवीन 'गुलिस्ताने हिंद' की रचना की, जो अत्यंत लोकप्रिय सिद्ध हुई है। डॉ. तखी आबदी ने पुस्तक विमोचन के समय अपने व्याख्यान में कहा– 'ये किताब हुस्ने यूसुफ़ की तरह है, जो अब तक कुएँ में बंद थी, लेकिन अब ये दुनिया के सामने पेश कर दी गई है, जिसकी रौशनी से अदबी दुनिया को ज़रूर फ़ायदा होगा।''

समीक्षात्मक पुस्तकें:–

इस वर्ष प्रो. खालिद महमूद की समीक्षात्मक पुस्तक 'नकूश मानी' पाठकों में अत्यंत प्रसिद्ध है। आधुनिक उर्दू साहित्य में ख्याति प्राप्त प्रो. ख़ालिद महमूद ने अपनी इस पुस्तक में व्यंग्य के माध्यम से पाठकों को पते का ज्ञान प्रदान किया है। प्राध्यापक होने के कारण प्रो. ख़ालिद महमूद अध्ययन व अध्यापन में बड़ी रूचि रखते हैं। उन्होंने अपने एक लेख में लिखा है– ''अच्छे विद्यार्थी अपने अध्यापकों को अध्ययन के लिए विवश करते हैं। एक उत्तम अध्यापक पहले अध्यापकों से सीखता है, फिर बाद में अपने विद्यार्थियों से सीखता है। इस प्रकार अध्ययन अध्यापन के व्यवसाय में जीवन भर सीखने–सिखाने का क्रम चलता है।''

मालेगाँव में इस वर्ष हाफ़िज़ जलालुद्दीन ख़ासमी ने पाँच साल की कड़ी मेहनत के बाद 'संस्कृत व उर्दू ग्रामर' नामक पुस्तक लिखी है, जो दो भाषाओं के भाषिक मिलन को दर्शाती है। भारत में इस पुस्तक का भव्य स्वागत हुआ है। इस वर्ष नई दिल्ली में असग़र राज़ क़ातमी की शोधात्मक पुस्तक 'ग़यास अहमद गदी, तखलिखी सयाख व सबाक' का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक शोध के क्षेत्र में पाठकों के लिए एक अनमोल उपहार है। ग़यास अहमद गदी उर्दू के विख्यात कहानीकार थे। उनकी

कहानियों में प्रस्तुत मानव जीवन के विभिन्न रंगों को असगर राज कातमी ने बड़ी गंभीरता से समीक्षात्मक रूप में प्रस्तुत किया है।

इस वर्ष मार्च 2022 में नई दिल्ली में राष्ट्रीय उर्दू परिषद की ओर से विख्यात वैज्ञानिक डॉ. खादर–वली के निजी अनुभवों के आधार पर उर्दू में अनाज से इलाज पर लिखी हुई पुस्तक 'अनाज से सिहत' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक विमोचन के समारोह में राष्ट्रीय परिषद के निर्देशक प्रो. शकील अहमद ने कहा– ''अनाज से सिहत यह किताब हमारे लिए बहुत लाभदायक है, जो बताती है कि अनाज और विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों और उनके पत्तों को हम अपनी बीमारियों में प्रयोग करते हैं। यह इलाज आसान और कम ख़र्च वाला भी है। कामयाब, पुरसुकून और खुशहाल ज़िंदगी के लिए मनुष्य का सेहतमंद होना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि तंदुरुस्ती हज़ार नियामत है।''

डॉ. कीर्ति मालती विट्ठलराव जावले उर्दू की विख्यात लेखिका हैं, जो डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग की अध्यक्ष हैं। उन्होंने अपनी मातृभाषा मराठी में उर्दू की कई पुस्तकों का अनुवाद किया है और मराठी की कई पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद किया है। 'प्रेमचंद के अफ़सानों में दलित मसाईल' यह डॉ. कीर्ति की आठ अध्यायों में विभक्त श्रेष्ठ शोधात्मक एवं समीक्षात्मक पुस्तक है, जो इस वर्ष की एक श्रेष्ठ उर्दू पुस्तक है। रत्नागिरी में इस वर्ष डॉ. मुहम्मद दानिश ग़नी की पुस्तक 'अबदुररहीम नश्त्र की शायरी ख़िदमात' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में डॉ. मुहम्मद दानिश ग़नी ने अपने पिता अब्दुररहीम नश्त्र की शायरी के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डाला है। 'मेरे मनतक़ब पेश लफ़्ज' डॉ. करामतअली करामत की इस वर्ष की प्रभावपूर्ण समीक्षात्मक पुस्तक है, जिसमें अक्षरों, शब्दों और अर्थों का कमाल दर्शाया गया है।

अप्रैल 2022 में नई दिल्ली में प्रो. अख़्तरूक वासअ की संपादित पुस्तक 'उतरती धूप की परछाइयाँ' का लोकार्पण हुआ, जिसमें पी.पी. श्रीवास्तव की उर्दू शायरी को संपादित किया गया है। इस शायरी में आधुनिकता और अतीत के वातावरण का मिश्रण है। पी.पी. श्रीवास्तव जैसे विशाल हृदयी कवियों, साहित्यकारों के कारण ही उर्दू भाषा सतत प्रगति की ओर अग्रसर है। इस वर्ष हुसैन फ़ारूखी कहानियों स्वास्थ्य पर लिखी पुस्तक 'तीमारदारी' पाठकों में काफ़ी चर्चित है। यह पुस्तक मानव जीवन से संबंधित स्वास्थ्य, बीमारियों और ईलाज व सेवा पर लिखी गई है, जिसमें बीमारियों से बचने के उपाय भी हैं।

डॉ. अतहर मसऊद खाँ के संपादन में संपादित पुस्तक 'तज़करों का आशारियाँ' इस वर्ष की उत्तम देन है, जिसमें अतहर मसऊद ने उर्दू के विख्यात साहित्यकार, गद्यकार और कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला है। इस वर्ष शब्ली अकादमी आज़मगढ़ से 'अललामा शिब्ली के फ़ारसी कतूतः एक मुतालिया'

नामक समीक्षात्मक पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, जिसके संपादक और उर्दू अनुवादक डॉ. मुहम्मद इलयासुल आज़मी हैं।

जीवनियाँ:— जनवरी 2022 में मुरादाबाद में जमनी साहित्य फाउडेशन कहानियों समाज सेवक डॉ. जावेद की पुस्तक 'उजाले उनकी यादों के' का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक लेखक के पिताश्री मास्टर नन्हे हुसेन की जीवनी है। डॉ. जावेद ने अपनी इस पुस्तक में अपने पिता के जीवनभर की गतिविधियों का इस प्रकार उल्लेख किया है कि नवयुवकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत प्रेरणादायक है। इस वर्ष सरूंज में गुकशन खन्ना की तीसरी पुण्यतिथी के अवसर पर 6 जनवरी 2022 को डॉ. सैफ़ी सरोंची की पुस्तक 'इनसानियत का वीकर गुलशन खन्ना' का लोकार्पण हुआ। उर्दू से प्रेम करने वाले उर्दू साहित्यकार गुलशन खन्ना की जीवनी को प्रस्तुत करके डॉ. सैफ़ी सरोंची ने अपने उर्दू भाषा प्रेम का सबूत पेश किया है। गुलशन खन्ना की उर्दू में दर्जन से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। आप एक श्रेष्ठ साहित्यकार और श्रेष्ठ मानव थे।

'अल्लामा सैय्यद मनाज़िर अहसन गिलानी; अहवाल व आसार' डॉ. फ़ारूक आजम कासमी के संपादन में संपादित सन् 2022 की एक श्रेष्ठ जीवनी है, जो अल्लामा गिलानी के निजी जीवन पर आधारित नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक जीवनी है। इस वर्ष डॉ. फ़ुरखान सरधनवी के संपादन में संपादित जीवनी 'अंजना संधीर एक शक्सीयत, एक शायरा' पाठकों में अत्यंत प्रसिद्ध हुई है। डॉ. अंजना का उर्दू साहित्य में विशेष स्थान है। उर्दू भाषा से प्रेम उनके गद्य–पद्य दोनों में उभरकर पाठकों को नजर आता है। उत्तर प्रदेश के जालून जिले के कस्बा लुटावली में जन्मी अंजना संधीर के इरादे अपने राष्ट्र के प्रति बड़े बुलंद हैं। उर्दू साहित्य के माध्यम से अंजना जी ने राष्ट्रीय एकता, भाईचारा, राष्ट्रप्रेम और राष्ट्र प्रगति के संबंध में जिन विचारों को व्यक्त किया उन्हें डॉ. कुरखान ने अपनी पुस्तक में बड़े प्रभाव के साथ व्यक्त किया है। डॉ. अंजना जी की उर्दू शायरी में स्त्री की अस्मिता का आदर झलकता है।

इस वर्ष सुलतानपुर में प्रो. आलम नदवी कहानियों लिखित रेखाचित्र संग्रह 'उजले धुंध के नकूश' का लोकार्पण हुआ। इसमें कुल नौ रेखाचित्र संग्रहित है, जिसमें प्रो. आलम नदवी ने अपने पिताश्री पर अत्यंत प्रभावपूर्ण रेखाचित्र प्रस्तुत किया है, जो नई पीढ़ी के लिए एक आदर्श रेखाचित्र है। इस वर्ष दरियागंज नई दिल्ली से डॉ. टी. आर. रैना के संपादन में 'रशीद हसन खान और शम्स बदांयूनी का अदबी रिश्ता' नामक संपादित पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस पुस्तक में दो महान साहित्यकारों की जीवनियों को प्रस्तुत किया गया है। दरभंगा से इस वर्ष 'सैय्यद महमूद अहमद करीमी फ़िक्र व नजर के आईने में' नामक जीवनी पाठकों में उपलब्ध है, जिसके संपादक हैं डॉ. अहसान आलम। इस वर्ष की यह एक यादगार जीवनी है।

पत्रकारिताः— भारत में उर्दू पत्रकारिता का अपना एक विशेष स्थान है। इस वर्ष सन् 2022 में मुरादाबाद में कंपनी बाग के सिनानी भवन में मुरतजा इक़बाल कहानियों संपादित पत्रिका सालनामा आइना और उर्दू सहाफ़त नामक वार्षिकी का लोकार्पण संपन्न हुआ। 2022 इस पत्रिका का सातवाँ साल है। इस वर्ष अलीगढ़ में उर्दू में 'रफ़्तार' नामक वार्षिकी का लोकार्पण हुआ। कोलकत्ता से इस वर्ष त्रैमासिक पत्रिका 'सह माही सहील' का 83वां अंक प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका के प्रधान संपादक मसऊद मंज़र और मैनेजिंग संपादक जमीक मंज़र है। सन 2022 की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका जनवरी और मार्च अंक प्रो. शारब–रदूलवी के नाम समर्पित है। शारब रदूलवी उर्दू के विख्यात साहित्यकार थे, जिनकी रचनाओं पर उर्दू साहित्यकार गर्व का अनुभव करते हैं।

उर्दू एक ऐसी मधुर प्यारी भाषा है, जो अजनबी क्षेत्रों में भी अपने प्रेम की जोत जलाती है। भारत में जन्मी इस भाषा की पहुँच देवभूमि और वीरभूमि हिमाचल प्रदेश तक संपूर्ण भारत में फैली हुई है। बर्फीले पहाड़ों के राज्य हिमाचल प्रदेश में वातावरण के सौंदर्य के साथ उर्दू भाषा का सौंदर्य साहित्य में चार चाँद लगा रहा है। हिमाचल प्रदेश के भाषा व संस्कृति विभाग के निर्देशक व अध्यक्ष डॉ. पंकज ललत, के संपादन में त्रैमासिक पत्रिका उर्दू और हिंदी में 'सह माही जदीदफ़िकर व फ़न' के नाम से प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आधुनिक विषयों पर लेख, गीत, गज़ल, नज़्मों और कविताओं को संग्रहित किया जा रहा है।

सन् 2022 में इंजीनीयर फ़ैरोज़ मुजफ्फर के संपादन में संपादित पुस्तक 'कुतूत' दिल्ली से प्रकाशित हुई है, जिसमें साहित्यिक पत्रों को संपादित किया गया है। इंजीनीयर फ़ैरोज़ साहब पर उनके पिताजी मुजफ्फर हन्फ़ी साहिब की साहित्यिक गतिविधियों का गहरा प्रभाव रहा है। यही कारण है कि वे विज्ञान के विद्यार्थी होने के बावजूद इंजीनीयर की व्यस्तता के बावजूद सतत साहित्यिक गतिविधियों में निमग्न है। 'कुतूत' फ़ैरोज़ साहब की पंद्रहवीं पुस्तक है, जो दो भागों में विभक्त है।

इस वर्ष मेरठ में प्रो. असलम जमशीदपुरी की नई पुस्तक 'नामे' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में उर्दू पत्र लेखन पर प्रकाश डाला गया है। पत्राचार में दो व्यक्ति बड़े प्रधान होते हैं; एक पत्र लिखने वाला और दूसरा वह व्यक्ति जो पत्र पढ़ता है। अतः इस पुस्तक में दोनों के महत्व को उजागर किया गया है।

❑❑❑

3

ओडिया साहित्य



अरुण होता

आधुनिक और समकालीन हिंदी कविता तथा आलोचना में विशेष अभिरुचि। प्रमुख कृतियाँ–'आधुनिक हिंदी कविताः युगीन संदर्भ', 'कविता का समकालीन प्रमेय', 'भूमंडलीकरण, बाजार और समकालीन कहानी, 'समकालीन कविता': चुनौतियाँ और संभावनाएं'। आचार्य रामचंद्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार, प्रथम गोपाल राय स्मृति सम्मान, लमही सम्मान और फकीरमोहन अनुवाद सम्मान से सम्मानित। संप्रति–आचार्य एवं अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कोलकाता में कार्यरत।

(कविता–संसार के विशेष संदर्भ में)

ओडिया साहित्य संपन्न है और समृद्ध भी। संपूर्ण भारतीय साहित्य में ओडिया भाषा–साहित्य का विशेष स्थान है। साहित्य की सभी विधाओं पर केंद्रित बड़ी मात्रा में पुस्तकें लिखी, पढ़ी जा रही हैं और प्रशंसित हो रही हैं। मात्रा की दृष्टि से नहीं, गुणात्मकता की दृष्टि से भी ओडिया साहित्य अन्य भारतीय साहित्य से पीछे नहीं है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, अनुवाद आदि विधाओं पर रचित ओडिया साहित्य का सर्वेक्षण करते हुए एक आलेख में उसे प्रस्तुत कर पाना अत्यंत कठिन कार्य है। बड़ी संख्या में प्रकाशक–गृह साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं इसलिए, ओडिया साहित्य की सभी विधाओं को ध्यान में रखते हुए यह लेख प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है। इस आलेख में 2022 में प्रकाशित ओडिया की कविता पुस्तकों में से कुछ अधिक चर्चित कविता संग्रहों पर संक्षेप में विचार किया गया है ताकि भारतीय साहित्य में रुचि रखनेवालों को ओडिया कविता की संवेदनाओं, चिंताओं और सरोकारों से परिचित कराया जा सके। उल्लेख किया जा सकता है कि वरिष्ठ कवियों के रचना–संसार के साथ–साथ युवा कवियों के रचनात्मक प्रयास को ध्यान में रखकर यह आलेख प्रस्तुत किया गया है।

ओडिया के बहुचर्चित और प्रसिद्ध कवि रमाकांत रथ न केवल ओडिया कविता, बल्कि भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण कवि हैं। रमाकांत की नई कविता पुस्तक 'नथिबाजणक' (न होनेवाला व्यक्ति) पाठक को आत्मान्वेषण का अवसर देती है।

इनकी कविताएँ महज कविताएँ नहीं रह जाती हैं बल्कि पाठक को अपने से जोड़ लेती हैं। उसे लगता है कि कविता में व्यक्त भाव कवि का ही नहीं, उसका अपना भी है। रमाकांत की कविता का सामर्थ्य है तादात्म्य स्थापित कर लेना। तैंतीस कविताओं से समृद्ध इस संग्रह में वैविध्य है। यहाँ जीवन का उल्लास है, तो मृत्यु चेतना भी। उनकी मृत्यु चेतना में विस्मय नहीं बल्कि यह घर से बाहर अथवा बाहर से घर आने की तरह सामान्य क्रिया जैसी है। उनकी कविता का नायक अत्यंत सहज ढंग से कहता है–

"बस कुछ दिन और, इसके बाद अपने दिन–रात को
धकेल कर कहूँगा, जाओ
कोई नाता नहीं अब मेरा और तुम्हारा
अब मैं न किसी का, न कोई मेरा
अब मैं हूँ शून्य, महाशून्य, मैं
अटल ताल अपने महासागर में।"

रमाकांत रथ का एक अन्य कविता संग्रह 'दुआर एपटु' (दरवाजे के इस पार से) इसी वर्ष प्रकाशित, चर्चित और प्रशंसित रहा है।

कवि रमाकांत रथ की तरह हरप्रसाद दास भी भारतीय साहित्य के अत्यंत महत्वपूर्ण कवि हैं। उनकी पुस्तक 'हार्लेमरे राति' (हार्लेम में रात) काफी चर्चित हुई है। यद्यपि हरप्रसाद दास ने हार्लेम में रात का चित्रण किया है, तथापि यह चित्रण केवल हार्लेम का नहीं है। यह इसलिए कि कवि की कविता की भावभूमि इतनी ऊँचाई पर होती है कि वहाँ पाठक खड़ा होकर अपने शहर, गलियाँ, नदी, तालाब आदि के साथ अपना दुःख, विषाद और अपने जीवन का साक्षात्कार कर सकता है। दुःख, यंत्रणा और विषाद को पार करना है तो आनेवाली बाधाओं से जूझना जरूरी होता है। अंधेरे को पार करने के लिए कवि ने वाद्य संगीत को माध्यम बनाया है। सभी जानते हैं कि जीवन–यंत्रणा को कुछ देर तक ही सही, हाशिए पर डालकर हृदतंत्रियों को झंकृत करने में संगीत की कितनी बड़ी भूमिका होती है। जीवनबोध की कविताएँ हरप्रसाद दास की बड़ी खूबी है। इस संग्रह में लगभग सौ कविताएँ हैं। कुछ पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं जो पुस्तक की शीर्षक कविता से अवतरित हैं–

"रात बजती थी बेचैन क्लैरियोनेट से/
धनुष की टंकार की तरह हडसन नदी की पीठ/
पानी की काली रीढ़ तन रही थी/
कल की सुबह के लिए थमने को ज्वार।"

अत्यधिक चर्चित कवि हरप्रसाद दास की कविताओं से ओडिया काव्य–जगत संपन्न तथा समृद्ध हुआ है। पिछले दिनों उनकी कविताओं का संचयन 'ब्रोंज' बहुत अधिक चर्चा में रहा है। उनकी कविता यूँ पकड़ में नहीं आती उसमें गहन अर्थ–व्यंजना समाहित होती है। पारंपरिक अभिव्यक्ति के स्थान पर निरालापन, अनूठापन हरप्रसाद दास की कविता का जीवद्रव्य है। यथार्थ की परत–दर–परत को उद्घाटित करने तथा यथार्थ की अतल गहराई में पहुँचकर उसे उजागर करने में कवि विशिष्ट है। नब्बे से अधिक कविताएँ इस संग्रह में संकलित हैं। इन कविताओं के माध्यम से कवि की विषय–विविधता के साथ–साथ अभिव्यक्ति और शैली वैविध्य का परिचय मिलता है। जीवनबोध और गहरी दार्शनिकता से परिपूर्ण इस कवि के कविता संसार में पाठक डूबते–उतरते रहते हैं। इस संग्रह की कुछ पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं:–

"माफ़ करना
मैं बचा नहीं सका तेरे प्रेम को
कर नहीं पाया उसका अंतिम संस्कार
दाह संस्कार, पिंडदान
पता न था मुझे
कि क्षुद्रतम प्रेम भी चाहता है
मरने से पहले, बूँदभर गंगाजल
अपने मूक बनते मुँह में।"

गिरिजा कुमार बलियार सिंह की हाल ही में प्रकाशित उनके कविता–संग्रह 'पादपूरण' के लिए सर्वाधिक प्रशंसा प्राप्त हुई। जब शब्द मंत्र बन जाते हैं तो वे मंत्रमुग्ध करते हैं। शोक श्लोक में बदल जाते हैं तो वे अमरत्व प्राप्त करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समुद्र की लहरों की गहराई से मानो यह कवि शब्दों को प्रेमपूर्वक संयोजित करता है। पलभर के लिए पाठकों को ऐसा लग सकता है कि कवि ने कला की चतुराई दिखाई है। लेकिन, दूसरे ही क्षण में कवि की प्रस्तुति उसके मन को मोहित कर लेती है। शब्द–संयोजन, शिल्प–नैपुण्य, विविध बिंबों की प्रस्तुति आदि से कविता प्रेमी चकित और पुलकित हो उठते हैं। इस संग्रह की 'नियमगिरी', 'इंडोनेशिया', 'अंशुपा', 'सर्गविसर्ग', 'वंशीपुरुष', 'हृदय रे हृदय' आदि लंबी कविताएँ सार्थक बन पड़ी हैं।

पिछले चार दशकों से ओडिया कविता को विविध भावों, संवेदनाओं और अभिव्यक्तियों से संपन्न करनेवालों में शत्रुघ्न पांडेव का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उनकी कविताएँ यथास्थितिवाद से आध्यात्मिक जगत की यात्रा करती हैं।

इस यात्रा के दौरान उनकी कविताएँ विविध किनारों और केंद्रों से होकर गुजरती हैं। यहाँ कवि–सामर्थ्य का परिचय भी मिल जाता है। परंपरा, प्रतीक और मिथकीय चेतना आदि का प्रयोग चमत्कारी ढंग से करने वाले शत्रुघ्न पांडेव की कविताएँ पाठकों को खूब पसंद आती हैं। उनकी कुछ चुनी हुई कविताओं का संकलन 'निर्वाचित कविता' शीर्षक से है। इतिहासबोध पर आधारित उनकी कविताएँ भी ओडिया कविता–प्रेमी पसंद करते हैं। इस भावबोध की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है।

"मगध के लिए यह एक मामूली दृश्य है
सड़कों पर रोज–ब–रोज
बढ़ रही होंगी शोभायात्राएँ
शोभायात्रा के सामने विजय रथ पर
दमकता हुआ निशान
खून की बूंदों का।"

शुभश्री शुभस्मिता मिश्र की नई किताब 'अग्नि सरस्वती' में नारी के मन, प्राण और आत्मा की अभिव्यक्ति है। नारी के मन और प्राण की आग को कवयित्री ने कविता में अंकित किया है। इस संग्रह की प्रत्येक कविता में दहन और स्फुलिंग है। प्रेम और जीवन की अनेक विडंबनाओं को कविता के साँचे में असरदार तरीके से प्रस्तुत करने में कवयित्री को सफलता मिली है। कवयित्री ने प्रेम के बारे में कहा है–

"मैं एक आदमी खोजती हूँ प्यार करने के लिए
मुझे मिलती है एक देह
बलवान, सुंदर और सरल
लेकिन एक आदमी और एक देह
यह क्या बात हुई?"

कहना चाहिए कि देह से परे प्रेम की खोज करती है कवयित्री। बाहर से दिखने वाली वस्तु प्रेम नहीं है। कवयित्री के लिए अंतःकरण में प्रेम का निवास होता है।

'अप्रस्तुत मृत्यु' कवि आशुतोष परिड़ा का नवीन कविता संग्रह है। कवि ने अपने समय और समाज को इस संग्रह में मूर्त किया है। समाज में पसरी खामोशी से कवि–मन व्यथित है। कवि ने कहा हैः–

"मृत्यु की भाँति निर्मम है नीरवता
सिर झुकाकर चलते हैं लोग सड़क पर

चेहरे छिपाए शब्दों के साथ
किसी कल्पलोक की खोज में कविता
धुएँ की तरह उड़ना होता है स्वप्न में।"

न केवल खामोशी बल्कि जो कोलाहल भी सुनाई पड़ता है वह केवल शैतान का स्तुतिगान। सबसे सस्ता है मनुष्य का जीवन। इसलिए कवि भगोड़े का विषाद गीत प्रस्तुत करता है। इस तरह कुल छप्पन कविताओं में कवि की काल सजगता का सुंदर परिचय मिलता है।

कोरोनाकाल के अनेक दृश्यों का मर्मस्पर्शी चित्रण कवि रविनारायण सेनापति ने अपने कविता–संग्रह 'एकांतवास' में प्रस्तुत किया है। कोरोना कालीन भयंकर अंधकार के बाद कवि ने प्रकाश का, मृत्यु से जीवन का चित्रण करते हुए अपनी जीवन दृष्टि का परिचय दिया है। सेनापति की कविताओं में मानवीय संवेदना, सौहार्द, सामाजिक मूल्यबोध आदि का सुंदर चित्रण हुआ है।

कवि सरोज महापात्र की पुस्तक 'पुण्यरोध' में कविता–नायक तमाम षडयंत्रों से मुक्ति की कामना करता है। वह जीवन को अपने ढंग से, अपनी शर्त पर जीना चाहता है । संग्रह की लगभग सत्तर कविताओं में से 'नदी' और 'मुखौटा'(मुखा) सर्वाधिक पसंद की गई हैं। 'नदी' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं.

"कभी–कभी निस्तब्ध रात में
रोती है नदी
स्थिर होने पर
गोद में लिए चाँद को
एक बेवकूफ लड़की है नदी
समझा नहीं पाती है ठीक से
अपना दुःख"

'पल्लवी नायक की जितनी सारी अकविता' पल्लवी नायक की कविताओं का संग्रह है तो 'हवा गाती है जीवन गीत' अंतर्यामी मिश्र की कविता पुस्तक है। इन दोनों संग्रहों की कविताएँ जीवन की विविध भावभूमियों को उजागर करती हैं। कविताएँ पठनीय हैं और प्रभावशाली भी। मनोज कुमार दाश की 'संलाप' शीर्षक पुस्तक में फूल, तितली, तूफ़ानी रात, जीवन–यंत्रणा का सुर, कल्पना और यथार्थ आदि का सुंदर चित्रण हुआ है। 'संज हेले वर्षा' (साँझ होने पर बारिश) कवयित्री विजयलक्ष्मी परिड़ा की कविता पुस्तक है। इनके लिए समय सीढ़ी पर खड़ा है। स्त्री जीवन में सुरक्षा की महत्ता तथा स्त्री मनोविज्ञान को अंकित करनेवाली संग्रह की अनेक कविताओं में

कवयित्री का सामर्थ्य प्रतिपादित हुआ है। स्त्री जीवन की पीड़ा, असहायता और अपमान के साथ–साथ स्त्री स्वाभिमान को अभिव्यक्त करने में विजयलक्ष्मी की कविताएँ प्रभावी हैं। कवयित्री की कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धत हैं।

"जिस दिन चाँद टकराकर
दो टुकड़ों में बँट गया।
गाँव के रास्ते पर
अनजाने ही मैं मुस्कराई थी
अब कंक्रीट के जंगल में
बिजली कट जाने पर भी
चाँद नहीं आता मुझसे मिलने
उसी पुराने गुस्से के चलते।"

'ब्लैक इगल बुक्स' अमेरिका भी पिछले कुछ वर्षों से ओडिया साहित्य को संपन्न तथा समृद्ध करता आ रहा है। साहित्य की तमाम विधाओं पर केंद्रित पुस्तकों के प्रकाशन से इस प्रकाशन गृह का महत्व बढ़ा है। स्तरीय पुस्तकों के कवि दीनबंधु साहू की 'योगी चरित' में पचास से अधिक कविताएँ संकलित हैं, इन कविताओं में कवि की पीड़ा और उसके दुःख की अभिव्यक्ति है, लेकिन कवि पीड़ा, दुःख और कष्ट का गायक बनकर नहीं रहना चाहता है। उसकी इच्छा है कि पृथ्वी से पीड़ा समाप्त हो। वंशीवादक से कवि का आग्रह है.

"वंशीवादक
तुम्हें तो पता है ध्वनिसिद्ध आवाहन मंत्र
सुषुप्ति से जागृति का सूत्र
आओ, फिर से सुगंधित कर लें नीरस निशा
रजनीगंधा की जीवंत पुलक से
सिहरन का संचार कर जीवन को जगाओ।"

वरिष्ठ कवि हुसैन रविगांधी का नया कविता–संग्रह 'मुक्त पूर्वाशा ओ अन्यान्य कविता' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कवि की कविताओं के साथ–साथ विश्व की कई भाषाओं की रचित और कवि द्वारा अनूदित कविताएँ भी संकलित हैं। मनुष्य को चाहिए एक सुंदर जीवन। लेकिन अंधकार और अव्यवस्थाएँ सर्वदा रोड़ा बनकर खड़ी हो जाती हैं। इन्हें पार कर जाना अथवा रास्ते से हटा देना आसान नहीं होता है। इसके लिए क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता होती है। मेहनतकश लोगों के यथार्थ चित्र हुसैन रविगांधी की कविताओं में अंकित हुए हैं। उनके संघर्ष और स्वप्न

कविताओं में बार–बार चित्रित होते हैं। उनके स्वप्नों को पैरों से कुचलने वाली मनुष्य विरोधी शक्तियों का मुखौटा उतारते हुए कवि ने कहा है–

"खो गए जाने कितने कुसुम उम्मीदों के
बस खोई नहीं
हँसती–मुस्कुराती मुखौटे लगाकर नाचती रही शैतान राजनीति
कपट, मंत्रणा के रंग खूब घुले–मिले
अखबारों में छपा है
नेताओं का घड़ियाली रोना।"

उल्लेख किया जा सकता है कि कवि की दृष्टि संघर्ष और क्रांति तक सीमित नहीं रही। उसकी दृष्टि का प्रसार प्रकृति और पर्यावरण तक है। कवि मानो अपनी जीवन दृष्टि का परिचय निम्नलिखित पक्तियों के माध्यम से प्रदान करता है–

"मुझे दरकार है जीवन, जरूरत है मनुष्य
मुझे प्रयोजन है प्रकाश, जल भी
खुली हवा की पुड़िया चाहिए
और चाहिए एक फूल भी।"

संग्रह की कई कविताओं में कवि मनुष्य के लिए मतवाला है । उसे तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य और मनुष्यता पर अगाध आस्था और विश्वास है।

कार्तिक स्वाईं का काव्यग्रंथ 'ठिकणा खोजुथिबा मणिष' (पता ढूंढ़ने वाला आदमी) चर्चित रहा। पता ढूंढ़ने वाला आदमी सचमुच बड़ा अकेला होता है। अकेलेपन की स्थितियों को कवि ने इस संग्रह में उकेरने का प्रयास किया है। अकेलेपन के दौरान बैरंग पलों का चित्रण किया गया है। कार्तिक की कविताओं में विदाई के पल और स्मृति पर आधारित चित्र अत्यंत जीवंत प्रतीत होते हैं। जीवन और स्वप्न को छूने की अभीप्सा परिलक्षित होती है.

"मैं पक्षिराज घोड़े पर सवार
छूने को तत्पर जीवन स्पंदन।"

'भाव विभव' कविता पुस्तक तपस्विनी मिश्र की है। कवयित्री की रचनाओं की मूल संवेदना है प्रेम। उनके शब्दों में प्रेम और पुलक, बंधन और मुक्ति के प्रलेप हैं। उनका प्रेम स्त्री–पुरुष के बीच सीमित न होकर अलौकिकता के स्पर्श की सिहरन से युक्त है। संग्रह की कविताओं में जीवनबोध का अंतरंग उच्चारण भी प्रतिबिंबित हुआ

है। कवयित्री की कविताएँ जितनी स्वप्नमय हैं, उतना ही यथार्थ की ठोस जमीन से परिचित कराती हैं। कोरोनाकालीन जीवन–यथार्थ के चित्र भी सुंदर ढंग से उकरने में कवयित्री को अच्छी सफलता प्राप्त हुई है।

कवि सरोज बल का 'रातिर बति' (रात की बत्ती) एक उम्दा कविता संग्रह है। अकेलेपन की त्रासद स्थिति में भी उत्सवधर्मी समय से भेंट इस कवि की अनन्यता का प्रतीक है। कवि अतीत को पीछे छोड़कर नहीं, बल्कि वर्तमान में भी अतीत को सम्मिलित करते हुए हृदयस्पर्शी कविताएँ सृजित करता है। कवि की जीवनदृष्टि उनकी 'रात की बत्ती' शीर्षक कविता की निम्नलिखित कुछ पंक्तियों से स्पष्ट परिलक्षित हो सकती है–

"जीवन की सबसे अँधेरी रात में
इस बत्ती की तरह निराशा को
आलोकित करते हैं प्रियजन
चौंका देते हैं बिना माँजे–घिसे मन को
सूखी दाल पर उगा देते हैं पत्ते
ज्वालाओं की दोपहर में प्याऊ।"

इस संदर्भ में कवि प्रहलाद शतपथी के कविता संग्रह 'शब्दरे निःशब्द' (शब्द में निःशब्द) में अभिव्यक्त अकेलेपन का चित्रण मेल खाता है। अकेलेपन को अपनाकर कोलाहलमय पृथ्वी में अपने भाव–राज्य की रचना करता है प्रहलाद शतपथी का कवि। कवि ने अपने भोगे हुए यथार्थ को शब्दों में रूपायित किया है। लगभग पचास कविताओं से संपन्न इस पुस्तक की कुछ पंक्तियों के माध्यम से कवि की जीवन–दृष्टि प्रतिफलित हो सकती है.

"अब मैं शब्दों के पास जाऊँगा
छूऊँगा, सहलाऊँगा, महसूस करूँगा उन्हें भी
आजकल मनुष्य महज एक शब्द है
पर.....अप्रासंगिक है अब मनुष्य।"

'किछि कविता किछि निरबता' (कुछ कविताएँ कुछ खामोशियाँ) मनोरंजन साहू की कविता पुस्तक है। इस संग्रह की खूबी यह है कि मनोरंजन ने ओडिया साहित्य के कुछ अत्यंत लोकप्रिय और महत्वपूर्ण पात्रों और चरित्रों को शब्दचित्रों में उतारा है। 'दृश्य बिंब प्रस्तुत करने में इस सर्जक ने अपनी विशेष छाप छोड़ी है। मौन को शब्द–रूप देनेवाले कवि ने जीवन और दर्शन को कविता के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाशीलता की एक बानगी देखी जा सकती है 'उस दिन सुबह' कविता की पंक्तियों के माध्यम से–

"देखता हूँ कामगार औरत जंजालों से व्यस्त
हाथ में छोटा–सा हैंड बैग
उसके अंदर है
फोल्डिंग छाता
पसीने पोंछनेवाला एक छोटा तौलिया।"

वरिष्ठ कवि अमरेश पट्टनायक ओडिया कविता के प्रतिनिधि कवि हैं। 'चाहो या न चाहो' शीर्षक अपने अद्यतन कविता–संग्रह में कवि ने जगन्नाथ संस्कृति और जगत को ही संपूर्ण मानव सभ्यता की जीवन–यात्रा का वर्तमान और भविष्य कहा है। इसे गति और प्रगति के रूप में भी स्वीकार किया है। लेकिन उनकी काव्यधारा में ठहराव नहीं है। उनका काव्य–नायक अकल्पनीय घटनाओं और दुर्घटनाओं के पश्चात् युगांतकारी परिवर्तन का साक्षात्कार करता है। उसने अपने संसार को धर्म, जाति, वर्ण, अर्थनीति, राजनीति, संस्कृति, विज्ञान, साहित्य आदि में प्रतिफलित होते हुए देखा है। विध्वंस की गहन लीलाओं से नवपल्ल्वों के उन्मेष को परिलक्षित किया है। किसी निश्चित धारा में बहते जाना अमरेश पट्टनायक के काव्य–नायक को पसंद नहीं है। बावजूद इसके उनकी कविताओं में जीवनानुभवों की सफल अभिव्यक्ति है। वह मुक्तिकामी है। इसलिए तमाम बंधनों की गाँठें खोलने में वह डूबता रहता है। इस कविता–संग्रह में शब्द, संवाद, संरचना तथा शैली में तरह–तरह के प्रयोग कवि–सामर्थ्य के परिचायक हैं।

कवि कमलकुमार मोहंती का कविता संकलन 'हृदय राग' में पचास से अधिक कविताएँ संकलित हैं। जीवन के विभिन्न लम्हों को अत्यंत कलात्मक ढंग से व्यक्त करने में कवि को सफलता हासिल है। इस कविता–संग्रह में स्वप्न भंग का चित्रण है तो बार–बार जीवन को दग्ध करने वाले भावों की जीवंत अभिव्यक्ति भी। काव्यपुरुष के मन की व्यथाएँ कभी जीवन केंद्रित हैं तो कभी देश, काल, वातावरण केंद्रित होकर कविता के साँचें में प्रस्तुत हुई हैं। कवि ने स्वप्नभंग का दृश्य बिंब प्रस्तुत करते हुए कहा है–

"जब समझा कि फटी बाँसुरी की धुन से
ध्वस्त हो चुका है फागुन
किसी ने पकड़ा दिया उस दिन से
केंदरा और योगी का उदास गीत
खींचे लिए जा रहा है आज वह मुझे
धीरे–धीरे माटी से अस्ताचल

मेरे सपने बदल रहे हैं

आह, कितने बदरंगों में।"

यशोवंत सेठी की 'अस्तलग्ना' शीर्षक कविता पुस्तक संबंधों के वैविध्य को रेखांकित करती है। रिश्ते कहीं टूटते हैं तो फिर कहीं वे बनते हैं। कभी सघन अंधकार तो कभी प्रकाश से जाज्वल्यमान। 'रक्त सेचन' कविता में कवि के भावबोध से परिचित कराने वाली पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं–

"रिश्ते का मतलब भला तू क्या समझे

जानती भी नहीं किंतु

किसके रक्त की बूँदों से

शृंगार रची हो

लगाकर मेहंदी अपने हाथों में।"

लेकिन ऐसा नहीं है कि यशोवंत सेठी की कविताओं का नायक स्त्री–पुरुष के रिश्तों तक ही सीमित है। यह संबंध समाज के विविध परिप्रेक्ष्यों में भी रूपायित हुआ है। वह चाहता है कि उसके सभी अनमोल अंग–प्रत्यंग सामाजिक उन्नयन के लिए उत्सर्गिकृत हैं। वैयक्तिक और सामाजिक संबंधों की मजबूती से सही मायने में विकास का मार्ग उन्मुक्त हो सकता है, जहाँ ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि का कोई स्थान न होगा।

अपर्णा मोहंती की कविताएँ अँधेरे से मुक्ति की कामना करती हैं। इस कथन को सिद्ध करता है उनका सद्यः प्रकाशित कविता–संग्रह 'निआँ नई मझिरे' (आग की नदी में)। कहाँ तक हम प्रेम से परिचित हैं ? कवयित्री ने प्रेम से हमें परिचित कराते हुए कहा है–

"प्रेम की पहली शर्त

सत्य

प्रेम का परमार्थ

सत्य

प्रेम का चरम स्वार्थ

सत्य।"

इसलिए इस प्रेम के सामने ईश्वर भी कुछ नहीं है। प्रेम की ऊँचाई कभी–कभी ईश्वर को भी लाँघ जाती है। बिना हृदय के प्रेम की प्राप्ति असंभव है। प्रेम केवल हृदय की भाषा ही समझता है। अपर्णा मोहंती की प्रेम चेतना में देहातीत यानी देह से परे प्रेम का महत्व है। उनकी कविताएँ आध्यात्मिक उपलब्धि और उत्कर्ष की ओर उन्मुख हैं। उनकी कविताओं से गुजरकर पाठक के हृदय का आयतन व्यापक होता है। मनुष्य

के अंदर भरी पड़ी हिंस्रताओं को हटाकर ओंकार भर देना कवि का प्रयोजन प्रतीत होता है। कवि का आग्रह है कि हम आनेवाली पीढ़ी के लिए गंदगीमुक्त पृथ्वी निर्मित करने को अपना परम उद्देश्य मानें। इस संदर्भ में 'कोई तो स्वप्न देखो' कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

"अब सत्य की तरह स्वच्छ
नवजातक का प्रथम पद धरने के लिए
दो पग अपराध विहीन
भूमि कोई तो सजाकर रखो।"

'अधा अधा नीरवता' यानी आधी आधी खामोशी कवयित्री माधुरी पांडे की अद्यतन कविता पुस्तक है। जीवन को जीवन की तरह अपनाया जाना चाहिए। उसे जीवन की तरह मुक्त भी कर दिया जाना चाहिए। इस मुक्ति के सुर में कवयित्री ने सुख को अन्वेषित किया है। चाहे कुछ घटित हो या नहीं, दृश्यमान हो या नहीं लेकिन वह भी जीवन तथा अनुभव को समृद्ध करता है। नीरवता और कोलाहल मिट्टी तथा जल की तरह प्रेम सुमन को प्रस्फुटित जीता है, आर्द्र बनाता है–

"हाँ, यहाँ एक नीरव रहता है
दूसरा प्रेम तड़ाग में
शतदल चुनने में विह्वल रहता है
लेकिन यहाँ कुछ घटित नहीं होता।"

कविता नायिका नीरवता को आभूषण की तरह धारण करती है। यह जितनी गहरी होती है, रात जितनी ही सघन होती हैं। तारे जब पलक मूँद लेते हैं माधुरी की नायिका अपने प्रियतम को गहराई से छू लेती है। ऐसा प्रतीत होता है कि माधुरी की कविता की भावभूमि में खूबसूरत बेल की तरह नीरवता पसरी हुई है। इस संदर्भ में कवयित्री सुप्रिया पांडेा की कविता पुस्तक 'अमृत आश्लेष' का भी उल्लेख किया जा सकता है। 'नीरव रंग' शीर्षक कविता में कवयित्री ने लिखा है–

"समझौता न सीखा तो जीवन जिया नहीं जाता
खुद रंग न भरे तो आंगन के फूल फीके पड़ जाते हैं–
रोज–ब–रोज न लगे
तो क्या सब्जी स्वादिष्ट होगी ?"

अहंकार भी नश्वरता, ईश्वर प्रेम के साथ जीवन के उत्थान–पतन, सुख–दुःख, स्वप्न और स्वप्नभंग को कवयित्री ने अपना काव्य–विषय बनाया है।

मौसुमी दास की लगभग पचास कविताओं का नया संग्रह है 'बुढ़िआणी घर'

(मकड़ी का घर)। स्त्री अस्मिता को बार–बार पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। अपने जीवन और जगत के तमाम दुःख और यंत्रणाओं को कविता में उकेरती है मौसुमी दास। स्मृति, भविष्य की कल्पना आदि को भी आधार बनाकर कविताएँ रची गई हैं।

'एका एका वर्षा मिश्र' (अकेली अकेली वर्षा मिश्र) अभिराम दास का प्रसिद्ध कविता संकलन है। इस पुस्तक में कवि की प्रेम चेतना को संकेतित करने वाली कविताएँ हैं। इस संग्रह की खूबी और कमी यह है कि लगभग सभी कविताएँ प्रेम पर आधारित हैं। प्रेम का व्यापक परिदृश्य का इस संग्रह में अभाव है।

'निःशब्द निनाद' शीर्षक कविता संग्रह भरत बेहेरा का है। कवि ने आम आदमी की व्यथा को कविता के साँचे में अभिव्यक्त किया है। इस व्यथा को भी कवि ने मलहम की तरह अंतरंगता के साथ चित्रित किया है। निःशब्द से शब्द को समेटने वाले कवि ने अपने भावों और संवेदनाओं को मर्मस्पर्शी रूप से प्रस्तुत किया है। 'नगरवधू' कविता की काव्य पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती है–

"वैशाली की संशय भरी दृष्टि में
शायद तुम होगी रूपजीवी, देहजीवी
पतिता, गणिका
लेकिन तथागत की तरल दृष्टि में
तुम्हारा मन था गंगा से पवित्र
नजर थी आईने से अधिक अम्लान
हृदय भरपूर था भीगे–भीगे प्रेम से"।

कवि सारथी पांडेा की काव्य–पुस्तक 'तुमे कि ईश्वर' (क्या तुम ईश्वर हो) में मनुष्य के हृदय को पुलकित कर देने वाले मुहूर्तों को रूपायित किया गया है। इनका प्रवाह स्वप्न में भी बना रहता है। इस संग्रह की कविताओं में अतीत जीविता भरपूर है। स्मृतियों को कविता में मूर्त करने का प्रयास है। अच्छा होता यदि अतीत को वर्तमान के संदर्भ में चित्रित किया गया होता।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की युवा पुरस्कार सहित दर्जन से अधिक पुरस्कार प्राप्त गायत्रीबाला पांड़ेा पिछले कुछ वर्षो से अपनी रचनाशीलता के लिए ख्याति और प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी हैं। कविता, कहानी और उपन्यास विधाओं में अपनी खास पहचान बनाने में सफल रहीं गायत्रीबाला का कविता संग्रह 'प्रार्थना र शब्दपरि' (प्रार्थना के शब्द जैसे) ओडिया कविता को संपन्न करता है। इन कविताओं में मनुष्य और जगत के प्रति व्यक्त संवेदनाएँ पारंपरिक नहीं हैं, अभिनव हैं। जीवन की छोटी–छोटी उपलब्धियों को कविता में सफलतापूर्वक अभिव्यक्त करने में गायत्री का कवि–सामर्थ्य है। इस संग्रह की कविताओं से आकाश की विराटता, पृथ्वी

की विशालता, जीवन में सूक्ष्मता को महसूस किया जा सकता है। आम पाठक उनकी कविताओं में विशिष्ट भावबोध प्राप्त करता है। अब तक प्रकाशित उनके दर्जन भर कविता संग्रहों में से इस नए संग्रह को पाठकों ने अत्यधिक प्रेम दिया है। इस संग्रह में कवयित्री ने कल्पना और यथार्थ का सुंदर समावेश किया है।

प्रदीप बंध की कविताओं का संकलन है 'छाइ संजर कविता' (साँझ की परछाई में कविता)। इस पुस्तक में बदलते समय में वेदना की बिंबात्मक अभिव्यक्ति है। विषाद, वेदना और दुःख को पार करने का विश्वास और भरोसा भी अभिव्यक्त हुए हैं। इस तरह के भावबोध से भरपूर चिंतामणि महालिक की पुस्तक 'नीरव नक्षत्र' भी है। लगभग भुला दिए गए पलों और चरित्रों को कवि महालिक ने सुंदर ढंग से मूर्त किया है। प्रदीप बंध की कविता में ग्रामीण मनोभाव का चित्रण है। शहर अथवा महानगर में रहने के बावजूद इनकी कविता का पुरुष मानवीय गुणों से भरपूर रहता है। रिश्तों की ऊष्मा और प्रेम के बंधन की ओर प्रदीप की कविता बार–बार पहुँचना चाहती है। लेकिन इनकी कविताएँ केवल आवेगधर्मी नहीं, सामाजिक यथार्थ को रूपायित करने में भी सफल रही हैं। 'महाअंघ रावणरूपी समाज' से मुक्ति का आग्रह भी परिलक्षित होता है।

ओडिया कविता की संपन्नता और समृद्धि के मूल में मौलिक कविता पुस्तकों की जितनी भूमिका है, उतना ही योगदान विश्व की तमाम भाषाओं के साथ–साथ भारतीय भाषाओं की काव्य पुस्तकों को ओडिया अनुवाद का भी रहा है। काव्यानुवाद की यह परंपरा ओडिया साहित्य में शताब्दियों से चली आ रही है। इसी क्रम में वरिष्ठ हिंदी कवि माधव कौशिक की 'मोमबत्ती की शोभायात्रा' का ओडिया अनुवाद 'महमबती शोभायात्रा' प्रकाशित है। इस कविता संग्रह में माधव कौशिक की समय सजगता सशक्त रूप में उभरी है। अराजकता, अनाचार, भ्रष्टाचार से कविता का नायक व्यथित है। लोकतंत्र पीड़ित है। आम आदमी के दुःख, वेदना, असहायता और निराशा के साथ–साथ उसके स्वप्न, परिवर्तन, नैतिक दायित्व और उम्मीदों को माधव कौशिक का यह संग्रह उजागर करता है। इस अनूदित पुस्तक से गुजरकर मूलकृति का स्वाद मिलता है। अनुवादक प्रसन्न कुमार बराल का अनुवाद प्रामाणिक एवं अत्यंत रोचक है।

अतः कहा जा सकता है कि ओडिया कविता बहुरंगी है। विविध संवेदनाओं से समृद्ध है। वैविध्यमयी है। विविधता कांटेंट में है और फ़ॉर्म तथा स्टाइल में भी। 2022 की ओडिया कविता संपन्न और समृद्ध है। उल्लेख किया जा सकता है कि संपूर्ण भारतीय कविता में इस वर्ष की ओडिया कविता का उल्लेखनीय स्थान होगा।

❑❑❑

4

कन्नड़ साहित्य



टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'
हिंदी अंग्रेजी और कन्नड में लेखन और अनुवाद–कार्य। प्रमुख कृतियाँ– 'आधुनिक हिंदी कविता पर गांधीवाद का प्रभाव', 'कन्नड और हिंदी साहित्य का तुलनात्मक।

इस वर्ष में प्रकाशित कन्नड़ कृतियाँ– मौलिक, अनूदित और साहित्येतर भी वैविध्यपूर्ण होकर कन्नड़ की श्रीवृद्धि में अहं भूमिका निभाती हैं। ये कृतियाँ रोचक, भावनाप्रधान ही नहीं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक भी हैं। अंतर्जाल, वेब–पुस्तकें और वेब पत्रिका के संदर्भ में भी पाठकों की संख्या बढ़ रही है। 2022 के प्रकाशित साहित्य को देखने से लगता है कि वे नई पीढ़ी के पाठकों को आकर्षित कर रही हैं। युवा साहित्यकारों की रचनाएँ पाठकों में जीवन के यथार्थ को बिंबिंत करने में प्रयासरत है।

2022 में साहित्यकार प्रशस्ति/पुरस्कारों से नवाजे गए। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यासकार एस.एल. भैरप्पाजी 'पद्मभूषण' से विभूषित हुए। 2022 का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार श्री तम्मण्ण बीगार जी को उनकी रचना 'बावलि गुडे' (बावली गुडा) उपन्यास के लिए मिला है।

2022 की नृपतुंग प्रशस्ति प्रसिद्ध कन्नड़ लेखिका वैदेही जी को प्राप्त हुई है। प्रशस्ति सात लाख रूपए नकद पुरस्कार के साथ है। यह उनकी समग्र साहित्य रचना योगदान के लिए है।

कविता

2022 में प्रकाशित काव्य कृतियों में उल्लेखनीय हैं– मुक्तायक्का की 'निनगागी बरेद कवितेगळु' (तुम्हारे लिए रची कविताएँ), डॉ. तारिणी शुभदायिनी की 'विवेकिय स्वगत' (विवेकी का स्वागत), बाल कविताओं में एच.एस. वेंकटेशमूर्ति की 'गुब्बी जंक्शन', अरीफ राजा की 'एदेहालिन पाळि' (स्तन्य दूध की बारी) और प्रतिभा नंदकुमार की 'अवन मुख मरेतु होगिदे' (उसका चेहरा याद नहीं)।

श्रीमती बी.ए. ममता का कविता संकलन 'नीर मेलिन मुत्तु' (पानी के ऊपर काँटा) में 50 कविता गुच्छ है। 'अम्मा' से लेकर 'गांधी' तक विभिन्न विषय पर कविताएँ हैं। यहाँ व्यंग्य देखिए 'हममें कोई फर्क नहीं, रोज़ संघर्ष के मेलजोल में।'

''फ़र्क तो कुछ नहीं, तारतम्य भी नहीं
हम सब एक हैं यहाँ, जातिवर्ग धर्म भी
तौलता है एक ही समानता के तराजू में
रोज़ तोड़–फोड़ संघर्ष के मेलजोल में।''

'मत्ते मत्ते हेगे हाडली' (बार बार कैसे गाऊँ) श्री संतेबन्नूर फैज्नट्राज की 46 कविताओं का संग्रह है। इनकी अब तक की काव्य–रचना से कविता–लोक रम्य हुआ है। कविता द्वारा कवि ने हृदय को विशाल बना दिया है। सबके साथ जीने की तमन्ना कवि ने व्यक्त की है। ये कविताएँ बार–बार उद्वेलित करती हैं और एक से एक प्रबुद्ध होने की कोशिश करती हैं। ये कविताएँ पाठकों के आप्त होने का गुण रखती हैं।

'समाधिगळु प्रतिभटिसुवुदिल्ल' (समाधियाँ विरोध नहीं करती)' श्री टी. एस. लवकुमार का काव्य संकलन है। कवि के मन में कोलाहल बढ़ा है। कवि ने अपने आंतरिक संघर्ष को कविता में अभिव्यक्ति देने की कोशिश में सफलता पाई है। प्रस्तुत में जो हो रहा है उसके लिए विषाद और व्यंग्य रूप में उत्तर दिया है।

'अवन मुख मरेतु होगिदे' (उसका चेहरा याद नहीं) अनेक प्रकार की विस्मृतियों को ध्यान करने की कविताओं का संकलन है। यहाँ दो प्रकार की विस्मृतियाँ हैं। एक तो मनुष्य के मनुष्यत्व का चेहरा जब खो जाता है और उसमें एक विकृति का ज्वार बढ़ता है तब उसमें पहले जो रही होगी उन मनुष्यत्व की स्मृति पर यहाँ की कविताएँ हमारा ध्यान खींचती हैं। दूसरी ओर मनुष्यों में बातों की परत घिसकर जब बदबू निकलती है, तब वागर्थ लोक विस्मृति में छिप गया हो ऐसा दिखनेवाले की ओर भी कविताएँ इशारा करती हैं।

यहाँ की कविताएँ समकालीन जगत के दुःख और भाषा दोनों को पहचानती हैं। इन पंक्तियों को देखें–

''क्लीषा बन गया है दुःख/प्रास के लिए भी हाथ नहीं लगते।
इकार या अकार से भी मिलते नहीं। छोड़ देना अच्छा है।
उसके बदले में सुख शब्द का उपयोग कितना अनुकूल है''
(यह गौरी सुख)

अब बोल, अभिव्यक्ति खोकर जड़ होते देख कवयित्री कहती हैं–

''बोल पुराने अविशिष्ट हैं/घिसते ही नहीं
यहाँ अनकही बातें, अनकिए कृत्यों का
भारी शिकारों का ..... (भाग जाएंगे)''

प्रतिभा नंदकुमार जी की कविता की जीवंतता इसी में है कि जो उनको लगता है उसे कह देने में आंतरिक विद्रोह का स्वर प्रधान है।

नव कवियों में प्रो. आर. देवय्या का 'परिमल', श्री आर. सदाशिवय्या जरगनहत्त्ळी का 'वसंत कुसुम', बी. एल. श्रीनिवास का 'नादमय' और श्री बी. शृंगेश्वर का 'अप्पन बेन्नेरी' (बाप की पीठ पर) तथा 'अभिनव लिमरिक्स' सैकड़ों पंचपदी संग्रह; पठनीय हैं।

शृंगेश्वर जी का 'लिमरिक्स' सुनिए–
पहले दो पंक्ति अंत में समव्यंजन
तीन और चार में अन्य प्रास पाद भंजन
फिर छेद नहीं
ज़रा भी भेद नहीं
पहले दो की गति में ही पाँचवे का जनन।
उनकी लिमरिक्स 'आकाश दर्शन' भी पढ़ लीजिए–
''आसमान को देखने धक्कामुक्की
कोई छिपाव नहीं सब कुछ खुला
फिर भी टूट पड़े
क्यू में प्रतीक्षारत थे
प्लानिटोरियम में प्रवेश पाने।''

'बाप की पीठ पर' संकलन में शृंगेश्वर जी का 'चुंबन सोपानं' पढ़ना ही है–

प्रथम चुंबनं/ऊहा दंत भग्नं!
द्वितीय चुंबनं/सुस्वप्न स्निग्धं!
तृतीय चुंबनं/प्रेमालाप मग्नं!
चतुर्थ चुंबनं/कुटुंब संतोषपूर्ण!
पंचम चुंबनं/कुटुंब कटिबद्धं।
षष्ठ चुंबनं/ वैमनस्य युद्धं!

सप्तम चुंबनं/संसार सार वेद्यं!
अष्टम चुंबनं/जीवन दर्शन ह्रद्यं!
नवम चुंबनं/तारक झगड़ा क्रुद्धं।
दशम चुंबनं/जीव दग्धं।
चुबनावलंबितनात्यं/अपना अर्जित प्रारब्धं!

सोने मळे (रिमझिम वर्षा) डॉ. श्रीलता जी की छोटी कविताओं का संकलन है। लेखिका ने इससे पहले दो कविता संकलन, एक कहानी संकलन तथा एक उपन्यास प्रकाशित किया है।

नाने सुखी (मैं ही सुखी हूँ) की तीन पंक्तियाँ देखिए
''खिला गुलाब/ काँटों के बीच होने पर भी/
मैं ही सुखी कहकर हँस रहा था।''
'रिमझिम वर्षा' में प्रिय के साथ के क्षणों की याद–
''जब भी रिमझिम वर्षा होती है/
तुम्हारे संग प्रेम वन में/
वर्षा की बूँदों से खेलने की याद।''

बाल कविता के अंतर्गत डॉ. एच.एस. वेंकटेश मूर्ति की रचना 'गुब्बी जंक्शन और डॉ. चिंतामणि कोड्ली केरे की रचना 'ओके मेके' उल्लेखनीय है। बंसत बाल साहित्य माला के अंतर्गत डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति जी ने 12 कृतियों का संपादन किया है। उसमें के. वी. तिरुमलेश की 'पुट्टन मने' (पुट्टा का घर), वैदेही की 'धांधूं सुंटर गाळि' (धांधूं तुफान), एच. दुंडीराज की 'काळीगुड्डद कौतुक (काळी टीले का कौतुक), टी. एस. नागराज शेट्टी की 'नरियण्णान अंगडी' (सियार भैय्या की दुकान) आदि हैं।

नाटक

2022 में प्रकाशित नाटकों में उल्लेखनीय हैं– चंद्रशेखर कंबार जी का 'मातो श्री मादक', डॉ. बी. के. होसमठजी का 'ग.हु. होनापुर दर्शन' डॉ. हेमा पट्टन शेट्टी का 'रक्त पुष्प मत्तु इतर नाटकगळु' (रक्त पुष्प और अन्य नाटक) तथा वैदेही रचित वैदेही मक्कळ नाटकगळु (वैदेही बाल नाटक)।

'सबरद बीदीनाटकगळु' डॉ. बसवराज सबरद जी के बीथी नाटकों का गुच्छ है। ये नाटक कुछ समुदाय मंच पर, कुछ दूरदर्शन में प्रसारित हुए हैं। किसानों की आत्महत्या, पिछड़ी जाति की महिलाओं के लिए राजकीय अधिकार मिलने पर उनको देखने की दृष्टि पर केंद्रीय 'हनुमायण', 'रंपायण', आदि नाटक प्रसिद्ध हैं। ये नाटक मंचीय होकर रंजनीय हैं।

'वखारीधूस' श्री. डी.एस. चौगले द्वारा रचित नाटक है। इसमें तंबाकू उत्पादकों की कहानियों, श्रमिकों के शोषण और शोषितों के आक्रोश, दर्द, भूख आदि का यथार्थ चित्रण है। वखारीधूम का अर्थ हैं तंबाकू साफ़ करते समय से उड़नेवाला धूल।

कहानी

2022 में प्रकाशित कहानी–संग्रहों में उल्लेखनीय हैं सविता नागभूषण रचित 'अज्जि करेद हागायितु' (दादी पुकार रही हो ऐसा लगा), चिदानंद सालि जी का कथा संकलन 'होगेय होळे यिदु लिळियदु' (धुएँ का प्रवाह है, पता नहीं), एन. नारायण बल्लाळ का छोटी कहानीसंकलन 'बीडिन धर्म दृष्टि', और नए कथाकारों का कथा–संग्रह 'यारू बरेयद कथेगळु (कोई न लिख सके ऐसी कहानियाँ)।

'भूमिय ऋण' (भूमि का ऋण) शोभा गुन्नापुर द्वारा रचित कहानियाँ हैं। शोभा जी की कहानियाँ सांस्कृतिक स्त्रीवाद पर केंद्रित हैं। गाँव के जीवन के अनुभवों को लेखिका ने कहानियों में बुना है। यहाँ की कहानियाँ स्त्री की सहनशीलता का अनावरण करती हैं।

अमरेश गिणिवार जी का 'बांग्लाद हक्किगळु' (बांग्ला की चिड़ियाँ) आठ कहानियों का संकलन है। कहीं से आकर यहाँ बसे यहाँ से उड़कर जा भी नहीं सकते। यहाँ सब कुछ सहते हैं। कथा सुनाने की शैली भी विशिष्ट है।

'सम्मिलन 2.0 मत्तु इतर 'इ' कालद कथेगळु' (सम्मिलन 2.0 और अन्य 'इ' काल की कथाएँ) पत्रकार चरण सी.एस. का कथा संकलन है। ये कहानियाँ 'इंटरनेट' काल से जुड़ी हैं। इसमें दस कहानियाँ हैं। कहानियाँ डिजिटल रिश्तों को लेकर हैं। 'सम्मिलन 2.0' में स्टार्ट अप कंपनी के लिए जन्म देनेवाले युवक की कथा है। इसमें 'नैनो' कहानियाँ भी हैं।

'देवमूलेय मळे' (देव कोने की वर्षा) कृष्णमूर्ति हनूर जी का कथा संकलन है। इसमें पिछले 40 वर्षों में रचित 25 कहानियों का संकलन है। कहा जाता है कि छोटी कहानियाँ अल्प जीवियों का महाकाव्य है। संकलन की सभी कहानियों की कथावस्तु गरीबी ही है। ग्रामीण परिवेश की कहानियाँ भी हैं। इनमें 'गंटु' (गाँठ) 'मुंजाने सिक्किद सिरि' (प्रातः काल मिली संपत्ति), 'कै तप्पिद कुरि' (हाथ से छूट गई बकरी) 'मादेवी ऊरु बिट्टळु' (मादेवी गाँव छोड़ गई), आदि में विकास के नाम पर जंगलों का नाश, मनुष्य समुदाय को वन से बाहर करना, आदि की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

'अमृतबत्ळी मत्तु इतर कथेगळु' (अमृतलता और अन्य कहानियाँ) श्री कं.क. मूर्ति जी का कथा संकलन है। इसमें 15 कथाएँ हैं। लेखक के अनुभव ही कथा में फैल गए हैं। 'मलेनाडु' (पश्चिम घाटी प्रदेश) के जीवन इन कहानियों में चित्रित हैं। इनमें 'श्रीगंध' (चंदन) और मुस्संजे (सूर्यास्त समय) उल्लेखनीय हैं।

दिब्बदिंद हत्तिर आगसक्के' (टीले के समीप आसमान के लिए) श्री कर्की कृष्णमूर्ति जी का तीसरा कथा संकलन है। इसमें आठ कहानियाँ हैं और वे एक–दूसरे से भिन्न अनुभव लोक का अनावरण करती हैं। ये कहानियाँ पाठक को भी अपने अंतर्गत करके विकसित होती हैं। ये कहानियाँ घटती हैं विदेशी स्थलों पर। परंतु उनमें मानवीय संवेदना उन सीमाओं का उल्लंघन करती है। इन कहानियों में 'काणद गेरेगळु' (अनदेखी रेखाएँ) और 'समाधि शिवु' पाठकों में कौतूहल पैदा करती हैं। कहानियों की भाषा और कथन तंत्र में विभिन्नता है।

'उदक उरिदु (जल जलकर) श्री हर्ष सालिमठ जी की 11 कहानियों का संकलन है। लेखक इंजीनियरिंग वृत्ति में आस्ट्रेलिया में रहते हुए भी ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित है। इन कहानियों में जीवनानुभव हैं। 'उदक उरिदु' कहानी विश्व में जो प्रस्तुत स्थिति है, उस पर केंद्रित है।

'नील कुरिंजि' दादापीर सैमन की पहली कथा–कृति है जिसने केंद्र साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार पा लिया। यह युवा लेखक नए प्रकार के गद्य साहित्य की सृष्टि कर रहा है। इसमें तेरु (रथ), टोकन नंबर, आवरण, मळे (वर्षा), नील कुरिंजी के साथ जालगार, तीरद ओलविन ओंटि हाडु (अतृप्त प्यार का एकला गीत) आदि पाठकों का ध्यान आकर्षित करती हैं।

'वनसुम' कथा संकलन प्रीति भरत (जवळी) द्वारा रचित है। यह उनकी चौदहवीं कृति है। घर में साहित्यिक वातावरण में पलने से और प्रोत्साहन पाने से उनका रचना संस्कार भी समृद्ध है। यह उनका तीसरा कथा संकलन है। इसमें छोटी–छोटी कहानियाँ हैं। इनकी कहानियों में जीवन का यथार्थ चित्रित है। समाज में स्त्री के प्रति जो अन्याय होता है, उसका अधिकतर कहानियों में चित्रण है।

बाल कथा साहित्य

बाल साहित्य के लिए 2022 महत्व का वर्ष है। नव कर्नाटक प्रकाशन की 'किंडर कथा' माला में कथन गौण है और दृश्य रूप के चित्र प्रधान हैं। सामाजिक और पर्यावरण की समस्या बच्चों तक पहुँचाना ही इसका उद्देश्य है। इसमें विकास आर. मौर्य की 'जै भीम' में अंबेडकर से बच्चों का परिचय कराने का प्रयत्न है।

उपन्यास

साहित्याध्ययन में दिखे 2022 के उल्लेखनीय उपन्यास हैं– उषा नरसिंगन का 'केंडद रोट्टी' (अंगारे की रोटी), मल्लिकार्जुन हिरेमठ का 'हावळि' (उपद्रव), डॉ. ना. मोगसाले का 'इद्दुइल्लद्दु' (रहने पर भी न रहना), डॉ. बाला साहेब लोकापुर का 'पुरुषावतार, डॉ. एच.टी. पोते का 'महाबिंदु', शशिधर हालाडी का 'अब्बे' और सुमंगला एस. मुम्मिगट्टी का 'बयल बेरगु' (शून्य का विस्मय)।

बहुवचन प्रकाशन से प्रकाशित 'दिगंबर' कन्नड़ के प्रसिद्ध कथाकार श्री यशवंत चित्ताल जी का अंतिम उपन्यास है। चित्ताल जी ने इस उपन्यास का आरंभ कर अस्वस्थता के कारण रोककर फिर 12 वर्ष बाद आगे बढ़ने पर भी जीते जी इसे पूरा नहीं कर पाए। कथा के संयोजन, वाक्य–रचना शब्द–चयन सब में चारुता है।

'बयल बेरगु' (शून्य का विस्मय) सुमंगला एस. मुम्मिगट्टी का महान् योगी अल्लमप्रभु के जीवन. अध्यात्म और अनुभव के आयाम में बुना उपन्यास है। वे असीम निराकार, अगोचर विस्मय का अनुभव करनेवाले योगी थे अल्लमा। संदर्भानुसार शरणों के वचनों का उल्लेख किया गया है। अल्लमप्रभु के वचन की पंक्तियाँ– 'देह में देवालय होने पर फिर अन्य देवालय क्यों?' 'गुहेश्वर, तुम पत्थर हो तो मैं कौन हूँ'. .. अल्लम के महान् अनुभवी व्यक्तित्व का परिचय करानेवाली यह औपन्यासिक कृति विशेष पठनीय है।

'मण्णिन कनसु' शतावधानी डॉ. आर. गणेश जी का उपन्यास है। इसमें 2000 वर्ष पूर्व भारत के जीवन का चित्रण है। 650 पृष्ठों का यह बृहत उपन्यास है जिसमें भारत के साम्राज्यों, गणतंत्रों के जीवन, सांप्रदायिक और लोकसाहित्य के मूल से परिचय कराने का प्रयास विशिष्ट है। संस्कृत, प्राकृत मूल की कथावस्तु को उपन्यास में लाने का प्रयत्न प्रशंसनीय है। इसमें केवल राजाओं की प्रेमकथा ही नहीं सभी प्रकार के लोगों के जीवन का और उस समय के लोक व्यवहार का चित्रण है।

श्री शिवानंद कर्की का उपन्यास 'गर्कु' (असमतल होने का भाव) में मलेनाडु (पश्चिमी घाट का प्रदेश) के जन जीवन के पुराने कैनवास का स्मरण कराता है। पर्यावरण का जो हरापन नष्ट हो रहा है और जो अरण्य नाश हो रहा है, उस पर विषाद की चर्चा यहाँ के पात्र करते हैं। पर्यावरण में जो आसक्त हैं उनके लिए विशेष पठनीय है यह उपन्यास।

'बौल' श्री एम.एस. मूर्ति का उपन्यास है जिसमें यह आशय व्यक्त हुआ है कि अंधतम कूपों से ही हमें जीवन की प्रकाशमान किरणें ग्रहण करनी है। यहाँ प्राचीन व्यक्तियों की आधुनिक संवेदनाओं के साथ पुनः सृष्टि की गई है। यहाँ भिक्कु और उसका पात्र रूपक हैं। पारिवारिक सभी जिम्मेदारियाँ निभाकर भिक्कु के मोक्ष साधने की कथा है। इस कथा ने समन्वय की बात की है कि अध्यात्म और लौकिक के बीच जीवन को वास्तविकता के समीप होना चाहिए। कार्पोरेट जगत की योजनाओं की गहराई और उद्देश्य भी यहाँ विश्लेषित हैं। ऐसी स्थिति के लिए कारण बने प्रभुत्व के विरूद्ध भी आक्रोश व्यक्त हुआ है। यहाँ भिक्षापात्र मनुष्य के जीवन के उलटफेर और अस्थिरता को प्रतिबिंबित करता लगता है।

जीवनी

'कर्नाटकद युग पुरुष पं. तारानाथरु' (कर्नाटक के युग पुरुष पं. तारानाथ) लक्ष्मीदेवी शास्त्री द्वारा रचित तारानाथ जी का जीवन वृत्तांत है। इसमें छह अध्याय हैं। पहले अध्याय में तारानाथ जी का जीवन परिचय है। दूसरे, तीसरे और चौथे अध्यायों में इस कृति के लिए आधार रूप दिखलाते रिश्तेदारों के साक्षात्कार और आत्मीय मित्रों के अभिमत भी हैं। तारानाथ जी सिर्फ 51 वर्ष जीवित रहे थे। काव्य, कथा, नाटक, वैज्ञानिक साहित्य–कन्नड़, हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में है। आप अनुवादक हैं। और आपने देश–विदेशों का भ्रमण भी किया है।

कोश–साहित्य

'लिंग–व्यवस्थेय अध्ययनदल्लि समानार्थक पदगळु' (लिंगव्यवस्था के अध्ययन में समानार्थक शब्द) आर. इंदिरा जी द्वारा संपादित शोध क्षेत्र के लिए कन्नड़ पदकोश है। समाज–विज्ञान क्षेत्र में लिंग व्यवस्था का अध्ययन विकसित हो रहा है और नए शब्दों के लिए समानार्थी कन्नड़ शब्दों के कोश की आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह स्तुत्य प्रयत्न है।

'उपकरण विश्वकोश' डॉ. एन.एन. चिक्कमादु द्वारा लोकसाहित्य जगत का तीस वर्ष कार्य करके तैयार किया गया कोश है। यह कर्नाटक साहित्य अकादमी से प्रकाशित है। इसमें उपकरणों का उल्लेख कहावत, कीर्तन, किन्नरी, पौराणिक काव्य आदि की प्रगति का विवरण शामिल किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए उपकरणों के छायाचित्रों या रेखाचित्रों की भी आवश्यकता थी। यह अभिनंदनीय कार्य है।

'अरब्बी–आर्शिया भाषा पदगळु' के लेखक हैं डॉ. कृष्ण कोल्हार कुलकर्णी। हमें ही मालूम नहीं कन्नड़ में बहुत सारे शब्द कन्नड़ शब्द के नहीं विदेशी हैं। 'तरकारी' पर्शियन भाषा से, 'अर्जी' अरेबिक से। 2000 से भी अधिक शब्द जो मूलतः पर्शियन अरेबिक में है उन्हें एकत्रित कर यह अरबी–फारसी–कन्नड़ शब्द कोश तैयार किया गया है। डॉ. कुलकर्णी जी का यह अभिनंदनीय कार्य है।

'कर्नाटक विज्ञान तंत्र दर्शन' (दो भाषों में) यह विज्ञान का कर्नाटक विश्वकोश है और इसके प्रधान संपादक हैं एम.एस. सुलेश और सहसंपादक हैं वै.सी.कमला और सुमंगला मुम्मिगट्टी। कर्नाटक का भी विज्ञान के विकास में योगदान महत्वपूर्ण है। इस प्रकार कर्नाटक का विज्ञान और तंत्रज्ञान में जो योगदान दिया गया है उसे दर्शाने का प्रयत्न ही यह कृति करती है। इस ग्रंथ में भौतिकी विज्ञान, रसायन विज्ञान, वैमांतरिक्ष तंत्रज्ञान, भू–विज्ञान और विश्व विज्ञान को बिंबित करने वाले चित्र शामिल किए गए हैं।

आत्मकथा

'मनसे नन्न मनसे' (हे मन मेरा मन) ख्यात कवि बी. आर. लक्ष्मणराव जी का जीवनानुभव–मंथन है। यह सिर्फ अनुभव नहीं, अनुभाव की छाया भी यहाँ दिखती है। कवि अंतरंग के लिए दिया दिखाते हुए कहते हैं कि अंतरात्मा निष्ट हो तो दूसरों का प्रामाणिक न होना संभव ही नहीं।

'सत्यमेव जयते' श्री शंकर बिदरी ऐ.पी.एस. की आत्मकथा है। 746 पृष्ठों के इस बृहत् ग्रंथ में लेखक जो कर्नाटक राज्य पुलिस अधिकारी रहे उनकी साहस गाथा का आत्म लेखन है। आप कर्नाटक के मुख्यमंत्री से दो बार स्वर्ण पदक और आंध्रप्रदेश मुख्यमंत्री से शौर्य पदक तथा राष्ट्रपति से पुलिस शौर्य पदक दूसरी बार पाने वाले प्रथम पुलिस अधिकारी हैं। वीरप्पन के विरुद्ध किए गए अभियान का निरूपण काफी रोमांचक है।

'रंगवनद चंदुतारे' (रंगवन के चाँद सितारे) डॉ. मुख्यमंत्री चंदु का आत्मकथन है। मुख्यमंत्री चंदु का पूरा नाम है नरसेगौड़ होन्नसंदु नरसिंहय्या चंद्रशेखर। कर्नाटक के लोगों के लिए तो ये 'मुख्यमंत्री चंदु' ही है। चंदु जी ने कोरोना लॉकडाउन के संदर्भ में इस नाट्य जीवन को आत्मकथा के चौखट में बाल्य, कॉलेज जीवन संबंधी घटनाओं का वर्णन करते रंगानुभव में जो फैलता जाता है उसे लिपिबद्ध किया। रंग यात्रा के समान उनका राजकीय जीवन भी रोचक है। चंदु जी का आत्मकथन रोचक और बहु–आयामी है।

संस्मरण

'केच्चेदेय प्रगति पुरुष किलार गणेश हेगड़े' के संस्मरणों का संपादन श्री जयप्रकाश हेगडें जी ने किया है। इस कृति में गणेश हेगड़े के साथ के अनुभव, स्मृतियों और उनकी साहसगाथाओं की माला को उनके रिश्तेदारों ने गूँथा है। हेगड़े एक सुदूर गाँव में पैदा होकर उन्होंने जो साधना की, जैसे जंगल के टीले में रागी फसल की योजना, शक्कर कारखाना निर्माण, विधवा विवाह, कृषि विद्यालय का आरंभ आदि साधनाओं की सूची लंबी है। ये साधना–गाथा युवाओं को स्फूर्ति देंगी इसमें कोई संदेह नहीं।

शोध

'पदगळिवे एदेयोळलो' (शब्द है हृदय में) वरिष्ठ पत्रकार श्री जगदीश कोप्प जी की शोध कृति है। भगवान के नाम पर दासी बनी निचले समुदाय की स्त्रियों का सामाजिक क्षेत्र ही नहीं, संगीत, नृत्य आदि सांस्कृतिक क्षेत्र के लिए भी योगदान

असाधारण है। हमें देवदासियों के सांस्कृतिक उलट फेर के जीवन का विशेष अध्ययन हुआ है। यह शोध कृति 15 अध्यायों में फैली हुई है। यह कृति पत्रकार के अगाध अध्ययन का प्रतिफल है।

समालोचना

'डी.आर. नागराज' केंद्र साहित्य अकादमी, दिल्ली से भारतीय साहित्य निर्मापकरु' (भारतीय साहित्य निर्माता) माला में श्री नटराज हुळीयार जी ने समालोचक डी. आर. नागराज के समालोचना लोक का परिचय कराया है।

साहित्य इतिहास

'तुमकूर जिल्लेसाहित्य चरित्रे' के लेखक हैं डॉ. डी. एस. योगेश्वरप्पा। यह कृति तुमकूर जिले के साहित्य–विकास का पथ, कवि काव्य परिचय द्वारा दर्शित करती है। यहाँ का साहित्य 12वीं शती से आरंभ होकर 16वी–17 वीं शती तक विशेष ख्याति प्राप्त रहा है। इस कृति में 12वीं से 18वीं शती तक 46 कवि शामिल किए गए हैं तो 18वीं से 1947 ई. तक 109 लेखक शामिल किए गए हैं। इस बृहत् ग्रंथ के लेखक अभिनंदनीय हैं।

यात्रावृत्त

यात्रावृत्त के अंतर्गत 'अरिगटो गोजायिमस' शीर्षक कृति श्री नागतिहत्त्ळी चंद्रशेखर के जापान देश की यात्रा का अनुभव–कथन है। विशेषकर जापानियों की प्रामाणिकता और भारतीय प्रामाणिकता की तुलना हमें आत्मावलोकन के लिए बाध्य करती है। किसान के घर में रहना, अंग्रेजी न जाननेवाले लोगों के साथ संवाद विनोदपूर्ण है। 'टोकियो ट्रयल' के साथ कृति का अंत होता है।

'द्वेष विट्टु देश कट्टु' (द्वेष करना छोड़कर देश जोड़ो) यह कृति कन्नड़ साहित्यकार बरगूर रामचंद्रप्पा के 'सौहार्द संस्कृति समावेश' के आशय भाषण का पुस्तक रूप है। सर्व समुदाय की शांति का वन अब धर्मद्वेष से जल रहा है। इस प्रक्षुब्ध वातावरण को शांत करने की जिम्मेदारी धर्मगुरुओं और संविधान ज्ञाताओं पर है। धर्म को राह से भटकाने वाले सभी धर्मों के मूलभूतवासियों का विरोध करना चाहिए।

गद्य

'इस्कूलु' (स्कूल) अक्षता कृष्णमूर्ति जी की स्मृतियों का गुच्छ है। लेखिका ने अपनी अध्यापिका वृत्ति के अनुभवों को, वह भी गाँव की शाला के, यहाँ कृति रूप दिया है। संपूर्ण कृति में बच्चों के साथ बीते क्षण एक शैक्षणिक आदर्श के रूप में है। लेखन में आत्मीयता है, निरूपण है और सृजनात्मकता भी है।

'एम. एम. कलबुर्गी' शोधकर्ता श्री सिद्दन गौड पाटील द्वारा प्रस्तुत डॉ. एम.

एम. कलबुर्गी जी के जीवन और कृति पर प्रकाश डालने वाली कृति है। बेंगलुरू के नवकर्नाटक प्रकाशन से पुरस्कृत लेखकों की परिचयात्मक ग्रंथमाला के अंतर्गत प्रकाशित है। यहाँ लेखक ने स्पष्ट किया है कि इस कृति का उद्देश्य उनके शोध कार्य का विश्लेषण करना नहीं, अपितु उनके जीवन और लेखन का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत करना है।

'शिरोमणि' प्रसिद्ध लेखिका प्रो. अंबामणि मूर्ति जी के जीवन और उनकी समग्र कृतियों का तथा मूर्ति जी पर उनके लेखक मित्रों की सम्मतियाँ, आदि का संपादन श्री एल. एन. मुकुंदराज ने किया है। लेखिका का आत्मकथन भी इसमें है। वरिष्ठ लेखिका की जीवन गाथा प्रस्तुत करने के बहाने कई वैचारिक बिंदु कन्नड़ के वरिष्ठ लेखकों द्वारा उद्घाटित हुए हैं।

'अंबेड्कर मत्तु.....' (अंबेडकर और.....) प्रो. एच. टी. पोते की कृति है जिसमें अंबेडकर की अन्य महान व्यक्तियों के साथ तुलना करते हुए, भिन्नाभिप्रायों की भी चर्चा हुई है। 12वीं शती में विनूतन धर्म और संविधान के मूल पुरुष बसवण्णा थे। अंबेडकर जी की संविधान रचना के लिए बसवण्णा ही प्रेरक शक्ति हैं। महात्मा जी स्वातंत्र्य आंदोलन के नेता रहे, तो अंबेडकर अस्पृश्यों के आंदोलन के नेता थे, दोनों के बिना भारत की कल्पना ही संभव नहीं।

'प्राचीन कन्नड़ साहित्यदल्लि संगीतद साहचर्या' (प्राचीन कन्नड़ साहित्य में संगीत का साहचर्य) डॉ. विदूषी श्यामला प्रकाश की विद्वतपूर्ण कृति है जिसमें कन्नड़ कवि के संगीत प्रेम को उजागर करने का प्रयत्न हुआ है।

लेखिका श्यामला प्रकाश अपनी कृति के उद्देश्य के बारे में बताती हैं कि कवि–काव्य के अध्ययन में काव्य के कला विचार बाहर रह जाते हैं। इस कमी को दूर करने के लिए काव्य के संगीत के भाग को अध्ययन में लेकर कवि के संगीतप्रेम को उजागर करने का प्रयत्न यहाँ हुआ है।

'नव्य साहित्य' कृति की रचना 'कन्नड़ साहित्य में जीवन मूल्य' मालिका के अंतर्गत श्री एस.आर. विजय शंकर ने की है। प्रस्तुत कृति में चार भाग हैं। नव्य साहित्य प्रवेश और जीवन मूल्य क्या है! नव्य–साहित्य जन्म और विकास, तात्विकता, नव्य की मुख्य ध्वनियाँ और उपसंहार। यहाँ गोकाक, अडिग, अनंतमूर्ति, कंबार, कार्नाड, लंकेश, चित्ताल, तेजस्वी आदि 18 प्रसिद्ध लेखकों की कृतियों में जीवन मूल्य किस रूप में अभिव्यक्त हुए हैं इसको विस्तार से बताया गया है।

'होन्न रागोल' डॉ. श्रीशैल नागराळ द्वारा रचित कृति है। 'लोक साहित्य में क्या है– इसके लिए उत्तर रूप में इस कृति की रचना हुई है। लेखक ने निरूपित किया है कि विश्वव्यापक ज्ञान संपत्ति लोक साहित्य में है। लोक जन का

जीवन–पोषक श्रम संस्कृति ही प्रधान है।

'एल्लर गांधी जी' (सबके गांधी जी) नटराज हुळियार जी द्वारा संपादित कृति है जो अब तक कन्नड़ में गांधी जी पर आई कृतियों से भिन्न है। गांधी जी को उन्हीं के लेखनों के कई भिन्न दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ। हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती भाषाओं में गांधी जी की वाणी और लेखन इस कृति के कहानियों में कन्नड़ भाषियों को एक स्थान मिल रहा है। 'गांधी केवल एक विचार या बाह्य चिंतन नहीं, वह सबके अंतरतम में सुप्त मानवीय स्पंदन है। ऐसे गांधी का अनावरण प्रस्तुत संदर्भ में आवश्यक और अनिवार्य भी है।

'भारतरत्न भीमण्णा' श्री शिरीष जोशी द्वारा हिंदुस्तानी संगीत के दिग्गज पंडित भीमसेन जोशी पर रचित परिचयात्मक कृति संगीतासक्त विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। इसमें जोशी जी के प्रारंभिक दिन, संघर्ष, व्यक्तिगत जीवन आदि का 9 अध्यायों में निरूपण हुआ है।

'मक्कळिगागी अनुवाद' (बच्चों के लिए अनुवाद) यह केंद्र साहित्य अकादमी से प्रकाशित ग्रंथ है जिसमें अकादमी ने 'बच्चों के लिए जो अनुवाद कार्यशाला आयोजन किया था उसमें प्रस्तुत आलेखों का संकलन है। इसका संपादन श्री ए.बी. नावड ने किया है। इस कार्यशाला का उद्देश्य; आजकल बच्चे जो मोबाइल के आकर्षण में पड़कर पढ़ाई से विमुख हो रहे हैं; उन्हें बाल साहित्य की ओर फिर आकर्षित करना है। बाल–साहित्य अनुवाद का उद्देश्य बाल साहित्य को समृद्ध करना और बाल–साहित्य लेखकों की संख्या बढ़ाना भी है।

हूँ बिसिलिन केळगे' (शाम की धूप के नीचे) कृति में डॉ. न. मोगलाले जी ने अपने जीवन में परिचित छोटे–बड़े मित्रों के व्यक्तित्व को शामिल किया है। इसमें कुल 49 व्यक्तियों की संस्कृति का परिचय है।

'भारतीय प्रज्ञावाहिनी आनंद कुमारस्वामी' के लेखक हैं श्री एस. सूर्यप्रकाश पंडित। आनंद कुमारस्वामी जी प्रसिद्ध तत्वशास्त्रज्ञ, इतिहासकार और भारतीय कला और संस्कृति के आराधक थे। लेखनों द्वारा प्राचीन भारतीय कला के सार को और तत्व को पाश्चात्य जगत को परिचित कराने का विशिष्ट कार्य किया कुमारस्वामी जी ने। आनंदकुमार स्वामी जी श्रीलंका में जन्में, पिता तमिलभाषी, माता ब्रिटिश और बसे थे 1917 से 1947 तक बोस्टन में। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका जगत को संदेश है– ''आप आप बनिए और महात्मा गांधी, रमण महर्षि जैसों का अनुसरण कीजिए।''

अनुवाद

कन्नड़ में अनुवाद साहित्य का विकास विशिष्ट रूप में हो रहा है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, प्रबंध आदि क्षेत्र में भारतीय भाषाओं से तथा विदेशी भाषाओं के भी काफी मात्रा में अनुवाद 2022 में हुए हैं। 2022 के अनुवादों में उल्लेखनीय हैं– 'करम जोव सहोदररू' (करमजोव भाई) मूल : दास्तोवस्कि अनुवाद– टी. एस. रधुनाथ; (हेमिंग्वे– इंडिया क्यांपस मत्तु इतरे कथेगळु' हेमिंग्वे इंडिया कैम्पस और अन्य कहानियाँ) अनुवादक श्री एस. गंगाधरय्या; 'रक्त पुष्प मत्तु इतर नाटकगळु' (मराठी नाटकानुवाद) मूल : महेश एम. कुंचगार अनु : डॉ. हेमा पट्टणशेट्टी; 'काड हूविन हाड्ड' (कानन कुसुम का गीत) मूल : विलियं ब्लेक, अनुवाद : विठल दळवायी; 'रशामन' कथानुवाद मूल : यू नोस्के अक्तगवा, अनु : के. पुट्टस्वामी। 'डॉ. अंबेडकर सहवासदल्लि' (डॉ. अंबेडकर के संग में) मूल : डॉ. सविता अंबेडकर अनुवादक– अनिल होसमनि। देहवे देश (देह ही देश है) हिंदी, मूल : गरिमा श्रीवास्तव अनु : विक्रम विसाजी ; तकळि शिवशंकर पिळ्ळै कृत मलयालम उपन्यास– 'चेम्मीन' का कन्नड़ अनुवाद मोहन कुंटार जी द्वारा।

'शंबाल' राजनीतिक उपन्यास तमिल से है। रचनाकार कार्लोस तमिलवन इसका कन्नड़ अनुवाद डॉ. जयललिता ने किया है। इसमें नायक पात्र हिटलर है यह एक साधारण आदमी है। वह मंत्री होने पर पुलिस व्यवस्था का अपने अनुकूल उपयोग करता है।

'चेम्मीन' ज्ञानपीठ से पुरस्कृत तकळि शिवशंकरन् पिल्लै जी का प्रसिद्ध मलयालम उपन्यास है जिसके लिए 1956 में केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। इसका कन्नड़ अनुवाद प्रो. मोहन कुंटार ने किया है जो कन्नड़ विश्वविद्यालय, हंपी में प्रोफेसर हैं। यह एक प्रणय कथा है, जिसे वास्तविकता और कल्पना के साथ बुना गया है। सागर तट के मछुआरों के जीवन चित्रण और प्रेमकथा को जोड़ने का कुशल कथनतंत्र इसमें हैं। अनुवाद में मूल कथा का साहित्य–सौंदर्य सहज रूप में उभरा है।

'गांधी मत्तु हिंदू–मुस्लिम सौहार्दते' हिंदी मूल से है, जिसके लेखक है विश्वंभरनाथ पांडे। कन्नडानुवाद डॉ. शाकिरा खान जी ने किया है। यह कर्नाटक गांधी स्मारक निधि, बेंगलुरू से प्रकाशित है। अनुवाद मूल आशय को कन्नड़ पाठकों तक पहुँचाने में सफल हुआ है। यह अभिनंदनीय कार्य है।

'हिंद स्वराज्य' गांधी जी की 110 वर्ष पूर्व रचित कृति पर जो आलेख हिंदी में लिखे गए उनका संग्रह कर डॉ. एन. देवराज जी ने कन्नड़ में अनुवाद किया है। इसमें हिंदी के 'हिंद स्वराज' पर दस लेखनों का अनुवाद है मूल हिंदी लेखकों में उल्लेखनीय हैं–नंदकिशोर आचार्य, विभूति नारायण राय, काका कालेलकर राकेश, आनंद कुमार

आदि। 'हिंद स्वराज्य' मूलतः गांधी जी द्वारा 1908–09 में लिखित और प्रकाशित कृति है जिसमें प्रतिपादित अंश आज भी विशेषकर उनका आर्थिक चिंतन प्रासंगिक है। ऐसे महत्वपूर्ण और चिंतनशील लेखों का कन्नड़ में अनुवाद कर डॉ. देवराज ने कन्नड के पाठकों तक पहुँचाने का अभिनंदनीय कार्य किया है।

'बदुकिन अर्थवन्नु हुडुकुत्ता' (ज़िदगी के अर्थ को ढूँढ़ते हुए) विक्टर प्रांक्स की कृति का कन्नड अनुवाद है। अनुवादक श्री सुभाष राजमाने जी हैं। विक्ट प्रांक्स एक मनः शास्त्रज्ञ थे। उन्होंने मनोरोगियों से होनेवाले आत्महत्या प्रकरण को रोका था। जिंदगी और उसके अर्थ इन प्रश्नों के लिए उत्तर पाने के लिए उन्होंने 'Man search for meaning' पुस्तक लिखी। उसी का अनुवाद श्री सुभाष राजमाने जी ने मूल आशय को क्षति पहुचाएँ बिना सरल और सहज भाषा में किया है।

'अप्पिको/चिपको' कहते ही हमें सुंदरलाल बहुगुणा जी याद आते हैं। मूल कृति के समान विचारपरक अमेरिका के तत्वशास्त्र के प्राध्यापक जार्ज जेम्स जी के समान विचारपरक बहुगुणा के संदर्शन कृति का कन्नड़ अनुवाद है। सुरेंद्र कौजल्गी जी ने इस अनुवाद का आरंभ किया। परंतु उनके अकालिक निधन पर उनके पोते की पत्नी अर्जनाख्याडी ने इसे पूर्ण किया। इसमें बहुगुणा जी की लड़ाई, जीवन तत्व, और पर्यावरण तत्व पर रूपित अध्ययन है। इसमें चिपको आंदोलन और तिहरी बाँध निर्माण के विरुद्ध लड़ाई आदि का परिदृश्य है। अनुवाद की भाषा सरल है।

'युद्धकालद हुडगियरु' (युद्ध काल की लड़कियाँ) चिनुव अचिबे की 'girls at war' कहानियों की कृति का कन्नड़ अनुवाद है। अनुवादक हैं चन्नप्पा कट्टि। अचिबे की कहानियों में समुदाय के बुर्जुगों, विवेकियों की ध्वनि बन दिखानेवाला निरूपक है। यहाँ की कहानियों में भ्रष्टता के स्वरूप को देखा जा सकता है। पारंपरिक जीवन विधान, नगर का आकर्षण, भ्रष्टाचार, आजादी के बाद भ्रमनिरसन, इन सबका इन कथाओं में निरूपण हुआ है। 'विवाह एक खासगी विचार' कहानी में संप्रदाय और आधुनिकता के बीच संघर्ष का स्वरूप चित्रित है। 'युद्ध काल की लड़कियाँ' में युद्ध के परिणाम तीव्रता से चित्रित हैं। यहाँ की कहानियाँ आज के भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में भी प्रासंगिक हैं।

'पर्सेपोलिस' ईरान की लेखिका मार्जन सत्रपि है। यह उपन्यास अन्य उपन्यासों जैसा नहीं है। इसमें मानव चरित्र का गंभीर विचार है। यह ऐनिमेशन सिनेमा रूपांतर के लिए भी प्रशस्ति प्राप्त है। इसका कन्नड़ अनुवाद प्रीतिनारायण ने किया है। इस बृहत उपन्यास को पढ़ने के लिए समय और सहनशक्ति भी चाहिए।

'इंद्रजित मत्तु इन्नितर कथेगळु' (इंद्रजित और अन्य कहानियाँ) विक्रम चदुरंग जी की विश्व की प्रसिद्ध छह कहानियों का अनुवाद है। विश्व छोटा हो रहा हैं और विश्व की सभी संस्कृतियों के लोग नजदीक आ रहे हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद का

महत्व बढ़ रहा है। इस संकलन में क्याथरित मायान फील्ड जी का 'दि डाल हाउस' (गुड़िया घर) वर्ग भेद की अमानवीय स्थिति का निरूपण करता है। डॉ. एच. लारेंस की प्रसिद्ध कहानी 'दि राकिंग हार्स विन्नर' (लकड़ी का घोड़ा) और टालस्टाय की कहानी 'फादर सेग्रियस' (इंद्रजित) आदि रोचक हैं। इसके अनुवाद अर्थकेंद्रित और संवहन केंद्रित भी हैं।

'जाला' पेद्दिरि अशोक कुमार जी की तेलुगु कहानियाँ हैं, जिनका कन्नड अनुवाद एम.जी. शुभमंगल जी ने किया है। इस कृति में 12 कहानियाँ है जो मानवीय गुण प्रधान और किसान, आम लोग, पिछड़े वर्गवाले आदि जो व्यवस्थित जाल में फँसते हैं उन पर आधारित हैं। इसी लेखक की कहानियाँ 'मनसाक्षी' का भी अनुवाद एम.जी. शुभमंगल ने किया है।

'रक्त पुष्प मत्तु इतर नाटकगळु' (रक्तपुष्प और अन्य नाटक) यह नाटकानुवाद मराठी मूल से है। मूल नाटककार डॉ. महेश एलकुंचवार केवल मराठी में ही नहीं भारतीय रंगमंच में भी प्रभावशाली, प्रगतिशील नाटककार हैं। प्रस्तुत संकलन में तीन नाटक हैं– 'रक्तपुष्प', 'होलि' और 'सुल्तान'। 'होली' का चित्रिकरण गोविंद निहलानी द्वारा हुआ था। यह एकांकी छात्रों के 'होली' मनाने से संबंधित है। इस संदर्भ में छात्रों में झगड़ा, संघर्ष, छात्र की आत्महत्या में परिणति है। इसमें मनुष्य स्वभाव, संबंध और घातक परिणाम ध्वनित होते हैं।

'रक्तपुष्प' में कामप्रवृत्ति और लिबिडो के प्रतीक का समर्थ निर्वहण किया गया है। 'सुल्तान' भी एकांकी है जो 1967 में प्रकाशित हुआ था। इस नाटक को विजय मेहता ने 'रंगायण' के लिए निर्देशित किया था। इस नाटक का केंद्रीय पात्र राजशेखर धनी बिजनेसमैन है वह अशांत मनवाला है। उसने एक सिंह को पाला है जिसका नाम 'सुल्तान' है। हर पात्र की माँग भिन्न है। सेहत, धन, प्यास ये सब सिंह गर्जन में व्यक्त होते हैं।

नाटक की अनुवादिका डॉ. हेमा पट्टणशेट्टी नामी कन्नड साहित्यकार हैं। इनके काव्य, नाटक, कथा, संकलन और अनुवाद आदि प्रकाशित हैं। प्रस्तुत नाटक संकलन का कन्नड अनुवाद भाव और भाषा दोनों दृष्टियों से विशिष्ट हैं। कन्नड पाठकों को इसका परिचय कराने का हेमा पट्टणशेट्टी जी का कार्य अभिनंदनीय है।

❑❑❑

कश्मीरी साहित्य

5



महाराज कृष्ण भरत

कवि, अनुवादक और पत्रकार। 'फिरन में छिपाए तिरंगा' 'नींव तुझे सलाम', काव्य–संग्रह सहित आठ संपादित पुस्तकें प्रकाशित। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सौहार्द सम्मान सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित। संप्रति–सहायक प्राध्यापक, हिंदी, उच्च शिक्षा विभाग, कलस्टर विश्वविद्यालय,जम्मू–कश्मीर ।

जम्मू–कश्मीर का प्रशासनिक एवं वैधानिक तंत्र जब राज्य से केंद्र शासित प्रदेश में बदल गया, तो यहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं को भी प्राथमिकता दी गई। बरसों से उपेक्षा झेल रही मातृभाषा कश्मीरी और डोगरी को क्षेत्रीय स्तर पर मान्यता देकर इन्हें राजभाषा का दर्जा दिया गया। पहले ही राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में कश्मीरी और बाद के वर्षों में डोगरी भाषा को भी जोड़ा गया है। भारतीय भाषाओं की प्रमुखता को देखकर उनके गौरव को बढ़ाने के लिए ऐसी व्यवस्थाएँ की जानी आवश्यक हैं। इससे भाषा के विकास एवं प्रचार को बल मिलता है और अध्ययन एवं अध्यापन के नए मार्ग खुल जाते हैं। अब निस्संदेह जम्मू–कश्मीर में कश्मीरी और डोगरी को व्यापक स्तर पर पढ़ाया जाएगा। विशेषकर जिस कश्मीरी भाषा के लिखने और पढ़ने वाले इसकी लिपि के कारण कम हो रहे हैं, उसमें वृद्धि होगी। यहाँ यह तथ्य उजागर करने की आवश्यकता है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के बाद नस्तालीक़ के साथ सहलिपि के रूप में देवनागरी को भी रखा जाना चाहिए था, जिस ओर अभी ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं।

जब हम वर्ष 2022 के कश्मीरी साहित्य पर नज़र दौड़ाते हैं तो यहाँ कथा साहित्य की अपेक्षा काव्य विधा और काव्यालोचना को प्रमुखता मिली है। एक बात अवश्य उल्लेखनीय है कि इस बार कश्मीरी भाषा साहित्य, वहाँ की संस्कृति, परंपराओं कलाओं और महान व्यक्तित्वों पर चिंतनप्रधान निबंध लिखे गए हैं, समीक्षात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं, जिसकी अब तक अधिक कमी लग रही थी। जैसे संत कबीरदास जी का कथन है कि 'निदंक नियरे राखिए', आँगन कुटी छवाय। जब तक व्यक्तित्व के साथ–साथ साहित्य सृजन का भी नीर–क्षीर विवेचन न किया जाए, तब तक इसका आकलन कर पाना कठिन है कि अमुक साहित्य में कौन–सी प्रवृत्तियाँ हैं,

कौन सी लय–ताल है, साहित्य किस दिशा की ओर जा रहा है और भाषा के साथ–साथ अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति साहित्य की क्या देन हैं?

आलोचनात्मक पुस्तकें

भारतीय भाषाओं के किसी भी साहित्य की तरह कश्मीरी समालोचक भी साहित्य सृजन करते हुए आलोचना के क्षेत्र में भी अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें डा. अमर मालमोदी की पुस्तक 'ब्येन, छेन त बावथ' (अंतर, पृथक और अभिव्यक्ति), ज़ाहिर बानहाली की 'कॉशरिस अहबस मंज तनंज तं मिज़ाह' (कश्मीरी साहित्य में व्यंग्य और हास्य) बाल कृष्ण संन्यासी की 'सोंच सोदुर' (विचारों का सागर), प्रेमनाथ शाद की 'म्वख्तस म्लवन' (मूल्यवान मोती), तथा मुहम्मद यूसुफ टेंग की 'कलायि अंदर' (कलाओं के भीतर) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

1. 'अंतर, पृथक और अभिव्यक्ति'

कश्मीरी भाषा साहित्य के वरिष्ठ हस्ताक्षर अमर मालमोही कश्मीर में बड़गाम ज़िले के निवासी हैं। उन्होंने अपने पैतृक गाँव मालमोह (मांगाम) को अपने नाम के साथ जोड़ा है। वे इन दिनों अपने पैतृक गाँव से दूर परिस्थितिवश पुणे में रह रहे हैं। उनके द्वारा रचित पुस्तक 'ष्येनछ़ेन त बावथ' में बीसवीं सदी के उस कश्मीरी साहित्य पर चिंतनपरक आलेख लिखे गए हैं, जिनमें कश्मीरी पहचान उद्भव और विकास (1931 से 1953 तक), मानवीय समस्याओं का साहित्यिक प्रगटीकरण, पलायन और मानवीय विवशताएँ, जलावतनी की शायरी, लीला शायरी तथा कश्मीरी अफसाने आदि उल्लेखनीय हैं। समीक्षक ने इस पुस्तक के माध्यम से कश्मीर तथा कश्मीरी साहित्य के संदर्भ में वहाँ की तात्कालिक और सामयिक परिस्थितियों का वर्णन करते हुए उन्हें साहित्य की विभिन्न विधाओं में चित्रित किया है। यहाँ कश्मीर के आधुनिक कवियों गुलाम अहमद महजूर, अब्दुल अहद आज़ाद, दीननाथ नादिम तथा रहमान राही व अमीन कामिल की कविताएँ दस्तक दे रही हैं तो कहीं निर्वासित कश्मीरी लेखकों की कविताएँ तथा कहानियों का भी आकलन किया गया है।

2. 'कश्मीरी साहित्य में व्यंग्य और हास्य'

ज़ाहिर बानहाली द्वारा रचित पुस्तक 'कॉशरिस अॅदबस मंज़ तनज तु मिज़ाह' में साहित्य की नवीन–विधा हास्य और व्यंग्य के अनेक आयामों पर सविस्तार चित्रण किया है। इस पुस्तक में इस विधा का परिचय देते हुए, इसके उद्गम, उद्देश्य तथा समाज पर इसके प्रभाव को आंका गया है। कश्मीरी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी हास्य और व्यंग्य से जुड़े साहित्य का विश्लेषण किया गया है। पुस्तक की अनुक्रमणिका से दो–तीन लेखों के शीर्षकों का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है जैसे 'तनज और मिज़ाह एक तवारूफ (व्यंग्य और हास्य एक परिचय), तनज त गिज़ाह अख आगुर (व्यंग्य और हास्य एक उद्गम) तथा 'समाजस प्यठ तनज त मिज़ाहिक असरात' (समाज पर व्यंग्य और हास्य के प्रभाव)। इसके अतिरिक्त हास्य और व्यंग्य

के प्रकारों तथा हास्य पर अलग से भी बात की गई है। ऐसे धीर–गंभीर विषय पर लिखना एक बहुत बड़ी पहल है। निस्संदेह इस नीर क्षीर विवेचन से इस विधा पर लिखने वालों के समक्ष इसका सैद्धांतिक पक्ष भी उजागर होगा।

3 'विचारों का सागर'

कश्मीर में हब्बाबकदल, श्रीनगर के मूल निवासी बालकृष्ण संन्यासी कश्मीरी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठित कवि एवं समीक्षक हैं। 304 पृष्ठों की पुस्तक 'सोंच सोदुर' (विचारों का सागर) के प्रकाश में आने पर कवि संन्यासी ने यह सिद्ध कर दिया है कि सृजन के साथ–साथ वह कश्मीरी भाषा के इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान, आध्यात्मिक कविता पर भी गहरी पकड़ रखते हैं। इस पुस्तक की विषय वस्तु को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि यह विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी हो सकती है।

'विचारों का सागर' पुस्तक का शीर्षक बहुत ही उपयुक्त एवं सार्थक बन पड़ा है क्योंकि इसमें कश्मीर के साहित्य की अनेक धाराओं की बात की गई है। 'हमें अपनी मातृभाषा कश्मीरी को नहीं भूलना चाहिए' इस शीर्षक से पहला आलेख है। दूसरे आलेख में कश्मीरी साहित्य के साथ दर्शन और मनोवैज्ञानिक चिंतन को उकेरा गया है।

'ललवाकन छंद नफसियात अहंग' (ललवाखों का मनोवैज्ञानिक अनुस्थापन), 'तसवुक कथ वनन' (अध्यात्म किसे कहते हैं), 'कश्मीरी सूफी शायरी अख जायज' (कश्मीरी सूफी शायरी–एक अवलोकन, कश्मीरी लीला शायरी आदि समीक्षात्मक आलेख उल्लेखनीय हैं।)

लेखक ने जहाँ कश्मीरी भाषा साहित्य पर एक विहंगम दृष्टि डाली है, वहीं इसके अन्य आयामों कविता, नज्मों, सूफीकाव्य की भी समीक्षा की है। इस पुस्तक का प्रकाशन लेखक ने स्वयं किया है।

4. 'मूल्यवान मोती'

कश्मीरी भाषा के सिद्धहस्त कवि प्रेमनाथ शाद की पहली गद्य में लिखी पुस्तक 'गुखतस म्लवन' (मूल्यवान मोती) भी इसी वर्ष प्रकाशित हुई है। कश्मीर के नामवर लेखक डा. गुलाम नबी हलीम ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। पुस्तक दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में साहित्य की बात की गई है और दूसरे भाग में कश्मीर के प्रतिष्ठित साहित्यकारों की। पहले भाग में वर्णित कुछ आलेख द्रष्टव्य हैं–

'कॉशुर–सॉन्य माजिज़्व त अस्य'– (कश्मीरी– हमारी मातृभाषा और हम), 'ज़ाबन त् माहोलुक रहदि अमल' (भाषा और वातावरण की प्रतिक्रिया), लोकगीत, कोशुर वनवुन (कश्मीरी मांगलिक गीत), 'कॉशर लीला त अज़ियुक सूरतिहाल' (कश्मीरी लीला और वर्तमान दशा), कॉशिर मौसिकी त साज़ (कश्मीरी गायन कला और साज़) कॉशिर बट्नि लिबास (कश्मीरी पंडित महिलाओं का पहनावा), कॉशिर प्रसु (कश्मीरी पहेलियाँ)।

'व्यक्तित्व भाग–दो' में भक्त कवि पं. कृष्ण जू राजदार रोमानियत के कवि अब्दुल अहद आज़ाद, प्रगतिशील कवि अमर शहीद सर्वानंद कौल प्रेमी, आधुनिक कवियों में निशांत अंसारी, फाज़िल कश्मीरी, मोहनलाल आश, मखन लाल कंवल, पृथ्वीनाथ कौल सायिल और जवाहर लाल सरूर जैसे रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की बात की गई है।

5. 'कलायि अंदर'

कश्मीरी भाषा साहित्य के लेखक मुहम्मद युसूफ टेंग की पुस्तक 'कलायि अंदर' भी पद्य विधा पर लिखी गई पाँचवीं पुस्तक है। इस पुस्तक में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आयामों का अध्ययन करते हुए कश्मीर के दरवेशों, कलंदरों, शास्त्री संगीतज्ञ आचार्य सारंग देव, आगा अशरफ अली, नीलांबरदेव शर्मा रसाजावदॉनी तथा कश्मीरी और तुर्क भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

उक्त पाँचों शोधपरक पुस्तकें विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के अध्ययन के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

काव्य संग्रह

2022 में प्रकाशित काव्य संग्रह जो हमें उपलब्ध हुए हैं उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

'वुज़वॅन्य अछर'

कश्मीर में मंजगाम, कुलगाम क्षेत्र के मूलनिवासी जीवन के अंतिम मुहाने तक परिस्थितिवश जम्मू में वास करने वाले जगन्नाथ सागर अब हमारे मध्य में नहीं हैं। कुछ वर्ष पहले वे काल कलवित हो गए, पर कश्मीरी भाषा साहित्य विशेषकर कविता में जो उनका योगदान रहा है, वह सर्वोपरि है। वे काव्य जगत में अपने नपे–तुले, तराशे–गढ़े जा रहे शब्दों से जब किसी रचना को आकार दे रहे होते थे, तो कविता की रसवंती धारा पाठकों को जहाँ रोमांच से भर देती थीं वहीं उनके धारदार तेवर मन को मथ लेते थे। यह काव्य संग्रह उनके देहावसान के बाद छपा। आज भी पाठक उनकी कविताओं के प्रति आकर्षित होते हैं। इस संग्रह का मूल्य 400 रू0 है।

'वुज़वॅन्य अछर' (प्रस्फुटित शब्द) संग्रह की भूमिका कश्मीरी भाषा के वरिष्ठ कथाकार और समालोचक अवतार हुगामी ने लिखी है। संग्रह के प्रारंभ में कवि ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा है कि–

''आयि हनु *अस्य काल* ज़ुलुस
अम्य मंज म्वकलावसा'
अर्थात् 'हम काल के जाल में फँस गए हैं
हमें इससे उबारो'
प्रत्यक्षदेव सूर्य को संबोधित करते हुए कवि का कहना है कि–
'खबर क्याज़ि गोमुत छु

युथ हाल सिरियस,
अर्थात् न जाने क्यों हुई ऐसी स्थिति सूर्य की
प्रेम की टीस उभरते हुए कवि कह उठता है कि–
'दिल छु दिल कोता छु चालान
आसमानस छा बितुर'
अर्थात्
दिल तो दिल है कितना सहन करता
क्या आकाश में इतनी क्षमता है।
कवि अपने प्रेमी से कहता है कि–
'पोत नज़र अख त्रोवु हाख
वु लेखायि गज़ल'
अथार्त् पीछे मुड़कर देखते तो
मैं लिखता गज़ल'

रचनाकार जगन्नाथ सागर ने जहाँ कश्मीर के विस्थापन बोध की त्रासदी पर कविताएँ रची वहीं उनमें भावनाओं, संवेदनाओं के वेग से भरा पूरा रचना संसार भी है, वह कहीं दार्शनिक होकर शब्दातीत हो जाते हैं।

'कलामे मोमिन सॉब'

कश्मीर के वरिष्ठ लेखक जी आर हसरत गड़ा द्वारा संपादित एवं संकलित काव्य संग्रह का शीर्षक है– 'कलामे मोमिन'। फनकार कल्चरल आर्गनाइज़ेशन श्रीनगर कहानियों प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य 200 रू0 है। इस संग्रह में मनतीकु; अक्कनंदुन तथा मोमिन साहिब की कश्मीरी और फारसी में रची गई रचनाएँ संकलित हैं।

'येलि सोंत हरव'

कवि अवतार कृष्ण नाज़ शब्द साधना में रत है। 'येलि सोंत हरव' (जब चला जाता है वंसत) नामक संग्रह में मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत कविता की रसवंती धारा है, अतीत और वर्तमान के शब्दचित्र हैं, प्राकृतिक सुषमा का स्पर्श है तो कहीं वसंत के जीने की उदासी भी है। यह वसंत जीवन का भी है और प्रकृति के काल चक्र का भी। यहाँ अतीत के मधुर क्षण भी हैं और कड़वे अनुभव भी।

'अकि फिरि ब्येयि पोत काल लेखव'

अर्थात् 'एक बार फिर लिखेंगे अतीत'

जब कवि को अपने आसपास का वातावरण सामाजिक विसंगतियों के ताप से जल रहा दिखता है तो वह कह उठता है–

'दज़ान ओंद पोक तु सोरुय
शार वनव क्या?'
अर्थात् 'लगी है आग चारों ओर
क्या रचें कविता'

कवि एक उलझाव की स्थिति में प्रकृति के उपादानों का आश्रय लेकर कहता है कि–

'वाव केंड्य धरि दिज़ याम ज़ीर'

अर्थात् 'झोंके ने कंटीली बेल को जूं हिलाया'

450 रू0 मूल्य की इस पुस्तक में गज़लें, नज्में तथा अंत में दो श्रद्धांजलियाँ हैं।

इसके साथ ही दिलदार मोहन का काव्य संग्रह 'केंड गुलाबन हॅन्द्य' (गुलाबों के कांटे) तथा अमर मालमोही का संग्रह 'रूद सरवरक' (रह गया मुखपृष्ठ) भी प्रकाश में आए हैं। साथ ही प्रतिष्ठित कवि मोतीलाल मसरूप के दो संग्रह 'न चॅट्य टूरय जामय' (अकटे गुलाब की पंखुड़ी) तथा छु सार ओमकुय (है सार ओम् का) भी प्रकाशित हुए हैं।

अनुवाद कार्य

अनुवाद कार्य एक सहज सरल कार्य नहीं, यह श्रमसाध्य कर्म है। इसमें वही हो सकता है जिसे स्त्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं का सम्यक ज्ञान हो और वाक्य के अनुसार नए शब्द गढ़ने की भी क्षमता हो। कभी–कभी शब्दानुवाद से स्त्रोत भाषा का भाव उसके शब्द संस्कार, मिठास के अनुरूप लक्ष्य भाषा के शब्द संस्कार और मिठास के सांचे में नहीं ढलता, तब किसी उपयुक्त शब्द की या तो खोज करनी पड़ती है या फिर शब्द के भाव अनुसार दूसरे नए शब्दों को गढ़ना पड़ता है या मूल शब्द को ही यथावत रखते हुए पाद टिप्पणी में उसका अर्थ दिया जाता है। कश्मीरी भाषा साहित्य के रचनाकार प्यारे हताश कई वर्षों से सृजन के साथ–साथ अनुवाद के कर्म में भी व्यस्त हैं। वे हिंदी से कश्मीरी और कश्मीरी से हिंदी तथा डोगरी से भी कश्मीरी अनुवाद कर चुके हैं। वर्ष 2022 में जिन पुस्तकों का उन्होंने अनुवाद किया है वे इस प्रकार हैं–

'बे पछ़ पज़र'

उर्दू के वरिष्ठ कहानीकार नूर शाह की पुस्तक 'बेसमर सच' का कश्मीरी में 'बे पछ़ पज़र' शीर्षक के अंतर्गत अनुवाद किया। इसमें छोड्व (खोजें), जानावार (जानवर), 'गाश त् गट्' (प्रकाश और तमस) तथा घर बेघर आदि 22 कहानियों का अनुवाद किया।

'दपि प्यठ छप्यि ताम'

नामवर लेखक प्रो. ललित मंगोत्रा के काव्य संग्रह 'शब्द से मौन तक' का कश्मीरी अनुवाद 'दपि प्यठ छप्यि ताम' के रूप में किया। इसमें 'खास' (विशेष), 'मुरली त् सु' (मुरली और वह), 'पोज़ यार' (सच्चा मित्र) तथा 'छ़प' (मौन) आदि कविताएँ विशेष रूप से उल्लेखीय हैं।

'तवी अंहय पक्य'

डोगरी कहानी संग्रह 'तवी दे आले दुवाले' का अनुवाद 'तवी अंद्य पक्य' नाम से किया गया। इसमें 22 कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह के श्रेष्ठ अनुवाद पर अनुवादक एवं कवि प्यारे हताश को साहित्य अकादमी कहानियों पुरस्कृत भी किया

गया। इसमें डोगरी के प्रतिष्ठित कहानीकार ओम गोस्वामी, रामनाथ शास्त्री, कृष्ण शर्मा तथा चंपा शर्मा की द्वारा संगृहीत की गई हैं। यह संग्रह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें जम्मू का सांस्कृतिक, सामाजिक पक्ष उभरकर आता है।

इसके साथ ही प्यारे हताश ने पद्मश्री वेदराही के उपन्यास 'अनंत' का, उर्दू के साहित्यकार प्रो. शोएब इनायत मलिक के सफरनामें, वरिष्ठ उर्दू कहानीकार पुष्कर नाथ के संग्रह 'काँच की दुनिया' को कश्मीरी में तथा रहीम रहबर के कश्मीरी कहानी संग्रह 'यख ख्वाब तलावुक' (शीतल सपन सरोवर का) का हिंदी में अनुवाद किया।

यहाँ बताना प्रासंगिक होगा कि कश्मीरी साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार बृजनाथ बेताब ने शैलेंद्र सिंह के डोगरी उपन्यास 'हाशिए पर' का कश्मीरी भाषा में अनुवाद किया, जिसे साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है।

कश्मीरी साहित्य 2022 पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए कवि, लेखक बृजनाथ बेताब कहते हैं कि जब हमारा ध्यान वर्ष 2022 के कश्मीरी साहित्य पर जाता है तो यह एहसास उभरता है कि कश्मीर के राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में उथल पुथल के बावजूद साहित्यकारों ने साहित्य की मान मर्यादा को भी निभाया, प्रत्येक लेखक ने अपने–अपने स्तर पर कश्मीर के साहित्य की प्रतिष्ठा में और बढ़ोतरी की है। उन्होंने कहा कि यद्यपि कश्मीरी साहित्य में सदैव कविता का वर्चस्व बना रहा है फिर भी कई साहित्यकारों ने नाटक व उपन्यासों का अनुवाद कश्मीरी भाषा में करते हुए इसकी कमी पूरी की। प्रसन्नता की बात तो यह भी है कि कश्मीरी साहित्य में बाल साहित्य पर ध्यान केंद्रित कर कई पुस्तकें लिखी गई हैं।

कश्मीरी साहित्य के लिए यह वर्ष कुछ दुर्भाग्यपूर्ण भी रहा क्योंकि इस वर्ष कश्मीरी साहित्य के एकमात्र ज्ञानपीठ पुरस्कृत वरिष्ठ कवि एवं शिक्षक रहमान राही, कश्मीरी कविता के पुरोधा जगन्नाथ सागर, शंभूनाथ भट्ट हलीम तथा ओंमकार नाथ शबनम, राधेनाथ मसरर्थ, याकूब दिलकश आदि काल कवलित हो गए। इन सभी साहित्यकारों का कश्मीरी भाषा साहित्य को समृद्ध कराने में अत्यधिक योगदान रहा है।

इस प्रकार से उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर वर्ष 2022 के कश्मीरी साहित्य का जो परिचयात्मक आकलन प्रस्तुत किया गया है यह भी श्रमसाध्य कार्य है। इसमें सहयोग तो अनेक लेखकों का रहा विशेषकर कश्मीरी कवि अशोक गोहर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने इस आलेख को पूरा करने में सहयोग दिया।

❑❑❑

6

कोंकणी साहित्य



चंद्रलेखा डिसौज़ा

तुलनात्मक साहित्य में विशेष अभिरुचि। प्रमुख रचनाएँ–'धर्मवीर भारती और प्रकाश पड़गॉवकर की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन', 'कोंकणी काव्य चेतना (अनुवाद)' आदि अनेक अनूदित रचनाएँ प्रकाशित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

कोंकणी काव्य

इस साल 2022 में अपना काव्य संग्रह लेकर कवि धर्मानंद वेर्णेकार, कोंकणी काव्य विश्व में अपना अस्तित्व दिखा रहे हैं। उनके काव्य संग्रह का नाम 'देग दिगंता–' अर्थात रेखा अनंत क्षितिज की–है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कवि अपने विचारों के केनवास पर अनंत रेखाएँ खींचते नजर आते हैं। डॉ. नंदकुमार कामत इस काव्य संग्रह पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''इस काव्य संग्रह में कवि के अलग अलग मूड्स दिखते हैं। जैसे विचारगर्भ, यादों के कोलाज, चिंतक, जीवन के निरीक्षक रूप में, पेंटर का स्वर, प्रेमी का स्वर।''

(कोंकणी से अनुवाद)

काव्य संग्रह को पढ़ते हुए इस बात की पुष्टि हो ही जाती है। कवि का अभिनंदन। जीवन के केनवास पर विचारों के ब्रश से, अलग–अलग रंगों के केलिडोस्कोप के आकार रचकर कवि अपने विचारों को सफलतापूर्वक व्यक्त कर पाए हैं।

कोंकणी कविता के आसमान में दूसरा काव्य संग्रह लेकर गज़लकार राधा भावे आ रही हैं। उनके काव्य संग्रह का नाम "अप्रूपाचे वाटेर" अर्थात सुंदर राह की ओर।

फादर सायमन रिको का काव्य संग्रह 'काजुले' अर्थात जुगनूँ लेकर आएँ हैं। कोंकणी साहित्य में इनका यह काव्य संग्रह, उनकी 21वीं पुस्तक है। दाल्गाद कोंकणी अकादमी ने इसे प्रकाशित किया है। अपने काव्य संग्रह में कवि, आशा की लकीरें खींचते नजर आते हैं। कवि डॉ. रेवणसिद्ध नायक 'सृजन फुलां' काव्य संग्रह में कवि सृजन के अलग–अलग आयामों को व्यक्त करते हुए अपनी बात रखते नजर आते हैं। "हाफ सेन्चुरी" रिश्ते–नातों में उलझा तथा मनुष्यों में संवाद की कितनी आवश्यकता

है, उसके बारे में कवि अंबेश जयकृष्ण तळवडकार चिंतित दिखते हैं। मनुष्य को अपने जीवन में संबंधों की महत्ता समझाने में 'हाफ सेन्चुरी' का कवि सफल है।

ग्वादालूप डायस का काव्य संग्रह 'वावझड' अर्थात बौछार, बारिश की रिम–झिम का चितार हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस काव्य–संग्रह में कवयित्री अलग आशयों में अपना काव्य चिंतन रचती जाती है।

स्व.प्रकाश पाडगाँवकार द्वारा रचित कोंकणी का सर्वप्रथम 'चरित्र महाकाव्य, सम्राट अशोक' प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत महाकाव्य में सम्राट अशोक के जन्म से लेकर मृत्यु तक का वर्णन मिलता है। कलिंग के युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया था, इस बात को हम सब जानते हैं। कवि पाडगाँवकार के इस चरित महाकाव्य में तथागत का संदेश तो है ही, पर साथ में हमारे भारतीय समाज की जाति प्रथा को मिटाने का भी संदेश है।

प्रकाश पाडगाँवकार ने कोंकणी काव्य को कुल दस काव्य संग्रह दिए और यह ग्यारहवाँ महाकाव्य। प्रभु उनकी आत्मा को शांति दें।

विन्सी क्वाद्रुस द्वारा रचित काव्य संग्रह 'पणसुलां' अर्थात कटहल, पणस का छोटा रूप उसे पणसुलां कहा जाता है। क्रिस्तीना मार्टीन्स 'गोडशे' अर्थात मीठा काव्य संग्रह में गोवावासी के स्वभाव का मीठापन, उसकी मीठी यादों को उभारता है। इस कवयित्री का यह पहला काव्य संग्रह है। डॉ. तन्ची कामत बांबोळकार द्वारा रचित 'कवितांची पांवळी' अर्थात काव्य धारा कोंकणी–काव्य–विश्व में अपनी काव्य–रस–धार लेकर आती हैं। इस काव्य संग्रह में कुल 75 कविताएँ हैं। प्रेम, बारिश, खुशी, साहस, दुख, आत्मविश्वास इस विषयों को लेकर डॉ. तन्ची कामत बांबोळकार अपने काव्य संग्रह से व्यक्त होती हैं।

कोंकणी–काव्य–विश्व में, नए, उभरते कवि लिलेश कुडाळकार अपना काव्य संग्रह 'जीण : एक कविता' अर्थात जीवनः एक कविता के साथ पदार्पण कर रहे हैं। उनके इस काव्य संग्रह में वन के अलग–अलग रंगों को, प्रेम के परिदृश्य में वे साकार करते हैं। उनका यह पहला ही काव्य संग्रह है, तो उनके लिए, उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

विजया शेल्डेकार अपने दो काव्य संग्रहों के साथ इस साल अपना स्थान बना रही हैं। 'काव्यगंध' और 'मानसकाव्य' काव्य संग्रहों में कवयित्री अपनी काव्य साधना और काव्य यात्रा पर प्रकाश डालती हैं।

तुकाराम शेट कोंकणी साहित्य में काव्य, निबंध, उपन्यास लिखते रहे हैं। इन्होंने 'आदिउले' अर्थात आदिपुकार नाम से काव्य संग्रह दिया है। प्रकृति और मनुष्य का नाता आदिकाल से चला आ रहा है। मनुष्य की हर जरूरत प्रकृति पूरा कर सकती है। पर मनुष्य इतना लोभी और लालची है कि उसकी झोली भर ही नहीं पाती!

आनेवाले कल में प्रकृति को संदेश देती ये कविताएँ प्रकृति के मौन कार्य–कलाप को सहेजती, संवारती, अपनी राह खुद तय करती, अपना रूप निखारती नजर आती हैं।

कवि प्रकाश नायक अपने जीवन के साठ साल के जन्म दिवस पर एक काव्य संग्रह लेकर कोंकणी साहित्य में अपना योगदान देते हैं। 'मोडकूळ' अर्थात काँटेदार पंजा, जिससे अनाज वगैरह फेंका जाता है। कवि अपने अनुभवों से जिन काँटेदार स्थितियों को झेलते है, या फिर कभी–कभी अचानक ऐसा कुछ काँटेदार चुभ जाता है, जिससे नई स्थिति–परिस्थिति पैदा हो जाती है, जिसका मुकाबला करना जरूरी हो जाता है। कभी–कभी ये काँटा गहन दुख दे जाता है तो कभी विनोदात्मक, व्यंग्यात्मक चित्र भी उभारता है, जिसे कवि प्रकाश नायक व्यक्त करने में सफल हुए हैं।

कोंकणी कहानी

कोंकणी साहित्य क्षेत्र में डॉ. तानाजी हळर्णकार एक ऐसा नाम है जो साहित्य और शिक्षा के अलग–अलग क्षेत्रों में बहुत चर्चित रहा है। डॉ.तानाजी के मरणोपरांत उनका कहानी संग्रह 'जुगलबंदी' अर्थात जुगलबंधी का लोकार्पण हुआ। उन्होंने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि प्रस्तुत कहानी संग्रह में मनोवैज्ञानिक चिंतन, समीक्षण, विश्लेषण इस तरह से चित्रित हुए हैं कि कोंकणी कहानी विश्व में यह कहानी संग्रह अपनी नई राह तलाशता है।

'ब्लॉक' कहानी संग्रह के लेखक गोरक लता सिरसाट हैं। पिछले बहुत सारे सालों से ये अपना कोंकणी लेखन कर रहे हैं। तेरह सालों से महाविद्यालयों में पढ़ा रहे हैं।

'गाँवगाथा' कहानी संग्रह में कहानीकार ग्लिनीस डायस गाँव का जीवन चित्रित करते हैं। ईसाई समाज का चित्रण इस कहानी संग्रह की विशेषता है, तो उसी समाज की कहावतें, मुहावरे, बोलने की अलग शैली, संवाद भी महत्वपूर्ण बन पड़े हैं।

विजयकुमार कोप्रे ने 'मुक्तीची वाट' अर्थात मुक्ति की राह कहानी संग्रह में वे मुक्ति की राह तलाशते हैं। अपने अनुभवों और अपने आसपास का वे कहानियों के माध्यम से बखूबी बयाँ कर सके हैं।

निलिमा मुंग्रे इस साल में 'नवो निश्चय' अर्थात नया निश्चय रूप में कहानी संग्रह लेकर आई हैं। इनके कहानी संग्रह में मध्यम वर्गीय परिवार की घटनाओं को केंद्र में रखकर, प्रभावी स्त्री का चित्रण किया गया है।

डॉ. तन्वी कामत बांबोळकार ने इस साल 'कथांचे शॉट्स' अर्थात कहानियों के शॉट्स नाम से कहानी संग्रह लिखा है। प्रस्तुत पुस्तक में कहानियाँ जैसे छोटे–छोटे शॉट्स में व्यक्त होती रहती हैं। कोई आशय लाँग शॉट में तो कोई क्लोज अप में अपना विचार दर्शन कराता जाता है। जैसे टेक्नॉलॉजी से हमारे संवेदनों में, जीवन में

जो बदलाव आएँ हैं उन्हीं के कारण साहित्यिक आशय भी नए–नए रूप धारण करते नजर आतें हैं।

विशाल खांडेपारकार द्वारा लिखित 'जड काशांव' अर्थात भारी ताबूत। इस कहानी संग्रह में कुल मिलाकर 14 कहानियाँ हैं। प्रस्तुत पुस्तक कोंकणी की रोमी लिपि में है। विषय चयन के अंतर्गत देखें तो प्रेम और संवेदनशीलता के नए आयामों में ये कहानियाँ अपना रूप निखारती हैं।

कोंकणी रंगमंच(नाटक)

कोंकणी रंगमंच के अंतर्गत इस साल 'शोध सुखाचो' अर्थात खोज सुख की नाटक प्रकाशित हुआ। मिलिंद म्हाडगूत द्वारा लिखित इस नाटक में परिवार के संबंधों को उजागर किया गया है। मनुष्य जीवन भर सुख की तलाश करता ही रहता है। नाटककार प्रस्तुत नाटक में परिवार के संबंधों में अपनी खोज जारी रखता है। नाटककार को बधाई।

'रूम मचाये धूम' विनोदी नाटक है, जिसके रचयिता प्रमोद म्हाडेश्वर हैं।

रजनी भेंब्रे कोंकणी साहित्य विश्व में एक जाना–माना नाम है। कहानीकार और बाल साहित्यकार के रूप में वे प्रसिद्ध हैं। आज तक वे 24 पुस्तकें लिख चुकी हैं।

इस साल भी कोंकणी नाट्य स्पर्धा का आयोजन अप्रैल मास में किया गया। 46 सालों से कोंकणी नाट्य स्पर्धाएँ होती रही हैं। इस साल कुल सोलह नाटक हुए। पर मौलिक नाटकों की बजाय अनूदित नाटकों का ही बोलबाला रहा। कोंकणी साहित्यकार मूकेश थळी को लगता है कि मौलिक नाट्य संहिता के लिए कोंकणी नाटककार प्रयत्नशील क्यों नहीं? इतना ही नहीं अनूदित नाटकों में भी शब्दों के वजन, लय, मुहावरे आदि का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है। हर भाषा का एक नादशास्त्र, उच्चारणशास्त्र होता है उसके अनुरूप अनुवाद होना चाहिए। आजकल जिन नाटकों का अनुवाद होता है उनमें, इन बातों का ध्यान नहीं रखा जाता। (भांगरभूंय–कोंकणी अखबार 05 अप्रैल, 2022)

मूकेश थळी को लगता है कि मौलिक नाटकों की कमी है पर दिपराज सातोर्डेकार को (17–अप्रैल, 2022) लगता है कि गोवा की रंगभूमि व्यावसायिक होने जा रही है। यहाँ एक बात ध्यान में रखनी होगी कि कोंकणी रंगमंच पर नाटक और तियात्र दोनों प्रस्तुत होते हैं। तियात्र तो व्यावसायिक है पर कोंकणी नाटक अब तक नहीं थे, जो अब होने जा रहा है। यह किस तरह हो पाएगा इसकी कोई ठोस विचारधारा नजर नहीं आई।

खैर, अगर कोंकणी नाटक व्यावसायिक हो पाते हैं तो अच्छा ही है पर मौलिक कोंकणी नाटक ही न हो तो थियेटर होकर भी नाटक कहाँ से होंगे? क्या अनूदित नाटकों पर ही निर्भर रहना होगा? उत्तर तो समय ही दे पाएगा।

कोंकणी रंगमंच के अंतर्गत नाटकों में इस साल महेश नायक 'आतां करपाचें कितें?' अर्थात अब क्या करें? नाटक प्रकाशित कर रहे हैं। डॉ. प्रकाश वझरीकार नाट्य क्षेत्र के लिए एक जाना माना नाम है। आज तक उनके सात नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। इस साल उनके दो नाटक गोवा कोंकणी अकादमी के अनुदान से प्रकाशित हुए हैं।

I 'भूंय म्हजी भांगराची' अर्थात धरती मेरी सोना उगले।

II 'होमखण' अर्थात होमकुंड प्रस्तुत नाटकों में डॉ. प्रकाश अपनी धरती का महत्व समझाते हुए, उसकी महत्ता को, गोवा मुक्ति इतिहास की पार्श्वभूमि में अर्थात 1946–1955 के समय को विवेचित किया गया है। उच्च शिक्षित हिंदू–ईसाई समाज के लोगों ने मिलकर इस मुक्ति को पाने के लिए संघर्ष किया। प्रस्तुत नाटक में उस समय के प्रादेशिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चित्रण को लेकर नाटक साकार हुआ है।

धरती मेरी सोना उगले नाटक में खदान की समस्या को उजागर किया गया है। खदान समस्या को लेकर कोंकणी साहित्य में बहुत कम लेखन हुआ है। डॉ. प्रकाश वजरीकार का अभिनंदन जिन्होंने गोवा की समसामयिक समस्या को नाटक कहानियों में व्यक्त किया है।

डॉ. तन्वी कामत बांबोळकार रचित दो नाटकों का लोकार्पण हुआ। उनके शीर्षक 'लॉगआवट' और 'अनवाणी' अर्थात नंगे पाँव हैं। प्रस्तुत नाटकों में लॉगआवट नाम से ही पता चलता है कि ऑनलाईन, ऑफलाईन, लॉगइन, ऑडियेबल, म्यूट जैसे शब्द आज हमारे लिए मोबाइल और कंप्यूटर तथा लैपटॉप के कारण अपने जीवन में, टेक्नीकल बदलावों के कारण आज सामान्य शब्द बन गए हैं। उसी तरह नंगे पाँव का संवेदन भी प्रत्यक्ष रूप में महसूस होता रहता है। अपने विषय और आशय में ये नाटक महत्वपूर्ण हैं।

कोंकणी नाट्य विधा में एक नए नाटक ने धूम मचाई है। 'काणी नव्या युगाची' अर्थात कहानी नए युग की। इस नए युग की कहानी को सुचिता नार्वेकार ने लिखा है। कला चेतना संस्था ने इसका प्रकाशन किया है। सुशांत नायक का दिग्दर्शन है। नाटक की कहानी वाकई नए युग की है। शिक्षा क्षेत्र में जो नए बदलाव आए हैं उन्हें उजागर करने की कोशिश की गई है। पढ़ाई में रट्टा मारने के बजाय, जो अपनी पसंद है, रुचि है, उसी को पढ़ना चाहिए। दूसरों की देखा–देखी, अपने विषयों को चुनना नहीं चाहिए। माँ–बाप के लिए भी इस नाटक में संदेश दिया गया है। अपने बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर ही उनके बारे में सोचना चाहिए।

कोंकणी रंगमंच (तियात्र)

'कांतार' अर्थात गीत, इसे गोवा के समाज का उत्तराधिकार कह सकते हैं। गोवा की मशहूर गायिका लोर्ना के गाए गीतों पर यह समाज आज भी नर्तन करता

है। पूरी परंपरा के रूप में क्रिस पेरी, आल्फ्रेड रोझ, कोंकणी कवि मनोहरराय सरदेसाय की याद ताजा हो जाती है। कोंकणी रंगमंच पर आज भी गायकों की लंबी तादात मौजूद हैं। तियात्र में 'कांतार' एकल गायन, ड्युएट, ड्युऔस अर्थात दोनों, त्रिओस= तीन गायक साथ, कॉटेंट्स = चार गायक एक साथ गाना गाएँ, आदि प्रकार के कांतार अर्थात गीत होते हैं।

गोवा की रंगभूमि तियात्र में दिग्दर्शक, लेखक, कलाकार के रूप में तोमाझिन कार्दोझ अपने कांतारों के संग्रह को प्रकाशित कर चुके हैं। शीर्षक है 'कांतारा : गोंयचें दायज' अर्थात् कांतार (गीत) : गोवी की विरासत। इसकी विशेषता यह भी है कि इन कांतारों का–गीतों का संगीत नॉटेशन भी इस पुस्तक में समाविष्ट किया गया है। गोवा की तियात्र अकादमी ने इसे अनुदान दिया है।

इस साल 2022 में कोंकणी तियात्र जो कि पिछले दो सालों से, बिलकुल बंद ही था, अब फिर से हाउस फुल होने लगा है। पोलिस अधीक्षक सॅमी तावारीस द्वारा लिखित 'घर एक घराबो' अर्थात् घर एक घराना, जिसने एक के बाद एक पाँच हाउस फुल शोज किए।

विन्सी क्वाद्रूस, जो कि दाल्गादो कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष भी हैं, उनका लिखा गया तियात्र 'काळोख' अर्थात अंधकार को प्रकाशित किया गया है। अंधकार के अनेक रूपों को समेटते हुए यह तियात्र उनकी पहली पंक्ति है, गायक, अभिनेता, संगीतकार और अनुवादक विन्सी का अभिनंदन।

इस साल तियात्र का विश्व में एक नया प्रयोग हुआ। सबसे पहला तियात्र 'कवळेची सुंदरी' का लेखन 'पाय तियात्रिश्ट' अर्थात तियात्र के पिता का विरुद पानेवाले जुआंव आगुस्तीन फर्नांडीस ने इसे सन् 1893 में लिखा था। दिग्दर्शक माइकल जेकृ ग्राशियस थे। इस तियात्र को 25 नवंबर 2022 को मेंगलुरू के सेंट एलोइसीस कॉलेज में फिर से मंचन करके कॉलेज विद्यार्थी तथा माता–पिता को दिखाया गया। कोंकणी संघ जो मेंगलुरू में कोंकणी भाषा और संस्कृति के लिए कार्यरत है, उनके द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कोंकणी के इस रंगमंच को और बेहतर बनाने में तियात्र के कलाकार, संस्थाएँ, सरकार सब अपने–अपने तरीकों से कार्यरत हैं। अपनी सांस्कृतिक जड़ों को संभालकर, सहेजकर ही रखा जाता है। मेंगलुरू कॉलेज और कोंकणी संघ दोनों का अभिनंदन।

मेंगलुरू में तियात्र का जो प्रयोग नवंबर माह में हुआ वैसा ही प्रयोग मई 2022 को गोवा में किया गया था। कुल मिलाकर चार प्रयोग किए गए थे। द नवहिंद टाईम्स अंग्रेजी अखबार में (जून, 2022) फ्रेडरिक नोरोन्हा अपने लेख में, लिखते हैं कि हमें हमारे भूतकाल के इतिहास को संभालकर रखना चाहिए।

तियात्र के क्षेत्र के एक वरिष्ठ कलाकर जॉन क्लारो हैं। उन्हें संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार मिला है। वे तियात्र निर्माता, लेखक और कलाकार भी हैं। गोवा की तियात्र अकादमी ने इनका सम्मान किया है।

कोंकणी उपन्यास

'कर्मण्ये.....काल, आयज, फाल्यां' अर्थात कर्मण्ये....कल, आज और आनेवाला कल। लेखक अरविंद पांडुरंग भाटीकर द्वारा रचित यह उनका पहला ही उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में सही राह पर चलनेवाले मनुष्य को कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, उसका चित्रण किया गया है। श्रीकृष्ण के उपदेश अनुसार कोई अपेक्षा रखे बगैर अपना कर्म करते जाना....कर्मण्ये वाधिकारस्ते....

उपन्यास के क्षेत्र में माया खरंगटे 'घड्टां घडयतां' अर्थात होते....होते....बनते.... बनते के रूप में इनका उपन्यास आकार पाता है। मायाजी का पहला उपन्यास 'अमृतवेल' था अब यह दूसरा उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में रचनाकार नए विषयों को लेकर लेखन करती नजर आती हैं। साविियो पिंटो ने दो उपन्यास प्रकाशित किए हैं। जिनके शीर्षक हैं– 'नाच बाय नाच; और 'मनीस वा देंवचार' अर्थात मनुष्य या शैतान। इस लेखक ने आज तक कोंकणी उपन्यास क्षेत्र में पाँच उपन्यास लिखे हैं। प्रस्तुत उपन्यास नाच बाय नाच में मनुष्य को चाहे वह पुरुष हो या स्त्री अपने जीवन में सातत्य से चलते रहने, विकास करने का संदेश मिलता है। जैसे चलना ही जिंदगी है....रुकना मतलब मौत.... स्थिर हो जाना है।

मनुष्य या शैतान उपन्यास में मनुष्य की अलग–अलग वृत्ति, प्रवृत्ति, मनुष्य में मनुष्यता, सकारात्मक चिंतन उसके फायदे और शैतान के रूप में वह जो नकारात्मकता को फैलाता है उसे समझने की कोशिश की गई है।

देविदास कदम कोंकणी उपन्यास विश्व में बहुचर्चित नाम है। इस साल वें 'भूंयपूत' अर्थात धरतीपुत्र लेकर आए। प्रस्तुत उपन्यास में, गोवा की आजादी की लड़ाई में जिन्होंने अपना योगदान दिया उन्हें याद करते हुए उपन्यासकार थोड़ी कल्पना और थोड़ी वास्तविकता को लेकर ताने बाने बुनते हैं।

कोंकणी उपन्याकारों में उभरते हुए उपन्यासकार डॉ. प्रकाश पर्येकार ने अपने प्रदेश सत्तरी की समस्या को उजागर करने का प्रयत्न 'पुरण' उपन्यास के माध्यम से अपने गाँव की मिट्टी की सुगंध, किसानों की समस्या पर बड़े मार्मिक रूप से चिंतन व्यक्त किया है। गाँव में पानी की समस्या को सुलझाने के लिए म्हादय नदी पर बाँध बनाया गया पर उसी के चलते गाँव में परंपरागत रूप में हजारों सालों से चली आई 'पुरण' खेती को हमेशा के लिए जल–समाधि मिल गई। पर अब बाँध के कारण नदी में पानी हमेशा रहता है तो 'पुरण' खेती संभव ही नहीं होती! उसका अस्तित्व ही अब नष्ट हो गया है। इसके साथ–साथ उससे संबंधित लोकज्ञान, शब्दसंपदा भी नामशेष हो गई। लेखक अपने इस दुख को, एक किसान की व्यथा को, उपन्यास में बयाँ करते हैं। लेखक का दर्द यही है कि क्या ऐसी कोई टैक्नोलॉजी नहीं हो सकती, जिससे दोनों को बचाया जा सके? क्या हमारे देश के इंजीनियर ऐसा कुछ सोच नहीं सकते जिससे मनुष्य को पानी और खेती दोनों नसीब हो?

रोमी कोंकणी अकादमी द्वारा 'हांव घोवाची बायल' अर्थात मैं पति की पत्नी नाम के इस उपन्यास को अंथनी मिनेझीस ने लिखा है।

डॉ. संध्या भांडारी सिक्वेरा का पहला कोंकणी उपन्यास 'खोटे नाणें' अर्थात खोटा सिक्का आत्मकथनात्मक शैली में 'मोगा' पात्र की जीवनयात्रा को चित्रित करता है। पूरे उपन्यास में जो तथ्य सामने आता है वह यह कि अपने पति से मार खाओ, चारित्र्य पर कुछ भी बोला जाए तब भी वही पति चाहिए! वह घर से निकाल दे तुम चलते बनो। बुलाए तो वापस आओ। अपनी कमाई से अपना घर भी बनाओ पर उसी पति को झेलो जो तुम्हारे बच्चों का बाप है! कैसी आजादी है यह? अपनी खोखली महानता की धुन में मानवीय सम्मान, स्त्री सम्मान दाव पर लगने दो पर उसी पति के लिए उसे गाली दो, सम्मान भी मत दो पर साथ ही रहो क्योंकि वही निकम्मा बाप है जो कुछ भी वह करे फिर भी भारतीय स्त्री उसे माफ ही करे! खैर डॉ.संध्या भंडारी सिक्वेरा का यह भारतीय चिंतन है, उसके बारे में क्या कहा जाए?

प्रोफेसर डॉ. कस्तुरी मोहन ने मणिपाल विश्वविद्यालय में तथा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्था, नई दिल्ली में शिक्षा लेकर, प्रशिक्षण भी पाया। पैंतीस सालों तक आयुर्विज्ञान पढ़ाकर, प्रोफेसर होने के बाद सेवानिवृत्त हुए। भारत देश के 12 विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के परीक्षक के रूप में कार्यरत रहे। हृदयशास्त्र में उन्होंने अनुसंधानात्मक प्रबंध लिखे हैं। डॉ. कस्तुरी मोहन पै ने कोंकणी साहित्य में भी अपना योगदान दिया है। इस साल उन्होंने 'महाप्रस्थान' नाम से उपन्यास लिखा है। महाप्रस्थान उपन्यास में, उपन्यासकार गोवा मुक्ति के पहले की, लोगों की मानसिकता को उभारते नजर आते हैं।

कोंकणी लोकवेद

कोंकणी लोकवेद चिंतन में दो नाम बहुत ही जाने–माने हैं। एक डॉ. पांडुरंग फळदेसाय और दूसरा डॉ. जयंती नायक। इन दोनों द्वारा लिखे लेख 'भांगरभूंय' कोंकणी अखबार में, 19 जून, 2022 को प्रकाशित हुए थे। अपने पूरे लेख में वे लोकगीतों को समूह–मन मानते हैं। लोकवाङ्मय का एक हिस्सा लोकगीतों का है। जिसका स्वरूप मौखिक परंपरा का होता है।

डॉ. जयंती नायक को लगता है कि लोकगीतों में लोकमानस की मनभावन अभिव्यक्ति होती है। गोवा के समाज का वह दाय, जिसमें जीवन का तत्व और सत्व होता है। दोनों विद्वान बिलकुल सही लिख रहे हैं। इस साल कोंकणी लोकवेद में जानकी परब लिखित 'गोंयांतली लोकगितां' अर्थात गोवा के लोकगीत पुस्तक में जानकी परब ने अपनी माता से मार्गदर्शन लेकर इन गीतों का संपादन किया है। डॉ. जयंती नायक 'लोकउत्सव' पुस्तक में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए लोकउत्सव को प्रकृति माता के, ऋतुचक्र से जुड़ा मानती हैं। प्रस्तुत पुस्तक में दस लेखों को संग्रहीत किया गया है।

क्रिस्तांवांचो जागोर/जागर अर्थात क्रिश्चियनों की जागोर।

'जागोर' कोंकणी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उसे लोकनाट्य प्रकार का भाग मानते हैं, फिर भी इसमें नाट्य और नृत्य का सुंदर मिश्रण देखा जाता है। गोवा के तत्कालीन समाज का प्रतिबिंब इसमें द्रष्टव्य होता है। मूलतः यह गोवा के हिंदू आदिवासी समाज का है, पर पुर्तगाली शासन में जो धर्मांतरण हुआ तब यह 'जागोर' ईसाई समाज के पास भी पहुँचा और उसे 'क्रिस्तांवांचो जागोर' नाम मिला। इसी समाज में नए रूप के साथ इसका जन्म हुआ। जागोर या जागर का अर्थ ही है जगाना। गोवा के अलग–अलग स्थानों पर इसे मनाया जाता है। मार्कोस गोन्सालवीस इस पुस्तक के लेखक हैं। उन्हें लगता है इस संदर्भ में और भी अनुसंधान की आवश्यकता है। कोंकणी भाषा में इस तरह की खोज करना, रिसर्च करना, फिर उस पर लिखना एक स्तुत्य प्रयास है।

डॉ. पांडुरंग फळदेसाय कोंकणी लोकवेद में एक जाना–माना नाम है। गोवा की लोककला में जब जागर/जागोर की बात आती है तो शिवोले गाँव में जो जागर होता है उसे धर्म, जात, प्रांतीय सहजीवन के रूप में मनाया जाता है। इसी तरह सत्तरी तालुका में तथा कर्नाटक राज्य के खानापुर में 'रणमालें' खेले जाते हैं। गोवा के लोक कलाकारों ने इसे आज भी जिंदा रखा है। उनके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ तथा उनका इतिहास खोजना भी आवश्यक है।

लोक कलाकार जानकी रघुनाथ परब ने गोवा के लोकगीतों का संकलन प्रकाशित किया है। प्रस्तुत पुस्तक में, गोवा के कलाकारों ने जिन लोककलाओं का प्रस्तुतिकरण किया है उनमें पालने के गीत, लोरी, शादी के गीत, फुगड़ी–लोकनृत्य प्रकार, दोहद–गीत आदि के रूप में लोकगीतों को संकलित किया है।

आत्मकथा और जीवनी

कोंकणी साहित्य में अभयकुमार वेलीगंकार एक जाना पहचाना और चर्चित नाम है। इस साल इनकी दो रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं–

1. तत्वनिष्ठ सेवक (चरित्र)
2. 'कांटे कणंगां' (शक्करकंद की एक जाति)

यह निबंध संग्रह है तो वैचारिक लेख के अंतर्गत इसकी चर्चा की गई है।

'तत्वनिष्ठ सेवक' के रूप में प्रस्तुत पुस्तक में लेखक अपने तत्वों की निष्ठा का बखूबी चित्रण देते हैं। तत्वों की इस यात्रा में तत्वनिष्ठ सेवक को लेखक विस्तृत रूप में विश्लेषित कर पाए हैं। अपना सकारात्मक चिंतन पाठकों के सामने रख पाए हैं। डॉ. द्वारकानाथ कोटणीस, फ्रांसिश्कु लुईस गोमीश, मिनेझीस ब्रागांझा, वुल्फ टोन ऐसे चरित्रों के माध्यम से लेखक अपनी लेखनी द्वारा सिर्फ बाल साहित्य के रूप में ही नहीं पर बड़ों के लिए भी, उन चरित्रों के माध्यम से अपना इतिहास समझने में आसानी होगी।

उदय देशप्रभू ने 'करूणानिधी' के नाम से बुद्ध चरित्र दिया है। बुद्ध के चरित्र की विशेषता, दया, करुणा और मानव जाति के लिए बुद्ध संदेश की महत्ता को लेखक उजागर करते हैं।

विशाल सिनाय खांडेपारकार ने इस साल चरित्र लेखन में दो पुस्तकें लिखी हैं–

1. पेद्रु कुर्रैय वाज़ आफोंस 2. हांणी देश घडयलो अर्थात इन्होंने देश को गढ़ा

1. पेद्रु कुर्रैय वाज़ आफोंस एक ऐसे व्यक्ति जो सामान्य मनुष्यों को किसान की महानता, खेती की उपयोगिता तथा पत्रकारी में योगदान देने की सलाह देते हैं। औपनिवेशिक काल में पुर्तगालियों के खिलाफ इन्होंने अपनी लेखनी को चलाया।

2. दूसरी पुस्तक के आवरण चित्र को देखकर ही पता लग जाता है कि इसमें सर्वपल्ली राधाकृष्णन, अटल बिहारी वाजपेजी, मौलाना आजाद, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राम मनोहर लोहिया, डॉ. मनमोहन सिंह। इनके नामों और कार्यों से हम सब वाकिफ हैं। इन सबने अपने देश को अपने मुकाम तक पहुँचाया है।

अशोक कामत 'मन पावलांचें' अर्थात मन सोपानों की–यह आत्मकथात्मक पुस्तक है। पहले भाग का प्रकाशन हुआ है, जिसमें लेखक सामाजिक दस्तावेज़ रखते हुए अपना लेखन समृद्ध करते नज़र आते हैं।

प्रो. वसंत सैल पेशे से कॉलेज के प्रोफेसर हैं। अपने जीवन के साठ सालों को पार करने के बाद, अपने जीवन के संघर्ष को झेलते हुए, उन्होंने इसे एक पिता के रूप में एक प्रेरणादायी संदेश के रूप में पाठकों के सामने रखने की कोशिश की। पूरा उपन्यास, एक पिता की व्यथा, संघर्ष, जिजीविषा, आत्मविश्वास जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण इन सबके कारण एक सुंदर, सक्रिय कृति बन पाई है।

उपन्यास का शीर्षक ही बहुत कुछ संकेत कर देता है, 'कोमुल' अर्थात कोमल, नाजुक। कोंकणी भाषा में 'कोमुले।' शब्द है जिसका अर्थ है तितली! कितनी रंगरंगीली, फलों–फूलों पर उड़ती, जिसे पकड़ना ही असंभव। जैसे हमारी उंगलियाँ छूते ही, वह मुरझा जाएगी। वैसे ही माता–पिता के लिए अपनी संतान ही पूरी दुनिया होती है। खासकर जब बच्चा दिव्यांग होता है तब उसका जीवन, विपरीत परिस्थिति निर्माण करता है। उपन्यासकार का बेटा सेरेब्रल पालसी का शिकार है। जिसका नाम है अपूर्व। इस अपूर्व को स्कूल भेजने के पूर्व और स्कूल में भेजने से लेकर दसवीं कक्षा तक पहुँचाने में, बहुत सारे लोगों का योगदान है। डॉक्टर, स्कूल के प्रिंसिपल, टीचर्स,, ब्रांदा के मानसोपचारक.... ऐसे कई नाम हैं। लेखक वसंत सैल गोवा के एम.ई.एस. महाविद्यालय में पढ़ाते थे, उस समय के कॉलेज प्राचार्य माधव कामत जिन्होंने अपूर्व को जब वह एस.एस.सी. पास हुआ तब कहा– "वसंत, यू, हेव मेड मिरेकल!!" एक संघर्षमय जीवन, पर कितना प्रेरणात्मक!!! मानवीय संदर्भों को एक उच्चतम गरिमा प्रदान करता हुआ, दूसरों का मार्ग प्रशस्त करता हुआ!

कोंकणी अनुवाद, लिप्यंतरण

कोंकणी लेखक शरतचंद्र शणै ने मंगेश वेंकटेश नाडकर्णी द्वारा लिखित संस्कृत काव्य 'सामाजिक नीति काव्यगुच्छ' का कोंकणी में अनुवाद किया है। इस अनूदित कृति के बारे में प्रो. डॉ. कस्तुरी मोहन पै का कहना है कि कोंकणी साहित्य में इस अनुवाद के कारण, एक नई परंपरा शुरू हुई है।

कोंकणी अनुवाद और लिप्यंतरण के अंतर्गत इस साल 2022 में बाल साहित्यकार कुमुद नायक की दो पुस्तकों का लिप्यंतरण, कोंकणी की रोमी लिपि में किया गया है। लेखक अँडवीन फर्नांडीस ने इसे रोमी लिपि में सजाया है। 'मॉनिटर' और 'एकता ही बल' दोनों पुस्तकें कोंकणी की देवनागरी लिपि में अपना स्थान बना चुकी हैं अब इसे कोंकणी की रोमी लिपि में भी पढ़ा जा सकेगा।

महात्मा गांधी के 'हिंद स्वराज्य' से हम परिचित ही हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1933 में हुआ। जिसमें प्रस्तावना/महादेवभाई देसाई ने लिखा है। कोंकणी भाषा में इस पुस्तक का अनुवाद उदय देशप्रभु ने किया है। गांधी जी के विचार से स्वराज्य क्या होगा, इसे उन्होंने व्यक्त किया है।

गांधी जी की जयंती के दिन ही कोंकणी साहित्य में एक और कृति अनुवाद द्वारा प्रकाशित हुई। जिसका शीर्षक है– 'गांधी जी नांवाचो शूर मनीस' अर्थात गांधी जी नाम का एक शूर मनुष्य, इस कृति के मूल लेखक राजा शिरगुप्पे और कोंकणी अनुवादक अनंत अग्नी हैं। इस पुस्तक का लोकार्पण अरूण कमल द्वारा हुआ। गांधी जी की दक्षिण अफ्रीका यात्रा, वहाँ की समस्या, गोरों कालों की समस्या, टॉलस्टॉय फार्म का निर्माण, स्वच्छता के बारे में गांधी जी का चिंतन, मातृभाषा पर गांधी जी के विचार, वकालत करते समय भी गांधी जी की भूमिका आदि के संदर्भ में चिंतन पाया जाता है। इतना अच्छा अनुवाद कोंकणी साहित्य को देने के लिए, अनुवादक अनंत अग्नी को बधाई।

'कोंकणी उपन्यास' IV भाग में 'दो काश्मुर्स' के शीर्षक पर लिखा गया है। मूलतः यह उपन्यास पुर्तगाली भाषा में है जिसका कोंकणी में अनुवाद हुआ है इसलिए इसे अनुवाद के इस भाग में रखा गया है। इस ढंडी प्रकृति के 'दो काश्मुरू' को जिस चित्रण के द्वारा आत्मकथनात्मक रूप में उभारा गया है, उसमें लेखक जोकीं मारिया माशादु द आसिस जिनका जन्म 21 जून, 1839 में, और मृत्यु 29, सितंबर 1908 में हुई। ब्राजील के एक गरीब घर में जन्मे यह लेखक विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने से वंचित रहे, पर साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक जैसी अलग–अलग साहित्यिक विधाओं में नाम कमाया। पुर्तगाली भाषा के साथ–साथ उन्हें फ्रेंच, अंग्रेजी, जर्मन और ग्रीक भाषाएँ आती थीं। इनकी याद में सन् 1941 में "ब्राझिलियन अकादमी फॉर लेटर्स" संस्था ने 'माशादु आसिस' नाम से ब्राजील देश का सर्वोच्च प्रतिष्ठा पुरस्कार शुरू किया।

'दो काश्मुरू' उपन्यास में छोटे–छोटे प्रकरणों में अपनी बातें रखी हैं। कुल मिलाकर 148 अलग–अलग प्रसंगों में से लेखक अपना जीवन पट हमारे सामने रखते जाते हैं। अनुवादक नारायण भास्कर देसाय भी अभिनंदन के पात्र हैं, जिन्होंने कोंकणी साहित्य को इतनी अच्छी कृति दी है।

अनुवाद और लिप्यंतरण में इस साल कोची से कोंकणी की कुणबी बोली में 'कुळुब्या रामायण' जो कि मूलतः मलयालम भाषा में कवि तुंजत्त रामानुजन एषुत्तच्चन ने इसे अध्यात्म रामायण के रूप में रचा और कोंकणी में इसका अनुवाद कवयित्री माया पी.एस. ने किया है। कोंकणी भाषा की मलयालम लिपि और देवनागरी लिपि में इसकी रचना की गई है।

कोंकणी समीक्षा

कोंकणी भाषा मंडल और मेंग्लुरू के कविता ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में समीक्षा संवाद नाम से चर्चा सत्र आयोजित किया था उसमें मेंग्लुरू के लेखक एच्चे पेरवाळ द्वारा रचित कोंकाणी काव्य रूपां और रुपक पुस्तक पर चर्चा देखी गई थी। डॉ. पूर्णानंद च्यारी ने लेखक से संवाद साधकर अपनी बात रखी। इस ज्ञानपीठ पानवाले कोंकणी साहित्यकार दामोदर मावजो ने कहा कि कोंकणी में सिर्फ आस्वादक समीक्षा ही होती है। पर किसी भी भाषा के साहित्य परिपक्वता और प्रगल्भता के लिए समीक्षा अत्यंत आवश्यक होती है। इस मामले में कोंकणी साहित्य अभी भी परिपक्व नहीं हो पाया।

एच्चेम पेरनाळ के मत से समीक्षा के लिए विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक नजर होनी अति आवश्यक होती है। अपनी पुस्तक में लेखक एच्चेम पेरनाळ समीक्षा और आलोचना के संदर्भ में अपने विचार विश्लेषणात्मक रूप से व्यक्त करते नजर आते हैं। इस पुस्तक की चर्चा आगे की गई है।

कोंकणी समीक्षा–आलोचना के क्षेत्र में साहित्यकार दामोदर मावजो, एडवोकेट उदय भेंब्रे अपने विचार रखते तो हैं पर अपनी ही पुस्तकों पर जब समीक्षणात्मक कुछ लिखा जाता है तो कोंकणी साहित्यकार उस समीक्षा को कृति की समीक्षा नहीं मानते, उनके लिए तो वह व्यक्तिगत समीक्षा बन जाती है। 23 अक्तूबर, 2022 'भांगरभूंय' कोंकणी अखबार में दामोदर मावजो का लेख 'प्रेरणादायी समिक्षा' छपा है। जिसमें वे लिखते हैं कि कोंकणी साहित्य अलग–अलग विधाओं में लिखा जा रहा है पर समीक्षा बहुत ही कम हैं। नए समीक्षक, आलोचक कोंकणी भाषा के लिए तैयार होंगे, ऐसा विश्वास रखते हैं।

विशाल खांडेपारकार 'अभिसार'' पुस्तक में कुल 28 लेखों का संग्रह लेकर आए हैं। समीक्षणात्मक पुस्तक के लिए विशाल को बधाई। कोंकणी साहित्य में इन्होंने आज तक –बाल साहित्य 04, –काव्य संग्रह 01, लिप्यंतरण 04, कहानी संग्रह 01 कुल दस पुस्तकें दी हैं। प्रस्तुत समीक्षणात्मक पुस्तक में प्रतिष्ठित कोंकणी साहित्यकार प्रथम

लेखन को स्थान दिया गया है। वास्तव में इन लेखों को पढ़ाते हुए समीक्षा का स्वरूप द्रष्टव्य नहीं होता। असल में 'अभिसार' पुस्तक, में शणै प्रकाशन संस्था ने आज तक, जो प्रकाशित किया है उनमें से कुछ साहित्यकारों को चुनकर, लेखक ने उन साहित्यकारों के साहित्य के बारे में जानकारी देते हुए आस्वादन प्रक्रिया के रूप में अपना विवेचन प्रस्तुत किया है।

समीक्षा के क्षेत्र की दूसरी पुस्तक है 'कोंकणी काव्येंरू रूपां आनी रूपकां' अर्थात कोंकणी काव्यः रूप और रूपक जिसको लिखनेवाले समीक्षक का नाम एच्चेम पेरनाळा है। कन्नड लिपि की कोंकणी में पिछले 35 सालों से इनकी साहित्य यात्रा समृद्ध हो रही है। इनके दो काव्य संग्रह, दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। विश्व कोंकणी केंद्र से उन्हें श्रीमती विमला पै पुरस्कार मिल चुका है। कविता ट्रस्ट, मंगलुरू से 'भथायस कुटुंब कविता' पुरस्कार भी इन्हें मिला है। वे कन्नड और अंग्रेजी में भी लिखते रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक की प्रस्तावना में, कोंकणी के प्रसिद्ध कथाकार दामोदर मावजो समीक्षा को प्रेरणादायी मानते हैं। उनके मन से कोकणी में समीक्षक, विमर्शक बहुत ही कम हैं। कोंकणी साहित्य की दिशा तय करने में भी समीक्षा, आलोचना बहुत ही आवश्यक है।

कोंकणी समीक्षा विश्व में आस्वादन से आगे समीक्षक की यात्रा तय करनेवाली तथा कही जानेवाली आलोचना भी करनेवाली एच्चेम पेरनाळ और भी ऐसी पुस्तकें लिखेंगे, यही शुभकामना।

समीक्षा के क्षेत्र में विशाल खांडेपारकार ने 'सार' पुस्तक के रूप में कोंकणी के कुल सत्रह लेखकों पर अपने समीक्षणात्मक रूप में लेख लिखे हैं। समीक्षा–आलोचना के बारे में एक अजीब बात है कि, कोंकण साहित्यकार चाहते हैं कि इनकी पुस्तकों पर लेख लिखे जाएँ। पर जब वाकई लिखे जाते हैं तब साहित्यकार को लगता है कि उनकी पुस्तक के साथ न्याय नहीं हुआ। खैर विशाल खांडेपारकार द्वारा भविष्य में और बेहतर पुस्तकें प्रकाशित हों यही अभ्यर्थना।

कोंकणी वैचारिक लेख और शब्दकोश

कोंकणी साहित्य क्षेत्र में गायकी के साथ–साथ लेखन करनेवाले भी हैं, जिसके कारण 'षड्ज' साहित्य कृति आकार पाती है। संगीत क्षेत्र के महत्वपूर्ण व्यक्तियों को इसमें शामिल किया गया है। गायक रुपेश गाँवस ने इस पुस्तक को लिखा है। देश के संगीत क्षेत्र में जिनका महत्वपूर्ण योगदान है उन लोगों के बारे में विस्तृत जानकारी इन वैचारिक लेखों में दी गई हैं।

कोंकणी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार कोंकणी अखबार 'भांगरभूंय' के लेखक और करिअर मार्गदर्शक प्रा. रामदास केळकार इस साल 'प्रतिबिंब' ललित लेखों का संग्रह लेकर आए हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अपने आसपास के वैचारिक विश्व का प्रतिबिंब, प्रतिबिंबित करते हुए लेखक सघन रूप से अपने वैचारिक चिंतन को व्यक्त कर पाए हैं।

वैचारिक लेखन में इस साल नीमा आमोणकार अपने लेखों के साथ उभर रही हैं। नीमा आमोणकार की शैली अत्यंत सादी, सरल और रोचक है। इस समभाव में महिलाओं ने बहुत सारे आंदोलन चलाए हैं। हमें चाहिए कि हम उनका अध्ययन करें।

वैचारिक लेखन में वेलीगंकार अभय अपना निबंध संग्रह काटेकी लेकर आए हैं। वैसे तो 'कांटेकणंग' शक्करकंद की ही जाति का है। पर इसमें मिठास बिलकुल नहीं होती। बाहर से इसे देखने पर इसके छिलके कँटहले रोएंदार दिखते हैं। ग्वादालूप डायस कोंकणी में कविताएँ और वैचारिक लेखन दोनों में माहिर हैं। इनके काव्य संग्रह के बारे में कोंकणी काव्य के अंतर्गत विचार किया गया है। यहाँ पर इनके 'पानगळ' अर्थात पानवर लेख संग्रह के बारे में विचार किया जाएगा। पानखुर पुस्तक को पढ़ते हुए, लेखिका की शब्द संपदा देखकर बहुत अच्छा लगता है।

वैचारिक लेखन में संजय तळवडकार भी जाना पहचाना नाम है। अपने गाँव की संस्कृति, परंपरा, उनका सहज व्यवहार यहाँ पर चित्रित किया है। इनकी शैली बहुत ही मनोरंजक तथा हास्य है। पुस्तक का शीर्षक– 'भूस बरो जाल्यार दीस बरो' अर्थात खाना अच्छा फिर दिन भी अच्छा। आज की आपा–धापी की जिंदगी में, अपना भाव विश्व अगर हमें ताजगी दे सकता है तो हमें उन यादों को तरोताजा रखकर, जीवन में उनकी खुशबू बिखेरनी चाहिए।

शैलेंद्र मेहता, कोंकणी साहित्य में एक ऐसा नाम है जो अपने चिंतनात्मक लेख लिखते रहते हैं। इस साल वे 'मुक्त चिंतन' पुस्तक में विविध विषयों को लेकर हमें चिंतनात्मक सैर कराते हैं।

कोंकणी साहित्य के वैचारिक विश्व में संपदा कुंकळकार का एक जाना–माना नाम है। 'जीवन– योग' पुस्तक उनके वैचारिक चिंतन क्षेत्र के अनेक मोती संजोती है। जीवन–योग दोनों में जो संयोग होता है जिससे जीवन और बेहतर बन पाता है। इस उच्च से उच्चतम की ओर लेखिका अपना चिंतनात्मक दृष्टिकोण विवेचित करने में सफल हुई है। वैचारिक लेखन में मैंने व्यंग्य की रचनाओं को भी समा लिया है। इस साल 'हसणभूंय' मसणभूंय में से 'ह' के स्थान पर 'म' कर दें तो हँसने के बदले 'मसण' अर्थात मसान बन जाता है। भूंय अर्थात भूमि तो पूरा शीर्षक बनेगा– हसण जमीन के बदले मसण जमीन बन जाता है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक दिलीप धारगळकार ने बारह लेखों के संग्रह में श्मशान भूमि से संबंधित लेखक के अनुभवों को चित्रित किया गया है।

'आंबेडकरी शिलेदार दादू मांद्रेकार' अर्थात आंबेडकरी सूरमा दादू मांद्रेकार पुस्तक का लोकार्पण हुआ। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक डॉ. महेश पेडणेकार हैं। अपने आपको सुसंस्कृत माननेवाले हम, आज भी अंधश्रद्धा, रूढ़ि, परंपरा को छोड़ नहीं पाते? दादू मांद्रेकार के जीवन, आदर्श, विचारों को आधार बनाकर इस पुस्तक को रचा गया है। वैचारिक लेखन में एक और नाम जुड़ता है– अविनाश कुंकळकार। उनकी पुस्तक 'मनांतले पेनांतल्यान' अर्थात मन की बात पेन से....

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक मन में प्रेम के बीज उगाता है। मित्र, बचपन, घर, कलाकार, कवि ऐसे लेखों से अपने विचारात्मक स्पंदनों को आकार देते हैं।

'आत्मसाद' अर्थात आत्मशोध, जिसे अनंत अग्निजी ने अपनी वैचारिक परिपक्वता से सजाया है। प्रस्तुत पुस्तक में, बच्चे, बड़े, विद्यार्थी, पालक, शिक्षक, वरिष्ठ नागरिक, शिक्षा और नई शिक्षा नीति आदि विषयों पर लेखक अपने विचार रखते हैं।

अशोक नेने कोंकणी भाषा की चित्पावनी बोली में 'आमचे आमी' अर्थात हम पुस्तक लेकर आए हैं।

कोंकणी भाषा में इस साल एक शब्द–कोश ऐसा आया है जो सांस्कृतिक शब्दों को लेकर बना है। 'उतरां' अर्थात शब्द, शब्दों का सांस्कृतिक संदर्भ बताते हुए शब्दकोश शब्दकोशकार विनायक खेडेकर ने अपना कार्य संपन्न किया है।

'साग्रसंगीत' अर्थात पूर्ण संगीत जो लेखक की वैचारिक शक्ति को नया आयाम देता है। हिंदुस्तानी संगीत की इस महक से कोंकणी भाषा भी समृद्ध ही हुई है। कोंकणी साहित्य में 'साग्रसंगीत' का स्वागत है।

कोंकणी सिनेमा, 2022 IFFI Canneor CANNES

सन् 2002 में, नवंबर 20 तारीख से IFFI आयोजन हुआ। इस साल यह 53वाँ अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव आयोजित किया गया। इस महोत्सव में 25 फिल्में फीचर फिल्म के रूप में थीं और 20 में लघुपट को दर्शाया गया। पॅनोरमा का उद्घाटन पृथ्वी कानानूर द्वारा दिग्दर्शित 'हेडिनेलेन्दु'.. कन्नड फिल्म को प्रदर्शित करके हुआ। नॉन फीचर फिल्म विभाग का उद्घाटन दिव्या कावसजी द्वारा दिग्दर्शित 'द शो मस्ट गो ऑन' अंग्रेजी फिल्म द्वारा किया गया।

फीचर फिल्म विभाग में 354 सिनेमा थे, जिनमें से 25 उत्कृष्ट समकालीन भारतीय सिनेमा का चुनाव, 12 सदस्यों की बनी निर्णायक समिति ने किया। इस साल की इफ्फी के स्पर्धा विभाग में उत्कृष्ट सिनेमा का पुरस्कार 'आय हॅव इलेक्ट्रिक ड्रिम्स' कृति को मिला। स्वर्ण मयूर, पानेवाली यह सिनेमा सोलह साल की उम्र की लड़की की भावनाओं में आकार पाते उतार–चढ़ावों को दर्शाने का कार्य करती है। व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंधों की उलझनों को सुलझाने का, इसे समझने का प्रयास इस सिनेमा द्वारा किया गया है। 'रजन मयूर' पानेवाला सिनेमा 'नादर साईवार'– नो एण्ड रहा। तेलुगू अभिनेता चिरंजीवी को 'पर्सनालिटी ऑफ द इयर' पुरस्कार दिया गया। समापन समारोह में पोलैंड का सिनेमा 'पर्फेक्ट नंबर' दर्शाया गया ।

जहाँ तक कोंकणी फिल्मों की बात है तो इतिहास गवाह है कि सन् 1950 में 'मोगाची आंवडो'– प्यार का घूँट – फिल्म बनी। पर दूसरी फिल्म आने में बारह साल निकल गए! आज भी कोंकणी सिनेमा बहुत सारी मुश्किलों का सामना कर ही रहा है। शासन व्यवस्था, प्रेक्षक, आज की टेक्नोलॉजी, ओटीटी प्लेटफॉर्म, कलाकार सब

जब साझे में आएँगे तब प्रादेशिक फिल्मों का विकास हो पाएगा। एक फीचर फिल्म 'गोंय मुक्तीचे होमकुंड' अर्थात गोवा मुक्ति का होमकुंड, दिग्दर्शन ज्योति कुंकळकार है।

कोंकणी बाल साहित्य

कोंकणी साहित्य में बाल साहित्य पर नयना आडारकार ने एक लेख लिखा था, जिसके मूल विचार को ही हिंदी में शाब्दिक रूप दे रही हूँ। विश्व बाल–साहित्य और कोंकणी के बाल साहित्य के विकास को दर्शाते हुए वे सन् 2007 में जो प्रयोग किया था उस पर प्रकाश डालने की कोशिश करती नजर आती ह। ए4 पेपर के चार टुकड़े करके, उस एक टुकड़े पर जो समा सके उतनी ही बाल कहानी लिखने का आह्वान वे स्वीकारती हैं पर कोंकणी लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। छोटी कहानी को बच्चे पढ़ते हैं। इस बदलाव को बहुत सारी भारतीय भाषाओं में भी स्वीकारा गया। गोवा कोंकणी अकादमी ने भी बाल साहित्यकारों को इसके लिए प्रोत्साहन दिया। कार्यशाला का आयोजन किया गया। कोंकणी भाषा मंडल ने बाल साहित्यकारों को गोवा में आमंत्रित किया। बाल साहित्यकार और बालकों के इस प्रयोग से भविष्य में नई प्रक्रिया आरंभ होकर कोंकणी के काल्पनिक बाल साहित्य को समृद्ध किया जा सकता है। नयनाजी के आशावाद से सहमत होते हुए, सफलता के लिए अग्रसर होते हुए कोंकणी बाल साहित्य को शुभकामनाएँ।

बालकवि के रूप में उमेश मनोहर सरदेसाय एक काव्य संग्रह– 'चानये चानये गोड कर' अर्थात चिखुरी चिखुरी मीठा करके रूप में पदार्पण करते हैं। कोंकणी कवि स्व. मनोहरराय सरदेसान के सुपुत्र भी अपने पिता की तरह कवि के रूप में उभरते हैं। बाल–गीतों के रूप में ये कवि बाल विश्व को समझते हैं, चितारते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, ये गीत सकारात्मक प्रयोजन लेकर अपनी ऊँचाई तय करते हैं। उमेश जी का अभिनंदन।

कोंकणी साहित्य आज भी देवनागरी, रोमी और कन्नड तथा मलयालम लिपि में भी लिखा जा रहा है। अपने पूरे लेख में वे बाल साहित्य को किस तरह बेहतर बनाया जा सकता है, भारतीय बाल साहित्य की तुलना में कोंकणी (रोमी लिपि की कोंकणी और देवनागरी) के बाल साहित्य को और भी बेहतर बनाने में इनकी लिखी बातों को ध्यान में रखकर कोंकणी बाल साहित्य और भी समृद्ध हो, ऐसी आशा करते हैं।

कोंकणी रोमी लिपि में भी बाल साहित्य पर इस साल अलग रूप से विचार किया गया है। 'भांगरभूंय' कोंकणी अखबार में (शनिवार, 18 जून, 2022) विन्सी क्वाद्रुस ने अपने लेख में, विवेचनात्मक स्तर पर चिंतन किया है। उनके मत से कोंकणी देवनागरी लिपि में, बाल साहित्य पर जितना कार्य हुआ, उतना रोमी लिपि में नहीं हुआ है, फिर भी कुछेक लेखक सातत्य से बाल साहित्य पर लेखन कर रहे हैं। मारिया आफोन्सो, आंतोनियो मास्कारेनस, विली गोयश, मिनीनो आल्मेदा, आयरिन कार्दोज, विन्सी

क्वाद्रुस, विशाल शिनाय खांडेपारकार, रूई कुयेलो, मायरन जेसन बारेटो, फादर प्रताप नायक आदि।

कोंकणी डिजिटल साहित्य

(पत्रकारिता, ऑडियो, की वीडियो, समूह माध्यम, ई–बुक, जनसंचार)

कोंकणी के प्रसिद्ध गीतकार जॉन अगियार द्वारा रचित 'मंगेश म्हज्या देवा' अर्थात मंगेश मेरे इष्ट देवता के नाम से भक्ति गीतों का ये वीडियो, जॉन अगियार के यूट्यूब चैनल पर भी अपलोड किया है। सोशल मीडिया पर भी इसे वायरल किया जाएगा। इसकी गायिका समीक्षा भोबे काकोडकार हैं। संगीत रचना/व्यवस्था/मिश्रण संगीतकार अक्षय नायक का है। भविष्य में इस तरह के और भी वीडियो बनेंगे ऐसी आशा की जा सकती है।

'गोवा की स्वतंत्रता का होमकुंड' शीर्षक से इस फिल्म में डॉ. राम मनोहर लोहिया और जुलियो मिनेझीस के साथ–साथ इस स्वातंत्र्य क्रांति के इतिहास की मशाल को प्रज्वलित करने वाले वीरों को याद किया गया है। ज्योति जी का अभिनंदन!

कोंकणी भाषा मंडल द्वारा 'शाणी मस्ती' नाम से, बच्चों के लिए सी.डी. का लोकार्पण किया गया। बालकों के लिए उपयोगी ऐसी सात सी.डी. को बनाया गया है 'नमस्कार भारत' नामक सी.डी. में गोवा के मुक्त आंदोलन को समेटा गया है। गीतों के साथ इन सी.डी. में विषयों के अनुरूप इतिहास को भी स्थान दिया गया है।

कोंकणी डिजिटल साहित्य में कोंकणी जॅझ के प्रणेता कॉलिन डिक्रुझने कोंकणी 'जॅझ गोवा' द्वारा गोमंतकीय संगीतकारों को बिना कोई शुल्क लिए एक व्यासपीठ दी है। उन्होंने कोंकणी गीतों को 'जॅझी फाय' नाम दिया है। पोलंड, नोर्वे, अफ्रीका और भारत देश में भी यूट्यूब चैनल पर सुना जा सकता है। www.jazzgoa.com पर भी इस संगीत का आनंद लिया जा सकता है।

कोंकणी गीतों के 100 एल्बम बनानेवाले गीतकार एडवीन द कॉस्ता सबसे तेज गति से गीत रचने वाले हैं, ऐसा माना जाता है। इनके एल्बम के शीर्षक ए टू जेड के क्रम से रखे गए हैं। उनके पहले एल्बम का नाम 'गोंयचो आवाज' अर्थात गोवा की आवाज है।

आशावादी प्रकाशन, मेंग्लुरू, कोंकणी के वेबीनार तो करवाता ही है पर साथ–साथ पुस्तक प्रकाशन तथा डिजिटल साहित्य का भी ऑनलाइन पुस्तक प्रकाशन करवाता है। इस साल ई–बुक के रूप में कॅथरिन रोड्रिगस की पुस्तक ई–बुक 'लघु कहानी' तथा 'सांकव' अर्थात पुल, लेखक वल्ली क्वाड्रस द्वारा रचित पुस्तक है। इसी क्रम लघुकहानी अध्ययन पर दो ई–बुक का लोकार्पण हुआ। 'चल दोन चंद्राक' अर्थात चलो दो चंद्र पर– लेकृ वल्ली क्वाड्रस, अजेकार हैं। दूसरी ई–बुक है 'कथाविहान'। इसमें कोंकणी लघुकथा पर कथावस्तु, उसपर प्रस्तुत किया गया तुलनात्मक अध्ययन

है। इसका संपादन वल्ली क्वाड्रस, अजेकार द्वारा किया गया है। कोंकणी विद्यार्थियों के लिए कहानी लेखन, उसकी तुलना के बारे में उपयोगी सामग्री रखी गई है। आशावादी प्रकाशन को, कोंकणी की इन ई–किताबों के लिए धन्यवाद।



7 गुजराती साहित्य



डी. एम. भद्रेसरिया

गुजराती में लेखन कार्य। गुजराती दलित साहित्य में विशेष अभिरुचि। प्रमुख रचनाएँ–'कीडीए खॉखारो खाधो', 'भवोभवनी भवाई', 'भवनुं महेणु', 'अमे इडरियो गढ़ जीत्या रे' (उपन्यास), 'बोटेलों बोर' (कहानी संग्रह), 'दलित साहित्य आने बीजुं', (आलोचना)। 'संत कबीर दलित साहित्य अवॉर्ड से सम्मानित। संप्रति–संपादक'हयाती' (सामयिक)।



हरीश मंगलम

कहानीकार और अनुवादक। कई किताबों का संपादन। चालीस से अधिक किताबें प्रकाशित। प्रमुख कहानी संग्रह–'तलब',। 'अगनझाल' नाम से आत्मकथा प्रकाशित। गुजरात दलित साहित्य अकादमी के संस्थापक सदस्य। 'संत कबीर दलित साहित्य' अवॉर्ड और 'महात्मा ज्योतिबा फुले' अवॉर्ड से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

सांप्रत गुजराती साहित्य पर एक दृष्टि डालते हैं तो प्रमाण मिलता है कि परंपरित साहित्य–प्रवाह में सृजन कार्य हो रहा है। साहित्य–क्षेत्र में युवा सर्जकों का योगदान बढ़ता जा रहा है। साल 2022 में काव्य–साहित्य की तुलना में कथा–साहित्य में ज्यादा और अच्छा सृजन हो रहा है।

अन्य युग–काल के समय की तुलना में अनआधुनिक काल में गुजराती साहित्य अपने आप में पर्याप्त रूप से ज्यादा समृद्ध और विस्तृत बनता जा रहा है। सोशल मीडिया का बढ़ता जा रहा प्रभाव और आक्रमण के अतिरिक्त, साहित्य–पुस्तक प्रकाशन के कार्य में कोई अंतर आया नहीं है। डिजिटल युग में ई–बुक, ई–जर्नल और ऑनलाइन साहित्यिक रचनाओं का दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे प्रसार–प्रचार से भी साहित्यकारों और पाठकों की प्रीति कम नहीं हुई है। इसी कारण साल 2022 में भी गुजराती साहित्य लेखन और प्रकाशन प्रवृत्ति अविरत समृद्ध हो रही है।

गुजराती साहित्य में कविता के कई नए संकलन प्रकाशित हुए हैं। इसमें 'जासूद पर जोगियानो सूर' (हरीश मिनाश्रु), 'खुली आँखे पिंजरमां' (विनोद जोशी), 'काहे कोयल मनाये शोर' (लालजी कानपरिया), 'शब्दछवि' (प्रीति भार्गव), 'स्ट्रीट लाईट' (भरत विंझूड़ा), 'स्पर्श फूलोनो' (पंकज चौहाण), 'पावनी', 'परमा' (डॉ. दिव्याक्षी शुक्ला), 'माटियाला जलना मोती' (विनोद गांधी), 'भट्टखड़की' (योगेश वैध), 'तरतां रह्यां तरणां' (ओमप्रकाश वोरा), 'मन संहिता', 'हुं अने मारी कविता' (भरत त्रिवेदी), 'अंतरवही' (आकाश ठक्कर), 'शाश्वत सुख' (गुरुदेव प्रजापति, 'खावणु' (जागृत परमार), 'थ्री इन वन' (प्रभु पहाड़पुरी), 'सफ़ेद अंधारुं' (भारती प्रजापति), 'अर्थ उघड़ी

रह्या छे' (शैलेन रावल), 'कोई सगा थाव छो ?' (चंद्रशेखर पंड्या), 'कॉमरेड गांधी', (प्रवीण गढ़वी), 'अंतर्वही' लीलांछम्म पांदडे झूले सांकळ' (धनसुखलाल पारेख), आदि कविता की किताबों का समावेश होता है।

सुधारक, पंडित, गांधी युग से लेकर आधुनिक–अनआधुनिक युग में भी कविता का लेखन–प्रकाशन बढ़ता गया है। यही गुजराती पाठकों और साहित्य–प्रियजनों की साहित्य–प्रीति का ठोस प्रमाण है। वर्ष–2022 में शायद ज्यादा साहित्य–सर्जन कार्य हुआ है। कविताओं के संकलन भी ज्यादा प्रकाशित हुए हैं। यह काव्य–साहित्य की एक विशिष्टता के साथ बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। परंपरा को आत्मसात करके गुजराती कविता, ज्यादातर गज़ल स्वरूप में विकसित हुई है, बहुत संख्या में लिखी जा रही है, और उसकी विशेषता के साथ–साथ एक मर्यादा भी बन गई है कि, काव्यभाव लटपटा–सा हो जाता है। सुप्रसिद्ध कवि हरीश मिनाश्रु का ग्यारहवाँ काव्यसंग्रह 'कुंभलगढ़' शीर्षक से प्रकट हुआ है। 'कुंभलगढ़' राजस्थान में आया हुआ एक प्रवास–स्थल है। कुंभलगढ़ के स्थल–विशेष को ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप में प्रकट करती 13 कविताएँ ऐतिहासिक बोध कराती हैं। ज्यादातर कथन स्तर की रचनाओं को सात विभागों में बाँटकर, 65 कविताओं का संग्रह 'रावणहत्थो', उदयन ठक्कर लेकर आए हैं। इसमें कवि के निजी जीवन के अनुभवों की गूँज सुनाई पड़ती है। सोशल मीडिया में शेरों–शायरी करनेवाले युवा कवि विकी त्रिवेदी 'हाजर हृदयथी होइए' गज़लसंग्रह लेकर गुजराती साहित्यक्षेत्र में प्रवेश करते हैं। कुल 151 गज़लों में परंपरित और नूतन प्रणाली की गज़लों का समन्वय दिखाई देता है। वास्तविक जीवन की हरेक परिस्थिति के संवेदन की अनुभूति स्पर्शक्षम बनाते 156 लघु कविताओं का संग्रह 'झाकळनां मोती', वजेसिंह पारगी लेकर आते हैं। जीवन संघर्ष में जूझ रहे मानव की पीड़ा को शब्दश अभिव्यक्त किया है। रचनाओं में यथार्थ को स्वीकार और अन्याय के सामने प्रतिकार दिखाई देता है।

उपन्यास विधा में प्रसिद्ध लेखक डॉ. केशुभाई देसाई का 'कोरोना–कांड' उपन्यास में वैश्विक महामारी की वजह से प्रभावित हुए मानव जीवन की कारणिक परिस्थिति का जीवंत बयान प्राप्त होता है। असमानता के विचारों में ग्रस्त लोगों को बाहर निकालकर, परिवर्तन की हवा फूँकनेवाला, 'जूठी' उपन्यास लेकर अशोकपुरी गोस्वामी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। मावजी महेश्वरी ने साल 1830 में कच्छ प्रदेश में खेले गए युद्ध में सैनिकों की शौर्यगाथा 'छेल्लु युद्ध' उपन्यास में अंकित की है। 'प्रथम विद्रोही शंबूकायण' में इला आरब महेता ने अपनी कलम की शक्ति के सहारे महत्वपूर्ण निरूपण किया है। यहाँ हमें हरीश पंचाल रचित 'धागा लोहिना काचा, नाता प्रीतना साचा' उपन्यास में निरूपित जन कल्याण की बात का जिक्र करना चाहिए क्योंकि 'गीता के नैतिक मूल्यों को वास्तविक जीवन की सार्थकता बनाकर उपन्यासकार ने कल्याणकारी जीवन जिया जा सकता है – ऐसा निश्चित करने का निष्पक्ष प्रयास किया है। युवा सर्जक क्रुणाल गढवीने 'किंकर्तव्यमूढ़' उपन्यास में

प्रतियोगिता परीक्षाओं में संघर्ष कर रहे युवाओं के अस्तित्व से मुक्ति तक की यात्रा का वास्तविक निरूपण किया है। अपने 'पोइजन माइंड्स' उपन्यास में अनिल रावल ने निजी स्वार्थ और संपत्ति प्राप्त हेतु स्वजनों के द्वारा किए गए गुनाहित कृत्यों की बात बुनने का यशस्वी कार्य किया है। 400 पृष्ठों में लिखे 'उर्ध्वलोक' उपन्यास में कल्पेश पटेल ने महाभारत के युधिष्ठिर की जीवनी को केंद्रस्थ किया है, वह एक नया आयाम उबालकर हमारे सामने आता है। तदुपरांत गुजराती साहित्य की उपन्यास विधा में 'वारसदार' (मनीषा गाला), 'अने हुं मरी गयो' (मनहर ओझा), 'वाया रावलपिंडी' (गिरिमा धारे खान), 'डेथ–फीवर' (बालेंदु शेखर जानी), 'बोस्को पापा पगली थी पगरव सुधी' (माहेश्वरी पटेल), ओमान नो ऊँट' (परेश दवे), 'तनु किम', 'नियति' (नियति पटेल), आदि उल्लेखनीय हैं।

कहानी विधा में भी सराहनीय लेखन प्रकाशित हुए हैं। गुजराती साहित्य में समृद्ध कहा जा सके इतनी मात्रा में कहानी के संकलन प्रकट हुए हैं। यहाँ–वहाँ भटकती हुई खानाबदोश जनजातीय के लोगों के दुःख–दर्दभरे दिनों की दास्तान लेकर आए मित्तल पटेल 'पण अहींयां सुख नथी आवतुं' संग्रह में 30 कहानियाँ प्रस्तुत हैं। प्रसिद्ध सर्जक भगीरथ ब्रह्मभट्ट 'क्षणनो झरूखो' के बाद एक और लघुकथा संग्रह 'मननो झरूखो' में 50 लघुकथाओं में मन की खिड़की खोलकर अपने आसपास के वास्तविक जीवन को प्रतिबिंबित किया है। समय के साथ–साथ नवीन विषयवस्तु को निरूपित करनेवाले वर्षा अडालझा ने इस साल 'फरी गृहप्रवेश' कहानी संग्रह प्रकट किया है। इसमें 12 कहानियाँ समाविष्ट हैं। ये मानवजीवन की निजी समस्याओं का हूबहू बयान करती हैं। विनेश अंतानी, मानवजीवन के साथ प्रकृति कितना गहरा नाता रखती है, इस बात का एहसास कराते 'दरियो, रण अने पहाड़' कहानी/संग्रह लेकर आए हैं। इसमें मानवीय संबंधों के ताने–बाने हृदय को छू जाते हैं। ध्रुव भट्ट ने पौराणिक पात्रों को लेकर – जो आज आकाश में तारे बनकर चमक रहे हैं, उस पर 16 कथाओं का कहानी संग्रह 'अंतरिक्ष आगिया' प्रकाशित किया है। कुछ समय पहले हमारे बीच से चल बसे साहित्यकार योसेफ मेकवान ने 'सुखनी त्रिज्या' कहानी संग्रह प्रकट किया है। कुल 22 कहानियों की विषयवस्तु के केंद्र में शिक्षित समाज के लोगों की संवेदनाएँ निरूपित हैं। गिरिमा धारेखान ने अपने दो कहानी संग्रह– 'लंबचोरस' और 'भीनुं भीनुं वादल' की कहानियों में शहरीजीवन के पात्रों की जीवनरीति, सामाजिकता एवं वेदना–व्यथा का सही ढंग से निरूपण किया है। गुजराती दलित साहित्य के प्रमुख प्रवीण गढ़वी ने 'असुरसर्ग' और 'असुरस्कंध' ऐसे दो कहानी संग्रह प्रकट किए हैं। उपलब्ध पौराणिक विषयवस्तु को नवीन दृष्टिकोण से निरूपित करके कहानियों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय सृजनकार्य किया है। प्रवीण गढ़वी ने असुर, स्त्रियों और शूद्रों के साथ हो रहे अमानवीय दुराचार के साथ–साथ ब्राह्मणवाद के सामने विद्रोह जताकर सभी कहानियों का उद्देश्य स्पष्ट–सिद्ध किया है। इसके अलावा 'तेजीनो टकोरो' (मणिलाल न. पटेल 'जगतमित्र'), 'शरत'

(नीलम दोशी), 'स्टोरी–काफे' (दिनेश देसाई), 'आम पण बने' (शंकर पटेल), 'अंधारानो रंग' (वंदना शांतुइंदु), 'खुल्ली हवा' (नीता जोगी), 'प्रतिबिंबनो पड़छायो' (हरीश थानकी), 'माणस उर्फ़े लागणी उर्फ़े संबंध उर्फ़े' (डॉ. अनिल चौहाण), 'पतंगियानो पदछायो' (दुर्गेश ओझा), 'वार्ता मानव मननी' (भाणदेव), 'तारा विना' (प्रकाश लाला), 'तमे साक्षात एक वार्ता छो' (विनोद गांधी), 'लॉ कानमां कहुं' (माणेक पटेल), 'सूक्ष्माति' (जयंत मोढ़ा), 'सरप्राइज' (अन्नपूर्णा मेकवान), जैसे कहानी संग्रहों ने गुजराती साहित्य को उज्वलित किया है।

गुजराती साहित्य में नाट्य स्वरूप का भी ध्यानाकर्षक सर्जन हो रहा है। प्रसिद्ध दिग्दर्शक और नाटककार भरत दवे लिखित 'भारतीय रंगभूमि' (भाग–1, 2) बृहद नाट्यकोश जैसा यह ग्रंथ सीमा चिह्न साबित होता है। भारतीय प्रादेशिक लोकनाट्य विधा का विस्तृत परिचय मिलता है। दोनों ग्रंथ गुजराती नाट्य साहित्य–जगत के गौरवशिखर के समान हैं। 'जळने पड़दे' संग्रह में सतीश व्यास राजकीय व्यंग (Political satire) लेकर आए हैं। ऐतिहासिक कथावस्तु का उपयोग करके 'एक हतो राजा' द्विअंकी नाटक का सर्जन किया है। इस द्विअंकी में रोम का राजा नीरो केंद्र में है। व्यंग के साथ–साथ हास्य निष्पन्न करने में सतीश व्यास की कुशाग्रता दिखाई देती है। वर्षा अडालजा ने 'मंदोदरी' एकांकी संग्रह प्रकट किया है। लेखिका ने शीर्षक के नीचे 'अनुत्तरित प्रश्नों को आवाज देने वाले तीन एकांकी' ऐसा शक्तिशाली विधान लिखा है। यहाँ 'मंदोदरी', 'अपराधी' और 'घर घर रमीशुं?' ऐसे तीन एकांकी नाटकों का समावेश है। खुद के लिए घर खरीदते वक्त झेलनी पड़ती परेशानियों के साथ–साथ एक चपरासी के जीवन संघर्ष को ध्वनिल पारेख ने 'एक कारकुन की आत्मकथा' जैसे दीर्घ नाटक में प्रस्तुत किया है।

हिमांशी शेलत प्रसिद्ध लेखिका हैं। 'पगलुं मांडु हुं अवकाशमां' आत्मकथा में अपने अंतरंग जीवन और साहित्य–यात्रा का परिचय मिलता है। गीत कवि अनिल जोशी की 'गांसडी उपाड़े शेठनी' आत्मकथा में गोंडल शहर (राजकोट जिला, सौराष्ट्र) के भगतपरा की शेरी–11 से उठाई हुई गठरी मुंबई के भायखला तक की जीवन–यात्रा का वास्तविक बयान है।

जीवन–चरित्र में 'केळवणीनी केडीए' में लेखक ईश्वर परमार ने ख्यात कवि उमाशंकर जोशी के जीवन और उनकी लेखनी को आधार बनाकर, ख़ास तौर पर उमाशंकर जोशी का शिक्षणचिंतन प्रस्तुत किया है। दर्शना धोलकिया ने अनंतराय रावल की जीवनी 'सौहार्दशील सारस्वत (अनंतराय रावळ विशे)' लिखी है। यह जीवनी संशोधनात्मक रीति से लिखी गई है। तदुपरांत, 'मयणा–श्रीपाल' (आचार्य राजशेखरसूरि), 'समाजनी संवेदना' (रमेश तन्ना), 'आचार्य जगदीशचंद्र बोझ' (डॉ. किशोर पंड्या), आदि लिखे गए हैं।

गुजराती निबंध साहित्य में वीरू पुरोहित के निबंध संग्रह 'निमज्जन' में लेखक ने अपनी भाव सृष्टि और विचारसृष्टि में निहित विषयवस्तु को कलाकारी स्पर्श से

सृजन सृष्टि में परिवर्तित किया है। उनकी अनूठी गद्य शैली के कारण पाठकों को नए अनुभव का एहसास होता है। इसी निबंधकार ने अपने एक अन्य निबंध संग्रह 'वाडा नुं बारणुं अने वातोनुं वृंदावन' में पारिवारिक–सामाजिक संबंधों की बातों को शब्दों के माध्यम से पेश किया है।

2022 के वर्ष को संपादन कार्य ने समृद्धि प्रदान की है। 1991 से 2016 तक के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित 26 साहित्यकारों के प्रवचनों को देश–विदेश के 21 अनुवादकों द्वारा गुजराती में अनुवादित किया गया है। इसी का संचय 'साहित्यत्व' शीर्षक से अदम टंकारवी और पंचम शुक्ल ने किताब प्रकाशित की है। यह एक मूल्यवान संपादन है। इस मूल्यवान किताब में नेडीन गोर्डीमर (दक्षिण अफ्रीका), डेरेक एलटन वोलकोट (सेन्ट लूसिया), टोनी मोरिसन (यू.एस.ए.), केनझा ब्यूरो ओए (जापान), शेयमस हिनी (आयर्लैंड), विस्लावा सिमबोर्सका (पोलैंड), दारियो फ़ो (इटली), जोसे सरमावो (पोर्टुगल), गुन्टर ग्रास (जर्मनी), गाओ शिंगजियान (चीन, फ्रान्स), वि. एस. नायपॉल (यू.के.), इमरे करतेझ (हंगेरी), ज्होन मैक्सवेल कोतझी (दक्षिण अफ्रिका), एल्फिड येलिनेक (ऑस्ट्रिया), हेरोल्ड पिन्टर (यू.के.), ओरहान पामुक (तुर्की), डोरिस लेसिंग (यू.के.), जो मारी गुस्ताव ले कलेझियो फ्रान्स, मोरिशियस), हेरता म्युलर (जर्मनी), होरे मारियो पेदरो वरगास लोसा (पेरू), टोमस ट्रांसट्रॉमर (स्वीडन), ऐ. मो यान (चीन), एलिस मुनरो (केनेडा), पेट्रिक मोदियानो (फ्रान्स), स्वेतलाना एलेक्सिएविच (बेलारूस), बॉब डिलन (यू.एस.ए.), आदि के संक्षेप में परिचय के साथ–साथ उनके तेजोमय प्रवचन साहित्य–जगत को परिष्कृत करते हैं। डॉ. हसमुख परमार की ओर से 'अटकना आटापाटा' किताब मिलती है जो समाजचिंतन पर आधारित है। जाति के नाम से छुटकारा पाने के लिए उपायों के प्रमाण के साथ परिचय दिया है। राजेश वणकर ने 'वार्तासंपदा' में 18 कहानियों का संपादन किया है जिसमें अलग–अलग अवलोकनकारों के आस्वाद लेख भी शामिल हैं।

गुजराती हास्य साहित्यकारों की कई किताबों ने हास्य साहित्य को उजागर किया है। उसमें मधुसूदन पारेख 'प्रियदर्शी' की प्रमुख भूमिका दृश्यमान होती है। उनके 54 हास्य निबंधों का संकलन 'मधुसूदन पारेख 'प्रियदर्शी' नो हास्य वैभव' किताब महत्व की है। हास्य साहित्य की अन्य किताबों में 'क्षण हसवुं' (दक्षा व्यास), 'तो हसता नही' (बकुलेश देसाई), और 'बकानां गतकडां' (निकिता व्यास) प्रमुख हैं।

अन्य संपादन ग्रंथों में 'सहज जड़ी सरवाणी' (ज्वलंत छाया, कलाधर आर्य, वसंत जोशी, सुनील जादव, आरती जोशी), 'चरोतरना वंचित समाजनुं लोकसाहित्यरूलग्नगीतो' (डॉ. रमण माधव), 'हळवे हैये', 'मधराते महेमान', (प्रकाश लाला), 'विचारव्योमना मेघधनुष्य' (भारतीय समुदाय शिक्षण संघ), 'रविंद्रनाथनी चरित्रसृष्टि' (प्रफुल्ल रावल), आदि किताबों का जिक्र किया जाता है।

साहित्य के प्रमुख स्वरूपों के अलावा इतर स्वरूपों में भी गुजराती साहित्य का लेखन हुआ है। इतर साहित्यसृजन की श्रेणी में 'माणु हती मजा' (चंद्रकांत शेठ),

'भाई', 'अर्ध चकरावो लेतुं आकाश' (योगेश जोशी), रंगरेख़ाना कलाधर (कनु पटेल), 'सामाजिक न्यायना मशालची इंदुकुमार जानी' (डंकेश ओझा), 'मारी अलगारी सहेलगाह (फोरम गोर), 'दख्खणनो दमदार देश' (भद्रायु वच्छराजानी), 'समाजने लालबत्ती' (दुर्गेश उपाध्याय), 'सात रंगनुं सरनामुं' (दीपक महेता), 'भारतरत्न भीमराव' (धरमसिंह परमार), 'भारतीय चोमासु' (नरेश वैध), 'मारुं रक्षाकवचरू सांई मकरंद दवे' (नंदिनी महेता), 'घायल विशेष'– मरीझ विशेष' (रमेश पुरोहित), 'साकुरा संगाठे' (भारती राणे), नवी सदीरू आनंदयुगनुं प्रभात' (हरेश धोळकिया), 'विभाजन नां मूळ' (मोहनलाल हासानी मंदानी), 'स्वांतरू सुखाय' (प्रवीण गढ़वी), 'अचानक आवेलो वरसाद' (नटवर पटेल), 'मने ओळखो हुं आदिवासी छुं' (बाबू सांगडा), और 'गुजरात–मानवरत्न' (सुधीर महेता), आदि का समावेश होता है।

युवा साहित्यकार डॉ. डी. एम. भद्रसरिया ने अपने अथाह परिश्रम, संशोधन रूचि, निष्ठा के फलस्वरूप दो बड़े और श्रेष्ठ ग्रंथों का सृजन किया है। (1) 'आदिकाल से आजपर्यंत की सभी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को उपयोग में लेकर 1456 पृष्ठों में ईडर राज्य का इतिहास लिखकर गुजरात को अद्‌भुत ग्रंथों का एक अनूठा उपहार दिया है। कठोर परिश्रम करके तैयार किया गया यह ज्ञानवर्धक ग्रंथ गुजरात राज्य के तमाम ग्रंथालयों में खरीदकर रखना चाहिए। लेखक ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातों का संपूर्ण ध्यान रखा है। (2) दूसरा ग्रंथ है 'इडरिया मलकनुं नानुं महाजन – (ईडर विस्तारना वणकर समाजनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गौरवगाथा)' गुजराती की देशज भाषा में एक कहावत है, 'मोटुं महाजन वाणियो अने नानुं महाजन वणकर, बाकी लोलम लोल!' ('बड़ा महाजन बनिया और छोटा महाजन बुनकर, बाकी सब लोलम लोल!') इस ग्रंथ में कुल 600 पृष्ठों में गुजरात राज्य (उत्तर गुजरात) के साबरकांठा जिला के बुनकर समाज की ऐतिहासिक और सामाजिक एवं सांस्कृतिक गौरवगाथा का यथार्थ निरूपण किया गया है। दोनों ग्रंथों की सामग्री बहुत मूल्यवान है। ड़ॉ. डी. एम. भद्रसरिया को ऐसे प्रकाशवान भगीरथ कार्य के लिए डी. लिट. की उपाधि देकर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए।

गुजराती दलित साहित्य अकादमी, अहमदाबाद, 25 साल से अविरत दलित साहित्य के प्रकाशन, प्रसार–प्रचार का कार्य करती है। आज तक 125 किताबों का प्रकाशन किया है। गुजराती, हिंदी, अंग्रेजी, और संस्कृत में भी किताबें प्रकट की हैं। पूरे देश में यह एकमात्र ऐसी संस्था है जो सरकार की किसी प्रकार की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से कार्य करती है। स्थानिक स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर के वर्कशॉप, परिसंवाद, अधिवेशन का आयोजन करके गुजराती दलित साहित्य को जाज्वल्यमान किया है। सितंबर–2022 में उसका रजत जयंती वर्ष मनाया गया। इस महोत्सव में आठ किताबों का विमोचन हुआ। इसमें 'सम्यक साहित्य विभावना' (हरीश मंगलम), 'गुजराती दलित कवितारू आंबेडकरी विचारधारा' (अरविंद वेगड़ा), 'माणगाँव परिषद्‌रू आंबेडकरी संघर्षनो रणटंकार', (ड़ॉ. रतिलाल रोहित), 'समांतर' (केसर

मकवाणा), 'वॉरियर' (प्रवीण गढ़वी), 'अगनपथ' (उत्तम कांबले की मराठी आत्मकथा का अनुवादरू भरत देवमणि), 'अवगाहन' (नटुभाई परमार), और 'प्रस्थान' (गणेश आचार्य) आदि हैं। 'सम्यक–साहित्य विभावना' विवेचन की किताब में हरीश मंगलम ने परंपरित साहित्य के बजाय प्रतिबद्धता और वैज्ञानिक अभिगम के साथ लिखे गए समाजाभिमुख साहित्य का जिक्र किया है। इस साहित्य की मुख्य विषयवस्तु के केंद्र में समानता, स्वतंत्रता, बंधुता और मानवता को प्राधान्य दिया जाता है और इसमें अमानवीय प्रथा एवं सामाजिक प्रदूषण के खिलाफ प्रतिकार–प्रतिरोध की आवाज बुलंद होती है। आनंदवर्धन का बहुत प्रसिद्ध ग्रंथ 'ध्वन्यालोक' के सौंदर्यशास्त्र अनुसार परंपरित साहित्य के केंद्र में 'मधु' (वसंतऋतु), 'मदन' (कामदेव), और 'मदिरा' (शराब) का गहरा और निरंतर प्रभाव दिखाई देता है। साहित्य की विषयवस्तु इसी के आसपास घूमती रहती है और कई युगों से सर्जन हो रहा है। इसलिए परंपरित साहित्य के तमाम स्वरूपों में लिखी गई रचनाएँ Monotonous हो गई हैं। डिजिटल युग में अकल्पनीय परिवर्तन के साथ साहित्य में भी बदलाव आना चाहिए। तब हमारे देश में आधुनिक और अनआधुनिक साहित्य समाज में प्रतिबिंबित होगा और हमारा समाज विश्वसमाज के साथ कदम मिलाकर चल पाएगा। इस अनुसंधान में डॉ. जयदीप सारंगी द्वारा लिया गया और पिट्सबर्ग (यू.ऐ.एस.) से प्रकट होता 'सेतु' सामयिक में प्रकाशित हुआ साहित्यकार हरीश मंगलम का साक्षात्कार अन्य साहित्यकारों को दिशासूचक साबित होगा। 'गुजराती दलित कवितारू आंबेडकरी विचारधारा' में गुजराती दलित साहित्य अकादमी के मुखपत्र 'हयाती' के प्रवेशांक से लेकर आजपर्यंत प्रकाशित हुई शोषित–पीड़ित–वंचित समाज की कविताओं का असरकारक अवलोकन किया है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा का केंद्रवर्ती सुर इसमें से प्रकट होता है। डॉ. सुरेश माने लेखक एवं सुप्रीम कोर्ट के प्रसिद्ध एडवोकेट हैं। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है और LLM.,PhD., Law की डिग्री हासिल की है। उन्होंने संशोधन करके मराठी भाषा में एक अलभ्य सामाजिक इतिहास की किताब लिखी है। उसका गुजराती अनुवाद डॉ. रतिलाल रोहित ने किया है। किताब का शीर्षक है 'माणगाँव परिषदरू आंबेडकरी संघर्षनो रणटंकार।' माणगाँव (महाराष्ट्र) में 21–22 मार्च–1920 के दिन 'माणगाँव परिषद् –1920' का आयोजन किया गया था। इस परिषद् से ड़ॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के सार्वजनिक जीवन की शुरुआत हुई थी। इस परिषद् में शाहू महाराज ने अपने भाषण में ड़ॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के अखिल भारतीय नेतृत्व के बारे में जो भविष्यवाणी की थी इस संदर्भ में संशोधन करके ड़ॉ. सुरेश माने ने यह किताब लिखी है। डॉ बाबासाहेब आंबेडकरी आंदोलन की शुरुआत ही इस परिषद से हुई थी इसलिए ऐतिहसिक दृष्टि से इस परिषद् का महत्व और बढ़ जाता है। ड़ॉ. रतिलाल रोहित ने गुजराती में अनुवाद करके एक मूल्यवान ऐतिहासिक माहिती उपलब्ध कराई है वह सामाजिक आंदोलन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मराठी लेखक उत्तम कांबले नई मराठी आत्मकथा 'वाट तुड़वतानां' का गुजराती अनुवाद

'अगनपथ' शीर्षक से भरत देवमणि ने किया है। लेखक का जन्म एक गरीब कुटुंब में हुआ था। उसकी आत्मकथा में हृदयद्रावक निरूपण पाठक को हिला देता है। दैनिक अखबार की नकल बेचते–बेचते प्रसिद्ध समाचार पत्र 'सकाळ' दैनिक के मुख्य संपादक यानी एडिटर–इन–चीफ तक सफलता की सीढ़ी चढ़ते हैं यह बात भावक–पाठक के लिए प्रेरणात्मक साबित होती है। सौप्रथम विख्यात मराठी दलित साहित्यकार दया पवार की उत्तम आत्मकथा 'बलूत' का गुजराती अनुवाद गुजराती दलित साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया था। अन्य भाषा की ऐसी श्रेष्ठ किताबें प्रकट करने से दलित साहित्य का प्रसार–प्रचार और आदानप्रदान बढ़ता है। केसर मकवाना के 'समान्तर' विवेचन संग्रह में 11 लेख समाविष्ट हैं। गुजरात में गुजराती दलित साहित्य अकादमी ने दलित साहित्य की किताबों का प्रथम प्रदर्शन चांदखेड़ा (अहमदाबाद) में आयोजित किया था। उस कार्यक्रम में अकादमी के संवाहक और अग्रिम साहित्यकार हरीश मंगलम् ने अपने भाषण में कहा था कि "दलित साहित्य की शुरुआत खंडन–विखंडन से होती है। यानी 'ललित' साहित्य ने अभी तक हमारे देश के एक समाज के लोकसमूह की अवज्ञा की है, और 'ललित' साहित्य में कहीं स्थान दिया है तो बुरा, भ्रष्ट, अनीतिमान, गंदा, अश्लील, अधम, नीच, और निम्न स्तर का पात्र बनाकर चित्रित किया गया है, और दूसरे लोकसमूह के लिए अच्छा, नीतिमान, सुंदर, सभ्य, उच्च, और कुलीन चित्रित किया गया है। प्रत्यक्ष रूप से यह सही नहीं है, असत्य और अमानवीय अन्याय है। यथार्थ से यह विपरीत है। 'साहित्य समाज का दर्पण होता है, दर्पण कभी ऐसा फरेबी नहीं हो सकता! इसलिए 'ललित' साहित्य के खंडन–विखंडन पर 'हयाती' सामयिक में एक श्रेणी शुरू की थी। इस श्रेणी में केसर मकवाना ने ध्रुव भात के दो उपन्यास 'समुद्रांतिके' और 'तत्त्वमसि' पर उत्कृष्ट लेख लिखा था। इसका समावेश इस विवेचन संग्रह में है।

❑❑❑

8

डोगरी साहित्य



ओम गोस्वामी

लेखन, संपादन, अनुवाद, शोध तथा चित्रकला में विशेष अभिरुचि। सौ से अधिक मौलिक तथा संपादित पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादमी (बाल साहित्य पुरस्कार) तथा जम्मू–कश्मीर राज्य की कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन और प्रकाशन–कार्य में संलग्न ।

डोगरी भाषा की समृद्धि के प्रयासः साहित्य को भाषाई समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। विगत कुछ दशकों से डोगरी के लेखक अपनी मातृभाषा के उन्नयन हेतु एक आंदोलनकर्ता की भाँति जुटे हुए हैं। साहित्य से भाषा, संस्कृति और देश का उत्थान होगा, इस विचारधारा पर चलते हुए वे लगातार और अविराम अपनी लेखनियों द्वारा सृजित पुस्तकों का प्रकाशन किए जा रहे हैं। दो वर्ष पूर्व कुंवर वियोगी के उत्तराधिकारियों ने एकबारगी स्वर्गीय लेखक की 22 से अधिक पुस्तकों को प्रकाशित करके एक कीर्तिमान की स्थापना की थी। इस घटना के पश्चात् कुछ लेखकों ने डोगरी की समृद्धि की प्रेरणा पाकर, स्वयं अपनी पुस्तकें प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया और वे अपनी पांडुलिपियों को मुद्रित करवाने लगे। विगत कुछ वर्षों से डोगरी के वयोवृद्ध लेखक ध्यान सिंह लगातार कई–कई पुस्तकें प्रति वर्ष प्रकाशित कर रहे हैं। यह लेख लिखे जाने तक उन्होंने 51 पुस्तकों का आँकड़ा पारकर लिया है। वर्ष 2022 में उनकी प्रकाशित पुस्तकों का ब्यौरा यों है–

1. चैंत्तें दे चक्करब्यूह (चिंताओं के चक्रव्यूह)– 111 कविताओं का संग्रह
2. चपदी जिंदगी (चौपदों का जीवन)– 531 चौपदे
3. बेगम दी हवेली (बेगम की हवेली)– 56 पृष्ठों का लघुउपन्यास
4. शय्याग्रस्त – 72 डिमाई पृष्ठों का नाटक
5. तीन पत्ते (त्रै पत्तर) :– इस संग्रह में तीन डोगरी नाटक सम्मिलित किए गए हैं। इनके शीर्षक यों हैं– (i) सस्सू नूंहां दे झेड़े (ii) जिराह जबर (iii) कम्मै दा सैर–सपाटा।

6. चार बाल–नाटक :– चार बाल–नाटकों को जिन शीर्षकों से प्रस्तुत किया गया है, वे हैं–

(i) योग साधना प्रदर्शन, (ii) कारोना, (iii) अनुभव सिद्धि, (iv) चोरी कि' यां पकड़ोई, चोर गै कोई नेईं।

ध्यान सिंह विगत तीन–चार वर्षों से लेखन में खूब सक्रिय हुए हैं। वे विभिन्न विधाओं में लगातार, योगदान देते आ रहे हैं। आज का लेखक अपनी पुस्तकों को स्वयं लिखकर, प्रकाशित करने की हिम्मत दिखा रहा है। ऐसी स्थिति जबकि कोई प्रकाशन–व्यवसायी प्रकाशक उपलब्ध न हो, ऐसे में डोगरी साहित्य की अभिवृद्धि हेतु किए जा रहे यज्ञ में स्वयं आहुतियाँ डालना एक निरापद प्रयास ही कहा जाएगा। लाखों रुपए स्वाहा करके दिया जा रहा यह योगदान अति प्रशंसनीय है।

डोगरी में अन्य भाषाओं की भाँति पाठकों का अभाव निरंतर बढ़ता गया है। एक अन्य सच्चाई यह है कि साहित्यिक परिदृश्य से प्रकाशक भी नदारद हैं। इसलिए, अधिकांश लेखकों की भाँति ध्यान सिंह भी अपनी पांडुलिपियों को स्वयं प्रकाशित करने को बाध्य हैं। अपनी तमाम पुस्तकों का प्रकाशन उन्होंने 'लंगेह प्रकाशन, बटैहड़ा (जम्मू)' की ओर से किया है। आज का लेखक प्रकाशक की भूमिका भी निभा रहा है। बिना किसी लाभ की अपेक्षा के प्रकाशक होना, एक अलग भूमिका है, जिसमें अपने लेखन को प्रकाश में लाने की सदिच्छा के साथ–साथ अपनी मातृभाषा की समृद्धि के आंदोलन में भागीदार होना भी है।

प्रकाश प्रेमी डोगरी में साहित्य–साधना कर रहे वरिष्ठ साहित्यकारों में से एक हैं। उन्हें वर्ष 1987 ई. में उनके महाकाव्य 'बेद्दन धरती दी' के लिए 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। प्रकाश प्रेमी ने चाहे व्यंग्य लेख और पुस्तक समीक्षाएँ भी लिखी हैं, किंतु मूल रूप से वे एक सहृदय कवि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। इधर ध्यान सिंह की भाँति इस वर्ष, उन्होंने भी एक ही बार में चार पुस्तकें (नवंबर–2022 ई. में) स्वयं प्रकाशित की हैं। इनका परिचयात्मक ब्यौरा यों है–

1. मेरी नजर च[1]– ग्यारह लेखों के इस संग्रह में साहित्य की अंतरंग पहचान कराने वाले कतिपय पक्षों पर फुटकर लेखों का संकलन किया गया है। कुछ लेखों में डोगरी की चंद पुस्तकों, यथा 'लल्ल द्यद' (वेदराही) 'बर्लिन दी दीवार' (ओम गोस्वामी), 'सैंक्शन' (जगदीप दुबे) आदि पर समीक्षा दृष्टि डाली गई है। इसके अलावा प्रो. रामनाथ शास्त्री की काव्य–साधना और वेदपाल 'दीप' की कविता पर ज्ञानवर्धक परिचर्चा की गई है। यह तथ्य है कि डोगरी में,

समीक्षा विधा में बहुत कम कृतियाँ सामने आ पाई हैं। अतएव, यह प्रयास प्रशंसनीय है।

2. अंतर्प्रकाश[2]– अध्यात्म विषय से जुड़ी यह पुस्तक तीन भागों में विभाजित है। प्रथम खंड में संस्कृत की 'पंचस्तवी' नामक पुस्तिका का डोगरी भावानुवाद प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय खंड में संस्कृत के सुप्रसिद्ध स्तोत्रों का अनुवाद उपलब्ध होता है। रावण विरचित 'शिव तांडव' के अनुवाद की विशेषता यह है कि संस्कृत स्तोत्र सरीखी छंद–योजना का प्रबंध करके, लय–सुर एवं ताल को मूल स्तोत्र की भाँति प्रवाहमान बनाने में सफलता प्राप्त की है। समृद्ध संस्कृत साहित्य से ऐसे चुने हुए मोतियों का डोगरी में अनुवाद बेहद प्रशंसनीय है। इसी पुस्तक के तृतीय खंड में कवि प्रकाश प्रेमी की स्वरचित 17 रचनाएँ प्रस्तुत की गई हैं। इन रचनाओं का भाव–संसार आध्यात्मिक आभा को विकीर्णित करता है। 'शिव स्तुति', 'मेरे कृष्ण मुरारी' तथा अन्य भजन कवि की अध्यात्म–चिंता को प्रकट करते हैं।

3. गुलदस्ता[3]– इस पुस्तक में भी ग्यारह आलेख संकलित किए गए हैं। इनमें पुस्तकों की समीक्षा के अलावा, समकालीन डोगरी कविता तथा डोगरी लोक–गीतों में छंद–विधान जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया है। 'डोगरी महाकाव्यों में हिंसा वर्णन, प्रभाव एवं प्रतिक्रिया' जैसे रोचक आलेखों के अतिरिक्त, डोगरी के 21वीं शती के साहित्य में हास्य–व्यंग्य जैसे विषयों पर भी चर्चा की गई है।

4. हृदयाकाश में सतरंगी पेंघें[4]– प्रकाश प्रेमी कविताओं का यह ताजातरीन संग्रह (मन गासै सतरंगी पींघां) उनकी 35 कविताओं को समाए हुए है। प्रत्येक कविता भाव–विचार की दृष्टि से अलग सत्ता रखती है। कवि को काव्य–शास्त्रीय नियमों का गूढ़ ज्ञान है। ठेठ एवं कोमलकांत शब्दावली के रहते, प्रत्येक भाव हृदयग्राही बन जाता है। वरिष्ठ पीढ़ी के इस कवि की प्रत्येक कविता पर उनकी मजबूत पकड़ है। 'नमानी आस' तथा 'सखी बसैंत ने पाया फेरा', अलग तरह की कविताएँ हैं। और भी अच्छी छंदोबद्ध कविताएँ इस संग्रह में मौजूद हैं। स्वच्छंद अथवा छंद–मुक्त कविता पर भी कवि की मजबूत पकड़ है। 'कैसा अजब बसंत आई गेआ' तथा 'पर मेरा मस्तिश्क ऐ नाब्बर' जैसी लंबे शीर्षक की छंदमुक्त कविताएँ सराहनीय हैं। इसी भाँति 'श्राप' भी एक पठनीय कविता है। इसमें नवयुग का भाव–बोध झलकता पड़ता है। 'उल्लुएं दी चैंता' एक गंभीर व्यंग्य प्रस्तुत करती है।

साहित्य–संवर्धन के इस यज्ञ में ऐसे लेखक–लेखिकाएँ भी शामिल हैं, जिनकी इस वर्ष एकाधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। डॉ. सुषमा रानी के लेख–संग्रह के साथ ही उनकी कविताओं का संग्रह भी प्रकाश में आया है।

यह एक सराहनीय संकेत है, जो आश्वस्त करता है कि विपरीत परिस्थितियों में साहित्य के दीपक को प्रज्वलित रखने के अनवरत प्रयास जारी हैं।

समीक्षात्मक साहित्य

डोगरी लोक–साहित्य और लोक–संस्कृति[5]– डोगरी लोक–वार्ता तथा लोक–संस्कृति के किन्हीं पक्षों पर लिखे गए ग्यारह आलेखों का यह संग्रह डॉ. शशि पठानिया की ताजा–तरीन कृति है। ऐसे लेखों में उन प्रसंगों के उद्धरण देना आवश्यक होता है, जहाँ से वे लिए गए हों, अन्यथा प्रस्थापना के अविश्वसनीय होने का भय रहता है। लेखिका ने किन्हीं गीतों के उद्धरण देकर, अपने कथन को संपुष्ट तो अवश्य किया है, किंतु उन लोकगीत संग्रहों का उल्लेख नहीं किया जहाँ, वे मूल रूप से प्रकाशित हुए हैं। अधिकांश उद्धरण जम्मू–कश्मीर कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी के प्रकाशनों से लिए गए हैं–इसलिए, अकादमी को इसका श्रेय देने में झिझक क्यों ? डॉ. शशि पठानिया की यह तीसरी मौलिक पुस्तक है, इसलिए उनसे ऐसी उपेक्षा की अपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि एक वरिष्ठ प्राध्यापिका होने के कारण, कई नए लेखक उनके पास मार्गदर्शन हेतु आते होंगे।

ग्यारह लेखों में लेखिका ने लोक–साहित्य तथा लोक–संस्कृति विषयक विविध विषयों पर अपने विचारों का उद्यापन किया है। लोक–संस्कृति और लोक–साहित्य इन दोनों शब्दपदों की बृहद अर्थ व्याप्ति है। मात्र ग्यारह लेखों में इन दोनों पक्षों से न्याय हो पाना कठिन है। इन ग्यारह लेखों की शैली परिचयात्मक है। प्रयास की सराहना होनी ही चाहिए। लेखिका मूल रूप से शोधकर्त्री हैं। उनसे साहित्य, संस्कृति आदि विषयों पर और भी अधिक गंभीर ग्रंथों की अपेक्षा डोगरी भाषा रखती है।

मेरे ग्यारह लेख[6]– यह लेख–संग्रह, लेखिका गंगा शर्मा की दूसरी पुस्तक है। इस संग्रह में डोगरी भाषा, इसकी लिपि, लोक–वार्ता, अनुवाद, संचार, कोष–निर्माण आदि के विषय में ग्यारह लेख संग्रहीत हैं। मात्र एक लेख में समीक्षा का प्रयास दृष्टिगोचर होता है। तमाम लेख परिचयात्मक दृष्टि से लिखे गए हैं। अधिकांश विषय ऐसे हैं, जिनपर हिंदी आदि भाषाओं में विपुल सामग्री उपलब्ध है। लेखिका ने उस सामग्री का भरपूर प्रयोग किया है। इनमें मौलिक दृष्टि का अभाव है। डोगरी भाषा में इन लेखों को प्रकाशित कराने का प्रयास सराहनीय है। लेखों को पढ़ते हुए यह कमी खलती है। यद्यपि लेखिका ने कुछेक लेखकों–विद्वानों का अभिमत तो उद्धृत किया है, तथापि उसका निजी दृष्टिकोण या अभिमत प्रायः नदारद है। इस कार्य विधि के रहते कुछेक लेख सतही प्रतीत होते हैं। आशा रखनी चाहिए कि विदुषी लेखिका अपनी आगे की शोध–पुस्तकों में विशेष रूप से सतर्क–सचेत रहेंगी। इसके बावजूद लेखिका ने जिस सुरुचि और समर्पण–भाव से इस कार्य को किया है, उसकी जितनी सराहना की जाए कम है।

साहित्य और संस्कृति[7]– डोगरी गद्य में आलेख–विधा का विशेष महत्व है। यह पुस्तक साहित्य और संस्कृति विषयक 18 आलेखों का संग्रह है। लेखिका सुषमा रानी ने लेखों को दो भागों में बाँटा है। प्रथम भाग में साहित्य विषयक 10 आलेख हैं। ये लेख पुस्तक समीक्षा और साहित्यकारों के परिचय से संबद्ध हैं। '21वीं सदी की डोगरी कविता में सूफीमत' तथा 'डोगरी बाल–साहित्य में महिलाओं के योगदान' विषयक एक सरसरी आकलन उपलब्ध होता है।

पुस्तक के दूसरे भाग में डोगरी–संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर आठ आलेख रखे गए हैं। इनमें से अंतिम लेख 'संत रविदास' के विषय में है। द्वितीय भाग का प्रथम लेख 'डुग्गर की गुप्त–गंगा' उत्तरवाहिनी देविका के सांस्कृतिक महत्व को उजागर करता है। डुग्गर प्रदेश में शक्ति–पूजा की परंपरा के चलते नवरात्र पर्व का विशेष महत्व है। इस विषय पर एक ज्ञानवर्धक लेख प्रकाशित किया गया है। उत्तर भारत के सांस्कृतिक पर्व 'लोहड़ी' तथा 'दशहरा' पर भी उपयुक्त सामग्री विद्यमान है। ग्रीष्म ऋतु के खान–पान विषयक लेख एक अच्छा प्रयास है। किंतु, वैश्विक आवश्यकताएँ और क्षेत्रीय वस्तु–स्थिति विषयक लेख को संस्कृति उपशीर्षक के अंतर्गत कैसे रखा जा सकता है? यह एक जटिल प्रश्न है। तमाम लेख परिचयात्मक सामग्री से भरपूर हैं। इनमें शोध–दृष्टि का अभाव है।

छंदमुक्त डोगरी कविता : शिल्प और शैली[8]– इस पुस्तक के लेखक राज मनावरी विगत कुछ वर्षों से कविता के कला–पक्ष का अध्ययन करने में प्रयासरत हैं। इसके परिणाम स्वरूप, वे निम्नलिखित दो पुस्तकें प्रकाशित करवा चुके हैं

1. प्रयास–1 (डोगरी नमीं कविता : कला पक्ख)
2. प्रयास–2 (श्री कृष्ण स्मैलपुरी जी : कला पक्ख)

वर्ष 2022 ई. में राज मनावरी ने कविता के पूर्णतया नए विषय में हाथ डाला है। उन्होंने डोगरी में लिखी जा रही छंदमुक्त कविता के क्षेत्र में प्रयासरत अपने पसंदीदा कवियों की रचनाओं को समझने और समझाने का प्रयास किया है। अच्छा होता, इसे वे 'प्रयास–3' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित करवाते। यह नया प्रयास नई किस्म का है। इसके लिए वे प्रशंसा के पात्र हैं। यह बतलाना अनिवार्य है कि शायद उतावली के कारण उनसे छंदमुक्त कविता के अनेक महत्वपूर्ण पक्ष छूट गए हैं। यही नहीं, डोगरी में लिखी गई बहुत–सी श्रेष्ठ छंदमुक्त रचनाओं का उल्लेख तक उपलब्ध नहीं होता। उपयुक्त विश्लेषण पर जोर देने के बजाए, राज मनावरी ने लंबी–लंबी कविताओं को उद्धृत किया है, जो दिखलाता है कि मात्र पुस्तक के पृष्ठ बढ़ाने का प्रयास किया गया है। इससे अच्छा था कि वे अपनी पसंद की छंदमुक्त कविताओं का संकलन प्रकाशित कर देते। बहरहाल, हमें आशा रखनी चाहिए कि भविष्य में लेखक, इस विषय पर गंभीरता से विचार करेंगे।

आवश्यकता वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की राह पर चलने की[9]– इस पुस्तक के मूल लेखक डॉ. शशांक कुलकर्णी हैं। डोगरी अनुवाद डॉ. रत्न बसोत्रा ने किया है। वैज्ञानिक भौतिकवाद के समानांतर की गई इस परिकल्पना का उद्देश्य, उसको विकल्प के रूप में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा करना है। आध्यात्मिक विज्ञान के ध्वजवाहक के रूप में आदि शंकराचार्य का नाम लिया जाता है। उनके पश्चात् वैदिक दर्शन का आश्रय लेकर, जिस विशिष्टाद्वैत की स्थापना करने वाले रामानुजाचार्य का विशेष नाम है, इसके द्वारा उन्होंने समता और समरसता का वैज्ञानिक उद्घोष किया। अध्यात्म का मूलोद्देश्य या धर्म मानवता है। इसके द्वारा मानव के हृदय को विज्ञान की भाँति प्रकाश की बाढ़ से आप्लावित करना अभीष्ट है। अध्यात्म सृष्टि के यथार्थ को सामने लाता है। विज्ञान सदा तथ्य और कारण को निमित्त बनाता है। यह अद्भुत बात है कि ग्यारहवीं शती में विदेशी विधर्मी आक्रमणकारियों के आगमन के उपरांत, विध्वंस का तारतम्य बना रहा। इसके बावजूद भारत–भूमि पर वेद–वेदांत और विज्ञान की ध्वजा फहराती रही। मार–काट और अत्याचार के वीभत्स वातावरण में भी ज्ञान–विज्ञान और अध्यात्म की अखंड ज्योति फड़फड़ाते हुए जगती रही। अध्यात्मदर्शन पर यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

बाल–साहित्य

तुक्के[10]– बाल पाठकों के लिए प्रस्तुत ये तुकबंदियां बहुत खूबसूरत कलेवर में प्रकाशित की गई हैं। डोगरी की इन बाल–कविताओं में प्रत्येक कविता के संग एक श्वेत एवं श्याम चित्र भी दिया गया है, जिससे प्रत्येक तुक्तक की पृष्ठभूमि स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। बाल–कवि राजेश्वर सिंह राजू ने अपनी ओर से माना है कि इस बात पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है कि कौन कवि है और कौन नहीं, केवल मात्र अपने भावों को शब्द देते हुए तुकबंदियाँ रचते चलिए। यह आत्म–स्वीकृति इस संग्रह के बाल मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में बेहद महत्वपूर्ण है। कवि ने अपने चौगिर्द के वातावरण तथा अपनी गृहस्थी के सदस्यों तथा पर्यावरण आदि विषयक विषय–वस्तुओं यथा पशु–पक्षियों, मानवीय मनोभावों तथा आनंद के क्षणों को सादा बालोचित शब्दावली में प्रस्तुत किया है। 'आत्म विश्वास', 'फल', 'डोगरी', 'परी' आदि रोचक रचनाएँ हैं। यद्यपि यह शुरूआती प्रयास है, तो भी आशा करनी चाहिए कि कवि राजू आगे चलकर और सार्थक बाल–कविताएँ दे पाएँगे।

मोतिया[11]– विजय शर्मा डोगरी के सुपरिचित कवि हैं। हास्य–रस तथा व्यंग्य पर, उनकी विशेष पकड़ है। अब तक उनके 13 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। डोगरी के बाल–साहित्यकारों में उनका विशेष स्थान है। वर्ष 2019 ई. में वे साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा 'बाल साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित हो चुके हैं।

'खंटालू' अर्थात् 'मोतिए का फूल' उनकी ताजा–तरीन 38 बाल–कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं की विषय–वस्तु प्रकृति, पर्यावरण तथा बहुधा उन वस्तुओं से

संबद्ध है, जिन्हें बाल–मानस अपने ज्ञान–अर्जन के आरंभिक वर्षों में, अपने चहुँ ओर के परिवेश में पाता है। कविताओं का लक्ष्य मात्र बच्चों का मनोरंजन न होकर, उनका ज्ञान–वर्धन भी है। सरल–सुबोध शब्दावली के उपयोग द्वारा कवि ने बाल–पाठकों को उत्साहवर्धक संदेश भी दिया है।

11. डोगरी संस्था जम्मू के पुनर्मुद्रित प्रकाशन– डोगरी साहित्य के प्रकाशन को लेकर डोगरी संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डोगरी के विस्तृत भूखंड पर फैले हुए लेखकों को साहित्यिक आंदोलन में समाने के लिए संस्था की पत्रिका 'नमीं चेतना' (नव–चेतना) ने कभी प्रमुख भूमिका निभाई थी। किंतु, धीरे–धीरे यह पत्रिका गौण होती गई। यह चिंता की बात है कि वर्ष 2022 ई. में इस पत्रिका का एक भी अंक प्रकाशित नहीं हो पाया। चर्चित वर्ष में डोगरी–संस्था ने ऐसी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का पुनर्मुद्रण (Reprint) किया है, जो विभिन्न परीक्षाओं में पठनार्थ संस्तुत हैं। पुनर्मुद्रित पुस्तकों की सूची यों हैः–

1. 'डोगरी दे त्रै मुंढले नाटक' (सरपंच, नमां ग्रां, बावा जित्तो) संपादन–ललित मंगोत्रा।
2. 'रम्जी सीरां' (व्यंग्यात्मक लेख संग्रह) संपादन– वीणा गुप्ता/ओम गोस्वामी।
3. 'अजकणी डोगरी कहानी'–संपादन– शशि पठानिया।
4. 'बीर गुलाब'– दीनूभाई पंत।
5. 'छंदमुक्त कविताएँ' (कवता संकलन)–संपादन–वीणा गुप्ता/शशि पठानिया।
6. 'डोगरी दे त्रै नाटक'– (ढौंदियां कंधां, जीने दी कैद, लेखा बेही दा) इन तीन नाटकों का लेखन क्रमशः नरेंद्र खजूरिया, ललित मंगोत्राचमन अरोड़ा तथा दीपक कुमार ने किया है।
7. 'आधुनिक डोगरी कविता'–नामक इस पुस्तक का पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित किया गया है।

कथा–साहित्य

तितलियाँ[12]– मुख्यतया नाटककार के रूप में अपनी पहचान बना चुके जगदीप दुबे इधर कहानी विधा में अत्यधिक दिलचस्पी लेते दिख रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से लगातार उनके कहानी संग्रह प्रकाश में आ रहे हैं। 'तितलियाँ' उनका नवीनतम कथा–संग्रह है। बारह कहानियों के इस संकलन में उनकी प्रत्येक कहानी एक भिन्न पाठकीय अनुभव प्रदान करती है। सादगी भरी शैली और रामनगरी पहाड़ी–डोगरी में लिखी गई यह पुस्तक इस बात का प्रयास प्रतीत होती है कि मानक डोगरी से हटकर भी रचनात्मक बात कही जा सकती है। इससे कहानियों में आंचलिकता का पुट चला आया है। सीमाओं पर हो रही खींच–तान, मानवी–जीवन के कोमल अहसासों को कैसे प्रभावित करती है, इसे 'पीड़' शीर्षक कहानी में सफलता से उरेहा गया है।

गलवान घाटी के राजनीतिक–रणनीतिक परिदृश्य के कतिपय अंकन, कहानी को बेहद रोचक बना देते हैं। लेखक ने चीनी विस्तारवादी नीतियों की निंदा करने के बजाए, युद्ध की पृष्ठभूमि में पनपने वाले मानवी–स्वार्थ को स्पष्ट प्रतीकों के माध्यम से उकेरा है।

'माचिस' एक दिलचस्प कहानी है, जिसमें वर्तमान जीवन में विकास के साथ उभर रही अंधी भौतिक दौड़ के विविध प्रश्नों को गंभीरता से उठाया गया है। यह महत्वपूर्ण प्रश्न है कि यह दौड़ कब समाप्त होगी, होगी भी या नहीं ? आगे की दौड़ क्या मंगल–शुक्र ग्रहों तक की होगी ? यदि हाँ तो उसके पश्चात् कहाँ की ?

'पहाड़', 'तितलियाँ', 'परौह्ना', 'काली स्याही' और कुछेक अन्य कहानियाँ अति रोचक शैली में बयान की गई हैं। देर बाद, डोगरी में ऐसा संग्रह सामने आया है, जिसकी कहानियों के कथानक प्रामाणिकता से लबरे हैं। कहानियों के पात्र हमारे आस–पास के वातावरण में कहीं न कहीं साँस लेते दिख जाते हैं। पात्रों का निजी और सामाजिक व्यवहार विश्वसनीयता की कसौटी पर एकदम पूरा उतरता प्रतीत होता है।

इस संग्रह को जिस कहानी से शीर्षक प्राप्त हुआ है, वह 'तितलियाँ' नामक कहानी एक अलग तरह की कहानी है। कथानकहीन यह कथा अत्याचारी लुटेरे बख्तियार खिलजी द्वारा नालंदा को अवशेषों में बदलने के मूर्खतापूर्ण कर्म को छह मास तक जलने वाले पुस्तकालय की पीड़ा को सामने लाती है। 90 लाख पुस्तकों के जलते हुए पन्नों को पंखहीन तितलियों की तड़प का पर्याय मानकर इस कहानी को लिखा गया है। भाषा बोझिल प्रतीकों से भरी हुई है।

कहानीकार जगदीप दुबे की लेखनी से भविष्य में और भी अच्छी कहानियों की आशा की जा सकती है। कहानी विधा की समृद्धि से उसकी कलम में सामर्थ्य स्पष्ट दिखाई दे रही है। तितलियाँ कहानी के विषय में इतना और यह कह सकते हैं कि दुरूह प्रतीकात्मकता के रहते और स्पष्ट कथानक की अनुपस्थिति में, यह कथा कहानी न रहकर, एक निबंध के अधिक करीब चली आई है। इसे लेखक का प्रयोगात्मक प्रयास कहना अधिक उचित होगा।

राशन कार्ड[13]– वर्तमान कालखंड में डोगरी के अधिकांश लेखक कवि भी हैं तथा नाटककार और उपन्यासकार भी। इनमें से अधिकतर प्रौढ़ आयु और गहन अनुभव से युक्त होने के कारण अपनी अभिव्यक्ति को मात्र एक विधा तक सीमित नहीं रख पाते। यही कारण है कि एक विधा से बँधे रहने को वे अभिव्यक्ति के द्वार पर पाबंदी मानते हैं।

इधर डोगरी भाषा में विगत कुछ वर्षों से सक्रिय हुए सत्यपाल गढ़वालिया भी बहु–विधाई लेखक हैं। कविता एवं गज़ल विधा में चार डोगरी पुस्तकों के उपरांत,

उन्होंने हिंदी में सफलता से गज़लें लिखकर, एक संकलन (गज़लें मेरी पढ़ा करो) का प्रकाशन कराकर नामवरी पाई है। उनकी फुटकर कहानियाँ, इधर पत्रिकाओं में स्थान पाती रही हैं। इसी से प्रेरित होकर, उन्होंने वर्ष 2022 ई. में अपनी सोलह कहानियों का संग्रह 'राशन कार्ड' प्रकाशित कर बतौर कहानीकार अपनी पहचान कायम की है। इस समय उनका एक उपन्यास प्रकाशनाधीन है। उनका साहित्य–प्रेम किसी से छिपा नहीं है। डोगरी की समृद्धि को वे अपने जीवन का मूलोद्देश्य मानते हैं।

'राशन कार्ड' संग्रह की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि पर बुनी गई हैं। वे कथा–मनीषी प्रेमचंद से प्रभावित रहे हैं। इस प्रभाव तले, उन्होंने नगर और ग्राम्य जीवन की विडंबनाओं को सफलता से रेखांकित किया है। मानवीयता के पहलुओं को वे दक्षता से उभार पाए हैं। लेखक की भाषा व्यंग्य–भाव का आश्रय लेकर जीवन की विसंगतियों को प्रामाणिकता से उभारने में सफल रही है। यह संग्रह निश्चय ही एक पठनीय पुस्तक है।

अंधियारे में घिरा आदमी[14]– ऐसे लेखक जो साहित्य सृजन में वर्षों से नहीं, दशकों से कार्यरत हैं, उनमें शिवदेव सुशील का नाम भी है। साहित्य अकादमी दिल्ली तथा जम्मू–कश्मीर कल्चरल अकैडमी द्वारा पुरस्कृत इस लेखक ने मुख्यतः चार विधाओं में कलम चलाई है। कहानी, उपन्यास, कविता तथा नाटक क्षेत्र में उनकी अब तक 21 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

अंधियारे में घिरे व्यक्ति की व्यथा–कथा के शीर्षक से उनके नवीन कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ संग्रहीत हैं। कुछेक कहानियाँ रोचक हैं, तो किन्हीं में उनका अंत करने की उतावली दिखाई देती है, जिससे उनमें कच्चापन रह गया प्रतीत होता है।

विचित्र बात यह है कि अपने लेखन के आरंभिक काल से लेकर, आज तक इस लेखक ने जिस भाषा रूप का प्रयोग किया है, वह बिलावर अंचल की बोली है। उस क्षेत्र के पात्रों के मुख से बुलवाने के लिए तो वह बोली सर्वथा उपयुक्त है, किंतु, अन्य क्षेत्रीय पात्रों के मुख से उसी भाषा–रूप की रंगत उड़ेलकर, लेखक एक भ्रम की सृष्टि कर देता है। यह साहित्य की मूलभूत आवश्यकता को नजरअंदाज करने की भूल है। अच्छा होता यदि कहानीकार अन्य अंचलों के पात्रों हेतु, उन्हीं अंचलों की बोली को प्रयोग में लाता। बतौर लेखक वह जहाँ स्वयं कहानी के बीच में आता है, अपनी टिप्पणी करता है, वहाँ मानक डोगरी भाषा का प्रयोग अत्यावश्यक है।

समकालीन समस्याओं पर बुनी गई ये कहानियाँ, शिवदेव सुशील की इससे पूर्व की कहानियों से कुछ बेहतर हैं। आतंकवाद (इ'यां गै होना) की परछाइयों को उकेरने का प्रयास सराहनीय है। 'न्हेरे च घिरे दा आदमी' एक अधूरी कहानी प्रतीत होती है, जबकि 'भलेआं अपना' शीर्षक कहानी इस संग्रह की बढ़िया कहानी है। आकार में लघु होते हुए भी इसमें सार्थक संदेश निहित है।

उपन्यास

नमित्त[15]– 'नमित्त' शीर्षक से प्रकाशित यह औपन्यासिक कृति एक स्वागतयोग्य प्रयास है। इसे वर्तमान सामाजिक परिदृश्य का दर्पण मान सकते हैं। इसमें लेखक ने समकालीन समस्याओं, विशेषतया सामाजिक–आर्थिक पहलुओं की खींच–तान को बड़ी समझदारी से चित्रित किया है। विगत दो वर्ष 'कारोना–19' महामारी के रहते मानव–समाज जीने–मरने के प्रश्नों से जूझता रहा है। उपन्यासकार की लचकीली कलम ने सादगी भरी शैली में इन्हें बड़ी दक्षता से उरेहा है। कहीं–कहीं इस सादगी में उसकी कारीगरी के अद्‌भुत प्रसंग उभर आते हैं।

दूसरे की मुसीबत को अपने लिए लाभ में बदलने वाले स्वार्थी चरित्रों के चेहरों से मुखौटा उतारकर लेखक ने उपन्यास के कथानक को पठनीय और संदेश को प्रेरक बना डाला है। मानवी रिश्तों की गहरी पहचान भी कथानक का अभिप्रेत है। उसे पात्रों के मनोविज्ञान की गहरी जानकारी है। मानवी संबंधों को गाँठने वाले रेशमी धागों की उसे विशेष पहचान है। वैचारिकता की दृष्टि से उपन्यासकार नियतिवादी प्रतीत होता है। पात्रों के माध्यम से वह कई स्थलों पर मानो स्वयं बोलता प्रतीत होता है –''कहते हैं, जिसके भाग्य में जिस स्थान पर, जैसी जगह को छाना लिखा हो, वह वहीं जाकर अपनी गृहस्थी बनाता है। इसलिए, इसे आप तक लाने में हम निमित्त मात्र हैं।'' (पृ. 151)

साहित्य की कविता विधा से आरंभ करके इंदरजीत केसर धीरे–धीरे अन्य विधाओं में लेखनी का प्रसार करते रहे। इससे वे कहानी, अनुवाद, निबंध, यात्रा लेख, बाल–साहित्य विषयक पुस्तकें लिखकर साहित्य समृद्‌धि के महायज्ञ में निरंतर योगदान देते आ रहे हैं। लेखन के 24 वर्षों की यात्रा में, अब तक उनकी 26 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं –जोकि एक सराहनीय योगदान है। उनके साहित्यिक योगदान में सात उपन्यास भी शामिल हैं। उनके नवीनतम दो उपन्यास क्रमशः 'दोहरी' और 'कठपुतलियाँ' प्रकाशनाधीन हैं। उपन्यास विधा को उनसे विशेष आशा बँधी हुई है।

खंडित मूर्ति[16]– उपन्यासकार तारा दानपुरी का यह तीसरा उपन्यास है, जिसमें उन्होंने पूर्व की भाँति, जीवन के प्रामाणिक चित्र चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। इससे पहले 'जीवनदान' तथा 'चेतना' शीर्षक उपन्यासों से उन्होंने इस विधा में अपनी पैठ का प्रदर्शन करते हुए, अपने देखे–परखे पात्रों को डोगरा पृष्ठभूमि में उकेरने के प्रयास किए थे।

'खंडित मूर्ति' उपन्यास में जो चीज भरसक पाठक का ध्यान आकर्षित करती है, वह है पात्रों का चरित्र–चित्रण जो कि सशक्त होने के बावजूद, सरस और संवेदनशील भी है। इसी भाँति डुग्गर प्रदेश के गाँवों की संस्कृति का हृदयहारी वर्णन पाठक का मन मोह लेता है। पात्रों का चरित्र–चित्रण करते हुए उपन्यास के कथानक का विस्तार बढ़ता चलता है। कथाएँ ही नहीं, उपकथाएँ भी कथानक को रोचक बनाती चलती हैं। इन्हें लेखक बेहद सफलता से कथानक की नदी में मिला पाया है। पात्रों

की दैनंदिन समस्याओं का समुचित उल्लेख, कथानक में परोक्ष एवं प्रत्यक्ष संघर्ष को जन्म देता है। लेखक ने दक्षतापूर्वक पात्रों की चिंताओं को सांस्कृतिक संगति प्रदान की है।

इस उपन्यास के माध्यम से तारा दानपुरी की लेखन क्षमता का निखार उत्कर्ष पर दिखाई देता है। कहावतों–मुहावरों के सहज प्रयोग द्वारा उन्होंने भाषा पर अधिकार को सिद्ध किया है। भाषाई क्षमता का प्रदर्शन शब्दावली के उचित प्रयोग से लेखक के अभिप्रेत को एकदम स्पष्ट करने में सहयोगी होता है। उदाहरण देखें–

''हूँ!'' बापू जी का ध्यान टूटा और वे बोले–''सोच रहा था कि ये मछेरे (नाविक) पार नहीं पहुँचाएंगे। मुझे अपनी ही बाँहों के बल पर स्वयं तिरना होगा...।'' (पृ. 26)

उपन्यासकार ने दरिया पार के अखनूर क्षेत्र के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक जीवन का एकदम सटीक चित्रण किया है। दरिया, गरीबी, लोगों की हसरतें, सीमांत क्षेत्र की समस्याएँ, बेरोजगारी आदि को लेखक ने समुचित दृष्टि से चित्रित किया है। तारा दानपुरी भारतीय सेना में सेवा कर चुके हैं, इसलिए 1971 के भारत–पाक युद्ध का भी उपन्यास में जिक्र हुआ है। इस उपन्यास को यदि सीमांत क्षेत्र के जीवन का महाकाव्य कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

तारा दानपुरी की लेखनी उत्तरोत्तर प्रौढ़ता के उत्कर्ष की ओर बढ़ती गई है। निजी जीवन में लेखक बेहद विनम्र स्वभाव का व्यक्ति है। यह प्रवृत्ति उसके लेखन में कहीं–कहीं झलक उठती है। इसीलिए, कुछेक पात्रों के नाम के संग लेखक जी शब्द जोड़ना नहीं भूलते/शिमला समझौते की बात करने आए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फीकार अली भुट्टो के नाम के संग, जब लेखक 'साहब' शब्द का प्रयोग करता है तो कुछ अटपटा–सा लगता है। किंतु, यह लेखक के अपने संस्कार हैं। अन्य माननीय पात्रों के नामों के संग भी आदरसूचक शब्दों का प्रयोग पाठक को संभवतया खल सकता है, किंतु इस उपन्यासकार के संस्कार ही ऐसे हैं।

पुस्तक में शब्दों के अशुद्ध हिज्जे सहज–पठन में बाधा उत्पन्न करते हैं। इसी भाँति उपन्यास के अंतिम पृष्ठों में जहाँ दार्शनिक चर्चा अथवा राजनीतिक स्थितियों का वर्णन आया है, वे तमाम पन्ने बेहद बोझिल प्रतीत होते हैं। यह कथानक से अलग दिखते हैं, और कथानक को कमजोर करते दिखाई पड़ते हैं।

कुरबान बस्त[17]– 'हाशिए पर' शीर्षक उपन्यास से कुछ वर्ष पूर्व रचनात्मक साहित्य के द्वार पर दस्तक देने वाले शैलेंद्र सिंह की नवीनतम औपन्यासिक कृति का शीर्षक 'कुरबान बस्त' है, जो कश्मीरी मुस्लिम–संस्कृति में पशु की कुरबानी से संबद्ध एक अनुष्ठानिक वस्त्र को कहा जाता है। यह उनका तीसरा उपन्यास है। उनके दूसरे उपन्यास का शीर्षक 'सेवाधनी' था। आरंभिक दोनों उपन्यासों के कथानक जैसे लकीर से हटकर थे, उसी भाँति इस नई कृति का कथानक भी अलग किस्म का है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में पनपे आंतकवाद को आधार बनाकर, कश्मीर की पृष्ठभूमि में इसकी कुछ यथार्थवादी तस्वीरें सृजित की गई हैं। उपन्यासकार चूंकि स्वयं राज्य की पुलिस सेवा में एक उच्चाधिकारी है, तथा कश्मीर की अस्थिर स्थिति में वह अपनी कृति के पात्रों को निकट से देख चुका है, अतएव कथानक में प्रामाणिकता का आना स्वाभाविक है। इसी कारण पात्रों की पृष्ठभूमि का चित्रांकन करते हुए अति विश्वसनीय कथा–चित्रों का सृजन संभव हो पाया है। आतंक से पूर्व और आतंक के दौरान, उसने घाटी की स्थिति का सक्षम तरीके से बयान किया है। वहाँ के बहुसंख्यक समाज के रीति–रिवाजों तथा मुस्लिम संस्कृति का यथोचित वर्णन भी उपलब्ध होता है। कश्मीर की पर्यावरणी तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि कथानक को जीवंत बना देती है। कथानक से भी स्पष्ट हो जाता है कि उलझे हुए राजनीतिक परिदृश्य में सुरक्षा बल कानून–व्यवस्था की स्थापना के लिए, किन कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं। लेखक ने कथानक में कश्मीर के खान–पान और अन्य रिवाजों को भी अपनी लेखनी से उरेहा है।

आतंक के भयावह विस्तार में उपन्यासकार ने लोगों के जीवन, उनकी आशा–आकांक्षाओं के अतिरिक्त, वहाँ आतंक के व्यवस्थागत प्रबंधों का वर्णन भी किया है। एक लघु अनुच्छेद का अनुवाद देखें–

''पुलिस और सुरक्षाबल समय के साथ–साथ, लोगों में नित्य अपनी जड़ फैलाते जा रहे हैं, जैसे कि ऐसे लोग जो सरकारी निज़ाम से रुष्ट थे, वे आतंकवादियों से जुड़ चुके थे, वैसे ही आतंकियों द्वारा जिन लोगों पर अत्याचार हो चुके थे, या हो रहे थे, या जिन्हें धन का लोभ था, वे मुखबिर बनकर, सुरक्षा बलों की सहायता करने लगे थे।''

हबीब उल्लाह, मुजफ्फर, गन्न आज़ाद, आफताब आदि रोचक चरित्र हैं। डोगरी के कथाकारों ने आतंक को आधार बनाकर, कहानियाँ तो अवश्य लिखी हैं, किंतु पूर्णतया इस विषय पर केंद्रित यह डोगरी का प्रथम उपन्यास है।

नाटक

विकर्ण[18]– (लेखक–जगदीप दुबे) पौराणिक पात्र विकर्ण के कथानक पर बुने गए इस नाटक के संग दो और नाटक रखकर, इस पुस्तक में तीन नाटक संग्रहीत किए गए हैं। प्रथम नाट्य–रचना 'सूत्तर' डोगरी लोक–वार्ता का आश्रय लेकर बुनी गई है। इसमें लोक–जीवन के रंग में रंगे पात्रों के भावना–संसार को बड़ी दक्षता से उभारा गया है। लेखन–शैली की विशेषता यह है कि इसमें लोकाख्यानों का समुचित प्रयोग किया गया है। प्रसंगानुकूल लोकगीतों का प्रयोग कथानक की प्रेषणीयता को द्विगुणित कर देता है। तेरह लघु दृश्यों में विभाजित यह कथानक पढ़ने में निश्चय ही रोचक है। मंचित होने पर यह सचमुच अपनी बहुरंगी आभा को फैलाएगा– इसकी पूरी संभावना है।

दूसरा नाटक ''युद्ध कब समाप्त होगा'' (लड़ाई कदूं मुक्कग) पाश्चात्य इतिहास के एक प्रसंग के गिर्द केंद्रित है। इसमें विश्वयुद्ध–1 की पृष्ठभूमि में कुछ प्रश्नों को बड़ी महारत से उभारा गया है। कहीं–कहीं भावोद्रेक करने में समर्थ संवाद कथानक की विडंबना को स्पष्ट कर देते हैं। उदाहरण देखें–

जर्मन कमांडर– भावनाओं की जंजीरों से युद्ध नहीं रुकते, विशेषतया विश्व युद्ध।

पोप– (भावुक) जिनके घर का एक भी व्यक्ति जंग में गया होगा, वह क्रिसमस कैसे मनाएगा ? कभी सोचा आपने। आपकी अजब सोच है। सैनिक लड़ता रहे और आप त्यौहार मनाएँ।

तीसरा नाटक महाभारत के सुविख्यात पात्र विकर्ण के जीवन की विडंबना को लेकर बुना गया है। संवाद चुस्त–दुरुस्त और रोचकता बढ़ाने वाले हैं। नाटक का अंत एक युगीन प्रश्न से होता है– जबकि विकर्ण भीम से कहता है– ''भ्राता जी! कृष्ण जी से पूछिए, उन्होंने युद्ध को क्यों नहीं रोका। वे रोकते तो क्या युद्ध हो पाता?''

निश्चय ही इस संग्रह के तीनों नाटक उच्च स्तर के हैं। इन्हें डोगरी साहित्य की सकारात्मक वृद्धि माना जाना चाहिए।

जनता दरबार[19]– कवि एवं नाटककार मोहन सिंह एक अभिनेता के रूप में भी अलग पहचान रखते हैं। अब तक उनके 15 नाटक, 9 कविता संग्रह, 2 निबंध संकलन, 2 अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त, उन्होंने दो पुस्तकों का संकलन–संपादन भी किया हुआ है।

'जनता दरबार' उनका सद्य प्रकाशित नाटक है। बतौर नाटककार उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक विकारों पर खुलकर, कलम चलाई है। इस नाटक में ग्रामीण पृष्ठभूमि का अंकन करते हुए, उन्होंने भ्रष्ट तंत्र एवं भ्रष्ट आचरण पर तीखी टिप्पणी की है। शैली की दृष्टि से यह 'नुक्कड़' नाटक प्रतीत होता है।

नाटककार ने डुग्गर की लोक–नाट्य परंपरा का प्रयोग करते हुए, भ्रष्ट व्यवस्था–तंत्र की पोल–पट्टी खोलकर रख दी है। डुग्गर की नाट्य–परंपराओं में 'हरण' परंपरा का विशेष स्थान है। रात भर नाचने वाला यह लोक–नाट्य दल, हास्य–रस की फुलझड़ियाँ बिखेरकर दर्शकों का मनोरंजन करता है। इसी परंपरा को 'जनता–दरबार' में भी निभाने का सद्–प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है। नाटककार ने एक कवि के तौर पर अपनी क्षमता का भरपूर प्रयोग किया है। मोहन सिंह अपने नाटक 'अपनी डफली अपना राग' पर 1991 ई० में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। 'जनता दरबार' नाटक में, समकालीन राजनीतिक छल–कपट का बड़ी दक्षता से पर्दाफाश किया गया है।

मोहरें[20]– मोहन सिंह का यह मंचीय नाटक, शिल्प की दृष्टि से एक प्रयोगात्मक नाटक है। इसमें सामाजिक परिदृश्य पर मानव की सत्ता और सच्चाई पर

दार्शनिक विचार किया गया है। शिल्प की दृष्टि से इसमें आत्म–भाषण तथा एकालाप शैली के माध्यम से इस तथ्य पर विचार किया गया है कि हम अर्थात् सामाजिक या मानव वस्तुतः क्या हैं? कैसे व्यवहार करते हैं? हम कब दूसरों के हथकंडों का पात्र बन जाते हैं। हर मनुष्य अपने स्वार्थों के साथ–साथ दूसरों के स्वार्थ का शिकार बनते हुए मात्र एक कठपुतली या मोहरा बन जाता है। भ्रष्टाचारग्रस्त व्यवस्था पर तीखे कटाक्ष किए गए हैं। सामाजिक तबदीली के नारों को वास्तविकता बताकर, परोसा जा रहा है। कथानक एक के बाद एक, तीन पात्र अपने–अपने एकालाप में बयान करते हैं। तीनों कथावाचक की भूमिका में नाटक के अपने भाग का वाचन करते हैं।

गुमट मदान–1808[21]– जम्मू के इतिहास की एक गौरवपूर्ण घटना को आधार बनाकर यह नाटक लिखा गया है। सिख साम्राज्य द्वारा जम्मू पर आक्रमण के पश्चात् डोगरों की विजय के उपरांत, मियाँ मोटा द्वारा सिखों से की गई संधि को अस्वीकार करके विद्रोह का झंडा बुलंद करने वाले मियाँ डीडो के स्वतंत्रचेता चरित्र को नाटककार ने सफलता से उभारा है। मियां हजारी, गुलाब सिंह, जीत सिंह तथा रानी बंदराली के चरित्र, इस नाटक में जान भर देते हैं। नाटक में लगभग 18 के करीब छोटे–बड़े पात्र हैं। यह नाटक एक अच्छा प्रयास है।

काव्य–संसार

अश्रु[22]– नवोदित कवयित्री डॉ. सरिता खजूरिया का यह प्रथम कविता–संग्रह एक परिपक्व बौद्धिक प्रयास है। लेखिका ने अपना यह काव्य–संग्रह डोगरी की वरिष्ठ कवयित्री पद्मा सचदेव की पुण्य–स्मृति को समर्पित किया है। सरिता खजूरिया पद्मा जी की लेखनी और वैचारिकता से प्रेरणा पाती रही हैं। इसीलिए, कहीं–कहीं अपने भावों को कविताबद्ध करते हुए, वे पद्मा सचदेव की भावात्मक प्रतिच्छाया प्रतीत होने लगती हैं। इसी कारणवश, उनकी कविताओं का पारायण करते हुए यह भ्रम होना सहज–संभाव्य है कि हम पद्मा सचदेव को पढ़ रहे हैं। किसी नवोदित कवयित्री का पहले ही प्रयास में, इस स्तर को छू पाना, एक विशेष उपलब्धि है।

डोगरी कविता के उद्यान में उभरी नई महिला लेखनियों से इस बात की आशा रखी जा सकती है, कि स्तर के उच्च प्रतिमान स्थापित कर चुकी दिवंगता पद्मा सचदेव के शून्य को वे अवश्य पूरा कर पाएंगी।

'हादसा', 'मेरा हिस्सा', 'माँ–बोल्ली', 'फरियाद', 'मनै दी पीड़', 'हौंसले दी कुल्ली', 'खिल्लरे दा वजूद', 'सच्चा साथी' आदि कविताएँ इस संग्रह की श्रेष्ठ कविताएँ हैं। कुछेक छंदोबद्ध रचनाओं का भाव–फलक सराहनीय है।

गुंझलकों के उलझाव[23]– इधर डोगरी में कुछेक नवोदित कवयित्रियों के आगमन से इस कोमल–कांत विधा में नई आशाओं का स्फुरण हुआ है। इन प्रतिभावान कवयित्रियों में डॉ. सुषमा रानी का नाम भी है। इस वर्ष कविता के सुरभित उद्यान

में उनका प्रथम कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है। इससे पूर्व उन्होंने बच्चों के लिए एक कविता संग्रह ('बच्चे मनै दे सच्चे') प्रकाशित करवाया था। इसी भाँति उनका बाल–नाटक ('आओ खेढचौ नाटक') भी प्रकाशित हो चुका है। बाल–साहित्य में इन दो प्रयासों के अलावा, सुषमा रानी के तीन लेख संग्रह भी प्रकाश में आ चुके हैं। उनके द्वारा अनूदित कुछेक पंजाबी पुस्तकों के अनुवाद भी प्रकाश में आ चुके हैं।

'गुंझल–पलेस' नाम्नी कविता संग्रह में उनकी छंदोबद्ध एवं स्वच्छंद, दो प्रकार की मिली–जुली 51 कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। इस विधा में पहली बार पग रखने के बावजूद, कवयित्री की लेखनी पक्वता का अहसास कराती है–

''डेरा हमारा, ग़ैरों की बस्ती,
जाने कौन यह दर्द पराया।
दूर गए हैं साजन मेरे,
नीर नयनों ने भरसक बहाया।''

इन अनूदित भावों की प्रगाढ़ता के दर्शन प्रत्येक मौलिक कविता में हो जाते हैं। 'डोगरे', 'धियां', 'पींघ', 'कोई होर नेईं मेरा' सरीखी कविताएँ सराहना के योग्य हैं। देश को स्वर्ग समान देखने की अभिलाषा ('कदूं औग') के अलावा वह भारत को विश्वगुरु बनते हुए देखना चाहती हैं।

फूलों लदी रात–रानी[24]– विगत कुछ वर्षों से प्रोमिला मन्हास कविता के माध्यम से, डोगरी में अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने का प्रयास करती आई हैं। अद्भुत भाव–बिंबों द्वारा उन्होंने पाठकों–श्रोताओं को निश्चय ही चमत्कृत किया है। अपने प्रथम कविता–संग्रह 'फूलों लदी रात–रानी' द्वारा साहित्योद्यान में अच्छे स्तर का आभास करते हुए उन्होंने सुगंध बिखेरने का सकारात्मक प्रयास किया है। आधुनिक भाव–बोध से उत्प्रेरित ये कविताएँ न केवल पठनीय हैं, बल्कि सदा स्मरण योग्य भी हैं। 'वाइब्रेशन', 'इच्छाएँ दे गरड़जाल', 'सुपरवूमन' आदि कविताएँ अलग तरह की रचनाएँ हैं। कविता क्षेत्र में प्रोमिला मन्हास का प्रवेश इस दृष्टि से उनके प्रति आश्वस्त करता है कि उनके पास भावों के उमड़–घुमड़कर छाने वाले बादलों के अलावा, परंपरागत शब्दावली का भंडार मौजूद है। कविता क्षेत्र में यह जरूरी है कि आपके पास यदि कहने को कुछ हो, तो उसे उपयुक्त शब्दों में प्रस्तुत करने की क्षमता और समझ भी हो। निश्चय ही कवयित्री का विस्तृत अध्ययन उनके लिए, वरदान सिद्ध होता है। यह कविता संग्रह पारंपरिक और आधुनिक काल–बोध का अद्भुत संगम है। कवयित्री की बिंब–निर्माण की क्षमता देखकर, हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि आने वाले कल में उनकी लेखनी से डोगरी काव्य–जगत को और भी पक्व और श्रेष्ठ कविताएँ मिलेंगी।

उड़न खटोला[25]– 120 पृष्ठों के इस कविता संग्रह में मात्र 55 कविताएँ संगृहीत हैं। पुस्तक के आरंभिक 20 पृष्ठ चार लेखकों द्वारा लिखित भूमिकाओं के हैं।

संभवतया, यह कवयित्री चंचल भसीन का प्रथम कविता संकलन होने के कारण, इसमें उत्साह–वर्धन हेतु चार भूमिकाओं का आश्रय लिया गया होगा। इस पुस्तक से पूर्व लेखिका के 3 प्रबंध तथा दो अनुवाद (डोगरी में) प्रकाशित हो चुके हैं।

संग्रह में अधिकांश कविताएँ छंदहीन हैं। किन्हीं कविताओं में स्वच्छंद योजना दिखाई पड़ती है। इस काव्य संकलन में डॉ. चंचल भसीन ने अपने परिवेश के अलावा, सूक्ष्म मनोभावों को शब्दों में ढालने का प्रयास किया है। प्रो० वीणा गुप्ता के अनुसार 'उड़न खटोला' की कविताएँ सामान्य जीवन की अति सूक्ष्म और कोमल भावनाओं का संवेदनशील ढंग से चित्रण करती हैं। 'अखबार,' 'झत्तय', 'मूर्ति', 'लचारी' आदि कुछेक ऐसी कविताएँ हैं, जो पाठक या श्रोता के मन में संवेदना के सुप्त सोते को जाग्रत कर देती हैं।

कहीं–कहीं भाव–संसार के बिंब तो एकदम शुद्ध एवं स्पष्ट हैं, किंतु, कोई सांस्कृतिक भ्रम कविता को भाव–भ्रमित कर देता है। 'जम्मू–कश्मीर' शीर्षक कविता यों तो एक सराहनीय प्रयास है, किंतु जिस स्थल पर डोगरों द्वारा तुर्ले–पग्गां लगाने की बात कही गई है वहाँ भाव–संसार अप्रासंगिक होता दिखाई पड़ता है। आज तो पग्ग एवं पगड़ी दोनों ही नदारद हैं, किंतु तथ्य यह है, कि डोगरी–समाज में हिंदू–मुस्लिम कोई भी तुर्ले वाली पगड़ी नहीं बाँधता था। तुर्लेदार पगड़ी का प्रचलन पूर्वी पंजाब (पाक अधिकृत) में कहीं–कहीं था, जहाँ ब–हैसियत मुस्लिम पगड़ी में तुर्ले का प्रयोग करते थे। डोगरा युवक खुशी के अवसरों पर जिस पगड़ी को धारण करते थे उन्हें बुंबलदार पग्ग कहा जाता था।

कवयित्री ने 'लंगार' तथा 'भलेखा' सरीखी अच्छी कविताएँ रचकर, दरक रहे मानवी संबंधों को रेखांकित किया है। धर्म के नाम पर भ्रम का पालन–पोषण करने वाले भक्तजनों की विडंबना पर भी व्यंग्य किया गया है। आशा है, आगे चलकर इस नवोदित लेखनी से और भी पक्व रचनाएँ जन्म लेंगी। अंत में, इस पुस्तक की प्रथम भूमिका के लेखक वेद राही के उद्गार उद्धृत करना जरूरी है। वे कहते हैं–''डॉ. चंचल भसीन जी के कविता संग्रह 'उड़न खटोला' में जगह–जगह पर मुझे उस संवेदना की शिद्दत अनुभव हुई जो कवित्व का प्राण होती है।'' स्पष्ट है इस भावानुभूत तीव्रता का होना कवयित्री के लेखन के प्रति आश्वस्त करता है।

डुग्गर के नजारे[26]– नवोदित कवि अजीत जसयाल ने डोगरी साहित्य को अपनी पहचान प्रकृति–प्रेम के इस काव्यात्मक दस्तावेज के जरिए कराई है। इन कविताओं में तमाम विषयों पर लेखक ने अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति दी है, जिन्हें नए कवि अक्सर अपनी कविताओं में उठाया करते हैं। इस पुस्तक में 36 कविताएँ और 27 गीत संकलित हैं। देश–प्रेम की आरंभिक अभिव्यक्ति– 'साढ़ा तिरंगा झंडा', 'मातृ धरत', 'मेरा देस', 'तेरा देस महान', 'धन्न ऐ एह् डोगरा', 'सुरगै आंह्गू मेरा' में हुई है। कवि ने अपने जन्म प्रांत 'जम्मू' जिसको भाषाई तथा सांस्कृतिक दृष्टि से 'डुग्गर' कहा

जाता है, पर बहुत–सी कविताएँ रची हैं। इसी भाँति भारत देश एवं उसके प्रतीकों पर भी, अपने मनोभावों का प्रकटीकरण किया है। उसने डुग्गर के लोगों, नदियों–पर्वतों, खेत–खलिहानों, मेहनती किसानों पर अपने प्रशंसात्मक भावों को कविताबद्ध किया है। अपने गीतों आदि की भाव–भूमि हेतु उसने प्रसिद्ध लोकगीतों की पृष्ठभूमि का प्रयोग भी किया है। पुस्तक के प्रथम गीत की पंक्तियाँ प्रसिद्ध लोकगीत ''लिखी–लिखी चिट्ठियां भेजां तुगी बलोचा ओ''–की रूपरेखा पर बुना गया है। लोक–विरसे के प्रभाव तले इस संग्रह की महत्ता खूब बढ़ गई है। भावानुकूल शब्दावली से बिंबों का निर्माण किया गया है। यह पुस्तक युवा कवि का प्रथम प्रयास है। अभी उसे लंबा रास्ता तय करना है। हमें आशा रखनी चाहिए, आने वाले समय में वह रोमानी और ख्याली संसार से निकलकर, यथार्थ के परिदृश्य से जुड़ सकेगा।

रमज[27]–(अर्थात् व्यंग्यात्मक तर्क) : वर्तमान समय–खंड में काव्य–क्षेत्र में उतरने वाली कवियों की नई पीढ़ी या तो छंदोबद्ध कविता शैली में कलम आजमाती दिख जाती है, या फिर स्वच्छंद शैली का आश्रय लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करती है। इस दौर में गज़ल–शैली का प्रयोग कमजोर पड़ने लगा है। इधर खजूर सिंह ठाकुर अपनी गज़लों का संग्रह लेकर आए हैं, जो इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि गज़ल अभी डुग्गर की जमीन से उखड़ी नहीं है।

ग्रामीण पृष्ठभूमि के कवि खजूर सिंह ठाकुर की अब तलक 11 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कविता हो या गज़ल, उसमें धरती की सोंधी महक महसूस की जा सकती है। डोगरा लोक–मानस के प्रसिद्ध प्रेम प्रसंगों की झलक उनकी शायरी में कहीं न कहीं दिख जाती है। भागू–गिलमू का प्रेम–प्रसंग हीर–रांझा के कथानक की तरह हृदय–स्पर्शी प्रसंग है, जिसे उन्होंने एक शेर में यों स्मरण किया है– यद्यपि गज़ल–विधान में त्रुटियों की कमी नहीं है, तथापि कवि में यह समझ पर्याप्त रूप से है कि विरोधाभासी तकनीक का प्रयोग कैसे करना है। इससे वह अपने शेरों को कहीं–कहीं तीखी धार देने में सक्षम हुआ है–

''अर्घ सुगातां केह् करने जद,
अंबर चन्न घरोई गेआ।''

अर्थात् जब चाँद डूब जाए, तब उसे अर्घ्य प्रदान करना, उसे पूजना वृथा ही है।

बहरहाल, यह कहना समीचीन होगा कि गज़ल की तुलना में कवि इससे पूर्व अच्छी कविताएँ लिख चुका है। बेहतर होगा, यदि वह कविता में ही अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करें।

निबंध

चिड़ियाँ का दूध[28]– डोगरा लोक–मानस में प्रचलित एक मुहावरा है–''चिड़ियाओं का दूध।'' इसके द्वारा एक ऐसी व्यंग्यात्मक चुनौती को प्रकट किया जाता है, जिसे संभव–साकार कर पाना पूर्णतया असंभव हो। निबंधकार चंदू भाऊ ने

डोगरा लोक–जीवन तथा संस्कृति से संबद्ध विविध परिदृश्यों को अपनी विलक्षण भाषा शैली में प्रस्तुत किया है। उनकी मुहावरेदार भाषा उनके कथन को चार चाँद लगा देती है। इस पुस्तक से पूर्व, लेखक के तीन अन्य निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। निबंध लेखन में उतरने से पूर्व उनकी मात्र एक कवि के रूप में पहचान थी।

इस ताजा निबंध संग्रह में लेखक के 14 निबंध संकलित हैं। स्तर की दृष्टि से, ये आगे की ओर बढ़े हुए 14 कदम हैं। प्रत्येक निबंध में लेखक ने डोगरा जन–जीवन और लोक–संस्कृति विषयक अपने विशेष ज्ञान का प्रदर्शन किया है। डोगरी भाषा तथा साहित्य के समृद्धि यज्ञ में यह पुस्तक एक सकारात्मक वृद्धि है।

समाहार– वर्ष 2022 ई० में प्रकाशित डोगरी साहित्य के इस संक्षिप्त आकलन से स्पष्ट होता है कि डोगरी में सृजन की गति तीव्र है। व्यतीत वर्षों की तुलना में, अब की बार सर्वाधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। यह तथ्य स्वागत–योग्य है। किंतु, कलम–धर्मी लेखकों को जागरूक रहना होगा कि पुस्तकें छपवाकर साहित्य को समृद्ध करने के भावावेश में कहीं स्तरहीन पांडुलिपियाँ प्रकाशित करने की उतावली न दिखाएँ। उतावली में छापी गईं प्रसादगुण से रहित पुस्तकों के विषय में प्रबुद्ध पाठक अक्सर कहते सुने जाते हैं– अमुक लेखक महाशय आखिर कहना क्या चाहते हैं? इस खतरे से बचने का तरीका यह है कि प्रकाशन से पूर्व पांडुलिपियों पर किन्हीं वरिष्ठ लेखकों की राय अवश्य ले ली जाए। सही मार्गदर्शन से दिशाहीनता का खतरा टल जाता है।

पद्मा सचदेव जो प्रति वर्ष डोगरी कविता को एक पुस्तक अर्पित किया करती थीं, उनके न रहने से भी डोगरी काव्य–जगत में शून्य की जो स्थिति आई थी, उसे इस वर्ष सामने आई चार नवोदित कवयित्रियों–डॉ. सरिता खजूरिया, सुषमा रानी, प्रोमिला मन्हास और चंचल भसीन ने काव्योद्यान के द्वार पर रचनात्मक दस्तक देकर, भरने का प्रयास किया है। इन समर्पित लेखनियों ने डोगरी के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आशा के दीप को प्रज्वलित किया है।

शीराजा (डोगरी) स्तरीय साहित्यिक सामग्री प्रकाशित कर रहा है। इधर एक निजी प्रयास के तौर पर 'डुग्गर दर्शन' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ है। दिसंबर–2022 ई० तक इसके तीन अंक प्रकाशित हो चुके हैं। यह एक सकारात्मक पग है जो उन्नति की दिशा में जाता प्रतीत होता है। डोगरी को साहित्यिक पत्रकारिता की जो परमावश्यकता है, संभव है यह उसकी पूर्ति कर पाए।

संदर्भ–सूची

1–4. प्रकाशक–प्रकाश प्रेमी द्वारा रचनाकार, कला साहित्य अकादमी, ठंडा पद्धर, उधमपुर (जे.के.)

5. डोगरी लोक–साहित्य ते डोगरा लोक–संस्कृतिय प्रकाशक–डोगरी संस्था, कर्णनगर, जम्मू।

6. मेरे ञारां लेखः, गंगा शर्माय प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

7. साहित्य ते संस्कृति; डॉ. सुषमा रानी; प्रकाशक–डुग्गर मंच, डोगरा हाल, जम्मू।

8. छंदमुक्त डोगरी कविता; शिल्प ते शैलीय राज मनावरी; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

9. जरूरत वैज्ञानक अध्यात्मवाद दी बत्तै पर चलने दी; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

10. तुक्के; राजेश्वर सिंह राजू; प्रकाशक–माया संसार पब्लिकेशंज, सुरक्षा विहार, टाप पलोह्ड़ा, जम्मू–181121

11. खंटालूय प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

12. तितलियां; जगदीप दुबे, द्वारा रचनाकार, कला–साहित्य अकादमी, उधमपुर (ज० क०)

13. राशन कार्ड (कहानी संग्रह); सत्यपाल गढ़वालिया, प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

14. न्हेरे च घिरे दा आदमी; शिवदेव सुशील; प्रकाशक–डुग्गर दर्शन प्रकाशन, 27/4, पांपोश कालोनी, जान्नीपुर, जम्मू–180007

15. नमित्त; इंदरजीत केसर; प्रकाशक–जै माता प्रकाशन, 2–पी, सैक्टर–3, छन्नी हिम्मत, जम्मू–180005

16. खंडत मूरती; तारा दानपुरी; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

17. कुरबान बस्त; लेखक–शैलेंद्र सिंह

18. विकर्ण; जगदीप दुबे; द्वारा रचनाकार, कला–साहित्य अकादमी, उधमपुर (ज. क.)

19–21. जनता दरबार; मोहरे; गुमट मदान–1808 मोहन सिंह; प्रकाशक–डुग्गर मंच, डोगरा हाल, जम्मू।

22. अश्रु; डॉ. सरिता खजूरिया; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

23. गुंझल–पलेस; डॉ. सुषमा रानी; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

24. फुल्लें लदोई रात–रानी; प्रोमिला मन्हास, प्रकाशक–अनिरुद्ध प्रकाशन, जम्मू।

25. उड़न खटोला; डॉ. चंचल भसीन; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

26. डुग्गर दे नजारे; अजीत जसयाल; प्रकाशक–हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

27. रमज; प्रकाशक–नीलम प्रकाशन, वार्ड नं. 18, हाऊस नं.–1, कठुआ, (जम्मू)।

28. चिड़िएं दा दुद्ध; चंदू भाऊ; हाइब्रो पब्लिकेशंज, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।



9

तमिल साहित्य



पी. राजरत्नम

कवि और उपन्यासकार। अब तक नौ पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों और संगोष्ठियों में सहभागिता। कई संस्थाओं में मानद सदस्य के रूप में कार्य। आकाशवाणी में कई वार्ताएँ प्रसारित। कई पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति–एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग) और हिंदी अधिकारी, केंद्रीय विश्वविद्यालय, तमिलनाडु ।

भारत की प्राचीन व शास्त्रीय भाषाओं में से एक तमिल भाषा का प्राचीन और वर्तमान साहित्य बहुत समृद्ध है। इस भाषा का इतिहास बहुत पुराना है। कम–से–कम दो हजार वर्ष पुराना है। तमिल साहित्य का काल विभाजन और नाम निम्न प्रकार हैं –

(क) संगम साहित्य – 300 ई. पूर्व से 300 ई. तक

(ख) भक्ति साहित्य – 400 ई. से 1200 ई. तक

(ग) लघु प्रबंधों का साहित्य . 800 ई. से लेकर 1800 ई. तक

(घ) आधुनिक काल का साहित्य – 1900 से लेकर आज तक

(क) संगम साहित्य

आदिकालीन तमिल–साहित्य कुल 36 हैं, जिनमें 'अगम' साहित्य, जो प्रेम और पारिवारिक संवेदना के लिए जाना जाता है वहीं 'पुरम' साहित्य, जो कि सामाजिक–संवेदना और नीति साहित्य, जो कि निजी और सामाजिक नीति से संबंधित है।

(ख) भक्ति साहित्य

भक्ति साहित्य के अंतर्गत देवारम (प्रार्थना गीतों के संग्रह) तिरुवासगम, तिरुमंदिरम, शैव सेवक (63 भक्तों की जीवनी) और कई छोटे–छोटे प्रार्थना गीतों का संग्रह है।

(ग) लघु प्रबंधों का साहित्य

लघु प्रबंधों का साहित्य में कुल मिलाकर 96 लघु साहित्य हैं।

(घ) आधुनिक काल का साहित्य

इसमें पद्य–साहित्य और गद्य–साहित्य है। पद्य–साहित्य में रीति कविताएँ,

लघु काव्य, महाकाव्य और अलग–अलग कविताएँ हैं। गद्य–साहित्य में निबंध साहित्य, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, जीवनी, अनुसंधान, विचार–विमर्श, पत्र–पत्रिकाएँ, भाषण, व्याख्यान और अनूदित साहित्य निहित हैं।

अधिक–से–अधिक तमिलभाषी प्रदेश के निजी सिद्धांतों के आधार से सृजित साहित्य ही है। शिक्षा के विकास के बाद नए–नए सिद्धांतों और विचारों के आधार पर अनेक तरह के साहित्य की रचनाएँ हो रही हैं, जिनमें दलित साहित्य, महिला साहित्य, बाल साहित्य आदि हैं। आजकल आकाशवाणी, दूरदर्शन, ई–बुक, नेट–समाचार आदि के नाम से भी साहित्य का सृजन हो रहा है। भेंटवार्ता में भी कई प्रकार की साहित्यिक रचनाएँ हो रहीं है। समग्र रूप से विश्व के सभी क्षेत्र के आधार पर दिन–प्रतिदिन नए–नए सिद्धांतों के आधार पर भी साहित्य की सर्जना हो रही है ।

इस लेख में 2022 में प्रकाशित तमिल भाषा के ग्रंथ और रचनाएँ नीचे उल्लिखित हैं। 'विलैयाट्ट पोल ओरु ब्रम्मसूत्तिरम' (खेल जैसे ब्रह्म सूत्र) – यह संस्कृत भाषा का महत्वपूर्ण तत्व ग्रंथ है। तमिलभाषी इस ग्रंथ को आसानी से समझने हेतु एल.सुंदरम नामक लेखक ने इसे निबंध के रूप में लिखा है। यह ग्रंथ व्याख्यान के समान है।

लेखक इलमति अरिवुडै नंबी की लिखी किताब है . 'महात्मा' (महात्मा) जिसमें शब्दों का बहुमुखी विश्लेषण तमिल में विस्तार से किया गया है। हमें ज्ञात है कि गांधीजी को ही महात्मा शब्द से अलंकृत किया गया है। साथ–ही–साथ और भी बहुत बड़े लोगों का नाम इसके साथ संबद्ध हुआ, उनका विवरण इस किताब में दिया गया है। लेखक इलमति अरिवुडै नंबी की लिखी दूसरी किताब है। 'रहस्य कडल' (रहस्य समुद्र)। इसमें वे समुद्र के महत्वपूर्ण विषयों को अपने ज्ञान–विज्ञान के आधार पर विश्लेषित कर अनेक विषयों पर प्रकाश डालते हैं। मोटे तौर पर यह किताब जनता को समुद्र संबंधित विषयों पर जानकारी प्रदान करती है।

राजकंमीडन का लिखा 'तीप्पट्टुम अरुविकल' (आग लगने का झरना) एक लघु उपन्यास है, जिसमें झरने के प्राकृतिक गुण, शीतलता का परिचय है। अगर इसमें आग लग जाती है तो तुरंत बुझ जाती है। इस उपन्यास की नायिका के चाल–चलन पर प्रकाश डालकर लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है, जो कि क्रोधी और द्रोही को भी अपने आचरण से हरा देती है।

चार सौ कविताओं का संग्रह है 'कडवुल उण्डा? इल्लैया– 400' (क्या ईश्वर है या नहीं?)। इसके लेखक हैं विश्वलिंगम। इस संग्रह का उद्देश्य है ईश्वर पर कुछ सोचकर उसके प्रयोजनमूलक विषयों पर प्रकाश डालना। दुनिया में ईश्वर को अपने–अपने विचार के अनुसार विश्लेषण कर कई मंदिर बनवाकर पूजा पाठ करते हैं, भक्तगण वहाँ जाकर प्रार्थना करते हैं, लेकिन कोई भी ईश्वर के बारे में पूछताछ करने की कोशिश नहीं करते, मगर भक्तगण ईश्वर के प्रति कई बातें अपने ढंग से बोलते रहते हैं। अंधविश्वास को हल करने (हटाने) के लिए लेखक ने अपने अनुभव के आधार

पर उत्तर देने की कोशिश की है।

'सिरुवर कदैकल भागम–3' (बाल–कहानियाँ–भाग–3) के माध्यम से कहानीकार सेल्वम ने बच्चों के उल्लासमय जीवन के दृष्टिकोण से उक्त संग्रह की कहानियाँ लिखी हैं। बाल–साहित्य में आजकल के बच्चे अधिक रुचि दिखाते हैं। इधर 'सेंतमिल सांड्रोर अरिञन सा.वे.सु' (सुशिक्षित बुद्धि एवं शील में उत्तम सज्जन डॉ. सा.वे. सुब्रमण्यन) नाम की रचना के लेखक एवं प्राध्यापक पालवकन अरसु अपनी किताब के माध्यम से डॉ. स.वे.सुब्रमण्यन जी की जीवनी के साथ–साथ साहित्य क्षेत्र की संपूर्ण सेवाएँ विस्तार से विश्लेषित करते हैं। लेखक ने शोध–क्षेत्र में अधिक ध्यान देकर कई ग्रंथ लिखकर तमिल भाषा की खूब सेवा की है। उनका देहांत हो गया, फिर भी उनके ग्रंथ आज ही नहीं बल्कि विश्व के अंतिम समय तक उपयोगी बने रहेंगे। उनकी इस साहित्यिक सेवा पर उनका नाम व उनकी कीर्ति सदैव बनी रहेगी।

अगली किताब पयण 'निनैवलैगलुम आन्मीग अनुभवंगलुम' (यात्रा की स्मरण लहरें और आध्यात्मिकता का सुखानुभव) जिसके लेखक के.वे.शिवानंदन हैं। इस किताब में उत्तर भारत के कई तीर्थस्थलों की यात्रा कर वहाँ के मंदिर और पावन/पुनीत महत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है। भक्त–भाविकों को केंद्र में रखकर लेखक ने एक मार्गदर्शक के रूप में सेवा की है। दूसरी किताब जिसका शीर्षक है– 'शैवागम परिभाषा मंजरी' (शैवागम परिभाषा की मंजरी) जिसके लेखक हैं श्री लिंगम ज्ञान देसिकर जी, जो एक बहुत बड़े तत्त्वज्ञानी हैं। उन्होंने इस ग्रंथ में शैव सिद्धांतों के बारे में खूब प्रकाश डाला है। इस ग्रंथ की मदद से शैव–धर्म के संपूर्ण तत्व–चिंतन, पूजा–पाठ के सभी विवरण समझ सकते हैं। इनकी एक अन्य किताब का शीर्षक है 'जैन आच्चार्यरकलिन अमुद मोलिगल' (जैन आचार्यों की अमृत वाणियाँ) जिसमें रचनाकार श्री लिंगम ज्ञान देसिकर जी ने समग्र आचार्यों के उपदेश, संदेश, निजी एवं सामाजिक नीतियों को सुंदर ढंग से संग्रहीत किया है। 'जैनम' (जैन धर्म) शीर्षक किताब में रचयिता करंदै अ. सुकुमारन ने संपूर्ण जैन धर्म के तत्व और आचार्यों के विवरण, धर्म ग्रंथों की सूची आदि को इस पुस्तक के जरिए प्रस्तुत किया है।

अगली किताब 'मरणत्तिन विलिम्बिल' (मरण के छोर पर) के लेखक हैं श्री शिवसुब्रमण्यम। मोटे तौर पर सभी जीवों के मन में मरण और उसकी अवस्था पर एक डर बना रहता है। कोई भी जीव मृत्यु का स्वागत नहीं करेगा। मृत्युजनित भय और अवस्था को कोई नहीं समझता। इस पुस्तक में इस डर को दूर करने के उद्देश्य से मरण के तत्वार्थों पर अधिक जोर देकर मानव की चिंता को दूर हटाने की कोशिश हुई है। इसी प्रकार एक किताब है 'उयिर उडैत्ताय' (प्राण को अपनाए) जिसे सि भवेश ने लिखा है। इसमें बौद्ध धर्म के मुख्य तत्वों और प्रधान–तत्वों पर प्रकाश डाला गया है, जो सब कुछ प्राण के समान अतिमुख्य और पवित्र हैं।

'चतुरंगम' (चतुरंग) शीर्षक पर कलैवाणन की लिखी किताब में खेलकूद संबंधित

सभी विवरण रीति और नियम पर जोर देकर लिखा हुआ है। 'पेरियार मट्टुम पिरंतिरुक्काविट्टाल' (पेरियार का जन्म न हुआ हो तो?) शीर्षक किताब में रचनाकार तोल तिरुमावलवन ने बताया है कि सामाजिक चिंतक वी.रामस्वामी जी की अधिक उम्र की वजह से और अन्य स्थानीय चिंतन की वजह से भी उनको 'पेरियार' नाम से पुकारते हैं। पेरियार शब्द का अर्थ बहुत बड़े आदमी/चिंतक के अर्थ में है। तमिल समाज में जागरण का महत्ती कार्य इनके द्वारा ही हुआ जिसका विवरण इस किताब में मौजूद है।

एक दूसरी किताब 'मनिद इनक्कुळु वरलारुम आरियमुम' (मानव जाति का इतिहास और आर्य जाति) शीर्षक में लेखक के. अरिवलकन ने दक्षिण भारत की पूर्व जाति यानी द्रविड़–जाति और आर्य–जाति के पूर्वजों के विवरण बताकर उनके भेदभाव एवं चाल–चलन पर प्रकाश डाला है।

'राम लीलै' (राम लीला) नाम की किताब में लेखक अरिवुक्करसु ने बड़ी दिल्लगी भरी बातें राम–लीला के विरोध भावों को हँसी–परिहास एवं मजाक उड़ाने का कार्य किया है। इस साल की और एक किताब 'मळै विदैत्त मानुडम' (वर्षा का बीज बोया मानव जाति) के लेखक रा.उदयन ने किसानों की कड़ी मेहनत पर प्रकाश डाला है एवं खेती–बाड़ी के कार्यों में आ रही समस्याओं पर प्रकाश डालकर, इस बात को उजागर किया कि किसान लोग किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं। 'सेतु समुद्रित्तिट्टम तेवैदाना ?' (सेतु समुद्र की योजना की जरूरतें क्या हैं?) शीर्षक किताब में लेखक मुत्तु अमलराज ने सेतु समुद्र की योजना की आवश्यकताओं पर प्रकाश डालकर बीच में इस योजना में रुकावट होने के कारणों पर भी विस्तार से विवरण दिए हैं, लेकिन साथ ही साथ यह भी बताया है कि देश और समाज को भविष्य में होने वाली उन्नति में इसका लाभ अवश्य मिलेगा।

जीवनी की कोटि में लेखक वासु. अरिवुक्कन की लिखी रचना 'आसिरियर रत्नसभापतियित वाळवुम सेवैयुम' (अध्यापक पी. रत्नसभापति का जीवन और सेवा)। अध्यापक रत्नसभापति, जो एक बहुत बड़े चिंतक हैं, विशेष रूप से शैव सिद्धांतों के विशेषज्ञ भी हैं। उनका जीवन और धर्म–क्षेत्र की सेवा–यात्रा को इस पुस्तक में उल्लेखित किया गया है ।

इस वर्ष की और एक प्रसिद्ध किताब 'सिलप्पदिकारत्तिल तिट्टंगल' (महाकाव्य शिलप्पतिकारम में योजना बनाने की रीति) शीर्षक में लेखक पावलर चीनी पलनी ने इस ग्रंथ के माध्यम से तमिलनाडु के चेर, चोल और पांडिय राजाओं के शासनकाल में कैसे योजना बनवाकर सुंदर ढंग से सबको अपने–अपने देश की सुरक्षा और समाज के सुखी जीवन पर और उनकी बनाई गई कल्याणकारी योजनाओं को व्याख्यायित कर उसकी सफलता को प्रतिपादित किया है। इधर 'सूर्य कदिरगल' (सूर्य की किरण)

शीर्षक किताब में लेखक तमिल दासन विज्ञान से संबंधित सूर्य के सभी विवरण एवं शक्तियों पर प्रकाश डालते हैं।

आम विषय के रूप में कुछ सामाजिक आवश्यकताओं पर भी किताबों की कमी नहीं रही। 'नीट नीदिया? तगुदिया? तरमा ?' (नीट परीक्षा क्या यह न्याय है? क्या योग्य है? क्या स्तर है?) किताब में लेखक मुरुगैयन ने उक्त दृष्टिकोण से यह किताब लिखी है, जिसमें मेडिकल कॉलेज में प्रवेश की अनिवार्य परीक्षा 'नीट' के बारे में कुछ सामाजिक चिंतकों के विचारों को सामने रखकर तमिलनाडु के छात्र–छात्राओं को किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, आदि विषयों पर विवरण दिया है। लेखक सुंदर श्रीनिवासन की विरचित 'आळुमै मेंपाडुरू व्यक्तित्व विकास' (शासन के सुशासन) में राजनीति, राज्य, सरकार की योग्यताओं के बारे में विश्व के बड़े–बड़े चिंतकों के विचारों को सामने रखकर, भारत की राजनीति और सरकार की शासन पद्धति पर प्रकाश डाला है, जो महत्वपूर्ण रचना प्रतीत होती है।

कुछेक किताबों में वैज्ञानिकता पर विश्लेषण मिलता है। 'वेलिनाट्टु विज्ञानिकलिन विळुमियंगल' (विदेशी वैज्ञानिकों की विशिष्टता विषय पर) लेखक तंगमणी जी ने सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के आविष्कारों के महत्व एवं प्रयोजन से संबंधित विचार अभिव्यक्त किए हैं।

इस साल में अधिकतर किताबें तमिल भाषा व्याकरण एवं साहित्य से संबंधित प्रकाशित हुई हैं। इस कोटि में लेखक करुण मनोकरन की लिखी एक किताब है 'आर्य द्रविड़ तमिलरकल' (आर्य–द्रविड़ एवं तमिल भाषी)। इस पुस्तक में आर्य वंश के सभी विवरण पहले देने के तत्पश्चात द्रविड़ वंश का पूरा विवरण बताया गया है। यह दोनों के संयोग से ही आज तमिलनाडु में तमिलभाषी एक नए वंश के रूप में जीवन बिता रहे हैं। इसका विश्लेषण उपर्युक्त किताब में मौजूद है।

'तमिलर तिरुमणमुम इन मानमुम' (तमिल वंश की शादियों के रीतिरिवाज और स्वाभिमान) किताब में रचनाकार के. अण्बलगन के अनुसार आदिकाल से तमिल वंश की शादियों के लिए एक अलग पहचान है, मगर कालांतर में सामाजिक वातावरण के अनुसार धीरे–धीरे परिवर्तित होकर अब नए–नए तरीके अपनाने लगे, जिस पर लेखक ने कलम चलाई और कई प्रकार के साहित्य–संदर्भों में दिए गए रीति–रिवाजों को सामने रखकर विश्लेषण किया है। से.परिवे कुमार की लिखी किताब 'तिरुविळा' (उत्सव) में तमिलनाडु में धूमधाम से मनाए जानेवाल उत्सवों के बारे में बताकर इनके लाभ और नुकसान पर बात करते हैं।

2022 में प्रकाशित किताब 'कल्लिक्काट्टु इतिहासम' (कल्लिक्काडु का इतिहास) के रचनाकार सुप्रसिद्ध तमिल कवि वैरमुत्तु हैं, उन्होंने तमिलनाडु में कल्लिक्काडु नामक एक क्षेत्र के सच्चे जीवन स्तर पर प्रकाश डाला है, और कई सालों से गुजर रहे नीच (निम्न) वातावरण के बारे में विवरण दिया है। 'मुल्लैप्पेरियारु अणै' (मुल्लै

पेरियारु नामक बांध) पुस्तक के माध्यम से रचनाकार टी.तामस ने केरल राज्य के अंदर मजबूत ढंग से बनवाए गए, इस बाँध के भूतपूर्व इतिहास और आज इससे पैदा होनेवाली समस्याओं को मद्देनजर रखा है।

सुप्रसिद्ध लेखक श्री वाली तमिल सिनेमा के प्रसिद्ध गीतकार थे, जिन्होंने कई प्रकार की नई कविता के रचयिता 'रामानुज कावियम' (रामानुज काव्य) के नायक सुप्रसिद्ध वैष्णव महान श्री रामानुज का जीवन वृत्तांत लिखता है। 'पोट्टुदलुक्कुरिय तलैवरकल अरिञरकल' (प्रशंसनीय विज्ञ लोग) शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन भी इस वर्ष हुआ है। इसकी लेखक श्रीमती राजेश्वरी कोदंडम हैं जिन्होंने इस किताब में विश्व प्रसिद्ध महान नेता और विज्ञ के विशेष गुणों पर प्रकाश डाला है। दूसरी किताब है 'चिंदनै सुरंगम' (चिंतन के सुख) जिसके लेखक हैं का. दिरवियम। यह कई प्रकार की प्रयोजनमूलक चिंतन पद्धतियों का एक संग्रह है। हम जानते हैं स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जाति, धर्म, भेदभाव के बिना हिंदुस्तान के सभी लोगों ने प्रयास किया है। उस कोटि में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिए 'सुतंतिर पोराटत्तिल मुस्लीमकलिन तियागंगल' (इस्लाम के नेता गण) नाम की किताब सा.अब्दुर रहीम द्वारा लिखी गई है, जिसमें तमिलनाडु के कई मुसलमान नेताओं और आम जनता के भाग लेने का विवरण दिया गया है।

इस वर्ष करीब आठ–नौ सौ किताबें प्रकाशित हुईं, जिनमें से 'मानिल सुयाच्चि' (प्रांतों के स्वराज) नाम की रचना भी उल्लेखनीय है। इस किताब के रचनाकार हैं मुरसोली मारन जिन्होंने अनेक प्रसिद्ध किताबें लिखीं। इस किताब में भारतीय प्रांतों के स्वराज की आवश्यकता का चित्रण किया गया है, जिसमें इससे हुए एवं हो रहे लाभों का उल्लेख है।

तमिल भाषा के महत्व पर लिखी रचना है 'तमिलाट्टुप्पडै' (रास्ता दिखा रही तमिलभाषा) जिसके लेखक हैं कवि श्री वैरमुत्तु। इसमें तमिल भाषा से मिलनेवाले लाभ और प्रयोजन पर चर्चा की है। कहते हैं तमिल भाषा जीवन में भटकते रहनेवालों को रास्ता दिखाती है। यह भाषा (तमिल) के महत्व को बतानेवाली कविता रूपी किताब है। एक पुस्तक 'मूंड्रावदु उलगप्पोर' (तीसरे विश्व युद्ध में) कविश्री वैरमुत्तु ने अपनी कविता संग्रह द्वारा विश्व के बड़े–बड़े देश के नेता लोग अपनी वीरता दिखाने हेतु आपस में झगड़ा करने पर तुले रहते हैं और झगड़ा करते भी हैं। यह विश्व के शांति में धूल लगाने का काम है, इसे रोकना उचित है। इस प्रकार कई विचारों पर लेखक ने दृष्टि डाली है।

लेखक पिच्चौ ने अपनी रचना 'तमिलिल मोळपेयरप्पू इलक्कियम' (तमिल में अनूदित साहित्य) में यह दिखाने का प्रयास किया है कि अन्य भाषाओं में से तमिल में अनूदित साहित्य का संपूर्ण विवरण है। अधिक से अधिक अंग्रेजी से तमिल में

अनूदित किताबों का विवरण अन्य भाषाओं से भी अधिक साहित्यिक किताबों का अनुवाद विवरण उक्त किताब में उपलब्ध हैं।

'वलम कुन्ड्रा वेलाण्मै' (अक्षय समुद्र की कृषि) शीर्षक किताब में लेखक रंगसामी ने कृषि के महत्त्व को बताया है। और एक किताब 'कुळंदै वलप्पुम नल उणवियलुम' (बच्चों के भरण पोषण और भला–बुरा आहार) की लेखिका राजेश्वरी ने प्रयोजमूलक हजारों उक्तियाँ, जो बच्चों से संबंधित हैं, उन्हें उपयोगी जनक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

एक दूसरी किताब है 'अरुल मोलि नूलगलिन आगमंगल' (अनुकंपा ग्रंथों में धर्म ग्रंथ) जिसके लेखक हैं कार्तिकेय शिवम। तमिल में उपलब्ध सैकड़ों भक्ति किताबें हैं, उनमें उल्लेखित ईश–अनुकंपा के बारे में विस्तार से विवरण दिए हैं। बीच–बीच में धर्म ग्रंथों के विवरण और महत्त्व पर भी विवेचन किया गया है।

कहीं एक जगह 'जप्पानिय मोलिपेयर्प्पु कदैकल' (जापानी कहानियों का अनुवाद) भी तमिल में हुआ है, जिसके अनुवादक है 'न्यूल'। न्यूल के द्वारा 'अमेरिका मोलिपेयर्प्पु कदैकल' (अमेरीकी भाषाओं की अनूदित कहानियाँ) शीर्षक पुस्तक में अमेरीकी भाषा से तमिल में अनुवाद किया गया है।

यहाँ 'नूलुम नूलगंगलुम' (किताबें और ग्रंथालय) शीर्षक से लिखी किताब के लेखक हैं श्रीमनोज। इस किताब में ग्रंथालय को ज्ञान का भंडार कहा गया है। इस किताब में ग्रंथालय के महत्त्व एवं प्रयोग करने की रीतियों पर भी जोर दिया है।

'सट्ट नूलरिञर पेरासिरियर का.सुब्रमण्यम' (कानून ग्रंथों के विज्ञ और प्राध्यापक सुब्रमण्यन) शीर्षक किताब लेखक पालवकन अरसू की है, जिसमें ग्रंथकार ने भारत के कानून विशेषज्ञ का.सुब्रमण्यन की जीवनी पर प्रकाश डाला है। उन्होंने अपना समग्र जीवन इसमें लगाया है और भारत के कानून और न्याय के महत्व को विश्व भर में जाकर प्रचार–प्रसार करके एक महती कार्य किया।

'हिंदि इलक्किय चक्रवर्ति प्रेमचंद वाल्वुम पणियुम' (हिंदी साहित्य के राजाधिराज प्रेमचंद की जीवनी और सेवा) शीर्षक ग्रंथ में लेखिका सरस्वती ने हिंदी कथा–साहित्य के सम्राट मुंशी प्रेमचंद के बारे में संपूर्ण विवरण दिए हैं। यह पुस्तक एक शोधपरक ग्रंथ की कोटि में गिनी जाती है। कह सकते हैं कि तमिल में ऐसी विषय–वस्तु की किताबें बहुत कम मिलती हैं।

तमिल साहित्य का एक प्रमुख काव्य ग्रंथ है 'तेंबावणी', जिसकी लेखिका श्रीमति जानकी पुष्प रानी ने 'तेंबावणियुम तमिल संदंगकलुम' (तेंबावणी काव्य और तमिल रागिनी के छंद) शीर्षक की किताब में ईसाई धर्म में राग से गाने योग्य सैकड़ों गीतों को छंदबद्ध रूप में समाहित किया है । पाठक इस किताब पर महत्वपूर्ण विचार–विमर्श कर उसकी प्रशंसा भी करते हैं। यहाँ वेद ज्योतिष तत्त्व और चिंतन विषय पर लेखक

मूंदमुकुंद जी की लिखी हुई किताब है, जिसमें ज्योतिष कला और विज्ञान का पूरा विवरण देने का यत्न हुआ है। ज्योतिष कला पर और एक ग्रंथ का प्रकाशन इस वर्ष हुआ है, जिसका शीर्षक है 'वेद जोदिड तत्तुवंगलुम चिंतनैकलुम भागम– I' (ज्योतिष कला के महा अद्भुत शास्त्र भाग– I)। मालूम है कि लोग आजकल ज्योतिष पर विश्वास करते हैं, जिसे ध्यान में रखकर लेखक आदित्या ने ज्योतिष कला के राज रेखांकित किए हैं। इस पुस्तक में ज्योतिष कला का उद्भव और विकास के इतिहास का विवरण दे रखा है।

ज्योतिष–कला के आधारभूत विषयों को सरल तमिल भाषा में खूब विश्लेषण कर समझाने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार और एक रचना का नाम 'जोदिडम एनुम महा अर्बुदम बागम–I – जोदिडम एनुम महा अर्बुदम बागम– II' (ज्योतिष कला के महा अद्भुत शास्त्र भाग I व II) जो कि ज्योतिष कला के राजा आदित्या के द्वारा लिखी गई है। इस ग्रंथ की खासियत यह है कि 27 नक्षत्रों के नाम और उनके स्वाभाविक गुणों का परिचय इसमें दिया गया है। गणित के आधार पर कुंडलियाँ कैसे आम आदमियों के जीवन में प्रभाव डालती हैं, उसकी मान्यताओं व लाभ–हानि के बारे में जानने का मार्ग भी स्पष्ट किया गया है।

इसके अतिरिक्त इस साल 2022 में सामाजिक विषयों ने भी रचनाकारों का ध्यान आकृष्ट किया है, तभी तो 'वाल्वियल अरम' (जीवन धर्म) शीर्षक किताब में लेखक पंडित सेंदिल नायकम ने जीवन में पालन करने योग्य अनेक कर्तव्यों पर प्रकाश डाला है। आज के जीवन में अत्यंत आवश्यक रोग और चिकित्सा में भी प्रकाशन कार्य जारी रखा है। 'तोल नोय तीक्र्कुम मूलिगैकल' (चर्म के रोग निवारण करनेवाली जड़ी–बूटी) नामक पुस्तक में लेखक वे.रामदास जी ने चर्म की सिद्ध तरीके की दवाइयों पर जोर देकर जड़ी–बूटियों का परिचय विषयक सामग्री–संचयन किया है। पुस्तक में चर्म रोग को इन औषधियों के माध्यम से दूर भगाने की बातों पर जोर दिया गया है।

'तिरुत्तंकल पगुदियिल तोल्लियल आय्वुगल' (तिरुत्तंकल नामक क्षेत्र के प्राचीन परिच्छेद के अनुसंधान) किताब के रचनाकार लालचंद्रन द्वारा लिखी गई है। इसमें तमिलनाडु के पुराने क्षेत्र में भूमि के अंदर छिपे गोपनीयमाल के अनुसंधान से मिली चीजों का विवरण उपलब्ध है। अनुसंधान या खोज की किताबों के क्रम में अगली प्रकाशित पुस्तक है 'पुयल मटट्रुम वरट्रिच मेलान्मै' (तूफान और सूखे पर अनुसंधान) जिसके ग्रंथकार हैं सी.अरुल प्रसाद। इस किताब में तूफान के बाद हुए शुष्क को दूर करने की योजना और भूमि को समृद्ध बनाने के कारणों पर शोध किया गया है।

इस समय नारी सशक्तिकरण की बात हर कहीं गूँज रही है। इधर 'पेण वल्लिनम' (महिलाओं की शक्ति और पराक्रम) की किताब प्रकाशित कर लेखिका बाल शण्मुखदेवी जी ने आधुनिक महिलाओं के शिक्षण और सामाजिक चिंतन के विकास से

हुई प्रगति एवं सशक्ति का परिचय बखूबी दिया है। अगली किताब 'ओन्ड्रे कुलम ओरुवणे इरैवन' (एक ही कुल है एक ही ईश्वर) पुस्तक में लेखक मुहम्मद अब्दुल्ला ने इस्लाम धर्म के आधारभूत सिद्धांतों पर खूब लिखा है। इनका विचार है कि विश्व के और देशों के विकास और सिद्धांत यही होने चाहिए कि सभी जन–समूह मिल–जुलकर विकास का पथ चुनें। इस किताब के जरिए एकता समानता एवं भेदरहित रहने की शिक्षा मिलती है। देखिए, जिस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा–नीति को देश अपनाने में अटल रहता है, इसी प्रकार आधुनिक भारत की शिक्षण प्रणाली और नीति पर रचनाकार मु.सौंदिरराजन ने कलम चलाई है। इस किताब में लेखक नें समाज के लिए उपयोगी 'तरकाल इंदियाविल कल्वि' (नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों) पर विचार अभिव्यक्त किए हैं।

बाल साहित्य के बारे में अनेक लेखकों ने पुस्तकें लिखीं हैं, फिर भी 'कुळंदैप्परुवमुम वलच्चियुम' (बच्चों की अवस्था और प्रगति) विषय पर मु. सौंदिरराजन की यह दूसरी किताब है जो इस साल की महत्वपूर्ण किताबों में से एक मानी जाती है। उन्होंने बच्चों की आरंभकालीन कई प्रकार की अवस्थाओं पर सशक्त विवरण प्रस्तुत किया है, इन्होंने कहीं–कहीं नई शिक्षा नीति की अच्छाई और बुराइयों पर भी प्रकाश डाला है।

'ओंड्रिय मट्टुम मानिलंगलिन निरुवागमः सिरप्पुक्कुरिप्पुकल' (भारत और प्रांतों की समस्याएँः विशेष रूप से तमिलनाडु के संदर्भ में) नामक पुस्तक में लेखक सी.नवनीतन ने अखंड भारत की समस्याओं को हल करने का रास्ता क्या–क्या है, और प्रांतों की समस्याएँ तथा उन्हें सुलझाने की योजनाओं को प्रस्तुत किया है। 'तकवल पेरुम उरिमैच्चट्टमः सादारण मणिदरुक्कु ओर आदरवु' (सूचना का अधिकार अधिनियमः साधारण जनता के आधारभूत अधिकारों के कानून) विषय पर लिखी, लेखक एस.पी.नेडुमारन की किताब भारत के नए कानून पर प्रकाश डालती है। यह किताब कानून के अनुसार भारत की आम जनता भी सरकार की ओर से समाचार एवं मामलों को प्राप्त करने के अधिकार RTI के बारे में विवरण प्रस्तुत करती है।

इस वर्ष के प्रकाशन में और एक किताब, जिसका शीर्षक है 'कण्णकी देवी' (कण्णकी देवी)। इस किताब के लेखक हैं आर.कारमेकक् कोनार। इसमें तमिलनाडु के सुप्रसिद्ध पूजनीय सुश्री कण्णकी के महत्व को बताया गया है। इस पुस्तक में महाकवि इलंगोवडिकल विरचित महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम' की नायिका कण्णकी के बारे में अनेक विवरण मिलते हैं। साथ ही केरल की कुछ किंवदंतियाँ तमिलनाडु के लोकगीत, वीथी नाटक आदि विषयों के बारे में शिलालेख के आधार पर इसे लिखा गया है।

2022 में अनेकानेक व्याकरण ग्रंथों का प्रकाशन भी हुआ है। लेखिका देविरा के द्वारा लिखे गए व्याकरण ग्रंथ का नाम है 'देविराविन तमिल इलक्क्णम'(देविरा द्वारा

लिखा तमिल व्याकरण) जिसमें पूर्णरूप से व्याकरण के विवरण सरल भाषा में दिए गए हैं। इस साल के प्रकाशन के संदर्भ में और एक किताब का नाम 'तिरुमणमुम जादिडमुम' (शादी और ज्योतिष) है। तमिलनाडु में विवाह आधारित कुछ रीति–रिवाजों से संबंधित विषयों और ज्योतिष आधारित पूरी रीतियों के विवरण इस किताब में मिलते हैं।

'मंञलारु उपवडिव नीर् पकुदियिल वेलाण पयिरकल' (पीली नदी के पास पड़ी भूमि के खेती–बाड़ी में उपयोग हो रहे उद्योग की सूक्ष्मता की भलाई और बुराइयाँ' शीर्षक किताब के द्वारा लेखक आर.जयश्रीनिवास ने पीली नदी के आस–पास पड़ी भूमि पर हो रही कृषि का गहरा अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से करने के बाद वहाँ की संस्कृति के बारे में बताया है।

'वाळक्कै कुरियीडु : मरबु अणुवियल पुरट्च्च' (जीवन के संकेत : रीति–रिवाज के परिच्छेद में पैदा हुई क्रांति) के रचनाकार मोहन सुंदरराजन हैं। इस किताब में पुराने रीति–रिवाज में आधुनिक वैज्ञानिक दल के द्वारा कई वर्षों से किए जा रहे अनुसंधान से प्राप्त नए–नए आविष्कारों एवं प्रतिक्रियाओं के विवरण मिलते हैं। मोहन सुंदरराजन की लिखी अगली किताब 'कुलोतियिन सागसंगल' (गुलोन्सि की साहसें) एक कहानी संग्रह है। कहानीकार जे.पी शर्माजी के द्वारा लिखा गया कहानी संग्रह का नाम है 'सिंगमुम मुल्लेळयुम' (शेर और कांटा चूहा)।

'एन?' (क्यों?) शीर्षक में लिखी गई किताब की लेखिका मीनाक्षी स्वामी ने इस किताब में 'क्यों' के प्रश्न संकेत के बहुमुखी रूप पाठकों के सामने रखे हैं। 'नालायिर दिव्व प्रबंदत्तिल आण्डाल' (श्री आंडाल) पुस्तक में लेखक कर्पकम ने तमिल भाषा में जो गीत गाए गए हैं, उन्हें लिखित रूप में 4000 वैष्णव भक्ति गीतों के रूप में (संग्रह में) भक्त सुश्री आंडाल की जीवनी और उनके गाए गए गीतों के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

'नोय पोक्कुम सित्त मरुत्तुवत्तु कुडि नीरकल' (रोग हटाने के लिए सिद्ध रीति के चिकित्सा के पेयजल) नामक पुस्तक को लेखिका राजेश्वरी ने लिखा है। इसमें सिद्ध वैद्य के ढंग से बनाई गई पेयजल की सूची का विवरण दिया गया है, जो साधारण पेयजल जैसा न होकर, इस पेयजल (अनेक प्रकार के) के आधार पर सिद्ध वैद्य रीति की दवाएँ जिसे अनेक जड़ी–बूटियों से बनाया गया है। इसी प्रकार की और एक रचना है 'सिद्द मरुत्तुवम कूरुम नल वाल्वियल' (सिद्ध चिकित्सा में वर्णित जीवन पद्धति)। इसके रचनाकार का.राजेश्वरी हैं। रोग रहित सुखी जीवन बिताने के अच्छे–अच्छे रास्ते एवं मार्गदर्शन इस पुस्तक में निहित हैं ।

'सप्त कन्नैकलुम सप्त मादरकलुम : ओर आय्वु' (सप्त कन्नियाँ एवं सप्त मादरों के अनुसंधान) शीर्षक किताब के लेखक एस.सौंदिरराजन हैं। किताब में पौराणिक कथाओं के तुलनात्मक अध्ययन के साथ कवियों के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया

है। और एक पुस्तक 'इंगिलांदु मलर मरुंदुकल बागम I, II, III' (इंग्लैंड देश के पुष्पों से बनी दवाइयों के महत्व – भाग I, II और III) के द्वारा लेखक वी.कृष्णमूर्ति ने भी पुष्पों के प्राकृतिक गुणों को आधुनिक वैज्ञानिक रीति से विश्लेषण कर उनका प्रयोग करने की रीतियों पर भी प्रकाश डाला है। यहाँ दूसरी किताब 'चीन देसत्तु वैद्दिय मुरै' (चीन देश की चिकित्सा पद्धति और रीतियों के तीन भाग) के लेखक श्री कृष्णमूर्ति ने चीन देश के वैद्य एवं दवा की परंपरा का पूरा विवरण दिया हैं और उसके प्रयोग करने की पूर्ण विधियों को भी वे प्रस्तुत किया हैं।

ज्योतिषशास्त्र से संबंधित एक अन्य किताब, जिसका शीर्षक है 'जोदिड शास्तिरंगलिन नुट्पंगल' (ज्योतिष शास्त्र एवं कलाओं की सुरक्षा)। इस किताब के लेखक हैं वे.कृष्णमूर्ति। इसमें इन्होंने ज्योतिष शास्त्र की बहुमुखी सूक्ष्मताओं पर प्रकाश डालकर, किस प्रकार वह जीवन की मदद कर सुखी जीवन बिताने का रास्ता आदि सुझाया है। लेखक एस.गणेशन ने अपनी 'सिरुकदैकल' (लघु कहानियाँ) शीर्षक किताब में सामाजिक जीवन की घटनाओं को आधार बनाकर कहानियों का सृजन किया है।

'उपनयन मंदिरात्र्त महत्तुवम' (उपनयन मंत्रों का महत्व) शीर्षक किताब में लेखक शिवागम रत्नम आर्य वंश की सभी जातियों के प्रमुख कर्तव्य में इस 'उपनयन' प्रक्रिया को प्रथम मानते हैं। इस धर्म–कर्म में प्रयोग होनेवाले प्रमुख मंत्रों का विवरण उक्त किताब में निहित है। 'पुदुवै वरलाट्टु सुवडुकल' (पुदुवै इतिहास के निशान) शीर्षक पुस्तक में लेखक नंदिवर्मन ने पुदुच्चेरी नाम को ही पुदुवै कहा है। इस राज्य के आदिकालीन इतिहास से लेकर आधुनिक काल के इतिहास तक के पूर्ण विवरण पुस्तक में मिलते हैं।

उल्लेखनीय बात है कि 2022 में तमिल भाषा में प्रतियोगिता परीक्षाओं से संबंधित लगभग सौ से ज्यादा किताबें, 'नीट' परीक्षा संबंधित किताबें, आम विषय से संबंधित अनेक किताबें, उपन्यास, साहित्य से संबंधित कई किताबें, तमिल व्याकरण की किताबें आदि अधिक संख्या में प्रकाशित हुई हैं।

❑❑❑

10

तेलुगु साहित्य



ए.के. अर्चना

विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। 'इंद्रचाप' नामक कविता संग्रह प्रकाशित। 'सावन की फुवारों' के लिए काव्य शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित। संप्रति–सेंट मैरीत सेंटेनरी डिग्री कॉलेज, सिकंदराबाद में हिंदी की विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत।



जी. मोहन राव

हिंदी भाषा एवं साहित्य में विशेष अभिरुचि। कई पत्रिकाओं में समीक्षात्मक लेख इत्यादि प्रकाशित। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध आलेख प्रकाशित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

तेलुगु भाषा दक्षिण भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं की भाँति इसका संबंध ऋग्वेद कालीन संस्कृत से है। यह अत्यंत प्रौढ़, परिमार्जित, कलात्मक भाषा है तथा इसकी साहित्यिक सृजनशीलता का विकास 10वीं शताब्दी से हुआ। 'तेलुगु' शब्द का विकास क्रम भी बड़ा रोचक है। इसकी कर्णप्रिय सरलता के कारण इसका नाम तेनुगू पड़ा। तेलुगु शब्द में 'तेने' शब्द का अर्थ (शहद) होता है। तेलुगु भाषा की साहित्यिक यात्रा 200 ईसवी पूर्व से शुरू होती है।

किसी भी भाषा के साहित्य का आरंभ लिपि के पूर्व ही गीतों के रूप में होता है। गीत, साहित्य की तरह स्थाई नहीं होते। ईसा से 800 वर्ष पूर्व तेलुगु लिपि का प्रादुर्भाव माना गया है। लेकिन उस काल का साहित्य लिपिबद्ध नहीं है। उसके पश्चात् शिलालेखों में कुछ तेलुगु साहित्य पाया जाता है। उसके पूर्व गीत साहित्य के प्रचलन होने का अनुमान किया जा सकता है। तेलुगु का लिपिबद्ध साहित्य 11वीं शताब्दी के आरंभ से पाया जाता है।

तेलुगु का साहित्य (तेलुगु साहित्य) अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है। इसमें काव्य, उपन्यास, नाटक, लघुकथाएँ तथा पुराण आते हैं। तेलुगु साहित्य की परंपरा 11वीं शताब्दी के आरंभिक काल से शुरू होती है जब महाभारत का संस्कृत से 'नन्नय्य' द्वारा तेलुगु में अनुवाद किया गया। विजयनगर साम्राज्य के समय यह पल्लवित–पुष्पित हुई।

तेलुगु के आदिकवि 'नन्नय भट्ट' ने संस्कृत महाभारत का अनुवाद तेलुगु पद्य में किया। यह अनुवाद होते हुए भी स्वतंत्र कृति के रूप में दिखाई देता है। शैली

संस्कृतशब्दबहुला तथा कोमल है। इन्होंने 'आंध्रशब्द चिंतामणि' के नाम से एक तेलुगु व्याकरण ग्रंथ की रचना संस्कृत शब्दों में की। यह एक अनोखी घटना है कि तेलुगु के आदिकवि ही इस भाषा के प्रथम वैयाकरण सिद्ध हुए। व्याकरण के रचयिता होने के कारण वे 'वागनुशासन' के नाम से प्रख्यात हुए। उनके केवल आदि एवं सभापर्व पूर्ण और अरण्यपर्व के कुछ भाग मिलते हैं। तेलुगु देश में यह प्रतीत है कि नन्नय की रचना के पढ़े बिना सरल और मधुर कवि बनना कठिन है। महाभारत की रचना में उन्हें पंडित नारायण भट्ट का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। नन्नय भट्ट 11वीं शताब्दी के चालुक्यवंशीय राजा 'राजराजनरेंद्र राजमहेंद्रवर' के कुलगुरु थे। तिक्कन सोमयाजी तथा एर्राप्रेगड्डा नामक दोनों कवियों से महाभारत की रचना पूर्ण हुई।

इतने वर्षों के पश्चात भी जनता और पाठक की अभिरुचि के अनुसार आज भी पौराणिक और प्रासंगिक रचनाएँ तेलुगु साहित्य में लिखी और सराही जाती हैं। वर्ष 2022 में प्रकाशित कुछ पुस्तकों का विवरण निम्नवत है

'मूसी' पत्रिका और उसके स्तंभकार : नंदिनी सिद्ध रेड्डी जी कवि, आलोचक, पत्रकार, कहानीकार और ग्रामीण परिवेश के अद्भुत चितेरे हैं। 2022 में तेलुगु भाषा में प्रकाशित पत्रिका 'मूसी' के आप स्तंभकार हैं। मूसी एक नदी का नाम है और आप उसी ग्राम के निवासी हैं। हर अंक में आप एक कहानी लिखते हैं। इन कहानियों को पढ़कर ऐसा लगा कि हिंदी जगत के लब्ध प्रतिष्ठित कहानीकार 'विवेकी राय' और 'दशरथ मिश्र' की कहानियाँ हमारे समक्ष दूसरी भाषा और शब्दों में चरितार्थ हो रही हैं। हर अंक की कहानी मूसी से जुड़ी एक संचित धरोहर को दर्शाती है। अकूत धनोपार्जन की लालसा में संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता से विलग होते युवाओं के लिए ये कहानियाँ जमीन से जोड़े रखने में सहायक हैं। इनकी प्रासंगिकता और उपादेयता श्लाघ्य है। सिद्ध रेड्डी जी का सहयोग और सृजनात्मकता मात्र साहित्य तक ही सीमित नहीं है अपितु नाटक, गीत लेखन में आपका योगदान अप्रतिम है। 2022 में ऑल इंडिया रेडियो में आप द्वारा लिखित नाटक 'बतुकम्मा' का प्रसारण किया गया जो तेलंगाना राज्य के एक विशेष पर्व के संदर्भ में है। बतुकम्मा का अर्थ है 'फूल और पेड़'। इसमें बताया गया है कि विवाह के उपरांत जब नायिका 'लक्ष्मी' ससुराल जाती है तब वहाँ उसका शराबी पति नशे की हालत में किसी बात से चिढ़कर उसकी हत्या कर देता है। लक्ष्मी की आत्मा मायके में ही भटकती रहती है और अंत में एक वृक्ष के रूप में पल्लवित होती है। गाँव भर के लोगों को स्वप्न देती है कि स्त्री आखिर कैसे अपनी सुरक्षा कर सकती है? अन्याय का अंत कैसे हो सकता है और प्राकृतिक संपदा का संरक्षण कितना आवश्यक है आदि। 2022 में ही आपके द्वारा लिखा गया लोरी गीत, तेलुगु की सुप्रसिद्ध गायिका 'चित्रा' जी द्वारा गाया गया है।

'केसुला– गोर बंजारा कथा संकलनम'

सुर्या धनंजय उस्मानिया विश्वविद्यालय में तेलुगु की प्रोफेसर हैं। आलोचना

और अनुवाद आपका क्षेत्र है। 2022 में आप द्वारा तीन पुस्तकों का संपादन किया गया। इसमें पहली पुस्तक है – 'केसुला– गोर बंजारा कथा संकलनम' इसमें कुल 50 लेखकों की भिन्न–भिन्न कहानियाँ हैं। इन सभी कहानियों की विषय वस्तु भिन्न है परंतु केंद्रीय वस्तु एक ही है– गोर बंजारा जाति की संस्कृति और उसके वैशिष्ट्य को उद्घाटित करना। काल्पनिकता और यथार्थ के धरातल पर जितनी भी कहानियों का ताना–बना बुना गया है उनमें इस जनजाति के समाज, आपसी व्यवहार, इनके पूजा–पाठ की पद्धति, गोर बंजारा का शोषण, अस्मिता की समस्या आदि संदर्भों को उद्घाटित किया गया है। सुर्या जी द्वारा संपादित इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद अपेक्षित है। यह पुस्तक 2022 में साहित्य अकादमी हैदराबाद तेलंगाना से प्रकाशित है

'संशोधिता महाभारता पीठिकालू' : इसे तेलुगु विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कराया गया। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि यह इसका छठा संस्करण है। इसका पहला संस्करण उस्मानिया विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के पूर्व आचार्यों द्वारा सन् 1965 में संपादित किया गया, जिसका लोकार्पण डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने किया था। इसमें देश भर के पुस्तकालयों से महाभारत की पुस्तक का अध्ययन किया गया और उसके सार–संक्षेप को एक सारगर्भित लेख के रूप में तेलुगु भाषा में प्रकाशित किया गया। इससे प्रभावित होकर आने वाले कई प्रोफेसर ने इसे आगे बढ़ाया और इसके पाँच संस्करण प्रकाशन में आए और सुखद बात यह कि छठा संस्करण सुर्या जी ने निकाला। निस्संदेह यह पुस्तक धरोहर है। तेलुगु में प्रो. एन गोपी सुविख्यात साहित्यकार और आलोचक हैं। आप द्वारा सृजित कविताओं का समीक्षात्मक अध्ययन डॉ एस रघु और डॉ सुर्या जी ने किया है। संपादक द्वय से बात करते हुए कई बातें स्पष्ट हुईं। गोपी जी की कविताएँ वैविध्यपूर्ण हैं। समीक्षा में यात्रा संबंधी कविता, वृद्ध विमर्श, राजनीति, परिवर्तित सामाजिक मूल्य और मूल्यों के क्षय को मुख्य रूप से विश्लेषित किया गया है। इस पुस्तक का नाम है– 'निरंतरा'। इसे नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया गया है।

'अदाविलो ओक रात्रि'

डॉ सुर्या सफल अनुवादक हैं। 2022 में आपने 'राकेश चक्र' के लघु कथा संकलन– **'जंगल में एक रात'** का तेलुगु भाषा में **'अदाविलो ओक रात्रि'** नाम से अनुवाद किया है। आपकी विशेषता है कि आप हिंदी पढ़ना और लिखना बखूबी जानती हैं बस धारा प्रवाह बोल नहीं सकतीं। बावजूद इसके आपका योगदान साहित्य और आलोचना में अद्वतीय है।

क्रिया एक जीवनलया : वर्ष 2022 में काव्य संकलन 'क्रिया एक जीवनलया' अभव प्रकाशन से प्रकाशित हुई। इसमें कुल 80 कविताएँ संकलित हैं। सभी कविताएँ जीवन के समस्त रंगों को दर्शाने वाली हैं। किसी में कष्टानुभव है, कहीं संबंधों की

मिठास है, कहीं सामाजिक रोष और प्रतिद्विंदता दिखाई पड़ती है तो कहीं प्रेम के अनेक रंग जीवन को माधुर्यपूर्ण बनाते दिखाई देते हैं। कवि वाला जीवट व्यक्ति हैं। सरलता–सहजता की प्रतिमूर्ति हैं और यही सरल प्रवाह उनकी रचनाओं में भी परिलक्षित होता है। तेलुगु साहित्य जगत में एन गोपी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उम्र के वार्धक्य को परे धकेलते हुए सरस्वती के सच्चे उपासक एन गोपी का सृजन यज्ञ आज भी जारी है। प्रतिवर्ष एक नई पुस्तक से वे अपने पाठकों को उपहार देते हैं और सुख पहुँचाते हैं।

सीताकोका चिलुका : हैदराबाद के परमेश्वर गुड्डला जी विद्यार्थी जीवन से ही अध्यापकों द्वारा प्रोत्साहित होने पर हिंदी के प्रति अभिरुचि रखने लगे। तेलुगु और हिंदी में आपका योगदान अति महत्वपूर्ण है। 2022 में तेलुगु भाषा में आपने रचनाएँ न करके अनुवादपरक कार्य किया है। इसमें आपने कल्नल डॉ बी आर के प्रसाद जी द्वारा अंग्रेज़ी में लिखित– 'life is a School' का अनुसृजन– 'जीवन एक पाठशाला' नाम से किया है। तेलुगु भाषा के साहित्यकार कंदेपी राणी प्रसाद के काव्य संग्रह. 'सीताकोका चिलुका' का 'तितली' नाम से अनुवाद किया है। यह एक बाल काव्य संग्रह है। इसमें बच्चों को नैतिकता, आध्यात्म, ईमानदारी, निष्ठा तथा स्वाभिमान की शिक्षा दी गई है। इसी क्रम में यशपाल शर्मा द्वारा रचित उपन्यास का 'सेलवुलु' नाम से अनुवाद किया है।

तेलुगु फिल्म के गीत : दर्शनशास्त्री एस अशोक तेजा जी साहित्यकार नहीं अपितु सुविख्यात गीतकार हैं। आपने अब तक 2027 गीत लिखे हैं। 2022 की ऑस्कर विनिंग फिल्म आर आर आर का प्रथम गीत "अंबर से थोड़ा सूरज को प्यारा अम्मा के आँचल में ढँक डाला सारा" तेलुगु में "कोम्मा उईयाला कोनाजू पाला, अम्मा बोदतू नेनू रोजू उगाला" चर्चित गीत श्रद्येय अशोक तेजा जी द्वारा ही लिखा गया है। भारतवर्ष के लिए और यहाँ के नागरिकों के लिए सम्मान की बात है कि इस फिल्म के नाटू नाटू गीत को इतनी सराहना मिली। इस फिल्म का आरंभ जिस गीत से होता है उसके लेखक अशोक तेजा जी विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। 'सिनेमा के सौ वर्ष' पुस्तक आपने 2023 में संपादित की है। इसके अतिरिक्त दस पुस्तकें आप द्वारा विरचित हैं, यथा– 'के आर स्मृति गीतम', 'वेलुगु रेकालु', 'बटुकु पाटालू', 'वीरतेलंगाना संगिका यक्षनम', 'अकूपच्चा चंदामामा', 'नीलम्मा नीलम्मा', 'नेमाली कन्नोड़ा', 'ना पाटालू', 'श्रमा काव्यम' आदि।

एक तेलुगु गीत में जीवन की दार्शनिक प्रतिभा–

''अगर किसी गीत में जीवन है,तो वह सुद्दला अशोक तेजा है
अशोक तेजा लोक संगीत में एक लोकप्रिय शब्द है
अशोक तेजा एक कवनम हैं
अरुणोदयम में करुणामय हृदय मिले तो अशोक तेजा।

अन्ना पापिनेनी शिवशंकर के शब्दों में सुदाला अशोक तेजा की कविता की ऊँचाई का एहसास होता है। अशोक तेजा ने कला तत्व के सुंदर, दार्शनिक रूप से प्रासंगिक गीतों के साथ तेलुगु गीतात्मक कविता को श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री श्री वेटुरी के बाद उन्होंने तेलुगु गीत को राष्ट्रीय ख्याति दिलाई। उन्होंने तेलुगु साहित्य को वेद का उपदेश दिया। सामाजिक आंदोलन के क्षेत्र में कवि मुरारी ला ने श्रम गान की भविष्यवाणी की थी। अशोक तेजा ने लोकसाहित्य को प्राणप्रद मानते हुए फिल्म के गीत को जीवन के व्याकरण के अनुरूप मूर्तिकला से सुसज्जित किया है। निसर्ग ने खूबसूरत तेलंगाना नुदिकारम के साथ एक तेलुगु गाना गाया। चाहे वह क्रांतिकारी गीत हो, सामाजिक चेतना का गीत हो, फिल्मी गीत हो या लंबी कविता, अशोक तेजा अपनी रचना में जान डाल देते हैं और पाठकों के दिलों पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। अशोक तेजा ने जीवन और विजय की एक नई व्याख्या दी। कहते हैं, 'विजय/विजय के लिए जियो।' 'झंडा फहराओ, मौत के सामने चलो' कहकर मनुष्य को दार्शनिक हथियार में बदलने की महान शक्ति अशोक तेजा के गीतों में छिपी है।

दस साल की उम्र में ''धगधागा लाडे ओ जेंदा/विनावे पुर्दलागाथा'' गाने वाले अशोक तेजा आज भी बड़ी सफलता के साथ गानों का झंडा बुलंद कर रहे हैं। उन्होंने फिल्म के गाने 'गरम गरम पोरी ना गज्जला सव्वारी' से डेब्यू किया था और साठ साल बाद भी गरम गारंगा आज भी बना रहे हैं। वह गाने के साथ तीर्थ यात्रा पर जा रहे हैं। इस गीत को सुनने से रक्तपात, आँसुओं, जलते घावों को सहने और महत्वाकांक्षा की प्राप्ति पर टिके रहने का अद्वितीय दृढ़ संकल्प मिलता है। भले ही घोड़े फिसल रहे हों, दिल अपनी जाति के लिए न्याय के लिए खड़े होने के लिए पहाड़ जैसा महसूस करता है। नस्लवाद के खिलाफ कड़ा रुख अपनाना जरूरी है। बाधाओं पर विजय पाने और जीवन जीतने की शक्ति का होना जरूरी है।

अशोक तेजा, जिन्होंने सुदाला हनुमान के युद्ध गीत गाए थे, जिन्होंने कभी तेलुगु गीत नहीं सुने थे। अपने पिता द्वारा बजाए जाने वाले हारमोनियम की धुनों और अपनी माँ जनकम्मा द्वारा गाए गए गीतों को सुनकर, अशोक तेजा अपनी भूख भूल गए और उन गीतों की छत्रछाया में आराम करने लगे। उस घर में, जो प्रजापताल कार्यशाला की तरह गूँजता है, अशोक तेजा ने उसे अरुणकाव्य की तरह सुगंधित किया। अशोक तेजा बीस वर्ष की उम्र में अपने पहले उपन्यास 'वेलुगुरेकेलु' के साथ राज्य स्तरीय उपन्यास प्रतियोगिता के विजेता बने। सुद्दला ने हनुमान का 'वीरतेलांगना संघिका यक्ष गीत' पूरा किया, जिसे उन्होंने अधूरा छोड़ दिया था।

वित्तीय राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए, उन्होंने 'बटुकु पाटलु' प्रकाशित किया और एक गायक और बाद में एक फिल्म कवि के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पारंपरिक विद्वानों ने मिथक बनाए हैं कि संगीत के बोल देवी सरस्वती के हृदय से उत्पन्न हुए हैं। उत्पादक शक्तियों की प्रतिभाओं का श्रेय रणनीतिक रूप

से आध्यात्मिक शक्तियों को दिया जाता है। अशोक तेजा ने अपने गीतों के माध्यम से इन प्राचीन मान्यताओं की वैज्ञानिक पुष्टि की कि संगीत के बोल ट्रोसिराजनिज़्म के जीवित प्राणियों के पसीने की बूँदों से निकले थे और कठिन जीवित प्राणी ही मूल कलाकार थे। 'तप तप मणि पसीना/यदि गिर रहे हों ताले/पतम्मापुत्तुका' नामक गीत में कवि ने साबित किया कि वह चाचा थे। अशोक तेजा ने वैज्ञानिक दृष्टि से घोषणा की कि पुदामी त्याग की अवस्था है और कर्म भवन की नींव है। उन्होंने कड़ी मेहनत की संस्कृति की निंदा की। इस असाधारण गीत के संदेश के पूरक के रूप में, अशोक तेजा ने महाकाव्य 'श्रम काव्य' लिखा और आदिम काल से आधुनिक काल तक श्रम पेगुटेनु से पैदा हुए महान सांस्कृतिक खजाने को अपनी कलम से दर्ज किया।

'नेलम्मा नेलम्मा' गीत में उन्होंने बहुमुखी प्रतिभा की धनी नेलतल्ली की महानता को अभूतपूर्व तरीके से गाया। यह गाना 'पृथ्वी भारतम' की तरह सार्वजनिक मंचों पर लगातार गूँज रहा है। अशोक तेजा द्वारा अविश्वसनीय कला और दार्शनिक गहराई के साथ लिखे गए 'तप तप मणि' और 'नेलम्मा' जैसे गीतों में महान काव्यात्मक भावना देखी जाती है। ''मन्नू लुन्न चंदामाया के हाथों में क्या महिमा है/मन्नू से चावल लेने की महिमा तुम्हारी है/धूल की बूँदों में तुम हो/पसीने की बूँदों में तुम हो'' इस कवि का गीत अनुनित्यम लोगों के दिलों में मजबूती से बसा रहेगा राष्ट्र।

'देश लोग हैं, देश मिट्टी है या नहीं? पेड़ नहीं? क्या यह बटेर नहीं है? क्या यह जानवरों का जाल नहीं है? क्या यह पानी है? अशोक तेजा का हाल ही में प्रकाशित पर्यावरण महाकाव्य 'मैं जंगल के बारे में बात कर रहा हूँ। सबसे उल्लेखनीय है अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, गौरवगाथाओं के लिए। यह विश्लेषण करते हुए कि जंगल आदिवासी जीवन के प्रभावों का केंद्र है, पर्यावरण के सार्वभौमिक हित का उपदेश देने वाली अशोक तेजा की यह कविता पढ़ने वाले लोगों के बीच लोकप्रिय हो गई। ''बटेर के पेट से तू पैदा हुआ, मेरे बाप/बटेर की माँ तुझे पेट भरने तक दूध पिलाती है/गाय के पेट से तू पैदा हुआ, मेरे बाप/गाय की माँ बछड़े तक दूध देती है'' भरा हुआ है/आपने इस लंबाडी माँ के गर्भ से जन्म क्यों लिया?/माँ के दूध के साथ ताड़ के पत्थर को पीने की रस्म अशोक तेजा का गीत नीकोचिंदिरा दिल को छू जाता है। कवि ने एक आदिवासी महिला की पीड़ा को अद्भुत तरीके से व्यक्त किया है, जो शाम को काम से घर आने तक अपने बच्चे को दूध के लिए रोए बिना थपथपाकर सुला देती है। मातंगी ने महिलाओं की मानसिक और शारीरिक हिंसा को एक महान गीत में बदल दिया है, यह कहकर कि ''मेरी आँखों में अंधेरा छा गया है/सूरज को दूर ले जाओ और मुझ पर एक बिंदी लगाओ/मुझे कमल के फूलों से लपेटो/मेरे दिल में पत्थर डाल दो/वंगी नापा डालनु''।/ वरामदुगा कोंडिरा/ यह कुत्तों का अगला भाग है जिसे कुत्तों ने फाड़ दिया है।''

मुंडारा/कोलूपुरा के नाम पर गर्दन काटने वाली बकरी/यह मेलाकड़ा जाति पथरा'' ने अपने गीतों में पीढ़ियों से दलित वर्गों की दयनीय पीड़ा को उजागर किया। ''सड़कों पर अनाथों के फटे–पुराने कपड़ों में/जैसे हमारे मतदाताओं की भूख से धड़कने वाली आत्माएँ/बार में शराबी मुँह/बीयर की बोतल से पीटा जाता है/एक कामकाजी युवा बच्चे का खून बहता है।''

अशोक तेजा का गीत एक अभिनव मोड़ और आधी रात में सोते हुए शहर की तीव्र भावनात्मक छवि के साथ चलता है और श्रोताओं को झकझोर देता है। ऐसे महान गीतात्मक मूल्यों वाले गीतों के साथ, कुशे कुशी ने लड़के को ''वाउड मेला मेला वाउड'' जैसे मजाकिया गीतों से उत्साहित किया। हर बार अशोक तेजा का गाना आग के पहाड़ की तरह टूटता है। दूसरी बार बर्फ के पहाड़ की तरह। इस कवि का गीत जोश और नमी के विचारों से भरा है। अशोक तेजा, जिन्होंने बचपन में सिनारे जैसे गीत लिखकर प्रसिद्ध होने का सपना देखा था, एक कठिन काव्य उद्योग के साथ बड़े हुए और महान कवि के साथ फिल्मी गीत लिखे, उन्हें सराहना मिली। जैसे ही सिनारे ने एक बार 'कर्पुरा वसंत रायलु' कविता गाई थी, अशोक तेजा ने कई मंचों पर 'श्रम काव्य' भी गाया। उन्होंने भावपूर्ण ढंग से गाया और दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह सबसे उपयुक्त है कि तेलंगाना सारस्वत्तु परिषद ने अशोक तेजा को 'सिनारे पुरस्कार' से सम्मानित किया, जो सिनारे सिनेमा की रचनात्मक भावना की एक नई और अभिनव अभिव्यक्ति हैं।

अविरामम

मानवता पर बड़ी प्रतिबद्धता के साथ नक्का हरिकृष्ण ने वर्ष 2022 में अपनी पहली कविताओं का संकलन 'अविरामम' प्रकाशित किया। इनमें से अधिकांश कविताएँ प्रकाशित हुईं और जनता द्वारा सराही गईं। अविरामम में प्रकाशित कविताओं का एक संग्रह है। यह जन्म देने वाले माता–पिता और उनका मार्गदर्शन करने वाले गुरु को समर्पित है। इन कविताओं में नारीवाद विद्यमान है। कवि ने पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी के रूप में कविताएँ लिखीं। हरिकृष्ण ने देशभक्ति, तेलंगाना संस्कृति, मानवीय संबंधों और मूल्यों पर कविताएँ लिखीं। उन्होंने भ्रष्टाचार पर सवाल उठाया. उन्होंने कोरोना महामारी के प्रसार के संदर्भ में कविता लिखी। उन्होंने कमजोरों के पक्ष में खड़े होकर कलम उठाई। वह निरंतर कविता का अभ्यास कर रहे हैं। अविरामम की कविताओं के संग्रह में लोमड़ी हरिकृष्ण के कोमल हृदय को देखा जा सकता है। उन्होंने काव्य में अलंकारों का प्रयोग किया। शब्द चित्र लगाएँ कविता के प्रारंभ को लेकर वे सावधान थे। वे कविता का नेतृत्व करने में सतर्क थे। अंत में उसने नए तरीकों का प्रयोग किया। हरिकृष्ण ने कई साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लिया। राज्य, राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित संगोष्ठियों में भाग लिया और अपने कार्यों से अपने विचारों को प्रस्तुत किया। एक उभरते हुए, होनहार कवि और लेखक ने दो पुस्तकें प्रकाशित करके

खुद को साबित किया, जिनमें से एक का नाम 'परमर्ष' था, जिसमें शुरुआती तेलंगाना में साहित्यिक संगठनों के प्रयासों का त्याग किया गया था और एक काव्य संकलन 'अविरामम' का नाम था, जिसमें समाज, संस्कृति, मानवता के बारे में उनके गहरे विचारों को दर्शाया गया था। नक्का हरिकृष्णा सिद्दीपेट जिले के मुलुगु मंडल के सिंगननगुडा गाँव से हैं। वह बहनों वाले परिवार में बड़े हैं। उन्होंने तेलुगु साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और जैविक विज्ञान में स्नातक की उपाधि भी प्राप्त की। वर्तमान में हैदराबाद में एक फार्मास्युटिकल एमएनसी में जूनियर एग्जीक्यूटिव के रूप में कार्यरत हैं।

अपने प्रारंभिक जीवन में उन्होंने माध्यमिक विद्यालय की शिक्षा के बाद अपनी शिक्षा बंद कर दी और अपने वित्तीय अस्तित्व के लिए संघर्ष किया। बाद में उन्हें डॉ. बेलमकोंडा संपत कुमार मिले जो उच्च प्राथमिक में उनके शिक्षक थे, उनके मार्गदर्शन और समर्थन से उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी और तेलुगु भाषा में अपनी मास्टर डिग्री पूरी की। तेलंगाना आंदोलन के दौरान उजागर हुई काव्य क्षमता के कारण, श्री हरिकृष्ण ने विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लिया और अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी आवाज उठाई। उनकी कई कविताएँ लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्रों और साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं।

फूलों की वर्षा– 2022

डॉ. कुरेला विट्ठलाचार्य के बारे में उल्लेख–प्रशंसा ''हमारा भारत असाधारण प्रतिभाओं से समृद्ध है''। उनकी रचनात्मकता दूसरों को कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसे ही एक व्यक्ति हैं तेलंगाना के डॉ. कुरेला विट्ठलाचार्य उनकी उम्र 84 वर्ष है। विट्ठलाचार्य इस बात का उदाहरण हैं कि उम्र का कोई मतलब नहीं होता सपनों को पूरा करने के लिए। विट्ठलाचार्य को बचपन से ही एक पुस्तकालय खोलने की इच्छा थी।

"हमारा भारत असाधारण प्रतिभाओं से समृद्ध है''। वो प्रतिभाशाली रचनात्मकता दूसरों को कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। तेलंगाना के डॉ. कुरेला विट्ठलाचार्य ऐसे ही एक व्यक्तित्व हैं। विट्ठलाचार्य गुरु इस बात का उदाहरण हैं कि सपनों को पूरा करने में उम्र का कोई लेना–देना नहीं है। दोस्त! विट्ठलाचार्य की बचपन से ही एक बड़ी लाइब्रेरी खोलने की इच्छा थी। देश को अभी आजादी नहीं मिली है। कुछ परिस्थितियों के कारण बचपन का सपना, सपना ही रह जाता है। समय के साथ विट्ठलाचार्य शिक्षक बन गए। उन्होंने तेलुगु भाषा का गहन अध्ययन किया। इसमें कई रचनात्मक कार्य किए गए। छह साल पहले उन्होंने अपना सपना पूरा करना शुरू कर दिया। अपनी किताबों से एक लाइब्रेरी शुरू की। उन्होंने अपने जीवन भर की कमाई इसमें लगा दी। धीरे–धीरे लोग इसमें जुड़ने और सहयोग करने लगे। यदाद्रिभुवनगिरि जिला रामन्नापेट मंडल (वेल्लांकी में) की इस लाइब्रेरी में लगभग दो

लाख किताबें हैं। विट्ठलाचार्य गुरु का कहना है कि शिक्षा से लेकर कई मामलों में उन्हें जितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, किसी और को नहीं करना चाहिए। आज बड़ी संख्या में छात्रों को इसका लाभ मिलता देखकर उन्हें बहुत खुशी हो रही है। उनके प्रयासों से प्रेरित होकर कई अन्य गाँवों के लोग भी पुस्तकालय बनाने में लगे हुए हैं। पुस्तकें न केवल ज्ञान प्रदान करती हैं बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण भी करती हैं। जीवन को आकार देती हैं। किताबें पढ़ने का शौक बहुत खुशी देता है।

'ये पिल्ललू गोप्पावल्लेला अय्यारंते'

डॉ एस. रघु ने वर्ष 2022 में लेखक 'तंगमणि' की पुस्तक 'ChildrenWho Made It Big' का 'ये पिल्ललू गोप्पावल्लेला अय्यारंते' नाम से तेलुगु में अनुवाद किया है। यह नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक बाल कहानी संग्रह है। इसमें बच्चों के समझने, व्यक्तित्व निर्माण संबंधी विचार, नैतिक मूल्य के संदर्भ में कहानियाँ हैं। आप मौलिक रचनाएँ कम लिखते हैं। साहित्यकारों के लिखे हुए की समीक्षा अधिक करते हैं। आपका सार्थक उददेश्य यह है कि– आलोचना के माध्यम से साहित्य सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत करना। अनुवाद में भी आप का विशेष उल्लेखनीय कार्य है।

वारानरसिम्हाशतकम : यह एक काव्य संग्रह है जिसके कवि शशि शर्मा बोल्लप्रागडाजी हैं। यह पुस्तक आध्यात्मिक पुस्तक है । इसमें कवि ने कुल सौ कविताओं के माध्यम से नरसिम्हा भगवान की आराधना व उनके गुणों का व्याख्यान किया है। वंदना चरण में कवि की भक्ति, दास्यभक्ति के अधीन है। अपने आपको प्रभु का दास बताकर, सदगुणों को अपनाने और सही मार्ग प्रशस्त करने की अभ्यर्थना है। यह पुस्तक सन् 2022 में तपस्वी मनोहरम प्रकाशन, अंकलापल्ली से प्रकाशित है।

जीवितम लो ओकरोजू (जीवित रहते हुए एक दिन): यह एक संपादित कहानी संग्रह है जो 2022 में प्रकाशित हुआ है। इसके संपादक, पी. आर. एस. एस. एस. मूर्ति जी हैं। कुल 26 लेखकों की कहानियाँ इसमें संकलित हैं। प्रत्येक कहानी एक सार्थक प्रश्न पाठक के समक्ष खड़ा करती है। संग्रह की कहानियों में अस्मिता का विशेष महत्व है। ये कहानियाँ सत्पथ की ओर अग्रसर करती हैं तथा जीवन को हितोपयोगी बनाने में कारगर हैं। समय का सदुपयोग न करने वालों का जीवन भ्रामक होता है, समाज के विकास में अपना योगदान न देने वाले लोगों का जीवन व्यर्थ होता है, कहानीकारों का लक्ष्य ही यही है कि जीवित रहते अगर कुछ सत्कर्म न किया तो सार्थकता क्या है? बड़े ही सरल शब्दों में इन्हें शब्दबद्ध किया गया है।

वज्रभारती : यह एक काव्य संकलन है जिसमें कुल 75 कविताएँ हैं। इसके कवि– पी. आर. एस. एस. एस मूर्ति जी हैं। यह काव्य संग्रह देशभक्ति के प्रति लोगों को उत्साहित करने में समर्थ है। आरंभिक कविताओं में भारत माता की वंदना की गई है। दूसरे भाग में वर्तमान समय में हो रही अराजकता और देश को होने वाली क्षति

के बारे में बताया गया है। कुछ कविताओं में. मध्य और निम्नवर्गीय जनता को प्रोत्साहित किया गया है तथा देश के समर्पण हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रेरित किया गया है।

ऐ गुंडे तट्टीना : यह भी एक काव्य संग्रह है जिसमें कुल सौ कविताएँ हैं। इसके कवि पी. आर. एस. एस. एस मूर्ति जी हैं। यह विषय वैविध्यपूर्ण काव्य संग्रह है। प्रत्येक कविता में पाठकों के लिए अज्ञात किसी चीज के प्रति विशेष आस्था को दर्शाते हुए बहुत ही नई प्रवृत्ति के साथ कविताएँ लिखी गई हैं। कुछ कविताओं में महान विभूतियों के जीवन में घटी घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है तो वहीं अन्य कविताओं में राजनेताओं के दायित्व, समाज में विवाह के नए प्रतिमान आदि को स्पष्ट और सरल शब्दों में पिरोया गया है।

मुगिसिना ओंटरि पोराटम (अकेले का संघर्ष) : यह एक लघुकथा संग्रह है। इसे नवंबर 2022 में तेलंगाना पब्लिकेशन, मुसीराबाद से प्रकाशित किया गया है और इसके लेखक हैं – दोरवेटी (चेन्नय्या) जी। इस लघुकथा संग्रह की विशेषता यह है कि– इसमें सहज–सरल शब्दों के माध्यम से कथा की प्रकर्षता को अभिव्यक्ति मिली है। साधारण जीवन की गाथाएँ, दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ और सामाजिक शिष्टाचार तथा पारस्परिक व्यवहार का पाठ पढ़ातीं इस संग्रह की कथाएँ पाठक की जिज्ञासा को आशान्वित करती हैं।

दोस्ताना : यह एक क्लासिक काव्य संग्रह है और इसके रचयिता दोरवेटी (चेन्नय्या) जी हैं। यह काव्य संकलन अक्तूबर 2022 में साहित्यकला भारती शादनगर, रंगारेड्डी जिला से प्रकाशित है। इस काव्य संग्रह को कुल चौदह भागों में वर्गीकृत किया गया है जिसमें कुल 408 कविताएँ शामिल हैं। कविता की केंद्रीयवस्तु हिंदू और मुसलिम की आपसी वैमनस्यता है। इसकी सभी कविताएँ हैदराबाद के ओल्ड सिटी नगर में घटित सच्ची घटना पर आधारित हैं। कवि ने हिंदू और मुसलिम के मध्य उपजे अनावश्यक कारणों को दर्शाया है तथा समाज से इस विद्वेष को समाप्त करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। साथ ही मित्रता की परिभाषा, उसका महत्व, वर्तमान समय में मित्रता की कसौटी, छद्म और अंतरिम मित्रता की सच्चाई को कविता की लड़ी में पिरोकर प्रस्तुत किया है। आज के समय में यह काव्य संग्रह प्रासंगिक और अनुकरणीय है। कवि की दृष्टि में दोस्ती से बढ़कर पुनीत संबंध कोई भी नहीं है। आपकी कविताएँ संबंधों की ऊष्मा को सँजोए रखने में सफल हैं।

पद्माराधना : यह भी दोरवेटी (चेन्नय्या) जी द्वारा विरचित एक खंडकाव्य है जिसमें 43 कविताएँ शामिल हैं। इसे सितंबर 2022 में साहित्यकला भारती शादनगर, रंगारेड्डी जिला से प्रकाशित किया गया है। इसमें कहीं–कहीं लंबी कविताएँ भी हैं। कुछ कविताएँ यथा 'गुरुभ्यो नमः', 'श्री यशस्विनी', 'मुग्ध सौंदर्यवीणा', 'निंगिकी नेलकू पेंडली', 'सैरिका' तथा 'मसकोपाख्यानम' आदि शीर्षक के अनुसार हैं। 'निंगिकी नेलकू

पेंडली' कविता में बड़ा ही सुंदर संदर्भ प्रस्तुत किया गया है। आसमान और धरती का विवाह बताया गया है। संग्रह की सभी कविताएँ एक उद्देश्य और नैतिकता को स्पष्ट करने वाली हैं।

पयनमेचटिकोयी : (कहाँ का गंतव्य है?) अगस्त 2022 में साहित्य रंगीनी संगारेड्डी जिला से प्रकाशित यह पुस्तक एक सामाजिक उपन्यास है। इसके लेखक दोरवेटी (चेन्नय्या) जी हैं। इसमें लेखक ने आतंकवाद को मिटाने और मानवता की नई परिभाषा को प्रस्तुत किया है। साथ ही उपकथा भी चलती रहती है जिसमें हिंदू और मुसलिम के मध्य की बेबुनियाद खाई को पाटने का सार्थक प्रयत्न है । यह उपन्यास आज के समाज की कई विसंगतियों का पर्दाफाश करता है साथ ही 'वसुधैव कुटुंबकम' की परिकल्पना को साकार करता है।

स्पष्ट है कि वर्ष 2022 में तेलुगु साहित्य पर्याप्त समृद्ध रहा। काव्य, कहानी, उपन्यास, पत्रिका आदि विधाओं और क्षेत्र में यहाँ के साहित्यकारों ने अपना विशेष योगदान दिया है।

❑❑❑

11

नेपाली साहित्य



ज्ञानबहादुर छेत्री

नेपाली भाषा में विशेष कार्य। कई पुस्तकों का नेपाली भाषा में अनुवाद। कई साहित्यिक संस्थाओं में मानद सदस्य के रूप में कार्य। 'अवलोकन', 'दुर्गासार', 'प्रभुराम का पाहुना, 'आधाटपरा ठेटना' आदि अनेक भाषाओं में रचनाएँ प्रकाशित। तुलसी कश्यप स्मृति पुरस्कार तथा साहित्य अकादमी के अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

नेपाली भाषा अन्य भारतीय भाषाओं की तरह संस्कृत से उद्‌भूत एक प्राचीन भाषा है। इस भाषा का स्वरूप विश्वजनीन है क्योंकि भारत एवं नेपाल के अलावा इस भाषा में भूटान, म्यांमार और यूरोप–अमेरिका के भी कई देशों में साहित्य का विकास हो रहा है। हाल ही में जगदंबा प्रकाशन से प्रकाशित 'नेपाली साहित्य को बृहत इतिहास' (तीसरा खंड)' में विस्तार से चर्चा की गई है। 'नेपाली भाषा को भारतीय साहित्य अकादेमी ने सन 1975 में मान्यता दी और भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 1992 में अन्तर्भूक्ति मिली। भारतीय साहित्य अकादेमी, भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर), नेशनल बुक ट्रस्ट आदि जैसे सरकारी निकायों से नेपाली भाषा–साहित्य की विकास में अन्य भारतीय भाषाओं के समरूप बढ़ावा मिल रहा है। इसके अतिरिक्त नेपाली साहित्य के चौतरफा विकास के लिए देश के विभिन्न प्रांतों में सरकारी एवं गैर सरकारी तौर पर विभिन्न संस्थाएँ कार्यरत हैं जिनमें सिक्किम अकादमी (सिक्किम सरकार), असम नेपाली साहित्य सभा, दार्जीलिंग साहित्य सम्मेलन, गोर्खा जनपुस्तकालय (खर्साँग), नेपाली साहित्य अध्ययन समिति (कालिम्पोंग), नेपाली साहित्य परिषद (शिलांग), नेपाली साहित्य परिषद (सिक्किम) और नेपाली साहित्य परिषद (मणिपुर) अन्यतम हैं।

इस आलेख में वर्ष 2022 में प्रकाशित नेपाली साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। संबंधित लेखकों से निवेदन है कि वे इस आलेख में छूटे गई पुस्तकों के बारे में हमें सूचित करें ताकि लेखक की प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों में उनका समावेश किया जा सके।

कविता

साहित्य की विभिन्न विधाओं में काव्य सर्जना की अपनी विशिष्ट परंपरा रही हैं। कविता मानव हृदय के भावों और अनुभूतियों की रसमय शाब्दिक अभिव्यंजना है।

वास्तव मे कविता ही दुख के समय की प्रकृत साथी है। हृदय से निःसृत होने के कारण कविता को अभिव्यक्ति का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना जाता है। समकालीन नेपाली साहित्य में बदलते सामाजिक परिदृश्य और नए कालबोध के साथ संरचनात्मक अनुभूतियों से कविता में संवेदनाओं को नए आयाम देते हुए जीवन के यथार्थ सत्यों को समुद्घाटित किया गया है। आज की नेपाली कविता की मुख्यधारा जनोन्मुखी है। आज के कवि परिवेश के प्रति सचेत हैं।

दार्जीलिंग के युवा कवि राजा पुनियानी अपनी विशिष्ट शैली और शिल्पकारिता के लिए जाने जाते हैं। आलोच्य वर्ष 2022 में उनका 'तङसिङ' शीर्षक का कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है। तङसिङ' शब्द किरात मुंधुम से जुड़ी हुई सांस्कृतिक अभिधा है। इस संग्रह की कविताओं में जनजातीय संस्कृति और परिवेश का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। एक नमूना (हिंदी अनुवाद)———

एक दिन
नदी सूख गई
समुद्र सूख गया
सभ्यता सूख गई
इलेक्ट्रॉनिक कचरा जमीन पर तैर रहा था
और
डिजिटल धुएँ से भरा आकाश
आदमी फिर इंतजार करने लगा
प्रोमेथियस को
इस बार
आग नहीं
पानी चुराना था।

(नदी पोर्ट्रेट 8)।

घामको छाता में कवि खड्गबहादुर कौशिक सावधान वाणी सुनाते हैं–

बोल्ने हक कसैको खोस्न पाउँदैनौ
घामलाई छेक्न तिमी सक्दैनौ
जूनलाई छोप्न तिमीले सक्दैनौ
सक्दैनौ परिवर्तनको पाङ्ग्रालाई रोक्न तिमीले।
बाटाको साइनबोर्ड मेटेर तिमीले
कसैलाई बाटो भुलाउन सक्दैनौ।
अब तिमीले हलो दिएर
हाम्रो खेत हडप्न पाउँदैनौ।
जुत्ता देखाएर

हाम्रा खुट्टा बाँध्न पाउँदैनौ
चैतको हुरी देखाएर
हाम्रो बैसाख रोक्न सक्दैनौ।
तिम्रो ढुकुटी भराउन अब
हाम्रो भुँडी रित्याउँन पाउँदैनौ।

(बैसाख रोक्न सक्दैनौ)

इन दिनों ज्यामितीय रंबास आकार में रचित कविता की लोकप्रियता बढती दिखाई दे रही है। आलोच्य वर्ष में वरपिपल नाम के रंबस कविता का संकलन प्रकाशित हुआ जिसमें लगभग अस्सी प्रतिशत रंबस कविता समावेशित हैं। इस संकलन के संपादकद्वय में मिलन बोहारा और देवीचरण सेडाइँ हैं। अर्जुन उप्रेती का सयपत्री नाम का रंबस कविता संग्रह विशेष उल्लेखनीय हैं।

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक विद्‌पति दाहाल को छंद के महाकवि एवं समालोचक के रूप में प्रसिद्‌धि मिली है। नेपाली और संस्कृत भाषा में इनके सात महाकाव्य प्रकाशित हैं। 'कविता–मंजरी' उनका नवीनतम कविता संकलन हैं। इसमें उनकी सत्ताइस कविताएँ संकलित हँ। दाहाल की छंदोबद्‌ध कविताओं में प्रकृतिप्रेम, जातिप्रेम, भाषाप्रेम, राष्ट्रप्रेम और वसुधैव कुटुंबकम की भावना की अभिव्यक्ति मिलती हैं।

रवि चंद्र शर्मा की 'मनको हाउलो', राज के श्रेष्ठ की 'मानव समाजको बस्तीमा', राधा पांडे की 'स्पंदन अतीत' और 'मनका हजार रङ' (दोनों गज़ल संग्रह), लुइस बिष्ट की 'अंतर्भाव' और 'मनोभिराम' (गीत संग्रह), खड्‌गबहादुर कौशिक की 'घामको छाता', धर्मेंद्र उपाध्याय की 'रामसिंह ठकुरीको भायोलिन', दिल ठकुरी की 'स्पंदनका घाउहरू', उदय सुब्बा की 'बदनाम कविता', अनुप शर्मा खतिवडा की 'प्रतीक्षा', अमर बानियाँ लोहोरो की 'अनेक मनको आवाज', पुरुषोत्तम उपाध्याय की 'पातको फिरफिरे', विष्णु निरोला की 'हिमाल बोक्ने रहर', हिरनमयी आचार्य शर्मा की 'प्रश्नचिह्न', मिलन बांतवा संपादित 'भारतीय नेपाली गज़ल संकलन' आदि 2022 वर्ष में प्रकाशित काव्यकृति हैं।

उपन्यास

आलोच्य वर्ष नेपाली आख्यान, विशेष रूप मे उपन्यास विधा के लिए महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय रहा है। नेपाली साहित्य परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष रुद्र पौडेल नेपाली साहित्य के जाने माने निबंधकार, गीतकार और आख्यानकार है। 'कथाकल्प', 'हराएको मान्छे', 'लोककथा'——उनके तीन कहानी संग्रह और 'हराएको मान्छे' शीर्षक का एक उपन्यास प्रकाशित हैं। आलोच्य वर्ष में उनका दूसरा उपन्यास 'भत्किए को घर' प्राप्त हुआ है। इस उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक प्रतीत होता है। पहले से स्वतंत्र सिक्किम का 1975 में भारत में विलय हुआ। इस उपन्यास में लेखक ने एक ओर युग परिवर्तन के साथ मानव समाज में पारिवारिक मूल्यों के अवक्षय और परंपराओं

को दर्शाया है, तो दूसरी ओर अपनी मातृभूमि के गिरते हुए ऐतिहासिक पदचिह्नों को रेखांकित किया है।

'चिंता सल्केको पहाड़' प्रेम प्रधान का चौथा उपन्यास, उनकी नवीनतम कृति है। प्रधान को उनके उपन्यास उदासीन रुखहरू के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला है। दार्जीलिंग में गोर्खालैंड आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखे गए इस नवीनतम उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे समाज में आधुनिक यांत्रिक सभ्यता द्वारा लाए गए परिवर्तनों ने हमारी सोच और अनुभव में विसंगति ला दी है और हमारी हार्दिकता को क्षति पहुँचाई है। इस उपन्यास में देखने को मिलता है कि स्त्री वर्ग के प्रति पुरुषों की नकारात्मक सोच और अत्याचार के विरोध में नारी पात्रों ने नारी मुक्ति की आवाज बुलंद की हैं। दार्जीलिंग की आज की स्थिति बहुत ही दयनीय है और विशेषकर युवाओं को निराशा के कारण विदेशों में पलायन करना पड़ता है। इसका मार्मिक वर्णन इस उपन्यास में मिलता है। गजेंद्र, विष्णुमाया, अनुराग, देवराज, पल्पसा, संध्या, मलीना, मंदाकिनी आदि पात्रों के जीवन के माध्यम से उपन्यासकार ने दार्जीलिंग के समाज का चित्रण किया है। इन पात्रों ने आज की जटिल व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक पीड़ाओं को अनुभव किया है।

इस उपन्यास में गजेंद्र उम्र के जख्मों को सहता है। वह अपने घर और परिवार पर ध्यान केंद्रित करते हुए देश, समाज और जाति के प्रति उदासीन होता है। इसी तरह बचपन से ही मुक्ति चाहने वाले, अपनी भाषा–साहित्य में रुचि न रखने वाले, घर के मोह माया से दूर, शराबी और व्यभिचारी अनुराग की जीवन शैली भी अपने आप में निराली है। नेकदिल देवराज, ठंडे पहाड़ में अपने भविष्य को अंधकारमय देखकर अरब को जाता है। पहाड़ में भड़की आंदोलन की आग अब सुलग रही है, परंतु अंदर की आग मे पहाड़ अब भी तड़प रहा है। दार्जीलिंग पहाड़ प्रकाश और शांति की प्रतीक्षा कर रहा है, इस बात को उपन्यास में व्यक्त किया गया है। इस उपन्यास में फ्रायडियन यौन मनोविज्ञान, अस्तित्ववादी विचार और उत्तर आधुनिकतावाद, नारीवादी प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं और यह पर्यावरणीय सोच को भी समेटे हुए है।

असम के लेखक रण काले भयवादी लेखक के रूप में सुपरिचित है। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित उनका रैथाने नाम का उपन्यास खुब चर्चित हुआ। इस उपन्यास में पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य में युगों से रहने वाली गोरखा जाति की कहानियों और त्रासदियों का बखूबी चित्रण किया गया है। इसके अलावा, भारत के स्वतंत्रता संग्राम और स्वाधीन राष्ट्र के निर्माण में उनका योगदान भी प्रतिबिंबित हुआ है। असाम का सुंदर प्राकृतिक परिवेश, सांस्कृतिक परंपराएँ आदि भी इस उपन्यास में देखे जा सकते हैं। इसे एक सफल सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास माना जा सकता है।

दुर्गादत्त गौतम की 'महीयसी' भी एक उल्लेखनीय उपन्यास है। वस्तुतः यह एक नारी की सफल जीवन की कहानी है। पितृसत्तात्मक समाज में नारी का उत्थान

आसान नहीं है। परंतु प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख पात्रा अपने निरंतर प्रयास और लगनशीलता के कारण उच्च शिक्षा हासिल करती है और समाज तथा राष्ट्र की सेवा में समर्पित होती हैं। इस तरह वह पिछड़े वर्ग के, विशेषकर छात्राओं में एक अनुकरणीय प्रेरणा की स्रोत बनती हैं। इस उपन्यास को सफलता के एक दृष्टांत के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विष्णु शर्मा का 'उपाने का घाम छायाँ' सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास है। इस उपन्यास में मानव जीवन को दुख और सुख के संगम के रूप में देखा गया है। उपन्यास में प्रकाश्य जातीय एवं क्षेत्रीय संस्कृति इसकी एक पहचान है। डेरिडीय विनिर्माण के आधार पर रचित 'गुलिभरको यात्रामा गरुड' एक रोचक उपन्यास है, इसके लेखक है मणिकुमार प्रधान।

कहानी

लोककथा मानव समूह की उस साझी अभिव्यक्ति को कहते हैं जो कथाओं के विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती है। लोककथाएँ हमें परंपरागत वसीयत के रूप में प्राप्त होती है। दादा–दादी एवं नाना–नानी के पास बैठकर बचपन में कहानियाँ सुनी जाती हैँ। इनका निर्माण कब, कहाँ, कैसे और किसके द्वारा हुआ, यह बताना मुश्किल ही नहीं असंभव है। नेपाली भाषा में भी लोककथा का खजाना है परंतु बहुत कम ही लोककथाएँ संकलित हुई है। लोककथा के अन्वेषक पुष्प शर्मा ने इस दिशा में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनका गोलसिमल लोककथाओं का संकलन है। कालेबुङ के उपमा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस संकलन में कुल चौदह लोककथा संकलित हैं। शर्मा द्वारा संकलित लोककथाओं के शीर्षक हैं–––––'ओर्ल न ओर्ल सुनकेसरी रानी', 'स्वर्ग जाने सिंढी', 'सुम्निमा र पारुहाङ', 'राँगीत र राँगनु', 'उत्तिस र गुराँसको प्रेम कथा', 'गोल सिमल, आतेकको बाँसुरीको धुन', 'पांडो किङको मोहभंग', 'सुनौलो रेशमी मजेत्रो', 'आँकको रुखको जन्म', 'बिहेको प्रस्ताव', 'पक्षी पोशाकधारी राजकुमार'–1, 'पक्षी पोशाकधारी राजकुमार–2', 'बुढो बाबु फाल्ने थोत्रे डोको'।

'समावेशी कथाहरू' शांति छेत्री का कहानी संग्रह में 'जोखाना', 'लगन', 'परदेशी', 'मुमा र भाभी', 'आनो मर्जी', 'पीकु, बौलाही', 'बाबै र जमाना', 'रमता जोगी', 'परिवर्तन', 'त्यो एक दिन', 'मायाको डोरी', 'संयोग', 'चुकुल', 'दौंतेरी', 'महाष्टमी', 'इंपेरियक हाउस', 'हिसाप मिलेन', 'हरहर गंगे', कुल मिलाकर इक्कीस कहानियाँ संकलित हैं। शांति छेत्री की कहानियों में पात्रों के भाग्य से अधिक कर्म को महत्व दिया गया है। कहानियों में 'दृष्टांत हैं कि यदि आप कर्म करते हैं तो भाग्य आपका साथ देगा। कहानी की भाषा सरल है क्योंकि यह मानव जीवन और स्थानीय समाज से संबंधित है। पात्रों की मनःस्थिति का गंभीरता से अध्ययन करके जीवन के सत्य को उद्घाटित करने के लिए कथाकार के इस प्रयास की सराहना की जानी चाहिए।

नेपाली लेखकों में भविलाल लामिछाने की विशिष्ट पहचान है। वर्ष 2022 में उनका अर्धासत्य नाम का कहानी संकलन प्रकाशित हुआ जिसका प्रकाशन बुक–ऑन्ट

(सालबारी, सिलीगुड़ी) द्वारा हुआ है। उनकी कहानियों की कथावस्तु विभिन्न विषयों पर लिखी गई है। 'एउटा मोडपछि', 'बंधन', 'रित्तो आकाश', 'युद्ध', 'राम नाम सत्य हो', 'यो कथा होइन', 'निहारिका', 'पहाडपछिको आवाज', 'एउटा खंडहर अतीत' ——— पुस्तक के 274 पृष्ठों में केवल नौ लंबी लंबी कहानियाँ है। इस संकलन की हर कहानी उच्चकोटि की है।

के एन शर्मा की 'नेप्टिएको' आकाश में ग्यारह आधुनिक कहानी और सात लोककथा, कुल मिलाकर अठारह कहानियाँ संकलित हैं। आकाश चपटा नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि मानवता, सभ्यता, विचारधारा असीम और निराकार है। इसे चपटा कहना इसे विकृत करना है। शर्मा की अभिधा ने आज की कई बातों की ओर इशारा किया है। यह एक सुंदर कहानी है जो सिक्किम की सामाजिक–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाती है। 'जनसेवक' शीर्षक कहानी में राजनीति का प्रभाव दिखाया गया है, जबकि 'दीर्घसूत्री' व्यक्ति मनोविज्ञान दर्शानेवाली सामाजिक कहानी है। मोलतोल शोषण की कहानी है। नाटककार, कहानीकार एवं समालोचक के रूप में सुपरिचित युवा स्रष्टा कृष्णनील कार्की जन्मदिनको उपहार लेकर आए हैं। उनकी इस पुस्तक में सोलह कहानियाँ संकलित है। प्रेम, प्रकृति, क्षेत्रीयता और आधुनिक जीवन की जटिलता इनकी कहानियों की कथावस्तु है। इंदिरा गौतम की उमंग में साठ से भी अधिक छोटे–छोटे प्रसंगों को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इंदिरा गौतम की भाषा सरल और रोचक है। फानुस साया की कहानियों का संकलन एली और सतीश रसाइली की पूर्णिमा अनि ओइलिएको सूर्यमुखी चर्चित हुए हैं।

निबंध

निबंध का क्षेत्र सबसे विस्तृत, विशालतम होता है। यह विचार को सीधे संप्रेषित करने की सर्वोत्तम विधा है। जीवन और जगत से जुड़ा हुआ दर्शन, विज्ञान आदि अनेक विषयों की चर्चा निबंध–प्रबंध के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। इसीलिए इस विधा को ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद और सबसे उपयोगी विधा माना जाता है। आलोच्य वर्ष 2022 में निबंध विधा में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें कुछ ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है–

नेपाली भाषा–साहित्य के आधिकारिक विद्वान गोकुल सिन्हा कोशकार, निबंधकार और समालोचक हैं। सिन्हा का 'भाषा भास्कर' नेपाली भाषा विषय का एक बहुमूल्य शोधपरक ग्रंथ है। इस ग्रंथ में समावेशित भारतमा भाषा अध्ययन परंपरा और नेपाली, नेपाली र बंगाली भाषामा अंतस्संबंध, नेपाली और हिंदी भाषामा लिंग–व्यवस्था, व्याकरणकै कुरारू नेपालीमा लिंग, केही नेपाली निपातहरू, केही नेपाली उपसर्गहरू, भाषा जनगणना र नीति, नेपाली भाषा संविधानको संदर्भमा, शुभेच्छा पनि समाचार पनि, भाषाले मान्यता पायो मात्रै हैन यसका साथै पायौं अधिकार र कर्तव्य पनि, भारतमा नेपाली भाषाको स्वरूप, भारतीय परिप्रेक्षमा नेपाली भाषाको समस्या समाधानको खोज,

वर्तमान भाषा प्रयोग र भाषा विमर्श, दार्जीलिङको भाषिक समूदायमा भाषिक संक्रमण, 'गिरि' र 'गिरी', आइ–बी राईको भाषा–दर्शन, सारस्वत जन बिम्स –––कुल अठारह निबंधों में हरेक निबंध अध्येता और अन्वेषकों के लिए उपयोगी हैं।

'पूर्वोत्तर नेपाली निबंध संचयन' साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ के संपादक हैं ज्ञानबहादुर छेत्री। इस निबंध संचयन में पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य से तीस, सिक्किम से चौदह, मणिपुर से चार, मेघालय से चार, मिजोरम से तीन, अरुणाचल प्रदेश और त्रिपुरा से एक–एक–– कुल मिलाकर साठ निबंध संकलित हैं। संपादकीय लेख और निबंधकारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत निबंध संचयन का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिन में निबंध विषय पर विस्तारित जानकारी एवं निबंधकारों के बारे मे संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

इमानसिंह चेमजोङ (1904–1975) किराँत भाषा–साहित्य–संस्कृति के मूर्धन्य अन्वेषक, इतिहासकार एवं लेखक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने नेपाली, अंग्रेजी एवं किराती भाषा में अनेक ग्रंथों के साथ शब्दकोश का भी प्रकाशन किया है। किराँत इतिहास र संस्कृति उनका 'हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ किराती पिपुल' नामक अंग्रेजी में लिखित ग्रंथ का शेरबहादुर इङनाम पापो लिंबु द्वारा नेपाली भाषा में अनुवादित ग्रंथ का नवीनतम संस्करण है। इमानसिंह चेमजोङ का मूल ग्रंथ सन 1948 में ही प्रकाशित हुआ था परंतु कॉपी उपलब्ध न होने के कारण 'किराँत धर्म तथा साहित्य उत्थान संघ असम' और इसके तेजपुर–लोक्रा शाखा द्वारा नवीन संस्करण प्रकाशित हुआ है। छह अध्यायों में विभाजित जनजातीय पहिचान और गरिमा को दर्शानेवाला यह एक बहुत ही मूल्यवान ग्रंथ है। इस ग्रंथ का लोकार्पण पहली जनवरी 2023 को तेजपुर अमोलापाम मनबहादुर सुब्बा के प्रांगण मे आयोजित सभा में ज्ञानबहादुर छेत्री के हाथों से संपन्न हुआ।

साहित्य अकादेमी लगायत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित स्रष्टा छविलाल उपाध्याय का तीसवाँ पुस्तक 'अनुभवका तीसौं पाइला' इस वर्ष प्रकाशित हुआ। उपाध्याय की इस पुस्तक में उनके ग्यारह निबंधो में पाँच आलोचनात्मक, तीन भाषा संबंधित और तीन संस्मरणात्मक निबंध हैं। 'कोरोनाकालीन भारतेली नेपाली निबंध'–निबंध विधा का सामूहिक संकलन है। इस संकलन में कोरोना काल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लेखकों द्वारा रचित बीस निबंध समाविष्ट किए गए हैं। इस संकलन के संपादकद्य कृष्णनील कार्की और रुद्र बराल हैं। ऑनलाइन साहित्य र भारतेली स्रष्टावार्ता अंतर्वार्ता का संकलन है। इस संकलन में भारत कें तीस नवीन–प्रवीण साहित्यकारों की अंतर्वार्ता प्रकाशित की गई है जिसके संकलक एवं प्रस्तोता दीपक सुवेदी हैं।

'जीवन परिधिका अनुभूतिहरू' रेवतीमोहन तिमसिना का निबंध संकलन है। इस संकलन में तिमसिना द्वारा संस्मरण, जीवनी, नारी, संस्कृति आदि विभिन्न विषय पर रचित ग्यारह निबंध प्रकाशित हुए हैं। मणिपुर के साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार

से सम्मानित लेखक भवानी अधिकारी एक सफल निबंधकार हैं। इस वर्ष उनका निबंध संकलन प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'उन्मुक्त उड़ान'। इस ग्रंथ में लेखक के इक्कीस निबंध संकलित पाए जाते है। रेवतीरमण सापकोटा का 'वनस्पति यात्रा' भी आलोच्य वर्ष का एक उल्लेखयोग्य निबंध संकलन है। सापकोटा की इस पुस्तक में प्रथम पुरुष शैली में रचित निबंधों में हमारे जीवन की उपयोगी वनस्पतियाँ अपनी उपयोगिता एवं विशेषता को वर्णित करती हैं।

आलोच्य वर्ष नेपाली साहित्य में इसलिए भी विशेष महत्व का माना जा रहा है क्योंकि दशक भर की अपेक्षा के बाद इसी वर्ष 'ब्रह्मपुत्र त्रिभाषी शब्दकोश' प्रकाश में आया। आइपीए युक्त यह भारत से प्रकाशित पहला नेपाली शब्दकोश है। इस शब्दकोश में मूल नेपाली शब्दों के अर्थ नेपाली, असमिया और अंग्रेजी भाषा में दिए गए हैं। इसका प्रकाशन असम सरकार की संस्था आबिलेक (आनंदराम बरुवा भाषा–कला–संस्कृति संस्थान, उत्तर गुवाहाटी) से हुआ है। इसके संपादक मंडल में संपादक खगेन शर्मा, संयुक्त संपादक अंञजन बाँसकोटा–ज्ञानबहादुर छेत्री, सह संपादक संजीव उपाध्याय है।

'नेपाली साहित्य का एक शिखर पुरुषः पद्मश्री सानु लामा' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित महत्वपूर्ण एवं अवश्य पठनीय ग्रंथ है। वस्तुत यह एक अभिनंदन ग्रंथ है। इस बृहत ग्रंथ में नेपाली साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक सानु लामा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देश–विदेश के विद्वान लेखकों ने विभिन्न दृष्टि से टटोला परोखा है। इसके संपादक मुक्तिप्रसाद उपाध्याय हैं। उसी तरह किशन प्रधान द्वारा संपादित 'अर्जुन प्रधान अभिनंदन ग्रंथ' आलोच्य वर्ष का उल्लेख योग्य ग्रंथ है।

'भारतीय नेपाली भाषामा वर्तनीको मानकीकरण' (संपादक चंद्रकुमार राई), 'महानंद पौड्याल रचना संचयन' (संपादक नवीन पौडेल), 'रूपनारायण सिंहका संपूर्ण रचना', 'अच्छा राई रसिक रचनावली' (संपादकत्रय विजयकुमार राई, चंद्र शर्मा, सुजाता रानी राई), 'स्मरणभित्र शिवकुमार राई' (संपादक ग्याल्पो लामा, देविका मंग्राती), 'रामकृष्ण शर्मा रचना संचयन' (संपादक इंद्रबहादुर छेत्री) आदि बृहत् ग्रंथों का प्रकाशन इस वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है।

यात्रा साहित्य

इन दिनों अलग पहचान बनाकर यात्रा साहित्य का विकास हो रहा है। नेपाली भाषा में यात्रा साहित्य में दो लेखकों को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिल चुका है।

साहित्य अकादमी नेपाली परामर्श समिति के पूर्व सदस्य ज्ञानबहादुर छेत्री का 'मेरो न्युजिल्यान्ड यात्रा' उनका विदेश भ्रमण का दूसरा ग्रंथ है। प्रस्तुत ग्रंथ में लेखक छेत्री ने उल्लेख किया है कि ग्लोबेल भुटानिज लिटरेरी अर्गेनाइजेशन (GBLO) के चतुर्थ विश्व महासम्मेलन में योगदान हेतु वे 2019 की दिसंबर में न्यूजीलैंड पहुँचे थे।

तीन दिवसीय इस महासम्मेलन के विवरण के साथ इस पुस्तक में न्यूजीलैंड देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं आदिवासी माउरी जनगोष्ठी की सांस्कृतिक परंपरा के साथ उस देश के भौतिक विकास की झाँकी भी प्रस्तुत की है। पुस्तक में उस देश की गतिविधियों को पर्यावरण की दृष्टि से परखने की कोशिश की गई है। इस ग्रंथ में पिछले नब्बे के दशक में भूटान से एक लाख नेपालीभाषी भूटानी नागरिकों के विताडन और यूरोप–अमेरिका–ओसेनिया के विकसित देशों में उनकी पुनर्संस्थापन का जिक्र किया है। जन्मभूमि से विताडित होना कितना दर्दनाक होता है यह बीरबहादुर की आत्महत्या की कहानी से पता चलता है। संस्कृति के विलोप से उत्पन्न पहचान का संकट सबसे बड़ा समस्या बनकर सामने आती है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी नेपाली मूल के लोग मातृभाषा के संरक्षण और विकास के लिए काम कर रहे हैं। ग्रंथ में संयोजित यात्रा साहित्य और नेपाली यात्रा साहित्य का परिचयात्मक विवरण अन्वेषकों और साहित्य के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

नाटक

नाटक साहित्यिक कलाकृति की प्रस्तुति होता है जिसके परिणामस्वरुप जीवन के विविध पक्षों और विविध समस्याओं का प्रस्तुतिकरण नाटककार का मुख्य उद्देश्य होता है ताकि नैतिक मूल्यों और जीवनादर्शों का स्थापना हो सके। आलोच्य वर्ष नेपाली नाटक के लिए शुभ प्रतीत होता है। नाटक का क्षेत्र विस्तृत, व्यापक एवं बहुआयामी है जिसकी अनेक संभावनाएं हैं। 'साहित्य का श्रव्य र दृश्य दुइ' स्थूल भागों में नाटक दृश्यात्मक है। नाटककार, रंगकर्मी और दर्शक को लेकर तीन पक्षों के संबंध से नाटक का स्वरूप त्रिआयामिक होता है। इसीलिए नाटक को साहित्य की सबसे प्रभावशाली एवं जनप्रिय विधा माना जाता है। परंतु दुख की बात यह है कि लेखक की कोशिश के बावजूद इस वर्ष प्रकाशित नाटक की केवल एक पुस्तक प्राप्त हो सकी, वह है कृष्ण प्रधान का सामाजिक नाटक 'नाङ्गेली'।

समालोचना

समालोचना विधा में इस वर्ष कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुए । नए समालोचकों का उभरकर आना इस विधा के लिए एक शुभ लक्षण है। असम प्रांत से रुद्र बराल, पूर्ण कुमार शर्मा, कृष्णनील कार्की, झर्ना मिश्र भट्टराई आदि लेखकों की समालोचना पुस्तकों उल्लेखनीय है।

गोकुल सिन्हा नेपाली साहित्य के एक जाने–माने समालोचक एवं कोशकार हैं। 'ज्ञ–देशि अ–सम्म' उनका नवीनतम खोजपरक समालोचना ग्रंथ है। आलोच्य ग्रंथ में नेपाली साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकारों में ज्ञानदिल दास, गंगाप्रसाद प्रधान, दिलुसिंह राई, पारसमणि प्रधान, रूपनारायण सिंह, अच्छाराई रसिक, अगमसिंह गिरी, शिवकुमार राई, रामकृष्ण शर्मा, देवप्रकाश राई, बद्रीनारायण प्रधान, इंद्रबहादुर राई, भाइचंद्र प्रधान,

राजनारायण प्रधान, लक्खीदेवी सुंदास, कुमार प्रधान, रामलाल अधिकारी, असित राई कुल मिलाकर अठारह साहित्यकारों की लेखकीय विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए समीक्षा की गई है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता कवि के रूप में ख्यातिप्राप्त मनप्रसाद सुब्बा का समालोचना ग्रंथ 'काव्यास्था' 2022 वर्ष में प्रकाशित हुआ है। तीन खंडों में विभाजित इस पुस्तक के 'उत्तरार्ध' में आठ, 'पूर्वार्ध' में सात और 'अतिरिक्त' खंड में एक ––– कुल मिलाकर सोलह समीक्षात्मक लेख समाविष्ट किए गए है। लेखों में कवि बैरागी काइँला, अविनाश श्रेष्ठ, सुधा एम. राई, उपेंद्र सुब्बा, दिनेश अधिकारी, मोहन ठकुरी, गुमानसिंह चामलिङ, अगमसिंङ गिरी, छविलाल उपाध्याय आदि स्रष्टा के काव्यिकता के कुछ पक्षों की सैद्धांतिक एवं स्वतंत्र वैचारिक ढंग से समीक्षा की गई हैं। 'कविताकै प्रसंगमा' शीर्षक लेख में कविता विषय पर लेखक ने अपने विचार व्यक्त किया हैं जो मननयोग्य हैं।

'तुलसीराम शर्मा कश्यप व्यक्तित्व' एवं कृतित्व आलोच्य वर्ष में प्रकाशित एक अनमोल ग्रंथ है। इस ग्रंथ में नेपाली साहित्य के एक पुरोधा साहित्य स्रष्टा महाकवि तुलसीराम शर्मा कश्यप (1939–1998) के बहुमुखी व्यक्तित्व का विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है। सिक्किम सरकार के मंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष रह चुके तुलसीराम शर्मा कश्यप को उनके आमा महाकाव्य के लिए सन 1990 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनकी स्मृति में हर साल सर्वभारतीय स्तर पर जुरी द्वारा उच्च विवेचित ग्रंथ के लेखक को नेपाली साहित्य परिषद, सिक्किम के आयोजित अपने सभागार में तुलसी कश्यप स्मृति प्रतिष्ठान द्वारा प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्र और नकद इक्यावन हजार की राशि पुरस्कार के रूप में प्रदान की जाती है।

उल्लेखित ग्रंथ में 'तुलसीराम शर्मा कश्यप की जीवनी', उनके रचित 'जन्मभूमि' (महाकाव्य), 'आमा' (महाकाव्य), 'मंथन' (महाकाव्य), 'कला कमल' (खंडकाव्य), 'अनुराग' (खंडकाव्य), 'ऋतुराग' (खंडकाव्य), 'आँकुरा' (कविता संग्रह), 'संसार यस्तै रहेछ' (कहानी संग्रह), 'तस्वीर' (कहानी संग्रह) 'कल्पना' (निबंध संकलन), 'संकल्प' (उपन्यास), 'सिक्किम हिजोदेखि आजसम्म' (इतिहास), और फुटकर 'कथा टाउके' पर प्रकाश डालते हुए पुस्तकों का समूचित मूल्यांकन किया गया है। नेपाली समालोचना विधा में यह एक महत्वपूर्ण संयोजन है। इस ग्रंथ के लेखक हैं टीकाराम पराजुली, प्रकाशक जनपक्ष प्रकाशन, गांतोक। 'सिक्किममा नेपाली कथाको' अध्ययन शीर्षक के ग्रंथ में सिक्किम राज्य में नेपाली कहानी साहित्य के विकास के विभिन्न चरण, प्रवृत्ति एवं विशेषता को दर्शाता है। इस शोधपरक ग्रंथ के लेखक है राजेंद्र भंडारी।

'निपठनमा सुकरातको डायरी' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित समालोचना विधा का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ के लेखक है ज्ञानबहादुर छेत्री। प्रस्तुत ग्रंथ में समालोचक छेत्री ने नेपाली साहित्य के ख्यातिप्राप्त लेखक गोविंदराज भट्टराई के

उत्तरआधुनिक उपन्यास 'सुकरातको डायरी' की कथावस्तु पर प्रकाश डालते हुए एवं विशेषताओं को दर्शाते हुए उपन्यास का मूल्यांकन किया है। भट्टराई के उपन्यास में उल्लेखित दो शताधिक विश्वख्यात ग्रंथों में से कुछ चयनित ग्रंथों का परिचयात्मक विवरण के साथ उत्तरआधुनिक उपन्यास संदर्भ में विधा भंजन, मेटानोभेल, एन्टिनोभेल, जादुइ यथार्थवाद, विनिर्माणवाद, निशेषण सिद्धांत, परिवृत्तीय साहित्य जैसे उपन्यास के नवीनतम तत्वों की चर्चा इस ग्रंथ की विशेषता है।

कवि के रूप में सुपरिचत रुद्र बराल समालोचना विधा में भी रुचि रखते हैं। इस वर्ष उनका समालोचना विधा का ग्रंथ प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'काव्य सिर्जनाको कसी'। इस ग्रंथ में समालोचक बराल ने नवसापकोटा का 'युक्लिप्टस आउने पीढीलाई आशीर्वाद', पुजा उपाध्याय का 'असमर्थ सहर', बिलोक शर्मा का 'समयाभास', अनुपमा कटेल का 'शब्दहरू मेरा घाम हुन', कमल भूसाल का 'क्रांतिको क्षितिज खोज्दै', नैना अधिकारी का 'घात प्रतिघातका उदगारहरू', विनोद रसाइली का 'आगोको ठिही', नीलिमा आचार्य का 'परिवर्तन', कमल शर्मा का 'समयका रातहरूः समयका समयहरू', बिमला जोशी प्रधान का 'ऐनाभित्र जिंदगीको रङ्ग' और प्रदीप शर्मा का 'मलाई नसोध मेरो परिचय' ——— कुल ग्यारह कविता संग्रहों की समीक्षा को प्रस्तुत किया है। इस में ज्यादातर नवीन कवियों की काव्यकृति हैं। काव्य सर्जना में नवीन कवियों को उन्होंने प्रोत्साहित किया है।

असम नेपाली नाट्य सम्मेलन के महासचिव पूर्णकुमार शर्मा साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित लेखक हैं। 2022 वर्ष में प्रकाशित 'साहित्य समीक्षा गुच्छ' उनका पहला समालोचना ग्रंथ है। इस ग्रंथ में विभिन्न विधा की कुल तेइस साहित्य कृतिओं की समीक्षा प्रस्तुत की गई हैं। इस वर्ष प्रकाशित समालोचना विधा के अन्य पुस्तक हैं———— प्रेम गुरुङ की 'कृतिहरूको आयतन', ज्ञान सुतार की 'सिला', शरत कुमार छेत्री की 'प्रतिक्रिया', जेके बराइली की 'केही अध्ययन केही मंथन' आदि।

बाल साहित्य

पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग–कालिम्पोंग और सिक्किम को छोड़कर भारत के अन्य राज्यों में नेपाली माध्यम में पठनपाठन की सुविधा नहीं है। इसीलिए नेपाली भाषा में बाल साहित्य का विकास तुलनात्मक रूप में धीमा है। इस वर्ष रत्न लक्सम सुब्बा का बाल तरंग और लीला निरोला रचित बाल काव्यकुंज —— बाल साहित्य की केवल दो पुस्तक का प्राप्त होना चिंता की बात है।

विविध साहित्य

विविध विषयों पर सामूहिक संकलन के रूप मे प्रकाशित ग्रंथों और पत्र–पत्रिकाओं मे भी स्तरीय साहित्य का भंडार होता है। 2022 मे प्रकाशित कुछ उल्लेख्य पुस्तकें, पत्रिकाएँ, स्मृतिग्रंथ––

1. मादल (नेपाली साहित्य परिषद, शिलांग का स्वर्णजयंती विशेषांक) – संपादक नरबहादुर राई।

2. मध्यमार्ग (शोध विशेषांक) संपादक नवीन पौडेल।

3. अवलोकन (वर्ष 8, अंक 6 भारतीय नेपाली कथा विशेषांक, डुवर्स) संपादक अबीर खालिङ।

4. परदेशी (नरबहादुर दाहाल विशेषांक) संपादक नवीन पौडेल।

5. अभिव्यक्ति पत्रिका, अङ्क 43 (दुलियाजान) संपादक बालकृष्ण उपाध्याय।

6. शतायु पुरुष चंद्रमोहन कार्की (अभिनंदन ग्रंथ) संपादक लक्ष्मण अधिकारी।

7. हरिप्रसाद खनाल स्मृतिग्रंथ, संपादक डंबर दाहाल।

8. मधानी (भागोप अधिवेशन स्मृतिग्रंथ, कोकराझार) संपादक चिदानंद दाहाल।

9. श्रद्धांजली (208वाँ भानु जयंती, दुलियाजान नेपाली समाज) संपादक धनबहादुर खँडका।

10. चिन्हारी अङ्क 20 (भाषा मान्यता दिवस, दुलियाजान नेपाली समाज) संपादक धनबहादुर खँडका।

11. कमल–स्मृति (स्मृतिग्रंथ) संपादक प्रकाश प्रधान।

12. पानस (अङ्क 13, 2022) संपादक कमल सेडाई।

13. प्रभात (अखिल असम गोरखा छात्र संघ, शोणितपुर जिला) संपादक निर्मल निरोला।

14. साहित्य संगम (अनेसास, उदालगुडी जिला का मुखपत्र) संपादक तिलबहादुर रेग्मी।

15. भानु स्मारिका (सिक्किम) प्रधान संपादक रुद्र पौड्याल।

16. स्रष्टा शेरमान (स्मृतिग्रंथ) मुख्य संपादक देवी प्रसाद अधिकारी।

17. मीमलाल सापकोटा अभिनंदन ग्रंथ, संपादक चंद्र शर्मा।

18. अक्षर अभिलेखभित्र मणि खवास, संपादक सुकराज दियाली।

19. फलाहारी एक असाधारण व्यक्तित्व, संपादक नीलम न्यौपाने।

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2022

केबी नेपाली– साइनो (नाटक)।

बाल साहित्य– मीना सुब्बा कोपिलाका रङहरू (कविता संग्रह)।

युवा पुरस्कार– रोशन राई चोट देशको अनुहार (कविता संग्रह) ।

अनुवाद– पूर्ण कुमार शर्मा शांतनुकुलनंदन (असमिया उपन्यास)।

समग्र में, नेपाली भाषा के संदर्भ में वर्ष 2022 को संतोषजनक माना जा सकता है। ब्रह्मपुत्र त्रिभाषी शब्दकोश का प्रकाशन इस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। नाटक और बाल साहित्य पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

❑❑❑

12

पंजाबी साहित्य



फूलचंद मानव

हिंदी और पंजाबी में अनेक रचनाओं का अनुवाद। 'एक ही जगह', 'एक गीत मौसम', कमजोर कठोर सपने' कविता संग्रह प्रकाशित। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'सौहार्द सम्मान' से समादृत। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

विश्व साहित्य और भारतीय साहित्य में कहीं न कहीं पंजाबी साहित्य की गूँज इस साल भी बनी रही है। साल 2022 के पंजाबी साहित्य का अवलोकन करें तो कुछ नए मुद्दे, विचारधाराएँ, आंदोलन, उपलब्धियाँ और दुर्घटनाएँ भी सामने आ जाती हैं। भारतीय भाषाओं में पंजाबी भाषा का साहित्य अलग पहचान इसलिए बना पाया है कि पंजाबी की कृतियाँ हिंदी और अंग्रेजी माध्यम से अन्यान्य भाषाओं में अनूदित होकर पसंद की जा रही हैं, छप रही हैं और अच्छी संख्या में उनकी बिक्री भी हो रही है। विचाराधीन साल 2022 में हमारी तीन पीढ़ियाँ साहित्य में सक्रिय मिलती हैं। अखबार, पत्रिकाएँ, मंच, सेमिनार, विश्वविद्यालय, दूरदर्शन और रेडियो ही नहीं, अन्य कई माध्यमों और मंचों से भी पंजाबी साहित्य का बोलबाला समाज में, देश में बना रहा है। प्रेम और सौहार्द के स्वर इसमें हावी रहे हैं। आज के मनुष्य का आंतरिक द्वंद्व उसका टूटना–बिखरना, संघर्ष और जोखिम, कई तरह से पंजाबी कृतियों में सामने आया है।

उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, आलोचना, संपादकीय, निबंध, रेखाचित्र, डायरी, आत्मकथा और जीवनी की तरह अन्य जितनी भी साहित्यिक विधाएँ पंजाबी में हैं, किसी भी भारतीय भाषा से टक्कर लेती जान पड़ती हैं। दैनिक पत्रकारिता में रविवार को ही नहीं, सप्ताह के दिनों में भी एक–दो परिशिष्ट रंगीन, साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक गतिविधियों को उभारकर दिखाने वाले पंजाबी समाचार पत्रों में सामने आते रहे हैं। जालंधर, चंडीगढ़, पटियाला के साथ अन्य क्षेत्रों से पंजाबी अखबारों के एडिशन निकलते आए हैं और इनकी प्रसार संख्या में भी अपनी होड़ के साथ इजाफा हुआ है। दैनिक पंजाबी ट्रिब्यून, अजीत, जगबाणी, पंजाबी जागरण, नवां जमाना, देस सेवक या ऐसे ही अन्य नाम है, जिन्होंने अखबारों की दुनिया में अपना स्वामित्व कायम किया है। ये अखबार, दुनिया, देश, प्रांत के साथ नगर, देहात, गाँव, गली मुहल्ले तक की खबरें और तस्वीरें छापने में, एक से एक आगे रहे हैं। इसी बहाने

यहाँ का साहित्य, हलचल और साहित्यिक प्रतियोगिताएँ समाज तक जा रही हैं। छात्र–छात्राएँ भी इनसे लाभान्वित होते नजर आ रहे हैं।

पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़, पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला, गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर, दिल्ली यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र या ऐसी अन्य यूनिवर्सिटियां हैं, जहाँ विषय के तौर पर पंजाबी की पढ़ाई और शोधकार्य गतिशील है। आज छोटे–छोटे अनेक संस्थानों/अकादमियों ने अपने कॉलेजों, महाविद्यालयों को भी यूनिवर्सिटियों का नाम देना शुरू कर दिया है। मशरूम की तरह इनकी फसल हर जिला, नगर के आसपास पनपती नजर आ रही हैं। गिद्ध, भांगड़ा, नाट्योत्सव, वर्कशॉप, सेमिनार, कवि दरबार और धार्मिक उत्सव, इन सभी का योगदान पंजाबी साहित्य के बहाने आज हमें मुखरित मिल रहा है। ऐसी ही गूँज प्रायः 2022 में भी शैक्षणिक संस्थाओं के अतिरिक्त गुरुद्वारों, पूजा स्थलों में भी नजर आ रही है। हरिमंदिर साहिब अमृतसर, दुखनिवारण साहिब पटियाला, दमदमा साहिब, भटिंडा, श्रीआनंदपुर साहिब या ऐसे अन्य अनेक मंच आज पंजाबी साहित्य, संस्कृति और सभ्यता के लिए सक्रिय, अग्रसर हैं। हमारे यहाँ पंजाबी मानस को संघर्षशील माना जाता है। जी–तोड़ मेहनत करके धनोपार्जन करने वाला पंजाबी साल 2022 के साहित्य में कहीं–कहीं कमजोर पड़ता भी नजर आया है। गाँव, देहात के युवा, जमीन–जायदाद बेचकर अपने बड़े बुजुर्गों को ताने देकर पलायन कर रहे हैं। अपने भूखंड बेचकर विदेशों के लिए नौकरी या पढ़ाई के नाम पर निकलते नजर आए हैं। दूसरी ओर हताशा, निराशा ने, यहाँ के युवकों को नशे की ओर ढकेल दिया है। मन–मस्तिष्क, विकृतियाँ, विखंडन और व्यवहार की असमानता में ऐसे उखड़े हुए युवा वर्ग के लड़के या लड़कियाँ चिट्टे जैसे नशे के कुएँ में छलाँग लगाते नजर आ रहे हैं।

संवेदनशील साहित्यकार उदारता की दृष्टि से समाज को देखता–परखता रहता है। यहाँ मासिक पत्रिकाएँ, त्रैमासिक या अनियतकालीन पत्रिकाएँ, सामान्य अंक और विशेषांक देकर पंजाबी साहित्य की धारा को हमारे सामने लाती रही हैं। बड़ी पंजाबी पत्रिकाओं में 'समकालीन साहित्य', 'मिनी', 'गुफ्तगू' और 'कहानी धारा' के साथ 'सिरजणा', शब्द, 'तासमन', 'अक्खर', साहित्यिक एकम और 'हुण' जैसी दर्जनों पंजाबी पत्रिकाएँ साहित्य की विभिन्न नई विधाओं को सामने ला रही हैं। शोध और खोज की दिशा में इन पत्रिकाओं ने बड़ा काम किया है। विश्वविद्यालयों के पंजाबी विभागों के अतिरिक्त अन्य कई चेयर्ज या पीठ ऐसी हैं, जो धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से छात्रों–छात्राओं को दिशा दर्शन में सफल कहलाती हैं। इनके माध्यम से पंजाब का अतीत, वर्तमान और भविष्य भी उजागर होता नजर आता है। शिक्षा एमए, एमफिल, पीएचडी की हो, या किसी और स्तर पर, 'ज्ञानी', बुद्धिमानी जैसी परीक्षाएँ पास करने वाले लोग भी, पंजाबी साहित्य से आज बावस्ता हैं। पंजाबी के प्रति अपना मोह दिन प्रतिदिन विकसित कर रहे हैं।

पंजाब में लुधियाना, चंडीगढ़, दिल्ली, भोपाल के अतिरिक्त पंचकूला जैसे शहरों से भी पंजाबी साहित्य अकादमियों ने अपने–अपने स्वर को मुखरित किया है। पंजाब आर्ट्स कौंसल चंडीगढ़ सेक्टर 16 के रोजगार्डन, रंधावा सभागार में अपने आयोजन करवाती रही है। पंजाबी कवि और पद्मश्री सुरजीत पातर इसके अध्यक्ष हैं। इनकी टीम में कुछ सक्रिय लोग पंजाबी साहित्य के लिए साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक गोष्ठियाँ, कविदरबार, सेमिनार आदि करवाते रहे हैं। इनका विशेष रूझान पंजाब से बाहर के प्रांतों अथवा विदेशों से आए रचनाकारों पर बना रहता है। उनको परिचित करवाना, ऐसे आए हुए लेखकों, लेखिकाओं की पुस्तकों पर चर्चा, किताबों का विमोचन, सेमिनार या कवि दरबार आदि इधर संपन्न होते रहे हैं। पंजाब आर्ट्स काउंसिल के अधीन पंजाब साहित्य अकादमी कार्यरत हैं। जिसकी अपनी सीमाएँ हैं। दिल्ली या दूरपार के रचनाकारों को भी इसके पदाधिकारी के रूप में देखा गया है। साल 2022 की गतिविधियों में इन पर विवाद होते और प्रश्न चिह्न उठाए जाते रहे हैं। राजकीय कोष में से आ रहा यह धन कभी कभी अपव्यय होता रहा है। कोई न कोई रिट पेटिशन लग जाती है। साहित्यिक वकील लोग अपनी शिक्षा–दीक्षा के बलबूते ऐसे अदारों से आरटीआई के माध्यम से जानकारी चाहते हैं। बार बार माँगने पर भी जब इसके बारे में सूचनाएँ उपलब्ध नहीं होतीं तो रिमाइंडर दिए जाते हैं और अंततः जो सूचनाएँ सामने आती हैं, निराश, हताश करनेवाली कहलाती हैं।

आपाधापी, आत्मकेंद्रित गतिविधियाँ अपने लोगों को खुश करने की चाह भला किसमें नहीं होगी? लेकिन साहित्यिक संस्थानों में खासतौर पर इस तरह की होड़, ईर्ष्या, लालच, स्वार्थ जो देखने में आता रहा है, मायूस कर जाता है। लुधियाना की पंजाबी अकादमी, चंडीगढ़ की साहित्य अकादमी, हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी पंचकूला, दिल्ली में पंजाबी अकादमी अथवा ऐसी ही जितनी अन्य पंजाबी साहित्य की संस्थाएँ सक्रिय हैं, उनके पदाधिकारियों, उनकी कार्यशैली पर प्रश्नचिह्न उठाते हैं तो तकलीफ होती है। यों ही पटियाला में भाषा विभाग पंजाब हर साल बीसियों तरह के मोटे–मोटे पुरस्कार वितरित कर रहा है। किसी युग में यह पंजाब का ही नहीं, देश का वृहद, विस्तृत, संपन्न भाषा विभाग कहलाता था। आज यहाँ न तो पूरा स्टाफ है और न ही सही योजनाओं को कार्यान्वित किया जा रहा है। ज्यों–ज्यों आदमी शिक्षा की सीढ़ियाँ चढ़ता है, डिग्रियाँ प्राप्त करता है, वह छोटा, बौना क्यों कहलाने लगा है! उसकी उदारता, सौहार्द और बड़प्पन कमतर होते जा रहे हैं। क्यों? भाषा विभाग, पंजाब में भी 'पंजाबी दुनिया' और 'जनसाहित' नाम से दो मासिक पत्रिकाएँ निकाली जा रही हैं, लेकिन इनके नियमित अंक पाठकों तक समय पर नहीं पहुँच पाते। शायद इसलिए भी कि इनका मुद्रण प्रकाशन सरकारी नियमानुसार राजकीय मुद्रणालय से करवाने की व्यवस्था है. जहाँ के अधिकारियों को साहित्य, संस्कृति और भाषा से लगाव नहीं। शायद उनके पास काम ही इतना रहता है कि वे इस ओर ध्यान नहीं

दे पाते। संपादक के पद के लिए सुशिक्षित, दीक्षित और बहुपठित, पत्रकारिता में पारंगत, अनुभवी व्यक्तित्व को ही बिठाया जाया करता है। लेकिन सरकारी या अर्धसरकारी कार्यालयों में नीचे से तरक्की पाकर आ रहे कर्मचारियों, अधिकारियों को भी, कभी–कभी संपादन का काम सौंप दिया जाता है जो उनके लिए गले पड़े ढोल बजाने के बराबर कहलाता है। साहित्यिक, लेखक, पाठक और समाज की त्रासदी है कि यदि सुरुचि संपन्न आवरण के साथ, पत्रिका में रचनाओं को पढ़कर, उनको वरीयता के आधार पर न प्रकाशित करते हुए, डस्टबिन में फेंके सामान की तरह एक–एक को उठाकर पत्रिका में संकलित भर करके परोसा जाता रहेगा, तो साहित्य की हेठी ही कहलाएगी। संपादन फिर क्या, कहाँ हुआ?

नाटक का प्रभाव समाज पर कविता से भी जल्दी और सामूहिक हुआ करता है। कहानी, उपन्यास या लेख जहाँ धीमी गति से प्रभावोत्पादक होते हैं, वहीं नाट्य रचना एक ही समय में रंगमंच से अपना प्रभाव दिखाते हुए, असंख्य दर्शकों तक संदेश ले जाती है। पंजाब के अबोहर जैसे नगर से निकलने वाली पत्रिका 'मेला' पंजाबी साहित्य में एक आंदोलन की तरह आ रही है। मेला पंजाबी पत्रिका, साहित्य और कला को समर्पित होते हुए बलवंत गार्गी विशेषांक 120 पन्नों में दे पाई है, जिसका अप्रैल–दिसंबर 2022 का अंक पठनीय और संग्रहणीय मान रहा हूँ। बलवंत गार्गी ने पंजाब या भारत में ही नहीं, थिएटर, सिनेमा और टीवी के संसार में, देश से बाहर भी, योग्यता और काम के द्वारा नाम कमाया है। अमरीका में रहते हुए, दिल्ली में आवास करके या चंडीगढ़ पंजाब यूनिवर्सिटी के थिएटर डिपार्टमेंट में अध्यक्ष रहते हुए, उन्होंने पंजाबी रंगमंच में जो नई स्थापनाएँ दी हैं, उन्हें हम भूल नहीं सकते। 'नंगी धूप' नाम से इनकी आत्मकथा आई तो हंगामा हुआ। 'मेला' के 2022 के इस अंक में नंगी धूप के अंश के साथ गार्गी की अपनी रचनाओं के नमूने, कुछ साहित्यकारों के रेखाचित्र, कहानियाँ संकलित हैं। इसके साथ ही डॉ. महेंद्र कुमार, सिद्धू दमदमी, गुरबचन सिंह भुल्लर, भूषण ध्यानपुरी, अमृता प्रीतम और अवतारजीत के साथ परमजीत ढींगरा, हरजीत कैंथ और अमरीक गिल की लेखनी ने संस्मरण या मूल्यांकन द्वारा 'मेला' पत्रिका को संपन्न किया है।

पंजाबी नाटक और पंजाबी रंगमंच ने 125 साल पूरे कर लिए हैं। सवा सौ साल के इस इतिहास में पंजाबी नाटक में चहुँविधि विकास हुआ है। पाठ्यक्रमों का हिस्सा, नाट्य प्रस्तुतियाँ, पाठ विश्लेषण, एक पात्रीय नाटक, नाट्य समारोह, स्कूलों और कालेजों में नाटकों का प्रशिक्षण और नुक्कड़ नाटक जैसे महत्वपूर्ण आयाम खुलते आए हैं। विषयों की विविधता, सामाजिक और वैचारिक चेतना को यहाँ बल मिलता है। एक ओर क्लासिकल पंजाबी नाटक प्रस्तुत होते रहे हैं तो दूसरी तरफ अधुनातन शैली और नई तकनीक से मंच प्रस्तुतियाँ, रोशनी या छाया के प्रभावों द्वारा प्रस्तुत की जा रही हैं। प्रतिदिन की समस्याएँ, सामाजिक उलझनें, पारिवारिक कलह या इसी तरह के

दर्जनों विषय हैं, जिन पर नाटक लिखे गए और साल 2022 में गाँव, देहात तक में उनका प्रदर्शन किया जाता रहा। शहरों, विश्वविद्यालयों में नाट्य प्रतियोगिताएं भी साल 2022 में होती रही हैं।

साल 2022 के नाटकों का मुख्य विषय महामारी 'कोरोना' या 'किसान आंदोलन' भी रहा है। पंजाबी के कलाकारों, निर्देशकों ने देश के अन्य प्रांतों में जाकर अपनी प्रस्तुतियाँ देते हुए नाटक की कला का सिक्का मनवाया है। भारत से बाहर भी कई देशों में हमारी नाट्य मंडलियाँ जाती–आती रही हैं। नाट्य प्रस्तुतियाँ देकर पंजाबी नाटक का सामाजिक हस्तक्षेप समझाती, दिखाती आई हैं। पंजाब में ही बरनाला, मानसा, संगरूर, बठिंडा जैसे केंद्र मालवा के गढ़ माने जाते हैं। इन शहरों में माझा, दोआबा या पुआध की तरह ही नाट्य सक्रियता, मंचीय प्रस्तुतियाँ नजर आती रही हैं। आजाद रंगमंच बरनाला के द्वारा रणजीतसिंह और रेशमा चौहान के निर्देशन में नाटकों का बोलबाला रहा है। इन्होंने बरनाला जिला, इसके शहरों और गाँव–देहातों में घूमते हुए, नाट्य प्रस्तुतियाँ देकर जनजागरण का संदेश दिया है। 'आजाद रंगमंच बरनाला' की ऐसी प्रस्तुतियों में जिन नाटकों को दिखाया गया, उनमें 'गोदी मीडिया', 'नारकोटेस्ट', 'लॉकडाउन', 'कर लो दुनिया मुठ्ठी में' और 'धुखदा पंजाब' उल्लेखनीय हैं। इसी तरह इस नाट्य मंडली द्वारा 'छिपण तो पहला', 'मिट्टी रुदण करे', 'फिर आवांगा', 'उम्मीदा दी अर्थी' से लेकर 'चंदन दे ओहले' या 'सरहद दे आरपार' जैसे नाटक बार–बार दिखाए गए हैं। 'सरहदां होर वी ने' जैसे नाटकों के आधार पर दावा किया जा रहा है कि इनकी 300 प्रस्तुतियाँ पूरी हो रही हैं। यूँ 'ही दस्तक आर्ट ग्रुप मानसा' के निर्देशक अमृतप्रीत भी मानसा के कॉलेजों, गाँवों, शहरों में नुक्कड़ नाटकों के 100 प्रदर्शन कर चुके हैं। यह सब सरकारी या किसी संस्था के सहयोग के बिना हो पाया है। इनके नाटकों में 'भगतसिंह तू जिंदा है', 'होकां', 'गिरझां', या 'कुत्ता राज बिठालिए' जैसी नाट्य प्रस्तुतियों को शामिल किया जा सकता है। मानसा में ही 'जूगनू कला केंद्र' और आजाद कला मंच सक्रिय हैं। मानसा, वरिष्ठ नाटककार अजमेर औलख का शहर कहलाता है। 'बेगाने बोहड़ दी छां', 'अपना अपना हिस्सा' जैसे लोकप्रिय नाटक अजमेर औलख के परिवार के द्वारा बार–बार प्रदर्शित होते रहे हैं। जगतार मान ने जुगनू कला केंद्र मानसा द्वारा 'सुलगदी धरती' नाटक दिखाया तो आजाद कला मंच मानसा की तरफ से तरसेम राही के निर्देशन में 'कुर्सी नाच नचाए' को सराहा गया। इसी तरह बठिंडा का गाँव भगता के सुखविंदर द्वारा, नाटक 'तमाशा हिंदुस्तान' लोकप्रिय रहा है।

केवल धालीवाल, सतीश वर्मा, साहिब सिंह, आत्मजीत प्राण सभ्रवाल और एक दर्जन से ऊपर नाटककारों का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने विचाराधीन वर्ष 2022 में अपनी सक्रियता को बनाए रखा। पटियाला में नाटक विभाग है, जहाँ से रंगकर्मी तैयार होते हैं। दूरदर्शन, टेलीविजन या सिनेमा तक पहुँचते और नाम कमाते

हैं। डाक्टर प्रोफेसर सतीश वर्मा की कई किताबें इसी साल उनके शोध छात्रों के सहयोग पर आधारित, देखने को मिली हैं। यूँ ही टैगोर थिएटर चंडीगढ़ भी एक मुख्य केंद्र 2022 में बना रहा, जहाँ से संगीत नाटक अकादमी, चंडीगढ़, पंजाब संगीत नाटक अकादमी और अन्य संस्थानों, संस्थाओं द्वारा पंजाबी नाटक की गतिविधियाँ, मंच पर इनकी प्रस्तुतियाँ देखने में आती रही हैं। महिला रंगकर्मियों में अनीता शब्दीश का नाम उल्लेखनीय है। रूपांतरित नाटकों को लेकर इन्होंने देश और विदेश में प्रस्तुतियाँ दी हैं। चंडीगढ़ के दर्शक, गाँव, देहात के दर्शकों से कुछ हटकर पसंद करते हैं। इसीलिए नाट्य चयन में यहाँ विशेष सावधानी की जरूरत पड़ती है। नाटक, कविता की तरह विशेष प्रभाव दिखाने वाली विधा है। कविता या कहानी जहाँ मानस पर असर डालती है वहीं एकांकी नाटक समाज के समूह अथवा भीड़ को भी प्रभावित करने में सफल रहते हैं। पंजाबी नाटकों ने टेलीविजन और सिनेमा गृहों तक अपनी पहचान बनाई है। सतीश वर्मा और उनके बेटे परमीश वर्मा के द्वारा निर्मित, प्रदर्शित फिल्म 'मैं ते बापू' एक कामेडी के तौर पर सामने आई, जहाँ 'बापू और मैं', दो पात्रों के माध्यम से समाज की जटिलताओं, पेचीदगियों और अवस्था को चित्रित करके दिखाया गया है।

पंजाबी कहानी एक बड़ी पहचान के साथ 2022 में अपना अस्तित्व दिखाती रही है। लगभग बाहर–पंद्रह पत्रिकाओं में पंजाबी कहानियों की हाजिरी बराबर इस साल कायम रही है। बड़े, मुख्य कथाकारों के साथ तीसरी–चौथी पीढ़ी के नए कहानीकारों ने अपने हस्ताक्षरों को सिद्ध किया है। मैं यहाँ कुछ कहानी संग्रहों का जिक्र करना चाहूँगा। 'चाबी', 'बलौरी अक्ख बाला मुंडा' (परवेज संधू), 'मैम आई एम सॉरी' (संगीता अग्रवाल), 'एहना पलां नू माण न लवां'(सर्वजीत सोहल), 'चल चिड़िये मैं आया' (हरप्रीत सिंह पन्नू), 'आफटर फोरटी' (सरघी), 'मी टू' (डिंपल अंजान), 'मोह जाल' (हरप्रीत सेखा), 'ड्रीम लैंड' (बलदेवसिंह ग्रेवाल), 'अजनबी' (निर्मल जसपाल राना) और 'पूरा आदमी' (सांवल धामी)। ये ऐसी कहानियाँ हैं, जिनकी चर्चा के बिना साल 2022 की पंजाबी कहानी का उल्लेख संभव नहीं लगता। यूँ ही सांवल धामी, कमल सेखों, विपन गिल, हरमीत पनाग, के तृप्ता सिंह, जतिंदर राणा, अरबिंदर धालीवाल, दीप्ति बरूटा, जस्सी धालीवाल और अमरजीत सिंह मान, रमन अंबर, जतिंदर हांस, कुलजीत मान व जिंदर जैसे बड़े या नए कहानीकारों के नाम मेरे सामने आ रहे हैं, जिनकी कहानियाँ विचाराधीन वर्ष में पठनीय ही नहीं, सराहनीय कहलाई हैं। ऐसी कहानियों के नाम क्रमशः 'पूरा आदमी', 'कंध', 'अनकही भीड़', देह दा रुक्ख, 'भुक्ख', 'इक सवाल', 'मैं छुट्टी ते जा रही हां', 'बस अखियां दे कोल', और 'हुण मैं सुरखरू हां' के साथ 'मद्धम जही आस', 'मर जाणी', 'रंग बरसे', 'शामसिंह दी रात' और 'किड़की' है जिन्हें खोलकर बताया समझाया भी जा सकता है।

इन कहानियों में ताजगी है और एक ट्रेंड की झलक भी। कहानीकार शिल्प को तोड़ते, नए अलग शिल्प का सृजन करते नजर आए हैं। भाषा का प्रभाव यहाँ

जनसामान्य के निकट होते हुए तीखापन लिए हुए है। मुहावरों के अतिरिक्त, शैली में इन्होंने निजता का बोध करवाया है। ये कहानियाँ पंजाबी कहानी की भीड़ में से उभरकर ऊपर आए चेहरों की तरह जान पड़ती हैं। हमारे यहाँ हर साल पंजाबी की प्रत्येक साहित्यिक विधा को लेकर अलग–अलग सर्वेक्षण, शोध आदि पर बल दिया जाता है। लेकिन वहाँ कई बार अपने–अपने खेमे को उभारने का यत्न भी नजर आया है। ईमानदारी से पारदर्शिता का भाव जहाँ–जहाँ दृष्टिगोचर हो रहा है, वहाँ–वहाँ कहानी ने अपनी सत्ता स्थापित की है। यह सत्ता लेखक की कम, लेखन की अधिक है। जिस रचनाकार में प्रतिनिधित्व की भावना होगी, वह वर्तमान और भूतकाल से आगे आकर भविष्योन्मुखी शैली और शिल्प के साथ अपनी कहानी को प्रस्तुत करने की चेष्टा करेगा। महिला लेखन का यहाँ अपना स्थान है। ऐसी कहानीकारों में दीप्ति बरूटा, तृप्ता के सिंह, हरमीत पनाग, निर्मल जसवाल, सरघी जैसे हस्ताक्षरों ने अपनी कला, कथा के माध्यम से उभारकर दिखाई है। कहीं बोल्डनेस तो कही सहजता इनके कथ्य को रूपायित कर रही है। देहगाथा, नारी विमर्श, आदिवासी चिंतन, दलित समाज की चिंताएँ ऐसी कहानियों में बढ़–चढ़कर देखने को मिल रही हैं। महत्वपूर्ण यह नहीं कि एक साल में कितने और कौन–कौन से पंजाबी संग्रह छपकर सामने आए हैं। बड़ी बात यह है कि किस कहानीकार ने अपने कथा संग्रह या कहानी विशेष के माध्यम से, अपने आपको, तरोताजा, अलग और ऊपर सिद्ध किया है। यह सब घटना, विधि–विधान, विश्लेषण, ट्रीटमेंट और कथा विधि को 'डील करने' के आधार पर आंका जा सकता है।

मेरे एक दोस्त ने मुझे 'सलामी' किताब देखने का परामर्श दिया है। यह डाक्टर जेबी सेखों द्वारा संपादित 14 पंजाबी कहानियों का एक संकलन है। इसमें लगभग चौथी पीढ़ी आज के समाज में उभरकर सामने आए कहानीकारों की कहानियाँ शामिल हैं। ध्यान से देखता हूँ तो इनमें कहानी 180 मिनट का 'आतंककाल', 'मोहजाल' और 'सेटी किट' मुझे पठनीय लग रही हैं। इनके लेखक क्रमशः जसबीर राना, हरप्रीत सेखा और जिंदर हैं। बलबीर परवाना, सुकीरत,भूपेंदर सिंह मान के साथ इलियास घुम्मन की कहानियाँ भी यहाँ शामिल हैं। 'मम्मी समझते क्यों नहीं', 'ओ ते ओह', 'इक मजार होर' और 'बाबा बोढ़वाला' में, आज की ज्वलंत समस्याओं को, इस पीढ़ी ने भाषा दी है। यह प्रवचन नहीं, यथार्थ भूमि पर उभरता समाज है। जिसमें साहस और संवेदना भी है। हर्ष और संवेदना की ऐसी कहानियाँ हमें पंजाबी में कम देखने को मिल रही हैं। यूँ ही कुछ अन्य कहानियाँ इसी संकलन से सामने आ रही हैं, जिनके नाम हैं– 'तरेड़', 'सलामी', 'पंजमा मोहडा', 'हार्सपावर', 'रोड शो', 'डांग' और 'मौत दा सपना'। 2022 की इन कहानियों की चौथी पीढ़ी के लेखकों में भगवंत सूदपुरी, खालिद फरहाद धालीवाल, दीप्ति बरूटा, स्वामी सर्वजीत, सिमरत धालीवाल, नवचेतन और सहजाद असलम जैसे नाम शामिल हैं। ये कहानियाँ 'सलामी संकलन' में एक गूँज

पैदा कर रही हैं। ध्यान खींचने वाली रचना किसी भी काल खंड की हो, पाठक को अपने साथ जोड़ती है। आलोचक को तैयार करती है कुछ कहने के लिए, और संपादक को विवश करती है संकलन या पत्रिका में छापने के लिए। समीक्षक डॉ. जेबी सेखों जो संपादक के रूप में सलामी को प्रस्तुत कर रहे हैं, उनके प्रवेश शब्दों में लगभग 12–13 पन्नों में एक वकालत है। किसी जिरह की तरह। इन कहानियों को लेने के लिए उनको क्यों विवश होना पड़ा!

इसी तरह के 2022 की कहानी के संदर्भ में लेख–आलेख, नवां जमाना, रोजाना जागरण, पंजाबी ट्रिब्यून, देस सेवक जैसे अखबारों में भी मैं देख चुका हूँ। पक्षपात जहाँ नजर आता है, वहीं कहीं–कहीं एक संतुलन, एक मर्यादा, एक सीमा भी, संभावना को उजागर कर रही है। पंजाबी कहानी की पहली तीन पीढ़ियाँ जहाँ पारंपरिक पृष्ठभूमि में कुछ कहती बयान करती आईं हैं। आदर्श और यथार्थ के बाद वहीं आज राजनीति, धर्म, सेक्स, अर्थतंत्र, अंतर्मन की पीड़ाएँ और व्यक्तित्व का विघटन सामने आ रहा है। यहाँ पात्र, मनुष्य के सरोकार, उसके घर परिवार, देहात नगर, समाज या राष्ट्र के साथ ही नहीं, देश–विदेश में चलती होड़ और षड्यंत्र को भी नंगा करने वाले हैं। यूक्रेन, रूस के युद्ध से लेकर दैहिक शोषण जैसी समस्याओं की भरमार सामने आ रही है। पैसा, रूपया, रुतबा, पद एक तरफ है, तो पेट और जांघ की भूख दूसरी तरफ। यहाँ आदमी बौना हो रहा है और विघटित भी कहला रहा है। पंजाबी कहानियों में जो सच्चा स्वरूप कुछ विशेषांकों में पत्रिकाओं के द्वारा सामने आया है, उनकी 'कहानी' कुछ और ही है। यह कथा व्यथा संपादक, आलोचक, पाठक और लेखक के दायित्व की ऐसी मुठभेड़ है, जहाँ कई बार घटाटोप अंधेरा है तो कभी–कभी रौशन उजाला हमारे सामने आकर खड़ा हो जाता है। 'गीतों का बंजारा' जगजीत बराड़ की योगेश्वर कौर द्वारा 'कथादेश' में छपी पंजाबी कहानी की तरह अजीतकौर के लिखे रेखाचित्रों को सुभाष नीरव ने इसी पत्रिका में नियमित रूप से देना शुरू किया है।

पंजाबी त्रैमासिक पत्रिकाएँ शब्द, समकाली साहित, मिनी, गुप्तगू, कहानीधारा, सिरजणा, तासमन, अक्खर, साहित्य एकम, हुण के साथ पंज दरिया, जन साहित, शब्द बूंद, तरकशील जैसे बीसियों नाम पंजाबी पाठकों को आकर्षित कर सकते हैं। इनमें त्रैमासिक, मासिक, अर्धवार्षिक, अनियतकालीन कुछ ऐसी पत्रिकाएँ भी शामिल हैं जो यथासुविधा, कभी–कभी सामने आतीं, अपना अस्तित्व समाज के लिए आइने के रूप में दिखा जाती हैं। संपादक की दूरदर्शिता, सूझबूझ और परिकल्पना इनके अंकों से झलकती है। ये झाँकते, झलकते शब्द पत्रिका और संपादक दोनों के प्रारूप को पाठक के सामने प्रस्तुत कर जाते हैं! यदि त्रैमासिक या मासिक पत्रिका में इतने समय तक पठनीय सामग्री ही न रहे, तो वह पत्रिका की पीरियोडिसिटी को चरितार्थ नहीं कर पाएगी। पत्रिका एक्सपोज कहलाएगी। पंजाबी के संपादकों में अतीत में अमृता प्रीतम,

गुरबक्शसिंह प्रीतलड़ी नवतेजसिंह, भापा प्रीतम सिंह, परमिंदरजीत सिंह, सतिंदरसिंह नूर, डा. जगतार जैसे अनेक शीर्ष हस्ताक्षर हुए हैं, जिन्होंने नीर क्षीर विवेक करके लेखन को पाठकों तक सौंपने का दायित्व निभाया है। लेकिन आज जो स्थिति अध्यापन या आलोचना में गिरती नजर आ रही है, लगभग वैसी ही पंजाबी की साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक में भी प्रश्नचिह्न लगाने वाली है। अच्छी या श्रेष्ठ रचना पाने के लिए जहाँ संपर्क और संबंध आवश्यक हैं, वहीं संपादक का गहरा अध्ययन और प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी भी उसके लिए नितांत आवश्यक कहलाती है। अपनी सुविधानुसार मिली हुई, प्राप्त हो चुकी सामग्री में से ही चुनकर देना कोई अपराध नहीं। लेकिन विशेषांक या प्रत्येक अंक को संपन्न और समृद्ध करने के लिए कुछ न कुछ साग्रह, विनय करके भी लेखकों के संपर्क से खास प्राप्त किया जाना चाहिए। यह तभी हो पाएगा जब संपादक का रीडर, पाठक भी, गहन अध्ययन में डूबा और भिन्न–भिन्न प्रवृत्तियों का जानकार रहा होगा। ऐसे में संपादन एक उच्चादर्श को लेकर आ रहा होता है। हमारे विश्वविद्यालयों में भी साहित्यिक विभागों से पंजाबी पत्रिकाएँ, शोध और खोज के नाम पर वार्षिक या अर्धवार्षिक आती रही हैं, लेकिन उनमें कहीं कुछ ऐसा संग्रहणीय, अपनाने योग्य कम ही दिखाई दे रहा है।

सरकारी पत्रिकाएँ, अर्धसरकारी पत्रिकाएँ या गैर सरकारी पत्रिकाओं की अपनी–अपनी सीमाएँ हैं। मानदेय या पारिश्रमिक प्रदान करने वाली कुछ पत्रिकाओं के पास, शीर्ष संपादकों का अभाव रहता है। सामान्य संपादक जो मानदेय नहीं दे पाते, वे इतने सुविधाजीवी और सुविधाभोगी कहलाने लगे हैं कि उनको रचनाएँ ऑनलाइन, अमुक फॉन्ट में दूसरे दिन तक पहुँचनी चाहिए। क्या यह इच्छा और आग्रह बेमानी नहीं है! आज की सुविधाएँ बीते कल नहीं थी, तब भी श्रेष्ठ और वरिष्ठ लेखक हाथ से लिखे 45–50 पन्ने संपादक को भिजवाते थे, और 'भाषा' जैसी पत्रिका में ही उनका समावेश संपादनोंपरांत, कंपोज करवाकर, कर लिया जाता था। यदि रचनाकार टंकित रचनाएँ भी भिजवाते थे तो उस कार्य के लिए अलग 'मानदेय' संख्यानुसार टंकन का खर्च भी, अतिरिक्त शब्द मानदेय में जोड़ दिया जाता था। शायद आज के हमारे संपादकों को स्मरण भी नहीं होगा, चालीस साल पूर्व यही होता था। पंजाबी में संपादन एक शौक की तरह है। भाषा विभाग पंजाब, हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी या शीराजा पंजाबी के अतिरिक्त, समकालीन साहित्य, दिल्ली की पंजाबी साहित्य सभा, कुछ ऐसे केंद्र हैं, जहाँ मानदेय की व्यवस्था रही है। लेकिन यहाँ यदि कोई रचनाकार, साहित्यकार, लेखक, आलोचक या अनुभवी लेखक स्वयं संपादक नहीं है और वह साग्रह सामग्री आमंत्रित भी नहीं कर पाता, उस स्थिति में उनकी पत्रिकाएँ कई–कई महीने पिछड़कर छपने लगती हैं। फिर यह पिछड़ापन लगातार बढ़ता जाता है। ऐसे में 'शब्द बूंद', जनसाहित, पंजाबी दुनिया या और सरकारी, अर्धसरकारी पत्रिकाएँ

नाममात्र का दायित्व निभा पा रही हैं। फिर भी जिन अच्छी पत्रिकाओं ने पंजाबी साहित्य और आज की पीढ़ी को कुछ दिया है, उस पत्रिका या वहाँ के संपादक को, सम्मान की दृष्टि से आज देखा पहचाना जा रहा है।

पंजाबी की साहित्यिक पत्रकारिता में सुशील दुसांझ, रविंदर सेहरा और कमल दुसांझ ने एक मोड़ लिया है। 'हुण' पुस्तक शृंखला 45 का 210 पन्नों का साहित्य अंक, अलग से पहचान बना चुका है। अवतार जंडयालवी, स्वरणजीत कौर जौहल, सुरिंदर सोहल और कीर्तमीत, विभिन्न क्षेत्रों से 'हुण' पत्रिका को सहयोग करते आए हैं। अमरीका या कनाडा से आज भी इन्हें संग–साथ मिला हुआ है। भारत से बाहर कई देशों में पंजाबी साहित्यकार स्तरीय रचनाएँ लिख रहे, पहचान बना चुके हैं। ऐसे लेखकों–लेखिकाओं को 'हुण' भी दूसरी पत्रिकाओं की तरह सहेजता, संभालता है। संभवतः इनसे अन्य पत्रिकाओं की तरह आर्थिक सहयोग भी प्राप्त कर रहे हों। 'हुण' के पूर्णांक 45 में, जो नवंबर 2022 में सामने आया है– यहाँ सात महत्वपूर्ण कहानियाँ पंजाबी में सामने आई हैं। इनके लेखकों में सांवल धामी, गुरमीत कड़यालवी, केसरा राम, जतिंदर सिंह हांस, डिंपल अनजान, मनदीप सिंह डडियाना, और सुखविंदर सिंह ढिल्लों की कथा के साथ जिनेंदर चौहान द्वारा अनूदित कहानी 'दो खदूस बूढ़े' भी शामिल हैं। यहाँ संकलित रचनाकारों की कहानियों के शीर्षक क्रमशः याद आ रहे हैं– खोपड़ी दा तमगा, ओणा अडवायर, कथा करोना, रंग बरसे, मी टू, पंजाब सिऊं, और बाहरला बंदा, में यहाँ लेखन चेतना की विशेषता इस तरह से प्रखर है कि आदमी पढ़ते हुए सजगता अनुभव करता है तो कहीं–कहीं उछलने–बिखरने लगता है। दरअसल कहानी के क्षेत्र में अच्छी रचना की तलाश प्रत्येक संपादक में हर बार बनी रहती है। अपने परिचय क्षेत्र में से ही कभी–कभी श्रेष्ठ कहानी, पत्रिका के हाथ लग सकती है।

'अक्खर' पंजाबी की दूसरी महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय पत्रिका है जिसका जून–अगस्त 2022 अंक विशाल ने संपादित किया है। 'अक्खर' का अपना अंदाज है और खुलकर बात करने का साहस भी। इसकी संपादकीय टिप्पणियाँ व्यंग्यात्मक, यथार्थपरक और समाज को लेखन के माध्यम से आईना दिखलाने वाली कहलाती हैं। कथाकार जसबीर भुल्लर ने 'अक्खर' के इसी अंक में नाटककार आत्मजीत के बारे में 'बीबी इंदरजीत दा दोहता', शीर्षक से एक कोलाज प्रस्तुत किया है, जो नाटक, पंजाबी रंगमंच और सम्मानित रचनाकार आत्मजीत के जीवन व्यक्तित्व को मुखरित करने वाला है। 'अक्खर' का कथा चयन सराहनीय कहलाता है। विशाल स्वयं पंजाबी कवि हैं। मीडियाकर्मी भी। इन्होंने पंजाबी की सभी विधाओं में अध्ययन के आधार पर संपादक को संपन्न बनाया है। 'अक्खर' का यह संग्रहणीय, उपयोगी पत्रिका सिद्ध कर रहे हैं। अमृतसर पंजाब के बड़े नगरों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जहाँ से अरतिंदर संधू के संपादन में 'साहित्यक एकम' पत्रिका त्रैमासिक रूप में सामने आ रही है। आवरण, लेआउट, गेटअप, रचना प्रस्तुति की दृष्टि से इस पत्रिका के अंक ऊपर

और आगे नजर आ रहे हैं। जुलाई–सितंबर, और अक्तूबर–दिसंबर के 'साहितिक एकम' अंकों में रतनसिंह कमल, मनमोहनसिंह (मास्को), कुलविंदर कौशल और जसबीर भुल्लर की कहानियाँ नई जमीन दिखा रहे हैं। सांस्कृतिक स्तर पर साहित्य अपना प्रभाव दिखाता है तो कुछ अलग ही महक, पाठक महसूस कर जाता है। इसी तरह मुख्तियारसिंह, श्यामसुंदर दीप्ति, सोनी धालीवाल, सुखविंदरसिंह सेक्खों, कर्मजीत सिंह नडाला, मोहम्मद इम्ताज और मीत खटड़ा जैसे रचनाकारों की लघु कथाएँ और कहानियाँ, 'साहितिक एकम' के अक्तूबर 2022 के अंक में इस साल की उल्लेखनीय कहानियाँ सिद्ध हो रही हैं।

पंजाबी पत्रकारिता को अलग से देखें तो पाएँगे 'सिरजणा' रघुवीर सिंह के संपादन में बहुत लंबे समय से त्रैमासिक रूप में निकलती आई है। इसके 207 अंक त्रैमासिक रूप में बता रहे हैं कि पंजाबी साहित्य संसार में सिरजणा की जगह और नींव कुछ यूँ मजबूत है कि पाठक इसको चाहते हैं। रघुवीर सिंह प्राध्यापक और आलोचक होने के साथ वामपंथी विचारधारा के पैरोकार माने जाते हैं। इन्होंने भी भारत से बाहर के पंजाबी रचनाकारों या प्रवासी लेखकों, लेखिकाओं को प्रश्रय देकर परिचित ही नहीं करवाया, उनके लिए जमीन भी तैयार की है। गुरसेवकसिंह प्रीत, सांवल धामी और गुरप्रीतसिंह की कहानियों ने 'सिरजणा' के पूर्णांक 205 में यह सिद्ध किया है कि पंजाबी कथा भारतीय भाषाओं में उनके बराबर उनसे आगे भी कुछ कह पा रही है। पंजाबी साहित्य सभा, नई दिल्ली की त्रैमासिक पत्रिका 'समकाली साहित' बलबीर माधोपुरी के संपादन में आ रही है। इसके पूर्णांक 110 (अक्तूबर–दिसंबर 2022) में 'कांचा' (प्रीतमा दुमेल), मिट्टी फरोश (ऊर्दू), दो मुट्ठी मिट्टी (मराठी), खंडहर (तेलुगु) और अंकल ज्यूल्ज (फ्रांस) कहानियाँ शामिल हैं। भारतीय और विदेशी साहित्य को परिचित करवाने में इस पत्रिका के पूर्व संपादकों का भी भरपूर योगदान रहा है। बूटासिंह चौहान, सुरेंदर गीत, अशोक सक्सेना के साथ कृष्णचंद्र जैसे बड़े ऊर्दू लेखकों को भी 'समकाली साहित' में पाकर महसूस होता है कि मुख्य धारा की कहानियों को यहाँ उपेक्षित नहीं किया जाता। इन रचनाओं में देश और प्रांत, पंजाब और पंजाबियत, इंसान और इंसानियत का बोलबाला गहरे में समाया है। संवेदना के स्तर पर इन रचनाओं ने पाठक वर्ग को बहुत कुछ बताया है।

'कहानी धारा' के पूर्णांक 66 और 67, भगवंत रसूलपुरी के संपादन में मेरे सामने हैं। इनकी प्रस्तुति, संकलन और तरतीब पंजाबी कथा विधा को सँजोकर प्रस्तुत करने में सफल रही है। 'जगमीत उदास नहीं होंदे' (डा. श्यामसुंदर दीप्ति), क्वींज लैंड (आगजबीर), अपडेट (रमनदीप विर्क) जैसी कहानियाँ इस अंक का हासिल हैं। सेटीकिट, लूण, कोई तां है, देह दा दुख और अनकही पीड़ 'कहानीधारा' के पूर्णांक 67 (अक्तूबर–दिसंबर–2022) में शामिल हैं जिनके रचनाकार जिंदर, बलीजीत, निरंजन बोहा, गुरमीत पनाग और विपन गिल किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

कहानी में विषय, संवाद, चिंतन शैली के साथ, उसका शिल्प भी महत्वपूर्ण कहलाता है। नए पंजाबी रचनाकारों ने इस दिशा में पर्याप्त अभ्यास किया है। नित्य नई कहानियाँ रचते हुए अपनी पहचान बनाई है। पंजाबी कथाकार जिंदर स्वयं सक्रियता के साथ 'शब्द' पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। 'शब्द' त्रैमासिक के अभी तक 101 अंक सामने आ चुके हैं। साल 2022 में शब्द की उपलब्धि चर्चा–परिचर्चा, सेमिनार, अनुवाद, व्यक्ति चित्र, पुस्तक समीक्षा जैसे विभिन्न स्तंभों को लेकर होती रही है। इसके मुख्य संपादक हरजीत अटवाल इंग्लैंड में हैं। उपसंपादक हरमहेंद्र चहल और रवि शेरगिल अमरीका में रहते हुए सहयोग कर रहे हैं। भारतीय पंजाबी लेखकों का एक बड़ा समूह इनको योगदान दे रहा है। यह पत्रिका 'शब्द' ही है जिसने अपने सप्लीमेंट संख्या 30 और 31 मुस्ताक सिंह और जसवंत सिंह विरदी पर निकालकर ऐसी स्थिति पैदा की है। अन्य संपादकों, संस्थाओं को भी इस दिशा में सोचने पर विवश होना पड़ रहा है कि श्रेष्ठ रचनाकारों के लिए उनपर मोनोग्राफ पुस्तिकाएँ संकलित, संपादित करवाकर निकाली जानी चाहिए।

'तासमन' पटियाला से सतपाल भिखी के संपादन में आ रही वृहत पत्रिका कहलाने लगी है। तासमन के अंक सामान्य होते हुए भी विशेषांक की तरह पाठकों को आकर्षित करते हैं। 240 पृष्ठों की पुस्तक शृंखला चार, (जनवरी–मार्च 2022) मेरे सामने है। इस नारी विशेषांक में कवि विशेष, व्यक्तित्व, क्लासिक, संपादकीय होने का अर्थ, कैनवस के रंग, पत्थर पर नक्श, काव्य सौरभ, बाघा पार, पत्तन पार के अफसाने, गाथा लाहौर के गाँव की, विश्वकथा, संसार काव्य, कविता का द्वार, संवाद प्रतिसंवाद, जीवन वृतांत और समीक्षा के साथ कहानियाँ भी शामिल हैं। पंजाबी भारतीय और विश्व नारी लेखन को लेकर इस अंक में पर्याप्त सामग्री नारी विमर्श, नारी चिंतन, देह और मन के आरपार, बहुत कुछ बयान कर जाती हैं। पंजाबी कथाकार पवित्तरकौर माटी की कहानी 'हुण मैं सुरखरू हां' और विपन गिल की कहानी 'जिन्न मारना कित्ते सौखा है', यहाँ सिफारिश करना चाहूँगा कि इन दो कहानियों ने पंजाबी पाठक की मनोदशा को एक दिशा प्रदान की है। निश्चय ही इस विशेषांक में संपादक का श्रम लगन और संपर्क के साथ उसकी परिकल्पना जुड़ी हुई है। ऐसे अंक संग्रहणीय कहलाएँगे। 'तासमन' के ही 2022 के अन्य अंकों में से झाँकती कहानियों के रचनाकार हैं जगजीत बराड़, जिंदर, हरप्रीत सेखा, निरंजन बोहा, स्वामी सर्वजीत और मोहम्मद इम्तियाज। ये लेखक स्वयं में एक हस्ताक्षर हैं और इनका लेखन पंजाबी में चाव से पढ़ा और सराहा जा रहा है। यहाँ संकलित की गई कहानियाँ, 'गीतां दा बंजारा', 'चिराग', 'गुम पन्ने', 'इस तरह ही होवेगा हुण', हार्स पावर, और 'मसीहा' पाठक को, आनंद और चौंकाने की स्थिति ही पैदा नहीं करते, संवेदना के स्तर पर मनुष्य मन का शीर्ष बिंदु भी दिखा जाते हैं। पंजाबी कहानीकारों में रघबीर सिंह मान, चरणजीत मिनहास, रविंदर रूपाल कौलगढ़ और जस्सी धालीवाल के साथ देवेंदर मलहास का

लेखन भी कथा रूप में तासमन में उभरा है। यहाँ कहानियाँ 'तरेड़', 'अडोल', 'वक्त दे हवाले', 'गैंगेस्टर', 'अंतिका खाली', लोल्हड़ अपनी बानगी स्वयं दे रहे हैं। 'तासमन' में ताजा छपी किताबों पर बहुत संक्षिप्त रूप में साहित्य परिचय देकर एक जानकारी पाठकों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है, जिससे मालूम हो सकता है कि कौन–सी अच्छी किताब कहाँ से प्राप्त की जाए। मैं कुछ अन्य कहानियाँ भी यहाँ बताना चाहूँगा, 'खला विच लटकेया सवाल' (सर्वजीतकौर सोहल), शॉल (जसविंदर धर्मकोट) और ब्लैक आउट (दीप्ति बरूटा), इसलिए अलग हैं कि यहाँ संसार और देश की घटनाओं को मानवीय स्तर पर यहाँ आमने–सामने प्रदर्शित किया गया है। यूँ 'तासमन' एक बेहतर पत्रिका सिद्ध हो रही है।

'मिनी' कहानी पत्रिका अमृतसर से श्यामसुंदर दीप्ति निकालते हैं। यह पत्रिका नहीं, मंच और आंदोलन है। इसके 138 त्रैमासिक अंक इस बात के गवाह हैं कि लघु, सूक्ष्म या छोटे रूप में कहीं–कहीं बात कभी कभी ज्यादा प्रभावोत्पादक भी हो सकती है। सीखने–सिखाने संबंधी 'मिनी' पत्रिका का पूर्णांक 134 (अप्रैल 2022) 'काले अक्षरों की धूप' शीर्षक के साथ आकर्षित कर रहा है। यहाँ विदेशी, हिंदी और पंजाबी मिनी कहानियाँ, लघु कथाएँ, शिक्षा संसार से जुड़ी हुई, संकलित की गई हैं। पंजाबी में अनूदित हिंदी की दर्जनों लघु कथाएँ और विदेशी कथा संसार से चयन करके मिनी कहानियाँ, छोटी कथाएँ, पाठकों के लिए परोसी गई हैं। 'मिनी' ने आयोजन, समारोह, पुस्तक चर्चाएँ, आलोचनाएँ ही नहीं करवाई, अपनी पत्रिका के संपादकीय द्वारा विचारोत्तेजक मसलों को उठाया और उभारा है। 'मिनी' की तरह ही 'अणु' एक अन्य लघु पत्रिका पंजाबी में सुपरिचित है, जिसके संपादक सुरेंदर कैले अपनी रचनात्मकता के कारण पहचान बना चुके हैं। यह लुधियाना से, 'अणु' को पंजाब और भारत के प्रांतों के साथ जोड़कर सामग्री संकलित करके प्रस्तुत करते आए हैं। डॉ. श्यामसुंदर दीप्ति ने ही 'गुप्तगू' नाम से एक अन्य छोटी पत्रिका जारी की है, जिसमें चेतना और संघर्ष से भरपूर जिंदगियों के संवाद स्थापित करते हुए सामग्री प्रस्तुत की जा रही है। 'गुप्तगू' का स्वागत भी 'मिनी पत्रिका' की तरह पंजाबी साहित्य संसार में सराहनीय रहा है। 'पंज दरिया', 'राग', 'तर्कशील', शब्दबूँद कुछ अन्य पत्रिकाएँ हैं, जिन्होंने पंजाबी साहित्य को, पाठकों के लिए हर वर्ग में पहुँचाया, परिचित करवाया है।

पंजाबी कविता में आज सिरमौर हस्ताक्षर सुरजीत पात्तर को माना जा रहा है। 'सरस्वती सम्मान' और 'साहित्य अकादमी' से पुरस्कृत सुरजीत पात्तर शिक्षक रहे हैं और इन दिनों पंजाब कला परिषद के अध्यक्ष का दायित्व निभा रहे हैं। इनका ताजा कविता संग्रह 'एह बात निरी ऐनी ही नहीं' छपकर सामने आया है। इनकी कविता में लय, नाद, प्रवाह और गूंज बराबर कायम है। काव्य पक्ष की गहराई और 'संगीतात्मकता' इन्होंने अभ्यास के द्वारा प्राप्त की है। यूँ ही दूसरे कवि गज़लकार सुरजीत जज की काव्य पुस्तक 'किसान कूच' चर्चा में रही है। सुरजीत जज मुशायरों, कवि सम्मेलनों

में पसंद किए जाते हैं और इनकी आवाज असर रखती है। काव्य के क्षेत्र में यूँ तो सर्वाधिक पुस्तकें पंजाबी में हर साल छपती हैं और युवावर्ग में कवि कहलाने की होड़ लगी रहती है, लेकिन हरमीत विद्यार्थी, हरभजनसिंह खेमकरणी, ओमप्रकाश गासो, गुरसेवक लंबी, ओंमकार प्रीत सहित भगत नारायण जैसे नाम मेरे सामने हैं जिनकी काव्य कृतियां क्रमश' 'जर्द रुत दा हल्फिया बयान', 'सिस्कदीयां हवावां', 'बिस्मादी बोलां दा विद्रोह', 'भक्खड़ा', 'आणफिरिया मक्का', एवं 'मैं ते आकाश' देख पढ़ गया हूँ। यूं दैनिक पंजाबी 'देश सेवक' का स्तंभ पुस्तक परिचय मेरे द्वारा लिखा जा रहा है। साल भर में न जाने कितनी ही कृतियों पर टिप्पणियाँ मैं साल 2022 में देशसेवक साप्ताहिक साहित्य संस्करण में लिख चुका हूँ। मुख्यतः किसान आंदोलन और कोरोना महामारी का दुखांत और मनुष्य का संघर्ष हमारे सामने आ रहा है। मनजीत इंदिरा पंजाबी कवयित्रियों में उल्लेखनीय और चर्चित हस्ताक्षर हैं, जिनकी एक पुस्तक 'सलीबां' विचाराधीन वर्ष में मोहाली से प्रकाशित हुई है।

उपन्यास के क्षेत्र में 'आखिरी बाबे' (जसबीर मंड), 'इक नाल इक फ्री' (डा. मोनोजीत) और 'इनायत–दर–इनायत' (ओमप्रकाश गासो) का लेखन मुझे पठनीय लगा है। जसबीर मंड ने जापान से लौटकर वैज्ञानिक चिंतन के आधार पर जिस तरह की रचना की है, पाठकों और आलोचकों का ध्यान आकर्षित कर रही है। 'आखिरी बाबे' किसान परिवार की तीन पीढ़ियों का संदर्भ उठाते हुए आज की यथास्थिति को बयान करने वाला फर्स्ट रेट उपन्यास है। विस्थापन, पलायन, नशा यहाँ है। डा. मोनोजीत जम्मू से संबंधित पंजाबी कवि और व्यंग्यकार हैं। 'इक नाल इक फ्री' उनका लघु उपन्यास इस साल की खास पुस्तकों में गिना जा सकता है। ओमप्रकाश गासो सांस्कृतिक संदर्भों में चर्चित और उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं जिन्होंने उपन्यास और काव्य के क्षेत्र में भरपूर योगदान दिया है। पंजाब के सभी बड़े पुरस्कार ओमप्रकाश गासो प्राप्त कर चुके हैं। 'इनायत–दर–इनायत' उपन्यास का चिंतन पाठक को रसात्मकता प्रदान कर रहा है। उपन्यास के क्षेत्र में बलदेवसिंह सड़कनामा, अत्तरजीत, बलबीर माधोपुरी, धर्म कम्मयाणा और परमजीत मान के अतिरिक्त गुरिंदरसिंह कलसी, डीएम सिंह और बलबीरसिंह संधू या बूटासिंह चौहान के उपन्यास भी चर्चा में इस साल रहे हैं। इनका नाम क्रमशः लेने लगूँ तो 'जीउणा मौड़, अब जूझन का चाऊ', 'ट्राली युग', '378 दिनां जिना दिल्ली हिला दिती', 'कोरोना ते किसान', 'इक दूजे दे हत्थ', 'लिफाफा', 'दीजे बुद्धि विवेक', 'गोल्डन पंच' और 'उजड़े खूहदा पानी' का नाम गिनाऊँगा। इसी तरह कुछ अन्य पंजाबी उपन्यासों में 'मील पत्थर' (मीनू चहल), 'काला चिट्टा' (रूप ढिल्लों), 'कब्जा' (कर्मवीर सिंह सूरी), 'पासो दा मुंडा' (रामसिंह), 'हवालात' (जसबीरसिंह छिंदा), 'योद्धा' (मनमोहन सिंह विर्क) और 'सतरंज दे मोहरे' (कृष्ण प्रसाद) के नाम लिए जा सकते हैं। हमारे यहाँ हरजीत अटवाल, सुखविंद्र सेखों, हरजीत कौर विर्क, वजीर सिंह रंधावा, नछत्तर सिंह गिल, गुरविंदर सिंह, रणबीर कौर

या करणजीत सिंह भाईरूपा के नाम भी उपन्यासकार के तौर पर चर्चा में रहे हैं। इनके उपन्यासों में क्रमशः :सफर', 'असीं बंदूका नहीं बीजदे', 'सच्चेसरण दी होई सिक्खी', 'दूध दी लाज', 'लाजो', 'अंबरी उड़न तो पहलां', 'अजे तां मंजिल दूर है' को मैं पठनीय मान रहा हूँ। इन उपन्यासों में समाज, परिवार, मनुष्य का अंतरद्वंद्व, आर्थिक विखंडन, राग द्वेष के अतिरिक्त प्रेम और वैराग्य के स्वर उभरकर सामने आ रहे हैं। पंजाबी उपन्यास खूब बिकते हैं और इन पर चर्चा भी हुआ करती है। विश्वविद्यालयों में साहित्यिक संस्थाओं के द्वारा आकाशवाणी केंद्रों पर ऐसी चर्चा इन उपन्यासों को लेकर मुखरित रही है। शोध खोज का विषय भी उपन्यास विधा इस साल बनी रही है।

गद्य के क्षेत्र में 'फेस–टू–फेस' डॉ. कुलदीप सिंह 'दीप' की किताब इस साल पढ़ी जाती रही है। 'साहित्य संजीवनी', जंगबहादुर गोयल की महत्वपूर्ण किताब चर्चा में है, जो सिंह ब्रदर्स अमृतसर से प्रकाशित हुई है। 168 पन्नों की इस किताब में पेपर बैक, मूल्य 200 रुपए रखा गया है। लेखक जंग बहादुर गोयल रूपांतरकार और अनुवादक के रूप में पंजाबी में अपना स्थान बना चुके हैं। अंग्रेजी में विश्व साहित्य को पढ़कर इन्होंने पंजाबी और हिंदी के माध्यम से दर्जनों क्लासिक पुस्तकों का संक्षिप्तीकरण प्रस्तुत किया है। साहित्य चिंतन के पाँच–छह अध्यायों में जंगबहादुर गोयल बता रहे हैं– पुस्तकें मेरी जिंदगी में, बिबलियोथैरेपी (पुस्तक चिकित्सा), साहित्य अध्ययन के चिकित्सक प्रभाव, लेखन थैरेपी, लिट्रेरेरीक्लीनिक, साहित्य समाज का सृजन। यूँ 'साहित्य संजीवनी' के माध्यम से जंगबहादुर गोयल ने अपने जीवन में किताबों का महत्व, समाज के लिए, पुस्तकों की उपयोगिता और मानसिक तनाव, के लिए सहायक ग्रंथों का सहारा लेकर, उनका इलाज कैसे हो सकता है या होता रहा है, विश्व साहित्य के माध्यम से उद्धरण देकर 'साहित्य संजीवनी' में स्पष्ट किया है। गुरप्रीतसिंह तूर की किताब 'दतर' हमारे प्रांतीय और राष्ट्रीय कार्यालयों के बारे में पर्दाफाश करती है। दफ्तरों में क्या और किस तरह हो रहा है, उपेक्षा, अवहेलना का माहौल, नागरिक को दफ्तर में क्यों झेलना पड़ता है। यहाँ मनोयोग से काम करने वाले अधिकारी और कर्मचारी किस तरह स्थितियों और समस्याओं को 'डील' कर जाते हैं। अपने जीवन अनुभवों के आधार पर गुरप्रीतसिंह तूर 120 पन्नों की इस महत्वपूर्ण पेपरबैक किताब में बयान कर रहे हैं। 'दफ्तर' पुस्तक के तीन भाग, अपनी–अपनी जगह महत्वपूर्ण जान पड़ते हैं। सरकारी नौकरियों की अपेक्षा और उपेक्षा के साथ इनका अस्तित्व और बजट, महत्व, सेवाभावना, लोक व्यवहार, काम की जानकारी, दफ्तरों का समय, राजनीतिक प्रभाव और शिक्षा एवं समीक्षा जैसे विषयों पर श्री तूर ने अपनी पुलिस की नौकरी के दौरान अनुभवों के आधार पर बतलाया है। साहित्य की विधाओं से अलग हटकर सामाजिक परिवेश में यह एक खास पुस्तक है।

'जिंदगी दी किणमिण काणी' निरंजनसिंह सैलानी की ग्दयविधा में एक ताजा किताब है। सैलानी कवि और गद्यकार के रूप में पहचान बना रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन्होंने अपने जन्म, शिक्षा, दीक्षा, कार्यक्षेत्र और व्यवहार से संबंधित तीन भाग बनाकर उल्लेखनीय विवरण दिया है। लगभग 20 अध्यायों में यहाँ 'मेरी पृष्ठभूमि', खानदान, मेरा नगर, स्कूल, यात्राएँ, मित्र समूह, साहित्यिक संस्कार, प्यार मोहब्बत, भय जैसे विषयों को रोचक बनाकर प्रस्तुत किया है। लखनऊ, मसूरी, उदयपुर या पाकिस्तान की अपनी यात्राओं को भी सैलानी यहाँ बताना नहीं भूले। पंजाब में मालवा, माझा और दोआबा के साथ एक चौथा भौगोलिक क्षेत्र 'पुआध' भी है। 'जिंदगी दी किणमिण काणी' का तीसरा और अंतिम हिस्सा जन्मभूमि मालवा–कर्मभूमि पुआध, पुआध दर्शन एक अविस्मृत स्मृति, पुआध गाथा, गाँव मर्दापुर यहाँ शामिल हैं। यूँ इस किताब के माध्यम से नॉस्टालजिया के साथ आंचलिकता का स्वर सामने आ रहा है। डॉ. सुदर्शन गासो कवि और प्राध्यापक द्वारा रचित पुस्तक 'कित्थे नहीं भगतसिंह'? एक स्मृति है, जिसमें भगतसिंह के बारे में पंजाबी और भारतीय साहित्य से उद्धरण लेकर भगतसिंह के जीवन और कार्य के महत्व को दिखाने की चेष्टा की है। गुरु गोबिंदसिंह स्टडी सर्कल लुधियाना लोकोपयोगी सेवाओं में कार्यरत संस्था है, जहाँ से 'निरधन–सरधन' (परमजीतसिंह सुचिंतन) किताब मानवता और मनुष्य मात्र के लिए संवेदनात्मक स्तर पर उपयोगी दिखाई दी है। इसी तरह 'साहिवजादियां दा शहीदी सफर' (गुरप्रीतसिंह नियामिया) की किताब आई है। नियामिया पत्रकार हैं। उन्होंने सिक्ख इतिहास को लेकर, उनके साहिबजादों की शहादत संबंधी यात्रा का ऐतिहासिक चित्रण किया है। पत्रकार लेखक अपनी कलम द्वारा समाज के लिए दिशा दर्शक सिद्ध हो रहा है।

पंजाबी साहित्य संसार में भारतीय और प्रांतीय साहित्य अकादमियों या भाषा विभाग आदि से भी बड़ी राशि प्रदान करने वाली विदेशी संस्था 'ढांहां' साहित्य पुरस्कार दे रही है। यह पंजाबी भाषा के लिए विश्व साहित्य में विदेशी मुद्रा में मिलने वाला एक आकर्षक ईनाम कहलाता है। विगत कुछ वर्षों से कैनेडा, अमरीका जैसे देशों में हमारे प्रवासी परिवार इस पुरस्कार का संचालन कर रहे हैं। इस साल इसकी घोषणा बलविंदर ग्रेवाल और अरविंदरकौर धालीवाल को देने की घोषणा हुई है। पाकिस्तान के रचनाकार जावेद बूटा को भी यह पुरस्कार इसी साल के लिए घोषित किया गया है। रविंदर भवन, नई दिल्ली की साहित्य अकादमी, के भारतीय पुरस्कारों में 2022 के लिए पंजाबी में 'मैं अयनघोष नहीं', कहानी संग्रह पर सुखजीत को और 'नगारे वांग बजदे शब्द' अनूदित काव्यकृति (मूल निर्मला पुतुल) के लिए भूपेंद्रकौर प्रीत को अनुवाद पुरस्कार के रूप में 2022 के लिए चुना है। विश्व पंजाबी कान्फ्रेंस 2022 टोरांटो में, जगत पंजाबी सभा द्वारा आयोजित करवाई गई। इसका आयोजन 'सरी' (कैनेडा) के पंजाबी भवन में संपन्न हुआ।

साहित्यिक पत्रिकाओं में एक अंतराल के बाद पत्रिका 'हुण' का नया अंक सामने आया तो 'राग' पत्रिका भी स्थगन के बाद फिर से पाठकों के सामने आ पाई है। 'तासमन' पत्रिका ने अपनी पहचान ही नहीं बनाई, पाठकों, आलोचकों के साथ अपना लगाव भी सिद्ध किया है।

विचाराधीन साल 2022 मूलतः किसान और कोविड चिंतन पर केंद्रित इसलिए रहा कि पंजाबी की लगभग प्रत्येक विधा में इन विषयों का प्रभाव हमें देखने, पढ़ने को मिलता है। सर्वाधिक पुस्तकें ऐसे विषयों पर आई हैं केवल नाट्य मंच और गोष्ठियों का ही आयोजन नहीं किया गया। केवल धालीवाल ने 40 दिन के लिए नाट्य कार्यशाला विरसा विहार अमृतसर में आयोजित की। इसी तरह गजेंदरसिंह द्वारा गुरुनानक गुजरांवाला इंजीनियरिंग कॉलेज लुधियाना में भी 40 दिन की नाट्य कार्यशाला का आयोजन सिद्ध करता है कि पंजाब में नाट्य गतिविधियाँ प्रभावित करने वाली हैं। सतीश कुमार वर्मा अपने मिनी नाटकों से जुड़े 'नैनो नाटकों' के द्वारा 'पंजाबी ट्रिब्यून' में प्रति सप्ताह उपस्थित होते हैं। संक्षिप्तम नाटक कुछ वाक्यों में लिखकर सतीश वर्मा ने नई जमीन तोड़ी है। सतीश वर्मा पर ही कुछ किताबें भी आई हैं, जैसे 'प्रिजम विचो दिखता सतीश कुमार वर्मा' (संपादक डा. दीप), मेरे सारे नाटक, नवें नाटक नवें नक्श, और मेरे नुक्कड़ नाटक। सार रूप में हम कह सकते हैं कि कहानी, कविता, नाटक, गद्य साहित्य में ही नहीं पंजाबी साहित्य संसार में रचनात्मक कार्यों के लिए गोष्ठियाँ सेमिनार, संवाद अथवा मंच के आयोजन होते रहे हैं। यह साल पंजाबी साहित्य का एक सफल वर्ष माना जा सकता है।

❑❑❑

13

बांग्ला साहित्य



सुब्रत लाहिड़ी

सेवानिवृत्त अध्यक्ष, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता व रवीन्द्रभारती विश्वविद्यालय, कोलकाता। प्रमुख रचनाएँ– 'बांग्ला क्रिया रूप', 'आधुनिक हिंदी कहानियाँ', 'जिल्द बन जाने से पहले' (कविता संकलन) 'काश कोई शीशा दिखाता' (कविता संकलन) 'ग्राम बांग्ला की कहानियाँ' (संपादन)। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

धीरे–धीरे लोग पिछले वर्षों के कोरोना महामारी के आतंक से मुक्त हो रहे हैं। अब फिर से सारे लोग अपने मन के अनुसार पारिवारिक और सामाजिक जीवन जी रहे हैं। लोगों में मेल मिलाप बहुत बढ़ा है। मास्कमुक्त चेहरों को देखकर लगता है कि सब सुनहरे कल के लिए उतावले हैं। साहित्य सृजन में भी इस स्वाभाविकता की छाप दिख रही है।

2022 में बांग्ला साहित्य जगत में हर विधा पर ढेर सारे प्रकाशन हुए हैं। विशेषतः कथा साहित्य और कविता के क्षेत्र में कई नए हस्ताक्षरों की रचनाएँ चर्चित रही हैं। इसके अतिरिक्त गद्य की विभिन्न विधाओं में कई महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं।

कथा साहित्यः

उपन्यास : बांग्ला संगीत जगत के विशेषतः बांग्ला बैंड के महत्वपूर्ण लोकप्रिय गायक, संगीतकार एवं गीतकार रूपम इस्लाम ने बांग्ला उपन्यास साहित्य में नया संयोजन किया है। वर्ष 2022 के प्रथम दिन यानी पहली जनवरी को इनके दो रोमांचक उपन्यासों को एक ही जिल्द में सम्मिलित कर 'अनामिका बोले डाकते पारी कि तोमाय?' प्रकाशित हुआ है। उन्होंने वैसे रोमांचक कथा साहित्य के पारंपरिक ढाँचे को तोड़–मरोड़ कर उपन्यास को एक नया आयाम दिया है जो उनकी विशेषता है।

दोनों उपन्यासों के कथानक रहस्य और रहस्य के उद्घाटन पर आधारित हैं। एक सफल फिल्म अभिनेता आश्चर्य और मनोविज्ञानी डॉक्टर ब्रह्म ठाकुर इस उपन्यास के दो मूल चरित्र हैं। अप्सरा, अनामिका और निशाचर ये तीन स्त्री पात्र हैं। इस उपन्यास में अपराध जगत, ज़मीन माफिया, साइबर क्राइम, अपहरण, मारक वीडियो गेम आदि कथानक के केंद्र में घूमते रहते हैं। रहस्य के उद्घाटन में अनुभूति और मन को महत्व दिया गया है।

पहले उपन्यास के कथानक में कोई अपराध घटित नहीं होता है। अपितु नायक का विगत जीवन रहस्यमय है। ब्रह्मा ठाकुर ने उसी रहस्य का उद्‌घाटन किया है। नायक आश्चर्य अपनी फिल्मी दुनिया में सफल है फिर भी वह अपने अतीत में जीता है। वह मादक द्रव्य से आसक्त होकर विभ्रम और माया जगत में जीता है। इसी दिमागी विभ्रम में वह निशाचरी को देखता रहता है। निशाचरी छत की मुंडेर पर बैठी हुई है ऐसा आश्चर्य को लगता है। उसके आकर्षण से वह शून्य में कूद जाता है। जागतिक सब कुछ त्यागकर वह हवा और हवा के वजन को लेकर सोचता है। आश्चर्य अजीब तरह का जीवन जीता रहता है।

बह्मा ठाकुर मनोविज्ञानी है। दोनों उपन्यासों में निहित रहस्यों का उद्‌घाटन उन्होंने ही किया है। यह चरित्र स्वयं शक के सहारे जीवन जीता है। हर चीज पर शक करना उसकी आदत है। ब्रह्म ठाकुर को लगता है और लगातार सोचता भी है कि वह षडयंत्र से घिरा हुआ है। रहस्य उद्‌घाटन में वह विचित्र चिकित्सा पद्‌धति अपनाते हैं। यहाँ तक कि स्नायुतंत्र को उत्तेजित करने के लिए खतरनाक दवाओं का भी प्रयोग करते हैं। आश्चर्य के मामले में ऐसे ही कुछ ड्रग्स का उपयोग उन्होंने किया है।

तीन स्त्री पात्रों में अप्सरा मित्र ही वास्तविक स्त्री चरित्र है। वह आश्चर्य के कॉलेज की मित्र है। फिल्म का निर्देशन करती है। आश्चर्य से गोपन प्रेम करती है। बाकी दो स्त्री पात्र अमूर्त हैं। निशाचरी एवं अनामिका दोनों अशरीरी कल्पना या विभ्रम में सृष्ट पात्र हैं।

वस्तुतः अपने दोनों उपन्यासों के माध्यम से उपन्यासकार रूपम इस्लाम ने अस्तित्व का संकट, जीवन की यंत्रणा और जीने के लिए आनंद ढूँढने का प्रयास किया है। बांग्ला उपन्यास साहित्य में ब्रह्म ठाकुर का चरित्र नयापन लिए हुए है।

जादूकरीः तपन बंद्योपाध्याय ने महत्वपूर्ण और अनछुए विषय को केंद्र में रखकर इस उपन्यास का सृजन किया है। साथ ही साथ कुछ मौलिक सवालों को पाठकों के सामने उपस्थापित किया है। सदियों से मनुष्य अपनी स्वार्थसिद्‌धि के लिए बड़ी निष्ठुरता से प्रकृति का ध्वंस करता आ रहा है। सभ्यता के विकास में पर्यावरण और अरण्य के विनाश से मनुष्य समाज खुद को मौत की ओर धकेल रहा है। इसी यथार्थ को इस उपन्यास के माध्यम से परीकथा के रूप में उपन्यासकार ने उकेरा है। मानव और मानवी की कथा सृजन के माध्यम से सभ्यता के विकास का चित्रण किया गया है। लेखक ने जादुई यथार्थ का प्रयोग किया है।

वसुंधरा साबुन का झाग हवा में उड़ाती है और हर एक झाग मिट्‌टी छूते ही फट जाता है। फटे हुए हर एक झाग से सुंदरी लड़की निकल आती है। वहीं से मानवी मानव को पसंद आ जाती है। वह उसे ले जाना चाहता है। यहीं पर कहानी में नया

मोड़ आता है। वसुंधरा कहती है मानव पहले तुम बढ़िया नौकरी करो, बड़ा–सा फ्लैट ले लो फिर मानवी को ले जाना।

मानव आलीशान मकान बनाना चाहता है। उस प्रयास में प्रकृति और पर्यावरण का नाश करता जाता है। उपन्यास में कई कथाएँ एक साथ चलती हैं। मानव, देवजीत, मानवी, अदिति, वसुंधरा, सायनी के ईर्द–गिर्द कथानक विकसित होता है।

हृदये रयेछ गोपनेः विश्वभारती के प्रोफेसर एवं रवींद्र विशेषज्ञ अमित्रसूदन भट्टाचार्य का यह उपन्यास रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन पर आधारित पहला उपन्यास है। रचना शैली की दृष्टि से यह जीवनीमूलक ऐतिहासिक उपन्यास है। सौ साल पहले के शांतिनिकेतन के पुराने आश्रमिक परिवेश पर यह उपन्यास रचा गया है। साठ परिच्छेदों में इस उपन्यास का कथानक विस्तृत है।

काशी निवासी फणीभूषण अधिकारी की पुत्री प्रीति अधिकारी उर्फ लेडी रानू मुखर्जी और रवींद्रनाथ का प्रेम संबंध इस उपन्यास के केंद्र में है।

रवींद्रनाथ की जन्मशती में लेडी रानू मुखर्जी शांतिनिकेतन आई हैं। उन्हें अपने शैशव और यौवन के दिनों की बातें याद आती हैं।

वे सारे दिन रवींद्रनाथ के साथ घनिष्ठ जुड़ाव के दिन थे। लेडी रानू मुखर्जी की स्मृति कथन पर यह उपन्यास आगे बढ़ता है। रानू कहती है मेरे विवाह के पहले यौवन के सात बसंत कवि के सानिध्य में मैंने व्यतीत किए हैं।

उपन्यासकार ने साठ साल के रवींद्रनाथ और किशोरी रानू अर्थात दो अनमेल उम्र के स्त्री–पुरुष के घनिष्ठ प्रेम मधुर संपर्क के सत्य को ढूँढ़ने का प्रयास किया है। लेडी रानू के शब्दों में मेरी आँखों के सामने सब स्पष्ट हो गया। इसमें लुकाछिपी नहीं है। यह प्रेम सत्य, निर्मल, स्वतःस्फूर्त, सुंदर और सृष्टिशील है।

असल में रवींद्रनाथ की बेटी बेला की मृत्यु से कवि के मन में जो शून्यता आई, रानू के सानिध्य ने उसे मिटा दिया। अपनी बेटी की मृत्यु – यंत्रणा भूलने के लिए कवि लगातार दस बारह दिन अपने प्रिय बंधु रानू के पास जाते रहे। रवींद्रनाथ रानू को स्नेह करते थे। उपन्यास में रवींद्रनाथ और रानू के सृजनात्मक संपर्क, मानसिक संपर्क, मान–अभिमान भरे हुए हैं। उपन्यास के सृजन के लिए विभिन्न तथ्य, चिट्ठी पत्री, सच्ची घटनाएँ आदि के साथ कल्पना का सहारा लिया गया। रवींद्रनाथ केवल कवि नहीं है बल्कि चित्रकार, कलाकार, साधक, प्रेमिक, समाजसेवी और महान शिक्षक भी हैं। उनके चरित्र के विभिन्न पहलुओं को बड़े निरपेक्ष रूप में चित्राया गया है। सर्वोपरि मनुष्य रवींद्रनाथ के मानवीय पक्ष को इस उपन्यास में बड़ी आत्मीयता से उभारा गया है।

गृहयुद्धः शोभन सामंत का यह उपन्यास आम आदमी के जीवन संघर्ष की यथार्थ कथा है। जीने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान बुनियादी आवश्यकता है। इसे पाने के बाद भी एक और चाहत रह जाती है। वह है इंसान के रूप में उसके 'हक'

की चाहत। जिसे पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। हक छीन लिए जाने पर आदमी आदमी न रहकर अमानुष बन जाता है। नतीजतन समाज में वर्ग–विभाजन होता है। एक दल जिसके पास बहुत कुछ है और दूसरा दल जिसके पास कुछ भी नहीं है केवल भूख ही है। रामनगर गाँव के हेमंत, विलास, कालीपद ऐसे ही लोग हैं जो इस उपन्यास के अहम पात्र हैं।

हेमंत कुछेक दिन पहले स्कूल में पढ़नेवाले अपने बेटे का पढ़ना–लिखना बंद करवाकर उसका स्कूल जाना छुड़वा देता है। वह कहता है हमारे घर पढ़ाई–लिखाई! चावल खरीदने के पैसे नहीं जुटा पाता हूँ तो बहीखाता कहाँ से खरीदूँ!! भैया हमारे घर के बच्चे के पढ़ने और तुम्हारे घर के बच्चे के पढ़ने में जमीन आसमान का फर्क है ।

शिक्षा और भूख मिटाने में से एक को चुनना है। हेमंत भूख की ज्वाला सह नहीं पाता इसलिए शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाता। शासक वर्ग तो यही चाहता है। विलास और कालीपद भी यही मानते हैं कि सत्ताधारी के बनाए नियमों को स्वीकार लेने में ही शांति है। चुपचाप मुँह बंद कर सब कुछ मान लो। हक के लिए आवाज उठाना नेता को पसंद नहीं है। आवाज मत उठाओ तो चारों ओर शांति ही शांति रहेगी। विलास कहता है यह तो श्मशान की शांति है।

इस उपन्यास में लेखक ने दीप जैसे पात्र का भी निर्माण किया है। किशोर दीप किसी से नहीं डरता है। युवा होने के बाद अपने लक्ष्य तक पहुँचने की ठान लेता है। हक के लिए संघर्ष करता है। लोगों को एकजुट कर आंदोलन संगठित करता है। लेखक ने यथार्थ चित्रण के साथ आगामी संभावना का एक सशक्त संदेश पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

दंडित बांगालीर दंडकारण्य विषादवनः प्रज्ञा पारमिता द्वारा रचित उपन्यास का परिप्रेक्ष्य दंडकारण्य भेजे गए बयालीस हजार शरणार्थी परिवार का जीवन संघर्ष है। वस्तुतः देश विभाजन के बाद लाखों परिवार पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, असम में शरणार्थी बनकर चले आए। इनमें से जो लोग खेतीबारी से जुड़े हुए थे उन्हें दंडकारण्य भेज दिया गया। पथरीली जमीन को कृषि योग्य बनाने का अथक संघर्ष, उनकी जिजीविषा, सामाजिक आर्थिक परिस्थिति, खुशहाल जीवन और परिवेश बनाने में एकजुट होकर प्रयास करना, सुख–दुख और यथार्थ के आधार पर इस उपन्यास के कथानक का ताना–बाना रचा गया है।

रचनाकार स्वयं इन घटनाओं से जुड़ी रहीं। सभी प्रक्रियाओं को उन्होंने अपनी आँखों के सामने देखा है। क्योंकि लेखिका के माता–पिता दंडकारण्य योजना के कर्मी रहे हैं। इसलिए लेखिका को बड़ी नजदीकी से इन विस्थापित लोगों का संघर्ष देखने का अवसर मिला है। यह उपन्यास उसी का यथार्थ चित्रण है।

अरण्या का बचपन मलकानगिरी में बीता। वहीं वह बड़ी भी हुई। बाद में वह वहाँ से चली जाती है। बरसों बाद अपने प्रियजन समिध के साथ घूमने के लिए दंडकारण्य आती है।

यहाँ के रहने वालों की जो जीवनचर्या अरण्या ने बचपन में देखी थी उसे ही उपन्यास का कथा केंद्र बनाया। केवल विस्थापित शरणार्थी ही नहीं बल्कि कोरापुट, मलकानगिरी के आदिवासी बेडा, गोंड, शबर, कंद, कया जनजाति की जीवन चर्या का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। अरण्या के बचपन का साथी जनजाति किशोर डोरा भी इस अभियान में महत्वपूर्ण पात्र है। दोरा अपनी बेटी का नाम 'अर्ना' रखता है। अर्ना तो अरण्या का ही शब्दांतर या भाषांतर है।

अरण्या को लिखा हुआ उसके पिता का यह खत इस उपन्यास में निहित जिजीविषा और मूल्यबोध का निचोड़ है। उन्होंने लिखा है ''जीवन में जो भी करो, ऐसा कुछ देने की बात किसी से मत कहना जो तुम नहीं दे पाओगे। किसी भूखे आदमी को आहार मत दिखाना अगर उसे नहीं देना चाहते हो। ऐसी आशा मत दिखाना जिसे तुम्हारे लिए करना असंभव है। ऐसा करना तो राजनीति है।''

रक्ताक्ष जन्मदिनः जयंत दे के इस उपन्यास में कोलकाता शहर में जन्मदिन की पार्टी में एक युवक की मौत के सच को ढूँढ़ने का प्रयास किया गया है। मौत की इस भयंकर घटना के साथ कई नाबालिग लड़के और लड़कियाँ जुड़ी हुई थीं।

इस सच्ची घटना ने शहर, गली–कूचों में हलचल मचा दी थी। नव्य पीढ़ी या जेनरेशन गैप के मूल्यबोध, जीने के तरीके पर कई सवाल खड़े हो उठे थे। मीडिया, प्रिंट मीडिया और समाज के हर स्तर पर भी इसकी चर्चा हुई। बच्चों के परिवार, मीडिया और नागरिक समाज की चर्चा को कोलाज में समेटकर जयंत दे ने इस उपन्यास का सृजन किया और यथार्थ एवं कल्पना के सहारे सच की गहराई तक पहुँचने का प्रयास किया है। उस पार्टी में रहा आर्यनील, उसके पत्रकार और नाटककार पिता अमित्रसूदन दासगुप्ता तथा उसकी माँ शकुंतला देवी उपन्यास के प्रमुख चरित्र हैं। अमीरों के आवासीय परिसर में प्रख्यात कलाकार सौरीन मुखर्जी की बेटी श्री के जन्मदिन की पार्टी में आबीर की मौत हो जाती है। मौत की इस घटना के साथ सत्रह नाबालिग बच्चों का नाम जुड़ गया। शहर की हर गली कूचे, चाय की दुकान, स्कूल कॉलेज, इस घटना का चर्चा केंद्र बन गया। आर्यनील और उसके परिवार के लिए हर दिन लाल बाजार और स्थानीय थाने में हाजिरी देना रोजमर्रा का हिस्सा बन गया था। मीडिया ट्रायल में नाबालिगों को अपराधी घोषित कर दिया गया। सारे मानवीय संबंध क्षत–विक्षत होने लगे। पूरी नव्य पीढ़ी पर लांछन लगाया जा रहा था।

अमित्रसूदन के परिवार के माध्यम से उपन्यासकार ने समाज को कुछ सवालों और निर्मम सत्य के सामने खड़ा कर दिया, उसी तरह से आर्यनील जैसा चरित्र आने

वाले कल के लिए एक सकारात्मक प्रतीक बन जाता है। यह उपन्यास दो पीढ़ियों के बीच अंतर संघर्ष और कल के लिए रोशनी की खोज का सामाजिक विश्लेषणात्मक प्रयास है।

मृतेरा कोथाओ नेइः सोमजा दास रचित इस उपन्यास में प्राइवेट महिला जासूस टापुरदि उर्फ संघमित्रा के द्वारा अपराध जगत के रहस्य के पर्दाफाश का चित्रण है। वर्तमान विश्व में विशेषत तीसरी दुनिया में मानव अंग की तस्करी जैसा सबसे बड़ा घृण्य अपराध प्रायः रोज घटित हो रहा है। टापुरदि अपराध जगत के इस दुष्कांड का उद्घाटन करता है।

अनाथ किशोर लालन इस उपन्यास का केंद्रीय चरित्र है। वह एक दिन नवदिगंत होम से लापता हो जाता है। यादवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर उत्तीय सोम समाजसेवी हैं और पथ शिशुओं को लेकर काम करते हैं। वे टापुरदि के मित्र भी हैं। उनके आग्रह पर टापुरदि लालन के गायब हो जाने के रहस्य का समाधान करने का दायित्व लेती है। इसी बीच जोका एक्सप्रेसवे पर एक अजनबी प्रौढ़ व्यक्ति की लाश मिलती है। पोस्टमार्टम के बाद पता चलता है कि उनके दोनों गुर्दे निकाल लिए गए। पुलिस ने भी जाँच–पड़ताल शुरू कर दी। लेकिन मुख्यमंत्री अम्लान चक्रवर्ती के विशेष अनुरोध पर टापुरदि नवदिगंत होम के बच्चों के खो जाने के रहस्य उद्घाटन में तहकीकात करना शुरू कर देती है। टापुरदि की जाँच पड़ताल से हत्या, अपहरण और अंग तस्करी में अपराध जगत की गहरी साजिश सामने आने लगी।

मानव अंग तस्करी चक्र का सरगना राघव सामंत समाज में बहुत ही प्रभावशाली आदमी है। क्योंकि उसे राजनीति और प्रशासन से मदद मिलती है। इसीलिए वह निडर होकर ऐसा घृण्य काम करता रहता है। स्वास्थ्य सेवा के नाम पर भी विभिन्न प्रकार के अपराधिक कार्य लगातार चल रहे हैं। अंततः टापुरदि अपराध चक्र का पर्दाफाश करती है।

उपन्यासकार सोमजा दास अपने उपन्यास के माध्यम से अंग तस्करी के विभिन्न पहलुओं से समाज को परिचित कराती हैं साथ ही साथ इससे बचने के लिए आगाह भी करती हैं। यह उपन्यास आज के समय का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

जलेर उपर पानीः स्वप्नमय चक्रवर्ती ने देश विभाजन के बाद पश्चिम बंगाल आए शरणार्थियों के यंत्रणामय जीवन को अपने उपन्यास का विषय बनाया। इस परिप्रेक्ष्य पर मंतव्य करते हुए स्वयं उपन्यासकार का कहना है कि देश विभाजन के बाद विस्थापित लोगो के जीवन पर कई उपन्यास रचे गए हैं। पर शरणार्थी पुनर्वास और कॉलोनी बसाने को लेकर कथा साहित्य नहीं के बराबर है। इसीलिए इस विषय को आधार बनाया गया। अनंगमोहन इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। शरणार्थी अनंगमोहन पूर्वी पाकिस्तान से आकर बागबाजार में रहते थे। लेकिन एक दिन वे वहाँ से खदेड़ दिए जाते हैं। तब वे सपरिवार बागजोला खाल के पास बने शरणार्थी

कॉलोनी प्रफुल्लनगर में आकर बस गए। पूरी शरणार्थी कॉलोनी में संपूर्ण पूर्वी बंगाल की छवि मिलती है

संस्कृत के पंडित अनंगमोहन भट्टाचार्य सपरिवार नोआखाली से आए थे। इस उपन्यास का कथानक नोआखाली से कोलकाता तक विस्तृत है। उनका नाती विप्लव या बिलु समाज में सम्मानजनक प्रतिष्ठा पाने के लिए संघर्ष करता रहता है। और वह संघर्ष से उपजा कल का यथार्थ है। संघर्ष करते हुए बिलु ऊँचाई तक पहुँचता है। संघर्ष से स्वप्नपूर्ति की यात्रा सफल होती है। वह केंद्र सरकार में मौसम विज्ञानी बनता है। इसी तरह बिहार से सपरिवार शरणार्थी बनकर पाकिस्तान चले गए उजमा परिवेश विज्ञानी बन जाती है। किसी विज्ञान सम्मेलन में विप्लव और उजमा में परिचय होता है। दोनों में संबंध गहराता है। फिर विस्थापित होने की दर्दनाक यंत्रणा झेले ये दोनों विवाह कर लेते हैं। यह देशों के राजनीति मुक्त आम लोगों के बीच सौहार्द का प्रतीक है।

उसी शरणार्थी कॉलोनी में रहनेवाले कैलाश,देवनाथ गुणघर, रुनु, माधुरी, सुकुमार, जैसे पात्रों का जीवन वृत्तांत भी इस उपन्यास में चित्रित है। कैसे डॉली नाम की एक ईसाई लड़की पतिता बन जाती है। उसका भी वेदना भरा चित्र है। स्वतंत्रता सेनानी कैलाश देवनाथ भी इस उपन्यास के महत्वपूर्ण पात्र हैं। देश विभाजन और उत्तर काल को लेकर कैलाश देवनाथ एक महाकाव्य लिख रहे हैं। एक बड़े कालखंड को उपन्यासकार ने इस उपन्यास में बड़ी गहराई और विश्लेषणात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

इस उपन्यास में संघर्ष, आश्रय की खोज, प्रेम, राजनीतिक हिंसा, विस्थापित का पुनर्विस्थापन, अंधेरे से प्रकाश की ओर लौटना आदि कई घटनाओं के माध्यम से उजागर हुआ है। सांस्कृतिक संघर्ष भी चित्रित हुआ है। यह उपन्यास इतिहास, दर्शन और धर्मतत्व को एक नया आयाम देता है।

फुलगुलो सरिए नाओः बांग्ला साहित्य में जीवनीमूलक उपन्यास लेखन बहुत कम हुआ है। समीरण दास ने बांग्ला के प्रगतिशील साहित्यकार मानिक बंद्योपाध्याय के जीवन पर आधारित उपन्यास रचा है जो इन दिनों बहुचर्चित है। वैसे उपन्यासकार ने इसके पहले विद्यासागर के जीवन के अंतिम बीस वर्षों को लेकर 'निसंग ईश्वर' और महाकवि माइकेल मधुसूदन दत्ता के जीवन पर आधारित तीन खंडों में 'मधुमय तामरस' की रचना की है।

'फुलगुलो सरिए नाओ' में उन्होंने मानिक बंद्योपाध्याय के कैशोर अर्थात उनकी माता के देहांत के बाद के समय से आरंभ कर उनके विवाह तक तीस साल के कालखंड को समेटा है। इस समय तक उन्होंने कई महत्वपूर्ण उपन्यास जैसे 'पुतुल नाचेर इतिकथा', 'पद्मा नदीर माझी', लिख चुके थे। इन उपन्यासों के प्रकाशन से बांग्ला साहित्य में हलचल मच गई। मानिक बंद्योपाध्याय ने मध्यमवर्ग से लेकर समाज

के मेहनतकश लोगों को लेकर ढेर सारे उपन्यास और कहानियों का सृजन किया है। उनके परिवार के लोग चाहते थे कि वे वैज्ञानिक बनें पर मानिक बंद्योपाध्याय ने साहित्य सृजन को ही महत्व दिया। बांग्ला में मनोवैज्ञानिक उपन्यास या कहानियों की रचना का श्रेय सबसे पहले इनको जाता है।

तेभागा आंदोलन पर आधारित इनकी कहानी 'हारानेर नात जमाई' और 'छीनकर क्यों नहीं खाया' आदि बहुचर्चित कहानियाँ बांग्ला कहानी साहित्य को एक नई दिशा देती हैं।

समीरण दास ने विभिन्न तथ्यों के आधार पर मानिक बंद्योपाध्याय के सृजन संघर्ष, उनकी प्रगतिशील सामाजिक चेतना और वर्गहीन समाज निर्माण के लिए उनकी छटपटाहट को बड़ी मार्मिकता से उकेरा है। मानिक बंद्योपाध्याय ने कुल छत्तीस उपन्यास और एक सौ सतहत्तर कहानियों की रचना की है। उनके सत्रह कहानी संकलन प्रकाशित हुए हैं।

समीरन दास मानिक बंधोपाध्याय ने जीवन के हर पहलू को बड़ी बारीकी और निष्ठा के साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

वीर विक्रमी विजय सिंहः यह देवाशीष बंद्योपाध्याय द्वारा रचित एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इतिहास पर आधारित किसी भी विधा के साहित्य का सृजन बड़ा जोखिम का काम है। क्योंकि तथ्य और सत्य पर लेखक को निर्भर करना पड़ता है। इस विषय पर लेखक शत प्रतिशत सफल हुए है। वस्तुतः बंगाल के वीर विजय सिंह ने श्रीलंका पर विजय पाकर उसका नाम सिंहल रखा था। बांग्ला के प्रख्यात कवि सत्येंद्रनाथ दत्त ने इस श्रीलंका विजय को याद करते हुए एक कविता लिखी थी ''आमादेर छेले विजय सिंह लंका करिया जय/सिंहल नाम रेखे गेछे निजेर शौर्येर परिचय।'' (हमारे पुत्र करके लंका जय/सिंहल नाम कर रखा निज शौर्य का परिचय)

उपन्यासकार ने इस उपन्यास का समर्पण करते हुए सत्येंद्रनाथ दत्त की उक्त कविता से प्रेरणा प्राप्ति को स्वीकारा।

उपन्यास का प्रमुख पात्र विजय सिंह विभिन्न देशों पर विजय पाने के पश्चात श्रीलंका को जीता है। बंगाल की सांस्कृतिक, वाणिज्यिक, शिक्षा, उद्योग आदि कई प्राचीन परंपराओं और इतिहास एवं हर क्षेत्र में सफलता को चित्रित करना उपन्यासकार का उद्देश्य रहा है। यह उपन्यास अतिश्योक्ति से मुक्त है।

अंतर्लीनः निर्माल्य राय ने अपने इस उपन्यास के जरिए अनिश्चित मानव जीवन में लोभ, लालसा किस तरह इंसान को अंधकार जगत में धकेल देती है, उसका यथार्थ चित्रण किया है।

सामान तस्करी की तरह मानव तस्करी भी हमारे समाज में होती रहती है। मानव तस्करी से एक व्यक्ति का जीना मुश्किल होता है। नारी की तस्करी हर दिन हमारे बीच में कहीं ना कहीं होती रहती है। डरा या फुसलाकर नारी घर और समाज

के बाहर लाई जाती है। परवीन प्रताड़ित होकर पतितालय पहुँचा दी जाती है। केवल परवीन ही नहीं और भी कई स्त्रियों की जीवन यंत्रणा की कहानी इस उपन्यास में वर्णित हुई है। जबरदस्ती इन्हें नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य किया जाता है। प्रतिवाद करने पर या तो उसकी हत्या हो जाती है या जीवनभर के लिए कहीं गुम हो जाती हैं। कहीं भी उसका पता नहीं चलता। प्रशासन पुलिस की इस मामले में उदासीनता को भी उपन्यासकार ने नजरअंदाज नहीं किया। बल्कि उनकी भूमिका का यथार्थ आकलन किया गया है। समाज में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने संगठन के माध्यम से प्रताड़ित स्त्रियों को पतितालय के अंधकार जगत से निकालकर जीवन और समाज की मुख्य धारा में लौटाने का सतत प्रयास करते हैं। समाजसेवी रेवा के सहयोग से परवीन भी समाज की मुख्यधारा में लौट आती है। मानव तस्करी और उससे बनी सामाजिक समस्याओं को केंद्र में रखकर रचित यह उपन्यास पाठक को सोचने के लिए बाध्य करता है।

आंधारवृत्तः परत दर परत सिलसिलेवार घटनाओं के रहस्य का जाल खोलते हुए इस उपन्यास का कथानक विकसित होता है। उपन्यासकार दीपान्विता राय ने बड़े सहज ढंग से संपर्कों की जटिलता, साथ ही साथ स्त्री अस्तित्व को लेकर ढेर सारे सवालों के सामने समाज को खड़ा कर दिया है। समाज का एक हिस्सा स्त्री को वस्तु मानता है तो दूसरा हिस्सा स्त्री की मर्यादा रखता है उसे प्रेम और श्रद्धा का स्वरूप मानता है।

लेदर गुड्स कंपनी की मालकिन अपराजिता दासगुप्ता और उसकी बेटी श्रीमयी दासगुप्ता के बीच संपर्क बहुत जटिल है। अपराजिता की मृत्यु श्रीमयी को एक रहस्य के सामने खड़ा कर देती है। अपराजिता ने अपनी मृत्यु के पहले गुड़िया नाम की एक लड़की के नाम पर मोटी रकम का फिक्स्ड डिपॉजिट किया था। आखिर कौन है यह गुड़िया? श्रीमयी इसी सवाल का जवाब ढूँढ़ती है और धीरे–धीरे रहस्य गहराता जाता है।

कई और भी चरित्र कथा विकास में अहम हो उठते हैं। अमिय नंदी और उनके यौवन काल की ढेर सारी गलतियों से बने संपर्क कथानक को दूसरा मोड़ देते हैं। इसी तरह विद्यालय शिक्षिका सुमिता और डॉक्टर अर्णव के बीच प्रेम संबंध भी इस उपन्यास में चित्रित हुआ है। कालांतर में पता चलता है कि सुनीता के माता–पिता का परिचय भी अंधकार में डूबा हुआ है। उपन्यास के अंत तक कई आधार वृत्त के जटिल रहस्य सामने आने पर भी उनका कोई समाधान सूत्र नहीं मिल पाता है, उपन्यासकार ने उसे पाठक पर छोड़ दिया है।

इन चर्चित उपन्यासों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकाशकों ने इस वर्ष सौ से ज्यादा उपन्यासों का प्रकाशन किया है। इन प्रकाशित उपन्यासों में विषय वैविध्य उल्लेखनीय है।

कहानीः

आलोच्य वर्ष में कहानी के कई महत्वपूर्ण और बांग्ला साहित्य में बहुचर्चित करीब पैंसठ कहानी संकलन प्रकाशित हुई हैं। इनमें से कुछ एक संकलन की चर्चा की जा सकती है। सबसे पहले स्त्री कहानी संकलन पर चर्चा करना अप्रासंगिक नहीं होगा।

अर्धेक स्वरः अहना विश्वास, कावेरी चक्रवर्ती ने दो खंडों में इस कहानी संकलन का संपादन किया है। बांग्ला साहित्य में स्त्री लेखन और लेखिकाओं की बड़ी समृद्ध परंपरा है। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में राससुंदरी देवी, कैलाशवासिनी, ज्ञानदानंदिनी, सरला देवी, स्वर्णकुमारी, बेगम रोकेगा आदि लेखिकाएँ बामाबोधिनी पत्रिका में नियमित रूप से लिखती थीं। बाद में आशापूर्णा देवी, लीला मजुमदार, महाश्वेता देवी, तस्लीमा नसरीन, सुचित्रा भट्टाचार्य, अनीता अग्निहोत्री आदि लेखिकाओं ने बांग्ला साहित्य को अपने लेखन से समृद्ध किया। आजकल तिलोत्तमा मजुमदार, संगीता बंद्योपाध्याय लगातार लिख नहीं हैं। इसी कड़ी में अहना विश्वास भी बहुचर्चित लेखिका हैं।

आलोच्य संकलन के प्रथम खंड में तेरह लेखिकाओं की तीन–तीन कहानियाँ अर्थात उनतालीस कहानियाँ संकलित हैं। लेखिकाओं में जया मित्र, ज्योत्स्ना कर्मकार, विनता रायचौधरी प्रमुख हैं। दूसरे खंड में तृप्ति सांतरा, पंपा विश्वास, यशोधरा राय चौधरी और दोनों संपादक आहना विश्वास एवं कावेरी चक्रवर्ती की कहानियाँ अर्थात् बयालीस कहानियाँ संकलित हैं। विषय और कथ्य की दृष्टि से संकलित कहानियाँ बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। आज की विभिन्न घटनाएँ जिनका उल्लेख या चर्चा कहीं नहीं होती है ऐसे विषयों को लेकर कहानियों का सृजन विभिन्न कहानीकारों ने किया है।

कुछ बातें जो पुरुषतांत्रिक समाज में महत्वहीन हैं पर स्त्री जीवन के लिए बहुत अहम हैं ऐसी घटनाओं को केंद्र में रखकर आलोच्य संकलन की लेखिकाओं ने अपने अनुभव अभिव्यक्त किए हैं। गाँवबुडो ओ अन्यान्य गल्पः अमर मित्र की कहानियों का संकलन है। इस संकलन के लिए उन्हें 'ओ हेनरी' पुरस्कार मिला है। गाँवबुडो कहानी का प्रधान चरित्र कुसुमपुर गाँव का सत्तर वर्ष के फकीरचांद है। फकीरचांद बहुत दूर के कथाडिहा गाँव के बड़े बाबू के पास जाकर अपनी समस्याओं को बताना चाहता है। वह अकेले है। बीवी पहले ही चल बसी। बेटा एक लड़की के साथ बाप को अकेला छोड़कर भाग गया। समस्याओं से घिरे गाँवबुडो बड़े बाबू के पास जाने को ठान लेते हैं।

बड़े बाबू के पास जाते हुए रास्ते में मिले लोगों ने उनसे अपने–अपने दुख दर्द की बातें बताईं। संथाल गाँव के लोगों की दुर्दशा, रास्ते के किनारे पड़े हुए कुष्ठ रोगी की यंत्रणा और ढेर सारे पीड़ित लोगों ने अपनी यंत्रणा की बातें गाँवबुडो से कहीं। तो गाँवबुडो स्वार्थी व्यक्ति की तरह अपनी ही समस्या की बात बोलने की जगह पर तय करता है कि वह सब की समस्याओं को बड़े बाबू के सामने रखेगा। यहाँ बड़े बाबू

का प्रयोग लेखक ने मिथक के रूप में किया। ठीक जैसे सैमुएल बेकेट के नाटक 'वेटिंग फॉर गोडो' में लोग गोडो के लिए प्रतीक्षा करते हैं पर गोडो मिलता ही नहीं। यहाँ भी बड़े बाबू का इंतजार है मुलाकात की, पर मुलाकात नहीं होती है।

बड़े बाबू से मुलाकात ना हो पाना इस कहानी का क्लाइमैक्स है।

कवि थाकेन हल्दी नदीर धारे, बाबुई बासा, डॉक्यूमेंट, एकटा देश चाइ, एइ चराचर एइ चालचित्र आदि इस संकलन की भिन्न–भिन्न आस्वाद की कहानियाँ है।

'बाबुई बासा' कहानी संकलन एक लेखक के जीवन की त्रासदी है। लेखक की मृत्यु के बाद उनके बच्चे उनकी सारी रचनाएँ, लाइब्रेरी की सारी पुस्तकें बेच देते हैं और बड़े जतन से बनाए मकान को बिल्डर को सौंप देते हैं। लेखक की लेखन यात्रा से बच्चों का कोई सरोकार नहीं हो पाया था। इसीलिए उनकी सृष्टि रद्दी के रूप में रूपांतरित हो गई, यही इस कहानी की ट्रेजेडी है।

डॉक्यूमेंट, एकटा देश चाइ, एइ चराचर एइ चालचित्र कहानियों में अपने अस्तित्व, नागरिकता के लिए जरूरी डॉक्यूमेंट ढूँढ़ ना पाने की यंत्रणा को बड़ी गहराई से उकेरा गया है। कोरोना और लॉकडाउन के समय बने संकट और लोगों की यंत्रणामय विच्छिन्न कैदी जीवन को 'मार्को पोलोर भ्रमण वृत्तांत' कहानी का केंद्रीय विषय बनाया गया। 'अमलेंदु आसछे' कहानी में कोरोना काल की यंत्रणा ही मुख्य विषय रहा है।

कहानीकार अमर मित्र ने अपने समय के हर तरह के संकट को आलोच्य संकलन में पाठकों के सामने रखा है ताकि उनका इनसे सरोकार हो सके।

एक डजन आलो आंधारीः नई पीढ़ी के कथाकार उत्स भट्टाचार्य ने भिन्न–भिन्न परिप्रेक्ष्य में अपनी कहानियों का सृजन किया है। मानव मन की थाह पाना मुश्किल है क्योंकि मनुष्य वैचित्र्यमय होता है। प्रेम, नफरत, भय आदि मनोविकार से मानव मन मुक्त नहीं होता है। कहानीकार ने भय को केंद्र में रखकर प्रत्येक कहानी में उसके विभिन्न पहलुओं से कथानक रचा है। इस संकलन में बारह कहानियाँ है। कभी–कभी कामना और वासना के प्रति तीव्र आसक्ति एक विचित्र प्रकार के आतंक को जन्म देती है। उनकी हर कहानी में आम आदमी केंद्रीय चरित्र के रूप में चित्रित हुआ है। कोरोना काल में हर व्यक्ति आतंक के परिवेश में जीता था। हर पल 'न जाने क्या होगा' का डर चारों ओर मंडराता रहा।

'आतंकेर संक्रमण' कहानी में 'क्रोनोमेंट्रोफोबिया' अर्थात घड़ी के आतंक को केंद्रीय विषय बनाकर व्यक्ति के अंदर ना हुए आतंक की जकड़न और विस्तार को बड़े कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस संकलन में भिनदेशी तारा, हिमशैल, काक जेमोन ओड़े, बहुरूपी, ब्रजमोहनेर हिसाब निकाश आदि कहानियाँ पाठकों में अजीब छटपटाहट पैदा करती हैं।

बांधानो दांतेर अनुसंधान पर्बः आजकल हँसी विनोद की कहानियों का अकाल है। यूँ कहा जाए हँसी विनोद की कहानियाँ लिखने के लिए आवश्यक ह्यूमरबोध धीरे–धीरे खोता जा रहा है। ऐसे में अंजेलीना भट्टाचार्य का यह संकलन बहुत ही मजेदार घटनाओं के आधार पर लिखी कहानियों को पाठकों तक पहुँचाता है।

'निशिकांतर प्रेमपर्व' कहानी में निशीकांत आज का अर्थात कलियुग का आदमी होकर भी त्रेता युग की सूर्पनखा नाम की नारी से प्रेम करता है। समाज में सूर्पणखा का परिवार विलेन परिवार के नाम से जाना जाता है। लेखक ने आज के यथार्थ के साथ कल्पना को मिलाकर कहानी लेखन को नया आयाम दिया है। इसी तरह 'बांधानो दांतेर अनुसंधान' कहानी में अस्सी साल के मधुसूदन बाबू चिल्लाने लगते हैं। उनकी चिल्लाहट से पूरा घर घबरा उठा। क्योंकि उनका नकली दाँत गायब हो गया है। उनका दाँत ढूँढ़ना, छानबीन करना और अंत में मधुसूदन बाबू को दाँत लौटाने तक की विभिन्न घटनाओं का लोटपोटमय वर्णन कहानी का विशेष आकर्षण है। 'वर्षवरण' में दो पीढ़ियों के बीच मानसिक और सोच के फासले को कहानीकार ने बहुत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

कोरोनाकालीनः यह अनुराधा कुंडा का कहानी संकलन है। कोरोना काल समाप्त होने के बाद विभिन्न साहित्यकारों ने अपने–अपने आसपास के लोगों की प्रतिक्रिया, विभीषिकामय परिवेश और अपनों को खोने के दर्द को आधार बनाकर कहानियों का सृजन किया है। इसमें संकलित लघु कहानियों में कोरोनाकालीन अनिश्चित जीवन, व्यक्तिगत और सामूहिक आतंक ही प्रमुख वर्ण्य विषय है। कोरोना ने पल भर में व्यक्ति का सुख छीनकर जीवन को राख में बदल दिया। ऐसे विभिन्न अनुभवों को कहानीकार ने संकलन में संजोया है।

'यामसुंदरी' कहानी में संपर्क के महत्व और मूल्य को जानने के लिए चेतना प्रवाह का प्रयोग किया है। बाल सँवारतीं हुई श्यामा को हठात खट्टी डकार आती है जिससे वह घबरा उठी। क्योंकि उसका अपना जन मुंबई में रहता है। मुंबई में कोरोना ने तो हर घर, हर बस्ती पर धावा बोल दिया। अपना मोबाइल खोलकर बहुत देर तक उसका नंबर देखने लगी। घबरा उठी। छटपटाने लगी। अंततः कोई सूचना तो मिल ही जाए।

'सुखनलाल कदम–कदम बढ़ाए जा' कहानी में प्रवासी मजदूरों की दयनीय परिस्थिति का बखान है। महामारी के संकटकाल में प्रवासी मजदूरों के प्रति राष्ट्र की उदासीनता के कारण कई जानलेवा घटनाएँ घटती गईं। बाल बच्चों के साथ सपरिवार अपने घर तक पहुँचने की कोशिश में बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ और खुद प्रवासी मजदूर वीभत्स मौत के शिकार हुए। इस भयंकर व वीभत्स स्थिति को कहानीकार ने शब्दों में ढाला है।

'मालविका अनिमिखे', तरह चाकरी आसे','ता बोले कि प्रेम देबोना', 'तार कथा', कोशिश वार्डे केउ जाय ना','वर्क फ्रॉम होम' आदि कहानियाँ व्यक्ति, परिवार, समाज की बहुत सी अनकही व्यथाकथा, कोरोना कालीन भय, यंत्रणा की गहरी उपलब्धि से पाठकों को झकझोर देती है।

टानः असीम सरकार द्वारा रचित कहानी संकलन है। इसमें केवल दो ही कहानी संकलित हैं। 'टान' ओर 'मातृत्वेर पिपासा' इन कहानियों में कहानीकार ने मध्यमवर्ग के रोजमर्रा के जीवन में दिन गुजारने का चित्रण किया है। पहली कहानी 'टान' में हमारे आसपास के जाने–पहचाने परिवेश में प्रेम और गहरा जुड़ाव और फिर अनायास उससे उपजने वाली प्रतिहिंसा चित्रित हुई है। इस कहानी का नायक बिना सामने आए घटना का विवरण देता है। 'टान' यानी खिंचाव अर्थात पति पत्नी, मां बेटा आदि के संपर्क में अद्भुत पारस्परिक आकर्षण पैदा होता है। कुछ अनहोनी के कारण कभी–कभी यह संपर्क बहुत भयंकर मोड़ ले लेता है। 'मातृत्वेर पिपासा' में कथा विन्यास में नयापन है।

दुटि नयन मेलेः यह कहानी कविता एवं भ्रमण वृत्तांत को एक ही जिल्द में समेटा गया संकलन है। सुजाता साउ जाटि इस कृति की रचयिता हैं।'स्पिड', बहमान', 'जीबनेर दाम', 'आगामी दिन', 'बालिर पाहाड' आदि कहानियों में हमारे आसपास के अति परिचित लोग और परिवेश से प्लाट चुने गए हैं। कहीं–कहीं अतीत और वर्तमान के मुहूर्तों का कोलाज बनाया गया। जैसे 'अलेक्जंडर' कहानी में प्रमुख पात्र अनीक टीवी में अलेक्जंडर फिल्म देख रहा था। वहाँ ग्रीक योद्धा का संवाद सुनाई देता है हमें परिवर्तन चाहिए ताकि सब सुखी रहें, उसी समय अनीक की माँ वहाँ से गुजरती है और रिमोट पर उनका पैर लग जाता है। साथ ही साथ चैनल बदल जाता है और ब्रेकिंग न्यूज़ में एक नेता भरी जनसभा में कह रहा है हमें परिवर्तन चाहिए। यहीं पर लेखक की सार्थकता है अतीत और वर्तमान को उन्होंने जोड़ दिया।

लेखक कई जगह भ्रमण करते हैं तो उसका वृत्तांत इस संकलन में सम्मिलित है। साथ ही कुछ कविताएँ भी सम्मिलित हैं। अर्थात एक ही जिल्द में कई विभिन्न प्रकार के स्वाद हमें मिलते हैं ।

इस वर्ष प्राय नब्बे कहानी संकलन विभिन्न प्रकाशकों ने प्रकाशित किए हैं।

नाटक और फिल्मः आलोच्य वर्ष में कई नाट्यग्रंथ और फिल्म स्क्रिप्ट प्रकाशित हुए। सत्यजीत राय की फिल्म 'जलसाघर' और 'आगंतुक' का फिल्म स्क्रिप्ट प्रकाशित हुआ है।

वितर्केर अंतरालेः तीन अंकों का यह नाटक आशीष घोष की रचना है। एक फ्लैट के ड्राइंग रूम में इस नाटक का मंचन किया जा सकता है। इस नाटक में सुनील बसु, निवेदिता बसु, मुनिया बसु, सोमनाथ राय और मनीषा राय प्रमुख चरित्र

है। पाश्चात्य संगीत का प्रभाव और नकल करने के कारण समकालीन संगीत लोगों में आकर्षण पैदा नहीं कर पा रहा है, यह विषय ही नाटक का मूल कथ्य है।

प्रिय सात : सातटि भिन्न विषयेर नाटक : अरुण देव ने इस नाट्य संकलन में रवींद्रनाथ टैगोर की पार, पुरातन भृत्य और फांकि इन कविताओं को नाट्यरूप दिया है। शेष चार नाटकों में उग्रवादी विचारधारा और विश्वास एवं समाज परिवर्तन का सपना टूट जाने के कारण विलगाव मुख्य है। एक नाटक कोरोना काल का आतंक और उस समय तहस–नहस हुए जीवन के विभिन्न पहलुओं को नाटककार ने चित्रित किया है।

फिओदरः व्रात्य बसु ने विश्व के अन्यतम श्रेष्ठ उपन्यासकार दस्तयवस्कि के जीवन पर आधारित इस नाटक का सृजन किया है। दस्तयवस्कि का जीवन विभिन्न घटनाओं से भरा हुआ है। नाटककार ने उनके जीवन के उतार–चढ़ाव, घात–प्रतिघात आदि को रूपायित किया है।

चा चक्र डॉट कॉमः इस नाटक के केंद्र में 'चा चक्र' नाम की एक चाय दुकान है। रतन की माँ वहाँ चाय बेचती है। इस चा चक्र में विभिन्न घटनाएँ घटती हैं। जैसे पूजा का चंदा मांगने वाले युवा वन और चंदे के नाम पर उनके जुल्म की घटना, पैसा माँगते हुए हिजड़ों का हावी होना, पाखंडी संन्यासी और ज्योतिष का कांड आदि को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

कविताः इस प्रकाशन वर्ष में एक सौ बीस के आसपास कविता संकलन प्रकाशित हुए हैं। सभी ने अपनी–अपनी दृष्टि और भाव से समकाल और जीवन को कविता में ढाला है।

मणिबंधे सन्यास राखिः अपने काव्य ग्रंथ में कवि रमा सिमलाई ने कविता और आम जीवन चर्या के अंतर्संबंध को कविता के जरिए प्रस्तुत किया है। मुट्ठीभर दाना, युद्ध के नकारात्मक पक्ष और कवि के अनुसार माँ के आंचल का सहारा ही सब कुछ है। मानव कल्याण में युद्ध अनचाहा है। अर्थात कवि जिजीविषा की बात करते हैं। महत्वपूर्ण पंक्ति है (रातभर आयुरेखा गुले जल खाई/तोमाकेओ देबो कोलकाता/चलो बेंचें ताकि। (रातभर आयुरेखा घोलकर पीता हूँ जल/तुम्हें भी दूंगा कोलकाता/चलो ज़िंदा तो रहे)।

मनकथाः पर्यावरण को असीम सरकार ने अपनी कविता का विषय बनाया। आने वाले कल के लिए और मानव सभ्यता को बचाए रखने के लिए पर्यावरण की रक्षा आवश्यक है। कवि कहते हैं 'लतानो सेइ अपराजिता गाछटा जेटा लागिएछिले तुमि/अति जत्ने ताके खाबार दिए/बांचिए रेखेछि आमि।' सुनहले कल के लिए सपना संजोती है इनकी कविता। इनकी कविताओं में आशा का स्वर महत्वपूर्ण है।

समयेर काछे दुहात पेतेः पंकज साहा का नया कविता संकलन है। इसमें अत्यंत सहज पर गहरा समाजबोध और बहुरंगी जीवनबोध की कविताएँ हैं। सहज

कविताएँ मनन सापेक्ष होती हैं। इस संग्रह में बहत्तर कविताएँ संकलित हैं। संकलन की पहली कविता 'कवितार आत्मा' में कविता की नई पहचान मिलती हैः कवितार मध्ये थेके कविता उठे आसे/कवितार मध्ये कवितार अबसान/कवितार आत्मा पृथिबीतेइ/फिरे फिरे आसे/कविता जेते जेते फिरे देखे/कवितार सुख। (कविता में से ही कविता निकल आती/कविता में ही कविता का अवसान/कविता की आत्मा पृथ्वी में ही है/लौट लौट आती/जाते–जाते कविता पलटकर देखती है/कविता का सुख।)

'कविर संगे देखा' कविता में अंतर्मन की चाहत अभिव्यक्त हुई है।

कविर संगे कथा बलबो बले/आमि बाइरे एसेछि/कविर संगे देखा हबे बले/आमि निजेर बाइरे एसे दांडिएछि/ईश्वरेर साथे तो देखा हल ना/कविर संगे देखा होक। (कवि संग बात करने को/बाहर आया मैं/कवि संग मिलना होगा/अपने निजसे बाहर आकर खड़ा हुआ मैं/ईश्वर संग मिलना नहीं हुआ/कवि संग मिलना हो।) अर्थात कवि ईश्वर की तरह निज काव्य धरती के स्रष्टा है। उनकी कविताएँ अंतर्मन को झकझोर देती हैं।

विविध साहित्यः इस वर्ष साहित्य की विभिन्न विधाओं में निरंतर पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं। जिसमें जीवनी, बाल साहित्य, भ्रमण वृत्तांत, आलोचना, इतिहास, निबंध संकलन प्रमुख हैं।

जीवनी ग्रंथों में डॉ. अमलकांत पांडेय ने एक ही जिल्द में पच्चीस क्रांतिकारियों की जीवनियों की रचना की। 'मेदिनीपुरेर 25 जन विप्रवर जीवन कथा' शीर्षक से यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ।

भ्रमण वृत्तांत में अमरनाथ और कैलाश यात्रा का अनुभव स्वपनकुमार चौधरी के' शिव ठाकुरेर आपन देशे' में मिलता है।

इसी तरह पापिया भट्टाचार्य के 'अमृतमय अर्धकुंभे प्रयागराज' में अर्धकुंभ मेले का विवरण मिलता है।

आमलोगों में रवींद्रनाथ कवि के रूप में जाने जाते हैं पर उन्होंने कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। इस विषय पर पत्रकार पवित्र कुमार सरकार ने 'संपादक रवींद्रनाथ' ग्रंथ की रचना की है।

विविध विधाओं पर और भी ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। समापन में इतना ही कहा जा सकता है कि उत्तर कोरोनाकाल में आलोच्य वर्ष बहुत महत्वपूर्ण रहा है। क्योंकि प्रकाशन की दृष्टि से यह वर्ष समृद्ध रहा है।

❑❑❑

14

बोडो साहित्य



स्वर्णप्रभा चैनारी

अभिरुचि का विषय– भाषा चर्चा, साहित्यिक समीक्षा और अनुवाद। साहित्यिक समीक्षा, गद्य, व्याकरण, अनुवाद और भाषा आदि पर कई पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार (बोडो) से सम्मानित। संप्रति– प्रोफेसर, बोडो विभाग,गौहाटी विश्वविद्यालय।

बोडो भाषा उत्तर–पूर्वी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। इस भाषा से पहले अंग्रेजों ने और इसके बाद धीरे–धीरे बोडो लोगों ने लिखने की शुरुआत की थी। बोडो लोगों द्वारा बोडो भाषा में लिखने का पहला सबूत साल 1915 में प्राप्त होता है। इसके बाद बोडोवालों ने मुड़कर कभी नहीं देखा। धीरे–धीरे आगे बढ़ते रहे। साल 1952 की 16 नवंबर को बोडो साहित्य सभा का गठन किया गया और इसके बाद 1963 की 18 मई को बोडो भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकृति प्राप्त करना ये सब बोडोगण के मन में ईंधन जगाने जैसा काम था और इसीलिए वे आगे बढ़ते रहे। उसके बाद 1974–75 के समय के रोमन लिपि आंदोलन ने बोडोगण के मन में थोड़ा तनाव पैदा किया था पर यह सब बहुत कम समय के लिए था। समय के साथ–साथ बोडो भाषा का क्षेत्र बढ़ता गया और प्रकाशन भी बढ़ते गए। आज साहित्य की सभी विधाओं की किताबें बोडो भाषा में मिलती हैं और यह बहुत बड़ी बात है।

हर वर्ष जैसे अलग–अलग विधाओं पर किताबें प्रकाशित होती आई हैं इसी तरह साल 2022 में अनेक विधाओं की किताबें प्रकाशित हुई हैं। इनमें से शब्दकोश, कविता, लघु कथा, उपन्यास, नाटक, अनुवाद, लोककथा, यात्रा वृत्तांत आदि उल्लेखनीय हैं। परंतु इन सब में से इस साल सबसे ज्यादा कविता प्रकाशित हुई है जिसमें वरिष्ठ–कनिष्ठ सबने अपना योगदान दिया है। हम नीचे सभी विधाओं पर एक नजर डालने का प्रयास करेंगे।

क) शब्दकोश

शब्दकोश एक भाषा के अस्तित्व और गरिमा के ताजा सबूत होते हैं। इसके अलावा एक भाषा कितनी शब्द संपन्न है इसका अंदाजा भी शब्दकोश से ही लगा

सकते हैं। बोडो साहित्य और भाषा में इस वर्ष का सबसे बड़ा अवदान है धीरेश्वर बरघ्नार्जि के हाथों से संकलित किया हुआ 'शब्दकोश सोदोबलु' इसे प्रकाशित किया है नीलिमा प्रकाशन ने। यह बर–अंग्रेजी–असमीया त्रिभाषा शब्दकोश है। लेखक को इस शब्दकोश को वास्तविक रूप देने के लिए लंबे समय तक इंतजार करना पड़ा था; 2011 से 2020 तक। साल 2022 में इसे प्रकाशित किया गया है। यह शब्दकोश सिर्फ मानक भाषा पर आधारित एक शब्दकोश नहीं है। मानक भाषा के अलावा इसमें बोलियों के बहुत–से शब्द भी शामिल किए गए हैं। क्योंकि एक भाषा के लिए उस भाषा की मानक भाषा के शब्द ही सब कुछ और पर्याप्त नहीं हैं। एक भाषा की सुंदरता को बढ़ाने के लिए, एक भाषा की विविध दिशाओं के बारे में जानने के लिए बोलियाँ भी बड़े मायने रखती हैं। इस बात के बारे में संकलक सचेत थे क्योंकि इससे पहले भी उन्होंने एक शब्दकोश का काम अपने हाथ में लिया था जिसमें ज्यादातर शब्द अविभाज्य दरं जिले के बोडो लोगों के शब्द थे। सोदोबलु में कुल पृष्ठ 671 हैं। जिसमें शब्दकोश 650 पृष्ठ तक है और इसके बाद roots और अंत में कहावतों की एक सूची का भी लेखक ने साथ में संयोजन किया है। धीरेश्वर बरघ्नार्जि सिर्फ एक कोशकार (lexicographer) ही नहीं हैं इसके अलावा वह एक अच्छे गीतकार, लघु कथाकार और उपन्यास लेखक भी हैं। उन्होंने बोडो भाषा में अनेक लघु कथा और उपन्यास प्रकाशित किए हैं। निबंध में भी उन्होंने अपना हाथ आजमाया है। उनकी प्रकाशित किताबों में से कुछ हैं– 'रिंनि रिं', 'सि नागिरलु सि', 'सुबुं हारिमुनि रिफिथाय' आदि। पेशे से वह एक शिक्षक रहे। अपने शिक्षक जीवन के साथ–साथ उन्होंने अपने समाज के लिए भी बहुत से काम किए हैं और आज तक करते रहे हैं।

ख) नाटक

बोडो साहित्य और संस्कृति में सतीक कुमार दैमारी का अतुलनीय योगदान रहा है। उनका जन्म साल 1952 के 3 अगस्त को गोवालपारा जिले के मेजेंपारा गाँव में हुआ था और साल 2009 के 11 अप्रैल को उनका स्वर्गवास हुआ। पेशे से वह एक शिक्षक थे और मरते दम तक वह अपने से स्थापित किए हुए मेजेंपारा निम्न प्राथमिक विद्यालय के प्रधान शिक्षक रहे। अपने जीवन में साहित्य सृजन के साथ उन्होंने संस्कृति में भी योगदान निभाया है। उनमें से उल्लेखनीय हैं बारदैसिख्ला नामक एक बोडो नृत्य। यह नृत्य समय के साथ–साथ विलीन होता जा रहा था। उन्होंने इस नृत्य रूप को नई तरह से जीवित कर उसे लोगों के पास पहुँचाया। आज यह नृत्य सिर्फ बोडों लोगों के बीच में नहीं अपितु जो लोग इस नृत्य को, इसकी सुंदरता को देखते हैं वे तुरंत मोहित हो जाते हैं। यहाँ यह बात भी बताना ठीक रहेगा कि पूर्वजों के मुँह से सुनते आ रहे इस नृत्य रूप को उन्होंने संजोकर परिशोधित रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत किया और इसे पहली बार साल 1972 में गोवालपारा जिले के

आमजंगा छोटोसालपारा नामक एक गाँव की सांस्कृतिक गोष्ठी में प्रस्तुत किया।

सतीक कुमार दैमारी संस्कृति में जितना दिलचस्पी रखते थे उतना ही साहित्य में भी रखते थे। उन्होंने पूर्ण नाटक के साथ–साथ एकांकी नाटक और नृत्य नाटक में भी अपना हाथ आजमाया है। उनके हाथ से छह पूर्ण नाटक, पाँच एकांकी नाटक और चार नृत्य नाटक लिखे गए हैं पर आज तक प्रकाशित रूप में उनकी ज्यादातर किताबें मौजूद नहीं हैं। सिर्फ एक ही किताब प्रकाशित रूप में मिलती है और वह है पूर्ण नाटक 'राज खुंगुरीनि गाबनाय' (राजकुमारी का क्रंदन, 2022)। यह एक काल्पनिक नाटक है। बोडो साहित्य में देखा जाए तो आज भी नाटक की संख्या बहुत कम है और इस दृष्टि से दैमारी का नाटक बहुत ही महत्व रखता है। इस नाटक में तीन राज्य के राजाओं और उनके सैनिकों के बीच हुए युद्ध के बारे में बताया गया है। तीनों राज्यों के बीच हुए युद्ध की वजह थी रूपनगर की राजकुमारी मालावती। धनपुर के राजा प्रताप नारायण को मालावती पसंद थी और वह उसे पाना चाहता था। परंतु मालावती को प्रताप नारायण थोड़ा–सा भी पसंद नहीं था। उसको धरमपुर राज्य के राजा वीर सिंह का बड़ा बेटा ही पसंद था और वीर सिंह भी उसे अपनी बहू बनाना चाह रहे थे। अंत में वीर सिंह का सपना साकार होता है और वह मालावती को बहू के रूप में पा ही लेता है।

'फालांगि मिजिं' नारजारि द्वारा रचित एक एकांकी नाटक है। इसके प्रकाशक लेखक स्वयं हैं। इसे 16 नवंबर, 2022 को प्रकाशित किया गया है। इस संग्रह में कुल आठ एकांकी नाटक हैं। यह है– 'हारिमु फोजाखांनायनि थांखि', 'जिलिद', 'फोथायखेबस', 'गोरबो', 'फालांगि', 'बेसेन', थै और 'नोजोर'। लेखक के मुताबिक उन्होंने बोडो भाषा की अलग–अलग नाट्य लेखन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था और ये सब नाटक इसका ही प्रतिफल है। उनके ज्यादातर नाटक समाज की अलग–अलग समस्याओं और दुख–दर्द पर आधारित हैं।

ग) कविता

बोडो साहित्य की अनेक विधाओं में से एक महत्वपूर्ण विधा है कविता। हर साल अलग–अलग विधाओं की जितनी किताबें छपती हैं इनमें सबसे ऊपर कविता ही आती है। इसी तरह साल 2022 में भी कविता की अनेक किताबें छपकर आई हैं। इनमें से कोई वरिष्ठ लेखक हैं तो कोई कनिष्ठ।

इस वर्ष प्रकाशित कविता संग्रहों और कवियों के बीच में सबसे पहला नाम आता है अनजलि बसुमतारी उर्फ अनजु (जन्म 1963) का। वह एक कवयित्री हैं। पेशे से वह एक कॉलेज में सह–प्राध्यापक हैं। आज तक उनकी कविता की छह किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें से अप्रैल, 2022 में प्रकाशित काव्य पुस्तक का नाम है 'नों नों नों ...जों' (तुमसे ही...)। इस किताब को प्रकाशित किया है बेनुधर बसुमतारी ने। उनकी ज्यादातर कविताएँ आसानि जेवारि श्रीमती बनमालि बसुमतारि का लिखा हुआ सॉनेट

कविताओं का काव्य संग्रह है। इस किताब को प्रकाशित किया है बलेन चंद्र बर ने। बोडो भाषा में कविताओं की अनेक किताबें हर साल प्रकाशित होती हैं पर सॉनेट कविता पर पूरा एक किताब ढूँढ़ पाना बहुत मुश्किल है। इसलिए इस किताब का एक अलग ही महत्व है।

पुरन' ब्रह्म (जन्म. 1986) बोडो साहित्य में एक जाना–माना नाम है। बाकसा जिले में जन्मे पुरन' ब्रह्मा आज तक नौ किताबें प्रकाशित कर चुके हैं। वह एक कवि और लघु कथा लेखक के रूप में परिचित हैं। उनके लेखन में से पाँच लघु कथा और चार कविता की किताबें शामिल हैं। रिजार्भेशन मासियाव जिरायनानै दावबायलांनायबादि (2022) उनका काव्य संग्रह है। पुरन' ब्रह्म पर सभी की आशा है कि वह और आगे बढ़ें और बोडो जाति और साहित्य के विकास में अपना भरपूर योगदान दें।

'नों दैज्लां आं आबादारि' रैरुब बसुमतारी (जन्म1987) का एक कविता संग्रह है। बसुमतारी की आज तक एक ही किताब प्रकाशित हुई है और इसे प्रकाशित किया है बरमा में स्थित थुनलाइ पाब्लिकेशंस ने। बोडो समाज कृषि प्रधान समाज है और ज्यादातर परिवारों की जीविका कृषि पर ही आधारित है। वर्षा ऋतु आते ही कृषि प्रधान बोडो लोग अपने खेत के लिए तैयार हो जाते हैं और खेत के इस दृश्य को लेखक ने अपने कवर पृष्ठ पर भी अच्छी तरह से प्रतिबिंबित किया है। रैरुब बसुमतारी एक युवा लेखक हैं और उन पर हमारी बहुत उम्मीदें टिकी हैं।

अन्जना देवी उपाध्याय (जन्म 1988) बोडो साहित्य में अपनी जगह बनाने की कोशिश में हैं। ऐसे तो उनका जन्म एक नेपाली परिवार में हुआ है। परंतु जन्म के बाद उन्होंने जो पहली भाषा सीखी है वह बोडो भाषा ही है। यही नहीं, अपनी स्कूली पढ़ाई भी उन्होंने बोडो माध्यम से की है और कॉलेज में भी बोडो विषय को ही प्रमुख विषय चुना था। बोडो के अलावा वह हिंदी भाषा में भी कभी–कभार लिखती हैं पर उनका ज्यादातर लेखन बोडो भाषा में ही है। आजकल की दौड़ में जहाँ बहुत से बोडो माँ–बाप ने अपने बच्चों को बोडो भाषा छोड़कर दूसरी भाषा सिखाने का मन बना लिया है उसी समय अन्जना देवी उपाध्याय के लिए बोडो भाषा सीखने और पढ़ने के लिए आगे आना बड़े गौरव की बात है। यह सिर्फ एक बोडो भाषा प्रेमी की संख्या को ही नहीं बढ़ाएगा बल्कि एकता के बंधन को भी ज्यादा मजबूत बनाएगा। उनका मनपसंद विषय है कविता। कविता के अलावा लघुकथा में भी उनकी दिलचस्पी है। बोडो भाषा में उनका पहला कविता संग्रह मई, 2022 को प्रकाशित हुआ है। संग्रह का नाम है 'आइ मुलुगनां समाइना आइजो'। इस संग्रह की ज्यादातर कविताएँ माँ पर आधारित हैं। आशा है कि अन्जना देवी उपाध्याय आने वाले दिनों में दूसरी भाषाओं के साथ बोडो भाषा में भी अपना लेखन प्रकाशित करेंगी और बोडो भाषा की मर्यादा को और भी आगे बढ़ाएँगी।

राजुलि मोसाहारि (जन्म 1990) एक कवयित्री के तौर पर बोडो साहित्य में जानी जाती है। उन्होंने लिखना अपने स्कूल के समय से ही शुरु किया था। 2022 में प्रकाशित उनके कविता संग्रह का नाम है अखाफोरनि गाथोन। इसके प्रकाशक हैं बाकसा जिले की निसा लाइब्रेरी। यह उनका पहला कविता संग्रह है। इसमें कुल अठावन कविताएँ हैं। उनकी कविताओं के विषय बहुत सरल, सीधे–साधे और हर रोज की समस्याओं और तस्वीरों पर आधारित हैं।

बोडो कवियों में रुबिला सरगियारि का भी नाम आता है। उनका एक कविता संग्रह है सोदोबनि गांग्रिं (2022)। इसे प्रकाशित किया है थुनलाइ पब्लिकेशंस ने। इस कविता के विषय अलग–अलग समय पर लेखक के मन में आ रही भावनाओं से संबंधित ही हैं।

वर्ष 2001 में आज के चिरां जिले में जन्में दैमासा ब्रह्म बोडो साहित्य में एक जाना–माना नाम है। वह एक युवा लेखक हैं। 2022 में प्रकाशित उनके एक कविता संग्रह का नाम है 'जोहोलाव नोंनि सोहोराव'। उसके प्रकाशक लेखक स्वयं हैं।

गयश्री औवारी बोडो भाषा में कविता लिखते हैं। फरवरी, 2022 में प्रकाशित उनके कविता संग्रह का नाम है 'रजेनि अननाय'। इस किताब को प्रकाशित किया है जनाली बसुमतारी ने।

सनजना बर्मन (जन्म 2007) उम्र के हिसाब से अभी बहुत छोटी हैं। पर अपनी उस छोटी–सी उम्र से ही उन्होंने लिखने के लिए अपने हाथ में कलम उठा ली है। आज तक उनकी कविता की दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'फानजारिनि दाउ' (कविता संग्रह) जिसकी प्रकाशक लेखिका स्वयं हैं।

रैसुमै बर (जन्म 1999) बोडो साहित्य में अपना स्थान बनाने की कोशिश में है। साल 2022 में उनकी किताबें प्रकाशित हुई हैं। निन गैयि हराव (कविता संग्रह) और गोसो थोनायनि अर (लघु कथा संग्रह)। दोनों पुस्तकों के प्रकाशक लेखक स्वयं हैं।

बोडो साहित्य में राजेश बर' (जन्म 2000) युवा पीढ़ी के एक लेखक हैं। बाकसा जिले में जन्मे और स्नातक श्रेणी के छात्र राजेश बर' अपनी पढ़ाई के साथ बोडो साहित्य में भी अपना हाथ आजमा रहे हैं और अपने प्रयास से साल 2022 में उन्होंने बिसंबि बिलिरनाय मोनदांथि नाम से एक कविता संग्रह का प्रकाशन भी किया है। इस पुस्तक के प्रकाशक हैं फुंखा नार्जारी। हमारा मानना है कि आने वाले दिनों में भी राजेश बर' अपना प्रयास जारी रखेंगे और कविता के अलावा अनेक विधाओं में भी अपना योगदान देंगे।

साल 2022 में प्रकाशित कविता संग्रह में से एक है 'फैगोनखौ लामा नायनानै'। इसके लेखक दाउफ्रि लाबारि हैं और इस किताब के प्रकाशन का दायित्व रुक्मिनी दैमारी ने निभाया है। आज के बाकसा जिले में जन्में दाउफ्रि लाबारि के इस संग्रह में कुल 105 कविताएँ हैं।

साल 2022 बर' आइजो लिरगिरि गौथुम (बोडो महिला लेखिका संगठन) के लिए भी एक महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ है। इस वर्ष संगठन ने विविध विधाओं पर कुल ग्यारह किताबें प्रकाशित की हैं। इनमें से पाँच कविता की पुस्तकें हैं।

'जाबथुसे खंथाइ' (2022) बोडो महिला लेखिका संगठन की ओर से प्रकाशित एक काव्य संकलन है। बोडो महिला लेखिका संगठन वर्ष के अलग–अलग समय में जगह–जगह पर कविता पाठ के कार्यक्रम करती हैं। इस कार्यक्रम के तहत पाठ की गई लेखिकाओं की कविताओं का संग्रह करके इसे एक किताब के रूप में छापा है। इसमें सिर्फ एक पीढ़ी की नहीं बल्कि सभी पीढ़ियों की कवयित्रियों की कविताएँ शामिल हैं। इसलिए यह कविता संग्रह बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें आपको अलग–अलग स्वाद की रचनाएँ मिलेंगी।

कविता संग्रह में से एक है शिखा बसुमतारी की 'थै गोजा गोरबो'। इस किताब का प्रकाशन अगस्त, 2022 को किया गया है। शिखा बसुमतारी पेशे से एक शिक्षक हैं। अपने शिक्षक जीवन के साथ वह लिखने में भी दिलचस्पी रखती हैं।

माइनाउस्रि दैमारी (जन्म. 1997) एक युवा लेखक हैं 2022 में उनका कविता संग्रह सम जिउ आरो... प्रकाशित हुआ है। उनकी ज्यादातर कविताओं में भावनात्मक मनोभाव की परछाईं देखने को मिलती है।

मन्जुराणी दैमारी भी बोडो साहित्य में अपना योगदान निभा रही हैं। साल 2022 में उनका भी एक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है और इस कविता संग्रह का नाम है 'दाफिनजायै गान्दैनि आर'नाइ'।

ऊपर वर्णित पुस्तकों के प्रकाशन का काम बोडो महिला लेखिका संगठन ने किया है।

साल 2022 में सोमखोर बसुमतारी का भी एक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसे प्रकाशित किया है बरमा के थुनलाइ पब्लिकेशन्स ने। कविता संग्रह का नाम है 'आंनाव थरसे बमा दं'। बसुमतारी एक युवा लेखक हैं और आशा है कि वह बोडो साहित्य के विकास और प्रसार–प्रचार के लिए आगे भी काम करते जाएँगे।

जाइख्लं सिमां कविता संग्रह के प्रकाशक लायन चंद्र बर हैं। लेखक रचनात्मक साहित्य में रुचि रखते हैं और आने वाले दिनों में वह बोडो साहित्य के इतिहास में अहम भूमिका निभाएँगे यह हमारी आशा है।

घ) उपन्यास

बोडो साहित्य में अनिल कुमार बर'(जन्म 1961) एक जाना माना नाम है। बोडो भाषा के अलावा वह असमिया और अंग्रेजी भाषा में भी लिखते हैं।

कर'ना समरू दोंसे सुंद' खारिमिन अनिल बर' का पहला उपन्यास है। यह उपन्यास साल 2022 में प्रकाशित हुआ है। लेखक के अनुसार इससे पहले भी उन्होने खासि बिबारनि मोदै नामक एक उपन्यास का काम शुरू किया था। परंतु उस उपन्यास का काम आज तक समाप्त नहीं हो पाया है। कर'ना समरू दोंसे सुंद' खारिमिन उपन्यास की कहानी कोरोना के समय में लोगों को मिली अनेक असुविधाओं, डर आदि पर आधारित है। लॉकडाउन, कर्फ्यू, कन्टेनमेन्ट जोन, क्वारैन्टिन, आइसोलेशन और वैक्सीन यह सब कोरोना के समय से जुड़े हुए शब्द हैं जिसका लेखक ने उपन्यास की बहुत जगहों पर उल्लेख किया है। इन शब्दों को लेकर लोगों के बीच डर का माहौल पैदा हुआ था, तनाव था। बोला जाए तो यह उपन्यास सच्ची घटनाओं पर आधारित है। इस उपन्यास को पढ़ते ही लोगों के मन में कोरोना काल की अनेक घटनाओं की तस्वीरें फिर से ताजा हो जाएँगी। घटना सच्ची होने के बावजूद भी इस उपन्यास के सभी चरित्र काल्पनिक हैं।

ङ) निबंध/आलोचना

निबंध/आलोचना एक भाषा के साहित्य के लिए बहुत मायने रखते हैं। इसलिए साल 2022 में भी कुछ निबंध की किताबें प्रकाशित हुई हैं और इनमें से एक है 'सिनायथि राखोर'। किताब के प्रकाशक हैं बोडो साहित्य सभा। इस किताब को मील का पत्थर माना जा सकता है। क्योंकि बोडो भाषा में यही एक किताब है जहाँ गीतकारों के लिखे हुए गीतों के साथ गायकों और संगीतकारों की जीवनी भी शामिल की गई है। इस किताब को तीन हिस्सों में बाँटा गया है। पहले हिस्से में गीतकारों के नाम के साथ उनके द्वारा रचित गीतों को सम्मिलित किया गया है, दूसरे हिस्से में गायकों की संक्षिप्त जीवनी डाली गई है और अंत यानी तीसरे हिस्से में कुछ गीतकारों के गीतों पर हुई समीक्षाओं को सम्मिलित किया गया है। इस किताब के माध्यम से पुरानी पीढ़ी से लेकर नई पीढ़ी तक के गीतों के थीम, शब्द–चयन और शैली में कैसे बदलाव आया है, इन सबके बारे में समझा जा सकता है।

किताब में सम्मिलित किए गए गीतकार कुल मिलाकर सोलह हैं और सब के सब पुरुष हैं। इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि बोडो साहित्य में आज भी बहुत विधाओं में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या बहुत कम है। जीवनी भाग में पुरुष–महिला कुल मिलाकर तेईस लोगों को सम्मिलित किया गया है। उनमें से कुछ उल्लेखनीय नाम हैं पुर्णिमा स्वर्गियारी, उत्तम चंद्र खेरकटारी, चंदन ब्रह्म, रजनी स्वर्गियारी, सुलेखा बसुमतारी, अरुण नार्जारी आदि।

उत्तम चंद्र खेरकटारी मौलिक रूप से एक समाज सेवक और धर्म की ओर आकृष्ट इनसान थे। उनकी शिक्षा सिर्फ नौवी कक्षा तक थी। पर इस बात को लेकर वह कभी पीछे नहीं हटे थे। बोडोगण के मूल धर्म बाथौ के प्रति उनकी गहरी निष्ठा और आस्था थी और इस धर्म के प्रचार प्रसार के लिए वह काम करते थे। इसके अलावा उनका एक गहरा लगाव गानों से था। एक अच्छे गीतकार होने के साथ कविता में भी उनकी दिलचस्पी थी। अपने कामों के लिए उन्हें अलग–अलग पुरस्कार से नवाजा गया था।

चंदन ब्रह्म बोडो जाति के अस्तित्व, साहित्य और संस्कृति के प्रति जागरूक व्यक्ति हैं। अपने राजनीतिक और सामाजिक जीवन के साथ–साथ उन्होंने गीतकार और गायक का भी किरदार निभाया है। उनके ज्यादातर गीत क्रांतिकारी विचारधारा पर आधारित हैं।

रजनी स्वर्गियारी पेशे से एक शिक्षक थीं। वह एक साथ गीतकार, संगीतकार और गायक भी हैं।

रजनी स्वर्गीयारी को उनके कामों के लिए कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। उन्हें साल 2022 में असम सरकार का वार्षिक शिल्पी पुरस्कार मिला है। उनके ज्यादातर गाने समाज के लोगों के बीच जागरूकता लानेवाले और क्रांतिकारी ढंग के हैं।

बोडो गायकों के नाम लेने से अरुन नार्जारी का नाम पहली पंक्ति में ही आता है। वह एक दीर्घानुभवी व्यक्ति है। कविता के साथ लघु कथा में भी उनका हाथ है।

साल 2022 में प्रकाशित किताबों में एक और उल्लेखनीय किताब है रायथाइ आरो रायथाइ। यह एक गद्य संग्रह है और इसकी मुख्य संपादक हैं बिरुपाक्ष गिरि बसुमातारी (जन्म 1969)। इस किताब का प्रकाशन गौहाटी विश्वविद्यालय प्रेस ने गौहाटी विश्वविद्यालय के ही बोडो विभाग की रजत जयंती समारोह से सँजोकर किया है। उल्लेखनीय है कि विभाग की रजत जयंती इसी वर्ष की 6 और 7 जनवरी को विभाग के प्राँगण में मनाई गई। इस किताब का मुख्य आकर्षण ये है कि इसमें जितने भी योगदानकर्ता हैं वे सभी कॉलेज और विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं। आज बोडो को एक विषय के रूप में असम के चार विश्वविद्यालयों में पूर्व–स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर और पूर्व स्नातक में एक विश्वविद्यालय में पढ़ाया जा रहा है। फिर भी सारे पाठ्यक्रमों के लिए जितनी किताब चाहिए इतनी आज भी उपलब्ध नहीं हैं और इस कमी को थोड़ा सा पूरा करने के प्रयास में बोडो विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय ने अपनी रजत जयंती समारोह के समय यह किताब गौहाटी विश्वविद्यालय प्रेस को सौंपी थी और तुरंत प्रकाशन का भार प्रेस ने अपने ऊपर ले

लिया था। इस किताब के सभी गद्य असम के पाँच विश्वविद्यालयों जहाँ बोडो को पढ़ाया जाता है वहा के पाठ्यक्रमों पर आधारित हैं। किताब में के लिए गद्य भाषा, साहित्य, मिथक, बोडो साहित्य में पारिस्थितिकी आदि विषयों पर आधारित हैं। इसमें कुल मिलाकर उन्नीस गद्य हैं। कविता, लोक नाटक, अनुवाद, नारीवाद, जीवनी साहित्य, भाषा टाइपोलॉजी और अन्य बहुत विषयों पर चर्चा भी इसमें सम्मिलित है। इस किताब के माध्यम से बोडो भाषा में पाठ्यक्रमों की किताबों की जो कमी है वह थोड़ी–सी पूरी हो पाई है। साल 2022 में बोडो महिला लेखिका संगठन की कोशिश से एक संकलन प्रकाशित हुआ है। इस संकलन का नाम है जथाइ बिदां। बोडो महिला लेखिका संगठन की कविता संकलन जाबथुसे खंथाइ के बारे में ऊपर बताया गया था कि इस संगठन ने अलग–अलग जगहों पर कविता पाठ कार्यक्रम किया है और उन कार्यक्रमों में पाठ की हुई कविताओं को ही एक किताब के रूप में प्रस्तुत किया है। इसी तरह गद्यों के भी कार्यक्रम या संगोष्ठियाँ अलग–अलग विषय पर होते रहते हैं। इन कार्यक्रमों या संगोष्ठियों में पाठ किए गए लेखों को संजोकर यहाँ एक किताब का रूप दिया गया है। इस किताब के गद्यों से सिर्फ आम पाठकों को ही नहीं, बल्कि छात्र–छात्राएँ और शोधकारी को भी जरूर लाभान्वित होंगे।

साल 2022 में निबंध के बारे से बोला जाए तो बालिका नार्जारी (1969) का निबंध संग्रह 'हाल्दिंगासे रायथाइ' के बारे में भी उल्लेख करना अनिवार्य हो जाता है। असल में बालिका नार्जारी एक कवयित्री और निबंधकार हैं। उनके हाल्दिंगासे रायथाइ नामक गद्य संग्रह में विविध विषय के लेखों को एकत्रित करके किताब के रूप में ढ़ाला गया है। उनकी यह किताब बोडो महिला लेखिका संगठन ने प्रकाशित की है।

इंदिरा बर' (जन्म. 1969) बोडो साहित्य में एक परिचित नाम है। उनका जन्म आज के चिरां जिले में हुआ था। पेशे में विश्वविद्यालय के बोडो विभाग में प्रोफेसर इंदिरा बर' एक कवयित्री होने के साथ–साथ गीतकार, अनुवादक, बाल साहित्यकार, निबंधकार और समालोचक भी हैं। असमिया लेखिका जयंती गगै की किताब हिड़िंबा का बोडो अनुवाद किया। इसके अलावा उन्होंने बाल साहित्य भी सृजित किया है। साल 2022 में बर' की किताब रायथाइ हाला (खंड–2) प्रकाशित हुई है और इसके प्रकाशन का काम बोडो महिला लेखिका संगठन ने किया है। इस किताब में विविध विषयों पर लेख सम्मिलित हैं।

बोडो साहित्य में डा. आदाराम बसुमतारी (जन्म. 1971) अपनी अच्छी पहचान बना चुके हैं। साहित्य की विविध विधाओं में वह दिलचस्पी रखते है। 2022 में प्रकाशित उनकी किताब है **कमल कुमार बह्नि जिउ खौरां आरो थुनलाइयारि सोरजि।** कमल कुमार ब्रह्म बोडो समाज के एक जाने माने व्यक्तित्व हैं। यह पहचान उन्होंने अपनी व्याकरण की किताब के लिए बनाई है। बोडो भाषा से व्याकरण लिखने वाले

वह पहले इन्सान हैं। कविता, नाटक और गद्य में उनकी रूचि थी। आज भी उनकी कविता, नाटक और गद्यों को लोवर क्लास से लेकर विश्वविद्यालय श्रेणी तक पढ़ाया जाता है। इस किताब में कुल सात हिस्से हैं। पहला हिस्सा उनके जीवन और व्यक्तित्व पर आधारित है। दूसरे हिस्से में उनके नाटकों की अलग–अलग दिशाओं पर विस्तृत रूप से बताया गया है। तीसरा उनके कविताओं पर आधारित एक आलोचना है, चौथा उनके गद्य पर आधारित है, पाँचवे में उनके व्याकरण के ऊपर विस्तृत रूप से आलोचना की है, छठा उनकी फिल्म पर आधारित है और सातवें में उनकी अनुवाद कविता अमर की रुवायत का उल्लेख किया गया है।

'आंनि नोजोर आरो बिजिरथि' (तृतीय भाग) नरेस्वर नार्जारि (जन्म 1968) का निबंध संग्रह है। इस संग्रह को बरमा के थुनलाइ पब्लिकेशंस ने प्रकाशित किया है। पेशे में लेखक एक कॉलेज में अध्यापक हैं और आजकल वह एक अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। इस किताब में उन्होंने अलग–अलग विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। साहित्य और संस्कृति विषय पर लेख ज्यादा सन्निविष्ट हैं। इसके अलावा लेखक ने मॉडर्न जमाने के E-World, कौशल वृद्धि जैसे विषय, कम्पोजिशन, एडीटिंग और प्रूफरीडिंग पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। अपनी याद को ताजा करने के लिए लेखक ने अपनी इंडोनेशिया यात्रा पर दो भी लेख इसमें समाविष्ट किए हैं। बोडो लोग आज भी बाहरी दुनिया से अनजान है शायद इसलिए उन्हें बाहरी दुनिया से रूबरू करवाने के लिए लेखक ने अपनी यात्रा पर आधारित निबंध इसमें शामिल किए हैं। इसके अलावा बोडो लोगों के परंपरागत खेल को भी उन्होंने अपनी किताब में जगह दी है। यह संग्रह उन्नीस निबंधों का एक संग्रह है। अंत में इस किताब के बारे में यह कहा सकता है कि यह किताब समाज के विविध रुचि के लोगों के लिए लाभदायक साबित होगी।

निबंध में तरजु सरगियारि का भी नाम आता है। तरजु ज्यादातर पाठ्यक्रम आधारित किताबें लिखने में दिलचस्पी रखते हैं। साल 2022 में प्रकाशित उनकी किताब **'रनसायनाय', 'सुजुनाय आरो फोरमान फरायसंनाय'** भी इसका ही एक हिस्सा है। इसको प्रकाशित किया है नीलिमा प्रकाशनी ने। बोडो विभाग के विविध विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में कम्पोजिशन, एडीटिंग और प्रूफरीडिंग को डाला गया है पर इसके हिसाब से किताबें अपनी भाषा में नहीं हैं। शायद यही वजह है कि तरजु सरगियारि ने इस अभाव को अनुभव किया और छात्र–छात्राओं की सुविधा के लिए इस विषय को किताब के रूप में लोगों के बीच प्रस्तुत किया।

च) जीवनी साहित्य

बोडो साहित्य में भबानी बाग्लारी एक जाना माना नाम है। एक कवयित्री होने के साथ–साथ वह एक अच्छी निबंधकार और अनुवादक भी हैं। साल 2022 में उन्होंने

गेदेमा बर' आइजोफोरनि जिउखौरां नामक एक जीवनी साहित्य का प्रकाशन किया है। इस किताब के प्रकाशन का दायित्व भी बोडो महिला लेखिका संगठन ने लिया है। बोडो समाज की नारी आज अलग–अलग वृत्ति से जुड़ी है और अपने लिए एक अलग जगह और पहचान बना चुकी है। इसके बावजूद आज तक बहुत लोग उनके बारे में नहीं जानते हैं। यह कारण शायद बाग्लारी को सता रही थी और समाज की महिलाओं की पहचान को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने यह महान कदम उठाया है। लेखक का यह काम काबिल–ए–तारीफ है।

उदांस्रि दावहारु गंगाचरण कछारी पाटगिरि अनिला स्वर्गीयारी की लिखी हुई किताब है। इस किताब का प्रकाशक है नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया। इसे YUVA यानी PM's Mentoring YUVA, Youth Upcoming and Versatile Authors स्कीम के तहत साल 2022 को प्रकाशित किया गया है। इस किताब में कुल मिलाकर पाँच अध्याय (अंत को लेकर) हैं और उन अध्यायों में गंगाचरण कछारी पाटगिरि के परिचय से लेकर उनके सामाजिक जीवन और भारत की स्वाधीनता संग्राम में उनकी भूमिका पर विस्तृत रूप से आलोचना है। गंगाचरण कछारी सिर्फ भारत की स्वाधीनता संग्राम के एक सेनानी साथ–साथ एक समाज सेवक और अपनी बोडो भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रति समर्पित व्यक्ति भी थे।

छ) बाल साहित्य

साल 2022 में कुछ बाल साहित्य भी प्रकाशित हुआ है। इनमें से एक है सहाइसुलि ब्रह्म (जन्म. 1980) की **अरन गफानि बुहुत**। इसके प्रकाशक हैं धीराज पोद्दार। इसमें कुल मिलाकर चौदह बाल कहानियाँ हैं। लेखक ने छोटी उम्र के बच्चों से लेकर नवम कक्षा तक के बच्चों के लिए यह किताब प्रस्तुत की है। बोडो साहित्य में बाल साहित्य आज भी बहुत कम है और इसकी बहुत ज्यादा जरूरत बोडो साहित्य को है। सहायसुलि ब्रह्म की यह बाल साहित्य की पुस्तक इस जरूरत को थोड़ा पूरा करेगी; यह हमारा मानना है।

इस कहानी संग्रह की अधिकतर कहानियाँ छोटे–छोटे बच्चों के मन को छू जाने वाली और जिंदगी संबंधित ज्ञान देने वाली हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चों को बहुत कुछ सीखने को मिलेगा और जिंदगी के बारे में विस्तृत रूप से जानने का सौभाग्य प्राप्त होगा। सभी कहानियों के अंत में दी हुई नैतिक सीख इस किताब की ओर बच्चों को और ज्यादा आकृष्ट करेगी। सिर्फ बच्चे ही नहीं बुजुर्ग और सभी श्रेणी के साहित्यप्रेमी भी इस किताब की कहानियों से लाभान्वित होंगे।

बर 'रेबग्रा जथुम की तरफ से उन्हें बर' खुगा थुनलाइनि अजा सुकुमार बसुमतारी पुरस्कार (अरन गफानि बुहुत, 2022) से सम्मानित किया गया है।

मावाब्ला ओरैनो मोनजाया हांगामा बर' (जन्म 1981) द्वारा संगृहीत लोक कथा की एक किताब है। इसे नीलिमा प्रकाशनी ने 15 नवंबर, 2022 को प्रकाशित किया है। यह बाल साहित्य की किताब है। इसमें कुल 22 लोक कथाएँ हैं। अपनी प्रस्तावना में उल्लेख के मुताबिक लेखक ने इस किताब की लोक कथाओं को अलग–अलग किताबों और इंटरनेट के जरिए एकत्रित किया है और बच्चों की उम्र और मानसिकता के हिसाब से इसे अपनी भाषा में रीटोल्ड किया है। हांगामा बर' स्कूल शिक्षक हैं और उन्हें बच्चों की मानसिकता का अच्छा ज्ञान है। शायद यही वजह है कि उन्होंने लोक कथा के माध्यम से बच्चों को ज्ञान देने के लिए और समाज में सुधार लाने के लिए इसे एक औजार के रूप में अपनाया है। साथ ही लोक कथाओं के अंत में दिए गए नैतिक पाठों ने इस कहानी की गरिमा को और भी बढ़ाया है।

इस साल और एक बाल साहित्य की किताब प्रकाशित हुई है। किताब का नाम है **'दोंसे लामानि फरायसा'।** यह बाल लघु कहानी की किताब है। इसे लिखा है बंदना बरगयारी ने और इस किताब को प्रकाशित किया है बरमा की थुनलाइ पब्लिकेशंस ने। इसमें कुल बारह लघु कहानियाँ हैं और हर एक कहानी के माध्यम से एक–एक संदेश देने का प्रयत्न किया गया है। इस कहानी के विषय सत्य की राह पर चलना, अपने कामों में निष्ठा रखना, कोशिश करने से सब कुछ मिल जाना, संहति, निर्वनीकरण आदि हैं। इन कहानियों के माध्यम से लेखक ने बच्चों को जिंदगी की असलियत के बारे में बताने का प्रयत्न किया है।

ज) अनुवाद

साल 2022 बोडो भाषा में अनुवाद के लिए भी महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ है। विष्णु प्रसाद राभा असम के प्रसिद्ध गीतकारों में से एक है। उनके गीतों को राभा संगीत के नाम से जानते हैं। वह एक कवि, नाट्यकार और लघु कथा लेखक होने के साथ एक संग्रामी भी थे। वह असमिया भाषा में लिखते थे। उनकी लघु कथाओं में से सनपाहि, हियार पुं, कुरि बछर जेइल आदि उल्लेखनीय हैं। विष्णु प्रसाद राभा का लेखन असमिया समाज में जितना सुप्रसिद्ध है उतना ही बोडो समाज में भी है। शायद यही वजह है कि सीता राम बसुमतारी (जन्म 1957) ने उनकी लिखी पाँच लघु कथाओं को बोडो भाषा में **बिष्णु राभानि स'नपाहि आरो गुबुन गुबुन सल'** नाम से अनुवाद करने का साहस किया है। इस किताब के प्रकाशन का दायित्व संभाला है ठाकुराकुचि बाकसा के ध्रुव ज्योति ऑफसेट प्रेस ने। यह भी कहना ठीक रहेगा कि सीता राम बसुमतारी से पहले भी विष्णु प्रसाद राभा की इन लघु कथाओं को बोडो भाषा में कई लेखकों ने अनुवाद करके प्रकाशित किया है। पर सीता राम से पहले जिन लोगों ने अनुवाद किया था उन्होंने इसे एक साथ–पूर्ण किताब के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था एक–एक लघु कथा को ही प्रकाशित किया था।

अनुवादक सीता राम बसुमतारी सिर्फ एक अनुवादक ही नहीं हैं साथ ही वह एक कवि और बाल साहित्यकार भी हैं। अपने शिक्षक जीवन के साथ उन्होंने लेखन को भी अपना लिया है। अपनी नौकरी के समय से और नौकरी के बाद भी आज तक उन्होंने अपने आपको लेखन के साथ–साथ सामाजिक कामों में भी व्यस्त रखा है। अलग–अलग जिम्मेदारियों के साथ साल 2018–2022 तक वह साहित्य अकादमी के बोडो एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य और साल 2020 से आज तक बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। बोडो साहित्य में उनके अवदान को देख उन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है।

नार्वे की नाटककार हेनरिक इबसेन की 'ए डॉल्स हाउस' को भौमिक चंद्र बर' (जन्म. 1969) ने गंसे पुतलानि न' नाम से बोडो भाषा में अनुवाद किया है। यह तीन ऐक्ट का नाटक है। नाटक की दुनिया में इबसेन एक जाना माना नाम है। उनकी ए डॉल्स हाउस सिर्फ यूरोप में नहीं बल्कि पूरी दुनिया में जानी जाती है। इबसेन के नाटक की इस जनप्रियता को देखकर असम के कुछ विश्वविद्यालयों के बोडो विभाग के पाठ्यक्रमों में इस नाटक को संयोजित किया गया है ताकि नाटक की कला के बारे में छात्रगण ठीक से समझ और जान सकें। दूसरी बात यह है कि मातृभाषा माध्यम के छात्रगणों में सबको अंग्रेजी ठीक से समझ में नहीं आती है और यह उनकी पढ़ाई में रुकावट डालती है। पर जब अपनी ही भाषा में दूसरी भाषा की किताब के अनुवाद मिलते हैं तब उनके लिए इसे पढ़ना और समझना आसान हो जाता है। उसे बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग ने 30 मार्च, 2022 को प्रकाशित किया है। इस प्रकाशन के साथ–साथ बोडो भाषा में अनुवाद साहित्य की संख्या थोड़ा और आगे बढ़ी है और छात्रगणों के साथ साधारण पाठक भी इससे लाभान्वित हुआ है।

जाबस्रिं जैस्रि बर' द्वारा बोडो भाषा में अनुवाद किया हुआ लघु कथा संग्रह है। इस किताब को नई दिल्ली स्थित लक्ष्मी पब्लिकेशन ने प्रकाशित किया है। इसमें दस भाषाओं असमिया, बांग्ला, ओडिया, राजस्थानी, हिंदी, नेपाली, तेलुगु, मैथिली, पंजाबी और मणिपुरी भाषा की लघु कथाओं को सन्निविष्ट किया गया है। इसमें भबेंद्रनाथ शइकीया से लेकर, नवनीता देव सेन और कर्तार सिंह दुग्गल की कहानियाँ भी शामिल हैं।

अनुवाद साहित्य की दौड़ में एक किताब है 'मणिराम देवान'। मणिराम दत्त बरुवा उर्फ मणिराम देवान असम में चाय का उद्योग स्थापित करने वाले पहले व्यक्ति थे। पहले वह अंग्रेजों के वफादार थे पर उनकी दमनकारी नीति के कारण बाद में वह उनके बागी बन गए थे और अंग्रेजों ने उन्हें जोरहाट सेंट्रल जेल में 26 फरवरी, 1858 को 51 साल की उम्र में फाँसी दी थी। इस महान व्यक्ति के नाम से इस किताब को

असमिया भाषा में नाट्य रूप दिया है प्रवीण फुकन ने और उसे बोडो भाषा में अनुवाद किया है रंजालि बसुमतारी (जन्म 1995) ने। इस किताब के प्रकाशन का काम किया है नीलिमा प्रकाशनी ने अक्टूबर, 2022 में।

झ) लघु कथा

लेबेन लाल मोसाहारि (जन्म 1982) बोडो साहित्य में एक लघु कथा लेखक कवि, उपन्यासकार के अलावा अनुवादक भी हैं। साल 2022 में उनकी एक लघु कथा की किताब **'जालांनाय गोरोंथि'** प्रकाशित हुई है। इसे प्रकाशित किया है नीलिमा प्रकाशनी ने। यह उनकी लघु कथा की चौदहवीं किताब है और इसमें कुल सत्रह लघु कथाएँ संकलित हैं। इन लघु कथाओं की ज्यादातर कहानियाँ बोडो समाज की समकालीन घटनाओं पर आधारित हैं। **फान्जारिनि दाउ** इनमें से एक है जहाँ पति की अकाल मृत्यु के लिए पत्नी गयास्रे को ही दोषी माना गया है और उनको सास और दीदी ने दोषी ठहराकर और गाली–गलौज से प्रतिदिन उनके जीवन को दुखी बनाया है। लेकिन एक दिन गयस्रि नौकरी की खोज में निकल पड़ती है। परंपरागत मनोभाव की सास–दीदी और नए सोच–विचार से चलने वाली आज की पीढ़ी की बहू के इस लघु कथा के जरिए लेखक ने बताने का प्रयास किया है कि उनकी अन्य लघु कथाओं में भी आजकल की नई तस्वीर और नए समाज, पीढ़ी की बातें ही ज्यादा देखने को मिलती हैं।

'बड'लेण्डनि बिहामजो' नबीन बसुमतारी (जन्म 1968) का लघु कथा संग्रह है। इसका प्रकाशक है आउग्रि बसुमतारी। इस संग्रह में कुल पच्चीस लघु कथाएँ हैं। ज्यादातर लघु कथाएँ गाँव की परिस्थितियों, लोगों के मन में चल रहे लोक विश्वास, अंधविश्वास आदि पर आधारित हैं। इक्कीसवीं सदी के हिसाब से हमारी सोच–विचार आज भी बहुत पीछे है। अपने लोगों की सोच ने शायद लेखक के मन को बहुत सताया है और लोगों के बीच अंधविश्वास के विरोध खड़े होने के लिए और समय के साथ कदम मिलाकर साथ चलने के प्रति जाकरुकता फैलाने के लिए लेखक के अपने लेखों में ज्यादातर गाँव की समस्याओं, सुख–दुःखों को ही जगह दी है। लेखक का यह काम सराहनीय है।

जिउ दैमानि गाथोन गीतिका बसुमतारी (जन्म 1961) का लघु कथा संग्रह है। अपने शिक्षक जीवन के साथ वह बहुत से सामाजिक कामों से भी जुड़े हुए हैं। असम साहित्य सभा, सदौ असम महिला लेखिका समारोह समिटि, गोवालपारा जिला महिला लेखिका संस्था से भी वह सक्रिय रूप में जुड़ी हुईं हैं। गोवालपारा जिला से प्रकाशित कई पत्रिकाओं के भी वह सदस्य और परामर्शदाता रहे। उनकी जिउ दैमानि गाथोन लघु कहानी संग्रह को प्रकाशित किया है शशधर बर' ने।

लिनी बसुमतारी (जन्म 1983) लघु कथा के माध्यम से बोडो साहित्य में अपनी जगह बना चुकी हैं। उनका लघु कथा संग्रह है **'बिमा–राव'**। बिमा–राव को प्रकाशित किया है बरमा की थुनलाइ पब्लिकेशन्स ने। इसमें कुल दस लघु कथाएँ हैं। लिनी की ज्यादातर लघु कथाएँ बोडोभाषी लोगों के दैनंदिन जीवन में हो रही बहुत–सी घटनाओं, खान–पान, और अन्य समस्याओं पर आधारित है। इसका निदर्शन बिमा–राव नामक लघु कथा में देखने को मिलता है। बोडो माध्यम में पढ़ाने का मन आज बोडो बच्चों के माँ–बाप को नहीं है। परंतु माध्यम जो भी हो एक बच्चे की निष्ठा इसमें बहुत बड़ी मायने रखती है। बोडो माध्यम अंग्रेजी माध्यम से बिलकुल भी पीछे या कम नहीं है इसे लेखक इस लघु कथा के जरिए दो चरित्रों के माध्यम से दिखाता है और यह बोडो माध्यम के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास है। इस लघु कथा के मुताबिक जिसने बोडो माध्यम से अपनी पढ़ाई की है वह आगे बढ़ा है और जिसने अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई की है वह आगे नहीं बढ़ पाया है।

साल 2022 में बिथिउ बर' (जन्म.1995) के एक लघु कहानी संग्रह का नाम है **आगर गैयि आर'नाइ।** इसका प्रकाशक लेखक स्वयं है। इस संग्रह में कुल पंद्रह कहानियाँ हैं। बर' एक युवा लेखक है और आने वाले दिनों में हम उनसे और भी किताबों की उम्मीद रखते हैं।

बोडो लेखिकाओं में जेउति प्रभा ब्रह्म का भी नाम आता है। साल 2022 में उनके **आबै थाइखिनि बुन्था** नामक लघु कथा संग्रह का प्रकाशन किया है बोडो महिला लेखिका संगठन ने।

'सेल्फ मेड रानि बर' (जन्म 1997) युवा लेखिका हैं। उनका जन्म आज के उदालगुरी जिला में हुआ है। वह कविता और लघु कहानी में दिलचस्पी रखती हैं। **साइख्लुम** एक लघु कथा संग्रह है और इसे प्रकाशित किया है देहि राम बर' ने।

ञ) इतिहास आधारित किताब

बोडो साहित्य में इतिहास आधारित लेखन आज भी बहुत कम है और इस कमी को पूरा करने के लिए हांख्राय उजिर (जन्म 1968) आगे आए हैं। इतिहास पर आधारित उनकी एक किताब है **टाकि राजथावनि।** इस किताब का प्रकाशन फरवरी, 2022 को पानीराम उजिर ने किया है।

ट) यात्रा वृत्तांत

अन्य विधाओं की तरह इस वर्ष एक–दो यात्रा वृत्तांत भी प्रकाशित हुए हैं। इनमें से उल्लेखयोग्य हैं आनंद राम औवारी की बुहुमनि फुं बालि दिब (मार्च, 2022)। इसका प्रकाशन किया है अजित कुमार औवारी ने। बर' रेबग्रा जथुम मिशन 2020 के तहत साल 2018 की जनवरी महीने की शुरुआत में बोडो विद्वानों का एक दल इंडोनेशिया

के बालि द्वीप गया था। बालि द्वीप में स्थित विश्वविद्यालयों और अन्य जगहों में घूमने के बाद जो अनुभव हुआ और मिला है उसको आधार रूप में लेकर लेखक ने यह किताब प्रकाशित की है। साल 1958 में आज के बाकसा जिले में जन्में औवारी एक स्कूल शिक्षक थे। वे अलग–अलग संगठन जैसे बोडो साहित्य सभा, बर रेबग्रा जथुम (बोडो राइटर्स एकाडेमी) आदि के भी सक्रिय सदस्य हैं। अब तक उनकी छह प्रकाशित किताबें है।

ठ) पुरस्कार

बोडो लेखकों ने साल 2022 में जैसे अलग–अलग विधाओं की किताबें प्रकाशित हैं इसी तरह अनेक संस्थाओं, संगठनों और सरकारों ने उन्हें पुरस्कारों से भी पुस्कृत किया है। इनमें उल्लेखनीय नाम है प्रतिमा नन्दि नार्जारी का। बोडो साहित्य में उनके योगदान को देख बोडो साहित्य सभा ने उन्हें साल 2022 की समेश्वरी ब्रह्म साहित्य पुरस्कार से नवाजा है। येसे दरजे थंसि के असमिया उपन्यास 'शव कटा मानुह' के बोडो अनुवाद गोथै दानस'ग्रा मानसि के लिए भी उन्हें बर' रेबग्रा जथुम ने साल 2022 की फोरोंगिरि महेंद्र मुसाहारी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

बिभुति भुषन नार्जारी भी बोडो साहित्य के एक जाने माने लेखक हैं। बोडो साहित्य में उनके योगदान के लिए बोडो साहित्य सभा ने उन्हें साल 2022 के रांसार साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया है।

बोडो साहित्य में लेखक के रूप में उत्तरा बैसोमुथियारी भी एक अच्छा नाम है। वे लघु कथा लिखते हैं। उनकी ज्यादातर लघु कथाएँ बोडो समाज और नारी पर आधारित हैं। बोडो साहित्य सभा ने उन्हें साल 2022 की प्रवन बरगयारी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

साल 2022 में बोडो साहित्य सभा के अलावा साहित्य अकादेमी ने भी बोडो लेखकों को विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा है। इनमें से साहित्य अकादेमी पुरस्कार सबसे आगे है। इस पुरस्कार को भारत के संविधान में स्वीकृति प्राप्त भाषाओं के लेखकों को दिया जाता है और इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार बोडो कवयित्री रश्मि चौधुरी (जन्म 1974) को दिया गया है। पुस्तक का नाम है 'सानस्रिनि मदिरा' (2019)। यह कविता संग्रह है और इसके प्रकाशन का काम बोडो पब्लिकेशन बोर्ड, बोडो साहित्य सभा ने किया है। उनकी कविताओं के विषय ज्यादातर नारी पर आधारित हैं।

बोडो भाषा में इस वर्ष साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, राजा देबजित बसुमतारी को दिया गया है। उन्होंने बांग्ला लेखक सुष्मिता बंद्योपाध्याय की काबुलिवालार बाङाली बौ नामक बांग्ला उपन्यास को बोडो भाषा में 'काबुलिवालानि बाङाली बिजि' नाम से अनुवाद किया है और इस किताब के लिए ही उन्हें अनुवाद पुरस्कार से नवाजा गया है।

साहित्य अकादेमी के इस साल का बाल साहित्य पुरस्कार देवबार रामचियारी को मिला है। उनके बाल उपन्यास 'लांगोनानि बखालि गथ' नामक किताब के लिए उन्हें यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

इस साल साहित्य अकादेमी का अवार्ड प्राप्त करने वालों में अलंबार मुसाहारि (जन्म 1989) का भी नाम आता है। नवंबर 2018 में प्रकाशित उनके लघु कहानी संग्रह 'गां फुजानाय मासे दाउ' के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी ने 2022 साल के युवा पुरस्कार से नवाजा है।

2008 साल में स्थापित गुरुदेव कालिचरण ब्रह्म ट्रस्ट द्वारा साल 2022 का कालिचरण ब्रह्म पुरस्कार मन'रन्जन ब्रह्म को दिया गया है।

साल 2022 में बोडो साहित्य में प्रकाशित पुस्तकों के बारे में एक झलक देने का प्रयास किया गया है। परंतु यह बात दावे के साथ नहीं कह सकती हूँ कि यहाँ इस साल प्रकाशित सभी लेखकों की रचनाओं को शामिल कर पाई हूँ। इसका कारण है, कुछ लेखक किताबों को अपने आप प्रकाशित करते हैं और ये किताबें बाजार में उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। दूसरा कारण है प्रचार–प्रसार की समस्या की वजह से किताबें हर जगह सभी पाठकों के पास नहीं पहुँच पाती हैं। इसलिए बोडो किताबें इकट्ठा करने में मुश्किल आ जाती है। इसके बावजूद जितना हो पाया इतना इकट्ठा किया। जिनकी किताबें यहाँ सम्मिलित हो पाईं उनके प्रति मैं आभारी हूँ और जिनकी किताबों को सम्मिलित नहीं कर पाई उनके आगे मैं हाथ जोड़ती हूँ।

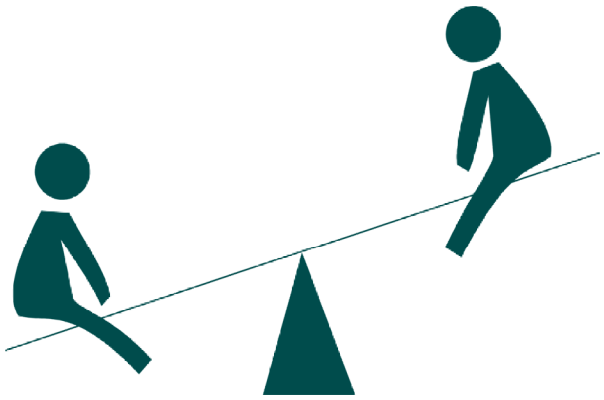

15

मणिपुरी साहित्य



ह. सुवदनी देवी

मणिपुरी एवं हिंदी में भाषाविज्ञान संबंधी लेखनकार्य। प्रयोजनमूलक हिंदी, भारतीय भाषा कोश, हिंदी–मणिपुरी अध्येता कोश, मणिपुरी लोकसाहित्य आदि कई पुस्तकें प्रकाशित। लगभग सौ शोध आलेख प्रकाशित। भारत सरकार की विभिन्न समितियों आदि में विशेषज्ञ एवं सदस्य के रूप में सहभागिता। अनेक सम्मानों से सम्मानित।

साहित्य सामाजिक चेतना की उपज है। यह समय सापेक्ष है। समय की धारा के साथ–साथ साहित्य–धारा भी प्रवाहित होती है। हर वर्ष की तरह आलोच्य वर्ष में भी मणिपुरी में साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन बड़ी तादाद में हुआ है। इससे साबित होता है कि विज्ञान तथा तकनीकी के इस युग में भले ही मणिपुरी साहित्य के पाठक समूह की कमी हो गई हो परंतु मणिपुरी समाज में साहित्यिक प्रेमियों की कोई कमी नहीं है। प्रस्तुत आलेख में वर्ष 2022 में प्रकाशित मणिपुरी साहित्य के लेखे–जोखे का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

कविता : आलोच्य वर्ष यानी 2022 में मणिपुरी कविताओं की पुस्तकें बड़ी संख्या में प्रकाशित हुई हैं। उनमें प्रेमी याइरिपोक की 'तुंबा याद्रबा अहिंगी शरें' (नींद न आने वाली रात की कविता), खाङेन्बम इबेतोन देवी की 'चाइगोनुंदा लैबाकलै' और 'लैरोल शात्ले', डॉ. लेनिन की 'नींशिंलकपदा'(याद आने में), मधुमंगल की 'ईशै शक्तुना चत्लिबा लंबीसिदा' (गाना गाते चलता इस राह में), देबदास माइरेंबम की 'ऐ लैत्रे' (मैं मैं न रहा), खूम्बोंमयुम देबला की 'ऐबु कयाम नुंशबिगे' (मुझसे कितना प्यार है), लाइश्रम नबकिशोर की 'अमांशङदा ऐ'' (शौचालय में मैं), वाइखोम अमुचौ मैतै की 'पंदुप पंदुप' (खंड खंड), भाग्यचंद्र राजकुमार की 'अबोक्की कपत्रें मखोल' (दादी की चरखे की आवाज), उशम निरंजन की 'मणिपुर कौबी इमाओ', खाइदेम इमो की 'क्वाक तानसे' (कौवे भगाए), लाइ तोंबी की 'इमाना हाइ'(माँ कहती है), डॉ. आई एस युम्नाम की 'थेंखौ लांपुमलोन' (युद्ध का ढोल), कांजम राधाकुमार की 'नायतोम ताना मीरक्ता' (भीड़ में अकेला), शेंगोइ सनसम द्वारा संपादित 'चींनुंगी खोन्थां'' (पहाड़ की प्रतिध्वनि), कोन्सम लोइदां देवी की 'कुफेत्–काफेत्'' (झक–मग), थोकचोम रघुनाथ की 'शक्लोन पुबी' (बहुरूपी), बिजेंद्रजित् की 'लैकंलागी नोंगौबी'(मरुस्थल का चकोर), हाओबम नलिनी की 'नुंशिथोइबा', मोइरांथेम मलया की 'नङगी चीनबानगी मचुना'(तुम्हारे ओठों

के रंग से), पुखंबम ओंबी नाओरेम तबाबी देवी की 'काओङद्रबा मसि' (यादगार छबी), राकेश नाओरेम द्वारा संपादित 'नींतंबगी ईशै' (स्वतंत्रता का गीत), खाङेंबम इबेतोन देवी की 'चींलैबाक्नि चींलैबाक', मोइरांथेम गोजेंद्रो की 'याङना पाइख्रोको पुन्सि' (जीवन तेज उड़ता जा), मोइरांथेम राजेन की 'मंलांदा लोत्लिबा शक्तम' (सपनों में छिपी शक्ल), सौबम सोफियारानि की 'होत्नजमन की महै' (मेहनत का फल), मुतुम रमणी देवी की 'करम्ना थेम्गनि' (कैसे मनाऊँ), हैखाम चाओबा द्वारा संपादित 'निङोल मपाओ' (पैगाम कन्याओं का), याइस्कुल ख्वाइराक्पा की 'नवा रूपबाल' (बालक रूपबाल), मनिहार लैशंथेम की 'नापगी नाचोम' (कर्णफूल), वाहेंबम निमाइचांद सिंह की 'ऐसु मीरेप ओइरनि'(मैं भी), हेमाम गंभिर की 'चुमथाङ मखोङ थिबा' (इंद्रधनुष के पाँव की तलाशी), सौबम बिरधजा की 'कोविद मनुंगी थाबुम तरादा' (कोविद के दस माह), पुखंम्बम कुन्जो की 'लोइकुम लोइका' और 'इजनींइ परें अमतं कवितागी'(लिखूँ कविता का एक पँक्ति) शैहेक शरेङ शपाल लुप द्वारा संपादित 'सनरिक परें'' (स्वर्ण हार), चांदम भुबोन की 'थेंगु नहा' (युवा कछुआ), राजकुमारी मीना देवी की 'तत्खबा लंला' (टूटा धागा), शगोलशेम लाकपति मङां की 'फु अमसुं लै', रघु लैशांथेम की 'ऐना शक्खीद्रबा ईशै' (वह गीत जिसे मैंने नहीं गाया), राजकुमारी नयनस्ना देवी की 'या या लाङइ चुप लुपइ'(हो हल्ला फिर बिलकुल चुप), राकेश मोइरांथेम की 'मङगी लैबाक' (सपनों का देश), लाइश्रम नबकिशोर की 'अद ताय' (वही हुआ), थोइबी वाहेंबम की 'मङलानदा पिरमइ' (सपनों में दिया), मोइरांथेम राजेंद्र की 'ताइबं मीरम्लेन' (मानवलोक) आदि उल्लेखनीय है।

'भीड़ में अकेला' कांजम राधाकुमार द्वारा रचित आलोच्य वर्ष की बहुचर्चित किताबों में एक है। इस किताब में कुल 45 कविताएँ संकलित हैं। उनकी ज्यादातर कविताएँ वैचारिक एवं दार्शनिक हैं। कवि अपनी कविताओं में 'जीवन क्या है?' इस प्रश्न के उत्तर की तलाश में समाज और संसार को गहराई से जानने और समझने की उनकी जिजीविषा दिखाई देती है। इन सवालों के घेरे में वे भीड़ में भी अकेलापन महसूस करने लगते हैं। उनकी इन मनोवृत्तियों के ही परिणामस्वरूप रची गई प्रतीत होती हैं उनकी ये कविताएँ। उनकी 'मोंबा मरानयाई तम्ना' (अपने आवास की ओर) से कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

दिन प्रतिदिन विस्तृत होता चला/और अधिक फैलता चला/असीम होता चला/उड़ता है थके प्राण/पतंग सा/देखता है आकाश से/सुनता है दो प्राणों की आपसी बातचीत/ताज्जुब है आह! कितना ताज्जुब!

'संध्या में प्रेम गीत' नामक कविता में वे ढलते उम्र की ओर इशारा करते हुए जीवन के संघर्ष से थके हारे जीवन का चित्रांकन करने का प्रयास करते हैं। देखिए उनकी निम्न पंक्तियाँ–

सूर्य के स्वागत में खिलता सूर्यमुखी/बीत गया, बीत गई वह सूबह सूर्यमुखी की /मिट गए सपने कई–कई/याद आने में आज आह! याद आने में/सिवाय दिल में प्रेम के जो मेरा न था/ .....अगले पल के इशारे आने से पहले/आश्चर्य भरे समुंदर में एक बूंद का/मिल जाने से पहले/बेनाम निराकार।

कहानियाँ : मणिपुरी में कहानी सबसे ज्यादा लोकप्रिय एवं लिखी जाने वाली साहित्यिक विधा है। गत वर्ष मणिपुरी में कहानी की किताबें प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हुई हैं। उनमें सोरोकखाइबम देबेंद्र मीतै की 'बोलना कोइथोकलुबादा' (बॉल द्वारा घूमके आने में), हिदाम दोलेन की 'अहींसे नुमित् तारेसे', क्षेत्रिमयुम सुबदनी की 'अशेंबा इरल', हैखाम चाओबा द्वारा संपादित 'खुत्की वारीमचा', आर के नयनस्ना देबी की 'सनरिक परें', कोन्सम ब्रजमोहोन की 'फिजिगी लन', सोबिता मोंजम की 'योत्शबी मखोङ अहुम', रनबीर सारूंबा की 'नुंशिबगी मङ', चोंथाम नलिनी देवी की 'लियोन परें' आदि उल्लेखनीय हैं।

सोबिता मोंजम की कहानी 'योतशबी मखोङ अहुम' एक लंबी कहानी है। इसे कुछ लोग नोवेलेट कहना पसंद करते हैं। इस कहानी में कहानीकार ने तत्कालीन मणिपुरी समाज में महिलाओं की जो परिस्थिति है उस पर प्रकाश डाला है। मणिपुरी समाज में कुछ हद तक स्त्रियों को आजादी एवं छूट मिली है। फिर भी आज के पुरुष प्रधान इस समाज में स्त्रियाँ शारीरिक रूप से कमजोर होने के नाते तथा सामाजिक व्यवस्था के कारण समय–समय पर शोषण, अत्याचार एवं जुल्म का शिकार होती रही हैं। वास्तव में स्त्री मानसिक रूप से बहुत शक्तिशाली है। परंतु समाज ने उसको त्याग एवं समर्पण का प्रतीक बताकर उसको और कमजोर बनाया है। इस कहानी में कम उम्र में विधवा हुई तीन महिलाओं के जीवन संघर्ष का बयान है। पुरुष प्रधान समाज में ये तीनों महिलाएँ कदम–कदम पर ठोकरें खाने के बाद अंत में अपनी सहनशीलता एवं आत्मविश्वास के करण अपने बलबूते पर समाज में अपना स्थान स्थापित करते हुए समाज कल्याण के लिए समर्पित भाव के साथ सेवा करने का अवसर पाती हैं।

युवा कहानीकारों में रनवीर सारूंब का स्थान नकारा नहीं जा सकता। गत वर्ष प्रकाशित उनका कहानी संग्रह 'नुंशिबगी मङ' (प्यार का सपना) में कुल चौदह छोटी–छोटी कहानियाँ हैं। कहानीकार ने बहुत ही कम शब्दों में वर्तमानकालीन मणिपुरी समाज में घट रही घटनाओं को चित्रांकन करने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने अपनी कहानी 'ममल हंथखिबगी ममल' (अवमूल्यन का मूल्य) नामक कहानी में बंद, कर्फ्यू आदि की समस्याओं को लेकर तत्कालीन मणिपुरी समाज पर व्यंग्य किया है। तत्कालीन मणिपुरी समाज में बंद, ब्लोकेड, कर्फ्यू आदि आम बात–सी हो गई है। किसी भी समय मणिपुर में बंद हो सकता है, कर्फ्यू लग सकता है। इसका कोई ठिकाना नहीं, कारण कुछ भी हो सकता है। प्रस्तुत कहानी में एक रईस परीवार के नशे में डूबे एक बेटे के घर वापस न आने पर पूरे मणिपुर में बंद ऐलान किया जाता है।

यह कहानी मणिपुरी समाज में प्रचलित बंद की संस्कृति एवं बड़े घर के लोगों में घटित छोटी–से–छोटी घटना का भी लोग अंधाधुंध अनुसरण करना, उसको हवा देना, उनका समर्थन करने की मणिपुरी समाज में प्रचलित रीति को उजागर करते हुए धनी लोग जो कुछ बोलते हैं, करते हैं उस पर सच्चाई जाने बिना लोग विश्वास कर लेते हैं। इस प्रकार तत्कालीन मणिपुरी समाज के लोगों की इसी प्रकार की मानसिकता पर व्यंग्य किया है।

'असेंबा इरल' (सच्चा धन) यह क्षेत्रिमयुम सुबदनी द्वारा लिखित कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में कुल 20 कहानियाँ संकलित हैं। ज्यादातर कहानियों में मणिपुरी नारियों का चरित्र चित्रण किया गया है। लगभग सभी कहानियाँ नारी को केंद्रबिंदु बनाकर लिखी गई हैं। साथ ही साथ सरकार की काली करतूतों का भी पर्दाफाश करने का प्रयास किया गया है। कहानीकार ने मुख्य रूप से नारी जीवन में आई समस्याओं तथा चुनौतियों को उजागर करने अथवा चित्रांकन करने की कोशिश की है। साथ ही साथ इस बात को भी साबित करने का प्रयास हुआ है कि नारी भी पुरुषों से किसी भी स्तर पर कम नहीं है। पुरुष जो कर सकता है वही स्त्री भी कर सकती है। मणिपुरी स्त्री पुरुषों की अधिनता स्वीकार नहीं करती। यही बात साबित करने का प्रयास उनकी सभी कहानियों में देखने को मिलता है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इस पुस्तक में संकलित लगभग सभी कहानियाँ नारी सशक्तिकरण की पृष्ठभूमि पर रची गई हैं।

'असेंबा इरल' (सच्चा धन) नामक कहानी में लेखक ने आज के इस भौतिकवादी युग में रिश्ते–नाते को भौतिक वस्तुओं से तौलकर देखने अथवा अपने सुख को भौतिक वस्तुओं के पीछे तलाश करने की आजकल की युवा पीढ़ियों की मानसिक प्रवृत्तियों को चित्रांकन करते हुए सच्चा धन क्या है, इस पर अपना विचार अभिव्यक्त करने की कोशिश की है। लेखक ने अपनी कहानी में इस बात का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है कि मनुष्य कितना भी विकसित हो जाए, अपनी सुख सुविधाओं के लिए कितनी भी भौतिक वस्तुओं का निर्माण कर ले फिर भी अंततः अपने घर–परिवार रिश्ते–नाते तथा इनसानियत से बढ़कर कोई भी वास्तविक सुख–चैन, आत्मा को शांति नहीं दिला सकता। इन्सानियत और रिश्ते–नाते को ही लेखक ने सच्चा धन बताने का प्रयास किया है। आजकल के युवा भौतिक वस्तुओं के पीछे भागते–भागते अपने माँ–बाप को भूल जाते हैं, इस कारण से अंततः वे असंतोष, पश्चाताप आदि मनोविकारों से ग्रस्त हो जाते हैं।

इस कहानी की मुख्य पात्र तोंबीनौ है। उसके दो बेटे हैं। तोंबीनौ विधवा है। उसने कठोर परिश्रम कर अकेले के दम पर अपने दोनों बेटों को पाल पोसकर बड़ा किया, पढ़ाया लिखाया, लायक बनाया। इसके बदले में उसके बेटों ने अपनी को बूढ़ी अवस्था में उसकी अवहेलना कर ओल्ड होम में छोड़ दिया। तोंबीनौ किसी से शिकायत

नहीं करती। वह मरने से पहले यह कहती है कि मरने के बाद उसके शव को मेडिकल छात्रों के लिए अस्पताल को समर्पित कर दिया जाए। इस प्रकार तोंबीनौ के बेटों को अपनी माँ के अंतिम संस्कार तक करने का हक नहीं मिल पाता। अंत में दोनों बेटे माँ की कही हुई बातों को यादकर पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगते है। सनाजाओबा के कानों में अपनी माँ की बात गूँजती रहती है– ''लालच इंसान को दुख के जाल में फँसाता है। दुखों का कारण अभिलाषा है। तुम्हारा लालच हद से ज्यादा बढ़ गया है। सही–गलत का निर्णय करने की बुद्धि इन्सान के आलावा पशु–पक्षी में नहीं है।''

उपन्यास : आलोच्य वर्ष में मणिपुरी उपन्यासों का प्रकाशन भी बड़ी संख्या में हुआ है। उनमें हिजम गुण का 'अरोइबा पाउदम' (आखरी पैगाम), हुइद्रोम राधाकांत का 'नयनी', नेत्रजित तोंब्रम का 'इमा ङाइखिनि' (माँ का इंतजार करूँगा), श्यामकुमार लाइश्रम का 'अमत्ता ओइखबा तोर्बान' (एक में विलय दो किनारे), कोंखाम चंद्रमनि का 'पाउखुम फंखबा वाहं' (उत्तर मिल गया सवाल), डॉ चोंथाम तोंबी सिंह का 'नुंशिबगीदमक' (प्यार के लिए), बी एम माइस्नांबा का 'नोंमै अमसुं कलम' (बंदूक और कलम) और 'कंलै रिपोर्टर', क्षेत्री बीर का 'पाउखुम' (जवाब), नाउरोइबम शामुङौ का 'सनाथोइ', मोइरांथेम प्रियब्रत सिंह का 'ङाङ्गानबा नुमिदां' (लालीमामय संध्या), नबकुमार नोंमैकापम का 'थाजमानबी' आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित चर्चित एवं लोकप्रिय उपन्यासों में क्षेत्रि बीर द्वारा लिखित उपन्यास 'पाउखुम' उल्लेखनीय है। इस उपन्यास में अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद अकेलापन, सूनेपन और खालीपन के साथ जी रहे एक विधुर का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है। इस उपन्यास का नायक चींलेंबा है। वह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बहुत अकेला हो जाता है। उसका जीवन बिलकुल शून्य–सा महसूस होने लगता है। वह न चाहते हुए भी अकेलापन में जीवन बिताने को मजबूर हो जाता है। उसके सभी बच्चे विदेश में रहते हैं। इसलिए वह बिलकुल असहाय बन जाता है। इस तरह बाद में हालात के चलते वह अपने अकेलापन और सूनेपन को दूर करने के लिए एक जीवन साथी की तलाश में फेसबुक के जरिये एक कम उम्र की लड़की से मित्रता करता है। बाद में लांलेन नामक एक भोली–भाली स्वच्छ मन वाली युवती से मिलने के बाद उसकी जीवन साथी की तलाश पूरी हो जाती है। लेखक उपन्यास में एक जगह लिखते हैं– ''मनुष्य खुशहाल जीवन के लिए घर बसाता है, ऐसे जीवनसाथी की तलाश करता है जिसके दिल से दिल मिले।

बी. एम. माइस्नांबा का 'नोंमै अमसुं कलम' आलोच्य वर्ष का बहुत ही चर्चित एवं लोकप्रिय उपन्यास रहा है। मणिपुर सीमावर्ती राज्य होने के कारण मणिपुरी समाज अलगाववाद एवं आतंकवाद की समस्याओं से उलझता रहता है। बंदूक की आवाज, बम फटने की आवाज, एनकाउंटर ये सब आम बातें हो गई हैं। पहले यह धारणा बनी कि

'कलम तलवार से धारदार है' लेकिन आजकल के नौजवान लोग इस धारणा को मानने से इनकार करने लगते हैं। इस उपन्यास का नायक इरोम खोंबा भी इस धारणा को मानने से बिलकुल इनकार करता है। वह मानता है कि आजकल कलम से बंदूक अधिक शक्तिशाली है। बंदूक के सामने सब झुक जाते हैं। बंदूक सर्वशक्तिमान है। नायक की यह धारणा आजकल की न्यायपालिका के गलत फैसले के कारण से बनी है। बंदूक के इस जमाने में न्याय लाचार होता नजर आ रहा है। लोगों का न्यायपालिका के प्रति विश्वास कम होता जा रहा है। इन सब बातों का उपन्यासकार ने बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रांकन किया है। अंत में जज मालिनी के द्वारा हत्यारे डी. एस. जी रंजित को फाँसी की सजा सुनाकर उपन्यासकार ने यह साबित करने का प्रयास किया कि कभी–कभी बंदूक और पैसों की शक्ति से कलम भी अधिक ताकतवर बन जाती है। इस प्रकार उपन्यासकार ने नायक को यही बात मानने को मजबूर किया है।

'नाटक : मणिपुर के लोग नाटक पढ़ने से अधिक देखना एवं सुनना पसंद करते हैं। मणिपुरी नाटककारों ने भी इस बात को पूरा का पूरा ध्यान में रखा है। गत वर्ष में भी मणिपुरी नाटककारों के नाटक बड़ी संख्या में प्रकाशित हुए हैं। उनमें प्रमुख नाटकों के नाम इस प्रकार हैं– प्रेमजित थौनाओजम का 'मङलान ओइहौरे' (सपना बन गया), मनाओबी एम. एम. का 'मायथोङ अनी नुंषि लौनंबी' (दो रूपवाली प्रेम छली), अचौबा युम्नाम का 'उचेक लांमै', सांतोष एम. का 'तबुनुंदगी' (चार नाटकों का संकलन) और 'मल्ल मल्ल लैनुंषि', मनि तायेन्जम का 'फंखिद्रबा वाहं' (लाजवाब प्रश्न), ङौबा थौना का 'हयेंना कमदौबा' (कल कैसे हो) आदि।

उचेक लांमै' शीर्षक से प्रकाशित इस पुस्तक में पाँच नाटक संकलित हैं। इसके रचयिता अचौबा युमनाम हैं। इस पुस्तक में संकलित लेखक के सभी नाटक ऑल इंडिया रेडियो, इंफाल में रेडियो नाटक के रूप में प्रसारित हो चुके हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित नाटकों में यह मणिपुरी साहित्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि इस पुस्तक में संकलित सभी नाटक साहित्य की दृष्टि से बहुत ही सफल एवं संपदा माने गए हैं। साथ ही मंचन की दृष्टि से एवं लोगों का मनोरंजन करने में खूब सफलता प्राप्त की है। इसमें संकलित नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिकता पर आधारित हैं। 'उचेक लांमै' (एक विषेष पक्षी का नाम) मणिपुरी लोक कथा पर आधारित नाटक है। इस नाटक में सौतेली माँ से प्रताड़ित एक युवती का मार्मिक चित्रण किया गया है। 'नुपीलान' (नारी विद्रोह) नामक नाटक में लेखक ने एक ऐतिहासिक घटना को आधार बनाते हुए लोगों के द्वारा भुलाए जा चुके उस ऐतिहासिक घटना में मुख्य भूमिका अदा करने वाले पात्रों को पुनः जीवित करने का प्रयास किया है। 'ओजा संध्या' नामक नाटक में एक शिक्षिका और शिष्य के बीच के प्रेम संबंध और उससे उत्पन्न

समस्याओं का चित्रण किया गया है। 'मथं चहीदा लाक्के' (अगले साल आऊँगा) शीर्षक नाटक में कोरोना महामारी के कारण जन–जीवन में आए संकटों एवं प्रभावों तथा इससे उत्पन्न लोगों के मानसिक तनावों का बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रण किया गया है।

गद्य : किसी विषय पर अपना विचार व्यक्त करने अथवा अपना नजरिया स्पष्ट करने के लिए गद्य साहित्य सबसे सशक्त विधा है। आलोच्य वर्ष में मणिपुरी में प्रचुर मात्रा में गद्य एवं निबंधों की रचना हुई है। उनमें नाओरोइबम खंबा लुवां का 'मार्जिं सनामहिगी शाइओन्नि', मेघचंद्र कोंबम का 'मणिपुरी सिनेमा', युगोल साइ का 'चही चाम्मागी इंडियागी कम्युनिस्ट पार्टी', नाओरेम हेराङंबा मङां का 'पुवारी नाचोम', डॉ. सनातोंबा और डॉ. कोंथौजम बिमोला का 'अङनबा मणिपुरी साहित्यगी लीक्लु परें', क्षेत्रिमयुम कृति का 'ओजा गुरूशिंदगी–2', ए. के. धिरेन मैतै का 'कदायदगी हौरकपनो येक सलाइ–7 कदायदगी हौरकपा' अहैबम ऋषिकेश का 'कंले नात्ता थाङ तागी मफम' राजकुमार शीतलजित का 'नेताजी सुभाषचंद्र बोस और आजाद हिंद फौज' के. सि मङां का 'ऐखोयगी होजाइ' आदि उल्लेखनीय हैं।

आलोचना : वाहेंबम धनश्याम का 'कुनशुबा चहीचा ममाङगी कंलैपाक्की खोरिलोल नैनबा' (बीसवीं शताब्दी पूर्व मणिपुरी साहित्य की समालोचना), युम्नाम इबोपिशक का '19 अमसुं 20 शुबा चहीचादा मणिपुर साहित्य' (19वीं और 20वीं शती में मणिपुरी साहित्य), शरतचंद्र थियाम द्वारा संपादित 'मणिपुरी खोरिलोलदाश्खोंजोम लाल' (मणिपुरी साहित्य में खोंजोम की लड़ाई), एम. एम. अहमद द्वारा संकलित 'कयामुदिन अमसुं महाक्की साहित्य' (कयामुदिन और उसका साहित्य), डॉ. एन सनातोंबा का 'साहित्यदा रस : नोंपोक अमसुं नोंचुप' (साहित्य में रसः पूर्वी और पश्चिमी), प्रो. कुंजो सिंह का 'भारत की दलित खोरिरोल नैनबा' (भारतीय दलित साहित्य विमर्श), ओकेंद्रो खुंदोंबम द्वारा संपादित 'ऐखोयगी ईशै' (हमारे गीत), डॉ. मोइरांथेम विद्यानंद का 'मणिपुरी ड्रमादा खुंदोंबम ब्रोजेंद्रोगी खुदोल' (मणिपुरी रंगमंच में खुंदोंबम ब्रोजेंद्रो का योगदान) लोंजम जयचंद्र द्वारा संपादित 'मणिपुरी संकीर्तनगी हौरकफम अमसुं मशक'(मणिपुरी संकीर्तण का स्वरूप एवं विकास), आदि आलोच्य वर्ष में प्रकाशित आलोचना की पुस्तकें हैं।

''मणिपुरी संकीर्तनगी हौरकफम अमसूं मशक'' (मणिपुरी संकीर्तन का स्वरूप एवं विकास) लोंजम जयचंद्र द्वारा संपादित एक समालोचनात्मक पुस्तक है। इस पुस्तक में कुल सात आलेख हैं। इन आलेखों में मणिपुर में नट संकीर्तन के उद्भव एवं विकास तथा इससे संबंधित सभी तत्वों पर विचार विश्लेषण किया गया है। प्रथम आलेख में प्रो. राजमणी ने मणिपुर में किस प्रकार नट संकीर्तन का उद्भव एवं विकास हुआ इस पर विस्तार से विश्लेषण किया है। दूसरा आलेख 'नट संकीर्तन अर्पण के आंतर्निहित मूल स्वरूप' शीर्षक से है। इस आलेख में डॉ. थोइबा सिंह ने मणिपुरी नट संकीर्तन

परंपरा में समयानुसार आए बदलाव एवं इसके स्वरूपों पर विस्तार से विश्लेषण करते हुए वर्तमानकालीन प्रचलित स्वरूप पर भी विस्तार से विचार विश्लेषण किया है। हाओबम ननीकुमार के आलेख 'मणिपुरी संस्कृति में नट संकीर्तन' शिर्षक से मणिपुरी संस्कृति में नट संकीर्तन की भूमिका एवं महत्व पर विस्तृत रूप से विचार करते हुए मणिपुरी संस्कृति में नट संकीर्तन के स्थान का उल्लेख किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक मणिपुर की सांस्कृतिक परंपरा के बारे में ज्ञान देने में समर्थ साबित हुई है।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित अन्य साहित्यिक विधाओं में निम्न मणिपुरी रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं।

जीवनी : हर वर्ष जीवनी बहुत कम मात्रा में प्रकाशित होती है। थौदाम जीलाङम्बा का 'खोंजोम पर्वगी निंथौरेल' (खोंजोम पर्व का सम्राट), थियाम जेकेंद्र की 'आइनस्टाइन', हेमाम इबेतोंबी की 'मरैबाक मजातिगीदमक कत्थोक्खबा हेमाम निल्लमनि सिंह', सिनामचा हेरामनि खुमन की 'पुखंबम कजाओ' डॉ. खोलचंद्र की 'मणिपुरी रंगमंच का एक प्रवर्तक : सोरोखाइबम ललित सिंह' आदि आलोच्य वर्ष में प्रकाशित प्रमुख जीवनियाँ हैं।

'मणिपुरी थियेटरगी लमयानबा अमा : सोरोखाइबम ललित सिंह' (मणिपुरी रंगमंच का प्रवर्तक : सोरोखाइबम ललित सिंह) नामक जीवनी आलोच्य वर्ष के चर्चित पुस्तकों में से एक है। इसके लेखक डॉ. अथोकपम खोलचंद्र हैं। इस पुस्तक में सोरोखाइबम ललित सिंह के जीवन के बारे में विस्तार से विवरण देते हुए मणिपुरी नाट्य परंपरा एवं रंगमंच में उनके योगदान के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। साथ ही साथ मणिपुरी रंगमंच के उद्भव एवं विकास के बारे में भी विस्तार से विचार विश्लेषण किया गया है। मणिपुर में नाटक का उद्भव सन् 1918 के आस पास माना जाता है। सन् 1918 में खाइदेम नोंयाइ ने बंगला के नाटक 'पार्थ पराजय' का मणिपुरी में 'आर्जुन मायथिबा' नाम से अनुवाद किया है जिसका मंचन हुआ था। इसी के साथ मणिपुरी नाट्य परंपरा का विकास माना जाता है। सोरोखाइबम ललित से पहले अर्थात सन् 1918 से सन् 1931 तक के मणिपुरी नाटकों में पूर्ण रूप से बंगला रंगमंच का प्रभाव देखने को मिलता है। सोराखाइबम ललित सिंह ने बंगला नाटक के प्रभाव से मणिपुरी रंगमंच को छुटकारा दिलाने का प्रयास किया था। उन्होंने सन् 1931 में 'अरेप्पा मरूप' (सच्चा मित्र) और 'सती खोंनां' नामक दो नाटक लिखे जिनका सफलतापूर्वक मंचन हुआ। इस प्रकार बंगाली नाट्य परंपरा के प्रभाव से अलग मणिपुर की धरती में उपजी मौलिक मणिपुरी नाट्यपरंपरा की शुरुआत हुई।

यात्रावृत्तांत : खाङेम्बम इबेतोन देवी का 'हामिरागाछी नींथिबी' (सुंदर हामिरगाछी)।

बाल साहित्य : डॉ. रहैजुउदिन शैख का 'ऐगी शमु अमसुं ननाओमचा' (मेरे हाथी और मुना) वाइरोकपम शेलुंबा का 'वारी नाचोम' (कहानी कुँज)।

अनुवाद : नजरल इसलामगी संचयता से यमुना लाइरेन्जम द्वारा मणिपुरी में अनुवादित 'नजरल इसलामगी शैरें खरा', इमलि ब्रोन्टि के अंग्रेजी उपन्यास रूधरिं हाइटस से हैक्रुजम श्यामसुंदर द्वारा अनुवादित 'रूधरिं हाइटस', प्रेमचंद के हिंदी उपन्यास 'रंगभूमि' से इबेतोन देवी द्वारा मणिपुरी में अनुवादित 'लानबुं' लाइश्रम कमल सिंह का 'कामायनी' (जयशंकर प्रसाद के हिंदी महाकाव्य 'कामायनी' से अनुवादित), कोंथौजम जितेंद्र का कुरंगनयनी (इला बरगोहाइन के असमी उपन्यास कुरंगनयनी से अनुदित) आदि आलोच्य वर्ष में प्रकाशित दूसरी भाषाओं से अनूदित मणिपुरी रचनाएँ हैं।

पत्र–पत्रिकाएँ : 'साहित्यगी पाओ', 118–119वाँ अंक (त्रैमासिक, साहित्य फोरम मणिपुर द्वारा प्रकाशित), 'मपाओ', 20वाँ (लेनिन द्वारा संपादित), 'इचेल' (नोहाखोल द्वारा प्रकाशित), 'इहौरकपा' (इखल, वाबगाइ द्वारा प्रकाशित), 'लैकोल', 28वाँ अंक (लैमरोल खोर्जेकोल द्वारा प्रकाशित), साहित्य लैचल, 65वाँ अंक (मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी, इंफाल द्वारा प्रकाशित), 'मङाल', 16–17वाँ अंक (मणिपुरी साहित्य परिषद, शिलांग द्वारा प्रकाशित), 'इराओखोल', 13वाँ अंक (इमाखोल द्वारा प्रकाशित), 'लोकताकखोल' (लोकताक खोर्जेलुप), 'इथिल' (खोरिरोल शंदोकलुप, वांजिंग द्वारा प्रकाशित), 'येनिङ', 28वाँ अंक (मणिपुरी साहित्य समिति, थौबाल द्वारा प्रकाशित), 'वाखल', 90वाँ अंक (नहारोल साहित्य प्रेमी समिति, इंफाल द्वारा प्रकाशित), 'ऋतु' (द कल्चर फोरम,' मणिपुर) आदि आलोच्य वर्ष में प्रकाशित प्रमुख पत्रिकाएँ हैं।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित साहित्यिक रचनाओं को देखकर स्पष्ट हो जाता है कि मणिपुरी साहित्यकारों ने लगभग सभी साहित्यिक विधाओं पर हाथ डाला है। इस प्रकार मणिपुरी साहित्यकारों ने अथक प्रयास के साथ लाभ–हानि को किनारा कर मणिपुरी साहित्य भंडार को बढ़ाने का प्रयास किया है।

❑❑❑

16

मराठी साहित्य



सुवर्णा अशोक जाधव

'शिकायत' और 'धूप छाँव है जिंदगी, 'कविता संग्रह प्रकाशित। विविध पत्रिकाओं में लघुकथा प्रकाशित। अनेक मराठी पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रकाशित। तीन किताबों का मराठी से हिंदी में अनुवाद। संप्रति–विरष्ठ सहायक संचालक, व्यवसाय शिक्षा विभाग।

महाराष्ट्र की राजभाषा मराठी है। मराठी भाषा गौरव दिवस हर साल 27 फरवरी को प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, नाटककार, लघु कथाकार विष्णु वामन शिरवाडकर, जिन्हें 'कुसुमाग्रज' के नाम से भी जाना जाता है। उनकी जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है इस अवसर पर विविध साहित्यिक संस्थाओं द्वारा काव्यगोष्ठी, चर्चा आदि का आयोजन किया जाता है। कोरोना के बुरे समय के बाद 2022 में मराठी भाषा गौरव दिन 27 फरवरी को धूमधाम से मनाया गया। महाराष्ट्र राज्य और संस्कृति मंडल ने इस अवसर पर 53 पुस्तकों का लोकार्पण किया।

कणकवली में सिंधुदुर्ग समाज साहित्य संघटन ने 27 फरवरी 2022 को मराठी भाषा दिवस मनाया। इस अवसर पर मालवनी बोली भाषा में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम, जिनका मालवनी बोली भाषा में पहली काव्य की पुस्तक प्रकाशित हुई थी, वरिष्ठ कवि दार दलवी, उनकी याद में आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्ष थी मालवनी कवयित्री डॉ. सई लळित।

पुरस्कारः साहित्य अकादमी पुरस्कार

खुशी की बात यह है कि साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कारों की घोषणा की गई है। दिनांक 24 अगस्त 2022 को साहित्य अकादेमी ने बाल साहित्य पुरस्कार 2022 की घोषणा की। अकादमी ने 22 भाषाओं के लेखकों से संबंधित बाल साहित्य पुरस्कार 2022 (बाल साहित्य पुरस्कार 2022) की घोषणा की। उसमें मराठी भाषा के लिए संगीता बर्वे के उपन्यास 'पिहूची वही' के लिए इस वर्ष के बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा की गई है। 'पिहूची वही', यह एक छोटी बच्ची द्वारा लिखी गई डायरी है। छुट्टियों में धूप में उसे जाने नहीं दिया जाता। तब घर में बैठे–बैठे वह घर की खिड़की पर रंग लगाती है, खुद की पेंट की हुई खिड़की से उसे एक अनोखी दुनिया

मिल जाती है। हमेशा खिड़की से देखने के कारण उसे पेड़, पक्षी, प्रकृति से लगाव हो जाता है। वह प्रकृति के लगाव से घूमती है, खुद कुछ नए–नए प्रयोग करती है, इस तरह' पिहूची वही' बच्चों को उनकी सृजनात्मकता और रचनात्मकता से परिचित कराती है। कोल्हापुर में शिवाजी विश्वविद्यालय के अधीक्षक, लघुकथाकार डॉ. किरण गुरव को उनकी कहानी की पुस्तक 'बाळूच्या अवस्थंताराची डायरी 'के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार घोषित हुआ है। 'बाळूच्या अवस्थंताराची डायरी' यह सिर्फ एक बच्चे के परिवर्तन की कहानी नहीं है, वह आज के संक्रमण काल का लेखाजोखा है।

मराठी के युवा लेखक प्रणव सखदेव और संजय वाघ को युवा साहित्य पुरस्कार और बाल लेखक पुरस्कार प्रदान किया गया है।

मराठी के युवा लेखक उपन्यासकार प्रवीण दशरथ बांदेकर जी को 'उजव्या सोंडेच्या बाहुल्या' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला। संजय वाघ ने साहित्य अकादेमी को युवा साहित्य पुरस्कार और बालसाहित्य लेखक पुरस्कार जीता है। उनकी रचना 'जोकर बनला किंगमेकर' को यह पुरस्कार मिला। इसमें आजकल बच्चे मोबाईल में मशगूल रहते हैं, उनके साथ खेलनेवाला कोई नहीं है, बात करनेवाला कोई नहीं है। उनकी तरफ देखने से लगता है जैसे उन्होंने अपना आत्मविश्वास खो दिया है। उनका आत्मविश्वास वापस लाने के लिए बाल साहित्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

इन सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मराठी साहित्य सम्मेलन

महाराष्ट्र में साहित्य सम्मेलन की परंपरा है। हर साल अलग–अलग जगह अलग–अलग संस्थाओं द्वारा साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। 2022 में लातूर के उदगीर में 95वें अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन (अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन) का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर उदगीर में तीन दिनों तक साहित्यिक मेला लगा। वरिष्ठ लेखक भारत सासने इस वर्ष सम्मेलन में अध्यक्ष थे। यह 95वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन 22, 23 और 24 अप्रैल को उदगीर में संपन्न हुआ। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता की। इस मौके पर लातूर के मंत्री अमित देशमुख जी उपस्थित थे। सम्मेलनाध्यक्ष थे संजय बनसोड़ेजी।

कोंकण मराठी साहित्य परिषद संस्था की स्थापना सुप्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री मधु मंगेश कर्णिक जी ने की थी। इस संस्था द्वारा छटा राज्यस्तरीय महिला सम्मेलन पालघर में 11 और 12 जून 2022 को आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन आदरणीय नीलम गोर्हे, (उपसभापति विधानपरिषद, महाराष्ट्र राज्य,) स्वागताध्यक्ष आदरणीय ज्योती ठाकरे जी, (महिला आर्थिक विकास महाराष्ट्र राज्य), और सम्मेलनाध्यक्ष थीं प्रसिद्ध साहित्यकारा मोनिका जी गजेंद्र गडकर द्वारा किया

गया। इस साहित्य सम्मेलन में काव्य पाठ, परिचर्चा और साहित्य के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था। मुझे बताते हुए खुशी होती है कि मेरी लिखी हुई किताब 'रंग जीवनाचे' के लिए मुझे सम्मानित किया गया। इस पूरे सम्मेलन में कोमसाप के संस्थापक पदमश्री मधु मंगेश कर्णिक उपस्थित रहे।

लेखक प्रकाशक सम्मेलन अखिल भारतीय मराठी प्रकाशक संघ का तीसरा प्रकाशक लेखक साहित्य सम्मेलन सातारा में 18 और 19 जून 2022 को संपन्न हुआ। इसका उद्घाटन माननीय छत्रपति उदयन राजे भोसलेजी ने किया। इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे रवींद्र गुर्जर।

दो दिवसीय सम्मेलन के हर सत्र में विविध विषयों पर ज्ञानवर्धक चर्चा का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में 2021 में प्रकाशित पुस्तकों में से उत्कृष्ट पुस्तकों को पुरस्कार दिए गए। पूरे महाराष्ट्र से लेखक और प्रकाशक उपस्थित थे। इसी समारोह में प्रकाशक संघ के सम्मान का जीवनगौरव {life time achivement award} नाशिक के वरिष्ठ पुस्तक वितरक श्री वसंतराव खैरनार को प्रदान किया गया। साथ ही सम्माननीय मंगला गोडबोले जी को 'साहित्य सेवा कृतज्ञता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। एक सत्र में मराठी के जानेमाने कलाकार मकरंद अनासपुरे का साक्षात्कार विनोद कुलकर्णी जी ने लिया। मकरंद अनासपुरे जी के दिल को छू लेने वाले जवाब ने दर्शको को भावविभोर, द्रवित किया। अन्य सभी सेमिनार भी वैचारिक स्तर पर बहुत उच्च स्तर के थे।

यह कार्यक्रम लेखक प्रकाशक संघ के अध्यक्ष राजीव बर्वेजी के नेतृत्व में विनोद कुलकर्णी और उनकी टीम के सहयोग से सम्मेलन संपन्न हुआ ।

नुक्कड़ साहित्य सम्मेलन

कवयित्री शांताबाई शेलके, जो मराठी की जानीमानी कवयित्री, लेखिका अनुवादिका ने भी मराठी साहित्य के विकास में योगदान दिया है। उनकी जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में और उनकी साहित्यिक कृतियों का जश्न मनाने के लिए नुक्कड़ साहित्य सम्मेलन का आयोजन 2 जनवरी, 2022 को पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज में किया गया था। सम्मेलन का आयोजन विवेक साहित्य मंच व नुक्कड़ कथाविश्व के सहयोग से किया गया।

उसी तरह महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे शाखा पिंपरी चिंचवाड द्वारा भी अभिनव गतिविधियाँ की गई। कवि शांता शेलके जी का जन्म शताब्दी महोत्सव (12 अक्टूबर 2021 से 12 अक्टूबर 2022) महाराष्ट्र के गणमान्य व्यक्ति द्वारा शांता शेलके जी की स्मृति में उनकी एक कविता सुनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मनसा क्रिएशन पणजी मुक्त सृजन साहित्य पत्रिका के सहयोग से आईएमबी ऑडिटोरियम, पणजी में 11 और 12 सितंबर को दो दिवसीय मुक्त सृजन मराठी साहित्य सम्मेलन हुआ।

42 वाँ मराठवाडा साहित्य सम्मेलन 10 और 11 दिसंबर को जालना जिले के घनसांवंगी में आयोजित किया गया। सम्मेलन के उद्घाटक थे शिवसेना के पक्ष प्रमुख उद्धव ठाकरे जी और अध्यक्ष थे शेषराव मोहिते जी। सम्मेलन में काव्यपाठ, साक्षात्कार, कहानी, सेमिनार का आयोजन किया गया था।

चंद्रपुर में 16,17,18 दिसंबर को 68 वें विदर्भ साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष थे प्रख्यात समीक्षक तथा ललित लेखक डॉ. वी. स. जोग। इसी तरह अनेक संस्थाओं द्वारा मराठी साहित्य सम्मेलन, कवि सम्मेलनों का आयोजन महाराष्ट्र में किया गया।

झाड़ीबोली साहित्य सम्मेलन

झाड़ीबोली नाम की एक बोली महाराष्ट्र में बोली जाती है। जुनासुर्ला, चंद्रपुर में झाड़ीबोली साहित्य सम्मेलन आयोजित किया गया।

मराठी साहित्य सम्मेलनों में अनेक लेखक, कवियों की पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। उसी तरह स्वतंत्र रूप से कार्यक्रमों का आयोजन करके पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

ग्रामीण साहित्य सम्मेलन

केडगाव में ग्रामीण साहित्य सम्मेलन अक्तूबर 2022 में संपन्न हुआ।

झिम्माड साहित्य सम्मेलन

झिम्माड एक व्हाट्सएप्प समूह है, इस समूह द्वारा साहित्यिक सफर का और सम्मेलन का आयोजन 10, 11 सितंबर को शहापूर में किया गया। प्रज्ञा दया पवार अध्यक्ष तथा उद्घाटक अभिनेता किरण माने जी थे। संयोजक वृषाली विनायक जी थीं। परिचर्चा, काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया। मराठी के जानेमाने कलाकार किरण माने जी से वार्तालाप किया गया। मुझे भी सहभागिता करने का अवसर मिला।

साल 2022 में प्रकाशित मराठी साहित्य

मराठी साहित्य समृद्ध साहित्य है। मराठी साहित्य में अनेक विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं जैसे, उपन्यास (कादंबरी), कहानी, कविता, नाटक, ललित लेख, बाल साहित्य, विनोदी (हँसाने वाला) साहित्य, लोकसाहित्य, ऐतिहासिक, आत्मकथा।

पूरे विश्व में 2020 से कोरोना की महामारी फैली और पूरा विश्व ठप्प हो गया। सभी घरों में कैद हो गए। तब लोगों ने ऑनलाइन पढ़ना और लिखना शुरू किया। कोरोना की भयावह परिस्थिति में पुस्तकें प्रकाशित नहीं हो पाईं पर खुशी की बात यह है कि 2022 में अनेक विधाओ में अनेक मराठी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

प्रकाशित साहित्य

महाराष्ट्र में सूचना एवं जनसंपर्क महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित 'लोकराज्य' पत्रिका, जो महाराष्ट्र सरकार का मुखपत्र है हर महीने प्रकाशित होती है। यह पत्रिका पाँच भाषाओं मराठी, अंग्रेजी हिंदी, गुजराती और उर्दू में प्रकाशित होती है तथा

इसकी लगभग सात दशकों की सफल प्रकाशन परंपरा है। मार्च 1947 से प्रकाशित यह पत्रिका राज्य के गठन की मुखर साक्षी बनी है। महत्वपूर्ण घटनाक्रम, कैबिनेट के फैसले, विभिन्न क्षेत्रों की जानकारियों का खजाना 'लोकराज' है। विश्वसनीय और उपयोगी जानकारी ने इस पत्रिका को आम पाठकों के साथ–साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के बीच भी पसंदीदा बना दिया है।

आजकल तमाम प्रकाशक इस बात का रोना रो रहे हैं कि प्रकाशक व्यवसाय के लिए दिन खराब है, वहीं चपराक प्रकाशन ने एक ही दिन एक साथ बारह पुस्तकों का प्रकाशन किया यह सराहनीय है। डॉ. रामचंद्र देखणे जी की 'चैतन्य पालवी', रविंद्र कामठेजी की 'अनोख्या रेशीमगाठी', चंद्रलेखा बेलसरे जी की 'सत्याभास', संदीप वाकचौरे जी की 'शिक्षणाचे पसायदान', और 'शिक्षणाचे दिवास्वप्न', जे.डी. पराडकर' जी की 'साद निसर्गाची', आनंद देशपांडे जी की 'विनोदाचा वेंटिलेटर', जावेद शेख जी की 'अम्मी–अब्बूच्या' कविता, जयदीप विघ्ने जी की पुस्तक 'भोंगला पाऊस', सुरेखा बोराडे जी की 'डॉक्टर ते आर्यन मॅन', राजेंद्र सोमवंशी जी की पुस्तक 'गीत नवे गाऊ', विनोद पंचभाई जी की 'हेच खरे जगज्जेते' इन पुस्तकों का विमोचन किया गया।

कवयित्री ,लेखिका हेमांगी नेरकर जी के 'प्रारब्ध' कविता संग्रह का प्रकाशन हुआ। इसमें कविता, हाइकु, चारोली काव्य–प्रकार हमें पढ़ने को मिलेंगे। प्रेम, देशभक्ति सामाजिकता, स्त्री चेतना, विठ्ठल महिमा, जीवन अनुभव और विश्व कल्याण जैसे अलग–अलग विषयों पर सकारात्मक विचार देनेवाली कविताएँ हैं।

श्रीमती सुवर्णा मूलजकर परभणी के दो कविता संग्रहों 'हृदरंग' और 'जीवनामृत' का विमोचन पुणे में हुआ।

उपन्यास { कादंबरी }

अनोख्या रेशीमगाठी

जब 'लिव इन रिलेशनशिप' कहते हैं, तो लोग इसे अलग तरह से देखते हैं, अलग–अलग चश्मे से देखते हैं, नाक–भौं सिकोड़ते हैं, लेकिन इस विषय को देखना कितना जरूरी है, यह बताने का सराहनीय प्रयास 'अनोख्या रेशमगाठी' है। उपन्यास रोमांचक है। प्रसिद्ध लेखक और कवि श्री रवींद्र कामथे सर द्वारा लिखित उपन्यास 'अनोख्या रेशमगाठी' बहुत ही अच्छे तरीके से लिखा गया है। इस उपन्यास में 'लिव इन रिलेशनशिप' के विषय को बहुत ही सरलता से संभाला गया है।

हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, लेकिन शादी को लेकर अभी भी कई लोगों के पारंपरिक विचार हैं। यदि पुनर्विवाह करने की बात भी कही जाती है तो क्या यह आवश्यक है और क्या स्त्री को ऐसा करना चाहिए और क्यों करना चाहिए?

जिस उम्र में लड़के–लड़कियों की शादी के बारे में सोचना चाहिए उस उम्र में खुद की शादी के बारे में सोचना, एक भावनात्मक संघर्ष होना लाजमी है। प्रेम में कहीं भी उथलापन नहीं होता। कहा जाता है कि साहित्य समाज का आईना होता है।

समय के साथ परिवर्तन होता है। इसे साहित्य में लाना आवश्यक है। कमथे साहब की थोड़ी सराहना की जानी चाहिए। सई, उसकी माँ पूजा, दीपक के आसपास का इलाका, लोगों के साथ घूमना जीवन को आसान और खुशहाल बनाने का सराहनीय प्रयास है। समतल व्यवस्था... वहाँ के वातावरण का बड़ा यथार्थवादी वर्णन उपन्यास में देखने को मिलता है।

मेरी पसंदीदा जगह अंजिर्ला है, जो प्रकृति से धन्य है... और क्योंकि उपन्यास में अंजिलि का वर्णन किया गया है, अंजिर्ला आँखों के सामने खड़ा हो जाता है।

उपन्यास के अन्य पात्र विषय के पूरक हैं। मंदामौसी. जो पूजा और प्रभाकर के घर में नौकरानी का काम करती है। भले ही स्थिति सुधर जाए, माया, जो प्यार के रिश्ते को बनाए रखने का काम करती है। उपन्यास में शब्दों की ताकत काबिले तारीफ है... शब्दों में सारी घटनाओं, भावनाओं को आँखों के सामने लाने की ताकत है। दी गई उपमाएँ बहुत उपयुक्त हैं... जैसे.. 'साईं की हालत बिल्ली जैसी थी' 'बाघ का पिंजरा।'

लिव इन रिलेशनशिप जैसे विषय पर लिखते हुए उपन्यास का शीर्षक 'अनोख्य रेशमगथी' बहुत उपयुक्त लगता है। इसी तरह किताबों का आवरण भी आकर्षक और उपयुक्त है।

एक बार उपन्यास उठा लेने के बाद किताब को पढ़ने के बाद ही नीचे रख दिया जाता है। यही इस किताब की सफलता है।

यह चपराक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित एक अवश्य पढ़ी जाने वाली पुस्तक है।

मोहना कारखानीस लिखित 'ही वाट दूर जाते' कादंबरी उपन्यास का डिंपल प्रकाशन द्वारा प्रकाशन हुआ है। इस कादंबरी में 3 पीढ़ियाँ दिखाई देती हैं और अलग–अलग पीढ़ियों की परंपरा और उसमें अपना बेस्ट ढूँढ़ने वाली नई पीढ़ी के बदलते जीवनमान का दर्शन होता है।

गोमंतक साहित्य सेवक मंडल और अक्षर वाङ्मय प्रकाशन, पुणे संयुक्त प्रयास से कथा लेखक विट्ठल गावस जी के उपन्यास 'खाणमाती' का प्रकाशन 10 दिसंबर को हुआ। उपन्यास में खनन से गाँववासियों का जीवन किस तरह बर्बाद होता है इसका चित्रण दिखाई देता है।

'डॉ. चंद्रशेखर भारती का 2022 मे 'पुलवामा' उपन्यास प्रकाशित हो चुका है। उपन्यास 'पुलवामा' कश्मीर के पुलवामा में केंद्रीय रिजर्व सुरक्षा बल (सीआरपीएफ) की 22वीं इकाई पर हुए आत्मघाती हमले की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस हमले में 40 जवान शहीद हो गए थे। इस घटना के पीछे के मास्टरमाइंड को खोजना उपन्यास का मुख्य विषय है। हमारे 'आरए' जैसे संगठन और सरकार आतंकवादी गतिविधियों से कैसे निपटते हैं, यह जानना सामान्य नागरिकों के लिए मूल रूप से असंभव है! लेखक ने अपनी कल्पना और कल्पना के साथ यह सब रिपोर्ट एक उपन्यास के रूप

में पाठकों के लिए बहुत धाराप्रवाह भाषा में प्रस्तुत की है। इसलिए लेखक पाठक को उपन्यास पुलवामा में बाँधे रखने में सफल रहा है। उपन्यास में कुछ घटनाएँ, पीछा करने, चौंकाने वाली हैं। 'यही है उपन्यास की विशेषता।' उपन्यास रोमांचक हो गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि देश और दुनिया को जकड़े हुए धार्मिक उग्रवाद और आतंकवाद जैसे समसामयिक मुद्दों पर लेखक का स्पर्श सराहनीय है।

प्रेरणादायी पुस्तक

विनोद पंचभाई जी की 2022 में प्रकाशित पुस्तक 'हेच खरे जगज्जते' है।

प्रकाशक चपराक प्रकाशन है। ये हैं असली वर्ल्ड चैंपियन...किसी एथलीट ने विश्व प्रतियोगिताओं में कितने भी पदक क्यों न जीते हों, सबसे महत्वपूर्ण ओलंपिक पदक है! अनगिनत एथलीट हर चार साल में एक बार आयोजित होने वाले ओलंपिक खेलों हेतु क्वालीफाई करने के लिए संघर्ष करते हैं। क्वालिफिकेशन राउंड में सफल होने के बाद ओलंपिक मेडल जीतने की कोशिश जारी रहती है। कुछ खिलाड़ियों को इसमें सफलता मिल जाती है तो कुछ थोड़े ही फासले के बाद चौथे और पाँचवें पायदान पर छोड़ दिया जाता है। लेकिन यह कहना गलत होगा कि उस समय उनकी गुणवत्ता कम होती है! क्योंकि यहाँ तक पहुँचने का उनका सफर काफी कठिन और संघर्षपूर्ण रहा होता है।

चपराक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'हेच खरे जगज्जते' की प्रस्तावना प्रकाशक–संपादक घनश्याम पाटिल ने लिखी है। साथ ही, चित्रकार संतोष घोंगडे ने कवर पेज बनाया है। यह पुस्तक निश्चित रूप से विभिन्न खेलों में रुचि रखने वाले बच्चों और एथलीटों के लिए उपयोगी और प्रेरक है।

कहानी संग्रह (कथा संग्रह)

रोशन कुमार श्याम जी पालीवाल ब्रह्मा पुरी का परिस प्रकाशन द्वारा पुणे में 'डबल गेम' कथा संग्रह प्रकाशित हुआ है।

नागपुर की वर्षा कीडे कुलकर्णी की कहानियों का संग्रह 'ट्रोलधाड' हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इसका प्रकाशन मंगलवेधा, सोलापुर के सप्तर्षि प्रकाशन द्वारा किया गया है। इसमें समाज को एक सकारात्मक दृष्टिकोण देने वाली 17 कहानियाँ शामिल हैं।

'ट्रोलधाड का अर्थ है एक मर्मज्ञ वैचारिक 'भावना' अनुभवी लेखक और कवि डॉ. राजा धर्माधिकारी ने 'ट्रोलधाड' का समर्थन किया है।

भरारी प्रकाशन द्वारा विभिन्न विषयों पर कई पुस्तकें 2022 में प्रकाशित हुईं। कनाडा में स्थित स्मिता भागवत द्वारा क्रांतिकारियों पर आधारित पुस्तक, 'कोंडिबा वद' शांताराम लोखंडे द्वारा लिखित कहानियों का संग्रह, 'जीवन साथी', लता गुथे द्वारा लिखित कहानियों का संग्रह है। प्रशांत राउत द्वारा लिखित 'एबीसी बिजनेस मैनेजमेंट' अंग्रेजी पुस्तक स्वाति युग में लिखी गई महाभारत। सफलता तकनीक और

मंत्र डॉ. माधवी कुंटे द्वारा लक्ष्मीकांत दानी, फोक टेल्स ऑफ देशोदेशी (बच्चों के संग्रह से अनुवादित)। जे मोकले आकाश वन पीस कलेक्शन, लेखक जयश्री संगीत राव। शिरीष कार्णिक द्वारा फूलपुडी एंथोलॉजी, शेप योर बॉडी इन वी सितंबर (जिम सब्जेक्ट बुक)। ये किताबें प्रकाशित हुई हैं।

नाटक

जयेश शत्रुघ्न में स्त्री जी ने 'एल्गार' नामक नाटक लिखा है जिसमें केवल 5 पात्रों द्वारा अनेक विषयों पर भाष्य किया है। जी जान से ध्येय पूर्ति के लिए कोशिश करने का विचार देने का काम 'एल्गार' नाटक करता है।

'वृत्तबद्ध कविता ते गज़ल़ (तंत्र आणि मंत्र) 'गज़ल़ को बयान करने वाली किताब' यह पुस्तक विजय जी जोशी की है। प्रकाशक– अथर्व प्रकाशन, डोंबिवली। यह पुस्तक इस विचार से प्रेरित है कि नवोदित कवियों को विभिन्न विधाओं में, विभिन्न संदर्भों में और कविता के सभी रूपों में कविता लिखने में सक्षम होना चाहिए। यह किताब केवल किताब नहीं है, यह गज़ल लिखने के लिए मार्गदर्शक का काम करती है। मात्रा क्या है? लघु, गुरु, मात्रा कैसे मापें, अभ्यास प्रश्न, प्रारंभिक स्तर से शुरू होने वाले उत्तर पत्र, मात्रा समाचार, अभ्यास प्रश्न उत्तर सोदाहरण, अक्षरगण समाचार, अक्षर, छंद, प्रव्या वृत्तवास, मुक्ता छंद, और उभरते कवियों को आकर्षित करने वाली गज़ल़ें। संबंधित महत्वपूर्ण बिंदु गज़ल़ का अभ्यास बड़ा रोचक है। कुल मिलाकर नवोदित कवियों के लिए यह एक अत्यंत उपयोगी पुस्तक है।

ललित लेख संग्रह

ज्योति कपिले जी का यह मनभावन ललित लेखों का संग्रह जेके मीडिया द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक में अनुराधा नेरूरकर जी ने प्रस्तावना लिखी है। निसर्ग, आपसी रिश्ते, परिवार–समाज जैसे कई विषयों को लेकर उन्होंने लिखा है।

गूढ़कथा

रामदास खरे, ठाणे 2022 में (मराठी गूढ़कथा) रहस्य संग्रह 'केमेस्ट्री' का प्रकाशन दिनांक 27.11.2022 को ठाणे में संपन्न हुआ। यह डिंपल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है।

वैचारिक

नांदेड वासी ज्योति कदम लिखित 'ब्रिटिश कालीन भारतीय पोलिस व्यवस्थेचा प्रारंभ'। स्वतंत्रता–पूर्व काल में भारत में पुलिस व्यवस्था की शुरुआत कैसे हुई और तब पुलिस व्यवस्था कैसी थी, इसका विश्लेषण किया है। इसमें प्राक्कथन डॉ. बी. जी. शेखर पाटिल, विशेष पुलिस महानिरीक्षक, नासिक ने लिखा है। यह किताब सर्वोदय प्रकाशन, नांदेड ने प्रकाशित की है। 'फक्त ती च्या साठी' किताब की लेखिका डॉ. स्मिता दातार और प्रकाशक है ग्रंथाली प्रकाशन।

इस किताब में गर्भपात अधिकारों के लिए डॉ निखिल दातार जी द्वारा चौदह

साल किया गया संघर्ष का लेखा जोखा है, इस संघर्ष की वजह से कानून में बदलाव किया गया है। पुस्तक का विमोचन सेवानिवृत्त जज मृदुला भाटकर जी के करकमलों से हुआ।

कहा जाता है कि, कोस कोस पर पानी और बानी बदलती है। मराठी के साथ–साथ कोंकणी, वरहाड़ी, आगरी, मालवनी, अहिरानी, बोलीभाषा भी बोली जाती है। इस बात का महत्व जानते हुए बोली भाषाओं पर एक मौलिक विचार प्रगट करनेवाली पुस्तक 'चिंता आणि चिंतन' का संपादन प्रेमानंद गज्वी, डॉ महेश केलुसकर, जी ने किया है। उसका विमोचन 2022 में ही हुआ। उसमें मालवनी पर डॉ महेश केलुसकर, पुनेरी बोली पर नीती मेहंदले, कोल्हापुरी बोलीभाषा पर सुनंदा शेलके, अहिरानी बोलीभाषा मंदाकिनी पाटिल, वरहाड़ी बोलीभाषा पर डॉ प्रतिमा इंगोले, गोंदी बोलीभाषा पर राजेश मडावी आदि ने लिखा है। इसमें इन बोलीभाषाओं के मुहावरे, कहावतें, विवाह गीत आदि के बारे में विस्तार से बताया है।

मराठी सातासमुद्रापार

कवयित्री, कहानीकार, कलाकार मेघना साने जी की पुस्तक 'मराठी सातासमुद्रापार' ग्रंथाली प्रकाशन ने प्रकाशित की। इसमें भारत के बाहर के देशों में मराठी भाषा और संस्कृति को कैसे संरक्षित किया जा रहा है इस विषय पर लेख शामिल हैं।

ज्योति बालसाहित्य कपिले लिखित 'मदतीचा हात' बालकथा संग्रह जे के मीडिया प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। बच्चों में एक–दूसरे के लिए मदद करने के भाव होने चाहिए। यह विचार देने की कोशिश की गई है।

दिवाली अंक

दिवाली अंक मराठी साहित्यिक संस्कृति का एक विशिष्ट हिस्सा हैं। दीवाली के त्योहार के आसपास प्रकाशित विशेष या वार्षिक पत्रिकाओं को दीवाली अंक कहा जाता है।

कई मराठी अखबार भी अपने पाठकों के लिए दीपावली अंक प्रकाशित कर रहे हैं साथ ही स्वास्थ्य, खेल जैसे अनेक विषयों पर दीपावली अंक भी छाप रहे हैं।

महाराष्ट्र में दिवाली संख्या की परंपरा है। प्रत्येक वर्ष दिवाली के दौरान विभिन्न विषयों पर समर्पित 400 से अधिक दिवाली अंक प्रकाशित किए जाते हैं। ज्योतिष, सिनेमा, राजनीति, अर्थशास्त्र, परियों की कहानियाँ, हास्य लेखन, पर्यटन, कहानियाँ, पुलिस कहानियाँ, डरावनी कहानियाँ विशेष, अनुवाद विशेष आदि। दीपावली अंकों की खास बात यह है कि समय के साथ दीपावली अंकों का स्वरूप भी बदलता जा रहा है, पहले दीपावली अंक केवल पुस्तक रूप में ही उपलब्ध होते थे, लेकिन अब ऑडियो और डिजिटल दीपावली अंक भी उपलब्ध हैं। मिसलपाव, मनोगत, मायबोली का हितगुज, आस्वाद, कलाविष्कार और लोकप्रभा, तरुण भारत, शिवस्पर्श, लीलाई, जत्रा, दुर्ग, लोकसत्ता, कथाश्री, झपूर्झा, पुरुष स्पंदन, चपराक, अक्षरधारा, ऋतुरंग, चंद्रकांत,

माहेर, धनंजय, हेमांगी, दीवाली, मार्मिक, मौज, लोकमत, निनाद, तरंग, पद्मगंधा, नवलकथा, महाराष्ट्र टाइम्स, मौज, मेनका, किशोर, आवाज, गज़ल अमृत, हंस, चारचौघी, ऋतुरंग आदि दीवाली के अंक प्रकाशित हुए। वर्ष 2022 में 400 से अधिक दीपावली के अंक प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ दीपावली के अंक विशिष्ट विषयों को समर्पित हैं। महाराष्ट्र टाइम्स का विशेष दिवाली अंक दिवाली मित्र मैफल प्रकाशित हुआ। वर्तमान समाचार पत्र दीपावली के अंक प्रकाशित करते हैं– जैसे सकाळ, लोकमत, महाराष्ट्र टाइम्स, लोकसत्ता आदि। टीवी चैनलों ने एबीपी माझा ने भी दिवाळी अंक प्रकाशित किया। नवरत्न दिवाली अंक साई पब्लिकेशन्स द्वारा मिरज में प्रकाशित किया जा रहा है। इस वर्ष 20वां वर्ष है। जिसके संपादक प्रकाश कुलकर्णी हैं। हर साल अलग–अलग विषय दिए जाते हैं। इस साल 'मैत्र जीवाचे' की थीम थी। कलामंच दिवाली अंक का प्रकाशन संपादक हेमांगी नेरकर के द्वारा किया गया।

दिवाली पहाट दिवाली भोर

महाराष्ट्र में दिवाली अंक के साथ–साथ दिवाली की भोर, मराठी में पहाट कहते है, बहुत ही आनंददायी होती है। भगवान जी के गीत, भाव भरे तराने गाए जाते हैं। दिये जलाते हैं, साहित्यिक कार्यक्रम किए जाते हैं। 2022 की दीपावली भी इन कार्यक्रमों की वजह से यादगार रही।

❑❑❑

17

मलयालम साहित्य



बी. अशोक

अध्ययन–अध्यापन कार्य में संलग्न। एक मौलिक रचना और दो अनूदित रचनाएँ प्रकाशित। अनुवाद के लिए अभयदेव पुरस्कार और हिंदी की सेवा के लिए विशिष्ट सेवा सम्मान। संप्रति– आचार्य, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम तथा संपादक, 'भारत' पत्रिका।

केरल संस्कृति की अनोखी धरती है। यह राज्य कृषक–संस्कृति में फूला–फला है। इसलिए यहाँ के लोक साहित्य में तथा 19वीं सदी तक की साहित्यिक रचनाओं में कृषक संस्कृति का भरपूर चित्रण है। समय बदला, खेती की नई संस्कृति उभर आई। शिक्षा का प्रचार हुआ। लोग काम की खोज में देश–विदेश जाने लगे। साहित्य में भी समय–समय पर बदलाव आता रहा। सदियों पहले यह क्षेत्र समुद्री जल से ढका हुआ था। माना जाता है कि केरल समुद्र के पीछे हटने से बनी भूमि है। इसे चेरलम कहा जाता था जिसका अर्थ है कीचड़युक्त क्षेत्र। यह भी तर्क दिया जाता है कि चेरलम नाम चेरन के शासन वाले क्षेत्र से आया है। 'का' तो 'चा' का कर्नाटकीय उच्चारण है। इस प्रकार चेरलम कर्नाटकीय उच्चारण में केरलम् और बाद में केरल बन गया। अरब लोग इस क्षेत्र को 'मलिहार' कहते थे। बाद में यह 'मलबार' बन गया। शुरूआती दिनों में मलयालम एक भाषा का नहीं बल्कि प्रदेश का नाम था। केरल के लोगों को केरलवासी कहा जाता था। केरलवासियों द्वारा में बोली जाने वाली भाषा को शुरुआती दिनों में 'मलयाण्मा' कहा जाता था। उस समय पूरे दक्षिण भारत में तमिल भाषा बोली जाती थी। प्राचीन तमिल आज की तमिल भाषा से भिन्न थी। बोली जाने वाली तमिल और साहित्यिक तमिल में बड़ा अंतर था। उस समय की तमिल भाषा को कोडुंतमिल कहा जाता था। इससे मलयालम भाषा का उद्‌भव हुआ। फिर भी मलयालम भाषा में किसी साहित्यिक कृति के जन्म के लिए सदियों तक इंतजार करना पड़ा। पहली मलयालम कृति 'रामचरितम' है, जो 13वीं शताब्दी में लिखी गई कविता है। यहाँ से कितनी सदियाँ बीत गईं। परिवर्तन के सैकड़ों तूफानों ने यहाँ की जनता की चित्तवृत्ति को झकझोर दिया। इक्कीसवीं सदी के इस तीसरे

दशक में मलयालम की रचनाएँ किसी भी भाषा के साहित्य के साथ कंधे से कंधा मिलाकर छाती ताने खड़ी हैं। इस दौर में 2022 की रचनाएँ भी अपना दायित्व सफलता से निभाती रही हैं।

जैसा कि साहित्य का प्रवाह किसी देश और काल में बँधा हुआ नहीं होता, मलयालम साहित्य भी सभी विधाओं में अपने को समेटकर फलता–फूलता रहा है और उसकी महक दर–दर फैलती जा रही है। इस विकास को रेखांकित करने के लिए पहले उपन्यास का सहारा लिया जाएगा। मानव जीवन को उसकी समस्त ऊर्जाओं के साथ अभिव्यक्त करना उपन्यास का ध्येय है। साहित्य में मानवीय भावनाओं की संवेदनाओं का विकास मुख्यतः उपन्यासों में हुआ। यह एक संभावित साहित्यिक विमर्श है। उपन्यास बहुआयामी मानव जीवन को व्यापक रूप से व्यक्त करने और मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक बारीकियों को उजागर करने में सक्षम है। 19वीं सदी की शुरुआत में बड़े सामाजिक परिवर्तन हुए। परिणामस्वरूप नवीन वैचारिक परिवेश में उपन्यास का साहित्यिक रूप मलयालम में प्रकट हुआ। समय–समय पर औपन्यासिक कृतियों में बदलाव आते रहे। इक्कीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में भी मानवीय चित्त को प्रभावित करने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

उपन्यास साहित्य

'संपर्क क्रांति' शिनिलाल का चर्चित उपन्यास है। यह एक रेलगाड़ी का नाम है। जैसे कि नाम सूचित करता है, यह रेलगाड़ी तिरुवनंतपुरम से दिल्ली की ओर और वहाँ से चंडीगढ़ की ओर चलती है। भारत के हृदय से चलने वाली इस गाड़ी की यात्रा असल में भारत की यात्रा है। इस उपन्यास में कहीं–कहीं पर देश की रुग्णावस्था दिखाई पड़ती है। देश को पहचानने वाले मोहनदास करमचंद गांधी नाम के यात्री की यात्रा इसमें है। वह इसका केंद्र है। भारत को खोजने पर यात्रा के लिए निकलने वाले जॉन नामक परदेसी को अपने पूर्वजों द्वारा भारत के बारे में बताई गई कई यादें हैं। लोनली प्लैनेट द्वारा रचित 'भारत' नाम की किताब से वह भारत को पल–पल जानता रहा है। इतिहास और वर्तमान के मिले–जुले उपन्यास 'संपर्क क्रांति' में भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चित्रांकन है। तानाशाही नेताओं के उभरने वाले जमाने में देवी नामक पात्र के माध्यम से उपन्यासकार शिनी लाल अपनी कथा को आगे बढ़ाता है। बिजली और डीजल इंजन की अदला–बदली वाली संपर्क क्रांति एक्सप्रेस में असुविधाएँ लगातार होती रहती हैं। विभिन्न भाषा, वंश तथा प्रदेशों से आने वाले यात्री देश के विभिन्न भागों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपन्यासकार शिनीलाल इतिहास को वर्तमान से जोड़ने के लिए देश, काल और संस्कृति का सहारा लेते हैं। उपन्यासकार टिकट परीक्षक का पद संभालने वाला है। इसी कारण से अपने अनुभवों को भी उन्होंने इस उपन्यास में जोड़ा है।

'एंटी क्लॉक' वी जे जेम्स का उपन्यास है जो धर्म और मनुष्य के बीच का रूढ़ रिश्ता सूचित करता है। यह उपन्यास ताबूत का धंधा चलाने वाले हेनरी नामक व्यक्ति की कहानी कहता है। इस उपन्यास का हर अध्याय बाइबल के एक उद्धरण से शुरू होता है। हेनरी को पिता ने निर्देश दिया था कि बाइबल पढ़ते समय सात पंक्तियाँ छोड़कर शुरू करना चाहिए। होता यह है कि पिता की मृत्यु के दिन भी हेनरी वही करता है। हेनरी का क्रोध और उसकी पीड़ा कई तरह से उपन्यास में प्रकट होती है। वह कहता है– मेरी दुकान बहुत पहले से मरे हुए एक व्यक्ति का एक बड़ा ताबूत है। वह जानता है कि उसकी आमदनी मृत्यु से संबद्ध है। जब वह पहचानता है कि उनकी आजीविका दुख से बनी है तो वह रो उठता है। उसके शब्दों में मृत्यु का निनाद जब गूँजता है तब मेरे हृदय में प्रतीक्षा की किरणें जागती हैं। इस प्रकार एंटी क्लॉक हेनरी की दुकान के भीतर एक संसार रचता है और हमें उसके भीतर बंद करता है। जो पाठक इससे गुजरता है उसे हेनरी का यह कथन कचोटता है– ताबूत कोख के समान सुरक्षित है और तुम्हें पालने के समान शांत होकर सोने के लिए प्रेरित करता है। इस उपन्यास के लिए जेम्स को मलयाट्टूर पुरस्कार प्राप्त हुआ।

'छतरी ठीक करने वाली चोई' उपन्यास के बाद, मय्यषी के पसंदीदा कहानीकार एम मुकुंदन एक नए उपन्यास के साथ आ रहे हैं। 'नाचने वाली छतरियाँ' उपन्यास 'छतरी ठीक करने वाली चोई' की अगली कड़ी है, जो उपन्यासकार की भाषा में लेखक का सुधार है। उपन्यासकार पहले उपन्यास के अंत में हुई गलती से उपन्यास के नायक माधवन को सुधारने की कोशिश करता है। माधवन, जो धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक था, को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है जो उपन्यास के अंत में हिंदू होने की भावना को अपनाता है। लेकिन माधवन को पसंद करने वाले पाठक इस बदलाव को स्वीकार नहीं कर सके। उन्होंने इसकी असहमति मुकुंदन को दी। इस प्रकार के फ़ोन कॉल और पत्रों के कारण लेखक को पुनर्विचार करना पड़ा कि उसने माधवन के साथ कहीं अन्याय किया है। फिर उन्होंने उपन्यास की अगली कड़ी लिखने का फैसला किया। अंबूटी के बेटे माधवन की कहानी इसमें जारी है, जहाँ पहले माधवन नास्तिक बन जाता है और फिर आस्तिक हो जाता है। जब फ्रांस के लिए रवाना होता है, तो चोई द्वारा माधवन को दिया गया पत्र अपने पास रखता है। चोई की मृत्यु के बाद, माधवन इसे सुधार के साथ स्थानीय लोगों को सुनाता है। यह उपन्यास माधवन के मन में बसी उनकी आगे की जिंदगी पर आधारित है। यहाँ माधवन फिर से मानव पक्ष की ओर मुड़ता है। इसके साथ ही एम मुकुंदन, उपन्यास में माधवन के मन में पनपे प्यार की कहानी भी बताते हैं। चोई द्वारा माधवन को दी गई चिट्ठी में क्या था, उस रहस्य ने ही चोई द्वारा छतरी की मरम्मत करने वाले पहले उपन्यास को आगे बढ़ाया था। नए उपन्यास में भी कुछ ऐसा ही कौतूहल है। पहले माधवन ने चोई के पत्र को दोबारा पढ़कर अपनी नई राजनीतिक स्थिति स्पष्ट

की थी। उसी प्रकार माधवन नए उपन्यास में भी अपनी स्थिति स्पष्ट करता है। उपन्यास के लिए निरंतरता एक दुर्लभ घटना है। मुकुंदन ने अपने उपन्यास 'मय्यषिपुषा के किनारों पर' के बाद मय्यषी के जीवन के बारे में एक और उपन्यास लिखा था– भगवान की शरारत। वहाँ से आगे बढ़कर मुकुंदन अपने नए उपन्यास के साथ एक और प्रयोग कर रहे हैं।

'दमित चुड़ैल' पी एफ मैथ्यूस का उपन्यास है जिसमें साम्राज्यवादी समय से लेकर वर्तमान तक चलती रहने वाली जातीय हिंसा और उसके शिकार पंचम जाति के चुड़ैल जीवन का पर्दाफाश है। पूरी कहानी दुरूहता से भरपूर है। इसका प्रमुख पात्र दरोगा उन्नी अपने दुरुह अस्तित्व से चलकर मुक्ति की भ्रमात्मक सीमाओं पर पहुँच जाता है। तलाश की दुनिया से चलने वाले इस आख्यान में दो छोर दिखाई देते हैं। पहले वाली तलाश एक गाड़ी दुर्घटना में हत्या किए हुए एक व्यक्ति से शुरू होकर पिछली छह सदियों की ओर पीछे मुड़ती है। खजाने की चौकीदारी करने के लिए विवश चुड़ैल काप्पिरी से शुरू होकर शाखा–उपशाखाओं में विभाजित होने वाली निम्न जाति की कथा इसमें वर्णित है। अच्चंपी तथा कुंजीरामन नायर और उसका छोटा भाई कुंजन ने मिलकर जो हिंसा की थी उसकी खोज दारोगा उन्नी करता है। परंतु अचानक वह भी गायब हो जाता है। यहीं से दूसरी खोज शुरू होती है। वह खोज सर्किल बेंजामिन द्वारा आगे बढ़ती है। जो वह ढूँढ़ निकालता है वह उसकी पुलिस युक्ति से जरा भी मेल नहीं खाता। एक बच्चे की लाश के रूप में चलने वाला सेवियर और अन्य लोग उस पुलिस अधिकारी को जातीय असमानता और जातीय हिंसा की अंधेरी खोहों पर ले जाते हैं। कुल मिलाकर यह उपन्यास दुरूहता और भ्रमात्मकता से युक्त है।

उत्तरी कुट्टनाडु के इतिहास को दर्शाने वाला उपन्यास है 'मूँछ'। इसकी रचना एस हरीश ने की है। दूर–दूर तक फैले खेत–खलिहानों में बोए और बिना बोए फैलता रहता खेत उपन्यास का हिस्सा है। जितना भी आगे बढ़ो, इसके दूसरे छोर पर पहुँचता दिखाई नहीं देता। यह खेत–खलिहान को केंद्र में रखने वाली एक कहानी है। वही कहानी मूँछ उपन्यास द्वारा व्यक्त होती है। वह कहानी एकदम पवित्र है। वैसी पवित्र है जैसे लोकगीत और लोक कहानी। इस उपन्यास का क्षेत्र उत्तरी कुट्टनाडु है। अर्थात् वैकम, अय्मनम, आरपूक्करा, कैपुषा, नींडूर, कुमरकम् तिरूवारप जैसे प्रदेश उपन्यास में आते हैं। चंगनाश्शेरी के उस पार रहने वाले कूटनाडु और उसके पूर्वी प्रदेश भी इस उपन्यास में आते जाते हैं। ईसाई लोग और हिंदू धर्म की जातीय परंपराएँ यहाँ वास करती हैं। उपन्यास की कहानी 19वीं और 20वीं सदी की है। उपन्यासकार कहानी सुनाने के लिए आतुर अपने बेटे को जो कहानी बताता है वही उपन्याय है। जो कहानी वह बताता है उसमें एक ओर बेटे से कहने लायक घटनाएँ बताता है और दूसरी ओर जो कह नहीं सकता उसे छिपाता है। इस प्रकार कहानी कहने की

स्वतंत्रता के अपने आसमान को कथाकार छूता है। इसकी कहानी पंचतंत्र की कहानी, कथा सरित सागर की कहानी तथा रामायण की कहानी जैसे मिथकों से आगे चलती है। केरल के इतिहास के एक प्रमुख जमाने को चित्रित करते हुए भी इस उपन्यास में स्वतंत्रता संग्राम या साम्यवादी संगठनों का कोई जिक्र नहीं है। लेकिन उपन्यास में तत्कालीन जातीय परंपराओं का सटीक चित्र प्रकट होता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र वावच्चन है जो बाद में मूँछ वावच्चन के नाम से पुकारा जाता है। अपने माता–पिता की छह संतानों में वह तीसरा है। उसका बचपन मेंड़ो तथा नदी किनारों पर बीतता है। कहा जाता है कि उसके नक्षत्र श्रीराम के जैसे है परंतु वावच्चन की प्रस्तुति रावण के जैसी होती है। उस प्रदेश में वह एक नाटक प्रस्तुति के लिए पहुँचने वाले दर्शन और मित्र दामोदर से मिलकर अपने नाटक के लिए जिस मूछ वाले पुलिस की खोज करता है वह वावच्चन पर आकर टिकता है। वह गहरा काला तो था, परंतु उसके चेहते पर मूँछ दिखाई पड़ती थी। उन्होंने तय किया कि पुलिस का वेश यही धरेगा। जब वह मंच पर पहुँचता है तो दूसरे उसे देखकर अचंभित हो जाते हैं। जब दूसरे पात्रों की आवाज धीमी होकर पीछे आती थी तो मूँछ वाले पुलिस का गर्जन पीछे तक सुनाई पड़ता। नाटक के पात्र को देखकर जब मूँछ वाला पुलिस गरजता है तो सब भयभीत हो जाते हैं। नाटक खत्म करके वावच्चन घर पहुँचता है तो उसका रूप और उसकी आवाज से पत्नी भी चकित हो जाती है। आगे कभी भी वह पहले वाले वावच्चन की ओर लौट नहीं पाता। नाटक खत्म हो जाता है परंतु पुलिस की मूँछ उसमें हमेशा दिखाई पड़ती है। वावच्चन का हाव–भाव सबको भयभीत करता था। एक निम्न जाति वाले व्यक्ति का ऐसा रूप उच्च जाति वालों को अच्छा नहीं लगा। वावच्चन को देखकर स्त्रियाँ बेहोश हो जाती हैं। उसे देखकर मंदिर के पुजारी के बेहोश होने और मंदिर के बंद रहने का जिक्र है। तब शंकुण्णी मेनन वावच्चन के खिलाफ शिकायत करता है। सभी डरते तो थे। लेकिन सीता किसी से डरती नहीं थी। किसी भी प्रकार डरने वाली वह औरत नहीं थी। सीता बहुत खूबसूरत थी। उसे देखकर दूसरी स्त्रियाँ उससे जलती थीं। एक दिन मलया देश की राह खोज–खोजकर मूँछ वाला वावच्चन सीता के घर के पास पहुँचता है। वह एकदम भूखा था, सीता की कुटी में घुसकर खाना लेकर खा लेता दे। सीता दौड़ती हुई आई और उसे मारने लगी। वावच्चन सीता को परास्त करता है और वहाँ से चला जाता है पर सीता के शरीर की गंध उसका पीछा करती है। लेकिन सीता का चेहरा उसे याद नहीं आता। वहीं से वावच्चन की सीता के लिए खोज शुरू होती है। वावच्चन सीता के बारे में पूछता फिरता है। केवट से सीता की दुर्दशा का पता लगाने वाला वावच्चन अत्यंत दुखी हो जाता है। सीता की खोज में वह भटकता फिरता है।

कहानी साहित्य

उपन्यास के समान कहानी भी सामाजिक चित्तवृत्ति को रेखांकित करने का

सशक्त हथियार माना जाता है। मलयालम साहित्य में इसका पर्याप्त विकास हुआ है जिसका सबूत 2022 भी दे रहा है। 'गूँज' साहित्य और कला की सुंदरता की खोज करने वाले पी एफ मैथ्यूज का कहानी संग्रह है। असल में दोस्तेयेवस्की और टारकोवस्की को आराधना की दृष्टि से देखने वाले मैथ्यूज चेखव, होसु तथा विलियम कार्लोस आदि को भी अपनी कहानी से अनजाने संबंध रखते हैं। 'गूँज' कहानी–संग्रह में 11 कहानियाँ हैं। उनमें प्रमुख हैं 'वनजा', 'गूँज', 'नलिनी', 'दूसरा दिन', 'मरे हुए विश्वासियों के लिए प्रार्थना', 'अनुवादक' आदि। किताब का शीर्षक 'गूँज' है और वह उसकी एक प्रमुख कहानी का नाम भी है। उस कहानी में एक वाक्य गूँज रहा है वह... वह हमारा कोई नहीं है... किसी भी प्रकार उसे हटाओ। यह घटना बहुत संवेदना पैदा करने वाली है। अपनी जिंदगी में शीला को पिता से मिलने की इच्छा जब जाग उठती है तो शीला पहचान पाती है कि अपनी माँ से या अपने से उसका कोई रिश्ता नहीं है। यह शीला के हृदय में एक गूँज बन जाती है। इस कहानी संग्रह की अंतिम कहानी है 'अनुवादक'। सोलमन 7 सालों से अनुवाद का काम कर रहा है। जिंदगी भर अध्यापन का काम करने वाले सोलमन ने उसके अलावा कुछ भी नहीं किया था। उसका अंतिम लक्ष्य है अनुवादक बन जाना जिसके लिए वह कठोर परिश्रम भी करता है। जब हम पी एफ मात्यूस की कहानी पढ़ते हैं तब हमें लगने लगता है कि केरल में भी एक लैटिन अमेरिकी प्रांत है और वहाँ की भाषा और जिंदगी यहाँ भी मौजूद है। हर पाठक को लेखक की ओर खींच लेने की क्षमता रखने वाले कथाकार हैं पी एफ मैथ्यूज। उनकी इस 'गूँज' कहानी संग्रह को केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

'जंगल के बीच में एक पेड़' युवा कथाकार वी एम देवदास का कहानी संग्रह है। इतिहास तथा मिथक को आमने–सामने खड़ा करके उसे तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक दायरे में पुनर्जीवित करने का प्रयास यह कहानी संग्रह करता है। 'दीवार पर लेखन', 'संदेश काव्य', 'जंगल के बीच में एक पेड़', 'चांदी नक्षत्र', 'विष' आदि इस संग्रह की प्रमुख कहानियाँ हैं। संग्रह की 'दीवार पर लेखन' कहानी के जन्म के पीछे एक आकस्मिक घटना है। जब कहानीकार अपने मित्र के साथ हफ्ते तक अस्पताल में साथी बनकर बैठे रहे तो पास की दीवारों पर जो लिखा था उस पर नजर दौड़ाता रहा। वहाँ से प्राचीन जमाने के गुफा चित्रों तथा सम्राट अशोक के शिलालेखों से होकर आधुनिक जमाने के नारों तक पर ध्यान पड़ता रहा। धीरे–धीरे कहानी का रंगमंच तैयार हुआ। 1960 के करीब केरल में उभरे नक्सलवादी आंदोलन, साम्यवादी दलों का संगठन, स्वतंत्रता संग्राम के समय कांग्रेस के सत्याग्रह जैसे अधिकारी वर्ग से लोहा लेने वाले हथियार के रूप में दीवारों पर लिखे गए नारों ने लेखक के मन में आकांक्षा जगाई। वह सोचने लगा कि कौन ऐसा व्यक्ति होगा जिसे इस प्रकार के नारे लेखन के कारण पहली बार फरार होना पड़ा होगा। उसके जवाब की खोज है 'दीवार पर

लेखन' कहानी। इस संग्रह की सारी कहानियाँ वर्तमान से भूतकाल को जोड़ने की लेखक की निरंतर कोशिश का परिणाम हैं।

'हृदय भोगी' सी के दीपा का कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में बारह कहानियाँ हैं। उनमें लगातार धोखा खाने वाली जिंदगी की सतह पर ईसा की प्रतीक्षा में रक्षा पाने की कोशिश करने वाले जरीटा और उसकी बेटी जसबल की कहानी कहने वाली 'हृदय भोगी' कहानी, एक हारे लेखक तथा चमत्कारी प्रसिद्धि से पिता की कुंठा को बढ़ाने वाला बेटा लेखक आईवान आता है। पिता और बेटे के बीच दम घुटने वाली पत्नी और माँ की जिंदगी को उभारने वाली कहानी 'हिडिंबी' साथ ही 'पुत्रम', 'सदाचार', 'फेंका गया लंगर', 'वी फोर यू', 'आत्माओं का घर', 'उभय जिंदगी', 'तीसरा' जैसी कहानियाँ भी इसमें मुख्य हैं।

कविता

कविता हमारी संवेदना के इर्द–गिर्द घूमती है। आसानी से यह हमारे मन को छू लेती है। कभी मन को झकझोरती है। वर्तमान मलयालम कविता की नींव कल्पना, परिवेश, भाषा, बिंब, रस आदि की दृष्टि से मज़बूत है। एन. जी उन्नीकृष्णन अपनी कविताओं के माध्यम से केवल शब्दों में जीते ही नहीं बल्कि शब्दों के सहारे ऊँचाई छूने के लिए उड़ते जा रहे हैं। वह केवल कविता नहीं, समय, जिंदगी और दुनिया में व्याप्त एक शक्तिशाली हथियार है। 'कागज़ी तरकीब' नामक कविता संग्रह की एक कविता में कविता को रेखांकित करते हुए कवि बताते हैं कि काली स्याही द्वारा रेखांकित एक धब्बा है कविता–

''एक साथ/मेरी कविता/किसी और की कविता से/कंधे पर हाथ डाले/अमरत्व के गीत गाती है/नाचती भी है।''

दूसरी कविता में संसार और जिंदगी की क्षणिकता को कवि पहचानता है–

''एक नन्ही–सी, हाँफती एक पक्षी/घर की बिजली दौड़ते/तारों में/छू–छूकर पंख फड़फड़ाकर...।''

पिता और कुत्ता नामक कविता में जानवर को मनुष्य के बराबर और कहीं ऊँचा स्थान देने का चित्रण है–

''मुझसे मिलते ही/काले गालों से/रूष्ट हो जाते पिता/रबड़ गेंद जैसे बदलते चेहरे से/हँसते हुए/किसी कुत्ते को प्यार करते थे।''

कवि मानते हैं कि कविता का सौंदर्य अंततः भाषा का सौंदर्य है। परंतु किन्हीं क्षणों में हम उल्टी भावना की परतों पर टटोलने लगते हैं। कवि जीवन की अंतिम सच्चाई से पाठक को अवगत कराता है। मनुष्यों से, धर्मों से, कीटाणुओं से दूर भागते हुए भी मृत्यु नींबू में छिपा कीड़ा बनकर आ ही जाएगा। अपनी राहों में अपने साये की आहट को कवि सुनाने की सदा कोशिश में है।

वर्तमान समय को रेखांकित करने वाले गणेश पुत्तुर का कविता संग्रह है 'पिता का आला।' यह गिरीश का पहला कविता संग्रह है। पर पाठक को कभी नहीं लगेगा कि यह कवि का पहला संग्रह है। पत्रिकाओं में प्रकाशित 39 कविताओं का यह संग्रह बीते हुए समय तथा वर्तमान समय में सुरक्षित कुछ यादों का रेखांकन है। समय को बाँधने वाली इस रचना में गृह विरह की संवेदना है। मनुष्य के अंतर्मन को तीव्र रूप से कविता अभिव्यक्त करती हैं। जिसको हम भूल गए हों या जो हमारे दिमाग से उतर गया हो, उन सबको इस संग्रह की कविताएँ पुनर्जन्म देती हैं। संग्रह की एक कविता है 'बिनाले।' बिनाले की घड़ी बीते हुए समय और आने वाले समय के बीच एक पुल के समान काम कर रही है। एक दूसरी कविता पॉपिंस जिंदगी की अनंत संभावनाओं को रेखांकित करती है। इसकी पंक्तियाँ पॉपिंस मिठाई की तरह मिठास नहीं बिखेरतीं बल्कि संवेदना को कुरेदती है। इसी प्रकार संग्रह की कविता 'पिता का आला' एक अनोखी रचना है। इसमें कवि कह रहा है पिता की रातें भी/जेब–सी शोषित हैं। इसे पढ़ते हुए हर पाठक के दिल में पिता की गंध उभरने लगती है। सरल भाषा तथा अनोखी शायरी शैली से सभी पाठकों को आकर्षित करने वाला कविता संग्रह है पिता का आला। संग्रह की सारी कविताएँ आत्मा से आत्मा की खोज करने को प्रेरित करनेवाली हैं।

अन्य विधाएँ

यात्रा साहित्य के लिए 2022 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार हरिता सावित्री के यात्रा विवरण 'घायलों की राहें' को प्राप्त हुआ। यूरोप की अज्ञात भूमि में लैवेंडर फूलों से भरे गाँव की सड़कों से यात्रा करती हुई हरिता सावित्री दृश्यों की नव्य अनुभूतियाँ पाठकों को समर्पित कर रही हैं। यह यात्रा विवरण नवीनता की भावनाओं से भरपूर है। ट्रैक्टरों द्वारा जोते गए आलू के खेत, गीली मिट्टी की गंध, घास और गोबर की गंध, सूखी घास, चरती गायें, अंगूर के बाग, हंसों के झुंड, बहती नदियाँ आदि के साथ इस यात्रा वृत्तांत में शोक संतप्तों के सूखे आँसू भी समाहित हो गए हैं। दुनिया में अवसाद, अकेलापन तथा गरीबी झेलने वाली जनता है। हर जगह जिंदगी जैसे को तैसा है। पाठक पहचान पाता है कि एक यूरोपीय गाँव की सड़कें भी जीवन की गर्मी और ठंड से भरी होती हैं। विवरण में हरिता ग्रामीण आकर्षणों पर भ्रमित होती दिखती है। परंतु उनके वाक्य खंडों में प्रस्फुटित आँसू की धारा पाठकों को वास्तविकता के धरातल पर लाकर खड़ा करती है। सत्रह अध्यायों वाले इस यात्रा साहित्य की इतिश्री जब पहाड़ों की वधु नाम से होती है तो एक यूरोपीय यात्रा की कामना पाठक में जाग उठती है। वहीं पर 'घायलों की राहें' सफलता को छूने लगती है।

'कैसी–कैसी प्रेरणाएँ' समय–समय पर शारदा कुट्टी द्वारां लिखी हुई साहित्यिक आलोचनाओं का संग्रह है। कहीं–कहीं यादें, कहीं–कहीं विचार, कहीं–कहीं आलोचना

से युक्त एक मंच लेखिका इसमें तैयार करती है। भूतकाल की गुफाओं या वर्तमान काल की परतों या भविष्य की प्रतीक्षा में फँसे बिना शब्दों, विचारों एवं विश्वासों द्वारा साहित्य से साक्षात्कार करने की क्षमता शारदा कुट्टी की इस रचना में है। 2022 के केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त यह रचना शारदा कुट्टी के आत्मकथ्य से जुड़ी हुई है। इसकी एक आलोचना मलयालम की मशहूर लेखिका माधविकुट्टी को लेकर है। लेख का शीर्षक है 'माधविकुट्टी का समय'। उसमें माधविकुट्टी के कथन को लेकर लेखिका आगे बढ़ती है। मेरी कहानी लिखते हुए माधविकुट्टी ने लेखन क्षेत्र में एक नई राह खोज निकाली। तब तक साहित्य का पुरुष वर्चस्व टूटने लगा। तब माधविकुट्टी ने कहा– असल में 'मेरी कहानी' पढ़कर किसी को भी कोई झटका नहीं पड़ा था। समाज के सामने सब दिखाने लगे कि बड़ा झटका लग गया है। यह दूसरों के आगे अपने को मासूम साबित करने का दिखावा मात्र था। समाज के उस गोपन का लक्ष्य यह कहना था कि हमने विवाह के बाहर किसी प्रकार के रिश्ते के बारे में सोचा तक नहीं है। पर सच्चाई इससे कोसों दूर थी। प्रस्तुत साहित्यिक आलोचना में शारदा कुट्टी साबित करती हैं कि कमलादास ने स्त्री को समझने के लिए अपने शरीर और अपनी आत्मा के नंगेपन को दूसरों के आगे खोले रखा ताकि समाज झूठ से बच सके। इस प्रकार प्रस्तुत आलोचना समय–समय पर उत्पन्न विचारों से साहित्य में आए परिवर्तन को रेखांकित करती है।

यदि मानव सभ्यता को किसी पेड़ के रूपक में माना जा सकता है, तो बच्चे उसकी उज्ज्वल सुगंधित कलियाँ हैं। दुनिया का भविष्य उन पर निर्भर है। इसलिए प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत प्रतिभा को पहचान कर उसे निखारा जाना है। बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास एक साथ होना है। बाल साहित्य उनके मानसिक विकास के लिए आवश्यक है। मलयालम का बाल साहित्य समृद्ध है जिसकी प्रतिध्वनियाँ 2022 में भी गूँज रही हैं। भारत का एक छोटा भूभाग है केरल। 2018 में केरल में जो मूसलाधार बारिश शुरू हुई वह धीरे–धीरे प्रलय का नाम लेने लगी। केरल की जनता की मानसिक एकता को मजबूत करने में यह काम आया। जनता ने पहचान लिया कि धन–संपत्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण है जिंदगी। असल में विशाल घरों की जरूरत नहीं है, मन विशाल होना चाहिए। बाल साहित्यकार प्रिया का विचार है कि क्या समाज को यह सिखाने के लिए यह प्रलय आया होगा। अबू नामक एक बालक को केंद्र में रखकर प्रिया ने इस बाल उपन्यास की सृष्टि की। उपन्यास की शुरुआत में अबू जब आंगन के पौधों के पास पहुँचता है तो पौधा उससे पूछता है– 'अबू, क्या तुमने स्कूल में या रास्ते में बारिश को देखा?' अबू बताता है 'नहीं, कहीं नहीं देखा।' बाद में जब स्कूल पहुँच गया तो वहाँ के पेड़, वहाँ की घासें सब अबू से पूछने लगी– 'अबू, तेरे घर में बारिश आई थी? जब आएगी तो उसे अपने साथ यहाँ भी ले आना।'

इस प्रकार बहुत स्वाभाविक ढंग से फेंटेसी के माध्यम से यह बाल उपन्यास आगे बढ़ता है और यह उपन्यास बारिश के आने पर उत्पन्न प्रलय के माध्यम से आपस में प्रेम से रहने का पाठ देता है। प्रिया को इस उपन्यास के लिए बाल साहित्य का केंद्र, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

अंत में अनूदित रचनाओं को छुए बिना समाप्ति शोभा नहीं देती। अनुवाद अपने मूल प्रस्थान में एक सर्जनात्मक भूमिका निभाता है। भाषिक विनिमय के माध्यम से पाठक विभिन्न भाषा–भाषी प्रांत की संस्कृति की छत्रछाया में अपने को बैठा पाता है। हमारी सामाजिक संस्कृति इसका विस्मयकारी प्रमाण है। अनुवाद के क्षेत्र में 2022 के दिसंबर का महीना केरल में एक नवांकुर का साक्षी रहा। कोहरे और धुंध से भरे मौसम में केरल के उच्च माध्यमिक स्कूलों के उच्च शिक्षा प्राप्त 39 शिक्षकों ने मिलकर हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार भगवान दास मोरवाल के 'वंचना' उपन्यास का अनुवाद किया। 10 दिन की कार्यशाला में 300 पन्नेवाले उपन्यास के पूरे 39 अध्यायों का अनुवाद सांस्कृतिक साहित्यिक मूल्यों को बिना क्षति पहुँचाए जिस निष्ठा से संपन्न हुआ, वह राज्य भर में चर्चित हुआ। यह ऐतिहासिक घटना केरल की राजधानी तिरुवनंतपुम में विराजित यूनिवर्सिटी कॉलेज के हिंदी विभाग में हुई थी। दिन–रात एक करके केरल राज्य के उत्तरी छोर से दक्षिणी छोर तक की उच्च माध्यमिक संस्थाओं में अध्यापन की भूमिका निभाने वाले 39 शिक्षकों ने जिनमें छह पुरुष थे, बाकी महिलाएँ थीं अपने पठन–पाठन से प्राप्त ऊर्जा को वागीश्वरी के समक्ष समर्पित किया तो राजधानी की पेनविन प्रकाशन संस्था के सहयोग से 10 वें दिन किताब का विमोचन हुआ। यह उपन्यास पुरुष वर्चस्व की शिकार नारियों का जीवंत दस्तावेज़ है। निर्भया कांड के पश्चात उभरी परिस्थितियों में नारी पर बलात्कार की घटनाओं की संवेदनात्मक प्रस्तुति वंचना में हुई है। नारी पर बलात्कार के पीछे विकृत पुरुष प्रधान निरंकुश मानसिकता को तलाशने का प्रयास उपन्यासकार मोरवाल ने किया है। उपन्यास रेखांकित करता है कि जघन्य अपराधों के बावजूद अपराधी पुरुष को बचाने के तमाम कानूनी दाँव–पेंच की शिकार नारी पुरुषवादी वंचना का खिलौना बन जाती है। अंततः जातिगत उच्चता, पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा नैतिकता के नाम पर हर बार नारी को ही कठघरे में खड़ा किया जाता है। समसामयिक समस्याओं को बखूबी अंकित करनेवाले इस उपन्यास का अनुवाद तूफानी वेग से करने का जोखिम उठाने वाले केरल के हिंदी शिक्षक साधुवाद के पात्र हैं। भारत के सुदूर दक्षिण में स्थित हिंदीतर प्रांत का यह प्रयोग सुनहले भविष्य का दिशा–निदर्शन है। पूरे केरल राज्य में चर्चित यह अनूदित उपन्यास अनुवाद के क्षेत्र में नई ऊर्जा बिखेर रहा है।

इस प्रकार 2022 की धड़कनों को रेखांकित करने में केरल के साहित्य ने अपनी भूमिका अदा की। वर्तमान मलयालम साहित्य रूमानियत के सौंदर्य से दूर है।

समसामयिक मामलों को व्यक्तिगत मामलों तक ही सीमित रखने की प्रवृत्ति साहित्य में है। साथ ही कल्पना की शक्ति वैचारिक तीव्रता के कारण लुप्त है। इन सबके परे सामाजिक अनुप्रयोग के स्तर पर व्यक्तिपरकता लाने की तीव्र इच्छा वर्तमान मलयालम साहित्य में है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि स्वर पर जो चेतना उभरती है, वही साहित्य का आसव है। मलयालम का साहित्य भारतीय साहित्य को उत्तरोत्तर संभालने में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है।



18

मैथिली साहित्य



वैद्यनाथ झा

केंद्रीय विद्यालय संगठन में अध्यापकीय सेवा से अवकाश प्राप्त। कृतियाँ – अनुवाद (पंजाबी से हिंदी व हिंदी से मैथिली में)। दो कहानी संग्रह, एक उपन्यास पंजाबी से मैथिली, एक मैथिली कथासंग्रह हिंदी में तथा मैथिली बालकथा संग्रह हिंदी में प्रकाशित। साहित्य अकादेमी के बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित तथा मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित। संप्रति – स्वतंत्र लेखन।

विविधताओं के देश भारत में भाषा और साहित्य में भी काफी विविधता है। व्याकरण और भाषा विज्ञान भाषा को अनुशासित और समृद्ध करते हैं, वहीं विधागत सामग्रियाँ जैसे कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, अनुवाद, बालसाहित्य, संस्मरण, रिपोर्ताज आदि साहित्य के भंडार में वृद्धि करते हैं।

आलोच्य वर्ष 2022 में मैथिली में भी साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुस्तकें अच्छी संख्या में प्रकाशित हुई हैं। तुलनात्मक दृष्टि से अन्य भाषाओं की तरह मैथिली में भी सबसे अधिक प्रकाशन कविताओं का हुआ है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं एवं विवरणों के अनुसार मैथिली में प्रकाशित साहित्यिक सामग्रियाँ प्रस्तुत हैं–

कविता

एक मैथिली कविता–संग्रह 'प्रतिकार एखन बाकी अछि' का प्रकाशन हुआ है। इस संग्रह के रचनाकार रामकृष्ण 'परार्थी' हैं। भेदमूलक (मनुष्य–मनुष्य में) समाज की विकृतियों को कविता में गूँथते हुए यह संग्रह समग्र मानव समाज से ठेठ सवाल करता है। इस कारण यह संग्रह चर्चित हो रहा है। समतामूलक समाज के निर्माण की वकालत करते हुए विकृत, अमानवीय सोच पर तीव्रता से प्रहार करती हुई कविताएँ मैथिली कविता के इतिहास में त्वरा से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। शताब्दियों से पल रही जड़ता पर ये कविताएँ हथौड़े की तरह चोट करती हैं। एक बानगी देखें–

''डोम सँ चमार छुआइत अछि/आ चमार सँ मुसहर/आ मुसहरसँ धोबी दुसाध...''

''पाखंड, आडंबर, अंधविश्वास/एहन स्थिति मे कोना देतैक/दलित सभक विकास।''

पूरे संग्रह में इस स्थल पर मानवमात्र के लिए कठोर संदेश मिलता है–

''बाउ हौ, कोइ फूसि कहैत छह/जे मनुक्खसँ मनुक्ख छुआइत छैक/ईश्वर बनौने छथि पाँच तत्वक सभक शरीर/जकरा ई ज्ञान नहि छैक/वैह भेदभाव बतियाइत छैक।''

कवि आडंबर पर चोट करने से नहीं चूकता।

''पाथरक मूर्ति दूध पिबैत अछि की नहि/तकर हमरा लग नहि अछि कोनो प्रमाण/मुदा कतेको साक्ष्य भेटि जायत कि/दूधक अभावे मरि गेल कोनो गरीबक संतान...''

मैथिली कविता के इतिहास में एक कविता–संग्रह 'योनिक आत्मसुख' के प्रकाशन ने एक क्रांतिकारी मोड़ दिया है। मैथिल–समाज परंपरावादी, पितृसत्तात्मक और निर्धारित मूल्यों को मानने वाला समाज है। इस समाज में स्त्री–विमर्श की एक अदृश्य सीमा–रेखा रही है। रोजी–रोटी या अन्यान्य कारणों से पलायन ने लोगों के चिंतन में आमूल–चूल परिवर्तन कर दिया हे। वर्जनाएँ टूट रही हैं, मूल्यबोध बदल रहे हैं।

इस काव्य–संकलन की रचनाकार दीपा मिश्र हैं। मधुबनी के अनुप्रास प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है। इस कविता–संग्रह के प्रकाशन ने मैथिली के साहित्य–समाज में एक बहस छेड़ दी है कि क्या स्त्री–विमर्श का यह काव्यात्मक स्वरूप इतना उन्मुक्त होना चाहिए ? कवयित्री दीपा मिश्र ने इस संकलन को मातृशक्ति को समर्पित किया है। उन्होंने अपनी कविताओं में किसी वर्जना को न मानते हुए निर्भीक रूप से कटु–यथार्थ को व्यक्त किया है। वह लिखती हैं–

अपन उज्जर अंतर्वस्त्रकेँ/ओ रंगीन कपड़ाक नीचा/झाँपिकऽ सुखबैत अछि/ठीक ओहिना जेना/अपन इच्छाकेँ/मर्यादाक नीचा/ झाँपिकऽ रखैत अछि –(अपने अंतर्वस्त्र को/वह रंगीन कपड़े के नीचे/ ढककर सुखाती है/ ठीक वैसे ही जैसे/अपनी इच्छा को/मर्यादा के नीचे/ढककर रखती है)।

इसी संग्रह में एक जगह वह लिखती हैं–

छिया छिया! झाँपू–झाँपू! गंदा बात!!

नेनासँ ततबे बेर सुनलहुँ/जे बुझना गेल/हमर कोनो निकृष्ट अंग छी/एहि शरीरक/जेकरा बाह्य दुनिया/स्वीकार नहि करैये।

(छीःछीः/ढको, ढको! गंदी बात!! बचपन से इतनी बार सुना/ऐसा लगा/मानो मैं कोई निकृष्ट अंग हूँ/ इस शरीर का /जिसे बाहरी दुनिया/स्वीकार नहीं करती।)

दीपा मिश्र ने स्थापित साहित्यिक, सामाजिक परंपराओं को इन कविताओं से तोड़कर एक खुला सच सामने रखने का साहस किया है। इसलिए वह मूर्तिभंजक की भूमिका में हैं।

इस काव्यसंग्रह ने सचमुच उथल–पुथल मचा रखी है। अपनी और अपनी कनिष्ठ/युवतर स्त्री–समाज को मुक्त अभिव्यक्ति देने का आह्वान किया है। पितृसत्तात्मक लैंगिक–विभेदकारी दृष्टि का विरोध करने की बात इस संकलन में की गई है।

'विनतीमे विश्वास' श्रीमती पूनम झा 'सुधा' द्वारा रचित धार्मिक गीतों का संग्रह है जिसमें नवयुवतियाँ परंपरा, रुचि, धर्म के नजरिए में बदलाव, आधुनिकता की पृष्ठभूमि में नए ढंग से सृजन कर रही हैं। इस गीत संग्रह में धार्मिक गीत जैसे देवताओं की स्तुति–वंदना के साथ पारंपरिक लोकाचारपरक गीतों की रचना भी मिलती है। मिथिला के लौकिक उत्सवों पर गाए जाने वाले सांडर, बटगमनी, समदाउनि, चौमासा, होली, चैतावर जैसे गीत हैं। गीतों के शब्दों, भावों में भी नवीनता है।

डॉ. शुभ कुमार बर्णवाल के दो काव्य–संग्रह 'बदलैत गाम' और 'रूसल प्रकृति' प्रकाशित हुए हैं।

'बदलैत गाम' में इकसठ कविताएँ संकलित हैं और रूसल प्रकृति में भी इकसठ कविताएँ हैं। दोनों की अंतर्वस्तु लगभग एक ही है। इन कविताओं में ज्वलंत वैश्विक समस्याओं जैसे पर्यावरण–असंतुलन, प्रदूषण, आर्थिक गतिविधियों में आ रहे परिवर्तन भी छुए गए है। स्थानीय ग्रामीण समस्याओं जैसे सूखा, बाढ़, विस्थापन, पलायन, मातृभाषा का महत्व भी इस संग्रह की कविताओं में वर्णित है। कविताओं की भाषा सहज व सरल है। कोई क्लिष्टता नहीं है।

एक कविता संग्रह 'मुट्ठी भरि संवेदना' ने पाठकों का ध्यान खींचा है। इन कविताओं की रचनाकार नवोदिता अंजली कुमारी है। इस संग्रह में अड़तालिस कविताएँ संकलित हैं। अंजलि का यह पहला कविता–संग्रह है। वे स्वप्नदर्शी हैं और स्वप्न उनकी कविताओं में उतरे हैं। उन स्वप्नों का स्रोत उनकी निजता में है, परिवेश में है, प्रकृति में है। स्वप्नों का स्रोत मन के उठा–पटक, उड़ान, दर्शन, जीवन के बहुरंगी संसार में है। तेजी से बदल रहे सामाजिक वातावरण कवयित्री को प्रभावित करते हैं। देखिए, कितनी स्वप्निल कविता है–

नहि जानि एहि आँखिमे/सहेजल अछि कतेको सपना/जे कि/नहि अछि जगह/लगेबाक लेल काजरो।

(न जाने इन आँखों में/कितने सपने सहेजे हुए है/जिससे/नहि बचा हैं खाली जगह आँखों मे/काजल लगाने के लिए

यह काव्य–संग्रह कोमल, संवेदनात्मक भाव–संवेगों को सुघड़ता से व्यक्त करता है।

कविता–संग्रह 'नदी घाटी सभ्यता' का प्रकाशन ऐसा ही आभास देता है। इस संग्रह की रचनाकार रिंकी झा ऋषिका हैं।

इन कविताओं में समाज, परंपरा, परिवार की रीतियों की विसंगतियों पर प्रहार है। सामाजिक संताप और स्त्री–मन का द्वंद्व इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में मिलता है। स्त्री का संघर्ष भी कविताओं में साफ झलकता है। एक जगह वे लिखती हैं–

''हम आजुक बापक बेटी/कहि रहल छी हे हमर पुरखिन/हम अहाँक परंपरा नहि बनि सकब/मरब तँ तय अछि मुदा/हारिकऽ नहि, हकक लड़ाइ लड़िकऽ।''

मैथिली कविता की विधा में एक कविता–संकलन का प्रकाशन बहुत महत्वपूर्ण घटना है। यह संकलन है 'मैथिली'। इस काव्य–संकलन का संपादन दीपा मिश्र ने किया है। इसे प्राची डिजिटल पब्लिकेशन, नैनीताल ने प्रकाशित किया है।

यह काव्य संकलन अपने आप में कई विशिष्टताएँ लिए हुए है। सबसे पहली बात, मैथिली कविता की चार पीढ़ियों की 151 कवयित्रियों की कविताएँ संकलित हैं। सबसे वरिष्ठ कवयित्री का जन्म 1937 में हुआ और सबसे कम आयु की कवयित्री 2014 में पैदा हुई। स्वाभाविक है कि इस संकलन में चार पीढ़ियों के महिला रचनाकारों की सोच, दृष्टि, वैचारिकता, परिवेश का बदलता रूप भी दिखाई देगा। यह एक तरह से कविता के विकास की काव्यात्मक गाथा है जो प्रकारांतर से एक विमर्श खड़ा करती है। उल्लेखनीय है कि इस संकलन में अर्जेंटीना की एक कवयित्री मर्सिडीज स्टेनबर्ग की मैथिली कविता भी संकलित है। कविता विधा में दो पुस्तकें 'वंदे मातरम' और 'मिथिला' प्रकाशित हुई हैं। इन दोनों पुस्तकों के रचयिता डॉ. विष्णुकांत मिश्र हैं।

कवि का मानना है कि राष्ट्रीय जीवन मूल्य को अपनाना हर देशवासी का कर्तव्य है। देशवासियों में देशप्रेम, एकता, अखंडता और सामाजिक समरसता की भावना भरना साहित्यकार का दायित्व है और उन्होंने इन दो पुस्तकों द्वारा इसी दायित्व की पूर्ति की है। 'वंदे मातरम' की कुछ कविताएँ 'उष्ण रक्त', 'मातृभूमि', 'जय भारत', 'विविधता में एकता', स्वतंत्रता संग्राम' जैसी कविताएँ गहरी प्रेरणास्पद हैं। एक कविता देखें–

''हे मातृभूमि शत शत नमन। छी अहींक माटिक धूरि हम (अहांक एक्त देने अछि दम)।''

'मिथिला' काव्य संग्रह में कवि ने मिथिला के समाज की वर्तमान दशा पर दुःख प्रकट किया है। उनका मानना है कि आज हम मिथिला की अतीत की गौरवशाली परंपरा से दूर हट गए हैं। संग्रह की इन कविताओं से वे गौरव–बोध जगाते हैं।

अन्य कविता–संग्रहों में प्रमुख हैं– 'अग्निसंभवा' (सियाराम झा सरस), 'फुलकोका' (मुन्नी मधु), 'शब्द नहि थिक माय' (विभूति आनंद), 'सवाक् सुसुम कामिनी' (विनोद कुमार झा), 'पोथी पढ़ि पढ़ि' (डॉ. योगाकर झा), 'रम्या' (प्रतिभा स्मृति), 'इजोरियाक अंगेठिया मोड़' (माला झा एवं विभा झा)।

दो गज़ल–संग्रह– 'धिक्कार अछि' एवं 'चान गुमसुम' प्रकाशित हुए हैं। इन दोनों गज़ल–संग्रह के सर्जक सुरेंद्र नाथ मिश्र हैं।

गीत उपविधा में 'गीत कुसुम' (उमेश मिश्र), 'गीत पेटार' (पार्वती देवी), 'कमल–ताल' (कामेश्वर झा 'कमल') 'आँगन–आँगन तुलसी चौरा' (तारानंद झा 'तरूण–112 गीतों का संग्रह) प्रकाशित हुए।

कहानी

मैथिली में एक कहानी 'जिद्द, जबर्दस्ती आ जिनगी' प्रकाशित हुई है। कहानीकार हैं प्रो0 (डॉ.) विभूति आनंद। विभूति बाबू कई विधाओं में लिखते हैं। उनकी भाषा, शैली और शिल्प में काफी विविधता होती है। उनका भाषिक–रेन्ज भी बहुत बड़ा है।

इस कहानी संग्रह में तेरह कहानियाँ संगृहित हैं। संग्रह का शीर्षक ही तीन विरोधी मनोभावों को प्रकट करता है। वस्तुतः तेरह कहानियाँ लेखक की अनुभूतियों के रेशों से रची गई कहानियाँ हैं। इनमें जीवन के विभिन्न पक्ष उभरकर पाठक की संवेदना को झकझोरते हैं।

कथा संग्रह 'कनोजड़ि' मैथिली कथा साहित्य का एक विशिष्ट योगदान है। इस कथा संग्रह की रचयिता मैथिली की विशिष्ट कथाकार, कवयित्री व अनुवादिका श्रीमती सुस्मिता पाठक हैं। संग्रह का प्रकाशन अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली ने किया है।

कहानी–संग्रह 'कनोजड़ि' तेरह कहानियों का संग्रह है। संग्रह की पहली कहानी 'टैडी बियर' ही संवेदनात्मक रूप से पाठकों को स्तब्ध कर देती है। रोटी के लिए एड़ियाँ रगड़ रहे परिवार के लिए मासूम बच्चे की खुशी का प्रबंध करना कितना दुष्कर कार्य है। ऐसे में वह मासूम 'टैडी बियर' खिलौने के प्रति धधकती अपनी ललक को कैसे शांत करता है, पढ़कर स्तब्ध हो जाता हूँ। ऐसे ही 'नियुक्तिपत्र' जवान विधवा स्त्री की अपने अस्तित्व और सुरक्षा के लिए संघर्ष की त्रासद कहानी है जिसमें उसके संघर्ष के अंतिम चरण तक को व्यर्थ करने की साजिश की जाती है। कहानी का अंत त्रासद होता है। नियुक्तिपत्र ही फटी हालत में कूड़े के ढेर पर मिलता है।

इस संग्रह की सभी कहानियों का मूल स्वर स्त्री चेतना, दशा व संघर्ष है। ग्रामीण स्त्री के संघर्ष के आयाम ही अलग होते हैं, यही इस कथा संग्रह का मूल स्वर है।

एक कहानी–संग्रह 'सैह बात?'' प्रकाशित हुआ है। इस कहानी–संग्रह के लेखक डॉ. चंद्रमणि झा हैं। यह वस्तुतः व्यंग्य कथा–संग्रह है। इस संग्रह में सोलह कहानियाँ हैं जो सामाजिक विद्रूपता, विषमता व आडंबर पर व्यंग्य करती हैं। कठोर शब्दों से बचना, किसी वाद या पंथ से निरपेक्ष रहना, सामाजिक समरसता की वकालत, व्यंग्य में भी हास्य का पुट इनकी भाषा की विशिष्ट शैली है। इस शैली में व्यंग्योक्ति की धार 'द्रविड़ प्राणायाम' की तरह है जो प्रत्यक्ष तो नहीं, पर परोक्ष रूप से धारदार असर डालती है। व्यंग्य का लक्षित व्यक्ति तिलमिलाते हुए भी मुस्कराने पर मजबूर हो

जाता है।

एक कहानी संग्रह 'परगोत्री' का प्रकाशन इस वर्ष हुआ है। इस संग्रह में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों के लेखक हीरेंद्र कुमार झा हैं और साहित्यिकी (सरिसब पाही, मधुबनी) द्वारा प्रकाशित की गई है।

इन कहानियों में समकालीन सामाजिक व आर्थिक, परिस्थितियाँ, पात्रों के कठिन संघर्ष, सजातीय बनाम गैरजातीय प्रेम, उनसे उपजी विसंगतियों, नैराश्य, गाँव, शहर, कस्बों के लोगों की सोच में आ रहे परिवर्तन, पारंपरिक बंधन में आ रही शिथिलता, आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में ईश्वरवाद की 'हरि इच्छा' प्रवृत्ति, शाश्वत, नैसर्गिक प्रेम जैसे विषय हैं। परिवारों में भावनात्मक, मार्मिक घटनाओं और उनसे प्रभावित होते संबंधों का निरूपण भी इन कथाओं में है। कहानियों की भाषा सरल और स्थानीयता के व्यामोह से गुँथी हुई है। आदर्श के प्रति आग्रह भी है।

''जीवनक कर्म जीवनक मर्म'' नामक एक कथा संग्रह का प्रकाशन हुआ है। लेखक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त जगदीश प्रसाद मंडल हैं। यह कहानी संग्रह पूर्ण रूपेण ग्रामीण परिवेश व वातावरण के ताने–बाने में बुना गया है। मंडल स्वयं नितांत सुदूर ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं। इनकी कथाओं में गाँव की संस्कृति, समस्याएँ, आर्थिक स्थिति का ही निरूपण है। इस संग्रह में पाँच कहानियाँ हैं। इन कहानियों में ग्रामीण पात्र सामंजस्यपूर्ण सहजीवन जीते हैं और भौगोलिक, प्राकृतिक व आर्थिक समस्याओं से मुठभेड़ करते हैं। संवाद और विमर्श से समस्याओं का हल ढूँढते हैं। ये कहानियाँ लेखक की गहन अनुभूतियों की कहानियाँ हैं।

'चयनित कथाः शिवशंकर श्रीनिवास' मैथिली के वरिष्ठ पीढ़ी के कुशल कहानीकार शिवशंकर श्रीनिवास की लिखी गई कहानियों में 25 कहानियों का संग्रह है। इन कहानियों का चयन व संपादन उज्ज्वल कुमार झा ने किया है। नई दिल्ली के सिद्धिरस्तु प्रकाशन ने इस कथा–संचयन का प्रकाशन किया है।

शिवशंकर श्रीनिवास मैथिली कहानीकारों की उस पीढ़ी के कहानीकार हैं जिसने समाज की जड़ता तोड़ने, बंद खिड़कियों को खोल ताजी हवा का झोंका लाने, समाज को सोच और कर्म में नयापन और गतिशीलता लाने के लिए अपने परिवेश में उपलब्ध परिस्थितियों को सामने लाने के लिए कहानी विधा का उपयोग किया है। इन कहानियों में अध्यवसाय, अप्रासंगिक होते पारंपरिक मूल्यों से मुक्त होने, वैज्ञानिक एवं मानवतावादी होने का आह्वान किया गया है।

एक कहानी संग्रह 'संयोग' प्रकाशित हुआ है जिसके लेखक रवींद्र नारायण मिश्र हैं। यह उन्नीस कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में ग्रामीण और नागर संस्कृति और समाज की यथार्थपरक कहानियाँ हैं।

'नब बनक नब फल' पल्लवी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नया कथा संग्रह है। संग्रह के लेखक जगदीश प्रसाद मंडल हैं। इस संग्रह में तेरह कहानियाँ हैं। विशुद्ध ग्रामीण परिवेश की पृष्ठभूमि पर आधारित इन कहानियों में वैचारिकता, दर्शन, व्यावहारिकता तीनों तत्त्वों की प्रचुर उपस्थिति मिलती है। कहानियाँ जीवनानुभूति में पगी हैं।

एक और कहानी–संग्रह 'साहित्यकारक विवेक' प्रकाशित हुआ है जिसके लेखक जगदीश प्रसाद मंडल हैं। इस संग्रह में तेरह कहानियाँ हैं।

एक कथा–संग्रह 'सिनेहक धार' प्रकाशित हुआ है जिसके लेखक शैलेंद्र झा हैं। इस संग्रह में बीस कहानियाँ हैं। शैलेंद्र जी पेशे से इंजीनियर हैं पर हृदय से अतिसंवेदनशील हैं। इन्हीं संवेदना की झलक इन कहानियों में मिलती है। सभी कहानियाँ सूक्ष्म मानवीय संबंधों की कहानियाँ हैं। लेखक जीवन मूल्यों के प्रति सजग है। मानव व्यवहार की विसंगतियाँ जैसे स्वार्थ, ईर्ष्या, अहंकार, विभेद इन्हें क्षुब्ध करती है। यह क्षोभ ही उनकी कहानियों में व्यंजित होता है। भाषिक संरचना भी सरल है।

'अंतर्ध्वनि' साहित्य अकादमी पुरस्कृत जगदीश प्रसाद मंडल की चयनित व संपादित पद्रंह कथाओं का संग्रह है। चयन एवं संपादन डॉ. उमेश मंडल ने किया है। इसे पल्लवी प्रकाशन, सुपौल ने प्रकाशित किया है।

इन कहानियों के चयन के लिए डॉ. उमेश मंडल ने कहानियों के कथ्यों को वर्गीकृत किया जैसे 'कनिया–पुतरा', हूसि गेलौ', 'वारन्ट', दुष्टपन', 'अर्जुन रोग' आदि मनोवैज्ञानिक कहानियाँ, कुछ कथाओं में जीवन जीने की कला है। ऐसे ही कथ्यों की विविधता के आधार पर कहानियों की बनावट है।

इसके अतिरिक्त 'अंतिम स्त्री' (दीपिका झा), 'करामात' (नबीनाथ झा), 'एकटा रहय धुथरा' (शैलेंद्र आनंद), लघुत्तम समापवर्त्यक (अरविंद ठाकुर), 'अप्पन साती, जीवन दान, आएल आशा चलि गेल, भरि मन काज' (ये सभी जगदीश प्रसाद मंडलकृत संग्रह हैं), 'सपन एक देखल' (प्रदीप बिहारी) आदि भी प्रकाशित हुए हैं।

निबंध–संग्रह

इस वर्ष 'लोकदृष्टि' (डॉ. गौरी चौधरी) और 'रोशनाइक लोकपक्ष' (अरविंद ठाकुर) का प्रकाशन हुआ।

उपन्यास

मैथिली साहित्य के वर्तमान कालखंड में ऐसे भी लेखक साहित्य रच रहे हैं जो कम समय में ही काफी परिमाण में कथा, उपन्यास, संस्मरण आदि लिख रहे हैं।

रवींद्र नारायण मिश्र एक ऐसे ही लेखक हैं जिन्होंने अब तक 25 पुस्तकें लिखीं जिनमें 15 उपन्यास, 2 कथा संग्रह, 3 निबंध संग्रह, 1 यात्रा प्रबंध, 2 संस्मरण और एक यात्रा प्रसंग है।

सन् 2022 में ही उनके पाँच उपन्यास 'बीति गेल समय', 'प्रतिबिंब', 'बदलि रहल अछि समय', 'राष्ट्रमंदिर' और 'नाचि रहल अछि वसुधा' प्रकाशित हुए हैं। अपनी अधिकांश रचनाओं का उन्होंने स्वयं प्रकाशन किया है। उनके उपन्यासों की प्रवृत्ति, कथ्य व शैली सहज और सरल है।

उपन्यास 'बीति गेल समय' में एक वृद्ध के जीवन–संघर्ष की गाथा है। जीवन भोगने पर उसका कई सच्चाइयों से सामना होता है। सभी सगे–संबंधी उसका साथ छोड़ देते हैं और वह अकेले अपने हिस्से का संघर्ष करता है।

उपन्यास 'राष्ट्रमंदिर' सामाजिक समस्याओं का चित्रण करता है और सामाजिक सद्भाव के लिए प्रेरित करता है।

उपन्यास विधा में अन्य प्रकाशित पुस्तकें 'भोट' (सुभाष चंद्र यादव), 'उत्तरार्द्ध' (धीरेंद्र कुमार झा), 'ओहि टोलक रामटहल' (मधुकांत झा), 'गांगो गोढ़िन' (भवेश चंद्र झा शिवांशु) एवं 'सुचिता' (जगदीश प्रसाद मंडल), 'विसोवियस' (दूसरा संस्करण–प्रथम 1986 में) और 'गुमकी आ बिहाड़ि' (दोनों के लेखक प्रदीप बिहारी) हैं।

नाटक

सामाजिक समस्याएँ संवेदनशील रचनाकार को उद्वेलित करती हैं। दुर्बल का शोषण, संपन्न वर्ग की दबंगई कई सामाजिक समस्याओं को जन्म देती हैं।

'कमला में भसियाइत सीता' एक ऐसा ही उत्कृष्ट नाटक है, जिसके लेखक डॉ. अरविंद अक्कू हैं। इस नाटक में आठ दृश्य और तेरह पात्र हैं। अक्कू जी अब तक बीस से अधिक नाटक लिख चुके हैं। उनके सभी नाटकों के कथानक सामाजिक समस्याओं के गर्भ से ही निकलते हैं।

इस नाटक की केंद्रीय पात्र सीता है जो बहुत अत्याचार सहती है, दुराचारियों के चंगुल में फँस जाती है, लोक–लज्जावश कमला नदी में कूद जाती है पर बच जाती है। नाटक के विकास के क्रम में अपराधी उसे कमला में फेंकना चाहता है पर प्रतिरोध की वह देवी सीता धारदार हथियार से उस पर हमला कर देती है।

इस प्रकार यह नाटक स्त्री के अबला और सबला दोनों पक्षों का उद्घाटन करता है। इस नाटक के दो संवाद ध्यातव्य हैं

–एकरे सन सन दुराचारीक चलिते नहि जानि कतेको सीता कमलामे भसिया गेल होयत।

(ऐसे–ऐसे दुराचारी के कारण न जाने कितनी सीता कमला में डूब गई होंगी)

–हम धरतीमे समाय वाली सीता न, अन्यायक विरूद्ध संघर्ष करय वाली सीता छी।'

पठनीय और मंचन योग्य नाटक है।

बाल साहित्य

आलोच्य वर्ष 2022 में बाल साहित्य विधा में एक बाल कविता संग्रह ''आखर गाबय, बौआ नाचय'' का प्रकाशन हुआ है। इसके रचयिता साहित्य अकादमी पुरस्कृत

युवा बाल साहित्यकार अमित मिश्र हैं। संग्रह की कविताएँ वर्णमाला के वर्णों के आधार पर लिखी गई हैं। 12 स्वरों और 33 व्यंजनों पर आधारित ये कविताएँ छंद और लयबद्ध हैं। इनमें तीन व्यंजनों 'छ', 'ठ' और 'त' –प्रत्येक वर्ण पर दो–दो कविताएँ रचित हैं। गेय होने के कारण ये कविताएँ गाकर पढ़ी जा सकती हैं। मातृभाषा को प्राथमिक स्तर पर सीखने के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

इस वर्ष एक बाल नाटक 'सप्पत' प्रकाशित हुआ है। नाटक के लेखक साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कृत वीरेंद्र झा हैं और नवारंभ प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है।

यह नाटक सरकार के नशा–उन्मूलन अभियान के साथ हो रहे खिलवाड़ के विरूद्ध जनमत तैयार करने के लिए लिखा गया है। शराब के नशे का दुष्प्रभाव बच्चे भी झेलते हैं जब उनके पिता शराब पीकर घर आते हैं और परिवार के सदस्यों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। बच्चों पर भी मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। नाटक कल्पना, हास्य और व्यंग्य की छौंक से रुचिकर हो गया है।

इसके अतिरिक्त 'चुक्का' (लेखक मुन्नी कामत) बालकथा–संग्रह, 'प्रणाम बाबा' (कवि–कीर्तिनारायण मिश्र) बाल कविता–संग्रह भी प्रकाशित हुए।

अनुवाद

आशापूर्णा देवी बांग्ला की महत्वपूर्ण साहित्यकार रही हैं। उनके एक उपन्यास ''मोनेर झाँपी'' का मैथिली भाषा में अनुवाद डॉ. कमला चौधरी ने ''मोनक पौती'' नाम से किया है। पल्लवी प्रकाशन (निर्मली सुपौल) ने इस अनुवाद को प्रकाशित किया है।

आशापूर्णा जी की अधिकांश रचनाएँ स्त्री की मनोदशा, उसकी सामाजिक स्थिति और संघर्ष को केंद्र में रखकर सृजित हैं। इस उपन्यास में भी उन्होंने बाल विवाह, उसके दुष्परिणाम पर स्त्री द्वारा भीषण परिस्थितियों में भी संघर्ष कर रही स्त्री–पात्र की गाथा वर्णित है। शशितारा की शादी नौवें वर्ष में होती है और उसी वर्ष वह विधवा हो जाती है। यहीं से उसके दुःखों की गाथा शुरू हो जाती हैं। वह संघर्ष करती है, संबंधियों की उपेक्षा सहती है पर हार नहीं मानती है। जीवन के अंतिम क्षणों तक सक्रिय रहकर अपने त्याग, तपस्या, संघर्ष के बल पर घर को व्यवस्थित कर लेती है। आजीवन अपने कर्तव्य–बोध और कर्मठता से आबद्ध रहते हुए परिवार का ख्याल रखती है और पूरे परिवार को रचनात्मकता का संदेश देती है।

अनुवाद की एक सीमा होती है और यही सीमा कमला चौधरी की भी थी। बंगाल और मिथिला के समाज की प्रकृति व समस्याएँ लगभग एक जैसी हैं। इस तत्व ने उन्हें अनुवाद कार्य में भावों के शाब्दिक–गुंठन में सहायता की। उपन्यास पढ़ते हुए आप यह नहीं कह सकते कि आप बांग्ला से अनुवाद पढ़ रहे हैं।

डॉ. मनोरमा बिस्वाल महापात्र ओडिया साहित्य की प्रमुख समकालीन साहित्यकार

हैं। उनका एक काव्य संग्रह ''यादों में शांतिनिकेतन'' प्रकाशित हुआ था। इस कविता संकलन में 26 कविताएँ हैं। डॉ. मनोरमा शांतिनिकेतन की छात्रा रही हैं। वहाँ के मनोरम प्राकृतिक सुषमा, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, कलात्मक वातावरण, उससे जुड़े महापुरुषों का इतिहास, एक विशिष्ट वातावरण से वे गहराई से जुड़ी रही हैं। साथ ही इन दिनों वहाँ आ रहे नकारात्मक परिस्थितियों व वातावरण के प्रति भी वे दुःखी, मर्माहित व संवेदनशील हैं। यही सब मनोभाव इन कविताओं में फैले हैं।

इन 26 कविताओं का मैथिली में अनुवाद इन पंक्तियों के लेखक वैदय्नाथ झा द्वारा किया गया है।

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद के कार्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत के एक कथासंग्रह 'कथा–कुंज' का मैथिली में अनुवाद कराया है। इस कथा–संग्रह के रचयिता देवर्षि कलानाथ शास्त्री हैं और मैथिली में अनुवाद जयनारायण यादव ने किया है।

इस पुस्तक की संरचना विशिष्ट है। इसमें एक उपन्यासिका, दस कहानियाँ और छह ललित निबंध हैं। उपन्यास 'जीवनक बटखर्चा' की कथावस्तु एक प्रेमकथा पर आधारित है। स्वच्छंद दैहिक प्रेम नहीं, पवित्र, मर्यादित प्रेम जो बाद में विवाह में बदल जाता है। पूरे उपन्यास पर कालिदास, भवभूति की छाया है। कहानियाँ भी भारतीयता, मर्यादा, आदर्श की भावना से ओतप्रोत हैं। इस पुस्तक में भाषायी लालित्य की प्रचुरता देखने को मिलती है।

अनुवाद विधा में दो महत्वपूर्ण धार्मिक पुस्तकें श्रीमद्भगवदगीता और दुर्गासप्तशती का मैथिली में अनुवाद किया गया है। अनुवाद किया है श्रीमती वंदना झा ने।

दुर्गासप्तशती के 700 संस्कृत श्लोको को अनूदित पुस्तक में वैसे ही रखा गया है। इन श्लोकों का सरल मैथिली भाषा में गद्य–भावानुवाद किया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता के भी सभी श्लोक (संस्कृत) तो हैं ही, उनका सरल मैथिली भाषा में गद्य भावानुवाद को ही पुस्तकाकार में संकलित किया गया है।

इसके अतिरिक्त साहित्य अकादमी ने कुछ साहित्यिक कृतियों का मैथिली में अनुवाद करवाया है जैसे एक गाछः दू चिड़ै (मराठी से : मू.ले. विश्राम बेडेकर : मै0 अनुवाद विष्णुकांत मिश्र; हैंस एंडरसनक कथा, भाग 1 (संपादक हरिकृष्ण देवसरे : अनुः नारायण झा; पाब्लो नेरूदा (कविता संचयन) अनुवादः नारायण झा, शब्दांत (पंजाबी कविता संग्रह) कवि–देव, अनुवाद : प्रेम मोहन मिश्र, नागफनी बोनक इतिहास (तमिल उपन्यास–आर वैरभुत्तू, अनुवाद : अजीत मिश्र नील अंबर, कारी मेघ (डोगरी कथा–संग्रह–नरेन्द्र खजूरिया, अनूवाद : फुलो पासवान)।

इसके अतिरिक्त 'प्रेमधुन' (मूल : अंग्रेजी–ज्योतिर्मय ठाकुर) प्रेम कविता–संग्रह का मैथिली अनुवाद अयोध्यानाथ चौधरी, 'मनक पुकार' (हिंदी कविता संग्रह, लेखक

डॉ. इंद्रकांत झा) का मैथिली अनुवाद काजल कुमारी, मृणालिनी' (उपन्यासः बांग्ला–लेखक बंकिम चंद्र चटर्जी) का मैथिली अनुवाद डॉ. चेतना, भी प्रकाशित हुए हैं।

आलोचना / समीक्षा / विश्लेषण

विगत कुछ वर्षों से मैथिली सहित्य में आलोचना विधा में कई पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं। इस वर्ष 2022 में भी आलोचना / समीक्षा पर कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

नई दिल्ली के सिद्धिरस्तु प्रकाशन ने आलोचना की एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसका नाम 'विश्लेषण' है। पुस्तक के लेखक डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास हैं। शिवशंकर जी मूलतः कथाकार हैं और उन्होंने कई ऐसी कहानियाँ मैथिली साहित्य को दी हैं जो संवेदना, मानवीयता सामाजिक संबंधों और मूल्यों को प्रतिस्थापित करती हैं। साथ ही उन्होंने साहित्यिक कृतियों का पारंपरिक विश्लेषण किया है।

इस पुस्तक में लेखक ने मैथिली साहित्य के विशिष्ट रचनाकारों की रचनाओं के भाव–सौंदर्य, भाषिक सौंदर्य, शिल्प, लोकपक्ष का विश्लेषण करते हुए बीस आलेख लिखे हैं। उन बीस में से तीन तो उनके निजी संस्मरण हैं। उन्होंने सत्रह आलेखों में जिन साहित्यकारों की कृतियों के बारे में इस पुस्तक में लिखा है वे हैं–गोविंद दास, सीताराम झा, पं0 गोविंद झा, कांचीनाथ झा 'किरण', काशीनाथ झा 'मधुप', सोमदेव, 'लिली रे, रामकृष्ण झा 'किसुन', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (हिंदी में नागार्जुन) प्रभास कुमार चौधरी, उषाकिरण खान हैं। साथ ही मैथिली गद्य व पद्य की विकास–यात्रा पर भी प्रकाश डाला है। लेखन साहित्य में अपनी भाषाई सहजता, सरलता एवं क्षेत्रज शब्दों के विपुल प्रयोग के लिए जाने जाते हैं।

आलोचना विधा में एक पुस्तक 'आलोचनाक वातायन' प्रकाशित हुई है। लेखिका हैं आभा झा। पुस्तक की संपूर्ण सामग्री छह खंडों में है।

प्रथम खंड में आलोचना के सैद्धांतिक पक्ष जैसे स्वरूप, भेद, पद्धति, आलोचक के गुण, आलोचना व साहित्य का विकास, काव्य में आभिजात्य और स्वच्छतावाद को समेटते हुए छह आलेख हैं।

तीसरे खंड में सात सामयिक निबंध हैं जिनका केंद्रीय विषय–'हम, अहाँ आओर मैथिली' है। चौथे खंड में –स्त्रीक दीप्ति' उपशीर्षक से पाँच आलेख हैं। पाँचवें खंड में 'पावनि तिहार' उपशीर्षक से आठ आलेख हैं और छठे खंड में विविध उपशीर्षक से छह आलेख हैं।

'महेंद्र महत्व' शीर्षक से एक विश्लेषणपरक एवं संस्मरणात्मक पुस्तक प्रकाशित हुई है। पुस्तक का संपादन केदार कानन व रमण कुमार सिंह ने किया है। इस पुस्तक में 35 आलेख हैं। यह पुस्तक बिहार के सहरसा के एक कालेज में मैथिली के प्राध्यापक डॉ. महेंद्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित है।

इस प्रकार 35 लेखकों द्वारा लिखे गए आलेख सृजन के सभी पक्षों की गहनता से पड़ताल करते हैं।

पत्रकार एवं कवि रमण कुमार सिंह की आलोचना विधा में एक पुस्तक 'तिरपेच्छन' प्रकाशित हुई है। मैथिली पुस्तकों के महत्वपूर्ण प्रकाशक 'किसुन संकल्प लोक' ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया हैं। इस पुस्तक में 22 आलेख संकलित हैं। इन आलेखों के माध्यम से रमण कुमार सिंह ने मैथिली के सशक्त साहित्यकार रामकृष्ण झा 'किसुन', मायानंद मिश्र, सुभाष चंद्र याइव, शिवशंकर श्रीनिवास, केदार कानन, सुस्मिता पाठक, तारानंद वियोगी, डॉ. कीर्तिनाथ झा, दिलीप कुमार झा, रोमिशा झा, अभिलाषा, आदि के आलेख संग्रहीत हैं। उपरोक्त वर्णित लेखकों ने आत्मकथा, यात्रा–वृत्तांत, सामाजिक समस्याओं, कविता, कहानी के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आलेखों की अंतर्वस्तु बहुत रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

मैथिली उपन्यास के इतिहास में सुभाष चंद्र यादव का उपन्यास 'गुलो' एक क्रांतिकारी घटना है। कई आलोचकों ने इस उपन्यास को वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' के 'बलचनमा' का पूरक उपन्यास माना है। दोनों उपन्यासों के नायक सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के हैं और अपने–अपने समय के समाज को चित्रित करते हैं यद्यपि दोनों के समाज के कालखंड में ज्यादा अंतर नहीं है।

इसी उपन्यास 'गुलो' को केंद्र में रखकर आलोचना की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है–'गुलो : कला आ भाषा'। पुस्तक का प्रकाशन किसुन–संकल्प लोक, सुपौल (बिहार) द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में मैथिली के विशिष्ट साहित्यकारों केदारनाथ चौधरी, मंत्रेश्वर झा, विद्यानंद झा, कथाकार अशोक, नारायण जी, केदार कानन, तारानंद वियोगी, कृष्णमोहन झा 'मोहन', रमेश आदि के 22 आलोचनात्मक आलेख संकलित हैं। इस पुस्तक का संपादन केदार कानन और तारानंद वियोगी ने किया है।

रचना संकलन

'सुंदरि! निहुरि फुकू आगि' रचनाओं का संकलन है जिसके रचयिता सी. एम. कॉलेज, दरभंगा के पूर्व प्राचार्य डॉ. विश्वनाथ हैं। डॉ. विश्वनाथ समाजशास्त्र के प्रोफेसर हैं पर साहित्य में भी सृजनरत रहते हैं। उनकी सभी रचनाओं में सामाजिक सरोकारों की उपस्थिति अनिवार्य होती है।

दो सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में कुल अठारह रचनाएँ हैं जिनमें तीन विशिष्ट व्यक्तियों के साक्षात्कार, पाँच समीक्षात्मक निबंध, तीन विदेश यात्राओं का वृत्तांत, तीन मनोविश्लेषणात्मक कहानियाँ, तीन संस्मरण और एक रम्य रचना है और नई दिल्ली के फोकब्रेन द्वारा प्रकाशित की गई है।

रचना समग्र

मैथिली के नामचीन प्रकाशक किसुन संकल्प लोक ने 'किसुन समग्र'–भाग 1 एवं भाग 2 प्रकाशित किया है जिसका संपादन श्री केदार कानन ने किया है।

इसी प्रकार प्रसिद्ध साहित्यकार कांचीनाथ झा 'किरण' की कृतियों को समग्र रूप से किरण मैथिली साहित्य शोध संस्थान ने 'किरण समग्र' नाम से प्रकाशित किया है।

व्याकरण / भाषाविज्ञान

शोधपरक भाषा विज्ञान की पुस्तक लिखना एक अत्यंत श्रमसाध्य एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है, साथ ही अपनी भाषा के भंडार में एक अमूल्य योगदान है। भाषाविज्ञान लेखकों, शोधार्थियों, पत्रकारों के लिए मूल्यवान संपत्ति होती है। इस वर्ष इस क्षेत्र में एक ऐतिहासिक महत्व की पुस्तक 'मैथिली भाषाविज्ञान' का प्रकाशन हुआ है। मैथिली के प्रसिद्ध भाषा–विज्ञानी डॉ. विजयेंद्र झा ने यह पुस्तक लिखी है और प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से प्रकाशित हुई है।

यह पुस्तक 1000 पृष्ठों की है। इसमें 18 अध्याय हैं। इन अध्यायों में मैथिली भाषा के उद्भव, विकास और लिपि पर विश्लेषणामक सामग्री है। इसमें शब्दों के स्वरूप, उत्पत्ति, व्युत्पत्ति, शब्दकोश निर्माण के सिद्धांत, संरचना आदि का विस्तृत वर्णन है। निश्चय ही यह पुस्तक लेखकों, शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी व विषय–प्रतिपादन की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगी।

इतिहास

एक अति महत्वपूर्ण पुस्तक 'मैथिली सिनेमाक इतिहास' प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक के लेखक किसलय कृष्ण हैं। यह मैथिली सिनेमा की शोधपरक पुस्तक है। लेखक ने बहुत परिश्रम से मैथिली सिनेमा की विकास–यात्रा से संबंधित तथ्य व आँकड़े जुटाए हैं। पुस्तक निश्चय ही विषय के साथ न्याय करती है।

डायरी

मैथिली के सुपरिचित, उर्वर लेखक डॉ. विभूति आनंद की एक पुस्तक 'पहाड़क डायरी' प्रकाशित हुई है।

❑❑❑

19

सिंधी साहित्य



रवि प्रकाश टेकचंदानी

'सिंधी लोक मान्यताओं एवं साहित्य में रामायण', 'सरयू सिंधु' आदि कई मौलिक, अनूदित और संपादित पुस्तकें। विभिन्नि अकादमिक निकायों और पत्रिकाओं के परामर्श–मंडल के सदस्य। कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में सहभागिता। सारस्वत सम्मान, सिंधी अध्यापक सम्मान आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति–निदेशक, राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

भारत के संविधान में स्वीकृत 22 भाषाओँ में सिंधी भाषा सम्मिलित है। सिंधी भाषा को 10 अप्रैल सन 1967 को संविधान में सम्मिलित किया गया था। भारत में सिंधी भाषा का कोई एक प्रांत नहीं है इस कारण से यह भाषा सीमाओं से परे संपूर्ण भारत के भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा कामरूप से कच्छ तक इस भाषा के प्रेमी निवास करते हैं। यद्यपि सिंधी भाषा का मूल क्षेत्र सिंध प्रदेश है। किंतु सन 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने और भारत के विभाजन के उपरांत सिंधी भाषा का क्षेत्र भारत में असीम हो गया है। इस असीमितता के कारण भारत के सिंधी साहित्य में विषयों की विविधता दृष्टिगोचर होती है। जिस तरह गुजरात में रहने वाला सिंधी, स्थानीय विषयों, सांस्कृतिक मूल्यों को लेकर सिंधी का रचना संसार बनाता है उसी प्रकार असम और बंगाल का सिंधी लेखक वहाँ की स्थानीय सांस्कृतिक विरासत के साथ सिंधी संस्कृति का सामंजस्य स्थापित करता है। कश्मीर व पंजाब का सिंधी लेखक अपने अनुभवों को सिंधी में प्रदर्शित करता है। इस आधार पर यह उल्लेख करना समीचीन है कि भारत की भाषाई व सांस्कृतिक विविधता का चित्रण सिंधी में सहजता से प्रस्फुटित होता है। यह सिंधी साहित्य की दृष्टि से अत्यंत प्रशंसनीय है। सिंधी भाषा में लिखित साहित्य संसार विविधतापूर्ण, बहुरंगी, बहुविषयक, सतरंगी–सा पाठकों के हाथों में पहुँचता है। यह सब कुछ सिंधी भाषा के असीम होने के कारण ही संभव होता है।

प्रतिवर्ष सिंधी में 20 से अधिक पत्रिकाओं का, 50 से अधिक समाचारपत्रों का और कई पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। चूँकि इस आलेख का दायरा वर्ष 2022 में भारत में प्रकाशित कुछ चुनिंदा पुस्तकों का परिचय कराना मात्र है। अतः इस लेख द्वारा संकलित कुछ पुस्तकों का विवरण संक्षेप में प्रस्तुत है–

1) सिंधी शोध कार्य

सिंधियत जा रंग– लेखिका डॉ. कमला गोकलाणी, अजमेर

लेखिका कमला गोकलाणी की सिंधी साहित्य में 60 के करीब पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्होंने लेखन की सभी विधाओं पर अपनी कलम चलाई है। इनकी प्रकाशित पुस्तकें सिंधी साहित्य में शोध कार्य हेतु अधिक उपयोगी साबित हुई हैं। इनके द्वारा लिखित पुस्तकों से शोध कार्य व साहित्यिक क्षेत्र में मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। लेखिका आई.ए.एस और आर.ए.एस के लिए मार्ग दर्शन करती रही हैं एवं क़ौमी मुशायरों व सेमिनारों का संचालन कार्य भी इन्होंने बखूबी निभाया है। 130 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने में इनकी सक्रिय भागीदारी रही है। पुस्तक 'सिंधियत' जा रंग में लेखिका ने विभिन्न विषयों पर रोशनी डाली है। लेखिका ने वर्तमान के शिक्षा विषय 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के संदर्भ में इस पुस्तक में दर्शाया है कि हर व्यक्ति को तीन मातृ शक्तियाँ प्राप्त होती हैं जैसे कि 1. इस शरीर को जन्म देने वाली 'जननी माता' 2 जन्म भूमि 3. मातृभाषा (मादरी जुबान)। जिस भाषा में हम शुरुआती ज्ञान यानी समझ प्राप्त करते हैं। जिस भाषा में माता हमें मीठी लोरी सुनाती है। इस ज्ञानवर्धक पुस्तक के संबंध में लेखिका की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ :–

''अवाम जी ज़हनित बदिलाइणु– आम माण्हूअखे इहा ग़लतफ़हमी आहे त अंग्रेजी माध्यम में पढ़ण सां ई बार लाइकीअ ते लगंदा, आफ़ीसर बणिबा। जडहिं त चालीहनि सालनि जे आज़मूदे इन खे कुड़ो साबितु कयो आहे। अधु सेकड़ो बिउहे ऊचायूं न छुही सघिया आहिनि।''

लेखिका ने क़ौमी शिक्षा नीति के अनुसार भारतीय भाषाओं यानी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने का समर्थन किया है।

2) लोक साहित्य

बन्नी जो लोक रंग– श्री कलाधर मुतवा। कच्छ सौराष्ट्र एवं सिंध प्रदेश के मध्य में कर्क रेखा पर स्थित कच्छ स्थान प्रचीन काल से ही महत्व के कारण विशेष स्थान है। बन्नी का सिंधी में अर्थ होता है 'पोख'– यानी खेती

इस पुस्तक में लेखक ने बन्नी की स्थानीय भाषा, लोक जीवन, खानपान, सांस्कृतिक, संस्कार व सभ्यता, रीति–रिवाज, लोकगीत, लोक साहित्य व वहाँ के खेलकूद, लोक कला, बन्नी की प्रमुख जातियाँ, वेशभूषा, आभूषण, हस्तकला, लोकचित्र वहाँ के देवीदेवता, लोक नाटक के संदर्भ में विशेष जानकारी प्रदान की है।

अब आपको वहाँ के लोक गीत की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत कर रहा हूँ जब छोटे बच्चे खेलते हैं तो–

''धू धू घाणा, छला पुराणा
छले छले मुन्डीम, अदल मंडेदी''

छोटे बच्चे को जब चलना सिखाया जाता है तो दोनों हाथों से पकड़कर उसे चलाना सिखाया जाता है व लोक गीत गाया जाता है:–

''पेरड़ों पन्धडो, पेरड़ों पन्धडो
भाउ मुंहिंजो नन्दड़ों, पेरड़ों पन्धडो''

शादी के समय खुशी का लोक गीत–

''कर वेस बगा, चड़ह उठ ते
पटको लाड्ल जो, रेशम कपिड़ो

3) सिंधी निबंध

जिनि नांउ कयो रोशन– नंद कुमार सनमुखाणी

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पूरे भारत में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। सिंधी लेखक श्री नंद कुमार सनमुखाणी ने भी आज़ादी के आंदोलन में सिंधी योद्धाओं को याद करते हुए यह पुस्तक लिखी है 'जिन नांउ कयो रोशन; यानि जिन्होंने अपना नाम रोशन किया है।

भारत की आज़ादी की लड़ाई के समय सिंधू व वहाँ के रहिवासियों ने जो अपना योगदान प्रदान किया था। वह इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित रहेगा। भारत की आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने वाले सिंधी योद्धा–

1– डॉ. चोइथराम गिदवाणी
2– शहीद हेमू कालानी
3– श्री जयरामदास दौलतराम
4– पद्मश्री हूँदराज दुखायल
5– श्रीमती जेठी सिपहमलाणी
6– शहीद हरचंद राय विशनदास
7– आचार्य कृपालाणी
8– श्री विरुमल बगराज
9– श्री विष्णू शर्मा
10– श्री आनंद हिङोराणी
11– श्री गंगा गिदवाणी
12– श्री पारपती गिदवाणी
13– श्री लालचंद अमरडिनोमल
14– श्री नेवंदराम विशनदास
15– श्री मानसिंघ चूहड़मल
16– प्रो हासानंद जादूगर
17– श्री प्रभदास ब्रहचारी
18– श्री जेठमल परसराम

4) बाल गीत

हुंदराज बलवाणीअ जा चूण्डबाल गीत– लेखक– हूँदराज बलवाणी, अहमदाबाद निवासी, संपादक – श्री दिलीप लालवानी

हूँदराज बलवाणी एक कहानीकार, ड्रामा नवीस, आलोचक व कवि हैं। इन्होंने पत्रकारिता व अनुवाद के कार्य में भी अपनी सेवाएँ प्रदान की हैं। इन्होंने अपनी कलम अधिकतर बाल साहित्य पर चलाई है। सिंधी भाषा के अलावा अन्य भाषाओं जैसे मराठी में 4 पुस्तकों, पंजाबी में 3 पुस्तकों, उर्दू में, 3 पुस्तकों, अंग्रेजी में 2 पुस्तकों, तमिल में 1 पुस्तक, राजस्थानी में 1 पुस्तक व मैथिली में 1 पुस्तक का अनुवाद किया है।

इस पुस्तक में बच्चों के मनोरंजन हेतु बाल गीत प्रस्तुत किए गए हैं, जैसे बहादुर कूओ, उबहरी बिली, बांदर जी मोटर, वेचारो गड्हु, पंहिंजो घरु, बघलो भग्तु, बेंगालीं जादूगर, मुंहिंजो डाडो, मां गाईंदुसि, पोपटड़ा, स्कूल थो वञां! होली आई, खुश्कीमुश्की, गंढेरी, मिली आ मोकल, सर्कस जो जोकर, सुस्तनि जो सरदार इत्यादि।

हूँदराज बलवाणी को केंद्रीय साहित्य अकादेमी से 'अनुवादक' पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भारत सरकार की संस्था 'राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद' व गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर ने इन्हें पुरस्कारों से सम्मानित किया है। इनके लिखे बाल गीतों का संपादन व लिप्यंतरण श्री महेश लालचंदानी जी ने किया है

5) सिंधी कविता

प्राचीन समय का साहित्य देखेंगे तो अधिकतर साहित्य हमें काव्य रूप में ही प्राप्त होता है जैसे रामायण, महाभारत वगैरह। आधुनिक युग में भी कवि अपनी भावनाओं को ज्यादा अच्छे ढंग से सरलता से कविता में व्यक्त कर सकता है। वर्तमान में सिंधी शायरी में भी नए–नए तरीके और शब्द अपनाए जा रहे हैं। सिंधी गज़ल की प्राप्त पुस्तक का विवरण कुछ इस प्रकार है–

अ) पहिंजा पाछा– लेखक– भगवान बाबणी

भगवान बाबणी ने इस पुस्तक में जिंदगी की हकीकतों का चित्र प्रस्तुत किया है। लेखक ने इस पुस्तक में समय की कदर करना, कोरोना महामारी, लॉकडाउन व अन्य सामाजिक विषयों को दर्शाया है। लेखक की नज़र अपने आस–पास की हर हलचल पर साफ़–साफ़ दिख रही है। जैसे–

शेरू थोरी देरि लइ बसि हो सुम्हियो
पो गिदड़ हिकदम उथिया डिसु केतिरा
लॉक डाउन में बि बाहिर प्या घुमनि
मुल्क में माण्हू चरिया डिसु केतिरा
घरि वञण जी आ तकड़ि सभ खे लगी
हिक मथां आहिनि सथिया डिसु केतिरा

ख) लाथम कसु क़लुब तां– खेमन यू मुलाणी, भोपाल

सिंधी साहित्य में लेखक ने हर विषय पर कलम चलाई है। इनके द्वारा साहित्यिक निबंध लेखन का कार्य होता रहा है, आयोजित किए गए सेमिनारों में विभिन्न विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किए जाते हैं। उनको पुस्तकों के रूप में प्रकाशित करवाया जाता है। इस पुस्तक के लेखक श्री खेमन यू मुलाणी ने अब तक 10–12 पुस्तकें लिखी हैं, 10–12 पुस्तकें हिंदी से सिंधी अनुवाद की हैं व 22–25 पुस्तकें सिंधी से हिंदी में अनुवाद की हैं।

इस पुस्तक में उन्होंने आज़ादी के बाद सिंधी गज़ल, 1980 के बाद सिंधी गज़ल, तीरथ बसंत की शायरी, वासुदेव मोही की गज़ल, गोवर्धन शर्मा घायल की शायरी, लक्ष्मण भाटिया, लक्ष्मण दुबे, पिछले 10 सालों में सिंधी बाल कविता का विकास, खीयलदास फानी की शायरी, हरूमल सदारंगानी 'खादम' की कविताएँ, सिंध जो अजीम शायर 'शेख अयाज' हरी दिलगीर की शायरी के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। वर्ष 2022 में सिंधी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों की सूची

क्र.सं	पुस्तक का शीर्षक	लेखक का नाम	विधा
1	ख़वाबनि जा सिलसिला	राजू रंगनानी	शायरी
2	पेपर पड़िहयां	गीता प्रदीप रूपानी	शोधकार्य
3	नओं क़दम	ओकेश कुमार खत्री	कविता
4	मगरमच्छ	अनुवादक– अनीशा लालचंदानी	कहानी
5	आईनो अहिसासनि जो	मंजू लखानी	कविता
6	बन्नी जो लोकरंगु	कलाधर मुतवा	निबंध
7	हीअ आहे दुनियां	दया लालचंदांनी	कहानी
8	शहीद हेमू कालानी	हेमू कालानी	हेमू कालानी की जीवनी
9	रात नूरानी	जगदीश लच्छानी	कविता
10	शाह लतीफ़	चुन्नीलाल श्यामलाल वाधवानी	कविता

11	कलयुग जो कृष्ण ऐं कंसु	दीपावली मनोहर सदारंगानी	कहानी
12	वारीअ मुठि	मनीष देवनानी	भजन
13	भाभी	अनुवादक– शोभा लालचंदानी	नाटक
14	सिंधियत जा रंग	डॉ. कमला गोकलाणी	शोधकार्य
15	अहसासन जी गूंज	नामदेव लाडला	कविता
16	दर्द जो रिशतो	अमर गोपलानी	उपन्यास
17	गंगा लहरी	शालनी सागर	कविता
18	जिन नाउ क्यों रोशन	नंद मनसुखानी	निबंध
19	लाथम कसु कलूब ता	खेमन मूलानी	साहित्यिक लेख
20	सिंधी बाल नाटक	जगदीश लच्छानी	नाटक
21	त पोई छा प्रोबलम आहे	अमर गोपलानी	नाटक
22	द इंटेलेक्चुअल	एम. कमल	नाटक
23	कविताअंनि जो झरनों	प्रदीप टिलवानी	कविताएं
24	मगरमच्छ	भगवान अटलानी	कहानियां
25	आखरी इज़हार	दयाल आशा	साहित्य निबंध
26	औरत जो वजूद	डॉ. कल्पना चेलानी	कविता
27	पंहिजां पाछा	भगवान बाबानी	ग़ज़ल
28	सुहिणा सिंधी मज़मून	चंपा चेतनानी	निबंध
29	सिंधी की लोकप्रिय कहानियां	सं. रविप्रकाश टेकचंदानी	कहानी
30	रूहानी रसगुला	लिप्यांतर– नरेश आहूजा 'शांत'	कविताएं
31	सिंध डाक	अशोक कुमार छाबड़िया	डाक टिकट का संकलन
32	रोशन हस्ताक्षर	प्रो. रमेश लोहणा	समीक्षा

33	सिंधी पहाका ऐं इस्तिलाह	माया बसतदाणी	पहाका
34	रूमी	देवी नागरानी, शबीर कुंभर	उद्धरण
35	सुपुनो सिंधु जो	बी. डी. बजाज	कविता संग्रह
36	टि–पताई	निरंजन आरराणी	नाटक
37	टुटल पर	अनुवादक– चैनलाल आहूजा	उपन्यास
38	हस्त–मुद्रा विज्ञान चिकित्सा	जयरामदास दासाणी	योग–किताब
39	सिंधी सवालनि जी छबी	भविष्या सदारंगानी	संवाद
40	सड़िया मथे सचु	किरन परियाणी 'अनमोल'	कविता
41	सिंधी भगति परंपरा	डा. हूंदराज बलवाणी	शोध लेख
42	सिंधी नसुर जी तारीख	प्रो. मंघाराम उधाराम मल्काणी	साहित्य
43	सिंधीयत जी सूरहान	कोमल सुखवानी (संगीता)	कविता
44	पखा ऐं पंहवार, ड्ठिे मूं ड्ींहं थिया	वीना शृंगी	यात्रावृत्तांत
45	कृतित्व	डा. रमेश लुहाना	समीक्षा
46	छा खुश्बूइ जो ही गुलशन आ	श्रीमती देवी नागरानी	कविता
47	बरसात जूं बूंदूं	श्रीमती प्रिया सितपाल	कहानी संग्रह, लेख
48	अचो बचायूँ सिंधी भाषा	श्री. हासानंद सतपाल	कविता

49	आछरी माछरी	अनुवादक– रमेश एस. लाल	उपन्यास
50	माउ माटेली	जीवन वाधवानी	कहानी, गीत और ग़ज़ल
51	गुम थियल टहिक	हरीश करमचंदानी	कविता
52	हुंदराज बलवानीअ जा चूंद बाल नाटक	हूंदराज बलवानी	ड्रामा
53	मानव सेवा ही माधव सेवा	आसूदो छबलदास लच्छवाणी	नैतिक शिक्षा
54	नूरी	हनी खिलवाणी	निबंध
55	बेवस	चंद्रप्रकाश दादलानी	साहित्य
56	अदबी मनठार	मुरली गोविंदाणी	निबंध
57	वक्त जो चकरो	कमला बुटाणी	कहानी
58	श्री झूलेलाल वरूणु अवतारू	बंसी धमेजा	धार्मिक ग्रंथ
59	चूंड़ बाल गीत	महेश लालचंदाणी	गीत
60	आख़िरी इजहार	डॉ दयाल आशा	शोधकार्य
61	लाथम कसु क़लूब तां	खीमन यू मूलानी	साहित्यिक निबंध
62	भावनाउनि जूं गहिरायूं	डॉ दक्षा उधाणी	कविता
63	काराणीअ जूं कच्छी कहाणियूं	प्रो. रमेश लुहाणा रूघवाणी	कहानी
64	कोमल	श्री बंसी धमेजा डॉ विद्या नावानी	लघु उपन्यास

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह सहजता से कहा जा सकता है कि भारत में वर्तमान में सिंधी भाषा में लिखित, रचित साहित्य संपदा प्रशंसनीय मात्रा में उपलब्ध होती है। आशा है सुधी पाठक इस उपलब्ध सामग्री का भरपूर आनंद लेंगे।



20

हिंदी आलोचना



कुमार वीरेंद्र

आलोचना, साहित्यिक पत्रकारिता, समकालीन साहित्य, समकालीन विमर्श में विशेष अभिरुचि। प्रकाशित कृतियाँ–'अमृत राय : सृजन एवं चिंतन', 'आदिवासी विमर्श और हिंदी साहित्य', 'छायावादयुगीन कविता पुस्तक समीक्षा', 'हिंदी का भविष्य : भविष्य की हिंदी', 'कहे बिन रहा न जाए'। संप्रति : एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

कोरोना–संकट से उबरने के बाद समाज ने अपनी जीवनशीलता के उदाहरण प्रस्तुत किए और साहित्य ने अपनी रचनाशीलता के। सन 2022 में साहित्य की विभिन्न विधाओं में विपुल लेखन–प्रकाशन इसके प्रमाण हैं। वैसे तो एक वर्ष का कालखंड छोटा होता है, पर समाज, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में हुई बहुतेरी हलचलों के संवेदनागत विस्तार से उक्त कालखंड आगामी कालखंडों को प्रभावित करता है और पिछले कालखंडों से प्रेरणा या सबक लेता है। यही कारण है कि एक ही कालखंड में कम से कम तीन पीढ़ियाँ एक साथ लेखनरत रहती हैं। इस लेखन में आलोचनात्मक साहित्य का एक ठीक–ठाक हिस्सा होना स्वाभाविक है। इस हिस्से को देखकर यह मालूम होता है कि महत्वपूर्ण और अच्छी रचनाओं की तो चर्चा हुई ही है, कुछ औसत रचनाओं को भी अकारण महत्व दिया गया है। औसत रचना या कृति को बढ़ा–चढ़ाकर देखने–बताने के पीछे कई कारण हैं। इन कारणों की पड़ताल कहीं अन्यत्र करूँगा, फिलहाल यहाँ वर्ष 2022 की 'हिंदी आलोचना' का सर्वेक्षण किया जाए।

आलोचना करते हुए रिश्तों और संबंधों की परवाह न करने वाले आलोचक, डायरी लेखक और कवि मलयज असमय सन 1982 में दिवंगत हो गए। छठे दशक के बाद के अत्यंत महत्वपूर्ण कवि आलोचक मलयज की आलोचना में रचनात्मकता हावी रही है। अपनी आलोचना में उन्होंने रचना के साथ रचनाकार की अनुभूति को भी खास माना और तब कोई निष्कर्ष दिया। सन 2022 में तरुण ने मलयज के चुनिंदा आलोचनात्मक लेखों को संकलित कर 'रचना से संवाद' नामक पुस्तक संपादित की है। मलयज की आलोचना–दृष्टि को समझने के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। पुस्तक इसका स्पष्ट पता देती है कि मलयज रचनाकारों की रचनाओं का मूल्यांकन करने से पहले रचनाकारों का परिवेशगत अध्ययन करने के हिमायती रहे हैं, उनकी प्रकृति और व्यवहार का अध्ययन करते रहे हैं। वास्तव में, उनके लिए आलोचना सिर्फ़

कविता या रचना से संभव नहीं, वरन उसके लिए कवि की मनःस्थिति की जानकारी होना भी जरूरी है। इसलिए मलयज चाहते रहे हैं कि रचना के लिखे जाने के समय उनकी यानी रचनाकारों की मनःस्थिति का अध्ययन भी हो। यही कारण है कि 'सरोज स्मृति' कविता की आलोचना करते समय मलयज 'दुख' के साथ उस अनुभूति का भी अध्ययन करते हैं जिससे सरोज की स्मृति निराला के मन में जागी। इसके माध्यम से मलयज संपूर्ण छायावादी कविताओं एवं कवियों के भीतर पैठी 'दुख' की उस अनुभूति का अध्ययन आवश्यक समझते हैं जिसने एक ही समय में 'दुख' के आयामों को परिवर्तित किया। तरुण ने पुस्तक की भूमिका में रेखांकित किया है कि 'समीक्षा के लिए रचना की तह तक' उसकी आत्मगत सत्ता तक पहुँचना और रचनाकार के परिवेश को जानना मलयज ने संभवतः मुक्तिबोध से ही सीखा हो। मलयज मुक्तिबोध के कलात्मक चिंतन की इस बात से भी गहरे प्रभावित थे कि सार्थक भावुकता, वृथा बौद्धिकता से समीक्षा के लिए अधिक कारगर है।'

संतोष कुमार चतुर्वेदी के संपादन में वर्ष 2022 में प्रकाशित पुस्तक 'मुक्तिबोध विमर्श और पुनः पाठ' के माध्यम से मुक्तिबोध की रचना और आलोचना प्रक्रिया को समकालीन संदर्भों में देखने–परखने का प्रयास किया गया है। असल में मुक्तिबोध ऐसे जरूरी कवि हैं, जिनको छोड़कर हिंदी कविता की विकास–यात्रा मुकम्मल नहीं हो सकती। पुस्तक में नरेश सक्सेना ने एक बातचीत के क्रम में कहा है कि 'मुक्तिबोध किसी भी स्थिति या अनुभव को उसकी संपूर्णता में देखने की कोशिश करते थे। उनकी कविताएँ प्रायः लंबी हो जाती थीं क्योंकि जीवनानुभव और उनसे जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं और शक्तियों से उसे जोड़ने में कविता अपने मूल विचार और अनुभव के नाभिक से बहुत दूर की परिधियों पर चली जाती थी।' नरेश सक्सेना का कहना है कि वे मूल विचार से दूर चले जाते थे इसलिए अभिव्यक्ति में 'गैप' और 'उलझाव' दिखाई देता था। राजेंद्र कुमार का कहना है कि 'जीवन की सच्ची महत्ता इस बात में है कि हम मानव की केंद्रीय प्रक्रियाओं के अविभाज्य और अनिवार्य अंग बनकर जिएँ। क्योंकि महत्ता का यदि कोई सामाजिक उद्देश्य न हो, तो ऐसी महत्ता अन्ततः व्यक्ति को निर्जीव ही बनाती है। मुक्तिबोध अपने इस ख्याल पर बल देते हैं, ''चाहे प्रगतिवादी हो, चाहे प्रयोगवादी, जिसने भी उच्च–मध्य–वर्ग की सफेदपोश भद्रता के महत्व की कुर्सियों पर आराम किया कि वह गया, मर गया।'' पुस्तक में गोपेश्वर सिंह, वागीश शुक्ल, प्रणय कृष्ण, कृष्ण मोहन, रामजी राय, बलराज पांडेय, सेवाराम त्रिपाठी, नीलकांत, कँवल भारती, हितेंद्र पटेल, विनोद तिवारी, नंद किशोर आचार्य आदि ने मुक्तिबोध के विभिन्न पक्षों पर महत्वपूर्ण आलोचनात्मक लेख लिखे हैं। मुक्तिबोध की मनोभूमि, आत्मगत सत्ता, परिवेशगत अनुभूति, मुक्ति–स्वप्न आदि की पड़ताल करने के लिए यह पुस्तक सहयोगी साबित होगी और हिंदी आलोचना समृद्ध होगी।

कुछ आलोचकों ने मुक्तिबोध की इस बात के लिए आलोचना की है कि उनकी कविताओं में दुहराव बहुत है। विस्तार और दुहराव उनकी कविताओं के दोष हैं और

कवि के अवगुण। इस वर्ष प्रकाशित आलोचनात्मक कृति 'मुक्तिबोध की लालटेन' में आलोचक अपूर्वानंद 'दुहराव' को अवगुण या दोष नहीं मानते। अपूर्वानंद का मत है कि 'दुहराव एक अनिवार्य शिक्षाशास्त्रीय युक्ति या पद्धति है। दुहराव और स्मृति का भी गहरा रिश्ता है। मुक्तिबोध में विषय, बिंब, प्रतीक लौट–लौटकर आते हैं। भाव भी और विषय भी।' अपूर्वानंद प्रस्तावित करते हैं कि 'इसे इस तरह भी देखना चाहिए कि वे अपने पाठक का संवेदनात्मक प्रशिक्षण कर रहे हैं। उसके लिए आवृत्ति, पुनरावृत्ति आवश्यक है।' विस्तार को भी उनकी कविताओं का दोष माना गया कुछ लोगों द्वारा। अपूर्वानंद का सवाल स्वाभाविक और महत्वपूर्ण है कि 'मुक्तिबोध को क्या सिर्फ उनकी लंबी कविताओं के माध्यम से ही पढ़ा जाए? उनकी बाकी कविताओं का क्या करें?' और फिर यह भी प्रश्न है कि 'लंबी कविताओं को भी क्या किसी एक केंद्रीय, मुख्य भाव की अभिव्यक्ति मानकर पढ़ें?' असल में मुक्तिबोध मनुष्यता को लिखते हैं। बकौल अपूर्वानंद 'मुक्तिबोध की कविताएँ हों या उनकी कहानियाँ, उनमें साधारण जिंदगी जीते हुए और उसके टुच्चेपन से जूझते हुए अपने भीतर विश्व–आत्मा विकसित करने के संघर्ष के महान दृश्य हैं। उस संघर्ष में सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत संघर्ष मिले हुए हैं।' श्रद्धा में जो मनुष्यता है, वह मुक्तिबोध को पर्याप्त नहीं लगती। वह आधुनिक गांधी–युग की ही एक वस्तु है। उसमें भाववाद, रहस्यवाद, आदर्शवाद, मानवतावाद का मिश्रण है। मुक्तिबोध को उससे संतोष नहीं। अहिंसा से लेकर कण–कण में चेतन का दर्शन मुक्तिबोध को रास नहीं आता। अपूर्वानंद की मानें तो 'लेकिन यह भी विडंबना ही है कि 'अँधेरे में' के सबसे अधिक दुविधाग्रस्त क्षण में जो बल देते हैं और आगे बढ़ने की हिम्मत, वे गांधी ही है।' अपूर्वानंद की यह स्थापना ठीक जान पड़ती है कि 'मुक्तिबोध की कविताएँ स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात का दहकता इस्पाती दस्तावेज़ भर नहीं हैं।' पूर्वा के हवाले से अपूर्वानंद की मान्यता सटीक है कि 'मुक्तिबोध के पास एक खुर्दबीन और एक दूरबीन, दोनों हैं। वे जिंदगी को बहुत गौर से देख रहे होते हैं, मानों उसमें डूब गए हों, उसके विस्तार की गहराइयों में कि अचानक उन्हें झटका लगता है और वे वापस इस साधारण जीवन में लौट आते हैं।'

छायावाद के प्रमुख आलोचकों में नंददुलारे वाजपेयी का भी नाम सम्मिलित है। आचार्य वाजपेयी न केवल छायावाद के पक्षधर रहे बल्कि छायावादोत्तर काव्यधाराओं–विशेषकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि को भी अपनी आलोचना–यात्रा में शामिल किया। एक तरफ उन्होंने 'तार–सप्तक' की निर्मम आलोचना की तो दूसरी ओर 'गोदान' के शिल्प पर भी गंभीर आलोचनात्मक दृष्टि डाली। उन्होंने अपनी आलोचना–यात्रा 1930 से शुरू की और 1967 तक जारी रखी। कुल 37 वर्षों की उनकी यह यात्रा जितनी चर्चित और बहसतलब रही, उतनी ही विवादास्पद भी। वरिष्ठ आलोचक विजय बहादुर सिंह ने छायावाद से संबंधित नंददुलारे वाजपेयी के विभिन्न आलोचनात्मक लेखों को संकलित–संपादित कर 'छायावाद और उसके कवि' नामक

एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित कराई है। यह पुस्तक नंददुलारे वाजपेयी की मृत्यु की आधी शती बीतने के बाद प्रकाशित हुई है। विजय बहादुर सिंह ने ठीक ही लिखा है कि 'शुक्लोत्तर आलोचना' के इस सर्वप्रथम आलोचक आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने हिंदी में स्वच्छंदतावादी आलोचना का प्रवर्तन किया। यह पुस्तक इसी का एक जीवंत दस्तावेज है।'

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने छायावाद की वृहत्–त्रयी की स्थापना कर प्रसाद, निराला और पंत की काव्य–प्रतिभा की युगातंरकारी प्रतिष्ठा की थी। बाद में परिधि का विस्तार करते हुए महादेवी वर्मा को भी इसमें शामिल किया था। आचार्य वाजपेयी ने जयशंकर प्रसाद को पर्याप्त महत्व दिया और तीन–चार गंभीर आलोचनात्मक लेख प्रसाद और कामायनी पर लिखे।

सर्वेक्षित–समीक्षित वर्ष में प्रसाद पर स्वतंत्र कार्य करुणाशंकर उपाध्याय ने किया है। 'जयशंकर प्रसाद : महानता के आयाम' शीर्षक 463 पृष्ठों की पुस्तक में डॉ. उपाध्याय ने दावा किया है कि 'प्रस्तुत ग्रंथ महाकवि जयशंकर प्रसाद के संपूर्ण साहित्य के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण और उनका अपेक्षित स्थान दिलाने के लक्ष्य को लेकर संकल्पित है।' डॉ. उपाध्याय की शैली शोधपरक आलोचना की है और कसौटी भारतीय अस्मिता–बोध और विश्व–मनुष्यता का मंगल है। डॉ. उपाध्याय ने प्रसाद के पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रभाकर श्रोत्रिय की पुस्तक 'जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता' (1990) को आधार बनाया है और प्रसाद की महानता के आयामों को रेखांकित करने के लिए विश्व के विभिन्न महाकवियों से तुलना प्रस्तुत की है।

भक्तिकालीन कविता या कहें कि पूरा भक्तिकाल हिंदी–आलोचना के केंद्र में रहा है। भक्तिकाल को नए संदर्भों में विवेचित–विश्लेषित करने में रुचि लेने वाले आलोचकों की संख्या लगातार बढ़ रही है, साथ ही भक्तिकालीन कवियों को देखने का नजरिया भी परिवर्तित हो रहा है। दलपत सिंह राजपुरोहित ने 'सुंदर के स्वप्न' (आरंभिक आधुनिकता, दादूपंथ और सुंदरदास की कविता) नामक किताब के माध्यम से नई दृष्टि से भक्ति–मीमांसा की है। दादू के शिष्य सुंदरदास (1596–1689) शिक्षित निर्गुणपंथी संत थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'संत तो ये थे ही पर कवि भी थे।' पुस्तक में दलपत सिंह राजपुरोहित ने सुंदरदास के व्यक्तित्व, कृतित्व और दादूपंथ के विकास के ऐतिहासिक संदर्भों पर विचार किया है, साथ ही उनके शिल्प, काव्य–दृष्टि और आध्यात्मिक विशिष्टताओं का भी विश्लेषण किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने भक्ति के लोकवृत्त और हिंदी की आरंभिक तथा अपनी आधुनिकता के तत्वों को भी रेखांकित किया है। दलपत सिंह राजपुरोहित का मत है कि 'यूरोकेंद्रित आधुनिकता के आने से पहले भी भारत में अपनी आधुनिकता रही है जिसे देशभाषा साहित्य को पढ़े बिना नहीं समझा जा सकता।' श्री राजपुरोहित इस 'आरंभिक' आधुनिकता के अनेक रूपों को मध्यकाल में खोजने का उपक्रम करते हैं। कविता द्वारा साहित्यिक रूप से सुंदर एवं

सुरुचिपूर्ण संत समुदाय को रचने का 'स्वप्न' सुंदरदास ने देखा था। सुंदरदास के द्वारा 'सुंदर' ब्रह्म के आत्मानुभव की साधना के लिए लिखी गई कविता और उनके समय का अध्ययन इस पुस्तक में है। इसे गंभीर आलोचनात्मक कृति माना जाना चाहिए।

निर्गुण धारा में प्रखर वाग्मिता के कवि हुए कबीर। कबीर की वाणी टैगोर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पारसनाथ तिवारी, रामकुमार वर्मा, पुरुषोत्तम अग्रवाल जैसे अध्येताओं से लेकर ग्रामीण जनता तक को आकर्षित करती रही है। उर्दू के मशहूर लेखक मुजीब रिज़वी भी कबीर पर आसक्त रहे हैं। वैसे तो जायसी और पद्मावत पर अपने महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कार्य के लिए वे ज्यादा जाने जाते हैं। लेकिन इस बरस उनकी पुस्तक 'पीछे फिरत कहत कबीर–कबीर' हिंदी में लिप्यंतरित होकर आई है। यह पुस्तक कबीर के अतिरिक्त जायसी, मीर अनीस, फ़िराक़, तुलसीदास, अमीर खुसरो सहित अन्य कवियों–लेखकों पर उनके निबंधों पर आधारित है। मुज़बी रिज़वी कबीर के संदर्भ में कहते हैं–'कबीरदास की भगती जज़्बा–ए–इश्क की कारफ़र्माई (सक्रियता) है लेकिन वह एक साथ योगी, भगत और राह–ए–इश्क़ के राही हैं।' कबीर को एक साथ योगी, भगत और राह–ए–इश्क़ के राही के रूप में संबोधित कर मुजीब रिज़वी ने कबीर को गोरखनाथ या कहें कि नाथ और सिद्ध, अमीर खुसरो और जयदेव के करीब बताने की कोशिश की है। पुस्तक में तुलसीदास और अनीस की अच्छी तुलना की गई है। पुस्तक में प्रेमचंद के उपन्यास जिसका नाम उर्दू में 'बाजार–ए–हुस्न' है और हिंदी में 'सेवा–सदन' पर गहनतापूर्वक विचार किया गया है और दोनों के संवेदनागत अंतरों को बहसतलब बनाया गया है। शेर नहीं ज़िंदगी और मोहब्बत के निकात पर तब्सरा करने वाले फ़िराक़ गोरखपुरी की शायरी की खूबसूरती को हिंदी–संस्कृत के विभिन्न कवियों के करीब रखकर देखने–परखने का अंदाज इस पुस्तक में अद्भुत है। मुजीब रिज़वी लिखते हैं 'कबीरदास के 'सबद' का पर्याय फिराक के यहाँ संगीत है। कबीर के महासुख में राग के सफ़ेद फूल खिलते हैं : सत–सरूप राग जहाँ फूले साईं करत बहारा हो। फ़िराक़ की आँखें कहानी सुनाती है : संगीत की सरहदों पे खिलने वाले, फूलों की कहानियाँ रसीली आँखें।' तुलसी और सूर से भी फ़िराक़ ने बहुत कुछ लिया है, उन सब पर मुजीब़ रिज़वी ने गंभीर आलोचनात्मक दृष्टि डाली है। इस महत्वपूर्ण पुस्तक में रिज़वी राधा और कृष्ण के प्रसंगों की तलाश करते हुए टैगोर की 'गीतांजलि' तक पहुँचते हैं और दिखाते हैं कि 'गीतांजलि' पर कबीर किस तरह हावी हैं। वास्तव में यह पुस्तक भारतीयता को समझने में अत्यंत मददगार है।

अवधेश प्रधान ने एक महत्वपूर्ण पुस्तक में 'सीता की खोज' की है। सीता अद्वितीय चरित्र हैं और किसी स्थान में बँधी नहीं हैं। अवधेश प्रधान ने सीता से जुड़े स्थल जनकपुर की यात्रा भी की और इसका जिक्र किया है अज्ञेय ने अपने समय में सीता से जुड़े स्थलों की यात्रा की थी – 'जय जानकी जीवन यात्रा'। अवधेश प्रधान

ने वाल्मीकि की सीता, महाभारत की सीता, भास की सीता, कालिदास की सीता, भवभूति की सीता, तुलसीदास की सीता और लोकगीतों की सीता को लेकर विमर्श किया है। अवधेश प्रधान शब्दमयी सीता की खोज वाल्मीकि से शुरू कर लोकगीतों पर लाकर पूरी करते हैं। सीता के जन्म, पूर्वजन्म, जनकपुर में आविर्भाव, बचपन, विवाह, राम और लक्ष्मण के साथ वनवास, अपहरण, अशोक वाटिका में हनुमान से भेंट, अग्निपरीक्षा, अयोध्या में वापसी, लोकापवाद और निष्कासन, वाल्मीकि आश्रम में लव–कुश के साथ बारह बरस तक तपस्या और फिर भूमिप्रवेश जैसे प्रसंगों को विभिन्न कालखंड के रचनाकारों ने किस रूप में रेखांकित किया है, इसकी विस्तारपूर्वक समीक्षा करने में अवधेश प्रधान का श्रम सार्थक रहा है। कुछ लोगों को लगता है कि सीता के व्यक्तित्व में दब्बूपन है क्योंकि वे कहीं प्रतिवाद नहीं करतीं। इस आशंका को अवधेश प्रधान निर्मूल करते हैं, मजबूत तर्क प्रस्तुत करते हैं कि 'राम की विजय में सीता के सत्याग्रह की बड़ी भूमिका है। राम के साथ वानर–भालुओं की सेना थी, सुग्रीव और विभीषण, हनुमान, जाम्बवान और अंगद जैसे मंत्री और महावीर थे, लक्ष्मण जैसा तेजस्वी शूरवीर भाई था। सीता का प्रतिरोध तो एक अकेले व्यक्ति का सत्याग्रह था। उनके पास तो बस अपने चरित्र का बल था। राम की विजय सीता के इस एकाकी सत्याग्रह पर निर्भर थी। सीता यदि रावण के आगे समर्पण कर देतीं तो राम का सारा पुरुषार्थ, सारा बल–विक्रम, सारा सैनिक बल धरा रह जाता। सीता राम की शक्ति हैं। सीता सुरूजवा के जोति–जिस पुरखिन ने यह गीत रचा होगा, वह सीता और राम के चरित्र का मर्म जान गई थी। अवधेश प्रधान ने 'सूरसागर' और 'पद्मावत' में भी सीता से जुड़े स्थलों को चिह्नित किया है। आलोचना के विकास में यह पुस्तक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगी।

इस वर्ष हरिशंकर शर्मा ने पं. राधेश्याम कथावाचक–लिखित 'राधेश्याम रामायण' के विविध आयामों को रेखांकित करने वाली एक पुस्तक लिखी है, जिसमें नवजागरण और राधेश्याम रामायण, राधेश्याम रामायण में जीवन–मूल्य, कथावाचक जी की नारी विषयक अवधारणा सहित अन्य अध्यायों के माध्यम से हरिशंकर शर्मा ने राधेश्याम कथावाचक और उनकी रामायण के बहुविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। खड़ी बोली में लिखित 'राधेश्याम रामायण' को आधार बनाकर कई प्रदेशों में फुटकर रचनाएँ की गई हैं और रामलीला का मंचन भी होता है।

पुरुषोत्तम अग्रवाल की एक महत्वपूर्ण किताब आई है 'पद्मावत : मानुस पेम भएउ बैकुंठी'। यह किताब पहले अंग्रेजी में आई थी, परितोष मालवीय ने हिंदी में अनुवाद किया है। किताब की आंतरिक साज–सज्जा अद्भुत है। हर अध्याय या उप–अध्याय के प्रारंभ और अंत में हिरामन तोते का रेखांकन है। जगह–जगह 'पद्मावत' के विभिन्न प्रसंगों, दृश्यों, चरित्रों, प्रतीकों आदि से संबंधित रेखांकन हैं। रेखांकनयुक्त शिल्पगत सौंदर्य देवदत्त पटनायक का सहयोग लिया गया है। नवोन्मेषकारी विचार और

सृजनात्मक आलोचकीय मेधा के धनी पुरुषोत्तम अग्रवाल ने 'पद्मावत' को भारत के आरंभिक आधुनिक काल की रचना बताया है, जिसके केंद्र में एक स्त्री है, एक ऐसा काव्य जिसमें चरित्रों का मूल्यांकन उनके व्यक्तिगत कार्यों और गुणों के अनुसार होता है, उनकी धार्मिक, जातिगत या सामाजिक पहचान से नहीं। बकौल परुषोहोत्तम अग्रवाल 'जायसी का पद्मावत मनुष्य की सहज कामेच्छा से आंतरिक दिव्यता तक की उड़ान को अनुभव करने का निमंत्रण है।' जायसी और पद्मावत पर रामचंद्र शुक्ल से लेकर वासुदेवशरण अग्रवाल, माताप्रासाद गुप्त, विजयदेव नारायण साही, रघुवंश, कन्हैया सिंह, मुजीब रिजवी आदि ने गंभीर आलोचनात्मक कार्य किया है। इसी कड़ी में पुरुषोत्तम अग्रवाल की इस पुस्तक को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। जायसी को लेकर आलोचना की परंपरा बनाई जाए तो यह कृति प्रमुखता से संबद्ध होगी। वैसे तो यह किताब सिर्फ आलोचना नहीं है, भारत की अपनी उपनिवेश पूर्व, आधुनिकता की सौंदर्य–चेतना और काव्यबोध से संपन्न एक क्लासिक कृति का रचनात्मक अवगाहन है। कवि जायसी अपनी शारीरिक विकृतियों से भली–भाँति परिचित थे और उन्होंने कविता का इस्तेमाल एक औषधि के रूप में किया। पुरुषोत्तम अग्रवाल का यह प्रश्न वाजिब है कि 'क्या हम अपनी आत्मा और मस्तिष्क की बढ़ती हुई विकृतियों का सामना करने के इच्छुक हैं? क्या हमारे पास कोई नैतिक और सौंदर्यपरक औषधि है, अथवा हम सिर्फ एक खंडित सामाजिक मानस, मूर्खतापूर्ण सोच और हिंसक व्यवहार से भरा समाज बनने की ओर ही अग्रसर होते रहेंगे?' पुरुषोत्तम अग्रवाल ने 'पद्मावत' पर आधारित होने का दावा करनेवाली संजय लीला भंसाली की 2018 में आई फिल्म के पीछे की राजनीति, अर्थनीति और मूल कथा को बायपास करने की चालाकी को भी उद्घाटित किया है।

हिंदी आलोचना के क्षेत्र में 'नवजागरण' की बहसें पुरानी हैं और नई भी। रामविलास शर्मा, नामवर सिंह के बाद वीर भारत तलवार ने इस बहस की 'रस्साकसी' को और जीवंत बना दिया। नवजागरण को लेकर होने वाली बहसों–विमर्शों में जिन आलोचकों ने सशक्त हस्तक्षेप किया, उनमें वरिष्ठ आलोचक शंभुनाथ और कर्मेन्दु शिशिर भी सम्मिलित हैं। सन 2022 में इन दोनों ने नवजागरण को केंद्र में रखकर अपनी आलोचकीय दृष्टि का पुनः परिचय देते हुए महत्वपूर्ण किताबें हिंदी–पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की हैं। 'भारतीय नवजागरण : एक असमाप्त सफर' में शंभुनाथ ने पश्चिम और पूर्व, धर्म और बुद्धिपरकता, परंपरा और आधुनिकता, राष्ट्र और हाशिया के बीच असमाप्त संवाद की गंभीर विवेचना की है। बांग्ला नवजागरण की लहरें, महाराष्ट्र : औपनिवेशिक उदारवाद और राष्ट्रीय प्रतिरोध, गुजरात प्रबोधन : सुधार बनाम संरक्षण, तमिल नवजागरण और पेरियार ई.वी. रामास्वामी, आंध्र प्रदेश : तेलुगु आत्म पहचान और राष्ट्रीय उदारवाद, केरल : संरक्षणवाद और सांस्कृतिक प्रतिरोध, कन्नड़ जातीय जागरण और नवोदय जैसे अध्यायों के माध्यम से शंभुनाथ दिखाना चाहते हैं कि न

सिर्फ बंगाल में नवजागरण की कई अंतर्धाराएँ हैं बल्कि हिंदी क्षेत्र, गुजरात, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक आदि में भी नवजागरण की स्थानीय खूबियाँ हैं। लगभग सवा सौ वर्षों का वह काल सांस्कृतिक उथल–पुथल से भरा था, उस दौरान के तमाम विवेकवान और हिम्मती व्यक्तियों के दार्शनिक मत–मतातंरों और निर्भीक बहसों से समाज व्यापक स्तर पर आंदोलित था–इन सबकी वैचारिक छवियाँ इस ग्रंथ में हैं। नवजागरण के उच्छेदवादी और उत्तर आधुनिक दृष्टिकोणों से टकराते हुए उसका एक भारतीय परिप्रेक्ष्य निर्मित करने वाली इस आलोचना ग्रंथ में आलोचक इस महत्वपूर्ण प्रश्न से भी जूझते हैं कि 'भारतीय जीवन में नवजागरण एक टूटा इंद्रधनुष है या एक असमाप्त सफर?'

'नवजागरण और संस्कृति', 'नवजागरण की निर्मिति' और 'नवजागरण के शिल्पी' शीर्षक से तीन पुस्तकों के जरिए वरिष्ठ आलोचक कर्मेंदु शिशिर ने हमारे निकटतम अतीत के आईने यानी हिंदी नवजागरण को तब और अब के विभिन्न संदर्भों में देखा–परखा है। कर्मेंदु शिशिर ने भारतीय नवजागरण के कई ऐसे इलाकों का भी भ्रमण किया है, जिनमें घूमने–रमने में हिंदी आलोचकों ने अब तक उतनी दिलचस्पी नहीं ली है। उन्होंने नवजागरण के विमर्शकारों–काशी प्रसाद जायसवाल, सुरेश सलिल, सुधीर विद्यार्थी, कँवल भारती आदि की भी शिनाख्त की है। नवजागरण की अवधारणा पर बात करते समय यह बात अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि यह कोई स्थिर तथा गतिहीन प्रक्रिया नहीं थी। कर्मेन्दु शिशिर का यह निष्कर्ष उचित है कि 'इसमें निरंतर विकास होता रहा है और इसका विचार फलक लगातार विस्तृत होता गया है।'

सुमन केशरी की किताब आई है 'कविता के देश में' पुस्तक में अठारह कविताओं और दो गीतों की विस्तृत व्याख्या की गई है और सूक्ष्म से सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। पाठ–केंद्रित आलोचना के लिहाज से यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। सुमन केशरी ने कविताओं में सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन से संबद्धता भी खोजी है। पुस्तक का फलक बड़ा है–कबीर से लेकर नूतन डिमरी गैरोला तक। यानी मध्यकाल से लेकर आज तक की कविताओं का आस्वाद तो मिलेगा ही विभिन्न कालों की विचारशीलता और चेतना के स्तर की थाह भी मिलेगी। पहले कविता पढ़िए, फिर उसका विश्लेषण। कवि और पाठक संग साथ रह सकते हैं तो आलोचक और पाठक क्यों नहीं? इस पुस्तक में तीनों का नैकट्य है–कवि, आलोचक, पाठक। पुस्तक की भाषा पाठक को अपने से जोड़े रखती है, ऐसे में पाठक कविता की संवेदना को महसूस करने में कठिनाई का अनुभव नहीं करता है।

अनिल त्रिपाठी के संपादन में एक अच्छी पुस्तक आई है 'कवि की वर्तनी'। समकालीन कविता के प्रमुख कवि राजेश जोशी पर एकाग्र यह पुस्तक राजेश जोशी के व्यक्तित्व–कृतित्व को समझने के लिए बेहद उपयोगी है। आज की कविता की

विकास–यात्रा बिना राजेश जोशी के संभव नहीं है। उनकी कविताओं में सन अस्सी के बाद की हलचलें दर्ज हैं। राजेश जोशी किस कदर अपनी पूर्ववर्ती कविता से अपने समय की कविता के संबंध को बदलकर रख देते हैं, इसकी तहकीकात इस पुस्तक में की गई है। पुस्तक में राजेश जोशी के गद्य की भाषा की पड़ताल भी की गई है।

जब बात समकालीन कविता की हो या आठवें दशक की कविता की हो तो अरुण कमल की कविता की बात अवश्य होगी। हिंदी के सुधी समीक्षक ओम निश्चल ने अरुण कमल के कवि वैशिष्ट्य को खूबसूरती के साथ रेखांकित करते हुए एक पुस्तक प्रस्तुत की है–'चर्चा की गोलमेज़ पर अरुण कमल'। पुस्तक आलोचना और काव्यास्वाद दोनों रसों का सुंदर संयोजन है। ओम निश्चल ने अरुण कमल की कविता को 'धूमिलोत्तर युवा कविता का विस्तार' बतलाया है। अरुण कमल की कविता का फलक बड़ा है। उम्मीद है ओम निश्चल प्रस्तुत कृति को भविष्य में और वृहद् रूप में लेकर आएँगे।

इस वर्ष नाट्य कृतियों पर केंद्रित आलोचना पुस्तकें कम ही आई हैं, पत्र–पत्रिकाओं में कुछ लेख अवश्य आए हैं। कमलेश सिंह के संपादन में एक पुस्तक आई है 'धर्मवीर भारती का नाट्य गौरव : अंधायुग।' आधुनिक हिदी नाटक के इतिहास में 'अंधा युग' को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अब तक की अवधि में यह हिंदी का एकमात्र ऐसा काव्यनाटक है जो नाट्य विद्या की सार्थकता को सिद्ध करता हुआ विभिन्न भाषाओं और विभिन्न देशों में अनेक बार मंचित हुआ है। विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में इसका अध्ययन–अध्यापन होता है। 'अंधा युग' के कथा–संयोजन, नवनाट्य प्रयोग, मिथकीय चेतना, दृष्टिपरक विश्लेषण, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, युद्ध विभीषिका, आधुनिक त्रासदी, राजनीतिक संदर्भ, मानवीय मूल्य संकट, पशु का उदय, प्रभु की मृत्यु, अश्वत्थामा की पीड़ा, युयुत्सु का मर्म को व्यंजित, विश्लेषित, उद्घाटित करने वाली यह कृति (धर्मवीर भारती का नाट्य गौरव : 'अंधा युग' नाट्यालोचन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण और बहसतलब है।

नीरज खरे लगातार कहानी–समीक्षा लिख रहे हैं। इस वर्ष उनके संपादन में 'हिंदी कहानी वाया आलोचना' पुस्तक आई है, जिसमें तीन खंड हैं (बढ़ते कदमों के निशान, कहानी : नई होने की डगर और कहानी : साठोत्तरी और उत्तर सदी) तथा सत्तर कहानियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन है। मूल्यांकन के लिए प्रस्थान बिंदु है 'उसने कहा था' और आखिरी बिंदु है 'बाजार में रामधन।' पैंसठ पृष्ठों की एक लंबी भूमिका में नीरज खरे ने इस किताब को 'बीसवीं सदी की प्रतिनिधि कहानियों का मूल्यांकन' करार दिया है। बकौल खरे 'अन्य गद्य विधाओं की तरह, कहानी नवजागरणकालीन चेतना को ही आत्मसात करके उपजी विधा है। बीसवीं सदी की अपनी रचना–यात्रा में कहानी ने महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किए।' इस पुस्तक में एक ही व्यक्ति ने एक से अधिक कहानियों का मूल्यांकन किया है। परिणामतः किसी–किसी कहानी का ठीक–ठीक मूल्यांकन नहीं हो पाया है। फिर राधाकृष्ण, शैलेश मटियानी,

अमृत राय आदि की किसी कहानी या कहें कि एक भी कहानी का मूल्यांकन न किया जाना अखरता है। फिर भी हिंदी कहानी के अध्येताओं के लिए यह जरूरी पुस्तक है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' (बसुमती की चिट्ठी) को नीरज खरे ने बीसवीं सदी की प्रतिनिधि कहानियों में क्यों शुमार नहीं किया, यह बात समझ में नहीं आती, जबकि 'फैसला' कहानी को कई आलोचकों ने विमर्श की दृष्टि से स्त्री–सशक्तिकरण की बेहतरीन कहानी माना है। किसी आदिवासी लेखक–लेखिका की क्या कोई भी कहानी मूल्यांकन–योग्य नहीं है? जबकि इस समुदाय की ओर से कहानी की ज़मीन पर ठोस कदम रखे जा रहे हैं। फिर यह भी सवाल है कि आदिवासी जीवन–संघर्ष को केंद्र में रखने वाली कितनी कहानियों को इसमें मूल्यांकन–योग्य समझा गया है? हमें नहीं लगता कि 'हाशिए' को दरकिनार कर 'प्रतिनिधि' का चयन विवेकसंगत समझा जाएगा।

क्या आलोचक को आत्मावलोकन करना चाहिए? क्यों नहीं? आलोचना में आत्मावलोकन की जरूरत पर बल देने वाली एक नवीनतम आलोचना–पुस्तक आई है 'आलोचक का आत्मावलोकन'। यह वरिष्ठ आलोचक गोपेश्वर सिंह की आलोचना पुस्तक है। गोपेश्वर सिंह राजनीति की आलोचना और साहित्य की आलोचना में अंतर किये जाने की माँग करते हैं। उनका कहना है कि 'इधर के वर्षों में साहित्य में आत्मावलोकन की प्रवृत्ति घटी है और साहित्यालोचन राजनीतिक दलों के आरोप–प्रत्यारोप का सहोदर होता गया है।' गोपेश्वर सिंह ने रामविलास शर्मा, नलिनविलोचन शर्मा, विजयदेव नारायण साही, नामवर सिंह, नंदकिशोर नवल आदि की आलोचना–दृष्टि पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है। इन दिनों की आलोचना और वर्तमान शोध की दशा–दिशा पर भी उन्होंने दृष्टि डाली है और समय के जरूरी सवालों को उठाकर उनके उत्तर पाने की कोशिशें की हैं। गोपेश्वर सिंह की यह स्थापना कि 'एक ही समय में एक ही विचारधारा के रचनाकारों में भेद होता है। इसी तरह का भेद आलोचना–लेखन में भी होता है'– जेरे–बहस है।

काशी से प्रभाकर सिंह ने भी 'आलोचना के दायरे' तय किए हैं। आलोचना के दायरे बदले और बढ़े हैं। आलोचना के बदलते विकसित होते दायरे को इस पुस्तक में प्रभाकर सिंह ने बखूबी रेखांकित–विश्लेषित किया है। यहाँ तक कि उन्होंने बाज़ार की भाषा और भाषा के बाजारीकरण पर भी दृष्टि डाली है। हिंदी कविता, हिंदी कहानी, हिंदी उपन्यास के साथ कथेतर गद्य को उन्होंने आलोचना के निकष पर वर्तमान संदर्भों में देखा–परखा है।

तकरीबन दो दशक पहले अंग्रेजी में आई किताब, जिसने बौद्धिक जगत को मथ दिया था, अब हिंदी में आ गई है। वह किताब है आलोक राय की – 'हिंदी राष्ट्रवाद'। पुस्तक में आलोक राय ने उस प्रक्रिया को रेखांकित करने की कोशिश की है, जिस

प्रक्रिया के तहत आधुनिक हिंदी का निर्माण होता है। आलोक राय का मत है कि हिंदी का विकास महज एक भाषा का विकास नहीं है बल्कि उसका संबंध और बड़े मसलों से भी है। हिंदी अगर स्पंदनहीन हो रही है तो इसके क्या कारण हैं? यह किताब इसका उत्तर देती है। वास्तव में यह पुस्तक भारत की भाषाई राजनीति की एक चिंतनपरक, गहन पड़ताल करती है। आलोक राय का बल इस पर भी है कि हिंदी की क्षमता–वृद्धि में अनेक बोलियों और उर्दू का भी योग है।

सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद अमरनाथ ने 'हिंदी आलोचना का आलोचनात्मक इतिहास' लिखा है, जिसमें उन्होंने विभिन्न युगों की आलोचना की आलोचना तो की ही है, विभिन्न प्रकार की आलोचना को भी देखा–परखा है। उन्होंने आलोचना की कुछ नई श्रेणियाँ बनाने की भी कोशिश की है, जैसे–हिंदुत्ववादी आलोचना, लोकधर्मी काव्यालोचना, मीडिया समीक्षा। अमरनाथ हिंदी–उर्दू के विभाजन को कृत्रिम मानते हैं, इसलिए उन्होंने पुस्तक में 'उर्दू आलोचना' का भी एक अध्याय रखा है, इससे आलोचना की परिधि का विस्तार हुआ है। हिंदी आलोचना की विरासत संस्कृत में निहित है, इसलिए पुस्तक का प्रारंभ उन्होंने इस विरासत को सहेजने–समझने से ही किया है। अमरनाथ ने पुस्तक के दसवें सोपान में आलोचना की एक श्रेणी बनाई है–'गांधीवादी आलोचना' और इसके तहत उन्होंने आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, विजयदेव नारायण साही, डॉ. नगेंद्र, देवराज, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, कृष्णदत्त पालीवाल, श्रीभगवान सिंह, रघुवंश, विजयबहादुर सिंह, शंभुनाथ, गोपेश्वर सिंह जैसे आलोचकों को सम्मिलित किया है। इन सभी की कृतियों, वैचारिकता, दृष्टिकोण आदि का विश्लेषण कर डॉ. अमरनाथ ने इन्हें गांधीवादी आलोचक करार दिया है।

हालाँकि इनमें से कई मार्क्सवादी और लोहियावादी आलोचकों को भी डॉ. अमरनाथ ने गांधीवादी आलोचक ही माना है। यह बहस का विषय है। बहस–विवाद की संभावना की आहट पूर्व में ही भाँपकर डॉ. अमरनाथ ने राममनोहर लोहिया पर गांधी के प्रभावों का विस्तृत उल्लेख किया है और लोहियावादी आलोचकों की कोई अलग श्रेणी न बनाकर लोहिया के विचारों से अधिक प्रभावित आलोचकों को भी गांधीवादी आलोचकों की ही श्रेणी में रखा है। इस मान्यता का एक आधार गोपेश्वर सिंह जैसे आलोचकों का यह तर्क भी है कि 'डॉ. लोहिया ने वास्तव में गांधी के विचारों को ही आगे बढ़ाया है।' अवधेश प्रधान और पुरुषोत्तम अग्रवाल जैसे मार्क्सवादी आलोचकों को भी डॉ. अमरनाथ ने गांधीवादी आलोचकों की श्रेणी में ही रखा है। अब तक अलक्षित रही यह प्रस्तावना बहसतलब है।

हिंदी साहित्य में गांधी कहीं व्यक्ति के रूप में उपस्थित हैं, तो कहीं विचार के रूप में और कहीं–कहीं दोनों रूपों में। रामनरेश त्रिपाठी के काव्य 'पथिक', प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' और गिरिराज किशोर के उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' जैसी

कृतियों में गांधी व्यक्ति और विचार दोनों रूपों में दिखाई पड़ते हैं। कहीं–कहीं उनके विचारों के हस्र को भी वर्तमानता के साथ संदर्भित किया गया है, जैसे कि फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' में बावनदास का हस्र।

गांधी के प्रति आकर्षित या उनसे प्रभावित होने वाले लेखकों–रचनाकारों की एक लंबी सूची है, जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, जानकीवल्लभ शास्त्री, सोहनलाल द्विवेदी, भवानीप्रसाद मिश्र, सुमित्रानंदन पंत, हरिवंशराय बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, रामेश्वर शुक्ल अंचल, बालकृष्ण शर्मा नवीन, जैनेंद्र कुमार सहित कई बड़े नाम शामिल हैं। इस तरह गांधी चिंतकों, साहित्यिकों, रचनाकारों के यहाँ बहुविध लक्षित किए गए। बावजूद इसके, हिंदी–आलोचना जगत में गांधी प्रायः अलक्षित ही रहे। जबकि गांधी निश्चित रूप से साहित्य को कुछ नए मूल्यों पर विचार करने का अवसर देते हैं, विभिन्न दृष्टियों के बीच कुछ नए रास्तों की तलाश में सहायता करते हैं, साहित्य, समाज, राजनीति की विभिन्न प्रवृत्तियों को उलट–पलट कर देखने–परखने के लिए मानक उपलब्ध कराते हैं। 'गांधीवाद' पर खूब बातें–बहसें हुई हैं और हो रही हैं, आगे होंगी भी। लेकिन हिंदी आलोचना जगत में 'गांधीवादी आलोचना' की कोई श्रेणी निर्धारित करने में अब तक चौतरफा चुप्पी रही है, जो कि खटकती है। डॉ. अमरनाथ ने 'गांधीवादी आलोचना' की श्रेणी बनाकर चुप्पी तोड़ी है, एक बड़े अभाव की पूर्ति की है।

इस बरस की हिंदी आलोचना की समृद्धि में पत्र–पत्रिकाओं ने भी अपने स्तर से योग दिया है। आजकल, तद्भव, बनास जन, सृजन सरोकार, प्रयाग पथ, सरस्वती, प्रतिमान, आलोचना, वर्तमान साहित्य, लमही, सकालीन जवाबदेही, समयांतर, वनमाली कथा, पक्षधर, अनहद, परिकथा, नया ज्ञानोदय, हंस, कथादेश, पाखी, उद्भावना सहित अन्य पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी आलोचना की परिधि को विस्तृत करने वाले लेख आए हैं।

वास्तव में हिंदी आलोचना को समृद्ध करने और प्रासंगिक बनाए रखने के लिए किए गए सभी प्रयत्न सराहनीय, बहसतलब और विमर्शमूलक हैं। जो प्रयास इन पंक्तियों के लेखक की निगाह में आने से किसी कारण रह गए, उनका महत्व किसी से कमतर नहीं है।

❑❑❑

21

हिंदी उपन्यास



तरसेम गुजराल

कहानी और उपन्यास लेखन में विशेष अभिरुचि। कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, अनुवाद और संपादन की पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। पुरस्कार– 'जलता हुआ गुलाब' उपन्यास पांडुलिपि पर प्रेमचंद महेश सम्मान। 'राख़ और चीलें' कविता संग्रह पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सौहार्द सम्मान, पंजाब भाषा विभाग का शिरोमणि सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित। संप्रति–निरंतर लेखन।

हिंदी उपन्यास ने पाठकों का केवल मनोरंजन ही नहीं किया, मनुष्य की चेतना और संवेदना को विस्तार भी दिया है। उपन्यास मात्र विचार का संग्रह ही नहीं होता कथा के माध्यम से जीवन के उतार–चढ़ाव, हार–जीत का चित्रांकण समाज और समयगत परिस्थितियों में करता है और जाहिर करता है कि कला समाज निरपेक्ष नहीं होती। साल 2022 में हम कुछ ऐसे ही उपन्यासों को अपने सामने पाते हैं।

हृषिकेश सुलभ का उपन्यास 'दाता पीर' 2022 में ही प्रकाशित हुआ। हमारे सामने जो भारतीय मुस्लिम परिवारों की छवि सामने आती है, उसमें हिंदी फिल्म का साया कुछ गहरा ही है। हम उन के जरिये समझने लगते हैं कि नवाबों, महलों, अमीर वर्ग, पर्दे में रहती सुंदर औरतों और कनीजों की दुनिया ही सचमुच की दुनिया है। हिंदी के कुछ उपन्यासकार यथार्थ के धरातल पर जिस तरह से मुस्लिम परिवारों को प्रस्तुत करते हैं, वह कतई इस माहौल से अलग है। रंग चिंतक और कथाकार हृषिकेश सुलभ का उपन्यास 'दाता पीर' इस छवि से अलग पिछड़े हुए समाज के लोगों की दास्ता बयान करता है। यह पसमांदा मुसलमान परिवार परंपरागत पेशे से जुड़े हुए हैं, जिन्हें हाशिए पर धकेल दिया गया है। क्योंकि वह सफल नाटक लेखक भी हैं, सो उनके द्वारा इस उपन्यास में 'यबंध सुंदर ढंग से चित्रित हैं। वातावरण की ऐसी पेशकश उच्च कोटि के उपन्यासकारों के यहाँ ही उपलब्ध है। देखिए ज़रा–'

सब कुछ धुआँ–धुआँ था।

कोठरी, कोठरी के सामने बरामदे का छोटा –सा टुकड़ा, .. बरामदे के सामने बाँस के ठिगने खंभों के सहारे पतहर की टाट से घिरा आँगन। चारों ओर धुआँ भरा था और आँगन के बाहर बेतरतीब उगी झाड़ियों के बीच गुजरती पगडंडी पर और कब्रिस्तान के भीतर चारों ओर कुहासा भरा था। धुआँ और कुहासा दोनों ने ठंड के साथ मिलकर सूरज को दबोच लिया था। बरामदे में, जहाँ कोयला से जलने वाले चूल्हे पर खाना पकता, वहाँ कालिख ही कालिख थी। (पृ सं 9)

'दाता पीर' उपन्यास में मुजाविरों और शहनाई बजाने वाले एक घराने की कहानी बयान हुई है, जो विस्तार पा कर जन–जीवन का आख्यान बन जाती है। सुलभ कब्रिस्तान और उसके भीतर रह रही जिंदगियों को लेकर एक पूरा परिदृश्य रच देते हैं। इन जिंदगियों के बाहर ही नहीं भीतर भी धुआँ भरा है।

किसी कब्रिस्तान में रहने और वहीं रह कर जीवन गुजारने की चाहत भला किसकी और क्योंकर हो सकती है। परंतु हालात जो न करवा दे। बेवा रसीदन को इसी कब्रिस्तान में सपरिवार रहना पड़ रहा था। परिवार में दो बेटियाँ थीं, अमीना और चुन्नी , पोलियोग्रस्त बेटा फजलू और बेटे जैसा ही फजलू का दोस्त साबिर। , दोनों मिलकर गाँजा फूकते हैं। सत्तार मियाँ कभी रसीदन की जिंदगी का हिस्सा बने थे। अब वहीं चिपके हुए हैं। नज़र है रसीदन की बड़ी बेटी अमीना पर।

मुजाविरी, जी ठीक पढ़ा आपने। मुजाविरी ही रसीदन का पेशा है। पति के गुजर जाने पर उसे अपनाना पड़ा। कब्रिस्तानों के मजारों के फातिहा लेना। मर्दों के लिए कब्रें खुदवाना। दफन के लिए आए परेशान लोगों की खिदमत। नमाज–ऐ–जनाजा का बंदोबस्त करना। यही काम उनकी रोजी–रोटी का साधन है। उपन्यास की पूरी दास्ताँ रसीदन के इर्द–गिर्द ही घूमती है। यह अवाम का वह हाशिए पर पड़ा ऐसा परिवार है, जिस पर शायद ही किसी की नज़र पड़ती हो। मेन स्ट्रीम में काबिले जिक्र भी नहीं लगता और उपन्यासकार है कि चलताऊ नज़र से इसे नहीं निपटाते। गंभीरता पूर्वक इन जिंदगियों की पड़ताल कर हम तक पहुँचाते हैं।

उपन्यास किसी भी पात्र को खाली नहीं छोड़ देता। हर पात्र की कोई कहानी है और कहानियाँ मिलकर उपन्यास का स्वरूप ग्रहण करती हैं। समदू फकीर को रसीदन का मामूजाद भाई दिखाया गया है। उनका भी अतीत है जिसे इश्क की पीड़ा भरी दास्तान के रूप में चित्रित किया गया है। वे कालिज के दिन थे जब हसन और जूबी इश्क में डूब गए थे लेकिन परिवार के दबाव में जूबी का निकाह कहीं और तय हो गया। लेकिन जूबी ने हिम्मत से काम लिया काजी के सामने 'कबूल नहीं' कहना सचमुच हिम्मत का काम था। वह बने बनाए ढाँचे को चुनौती दे रही थी। प्रख्यात उपन्यासकार अरुंधति राय जान बर्जर के बारे में बताती हैं – 'जान बर्जर हमें सिखाते हैं कि कैसे सोचना है। कैसे महसूस करना है। कैसे चीज़ों को टकटकी लगाए देखते रहना है।' हम परंपरागत परिवारों में ऐसे क्रांतिकारी बदलाव की उम्मीद कम ही करते

हैं, जो जूबी ने की। इसकी कीमत उसे जान देकर करनी पड़ी। अंदाज लगाया जाता है कि उसकी आनर किलिंग हुई। यह हसन के लिए गहरे सदमे का मामला था जो आखिरकार फकीर हो गए।

उनसे पूछा गया, 'याद है तुमको हमारी?'

'...बाजी, फकीर वही जो सारे जमाने को याद रखे और अपने को भूल जाएँ। सब कुछ याद है बाजी। बस अपने आप को भुला दिया है। ' (पृ.सं 82)

एक और कहानी है। वह मनिहारों के खानदान से जुड़े थे। घूम–घूम कर चूड़ियाँ बेचते थे। चूड़ियाँ/साज सिंगार के सामान बेचना ही पेशा था। यह पीर मनिहारी का दिल एक अमीर शिया की बेटी पर आ गया। इस इश्क में सुध–बुध खोने लगे लेकिन लड़की ने इस प्रेम की पुकार को ठुकरा दिया। वह नीम पागल के धरातल पर आ गए। खानकाह दर खानकाह भटकाव जारी रहा। फिर कटिहार के मनिहारी में बाबा हजरत जीतनशाह रहमतउल्लाह के मजार पर हाजिर हुए। मौलाना समीर उद्दीन ने उन्हें अपना शागिर्द बना लिया। पीर मनिहारी एक दिन इस कब्रिस्तान में पहुँच गए। और यहीं रह गए। फिर यहीं दफन हुए। पीर मनिहारी की वजह से इस मजार पर चूड़ियाँ चढ़ाने की रवायत थी। जब चूडियों की टोकरी भर जाती, रसीदन इन चूड़ियों को कदमकउआं की चूड़ी गली में आढ़तिये के यहाँ ओने–पौने दाम में बेच आती। यहाँ कथाकार ने एक तो रसीदन के जीवन चक्र का बयान किया है, दूसरे इश्क की राह से 'दाता पीर' तक पहुँच बता दी है।

रसीदन के पुराने दिन भी इसी कब्रिस्तान से जुड़े थे। काले फकीर उसके नाना थे। पूरे इलाके में शोहरत थी उनकी। उनकी रिहाइश इसी कब्रिस्तान में थी। इसी काले फकीर के बेटे की औलाद थे समद हसन जो समदू फकीर हुए। समदू फकीर रसीदन के मामूजाद भाई हैं। रसीदन अपनी छोटी बेटी चुन्नी से परेशान होकर समदू फकीर के आगे ही रोना रोती है। 'न बोलचाल सीधी है, न रहन–सहन, मुहल्ले भर से लड़ती फिरती है.., एक कसाई के लड़के से मुहब्बत चल रही है। .. कोई उपाय करो। ' फकिर कहते हैं– मुहब्बत बड़ी शै है बाजी.. सबको नसीब नहीं होती। अल्लाह ताला की रहमत है इ मुहब्बत। नसीबों वाली लड़की है। '(पृ. सं/83) बाजी से कहते हैं कि उसे पैदा करने की कीमत मत वसूलो।' हम जिस मजार पर बैठे हैं, वे एक शायर थे। 'घर जाने की बात पूछने पर कहा– 'घर?, .. जो दुनिया छोड़ आए, वहाँ अब क्या जाना! एक बार जो दुनिया छूट जाती है, वो भला मिलती है दुबारा!'

'दाता पीर' मुहब्बतनामे से लबालब भरा है, जहाँ जीने की अदम्य चाहत विद्यमान है। साबिर कब्रिस्तान की नियति से मुक्ति पा जाता है। उसके मामू फहीमबख्श और गुलामबख्श थे। उनसे मिलने सुलतानगंज जा पहुँचा। उत्तराधिकारी के रूप में शहनाई वादन सिखाना आरंभ कर दिया। वह अमीना से भी दूर चला गया। अमीना इंतजार करती रहती है। यहाँ दो अलग अलग चरित्र है। चुन्नी लड़कर भी मुहब्बत

पा लेती है, अमीना खामोश रह जाती है। साबिर जब सभागार में शहनाई पर बोल पेश करता है, तो तालियों की गूँज सुनाई देती है।

उपन्यास में उपन्यासकार ने सरलीकरण से काम नहीं लिया। हाशिए पर पड़े साधारण लोगों की छोटी –बड़ी लड़ाइयों को आवाज़ दी है। उपन्यास में जिंदगी और जिंदगी के तजुर्बे का अच्छा उपयोग किया गया है। पठनीय तो है ही।

हरियश राय का उपन्यास 'दहन' 2022 में ही आया। वे तमाम लोग जो हरियश राय के रचना कर्म से थोड़ा बहुत परिचय ही रखते हैं, जान चुके हैं कि वह आत्मपरक, आत्मप्रशंसक, या आत्मलिप्त कथाकार हर्गिज नहीं हैं। उनकी कहानियाँ, उपन्यास या फिर उनकी समीक्षा सदा समाजपरक रही है। 'दहन' उपन्यास मुख्यतः दो सूत्रों से बँधा है। पहला सूत्र है बढ़ती मतांधंता जोकि धर्म से नहीं, धार्मिक पाखंड से जन्म लेती है और गले का फाँस बनी रहती है। दूसरा महत्वपूर्ण सूत्र है स्त्री को समाज में समुचित जगह न देकर दोयम दर्जे की नागरिक समझना और उनके प्रति जड़विहीन भविष्य अधिकार से विहीन एक ढुलमुल रवैया अपनाना। दोनों मुद्दे इस समय समाज को आगे ले जाने की जगह पीछे धकेल कर सामाजिक चेतना विहीन करने वाले हैं, जिस पर जागरूकता और बदलाव की जरूरत का एहसास यह उपन्यास करवाता है।

उपन्यास में प्रगट सांप्रदायिक शक्तियों का जमावड़ा एकल नहीं है, इन्हें पूँजी और सत्ता का गठजोड़ ज्ञात–अज्ञात तरीके से पूरे दबाव में रख रहा है। सौम्या का वैवाहिक गठबंधन के बाद जिस परिवार से सामना होता है, वह धर्म के वास्तविक अर्थ से न जुड़ कर पाखंड प्रदर्शन के सूत्रों से बँधा है। वह जिस स्कूल में पढ़ाने जाती है, वहाँ भी वैज्ञानिक चेतना का खासा अभाव है। केवल सौम्या और एक साथी अध्यापक विजय माही जड़ मान्यताओं से टकराते ही नहीं नए सामाजिक मूल्यों और नए इनसान बनाने की परिकल्पना से गहरे जुड़े रहते हैं। सौम्या का पूरा चरित्र पाखंड, धर्मसत्ता के प्रति हिकारत का भाव लिए है। इतना ही नहीं, वह पितृ सत्तात्मक रवैये की भी प्रखर विरोधी है। ऐसी महिलाओं की भारत में कमी नहीं जो हर अंधविश्वास को खारिज कर जीवन को मानवाधिकार, मानवीय मूल्यों से भरा देखना चाहती हैं और यह केवल कहने मात्र के लिए नहीं, व्यावहारिक स्तर पर लागू करना चाहती हैं। जाहिर सी बात है कि इस काम में जोखिम है, ज़हर है जो पीना ही पड़ता है।

गुरु नानक (15 अप्रेल1469–22 सित, १५३६) ने साफ साफ कहा था –

'शरम धरम दुइ छप खलोते
कूढ़ फिरे परधान वे लालो।'

शर्म और धर्म दोनों छुप गए हैं। झूठ परधान के रूप में घूम रहा है। इस बदले हुए दौर में लगातार बढ़ती न बराबरी ने जीवन के सामने हजारों मुश्किलें पैदा की हैं। एक तबका पहले से अधिक खुशहाल और सुविधा संपन्न हुआ है परंतु एक बड़ा तबका अधिकार विहीन होता चला गया है। अब बुजुर्ग लोग मरने के लिए बेसहारा छोड़ दिए

गए। हैं। लड़कियों का एक बड़ा वर्ग अपनी अस्मत की बिक्री को आजादी समझने लगा है। अफसरशाही लूट केंद्रित हो गई है, जुआ घरों में और वेश्याघरों में जबरदस्त विस्तार हुआ है राजनीतिक ताकतें दायित्व विहीन हो गई हैं और फिर कैसे न मानेंगे कि कूढ़ फिरे परधान वे लालो!

सौम्या की दो बेटियाँ हैं। ईशा और इला। सौम्या की मेहनत और सूझबूझ का परिणाम है कि इला कंप्यूटर इंजीनियर, और ईशा फैशन डिजाइनिंग में आगे बढ़ रही हैं। ऐसे दकियानूसी परिवार में जहाँ बेटियों को जन्म देना भी अभिशाप की तरह देखा जाता है।

हरियश राय मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। सो धर्म के पाखंड के प्रति उनका नजरिया नकारात्मक होगा ही। हरिशंकर परसाई जी ने तो अपनी एक किताब का नाम ही रखा थाः 'विकलांग श्रद्धा का दौर' यह एक पेचीदा मामला हो गया है। आज धार्मिक सत्ता राजनीतिक सत्ता को निर्देशित करना चाहती है। हमारे मित्र सुधीश पचौरी का मानना है कि इस्लाम के अनुयायी व्यक्ति के लिए इस्लाम, राज्य सत्ता को नीचे मानना चाहता है। उनकी देखा देखी धर्म भी अब राज्य सत्ता को नीचे मानना चाहता है। आज हमारे समाज में धार्मिक सत्ता राज्य सत्ता से ऊपर आना चाहती है। यही नए सत्ता केंद्र हैं जो राष्ट्र राज्य सत्ता को चुनौती देते हैं। इसमें आपसी स्पर्धा है इतनी विकट है कि कोई पंच फैसला फिलहाल असंभव दिखता है। (अक्सर अप्रैल जून 2००८)

यह उपन्यास अपने समय की नज़ाकत को समझते हुए यथार्थ की ज़मीन पर टिका है। यदि नाम रख देने से पूरी तासीर, पूरा अनुभव खंड, सभी कुछ नाम के अनुरूप ही रहता तो जीवन की कितनी कठिनाइयाँ अपने आप हल हो जातीं। कुछ ऐसा ही अनुभव विनोद दास के उपन्यास 'सुखी घर सोसाइटी' पढ़ कर होगा। 'सुखी घर सोसाइटी' नाम रख देने वहाँ के प्रत्येक घर की नियति नहीं बदल जाती। हर घर का आंगन सुखों से भर नहीं जाता। उपन्यास महानगर मुंबई के एक उपनगर में हाजिर रिहायशी सोसाइटी है, जिसमें विविधवर्णी जीवन नज़र आता है। उपन्यास की कथाभूमि महानगर की परेशानियों तक महदूद नहीं है। गाँव से उखड़ कर आये, हाशिए पर धकेले गए। अनेक लोगों की दर्दनाक कहानियाँ भी शामिल हैं। जिनमें विस्थापन है, अपने को अपनापन नहीं मिलने का शिकवा है, जीवन संघर्ष है। मुंबई का ऐतिहासिक परिदृश्य है तो वर्तमान की अपने मानदंडों पर खरी न उतरने वाली लोकतांत्रिक व्यवस्था भी है। उपन्यास तीन सौ पृष्ठों तक पसरा हुआ है और महानगर के एक उपनगर में बसी मीरा रोड की एक सोसाइटी में रहने वाले लोगों का जीवन दर्पण बन जाता है। कई दशकों से बिहार और उत्तर प्रदेश से आकर लोग मुंबई में आकर बसते रहे हैं। सुखी घर सोसाइटी उपन्यास के केंद्र में होते हुए उपन्यास सोसाइटी सै बंध कर नहीं रहता। उपन्यास का आरंभ ही इन पंक्तियो से होता है –

'उपनगर अपने महानगर की अवैध संतान की तरह होता है जिसे वैद्य संतान की तरह न तो प्यार, न ही सुख –संपत्ति और न ही नाम मिलता है। '

यहीं हम महानगर के भीतर व्याप्त अव्यवस्था के प्रति आक्रोश की बड़बड़ाहट सुनते हैं, 'टैंकर फिर नहीं आया। हमारी हाउसिंग सोसाइटी मुर्दा है। कुछ नहीं करती। व्हआटस एप में पोस्ट लिखकर इनकी खाल खींचता हूँ। ' आकाश की बड़बड़ाहट के रेशे वायुमंडल में छितरा गए। । (पृ, सं/7) जवाब वसुधा से मिला– 'बीवी की बात मानने में हेठी होती। कहती न थी कि खार में फ्लैट ले लो। नई बसावट। चौड़ी–चौड़ी सड़कें। पहाड़ियाँ–झरने। '

क्या एक आधुनिक महानगर में यह एक हसीन ख्वाब नहीं? हमने अपने महानगर के विकास का माडल पश्चिम से ग्रहण किया है। वे सभी मुल्क आज की हालत से निकलने की कोशिश करते हुए फँसते चले गए। हैं। लंदन में 1952 में ही जो हालत बताई गई थी, कुछ इस प्रकार थी। – तब सारा लंदन धुएँ की और धुंध की गिरफ्त में आ गया था, जिसे 'ग्रेट स्मॉग आफ लंदन' के नाम से पुकारा गया था। इस वजह से हजारों लोगों की जिंदगी चली गई और बड़ी संख्या में लोग लंबी बीमारी का शिकार हुए। तब बचाव में एक कानून बनाया गया जिसे 'क्लीन एयर एक्ट' कहा गया। परंतु धीरे–धीरे कारों और मोटरवाहनों से हालत पहले जैसी हो गई।

"सुखी घर सोसाइटी के 104 घरों, फ्लैटों में सुबह आठ बजे तक लोगों के मन में धकधक मची रहती कि उनके बाथरुम के वाटरटैंक में पानी आएगा या नहीं?'

उपन्यास में ऐसी दिक्कतों के साथ चलते बसते कई कहानियाँ आकर जुड़ जाती हैं। धारावी में रहने वाली रजिया ने दंगे में अपने किशोरवय के बेटे नूर को खो दिया। इस सदमे को सह पाना रजिया के लिए कठिन था, वह जीवन भर के लिए अपाहिज हो गई। कृष्ण को गटर साफ करते हुए अपनी जान गंवानी पड़ी कारण?– किसी फिल्म अभिनेता के घर गटर की दुर्गंध जा रही थी। कृष्णा का सपना है– वह बच्चों को पढ़ा–लिखा कर इस नरक से दूर रखेगा। कहाँ मिली उसे अपने जीवन में इस अभिशाप से मुक्ति? जब उस जैसे हजारों युवा वर्ग के लोगों को सफाई के लिए गटर के गंदे पानी में उतरना ही पड़ता है। 'महानगर में वे हर दिन मलमूत्र की अंधी गुफा में आत्महत्या के लिए उतरते जबकि यह सफेदपोशों द्वारा की गई हत्या होती।' (पृ सं/80)

उपन्यास 'सुखी घर सोसाइटी' अपने आप में एक छोटा भारत ही नज़र आता है। कारण? वे कहानियाँ जो इस उपन्यास का हिस्सा हैं, दिखा रही हैं कि सांप्रदायिकता का ज़हर फैलता चला जा रहा है।

सांप्रदायिकता का ज़हर और जातिगत भेद–भाव ने हमें ग़ैरजरूरी मुद्दों में बहुत भटकाया है। आकाश और वसुधा हमें अन्य कुछ लोगों से अधिक मानवीय और सचेतन नज़र आते हैं, उन पर भी उपन्यासकार ने देवत्व नहीं उतारा है। उनका जीवन

भी परेशानियों से घिरा है। सोसाइटी में हिंदू भी हैं, मुसलमान भी, मराठी भी, गैरमराठी भी। अंतर्विरोध और टकराव हैं, किंतु अधिक तेजी से उभरता है हिंदू–मुसलमान टकराव। जो तस्वीर पूरे हिंदुस्तान की है, उसमें यह टकराव चुभने वाला लगता है। आप रजिया, कृष्णा, संगीता, मनोज, रूबी को मात्र एक पात्र के रूप में देखकर अपने रास्ते नहीं चल सकते, वे अपने–अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करते नज़र आते हैं

उपन्यास का भाषा सौष्ठव उल्लेखनीय है। एक अध्याय का आरंभ कुछ इस तरह होता है– 'इतिहास अतीत की लाश ही नहीं, एक ऐसा जीवित विवेक भी है जो टार्च की तरह अंधेरे रास्तों को रोशन करता है। 'एक अन्य जगह लिखते हैं–' आकाश तब नहीं जानता था कि चीज़ें राख हो जाती हैं लेकिन सपने राख नहीं होते या फिर यह कि आकाश के गले की बाँसुरी पर वर्षों से जमी उपेक्षा की धूल को वसुधा की कोमल संवेदनहीन की झाड़न ने बुहार दिया। पानी जब तक बादलों में रहता सब का रहता, बरसते ही ज़मीन मालिक का हो जाता 'इस तरह से हम उपन्यास की रचनात्मक गहराई तक जा पहुँचते हैं।' सुखी घर सोसाइटी रोचक उपन्यास तो है ही, हमारे समयगत यथार्थ की पर्तें खोलने वाला उपन्यास भी है।

रजनी गुप्त का उपन्यास 'तिराहे पर तीन' 2021 में छप कर 2022 में ही चर्चित हुआ। यह स्त्री पीड़ा, स्त्री उपेक्षा लेकिन विपरीत स्थितियों में जीवन को नए दृष्टिकोण से परखने और आगे बढ़ने वाली तीन स्त्रियों की कहानी है, जो बुंदेलखंड की पारंपरिक पृष्ठभूमि से आती हैं। ये स्त्रियाँ रूढ़ियों से टकराती हैं, वर्जनाओं की दीवार का सामना करती हैं। रजनी गुप्त ने अपनी मर्जी से जीने वाली महिलाओं के छले जाने और जीवन की अबूझ राहों पर सोच समझ कर चलने वाली महिलाओं की इच्छा और टकराव को गंभीरता पूर्वक देखा–परखा है और रचनात्मक आयाम दिया है। अलका, रेवती और निमिषा के जीवन को समझना अपने समय और समाज को समझना है। मालती के रूप में हम नए मनसूबे, नए क्षितिज टटोलने पाने की सुगबुगाहट पाते हैं।

स्त्रीवादी चिंतन आज काफी स्पष्ट हो चुका है। सदियों से प्रताड़ित और लांछन की कालिख झेलने वाली स्त्रियों को निचले पायदान पर रखा गया है, जिसे ऊपर उठा कर उच्च आसन देना उसकी मानवीय भूमिका को समझना समझाना स्त्रीवादी रचनाकारों ने अपना पहला दायित्व समझा है। नीलेश रघुवंशी ने एक प्रश्न के उत्तर में सिमोन द बोउवार के प्रसिद्ध कथन को याद करते हुए कहा था– 'स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बना दिया जाता है' तो हमारा संघर्ष इस बनाने के खिलाफ होना चाहिए। हममें यह आत्मविश्वास होना चाहिए कि कोई और हमें कैसे बना सकता है। जो बनना है हम खुद बनेंगे। '

यही ध्वनि रजनी गुप्त के इस उपन्यास में एक अलग स्तर पर नज़र आती है।

उपन्यास के आरंभ में ही दिए जो संवाद यहा उदृधत किए गए। हैं, उनसे कुछ

बाते बिलकुल साफ़ हो जाती हैं। पहली यह कि पढ़ लिख कर लड़की खुद से फैसला नहीं कर सकती कि उसे नौकरी करनी है या नहीं?

दूसरे बेटियों को जन्म देने पर एक जननी क्यों कसूरवार ठहरायी जा रही है? यह पितृसत्तात्मक समाज की जड़ता और रुकावटें है, जिनके लिए स्त्रियों को लड़ना पड़ा है, लड़ना पड़ेगा, नहीं तो घुट घुट कर मरने के रास्ते खुले हैं। मुनीम जी और उन जैसों में सांस्कृतिक चेतना का अभाव नज़र आता है। यदि स्त्रियाँ बेटियों को जन्म न दें तो मुनीम जी की पत्नी न होती, न ही उनके जन्म का संयोग बनता। कृष्णा सोबती ने 'ऐ लड़की' में माँ को इन गौरवमयी पलों का सम्मान दिया है। जब कहा कि बच्चा बनाना एक तरह का यज्ञ ही है री! इन दिनों औरत पूरे ब्रह्मांड से शक्ति के कण खींचकर अपनी ऊर्जा ज्वलित कर लेती है।

उपन्यास में बताया गया है कि आज के इस दौर की सबसे बड़ी त्रासदी है कि मोबाइल ने हरेक को आत्मकेंद्रित बना दिया है। धीरे–धीरे नौबत यहाँ तक आ जाती है कि वे सिर्फ अपने बारे में सोचने लगते हैं और धीरे धीरे असामाजिक भी होते चले जाते हैं।

'तिराहे पर तीन' उपन्यास स्त्री पीड़ा का, स्त्री चेतना का सशक्त उपन्यास है। रूढ़ियों और वर्जनाओं के पार एक नई रोशनी का उपन्यास है, जिसमें संघर्ष है, टूटे आत्मबल की पुनर्सजना है और जिजीविषा है।

राजनारायण का उपन्यास 'अस्थान' 2022 में ही छपकर आया। साधुओं के जीवन पर खोज कर लिखने वाले उपन्यासकार कम ही हैं। राजनारायण बोहरे का सूक्ष्म अध्ययन नकली साधुओं की पड़ताल के साथ धर्म के क्षेत्र में बाजारवाद और कार्पोरेट की उपस्थिति बड़े अच्छे ढंग से दिखाते हैं कि साधनारत तपस्वी इस धूल, धुएँ में विलुप्त होते नज़र आने लगते हैं। उपन्यास 'अस्थान' में रचनाकार युवक धरनीधर की जीवन स्थितियों को लेकर आते हैं कि उसका रास्ता टेढ़ा होकर अस्थान तक ले आता है। जोगिया वस्त्र और वेषभूषा उसे दर दर भटका कर पेट भरने लायक तो बना सकती है, क्योंकि भारत में जोगिया लिबास कहीं न कहीं धर्म को पुकार लेता है और धार्मिक होने का कोई मौका आम तौर पर भारतीय छोड़ते नहीं। वह भटकाव छोड़कर अस्थान तक जल्दी नहीं पहुँच सकता कि इसके पीछे पेचदार गलियाँ हैं। इसी भटकाव में आश्रमों की हकीकत खुलती जाती है।

हम रोज़मर्रा की जिंदगी में यह सब देखते हैं और किनारा कर निकल जाते हैं, परंतु राजनारायण बोहरे को यह सब बड़े सोच विचार का विषय लगा और कुछ गहरे प्रश्न लेकर वह इस उपन्यास की संरचना में डूबे रहे हैं जोकि अब लगभग सवा दो सौ पृष्ठों का पठनीय उपन्यास निर्मित होकर हमारे सामने है। यह उनका बौद्धिक साहस भी है और अविश्वास की प्रतिक्रिया भी। आल्बेयर कामू का विश्वास हमने देखा

जब उन्होंने कहा कि हम सब एक सामान्य शत्रु से लड़ रहे है –विश्व की विरूपता से, जो स्वयं में जीने का कोई कारण नहीं प्रदान करतीं।

धरनीधर कहते हैं– 'आप जो आजकल के साधु वेशधारी बाबाओं की बात कह रहे हैं, वे सब मनमुखी साधु हैं, उन से कोई भी गुरुमुखी साधु नहीं है।' यहाँ इस भेद को इस तरह खोला गया है कि गुरुमुखी साधु वे असली साधु हैं, सही–सही अखाड़े–द्वारे से आते हैं और परंपरा गत भक्तिपंथ से जुड़े हुए हैं, जबकि मनमुखी का न कोई अखाड़ा–द्वारा, न कोई पंथ, न कोई संप्रदाय।

उपन्यासकार की लोकजीवन की बेहतर जानकारी है। यहाँ स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है, जो कीर्तन सत्संग के बहाने घरों से निकल पाती हैं। यही वह स्त्री समूह है जो एक बाबा को बाबा बना देता है।

राजनारायण ने उपन्यास में कटु सत्य का अच्छा उपयोग किया है। अंत अच्छा है। वह उस ट्रेन में है, जो उसके गाँव जा रही है तपस्या ही करनी है तो गाँव में करेंगे। लोगों को जगायेंगे, यह भी तो एक तपस्या है। वह अब अपनी ज़मीन के हक के लिए लड़ना चाहते हैं।

नवीन जोशी का उपन्यास 'देवभूमि डेवलपर्स' भी 2022 में ही आया। उपन्यास उत्तराखंड के जन आंदोलनों, कुदरती संसाधनों की लूट, उजड़ते हुए गाँव के बड़े बाधों के कारण विस्थापन और इस संबंधी तड़प को केंद्र में रख कर लिखा गया है। एक तो विकास का वर्तमान ढाँचा खुल जाता है दूसरे राजनीतिक विद्रूप से हमारा साक्षात्कार होता है। इसका वितान समर्पण पृष्ठ पर दर्ज इन पंक्तियों से भी लग सकता है। 'बेहतरी के लिए संघर्षरत शक्तियों को और निराशाजनक परिदृश्य के बावजूद धुंध को चीरकर निर्मल धूप खिलने की कायम उम्मीदों के नाम!'

उपन्यास का आरंभ शराब विरोधीआंदोलन से होता है। दिन है छब्बीस मार्च, 1984। गरमपानी बाजार जन आक्रोश से उबल रहा था। आंदोलनकारी जगह–जगह पहरा दे रहे हैं। 'नशा नहीं रोज़गार दो!' हमें याद आते हैं स्वतंत्रता संग्राम के वे दिन जब महिलाएँ शराब की दुकानों पर धरना देती थीं। तब उपनिवेशवाद था। अब के दृश्य में भारत एक लोकतांत्रिक देश है। उत्तराखंड के गाँव–गाँव तक शराब पहुँचाने के लिए बलवंत सिंह कुख्यात था। शराब के धंधे पर उसने इस कदर शिकंजा कस लिया था कि कोई दूसरा व्यवसायी हाथ डालने की हिम्मत नहीं कर सकता था। 'पूरे कुमाऊँ में गुस्सा था 'चिपको आंदोलन' की तरह ही महिलाएँ सबसे आगे थीं। नशे की लत की सबसे बड़ी मार उन्हीं पर पड़ती थी।' भीड़ ने शराब की कमाई से ऐश करने वालों से शपथ दिलवाई कि भविष्य में शराब का व्यापार नहीं करेंगे।

पुष्कर को जनता का आक्रोश स्वाभाविक लगा। पुष्कर और बाद में उससे जुड़ी पत्नी कविता दोनों जन जीवन के प्रति समर्पित, शोषित वर्ग के दर्द के प्रति संवेदन,

परिवर्तमकामी चेतना से लैस हैं। पुष्कर को लगता है कि शराब की बिक्री के विरुद्ध महिलाओं में वर्षों का संचित आक्रोश है।

शोलाखोव ने जनता की बात मात्र सिद्धांत के रूप में नहीं की। ऐतिहासिक अनुभव को भी समझा परखा। इतिहास निर्माण की भूमिका में जनता की भूमिका सदा महत्वपूर्ण रही है। उपन्यासकार नवीन जोशी इस मर्म को समझते हैं। उनकी नज़र यथार्थ को समझने के लिए अंतर्भेदनी है। इसी लिए पुष्कर ज़मीनी हकीकत को समझते हुए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व पर आपत्ति उठा सका। संघर्ष वाहिनी के टूट जाने पर पुष्कर को निराशा हुई। लेकिन सलीम कहता है कि स्पष्ट राजनीतिक–आर्थिक विचार के बिना चिपको आंदोलन का बिखरना तय था, वैसे ही संघर्ष वाहिनी का टूटना बिखरना भी निश्चित था।

'देवभूमि' डेवलपर्स संघर्ष का उपन्यास है, इसमें अवाम का संग्राम है, पलायन नहीं। इसमें खंडित स्वप्न हैं, लूट है, खाली होते गाँव है बड़े बाँध में डूबते लोग हैं। जीवन की लंबी रेखा है, कोई शार्ट कट नहीं।

डॉ. अजय शर्मा का उपन्यास 'कुमुदिनी' भी 2022 में ही छप कर आया। प्रिंट लाइन में भूलवश 2021 चला गया। इसके लोकार्पण के अवसर पर इन पंक्तियों का लेखक मौजूद था जोकि 2022 में ही हुआ। कुमुदिनी 'उपन्यास डॉक्टर कुमुद की स्मृति को समर्पित है जिन्होंने अपने जीवन काल में कितनी ही सूनी कोख को पुष्पित किया और निराश दंपति के जीवन को आशा के जीवन से संपन्न किया है। उपन्यासकार ने सामाजिक विसंगतियों को सफलतापूर्वक उभारा है। दरअसल इस उपन्यास को जालंधर शहर में आई.वी.एफ, सेंटर चलाने वाली पहली डॉक्टर की जीवन गाथा के रूप में पढ़ना भी दिलचस्प होगा। उन्होंने कितने ही निस्संतान दम्पति को आशा की किरण दिखाई, जो थक हार कर बैठ गए। थे। यह सब करते हुए उनके दिलो दिमाग़ में यह आशंका भी घर कर चुकी थी कि कहीं वह प्रकृति से छेड़छाड़ तो नहीं कर रहीं। एक सम्मानित जीवन जीते हुए अपने भीतर यह एहसास लेकर जीना मुश्किल हो गया था। इतने अच्छे लोगों को भी कभी कभार कुदरत की मार सहनी पड़ सकती है, यह बहुत से लोगों के लिए हैरत का विषय हो सकता है। उन्हें कैंसर जैसी घातक बीमारी को झेलना पड़ा। डा कुमुद के पति भी हर्ट विशेषज्ञ डॉक्टर हैं। कुमुदिनी को पति प्रेम में कभी कोई कमी नहीं आई। फिर भी डा कुमुदिनी का धीरे धीरे मौत के मुँह में जाना पाठक के लिए एक धक्का लगने जैसी स्थिति दिखाता है।

उपन्यास में दो लड़कियों और दो लड़कों का अप्राकृतिक प्रेम सम्बंध भी दिखाया गया है। रचनाकार जिस अस्पताल में कार्यरत है वहाँ उसे कई प्रकार के अस्वस्थ लोगों से काउंसलिंग भी करनी होती है। इस नये केस में दोनों लड़के आपस में और दोनों लड़कियाँ आपस में विवाह संबंध बनाना चाहती हैं। अजय शर्मा डॉक्टर और मरीज के सम्बंधों के भी अच्छे जानकार हैं, सो बताते हैं कि मरीज़ और डॉक्टर के

संबंध अधिक पारदर्शी होने चाहिए। यह दोनों के लिए मददगार साबित होता है। मरीज़ का भरोसा बड़ जाता है, डॉ. को मरीज़ का स्वभाव और मानसिक स्थिति स्पष्ट रहती जो चिकित्सा में मददगार साबित होती है। इन लड़कों लड़कियों के मन की बात अपने माँ–बाप से भी अनभिज्ञ थी, परंतु डॉक्टर के सामने खुल जाने से जैसे एक पर्दा हट गया हो। काउंसलिंग के समय जीवन के राज़ भी खुल गए। डॉ. विसंगतियों को समझ कर काउंसलिंग करता है और अनैतिक रास्ते की पहचान करवा देता है। अजय समस्या को जड़ से पकड़ना जानते हैं और उपचार भी खोज लेते हैं। वह प्रॉबलम को डील करते समय अश्लीलता से बचा ले जाते हैं। उनका अपना जीवन भी डॉक्टर और लेखक का मिश्रित जीवन है, इसलिए अपना पूरा अनुभव उतार पाते हैं। समय बदल रहा है तो समस्याओं की प्रकृति भी बदल रही है। वह तनाव बिंदु को ठीक से समझ कर संतुलन पैदा करते हैं। फिर बदलते परिवेश को कथा का हिस्सा बनाने में कोई दिक्कत नहीं आती है। एक स्थल पर कहा भी है 'मै फायदे–नुकसान के लिए नहीं लिखता। अपने मन की शांति के लिए लिखता हूँ। विचारों का जो द्वंद्व मेरे मन में चलता है, उसे पन्नों पर उतारता हूँ, जिससे मन और तन हल्का हो जाता है'। यह वही लेखक कह सकता है जिसने अपनी कृतियों को बाजारवाद के हवाले नहीं किया है।

जब वह शहर के बदलाव और टेम्परामेंट की चर्चा करते हैं, तब भी तथ्यपरक नज़र रहती है। पहले बताते हैं कि जो जिस काबिल है उसे नौकरी नहीं मिलती शायद यही कारण है कि युवा विदेश की तरफ मुँह करने लगे हैं। शहर के कलाकारों के बारे में लिखा कि कई कलाकार तबाह हो चुके हैं। बची–खुची मार मल्टीनेशनल चैनलों ने मार दी। डॉक्टरों की बाबत बताया कि डॉक्टरों के बच्चे ही डॉक्टर बन रहे हैं.. उसका कारण केवल यह है कि जो नालायक भी हैं वो भी पैसा देकर डॉक्टर की पढाई कर रहे हैं।

डॉ. कुमुदिनी के पीड़ा के क्षणों को भावुक होकर लिखा जो कि जरूरी भी था। उन्हें कैंसर हुए तीन साल हो गए। थे। कैंसर के बावजूद वह चट्टान की तरह अडिग थीं, रोज़ ओ पी डी में आतीं। आई वी एफ करतीं। इस कर्मठता के आगे नमन हैं हम।

उपन्यास दिलचस्प है, तथ्यपरक है। उद्देश्य पूर्ण है। मानवता की राह पर एक जलता हुआ अकंपित दीप है। पुरुष सत्तात्मक समाज ने सदियों तक स्त्री को उसके अधिकारों से वंचित रखा। जब स्त्री के लिए विद्यालय, महाविद्यालय के दरवाजे खुले और फिर नौकरी के क्षेत्र में बंद दरवाज़े खुले, तब लगा कि स्त्री को एक सम्मान जनक रुतबा मिलने ही वाला है जिसे अब कोई रोक नहीं सकता। परंतु सरकारी नीतियाँ और फिर उन नीतियों को लागू करवाने वाली मशीनरी (जिस पर पुरुष वर्चस्व चलता ही है) इस डगर को जटिल और तकलीफ़देह बनाए रखती है फिर अगर परिवार में भी पुरुष वर्ग मनमानी छूट लेता रहे और स्त्रियों के जज़्बात की कद्र किए बिना लीक

पीटता रहे तो हालात कभी ठीक रह ही नहीं सकते। नीला प्रसाद का उपन्यास अंत से शुरू इसी ज़मीन पर रचा गया उपन्यास है।

उपन्यास आरंभ होता है एक हाल में आफिसर महिलाओं के नाच से। वे नाच रही थीं, और 'उस पल लगता था कि जैसे वे जिंदगी के सारे ग़म भूल चुकी महिलाएँ थीं जो अपने अस्तित्व मात्र का जश्न मना रही थीं। .. प्रबंधन गुरु पहले ही कानों में फुसफुसाते रहे थे –जब जिंदगी में कुछ समझ नहीं आए, डांस रूम में जाकर डांस करो।' नंदिता (इस उपन्यास की नायिका) इसी हाल में थी। उपन्यास का समर्पण भी उसी के बहाने उन स्त्रियों के नाम हैं जो अपनी शर्तों पर जीना चाहती हैं, विपरीत परिस्थितियों के आगे घुटने नहीं टेकतीं।

हाल में अब मंत्री जी का भाषण हो रहा था। जिन मंत्री जी ने दिल्ली कार्यालय के बारे में उठे सवालों का जवाब देने से बचने के लिए कार्यालय की आधा दर्जन महिलाओं की पारिवारिक जिंदगी तबाह करते उन्हें दूर –दराज के क्षेत्रों में पोस्ट कर दिया था, वही मंत्री उन दुखी महिलाओं में से एक को यहाँ मंच पर बुला कर पुरस्कृत कर रहे थे। नंदिता को खुद को संभालना पड़ा।

मंच से स्त्री जीवन के संघर्ष पर बात की जा रही है कि स्त्री नौकरी और परिवार की जिम्मेदारी के बीच तनावपूर्ण स्थितियों में ही रहती है। 'एक ओर शादी–पति –बच्चे के साथ संघर्षपूर्ण हो चुकी घर की दुनिया दूसरी ओर आफिस में खुद को स्थापित करने की लगातार बढ़ती जद्दोजहद। आपके लिए स्थितियाँ उतनी आसान नहीं होतीं, जितनी आपके पुरुष सहयोगियों के लिए। आपको लगातार परखा जाता है।' एक स्त्री को स्त्री होने की सच्चाई से भी जूझना पड़ता है।

इस उपन्यास की उपकथा भी काफी पीड़ादायक है। वह उपकथा आंटी की है, जो नंदिता के घर रह रही थी जब घर आई थी, चार दिन से नहाई नहीं थी, क्योंकि उनके पास साबुन, तौलिया, शैम्पू वगैरह कुछ नहीं था। पति ने मारपीट करने के बाद धक्के देकर घर से निकाल दिया था और उनका एक बक्सा बाहर फेंक दिया था। यह उनका पहला होम जॉब था पहले रिसेप्शनिसस्ट थीं। प्यार हुआ, शादी की, दो बच्चे हुए। पति बैंक मैनेजर था। किसी अन्य से प्यार होने पर, व्यवहाय बदल गया। दवा तक के पैसे देने से इनकार कर दिया। मार–पीट कर घर से बाहर कर दिया। कहती है– 'मुझे काम से मत निकालिएगा..सुबह से भूखी हूँ... क्या मैं दो स्लाइस ब्रेड ले सकती हूँ?'

उपन्यास स्त्री उपेक्षा, स्त्री अनकहे दर्द की कहानी जिसे समय के बदले हुए दौर में जब स्त्री भी बराबर नौकरी कर रही है, पढ़ लिख गई है और हर ऊँच नीच को समझती है, तब भी कितनी उलझनों में उलझी है, जो कुछ समाजपरक हैं, कुछ पुरुष सत्तात्मक। नंदिता के प्रति पाठक का मन विचलित रहता है, यही उपन्यासकार की शक्ति है।

गौरीनाथ का उपन्यास 'कर्बला दर कर्बला' भी 2022 में ही आया। उपन्यास 1980 के भागलपुर के आँखफोड़वा कांड से 1989 के दंगे तक का सफर करता है, जिसे एक अलग तरह का दस्तावेजी उपन्यास माना जा सकता है यथार्थ की मुश्किल जमीन और कल्पना की उड़ान के बीच सामंजस्य इतना आसान नहीं होता जितना गौरीनाथ ने कर दिखाया है। उपन्यास में लेखक ने सत्य का निर्वाह आवश्यक माना। कहा कि अब मेरा यक़ीन बढ़ रहा है कि फिक्शन और नानफिक्शन के सहमेल से आम पाठक को कोई परेशानी नहीं होती..आज सबसे ज्यादा खतरा सच के ऊपर है। सच को किसी अलंकरण की जरूरत नहीं होनी चाहिए। पढ़ते–पढ़ते उपन्यास में इतना दम है कि आपको विचलित कर दे कि क्या ऐसे जघन्य कांड भी हमारे अपने मुल्क में कहीं घटित हुए होंगे।

इस उपन्यास की दुनिया उतनी कोमल कांत पदावली से नहीं भरी हुई जितनी भयावह घटना क्रम की तरफ ले जाती है आधुनिक मनुष्य सदा इसी भ्रम में रहता है कि उसे ठीक से पता है कि उसकी चाहत क्या है, परंतु जब सांप्रदायिक शक्तियाँ हावी होने लगती हैं तब कहीं न कहीं उसकी चाहत भी प्रभावित होती ही है। उपन्यास भागलपुर जिले के एक गाँव से शुरू तो होता है लेकिन जल्दी ही हिंदू–मुसलमान के बीच पनपती नफरत पर केंद्रित हो जाता है। ऐसे वातावरण में भागलपुर शहर पहुँच जाता है जबकि नफरत के बीच शहर के कालिज विद्यार्थियों के बीच दोस्ती और प्रेम कहानी भी समानांतर चलती नज़र आती है। भागलपुर जिसे लोग सिल्क की नगरी के तौर पर जानते हैं, धार्मिक उन्माद की अग्नि में जलती हुई नज़र आने लगती है। सांप्रदायिक शक्तियाँ राजनीति से प्रेरित होने लगी हैं। ज़रीना और शिव की बातचीत चल रही है– 'अपराध–राजनीति के खेल में होली तक कब क्या हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता।' ज़रीना के अब्बू मिर्ज़ा गालिब का दीवान बार बार पढ़ते हैं प्रेमचंद, चेखव और बर्टोलट ब्रेष्ट के प्रशंसक है। ऐसे परिवार की लड़की से सांस्कृतिक समझ की उम्मीद की ही जा सकती है। परंतु शहर सांप्रदायिक दंगों की चपेट में है। रह रह कर दंगे तीन महीने तक के लंबे वक्फे में सुलगते रहे। कत्ल हत्याएँ होती रहीं। लाशें कभी पानी में कभी तालाबों में फेंक देने का क्रम जारी रहा। दूसरी तरफ, हिंदी हिंदू हिंदुस्तान के नारे लग रहे थे। शिव मधु से कहता है– यहाँ कानून –व्यवस्था और संवेदना की बात बेमानी है। अमरपुर अंचल के सलेमपुर में बीबी आलम आरा के परिवार में लोगों के कत्ल हुए। दोनों परिवारों में ये दोनों अकेली अकेली ही बची हैं। इन अकेली रह गई महिलाओं की जिंदगी के दर्द का अनुमान कीजिए। हैंमित्रा सर कहते हैं– 'क्या बोंदूक का अविष्कार निरीह जन की हिंसा के लिए हुआ था? एवरी थिंग डिपेंड आंन यूजेज, बेटा.. इतिहास से तुम जितनी भी छेड़खानी करो, वह सच्चाई बताता रहेगा' कर्बला दर कर्बला में दंगों के बारे में जिस तरह लिखा गया है, वह

उपन्यासकार का गहरा अनुभव लगता है। दंगों की पृष्ठभूमि में शिव और ज़रीना की प्रेम कहानी सुंदर ढंग से चित्रित है। उपन्यास प्रभावित करने वाला है।

उर्मिला शिरीष का 'खैरियत है हजूर' उपन्यास वाचिका के पति संजीव की किसी मुकदमें में फँस जाने की कहानी कहता है। घर का शांत माहौल तब भंग होता है जब रामप्रताप सिंह जो कि आर्थिक अपराध ब्यूरो से संबंधित है घर आकर पूछ ताछ शुरू कर देता है। जान के घर से उन्हें उसका लैटर पैड और सील मिल चुके हैं और वह स्वीकार कर चुका है कि यह और वह दोनों एक साथ काम कर रहे थे। घर की छानबीन होने लगी एक एक आलमारी, रैक, बाक्स सभी कुछ छान मारा और संजीव को पकड़ कर साथ ले गए।

वह बिखरे हुए सामान के बीच खड़ी है। कागज़ात बिखरे पड़े है, जो संजीव के कामों पर से पर्दा उठाने वाले है। 'इन काग़जों में कोई ऐसी आभासी दुनिया थी जिनके तार संजीव से जुड़े थे।' वह एक पढ़ी लिखी संभ्रांत महिला है, परंतु पुलिस, वकील, अदालत इस सब चक्कर के बारे में कुछ भी जानती। बच्चों को बता नहीं सकती, किसी से बात करे तो क्या प्रतिक्रिया होगी, इस पर भी असमंजस। सत्य उसे पता नहीं। देवर को जाकर बताया। पिता ने कहा– 'पैसा ले डूबा उसको। ..वे सब जो उसके साथ आते थे.. मक्कार बदमाश लोग फर्जी काम करते थे।'

वह सोच रही है कि एक दो बजे तक संजीव लौटते थे.. शराब के नशे में। 'लड़खड़ाती आवाज़। अनर्गल बकवास। वह तब तक जागती होती ताकि बच्चे न जाग जाएँ।' पूछने पर एक ही जवाब मिलता कि काम के सिलसिले में ऐसी पार्टियाँ देनी पड़ती हैं। वह क्या कर सकती थी, खुद पर झुँझलाती कि वह कैसी बेवकूफ औरत है जो अपने पति को काबू में रखना नहीं जानती। पुरुष सत्तामक समाज में यह आम तौर पर कुछ कठिन काम नहीं? उपन्यास की इन पंक्तियों में इस बात का खुलासा हो जाता है– 'संजीव और उसके बीच कहीं कुछ दरका हुआ था। कहीं कोई गलत तार जुड़ गया था। जब भी प्रेम की रोशनी के लिए बटन दबाती फ्यूज उड़ जाता।'

जब शादी हुई तब नौकरी भी नहीं थी। संजीव ने एम.बी.बी.एस कर लिया था। उन दिनों भोपाल गैस कांड के कारण एक नया व्यापार फलने फूलने लगा था 'जो भोपाल में उस रात नहीं भी थे वो भी अब गैस प्रभावित हो गए थे.. आने वाले समय में गैस राहत के नाम पर सैंकड़ों धंधे शुरू हो गए थे।'

उपन्यासकार पूरे परिदृश्य को लेकर सचेत नज़र आती हैं। लिखा– 'पूँजीवादी संस्कृति की यही खासियत होती है कि वहाँ पूँजी ही प्रधान होती है, रिश्ते –नाते, संबंध उपयोगिता और अनुपयोगिता के सिद्धांत पर टिके होते हैं। मानवीय भावनाएँ वहाँ व्यर्थ होती हैं।'

उपन्यास में जेल का, कैदियों का, वहाँ के माहौल का चित्रण बड़ा तथ्यपरक है। श्हर कैदी पर दस–पंद्रह केस होते हैं, जिसमें वह जमानत पर बाहर आते हैं और पंद्रह

से तीन माह के बीच फिर एक नए केस में अन्दर आ जाते हैं। पुलिस जिन मुलाजिमों से परेशान हो जाती हैं और जिनके जुर्मों की फेहरिस्त बढ़ती जाती है, वे भी पुलिस एनकाउंटर से बचने के लिए जेल में घुस जाते हैं एक नये और छोटे–मोटे जुर्म के साथ। सभी तरह के कैदियों के लिए अस्पताल एक बेहतर जगह थी। 'ऐसे ही तीन वार्ड और थे.. जो सभी पूरी तरह भरे हुए थे नेताओं, अफसरों, सेठ –साहूकारों, प्रतिष्ठित लोगों से। वे सभी सज़ा पाते ही या ज्यूडिशियल कस्टडी में आकर बीमार हो जाते।'

संजीव को वहाँ जो लोग मिले, बाहर के लोगों की अपेक्षा ज्यादा ईमानदार, भावुक, धर्म निरपेक्ष और प्यार के दो शब्द सुनने के लिए तड़पते हुए लगे। 'वहाँ भी कई ऐसे इनसान थें जिन्हें दुनिया जघन्य अपराधी मानती है। वे भी कितने सहज, सरल, प्यार और अपनत्व के लिए तड़पते इंसान हैं जिन्हें समाज में सिर्फ घृणा मिली है।' सुविधाभोगी अपराधियों के लिए पैसे और रुतबे के कारण जेल के सारे लोग सुपरिटेंडेंट, डिप्टी जेलर , डॉक्टर्स और बेचारे सिपाही हुक्म बजाने वाले पियादे मात्र होते। अदालतों के फैसले सबूतों के आधार पर ही होते हैं। उपन्यास में दर्ज है और यह सबूतों की दुनिया थी। सबूतों से बनी। स्याह–सफेद। सच्ची–झूठी। और यह एक ऐसा मकड़जाल था जिसमें वह फँसती जा रही थी। 56 दिन बाद। हाईकोर्ट से जमानत मिल गई।– 'पुलिस अभी तक जरुरी तथ्य नहीं जुटा पाई थी.. केस चलता रहेगा। तारीखें लगती रहेंगी। पेशियाँ होती रहेंगी।'

27वर्ष। चार माह। अठारह दिन।

कोर्ट का फैसला आ गया था। वह निर्दोष है। संजीव का केस खारिज हो गया था। उसने खुश हो कर गले लगाया था। उपन्यास अपने घटना क्रम में संपूर्ण है। पुलिस व्यवस्था का, जेल जीवन का, अदालती कार्रवाई का सुंदर विश्वनीय चित्रण इस उपन्यास में है। निर्णय मिलने में जो इतना समय लगता है, उसे देखकर पाठक क्षुब्ध हो जाता है। पठनीय उपन्यास तो है ही। रजनी गुप्त का उपन्यास 'कि याद जो करें', 2021 में छपकर 2022 में चर्चित हुआ। यह एक जीवनीपरक उपन्यास है, जो कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी पर आधारित है। सामान्य जीवन में बाहर से कई बार अनुमान लगाना भी कठिन हो जाता है कि किसी के जीवन में विपरीत परिस्थितियों में किस तरह का कितना संघर्ष होता रहा है। रजनी गुप्त इस उपन्यास में जीवन का ऐसा सिलसिला उपस्थित कर पाई हैं, जो उनके यश, साहित्यिक उपलब्धियों का विवरण तो प्रस्तुत करता ही है, उनकी पारिवारिक समस्याओं का तथा उनकी समय समाज में हो रही आलोचना की भी उपेक्षा नहीं करता। ऐसे उपन्यास की रचना में उपन्यास के गठन और जीवन की घटनाओं दोनों को संभालना होता है और रजनी गुप्त इसका निर्वाह ठीक से कर पाई हैं।

लड़कपन में मैथिली पाठशाला से लौटकर आते तो नियम से गेंदबाज़ी, पतंगबाज़ी, तैराकी या शतरंज व चौपड़ जैसे खेलों में से आम सहमति से कोई एक खेल चुन लेते और जमकर खेलते। फिर कभी बेतवा नहर के पास जाकर कूद–फाँद करते या पीठ से टीन का कनस्तर बाँधकर बेतवा नहर में तैरना सीखते। मैथिली का मन तैरने में इतना रमता कि मौका मिलते ही तैरने निकल जाते। उनकी खिलंदड़ी दिनचर्या से पिताजी खासे चिंतित हो उठे। ठीक से पढ़ने में मन लगता नहीं तो आगे कैसे गुजारा करेगा? अपने मित्र अजमेरी कहा कि वह बिगड़ रहे हैं। आवारा लड़कों के साथ घूमते हैं। बाजार में चाहे जहाँ आल्हा पढ़ने बैठ जाते हैं। घर पर ही उन्हें संस्कृत और हिंदी का ज्ञान दिया जाने लगा। ब्रजभाषा में दोहा, चौपाई और छप्पय लिखना शुरू किया। जब वे लिखने की रौ में होते तो उनपर एक नशा सा तारी हो जाता.. स्लेट लेकर बैठ जाते और जो कुछ रचते जाते, उसे स्लेट पर लिखते जाते। कविता पूरी होने पर काग़ज़ पर उतारते। संपादन संशोधन के साथ। उन्होंने तेज़ी से 'अमरकोश', 'लघुसिद्धांत कौमुदी', 'रामचरितमानस' 'अध्यात्मरामायण', 'रघुवंश' जैसी न जाने कितनी क्लासिक रचनाओं का अध्ययन–मनन कर लिया। समय के साथ–साथ पिता जी को उनकी कविता की गहराई का अहसास होता गया। नौवीं कक्षा में पढ़ने के लिए उन्हें झाँसी भेजा गया। वहाँ न तो घर जैसा भोजन, न घर जैसी आजादी। वह कभी इतिहास–भूगोल तो कभी गणित के सवालों में माथा पच्ची करते रहते मगर मन न लगता। शाम होते ही नाटक देखने निकल पड़ते।

अंग्रेजी भाषा वैसे भी कठिन लगती थी, रुखी–सूखी और बेजान। फिर एक पत्र भैया को लिखा – 'मैं जानता हूँ कि आप मेरे निर्णय से खुश नहीं होगें कि मैं घरवालों के डिप्टी कलक्टर या ऊँचा अधिकारी बनने का सपना पूरा नहीं कर पा रहा पर मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि घर पर रहकर मैं पिता जी का कहा सब कुछ करूँगा। वैद्य बनने का प्रयास करूँगा।'

परतंत्र भारत की दशा सामने थी। 'उनके अंतस में बसी भारतीय संस्कृति और सनातन वैष्णव धर्म से जुड़ी उदात्त भावनाएँ अलग ढंग से हिलोरें लेने लगीं।' उनकी पहली रचना 1906 में प्रकाशित हुई। 'रंग में भंग' और 'जयद्रथ वध' जैसे खंडकाव्य तो भारत–भारती 'से पहले छप कर धूम मचा चुके थे।' 'सचमुच वे इस सचाई को बखूबी जानते और महसूस करते थे कि संवेदना ही रचना की आत्मा है।'

मैथिली का विवाह रामादेवी से हुआ। उन दिनों चिरगाँव में प्लेग का प्रकोप फैला था। पिता चल बसे और सात महीने की गर्भवती जिया भी बेटी को जन्म देकर उसी के संग खुद भी भगवान को प्यारी हो गई। उन्हें लगातार दुखों का सामना करना पड़ा है। जिनमें अपनों को खोने का दुख सबसे बड़ा है। ये वे दिन थे जब राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, केशवचंद्रसेन जैसे समाज सुधारकों ने अपनी तेजस्वी वाणी से धूम मचा दी थी। 'रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और स्वामी रामतीर्थ

का ज़ोर इस बात पर था कि धार्मिक, आध्यात्मिक और पुनरुत्थानवादी चेतना का प्रचार –प्रसार होने लगा।' मैथिली शरण का कवि मन उच्चतर मानवीय मूल्यों के प्रति सम्मान के साथ भर गया।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी झाँसी के रेलवे आफिस में नौकरी करते थे, ये उनसे मिलने गए। और उन्हें अपना काव्य गुरु मान लिया। नव जागरण के दौर में राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रवाद उनकी कविताओं का मूल स्वर बनता चला गया। अब कला कला के लिए नहीं, का उद्घोष उनके सामने था –

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

चंद्ररेखा ढडवाल का उपन्यास 'आग' पर्वतीय अंचल के एक छोटे से गाँव की कहानी लेकर आता है, जिसमें ग्रामीण जीवन का संघर्ष तो है ही, एक मनमौजी स्वभाव की लड़की लोइना का जीवन संघर्ष और प्रेमाग्नि उपन्यास को दिलचस्प तो बनाता ही है, स्त्री जीवन के संघर्ष और जिजीविषा को भी खूबसूरत ढंग से सामने लाता है। लोइना के घर में ही खेत–खलिहान में काम करने वाला लड़का प्रीतो है। दोनों एक–दूसरे के होने का मतलब अच्छे से जानते हैं। जब गुड़िया जैसी लोइना का विवाह हो रहा था, प्रीतो का मन कुछ अलग सोच रहा था। वह चार साल बड़ा था उससे। जानता था विवाह का मतलब। ससुराल में घर–गृहस्थी संभालनी होगी इसे। ताल–तलैया और खेत –खुराट में घूमने की आज़ादी नहीं होगी। लोइना का विवाह एक फौजी से कर दिया गया। फौजी पति को अगले ही दिन मोर्चे पर जाना पड़ता है और मिसिंग करार दिया जाता है। लोइना का जीवन दुश्वारियों से भर जाता है। एक तो हमारे समाज में विधवा को मनहूस करार दिया जाता है। दूसरे लोइना के प्रसंग में सोचें तो एक चुलबुली सी, मासूम सी लड़की जिसने जवानी में अभी कदम ही रखा हो, ऐसे संताप को कैसे बरदाश्त कर सकती है? 'सोलह बरस की लोइना के चेहरे पर छब्बीस बरस वाला ठौर था। आँखों में, जिनमें हर पल एक चहक और हड़बड़ी दिखाई देती थी। हद दर्जे का खालीपन था। ..मसाणी शांति थी उसके हाव भाव और बातों में।' पहले मायके लौट आई। फिर ससुराल भेज दी गई। सास मस्या भी कम परेशान नहीं थी। उसने गबरू जवान पुत्र खोया था। कहा –उसे खा गई मुई लड़ाई। क्यों होती हैं लड़ाइयाँ लोइना? 'बड़ा सवाल था परंतु आज तक कानों में गूँज रहा है। क्यों होती है लडाइयाँ? वे किसी लोइना को विधवा बनाती हैं किसी मस्या का बेटा छीन लेती हैं। दोनों का संताप एक –दूसरे को करीब ले आया। एक ने बेटा तो दूसरे ने सुहाग खोया था। सास मस्या फिक्रमंद थी उसकी कोरी –नकोर जवानी के लिए।

कथा आगे बढ़ती है तो लोइना की अपने सम्मान, स्वाभिमान, और बाधाओं से पार पाने की योग्यता और क्षमता भी सामने आती है। वह स्त्री पुरुष को बराबरी के आधार

पर देखना चाहती है। सास से कहती है– पति–पत्नी दोनों बराबर होते हैं अम्मा! यह क्या हुआ कि आदमी अपना रोज़ का नित–नियम भी अपने से न निभा सके। हाँ कोई बूढ़ा–बीमार और अबेजार हो तो और बात है।

जब छोटी चाची का सपूत उसे अकेली और अबला जानकर जबरदस्ती करने पर उतर आता है, वह चमकती तलवार बन कर सामना करती है। अपने हक के लिए पंचायत बुलाने के लिए तैयार हो जाती है। स्वाभिमान के साथ सास से कहती है– किसी का संग–साथ तो ढूँढने से रही। हाँ तूत की छिटी रखूँगी अब से हाथ में।

मस्या सास को लगने लगा कि यह बित्ते भर की लड़की मजबूत इतनी है कि किसी की लोलुप नजर का आकर्षण नहीं बाँधता इसे। लोइना लो ही नहीं, यह तो आग भी है।

गाँव के संबंधों में ज़मीन की बड़ी भूमिका रहती है। इसी प्रलोभन में अत्याचार भी होता रहा है खास कर स्त्रियों के प्रति। मस्या बताती है कि विधवा हो जाने पर परिवार के ही आदमी से झंझड़ाड़ा करके विधवा पर चादर डलवा दी जाती है कि घर की ज़मीन का बँटवारा न हो । खासतौर तब जब विधवा स्त्री का बाल–बच्चा न हो या लड़कियाँ ही हों। ज़मीन की चिंता में यह, सारा प्रपंच, दुखियारी स्त्री को सहारा देने के नाम पर किया जाता है । इस डर से कि वह अपना हिस्सा अपने भाई–भतीजों को न दे दे। ज़मीन पर कब्जे के लिए कितने गुनाह हुए होंगें, इसका हिसाब किसी भी चतुर चलाक पटवारी के पास भी नहीं होगा। इसके समर्थन में कई कहानियाँ भी मौजूद हैं। उन दिनों बेटियाँ अपना हिस्सा–विस्सा नहीं लेती थीं आज भी कहाँ लेती हैं। बहनों के भाइयों पर कुरबान हो जाने की ही रीति–नीति सही मानी जाती रही है। लोइना की समझ अनुभव से विकसित हुई। एक मंत्र गाँठ बाँध लिया लोइना ने कि अपनी मुक्ति, अपने फैसले और कर्म से ही संभव है। अब वह जमाने का सामना करने को तैयार है। कहती है– 'सीधी–सादी निरी गऊ बने रहने में भी कोई ज्यादा भलाई नहीं है।' अन्य कहानियों में मंगला की कहानी भी प्रेरक है। पति ट्रक चलाता था। किसी बड़े शहर में दुर्घटना ग्रस्त हो गया। पति के नहीं रहने पर सिलाई मशीन पर कपड़े सी कर बेटियों को पाल–सँभाल रही है। हार नहीं मानी।

प्रीतो के प्रति लोइना का मन भावुक रहा। कुश्ती जीत कर आया तो चाहा कि जीते हुए पैसों से बादाम खरीद लाए। रोज चार भिगो दिया करेगी। सुबह दूध में घोट कर पी लिया करे।

वह भी लोइना को जी जान से चाहता था।

सपने पूरे होने का वक्त आ गया था।

उपन्यास अपने भीतर ग्रामीण संस्कृति, वहा की बोली, वहाँ की रस्में, कथाएँ समेटे हुए है। इस सब में आंचलिकता का बोध होता है। यदि उपन्यासकार उपन्यास के संपादन पर भी थोड़ा ध्यान देतीं तो इसके प्रभाव में और भी इजाफा हो सकता था। परंतु तब भी कथा बाँधने वाली है। लोइना का आत्म विश्वास, जीने का तरीका आकर्षित करता है। सास मस्या की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

लाजपत राय गर्ग का उपन्यास 'अनूठी पहल' एक खास मकसद के साथ रचा गया है। हमारे मेडिकल कालिजों मे मेडिकल की पढ़ाई और योग्यता के लिए मृत–शरीरों की जरूरत पड़ती है। विद्यार्थियों के लिए यह व्यावहारिक स्तर पर बड़ी जरूरत होती है, जिसका अक्सर अभाव देखा गया है। उपन्यासकार को लगता है कि इस दिशा में जागरुकता लाने के लिए रक्तदान की भाँति जन–अभियान बनाने की जरूरत है। इसमें बाधक है हमारी रुढ़िवादी सोच। लेखक इस सोच को बदलने और समाज के विभिन्न लोगों को आगे आने के लिए प्ररित करता है। उपन्यास में भारत विभाजन के दृश्य काफी मार्मिक हैं। इस उपन्यास को भी ठीक से संपादित करने की जरुरत बनी रही।

इधर 2022 में ही हिंदी में अनुवादित उपन्यास भी आए हैं। 'तै की दर्द न आया' उपन्यास पंजाबी कथाकार मुख्तियार सिंह द्वारा रचित है, जिसका हिंदी अनुवाद सुभाष नीरव ने किया है। सुभाष नीरव कुशल अनुवादक हैं। यह उपन्यास इसलिए भी उल्लेखनीय है कि यह हाशिए पर धकेल दिए गए पात्रों की गाथा कहता है। इस उपन्यास में दो कथाएँ समानांतर रूप से चलती हैं। करनैल सिंह और संतो की तथा हैप्पी और निक्की की। करनैल सिंह और संतो आर्थिक कारणों और देह के स्तर पर एक–दूसरे से संबंधित हैं, जबकि हैप्पी और निक्की बहन–भाई हैं। माँ–बाप के रहते भी वे यतीमों जैसा जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। परंतु एक –दूसरे के साथ स्नेह संबंध से जुड़े हुए हैं। इनके जीवन का संघर्ष उपन्यासकार ठीक से चित्रित कर पाये हैं। जिन पात्रों का उल्लेख किया गया है (संतो, बुधु, हैप्पी और निक्की) एक परिवार के तौर पर जिस बस्ती में रह रहे हैं वे सामाजिक स्तर पर उपेक्षित हैं और जीवन यापन के लिए मजदूरी कर रहे हैं। मजदूरी एक अभिशाप है इनके लिए क्योंकि शोषण केंद्रित है। संतो घरों में साफ–सफाई का काम करती है और उसका पति ठेकेदार के यहाँ ट्रेक्टर ट्रॉली चलाता है। वह नशे को गले लगा बैठता है। विवशतावश वह बच्चों को घर छोड़ करनैल सिंह के पास चली जाती है और करनैल सिंह के लड़कों द्वारा करनैल सिंह सहित संतो मारी जाती है। हैप्पी बहन के लिए आगे आता है, निक्की को पढ़ाने और पालन–पोषण के लिए संघर्ष करता है। यह जीवन संघर्ष और सकारात्मकता उपन्यास में महत्वपूर्ण है। उपन्यास में समयगत बदलाव भी चित्रित हैं कस्बे के बाहर कालोनियाँ बन रही हैं बस्तियों के हालात गाँव जैसे ही हैं। उपन्यास की सफलता हाशिए पर धकेले गए वर्ग के यथार्थ चित्रण में है। अनुवाद कुशलतापूर्वक हुआ है।

कोशिश रही है कि 2022 के अधिकांश उपन्यासों की चर्चा कर पाएँ। संभव है कुछ उपन्यास छूट भी गए हों। उनके प्रति हमारा कोई उपेक्षा का भाव नहीं है। इन उपन्यासों में मनुष्यता के संकट हैं। मानव स्थिति पर पुनर्विचार है और हाशिए पर फेंके लोगों के प्रति दर्द है। रोचकता में कोई कमी नहीं है।

❑❑❑

हिंदी कविता

22



कृष्ण कुमार 'कनक'

हिंदी और संस्कृत में बराबर लेखन, प्रमुख कृतियाँ– 'लहरों का संगीत, 'दर्द की बाँसुरी', 'जुगल छवि बिसराऊँ कैसे', 'तीसरी आँख और सजल', 'हिंदी गीत परंपरा में नवगीत' आदि अनेक रचनाएँ प्रकाशित। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान का पद्मभूषण, गोपाल दास नीरज प्रथम स्मृति सम्मान तथा डॉ. रांगेय राघव सर्जना सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित। संप्रति–मुख्य सचिव, शोधार्थी संघ, भारत।

आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में 'रससिक्त वाक्य ही काव्य है, इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यहाँ यह समझना परम आवश्यक है कि 'काव्य' तथा 'कविता' एक–दूसरे के पर्याय नहीं हैं, अपितु पर्याप्त अंतर के साथ उपस्थित हैं। यानी कि काव्य उस प्रत्येक रचना को कहा जाता है जो मानव हृदय के भावों को उद्वेलित करने का कार्य कर सकने की क्षमता से संपन्न है। इसे गद्यकाव्य, पद्यकाव्य तथा चंपूकाव्य के रूप में विभाजित करके आसानी से समझा जा सकता है। वहीं पद्यकाव्य भी विविध विधाओं का समूह है। कविता इसी समूह का अंग है। काव्य तथा कविता को परिभाषित करते हुए मैं यही कहना चाहूँगा कि मानव हृदय में वैचारिक चिंतन तथा बाह्य एवं आंतरिक प्रभावों के संकर्षण से उत्पन्न उद्वेलित भावों की रसपूरित संप्रेषणीयता ही काव्य है तथा उसमें लयात्मक व रागात्मिका वृत्ति का समावेश उसे कविता बनाता है।

हिंदी कविता अपने विविध सोपानों से गुजरती हुई शीर्ष पर प्रतिष्ठित हुई है। इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों ने इसे प्रमाणित भी किया है। हिंदी शोधार्थी संघ, भारत की अध्यक्ष आदरणीया चंचल माहौर जी की आलोचनात्मक कृति 'कामायनी का बिंब विधान' इस परिप्रेक्ष्य में एक आदर्श एवं मानक स्थापित करने वाली अनुकरणीय आलोचनात्मक कृति है। इस कृति में लेखिका ने आलोचना के नवीन प्रतिमानों की स्थापना के साथ–साथ काव्य मीमांसा के नवीन धरातल की खोज के माध्यम से उत्कृष्टता के वैभव का अनुलंब प्रतिस्थापित किया है। निस्संदेह यह कृति काव्यात्मक कृतियों के शैल्पिक व कलात्मक अनुशीलन के प्रतिमानों का नवीनीकरण करने तथा नवीन उपादान प्रतिष्ठित करने हेतु सफल साहित्यिक उपलब्धि है। वर्ष 2022 में विशेष

रूप से जिन कृतियों ने हिंदी साहित्य को सुसंपन्न बनाने में अपनी भूमिका निभाई है उन्हें निम्नवत् स्वरूप में जानने का एक प्रयास प्रस्तुत है।

प्रथमतया बात करते हैं एक ऐसी विधा की जिसे अंग्रेजी में सोनेट कहा जाता है। सोनेट मूल रूप से एक ऐसी विधा है जो शिल्पगत दृष्टि से तो कविता ही होती है, किंतु इसे तुकबंदी कहा जाना अधिक समीचीन है। इस विधा में कला पक्ष या भाव पक्ष की अपेक्षा ध्वनि साम्य अधिक महत्वपूर्ण होता है, जो हृदय को आह्लादित करने के मूल उद्देश्य के लिए ही सृजित किया जाता है। सोनेट को और अच्छी तरह समझने के लिए ब्रजभाषा के एक सोनेट का उदाहरण देखें–

एक चिरैया तोता ताई।
कान में धरिकें पैसा लाई।
धर दै बेटा घास में।
ब्याह करूँ बैसाख में।

– जनश्रुति से संकलित उपर्युक्त सोनेट का साहित्यिक अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ केवल तुकबंदी ही की गई है। इन पंक्तियों में जो कुछ भी कहा गया है, वह यथार्थ के धरातल से बहुत दूर है, तथापि यह रचना हृदय को आह्लादित करने में पूर्णरूपेण समर्थ है। इसी प्रकार ब्रजांचल के गाँवों में विजय दशमी के दिन से आगामी पूर्णिमा तक प्रतिदिन बालक टेसू तथा बालिकाएँ झाँझी के साथ खेलती हैं। ये बच्चे छह दिन तक घर–घर जाकर आटा, दाल, नमक, मिर्च, पैसा आदि माँगकर लाते हैं और पूनों (पूर्णिमा) के दिन टेसू और झाँझी का विधिवत विवाह कराते हैं। ब्रजांचल में इसी दिन के बाद से शादियों के मुहूर्त प्रारंभ हो जाते हैं। इस खेल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कोई भी व्यक्ति चाहे जितना पैसे वाला हो या चाहे जितना गरीब, सब एक–दूसरे के घर माँगने जाते हैं। प्रत्येक घर में टेसू–झाँझी का विवाह होता है। कुछ गाँवों में तो पंचायती टेसू और झाँझी लाए जाते हैं यानी कि पूरे मुहल्ले के पुरुषों और महिलाओं का एक बड़ा टेसू और एक बड़ी–सी झाँझी। इस प्रकार के पंचायती टेसू और झाँझी का विवाह भी बड़ी धूमधाम से होता है। यानी की न्यौता लगाकर ब्याह, बारात, दावत आदि सबकुछ। विवाह संपन्न होने के तुरंत बाद ही टेसू और झाँझी दोनों को तोड़–फोड़ कर दिया जाता है। और फिर लोग रातभर चांदनी के साए में खूब नाचते, गाते और कबड्डी, खोखो आदि अनेक खेल खेलकर उत्सव मनाते हैं। साथ ही ध्यातव्य यह भी है कि जिस घर में बेटा नहीं होता, वहाँ टेसू नहीं आता और जहाँ बेटी नहीं होती, वहाँ झाँझी नहीं आती। ऐसे घरों में टेसू के दिनों में बेटी और बेटे की बराबरी की महत्ता का आभास अवश्य ही किया जाता है। इस अवसर पर जो भी गीत गाए जाते हैं, वे भी सोनेट का ही उदाहरण हैं। ब्रज भाषा का एक टेसू गीत देखें–

एक चबन्नी चाँदी की।
बामें निकरे गांधी जी।
गांधी जी ने काता सूत।
बामें निकरे टेसू भूत।
टेसू भूत ने करी कमाई।
सब बच्चन पै भीख मंगाई।
तौऊ मर गए खसम लुगाई।

(जनश्रुति से संकलित)

इसी प्रकार का एक टेसू गीत और देखें–
टेसू की गैया कचपैंदरिया असी डला भुस खाय।
बड़े ताल कौ पानी पिए और हगन बटेश्वर जाय।
हगन बटेश्वर की दौ तालैया रपटि परे गोपाल।

(जनश्रुति से संकलित)

एक अतिश्योक्तिपूर्ण सोनेट देखें –
झील झिलारे पिय,
जां मति बसियो,
जां मांछर की खानि।
मांछर मारौ नौ पुर बने,
बत्तें बनी करोर।
हाथिनु कूं हौदा बने,
ऊंटनि क्यूं बगड़ोर।

(जनश्रुति से संकलित)

उपर्युक्त सभी उदाहरण ब्रजांचल में प्रचलित ब्रजभाषा के सोनेट के हैं, किंतु हिंदी साहित्य में इस प्रकार की रचनाओं को किसी विशेष साहित्यिक महत्व का न होने के कारण संज्ञान में नहीं लिया गया। यही कारण है कि इस प्रकार की रचनाओं के लिए हिंदी में कोई विशेष नाम भी नहीं दिया गया। परंतु अंग्रेजी साहित्य में इस प्रकार की रचनाओं को सोनेट के नाम से जाना जाता है। अंग्रेजी साहित्य में इन रचनाओं को प्रतिष्ठा भी खूब मिली है।

उच्च शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश के शासकीय महाविद्यालय में अंग्रेजी–विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ. विनीत मोहन 'औदीच्य' जी ने अंग्रेजी साहित्य में विगत एक हजार वर्षों में लिखे गए प्रमुख सोनेट वर्ष 2022 में प्रकाशित अपनी कृति 'ओ प्रिया', 'काव्य कादम्बिनी' तथा 'सिक्त स्वरों के सोनेट' नामक कृतियों में हिंदी अनुवाद के रूप में संकलित किए हैं। इन कृतियों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अनुवादक ने काव्यानुवाद करते हुए रचनाओं की मौलिकता का पूरा ध्यान रखा है। यद्यपि

अनुवादक ने इन्हें सोनेट कहा है किंतु इस प्रकार की रचनाओं को हिंदी में भी सोनेट कहा जाना उचित नहीं समझा जा सकता। तब मैं इस प्रकार की रचनाओं को 'बगड़ोर' कहना पसंद करूँगा। पारिभाषिक दृष्टि से 'बगड़ोर' हिंदी साहित्य की वे रचनाएँ हैं जिनमें लय, तुक, गेयता तथा ध्वनि साम्य अधिक महत्वपूर्ण होता है न कि उनका कला या भाव पक्ष। ये रचनाएँ मनोविनोद एवं आनंद के लिए ही रची जाती हैं। यद्यपि किसी सैद्धांतिक उद्देश्य के लिए इन रचनाओं का सृजन नहीं किया जाता। तथापि यदि अनायास किसी मानवीय संवेदना, मानव–उत्थान, चरित्र–निर्माण, राष्ट्रीयता जैसे उच्च गुण का समावेश हो जाए तो इसे 'बगड़ोर' की वैभव संपन्नता ही कहेंगे। 'बगड़ोर' शब्द का अभिधात्मक अर्थ है एक ऐसी डोर जो नियंत्रण के काम आती है। इस प्रकार साहित्य में 'बगड़ोर' विधा के अर्थ की चर्चा करें तो इसका अर्थ होगा ऐसी काव्यात्मक रचना जिसपर लय की डोर का नियंत्रण होता है किसी भाव, विचार या सिद्धांत का नहीं। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में हिंदी साहित्यकार भी 'सोनेट' यानी कि 'बगड़ोर' विधा को सुसंपन्न बनाने में अपना योगदान देंगे।

मौलिक सृजन के क्षेत्र में जो कृतियाँ दृष्टिगत हुईं, उनमें से एक है, प्रो. सुंदर वीर सिंह यादव की कृति 'सृजन के सुमन'। यह कृति मुक्तक, कवित्त, गीत, गज़ल, कविता और दोहा नामक छह खंडों में विभाजित है। यह कवि की एकमात्र प्रकाशित कृति है। इंद्रधनुषी काव्य–सर्जना को जो तत्व जोड़ता है, वह है कवि की लोकमंगल की भावना। इसलिए कवि प्रो. सुंदर वीर सिंह यादव जी का काव्य इस भावना को मूर्त रूप देने के लिए परिपक्वता के साथ सामने आया है। एक उदाहरण देखें –

शब्द और आचरण एक हों,
सत्य और आवरण एक हों,
पंथ न भूलूं गहन तिमिर में,
स्वप्न और जागरण एक हों,
शंकाएं तक कर लें वंदन
इतना मुझे पुनीत बना दे
मुझको अपना गीत बना ले।

(पृष्ठ संख्या– 19)

कवि का एक मुक्तक द्रष्टव्य है–
चीरकर चट्टान पथ जिसने बनाया।
कंटकों की कसक में भी मुस्कुराया।
बांध मुठ्ठी लड़ गया तूफान से जो,
शीश उसको भाग्य ने हर पल झुकाया।

(पृष्ठ संख्या– 34)

एक दोहा भी देखें–

जब तक जीवन में रहे, दिशाहीन बिखराव।
तब तक मिलता है नहीं, 'सुंदर' सुखद पड़ाव।।

(पृष्ठ संख्या– 135)

इसी कृति में संकलित एक गज़ल का मुखड़ा और एक शेर भी देखें–

लालच के कंधों पर अर्थी संबंधों की है।
प्रगति व्यक्ति की अब केवल काले धंधों की है।
हम भी आज विलास भोगते पाँच सितारों में,
किंतु वर्जना बस मूल्यों के प्रतिबंधों की है।

(पृष्ठ संख्या– 95)

'प्रयोगशाला' शीर्षक से कवि के कविता की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

बड़े–बड़े शहरों में
तेजी से पनपने वाली गंदी बस्तियाँ
किसी अति दूरदर्शी आधुनिक कर्णधार की
बहुउद्देशीय, महत्वाकांक्षी,
निशुल्क, स्वपोषित एवं स्वचालित प्रयोगशालाएँ हैं।

(पृष्ठ संख्या– 116)

कवि ने प्रस्तुत कृति में अपने समग्र जीवन के अनुभवों को काव्य के विविध स्वरूपों में ढालकर प्रस्तुत किया है।

वर्ष 2022 में कोटा, राजस्थान निवासी डॉ. गोपाल कृष्ण भट्ट 'आकुल' जी की दो कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। 'एक नई दस्तक देनी है' नवगीत–संग्रह है तथा 'तन में मन की बावड़ी' कुंडलिया छंद–संग्रह है। रचनाकार एक प्रतिभासंपन्न कवि है। उसने कविता के लगभग सभी स्वरूपों पर अपनी कृतियों का सृजन किया है। कवि न केवल कवि है अपितु वह काव्यशास्त्रीय ज्ञान से भी परिपूर्ण है। वह जिस विधा की कृति का सृजन करता है, उसकी पृष्ठभूमि में उस विधा से संबंधित सभी प्रमुख बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करता है। कवि ने अपनी इन दो कृतियों में भी इसी परंपरा का निर्वाह किया है। नवगीत–संग्रह के प्रारंभ में कवि ने स्वयं के द्वारा स्वयं का ही साक्षात्कार लेकर ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं जो नवगीत के संबंध में पूछे जा सकते हैं। इस प्रकार नवगीत विधा पर कवि का स्वसाक्षात्कार निस्संदेह नवगीत–विधा पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस कृति में से एक नवगीत उदाहरणार्थ प्रस्तुत है –

रजनीगंधा बनकर
मेरे जीवन में आई हो ।
महक गई रातें मेरी

कुछ यूं मन को भाई हो।
भटक रहे हो कस्तूरी मृग
जैसे सुंदर वन में।
भरे हुए हो कई स्वप्न
जैसे अधखुले नयन में।
बदरी बरसा गई मेरे
जीवन में इक अमृत घट।
रजनीगंधा महक उठी है
सूखे वृंदावन में।
चमक चाँदनी बनकर मेरे
जीवन में आई हो।
चमक गई रातें मेरी
कुछ यूं मन को भाई हो।

(पृष्ठ संख्या– 127)

कुंडलिया संकलन 'तन में जल की बावड़ी' में संकलित एक कुंडलिया देखें–

पानी–सा निर्मल बने, मानव का व्यवहार।
जैसी संगति बैठिए, फल उसके अनुसार।।
फल उसके अनुसार, निर्वहन जैसा करते।
देशकाल हालात, आचरण वैसा भरते।।
पढ़ 'आकुल' के छंद, कह गए ज्ञानी मानी।
जो न कुशल व्यवहार, उतरता उनका पानी।।

(पृष्ठ संख्या– 65)

संगिनी प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित 'अलकांजलि' नामक साझा काव्य–संग्रह अलका गुप्ता 'प्रियदर्शिनी' जी के सार्थक प्रयास का प्रतिफल है। इस संकलन में देश भर के कुल ग्यारह रचनाकारों की कविताओं को संकलित किया गया है। उदाहरणार्थ– फिरोजाबाद उत्तर प्रदेश निवासी डॉ. अंजु गोयल की रचना के अंश देखें–

बात बात पर क्रोधी स्वर में
सदा चीखना चिल्लाना।
क्या यही तुम्हारी है मानवता?
सच–सच मुझको बतलाना।
मौन अधर और झुके नयन
जिसको सब कहते खामोशी।
मिलती–जुलती सी मदहोशी।
इस भाषा को सीखो प्यारे

फिर देखो तुम अजब नजारे
गर चूके होगा पछताना
समझ न आए तो बतलाना।

(अलकांजलि, पृष्ठ संख्या – 20)

इसी संकलन में संकलित एक पूर्णिका के कुछ अंश द्रव्य हैं–

जिंदगी है मिली हर खुशी के लिए,
हम करें बस दुआ हर किसी के लिए।
साथ तो रूह भी छोड़ देती यहाँ,
क्या करें गम यहाँ बस खुदी के लिए।
क्यों रहे फासला प्यार तो है खुदा,
प्यार बस हम करें बंदगी के लिए।

(अलकांजलि, पृष्ठ संख्या – 34)

इसी संकलन में डॉ. सुलोचना शर्मा की कुछ पंक्तियां देखें–

इस निराशा उबाऊ एकाकीपन से इतर
आओ हम कुछ और बातें करें
उगते सूरज को देखें और भूल जाएँ।
निराशा की कालिमा को जिसने निगल
लिया है हमारी खुशियों, को
खो जाएँ उसके असीम ऊर्जावान रंगों में हम
अरुणोदय की बात करें।

(अलकांजलि, पृष्ठ संख्या – 97)

प्रस्तुत संकलन की रचनाएँ बहुत उच्च कोटि की तो नहीं हैं किंतु कुछ रचनाओं में काव्यतत्व के गुण अवश्य ही दिखाई देते हैं। पूरी कृति को देखने पर यही लगता है कि इसे जबरन तैयार किया गया है। यानी कि रचनाओं की गुणवत्ता पर बिना ध्यान दिए सिर्फ आर्थिक सहयोग के आधार पर रचनाकारों की रचनाओं को सम्मिलित कर लिया गया है। यही कारण है कि इस पुस्तक का बाह्य आवरण जितना सुंदर है उतनी ही घटिया रचनाएँ संकलित हैं। स्थिति यह है कि उदाहरण देने हेतु पंक्तियाँ खोजने में ही अथाह श्रम लग गया।

साँझा संकलन निकालना आजकल एक खेल–सा बन गया है। हर किसी को संपादक बनने की ऐसी उत्कट अभिलाषा रहती है कि वह चार–छह रचनाकारों से उसकी आठ–दस रचनाएँ और हजार, दो हजार रुपए लेकर एक कचरे का पुलिंदा तैयार करके पुस्तकार छपवा देता है और फिर उसे पाठकों के बीच परोस देता है। परिणाम यह हो रहा है कि हमारी नई पीढ़ी इस कचरे को पढ़कर यही समझती है कि यदि कविता यह है तो इससे बेहतर तो ऊलाला–ऊलाला वाले फिल्मी गीत और

जोश टॉक जैसे रियलिटी शो की कहानियाँ ही बेहतर हैं क्योंकि उनमें से पहला मज़ा देता है और दूसरा मार्गदर्शन। अतः आज आवश्यकता है कि पुस्तकों का ढेर लगाने की अपेक्षा श्रेष्ठ सृजन किया जाए।

मैं कुछ दिनों पूर्व एक कार्यक्रम में था। वहाँ मंच पर एक नामी गिरामी प्रोफेसर मुख्य अतिथि थे। उन्होंने लगभग पचास से अधिक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से अधिकांश स्वामी विवेकानंद जी से संबंधित हैं। वे कह रहे थे कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में पुस्तकें अवश्य लिखनी चाहिए। मैं आश्चर्य में था पहला प्रश्न मेरे मन में यह आया कि यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में कोई पुस्तक नहीं लिखी तो क्या उसका जीवन व्यर्थ है? और दूसरा यह कि यदि ऐसा हुआ तो धरती पर पुस्तकें रखने हेतु स्थान न रहेगा। तब उन्हें पढ़ेगा कौन? जब व्यास भगवान ने सत्रह पुराणों की रचनाएँ करने के बाद विचार किया कि इतनी पुस्तकों को कैसे पढ़ा जाएगा। इसलिए उन्होंने सभी पुराणों के सार के रूप में श्रीमद्भागवत महापुराण की रचना करके पाठकों को एक श्रेष्ठ विकल्प उपलब्ध कराया। साथ ही महाभारत महाकाव्य की रचना भी व्यास जी द्वारा इसी उद्देश्य से की गई। इस सबको बताने का आशय मात्र इतना है कि सृजन कम हो या अधिक किंतु पाठकों के मध्य गुणवत्तापूर्ण सामग्री ही प्रेषित की जाए तभी उसका मान होगा अन्यथा साँझा संकलनों के नाम पर कूड़े के ढेर बढ़ते ही रहेंगे।

नवोदित रचनाकारों को मैं एक सलाह अवश्य दूँगा कि वे ऐसे साँझा संकलनों में अपनी रचनाएँ कभी न छपवाएँ जहाँ आपकी रचना छपने का मानक केवल आपके द्वारा दी जाने वाली सहयोग राशि को ही माना गया हो। ऐसे में यदि आपकी रचना श्रेष्ठ भी हो तब भी कूड़े के बीच में पड़ी होने के कारण कूड़ा ही समझी जाएगी।

वर्ष 2022 में प्रकाशित हिंदी कविता की पुस्तकों में साहित्यिक गुणवत्ता, कला तथा शिल्प की विशिष्टता लिए हुए जो पुस्तकें हृदय के समीपस्थ होकर प्रभावकारी स्वरूप में उद्धरित हैं उनमें से एक है, अहमदाबाद गुजरात निवासी लीना खेमरिया जी की काव्य कृति 'सफर एहसासों का'। यह कृति वर्तमान काव्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें मानवीय संवेदनाओं के सभी पहलुओं पर समान सृजन किया गया है। एक उदाहरण देखें–

आहिस्ता आहिस्ता
उतर रही मैं....
अपने मन के भीतर की
टेढ़ी–मेढ़ी सीढ़ी...
जिसके नीचे बाँहें फैलाए
मुझ जैसे किसी आगंतुक का
मानो रास्ता देख रही है

एक अत्यंत भयावह
गहरी खाई.....

(पृष्ठ संख्या –57)

'भावनाओं का अंधकुंभ' शीर्षक से कवयित्री लिखती हैं

ऊँचे
नक्काशीदार महलों में
टाट के पैबंद–सा था...
मेरा प्यार
तुम्हारे लिए....
बड़ा ही असहज
बहुत ही अस्वाभाविक...
जो किसी को कभी भी
मान्य नहीं लगा
शायद तुमको भी नहीं....

(पृष्ठ संख्या –78)

कवयित्री ने वर्तमान संदर्भों में मानवीय विवशता को कुछ इस प्रकार उकेरा है–

महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की
आकांक्षा तो है मगर
दुर्योधन की तरह रिश्तों को छलने का
हुनर कहाँ से लाऊँ...

(पृष्ठ संख्या –151)

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि कवयित्री एक सशक्त रचनाधर्मिता के गुणों से परिपूर्ण यश–काया की चिर अधिकारिणी है।

'अनुभूतियों की अनुगूँज' नामक काव्य कृति जिज्ञासा प्रकाशन गाजियाबाद से प्रकाशित हुई है। भरतपुर, राजस्थान निवासी रचनाकार डॉ. सुरेश चतुर्वेदी 'सुमनेश' सूरौठ जी की यह कृति एक सौ आठ कविताओं का संग्रह है। यह संग्रह वैविध्यपूर्ण विषय–वस्तु की रचनाओं का बेजोड़ काव्य–कोश है। कवि ने अपनी रचनाओं में जीवन के विविध पहलुओं को काव्यात्मक स्वरूप प्रदान किया है। कवि ने अपनी कविताओं की विषय–वस्तु के रूप में जीवन के लगभग प्रत्येक पक्ष को स्पर्श किया है। मानवीयता, प्रेम, सद्भाव तथा संवेदना आदि महत्वपूर्ण बिंदुओं पर कवि ने विशेष रुप से पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। उनकी एक कविता का उदाहरण देखें–

कंटक मध्य पुष्प खिलते हैं,
भ्रमरों का गुंजन पल–पल।

दुःख–सुख की परवाह किए बिना,
फूलों–सा मुस्काता चल।।

(पृष्ठ संख्या –104)

कवि के एक गीत की कुछ पंक्तियाँ और देखें –

अच्छे को अच्छा दिखता है
मन भावों भरा समंदर है।
भाँति–भाँति के मनुज जगत में
मन सुंदर तो जग सुंदर है।।

कर्म करो तन–मन से ऐसे,
जो मानव को हितकारी हो।
अंतर्मन को कष्ट न पहुँचे,
हर आँगन पर किलकारी हो।
मानव का मन शंकालू होता
जो जीता भ्रम के अंदर है।
मानव सेवा बड़ा धर्म है,
मन सुंदर तो जग सुंदर है।

(पृष्ठ संख्या –159)

सजल विधा हिंदी गीत काव्य की एक प्रयोजनपरक नवोत्फुल्ल विधा है जिसका मुख्य प्रयोजन है हिंदी को हिंदी बनाए रखना। उसके हिंदीपन का अनुरक्षण और संरक्षण करना। हिंदी की पहचान को बचाए रखना। इसकी इसी विशेषता का संज्ञान लेकर अनेक हिंदी कवि जो लंबे समय से गज़ल लिखते आ रहे थे, अब वे गज़ल छोड़कर सजल लिखने लगे हैं। यवन–भाषाई मोहभंग हुआ है। विगत 5 वर्षों में अनेक सजलकारों के व्यक्तिगत एकल संग्रह प्रकाशित हुए हैं और वर्तमान में भी हो रहे हैं। इस क्रम में 'फूलों के अधरों पर कीलें' नामक सजल–संग्रह वरिष्ठ कवि श्री ज.ल. राठौर 'प्रभाकर' का प्रथम सजल–संग्रह है जोकि मध्यप्रदेश के रचनाकारों के सजल–संग्रहों की शृंखला की प्रथम कड़ी है। कुछ सजलों के उदाहरण स्वरूप पदिक देखें–

पुष्प में एक परिणित कली हो गई।
भृंग टोली उमड़ मनचली हो गई।।

लौट आईं सुखद सब बहारें पुनः।
हर हृदय वाटिका संदली हो गई।।

जगमगाने लगी हर्ष की चंद्रिका।
मन गगन मध्य दीपावली हो गई।।

सर्व समता जलद हैं बरसने लगे।

हर्ष से अब हरी हर गली हो गई।।
कंटकों में जिया एक जीवन सदा।
यश कहानी अतः मखमली हो गई।।

(पृष्ठ संख्या – 123)

एक सजल के कुछ पदिक और द्रष्टव्य हैं–
नाम यश पटल पर उनके गढ़े हुए।
चाट–चाट तलवे आगे बढ़े हुए।।
दी जमीन हमने उनकी फसल उगी।
वक्ष पर हमारे पीपल चढ़े हुए।।
हैं तटस्थ अथवा प्रतिबद्ध हैं अधर।
क्योंकि आज उनपर सिक्के मढ़े हुए।।
राम स्वर नहीं अब रावण निनाद है।
शुक पढ़ें वही जो वे हैं पढ़े हुए।।

(पृष्ठ संख्या – 135)

हिंदी कविता में अपने सुमधुर गीतों से पाठकों के हृदय पर गहरी पैठ बनाने वाले नवगीत, दोहे आदि के क्षेत्र में विशेष रूप से चर्चित, लोकप्रिय कवयित्री मधु प्रसाद ने इसी परंपरा को आगे अपनाकर इसको भौगोलिक सीमाओं से पार होने का मार्ग प्रशस्त किया। इसी छंद पर आधारित इस कृति के कुछ उदाहरण देखें–

धूप ओढ़ती
रात बिछाती रही
तुम्हारे लिए

(पृष्ठ संख्या – 75)

एक उदाहरण और देखें–
कराहते हैं
ताल लय छंद भी
पीड़ा गाती है।

(पृष्ठ संख्या – 125)

एक उदाहरण और द्रष्टव्य है–
त्रय ताप से
त्रायक मुक्त करें
त्रिधाम हेतु

(पृष्ठ संख्या – 128)

इसी वर्ष कवयित्री श्रीमती मधु प्रसाद जी का अलग–अलग शीर्षकों से लिखे गए दोहों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है। ये सभी दोहे एक से बढ़कर एक

मानव–हृदय को स्पर्श करने वाले हैं। इस कृति के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

शब्द शब्द मैं ढूँढ़ती, लिखने का अनुभाव।
मीत! तनिक जल्दी करो, भरने हैं कुछ भाव।।

(पृष्ठ संख्या – 160)

रीत रहे घट साँस के, गिनती के दिन चार।
हुई न पूरी कामना, विनत खड़ी मैं द्वार।।
सप्तक पूरी हो चली, पूरे गाए राग।
तान कहाँ फिर भी सधी, साँसें लें वैराग।।
चलो उठो अब बाँध लो, कर्मों का सामान।
पिंजरा खाली रह गया, हुए पखेरू प्रान।।

(पृष्ठ संख्या – 172)

एस.पी. कौशिक इंटरप्राइजेज, दिल्ली से प्रकाशित डॉ. स्मिता मिश्रा की काव्य–कृति 'एहसास' कवयित्री के संपूर्ण व्यक्तित्व का आईना प्रतीत होती है। कवयित्री ने इस कृति में अपने अनुभवों को इस प्रकार शब्द दिए हैं कि पाठक स्वयं को इन्हीं संवेदनाओं में एकाकार पाता है। कवयित्री ने अपनी रचनाओं में मानव–जीवन संबंधी प्रत्येक पहलू को स्पर्श किया है जो मानवीय चेतना का तादात्म्य है। इस कृति की सूचनाओं के कुछ उदाहरण देखें–

बेटों को दी शिक्षा
शानदार कपड़े
बढ़िया खाना
बेटियों को
चौका–चूल्हा, बर्तन–झाड़ू
तन ढकने को लेश मात्र कपड़े
देना था दहेज
करनी थी विदाई
करते रहे कटौती
न मिले उसे
अच्छे खिलौने
न किताबें

न बढ़िया कपड़े

(पृष्ठ संख्या – 34)

'स्त्री' शीर्षक से कविता में कवयित्री की संवेदनाओं का जो ज्वार सामने आया है उसका एक उदाहरण देखें–

हाँ मैं स्त्री हूँ

लोग मुझे अबला कहते हैं
कमाती हूँ
बनाती हूँ
खिलाती हूँ
घर सजाती हूँ
अपमान सहती हूँ
प्रताड़ना झेलती हूँ
रिश्तों को संजोती हूँ
पुरुषों को ढोती हूँ
सृष्टि की रचयिता हूँ

(पृष्ठ संख्या – 35)

कवयित्री का रिश्तों के प्रति क्या एहसास रहा है, इन पंक्तियों में देखें–

रिश्ते बनाना
जरा मुश्किल भी है
कुछ आसान भी
लेकिन
निभाना, अग्नि परीक्षा
रिश्ते
बनते भी हैं
टूट भी जाते
रिश्तों का टूटना
झकझोरता
तोड़ भावनाओं को
छीन लेता
सुख, चैन, आनंद
(पृष्ठ संख्या – 97)

सन साइन पब्लिकेशन, कानपुर से प्रकाशित 'अमृत काव्यधारा' नामक साँझा संकलन एक श्लाघनीय कृति है। इस कृति के संपादक दक्षिण भारतीय हिंदी विद्वान डॉ. एस. ए. मंजुनाथ ने इस कृति को आकार देने के लिए अथक परिश्रम किया है। इस तथ्य का प्रमाण यह है कि संपादक ने हिंदी साहित्य जगत के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय चेतना के कवियों से लेकर वर्तमान समय के विश्वभर में निवास कर रहे भारत प्रेमी कवियों तक की राष्ट्र भक्ति से अभिसिंचित श्रेष्ठ रचनाओं को संकलित करने का सारस्वत कार्य किया है। प्रत्येक कवि की रचनाएँ अपने आप में बेजोड़ हैं तथापि कुछ उदाहरण देखें–

हिम्मत, ताकत, शौर्य विहँसते तीन रंग हर्षाए हैं।
संप्रभु हम, है राज हमारा, अंतर्मन मुस्काए हैं।

(प्रो. शरद नारायण खरे, पृष्ठ संख्या – 117)

चक्रव्यूह गढ़ने वालों के अंधेरों पर जयघोष भले हों,
हम अभिमन्यु समय के रथ पर शिलालेख रखकर चलते हैं।

(कृष्ण कुमार 'कनक', पृष्ठ संख्या – 136)

दीन के ईमान के होकर रहो।
राम के रहमान के होकर रहो।
किंतु पहले ध्यान सबको ये रहे,
आप हिंदुस्तान के होकर रहो।

(डॉ. अशोक अंजुम, पृष्ठ संख्या – 139)

उत्सव का हो हर दिन
हर दिन
पुष्प सजाएँ हर अवसर का
देश हुआ अब पिचहत्तर का

(डॉ. महेश वल्लभ पांडे, पृष्ठ संख्या – 234)

यह कहानी
मातृभूमि की अब
अपेक्षित है
घोल प्राण में
अगणित तूफान
कर ध्यान
आनुषंगिक
विषयों का ज्वार
ले समाहार
वीर सपूतों का
एक ही लक्ष्य
हो प्राणोत्सर्ग
इस देश की
प्रकृति की क्रोड में
रमता जन
शिष्टाचार
पावन संस्कृति
यह राष्ट्र।

(डॉ. ऋतु माथुर, पृष्ठ संख्या – 242)

सुप्रसिद्ध कवि डॉ. सुरेंद्र प्रताप सिंह 'अमित' जी का गीत–संग्रह 'आओ हम चंदन हो जाएँ' मनीष पब्लिकेशन, सोनिया विहार, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस कृति की विशेषता यह है कि इस कृति के संबंध में जिन लोगों ने अपने अभिमत प्रस्तुत किए हैं, उन सभी ने अपनी अभिव्यक्ति गीतों में ही प्रस्तुत की है। रचनाकार का प्रत्येक गीत हृदय को छूने वाला है। कवि की रचनाधर्मिता के कुछ उदाहरण देखें–

नेह की बाती जलाओ प्रीति का दर्पण दिखाओ।
उर्मियों के प्रगति पथ पर प्रीति के आँसू बहाओ।

(पृष्ठ संख्या – 63)

प्रणय प्रस्ताव की सुकोमल भावना का एक उदाहरण और देखें–

आओ साजन मेरे हो लो।
लग सीने दो पल को रो लो।
कौन न बाँधे प्रियतम तुमको,
रेशम वाली इस डोरी में।
कौन न बाँधे प्रियतम तुमको
चाँदी वाली इस डोली में।
अनब्याही श्वासों के आगे,
चार कदम तुम भी तो डोलो।

(पृष्ठ संख्या – 82)

इसी कृति में संकलित एक रचना का कुछ अंश और देखें –

तुम जिस मृत्यु से परिचित हो
उसमें सिर्फ देह मरती है
मन अहंकार जीवित रह जाता है
मरणोत्तर जीवन और आगे की यात्रा
एक देह से छूटते ही
तुम दूसरी देह के लिए आतुर हो जाते हो
फिर यह मृत्यु कहाँ हुई?

(पृष्ठ संख्या – 149)

अहमदाबाद गुजरात निवासी सुप्रसिद्ध कवयित्री मंजु महिमा जी की तीन पुस्तकों का प्रकाशन वर्ष 2022 में हुआ है। जिनमें से प्रथम कृति 'मैं भी बोलूँ तुम भी बोलो' ट्रड्रीमिस्टर प्रेस से प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक मूल रूप से छोटे बच्चों को खेल–खेल में हिंदी सिखाने के उद्देश्य से तैयार की गई काव्यात्मक कृति है। वहीं दूसरी कृति 'काव्य व्यंजन' विविध पकवानों से संबंधित वस्तुओं के विविध संवेदी भावों का काव्य रूपांतरण है। इस कृति में मंजु महिमा जी द्वारा लिखी गई प्रत्येक कविता का अंग्रेजी में काव्यानुवाद स्मृता ध्रुव जी द्वारा किया गया है। यह अंग्रेजी

काव्यानुवाद भी प्रत्येक कविता के साथ ही प्रकाशित किया गया है। इस कृति के कुछ उदाहरण देखें–

राई : बीते क्षण
कैसे बटोरूँ?
बीते क्षणों को
राई की तरह
छिटककर बिखर गए हैं
जो
यहाँ–वहाँ
कोशिश भी करती हूँ
जो बटोरने की इन्हें
फिसल जाती हूँ
मैं
न जाने कहाँ–कहाँ।

(पृष्ठ संख्या – 38)

गुलाब जामुनः अंतर की महक
गुलाब जामुन–सा
नरम–नरम विनम्र इंसान
देखने में भले ही न हो
रसगुल्ले–सा
पर
संस्कारों की
चासनी में पगा
मीठा–मीठा
उसका व्यक्तित्व
लुभा जाता है सबको
अपने अंतर की महक से।

(पृष्ठ संख्या – 64)

खीर : अमृतोत्सव
भारत के अमृतोत्सव की ही भाँति
वर्षों से औटा–औटाकर अपने
मौलिक विचारों के दूध की
बना डाली है अब अमृत खीर मैंने।

(पृष्ठ संख्या – 94)

मंजु महिमा की तीसरी प्रकाशित कृति 'गुर्जरी पल्लव' एक संपादित हाइकु–संग्रह है। इस संग्रह में गुजरात राज्य की प्रमुख हिंदी कवयित्रियों की हाइकु विधा की रचनाओं को संकलित किया गया है। इस संग्रह में संकलित कुछ हाइकु उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं–

विलीन हुआ
महलों का वैभव
खंडहरों में

(अल्पा जितेश तन्ना, पृष्ठ संख्या – 43)

बिका इंसान
मरी इनसानियत
कौडी के मोल

(नमिता सिंह 'आराधना', पृष्ठ संख्या – 63)

बूँदों के बाण
कुम्हिलाते पत्तों में
भरते प्राण

(पूर्वा शर्मा, पृष्ठ संख्या – 86)

सच दबाया
तो ज्वालामुखी बन
फटेगा कभी

(सुषमा सीताराम अय्यर, पृष्ठ संख्या – 180)

मुंबई, महाराष्ट्र निवासी सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे.पी.बघेल जी का दोहा–संकलन 'दोहों में प्रधान' उनकी 15 वीं प्रकाशित कृति है। इसमें 1026 दोहों को संकलित किया गया है। ये सभी दोहे विविध विषयों तथा सरोकारों से संबंधित हैं। इन दोहों में तत्सम शब्दावली युक्त परिष्कृत तथा परिमार्जित हिंदी का प्रयोग किया गया है। इस संकलन के कुछ दोहे उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं–

बचिए उस वाचाल से, जो बोले रस घोल।
अप्रिय हो फिर भी सदा, सुनिए सच्चे बोल।।

(पृष्ठ संख्या – 25)

द्वार बंद कर बुद्धि के, बैठ गए जो लोग।
बने नहीं उनके कभी, खुशहाली के योग।।

(पृष्ठ संख्या – 55)

पर पीड़ा को दे दिया, उसने तप का नाम।
छुरी छुपाई बगल में, होंठों पर हैं राम।।

(पृष्ठ संख्या – 64)

इनको गौ वध पुण्य है, उनको गौ वध पाप।
झगड़ा जिसके नाम पर, वो क्यों है चुपचाप।।

(पृष्ठ संख्या – 97)

कविता होनी चाहिए, मानवता के हेतु।
दूर करे अलगाव को, रचे प्रेम का सेतु।।

(पृष्ठ संख्या – 149)

ओ.एस. विश्वविद्यालय हिसार, हरियाणा की आचार्या प्रो. सुनीता सिंह 'सुधा' जी का गीत–संग्रह 'और समीर सुगंधित है' उनकी दसवीं मौलिक साहित्यिक कृति है। इस कृति में विविध विषयों को आधार बनाकर लिखे गए कुल 111 गीत संकलित हैं। 'और समीर सुगंधित है' कवयित्री का तीसरा गीत–संग्रह है। इसमें जीवन की अनेकानेक विसंगतियों, विपरीतताओं, विरोध–अवरोधों, उथल–पुथल आदि अनेक विषमताओं के बीच आशावादिता का संदेश दिया है। इस संकलन में संकलित गीतों के कुछ अंश देखें–

इच्छाओं की छोड़ पोटली
जीवन नौका पार करें।
जब तक जीवन की साँसें हैं
निश्छल पर उपकार करें।।
अक्सर बेकाबू लहरों में
नाविक खाली रह जाता है।
सुख वाही जीवन धारा में
रेत बिछौना ही पाता है।।
आशाओं की ज्योति जलाकर
घर बाहर उजियार करें।

(पृष्ठ संख्या – 37)

प्राण दीपक झिलमिलाते जल रहे।
प्रेम के पंछी हृदय में पल रहे।
कर रहा मन घन तिमिर का सामना,
लक्ष्य कटुता शत्रुता को त्यागना।
नित्य जो अंतःकरण को छल रहे।

(पृष्ठ संख्या – 45)

वह नेह किरण दे दो मुझको,
जो जीवन आलोकित कर दे।
निज प्रेम गंग की सरिता से,
जो उर को शृंगारित कर दे।

आ मुझमें कंठ कोकिला अब,
दे मुझको शब्दों की गरिमा।
तन जगमग धवल चंद्र–सा ले,
ढक आँचल में मेरी प्रतिमा।
नित अपनी भाव भंगिमा से
उर कमल आज कुसमित कर दे।

(पृष्ठ संख्या – 71)

शुचि वेद मंत्र नित आत्म भरे,
मैं सत्य सनातन भारत हूँ।
मैं विजय पताका धर्मों की,
मैं सिंधु सभ्यता शाश्वत हूँ।
शोभित है भाल हिमालय–सा,
उर में पावन गंगा धारा।
मनु वंशज भरत, ऋषभ आत्मज
मैं सत्य एकता का नारा।
मैं संस्कृत भाषा आलोकित
अध्यात्म ज्योति आलोकित हूँ।

(पृष्ठ संख्या – 147)

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि कवयित्री ने विविध विषयों को अपने गीतों में तो ढाला ही है साथ ही उसकी शैल्पिक गरिमा बनाए रखते हुए, भावों की अभिव्यक्ति को भी यथावत साधे रखा है। निस्संदेह कवयित्री के गीत उच्च कोटि के हैं। इस संदर्भ में मेरा व्यक्तिगत विचार है कि जो नवोदित रचनाकार गीतकार के रूप में काव्य–जगत में प्रवेश कर रहे हैं वे प्रो. सुनीता जी के गीतों को व्युत्पत्ति के उपक्रम में पढ़ सकते हैं।

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, पालीवाल पार्क आगरा के हिंदी–विभाग से सेवानिवृत्त तथा भारत सरकार पद्मश्री सम्मान से सम्मानित सुप्रसिद्ध बाल कहानीकार तथा उपन्यासकार डॉ. उषा यादव जी का काव्य–संग्रह 'आओ चाँद' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। यद्यपि इस संकलन में बहुआयामी कविताओं का संकलन है तथापि ये रचनाएँ नवगीत विधा के अधिक निकट हैं। कवयित्री एक प्रतिष्ठित कथाकार है; यही कारण है कि उसकी कविताओं में यह प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। कल्पना का परिपाक उनकी प्रत्येक कविता की महत्वपूर्ण विशेषता बनकर सामने आया है। भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों ही दृष्टियों से सभी रचनाएँ उत्कृष्ट कोटि की हैं। इस कृति में सरस्वती वंदना सहित कुल 104 कविताओं का संकलन किया गया है। कुछ कविताओं के अंश देखें–

सुरमई बादल गगन पर छा गए।
देखते ही देखते
गहरा उठी है श्यामता
झुक रहे हैं मेघ नीचे
किस वजह से क्या पता
धरा का मुख चूमने को
कदाचित अकुला गए

(पृष्ठ संख्या – 49)

गीत कंठ तक आते आते
क्यों थम जाते
पहले हम चिड़ियों की चहकन
साथ चहकते थे
पुरवैया के बहके कदमों
साथ बहकते थे
कोयलिया की कुहू कुहू
खुश हो दोहराते

(पृष्ठ संख्या – 56)

भारतीय भाषाएँ सारीं
सुमन देश उपवन
शत शत करें नमन
इन फूलों में गंध मार्दव
इनकी शोभा अतुलित अभिनव
ये मुखरित मत समझो नीरव
अपनी प्यारी भारत माँ का
इनसे हो अर्चन

(पृष्ठ संख्या – 83)

एक उदाहरण और देखें–
जिसका प्रभु पर अटल भरोसा
उसको कैसा डर–संशय है
भक्त हृदय तो सदा अभय है
जब चिंता निर्मूल हो उठे
स्वार्थ पाँव की धूल हो उठे
फूलों में तब्दील अचानक

हर मुश्किल हर शूल हो उठे
तब समझो पापों का क्षय है

(पृष्ठ संख्या – 120)

डॉ. उषा यादव जी की दूसरी काव्य–कृति 'मत हँसो इतना' भी इसी वर्ष नमन प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। इस कृति में समसामयिक विषयों पर कुल 101 कविताएँ संकलित हैं। कविताओं का कला–कौशल व भाव लावण्य इतना प्रभावकारी है कि पाठक इन रचनाओं में डूबता हुआ स्वयं को अभिभूत पाता है। इस संकलन में संकलित कुछ कविताओं को उदाहरण स्वरूप देखें –

ऐसा लगता कभी कभी हम
जीते नहीं पलों को ढोते
सारी सुविधाओं के होते।
मन करता है चाय सुबह की
काश! कभी तो होती मीठी
लेकिन दो चम्मच चीनी के
बावजूद वह रहती सीठी
स्वाद उतर जाए जो भीतर
उसे भोर की बेला खोते

(पृष्ठ संख्या – 29)

मत कहो फेहरिस्त कामों की बड़ी
कभी तो फुर्सत निकालो दो घड़ी।

(पृष्ठ संख्या – 71)

उसे मिला था घर का कोना
कब तक उस कोने को पकड़े
करती खाना–पीना–सोना।
क्या अनंत बंदी जीवन में
घुट–घुटकर वह रहती जीती
मुँह सिलकर वह खाती रहती
और आँसुओं का जल पीती
होना था विस्फोट एक दिन
संबंधों का चिथड़े होना।

(पृष्ठ संख्या – 119)

एक उदाहरण और देखें–
भले कहो तुम इसे सेल्फी
पर है गहरा कूप
आत्ममुग्धता का ही रूप।

(पृष्ठ संख्या – 139)

उपर्युक्त उद्धरण यह सिद्ध करने हेतु पर्याप्त हैं कि कवयित्री ने न केवल कथाकार के रूप में पाठकों को अनुभूतिपरक उत्तम साहित्य उपलब्ध कराया है अपितु उसका कविता कर्म भी उतना ही बेजोड़, प्रभावशाली तथा हृदयंगम करने की योग्यता से परिपूर्ण है।

उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले की बिसौली तहसील के मुसिया नगला गाँव में जन्मे डॉ. उमाशंकर राही जी वाचिक परंपरा में वीर रस के बड़े कवियों में परिगणित किए जाते हैं। हिंदी काव्य मंचों पर आपकी विशिष्ट ख्याति आपके ओजस्वी काव्य पाठ के कारण है। आप नैतिक मूल्यों को अपनी मौलिक अनुभूतियों में पागकर मंचों पर प्रस्तुत करने में निष्णात हैं। वर्ष 2022 में आपका दोहा–संकलन 'जीवन के रंग दोहों के संग' जवाहर पुस्तकालय प्रकाशन, मथुरा से प्रकाशित हुआ है। आप वर्तमान में वात्सल्य ग्राम, वृंदावन में साध्वी ऋतंभरा जी के प्रमुख सेवा अधिकारियों में से एक हैं यही कारण है कि आपकी रचनाओं में मानवीय मूल्यों के साथ–साथ आध्यात्मिक चेतना का सीधा प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आपका यह दोहा–संकलन अनेक दृष्टियों से विशेष बन पड़ा है। कवि ने इस संग्रह में आस्था–विश्वास, भक्ति–जागृति, राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना, प्रेम–सद्भाव, जिजीविषा–कर्मठता तथा सात्विक आचरण आदि श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का सद्प्रयास किया है। कवि के अति व्यापक केनवास में जीवन का हर रंग देखा जा सकता है। प्रस्तुत संकलन में कुल 360 दोहे संकलित हैं। साथ ही इन दोहों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि संपूर्ण कृति में संकलित प्रत्येक दोहा जिस शब्द के साथ समाप्त होता है, उसके ठीक बाद का दोहा उसी शब्द या शब्दांश से प्रारंभ होता है। उदाहरणार्थ कुछ दोहे देखें–

संतों ने जितने किए, जप–तप यज्ञ विशेष।
एक मात्र उद्देश्य था, परहित का संदेश।।
संदेशों से कीजिए, रूठों की मनुहार।
अपनों से करते सभी, कर दूजों से प्यार।।
प्यार और व्यवहार को कर लो अंगीकार।
द्वेष ईर्ष्या घृणा से, मुक्त बने संसार।।

(पृष्ठ संख्या – 50)

कुछ उदाहरण और देखें–

व्यापारी जब भी बनें, याद रहे यह बात।
व्यापारिक संबंध से, दूर रखें जज्बात।।
जज्बाती बनकर कभी, हो न सकेगा न्याय।
सच्चाई के सामने, हारा है अन्याय।।
अन्यायी राजा बने, चापलूस दरबार।
इक दिन ऐसे राज्य का, होता बंटाधार।।

बंटाधारी बन गए, जब अपने ही लोग।
लगा भवन में जानिए, है दीमक का योग।।

(पृष्ठ संख्या – 99)

उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल क्षेत्र की निवासी साईनीकृष्ण उनियाल जी की काव्य–कृति 'आकाश पिता' समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून से प्रकाशित हुई है। इस संकलन की कविताओं में कवि हृदय का सामाजिक विद्रूपताओं के प्रति विद्रोह स्पष्ट देखा जा सकता है। यह काव्य–संग्रह विविध भावों से ओतप्रोत है। 'आकाश पिता' नामक कृति में वंदन से लेकर गुरु महिमा तक प्राचीन काव्य सिद्धांतों का निर्वाह हुआ है। प्राच्य काव्य रचनाओं में मंगलाचरण इसी परिपाटी में लिखे जाते रहे हैं। नवोदित कवयित्री ने जहाँ राष्ट्र के प्रहरियों के सम्मान में वीर जवानों पर एवं कारगिल शहीदों पर मार्मिक कविता लिखी हैं, वहीं आधुनिक संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का पुरजोर समर्थन भी किया है तथा वीर नारियाँ और महिला सशक्तिकरण जैसी रचनाओं के माध्यम से अपनी अंतश्चेतना को भी व्यक्त किया है। उनकी सामाजिक विषयों से संबंधित रचनाओं में उनका सामाजिकत्व स्पष्ट रूप से मुखरित हुआ है। कुछ कविताओं के उदाहरण देखें–

रे बाला निःशब्द होकर के निशाना साध
मिसाल बन के जगा मृतप्रायों को।
उठा तलवार तू दिखा दे शौर्य को तोड़ दे मौन न हो गौण शक्ति को जान ले।

(पृष्ठ संख्या 50)

प्रेम पूजा है भक्ति है सुमिरन भी है।
मन के मंदिर का दीपक ये कीर्तन भी है।

(पृष्ठ संख्या 53)

एक उदाहरण और देखें–
भौतिकता की चकाचौंध में समय निरंतर बदल रहा है।
बदल रही हैं परंपराएँ कर्मों का प्राकट्य नया है।

(पृष्ठ संख्या –85)

आगरा निवासी विनय बंसल जी की पुस्तक 'सब कुछ है' बाल कविताओं का संकलन है। इस संग्रह में कुल 108 कविताएँ संकलित हैं। नैतिक शिक्षा से प्रारंभ होकर प्राकृतिक संवेदनाओं, पशु–पक्षी, नदी–पर्वत, गिनती, पहाड़े, सप्ताह, दिन, त्योहार, यातायात–नियम, कंप्यूटर, मोबाइल आदि अनेक आधुनिक विषयों तक का सफर कवि ने बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए पूरा किया है। अपनी बात बच्चों तक पहुँचाने के लिए कवि ने कबूतर, गिलहरी, गौरैया, चिड़ियाँ, तितली, तोता, परिंदे, मधुमक्खी, गर्दभ की बारात, चूहा, भालू, पतंग, दर्पण, परीक्षा, रेलगाड़ी, चंदा मामा, आदि अनेक शीर्षकों का उपयोग किया है। कुछ कविताओं के उदाहरण देखें–

आसमान में चमक रहे हैं
देखो ढेरों तारे।
दूर–दूर हैं पर लगते हैं
पास पास ही सारे।
ऐसा लगता फैल गए हों
लड्डू मोतीचूर के।
या फिर लटक रहे हों जैसे
कुछ गुच्छे अंगूर के।
कोई तारा हल्का चमके
कोई चमके तेज।
किसी महल में जैसे चमके
महारानी की सेज।
झिलमिल करते सारे तारे
जलते दीपक जैसे।
बिना तेल के रात–रात भर
टिमटिम करते कैसे।

(पृष्ठ संख्या –16)

इसी संकलन की कुछ एक रचनाएँ और देखें –
सुबह–सुबह प्रतिदिन ही छत पर
हरा–हरा आ जाता तोता।
जब भी उसको दाना डालो
मंद–मंद मुस्काता तोता।

(पृष्ठ संख्या –55)

आज है दावत मृग की शादी।
दूल्हे का कुर्ता है खादी।
गधा पीठ पर लाया लकड़ी।
उसने खाई ढेरों ककड़ी।
उछल कूदकर आया बंदर।
उसने खाया लाल चुकंदर।
दावत में आई थी गाय।
उसने पी बस फीकी चाय।
झूम झूमकर आया भालू।
उसने खाया देशी आलू।
फिर आया काला लंगूर।
खाए हरे–हरे अंगूर।

(पृष्ठ संख्या –88)

धूप व हीटर भाते हैं।
कंबल हमें सुहाते हैं।
पीते हैं हम चाय काढ़ा,
गजक रेवड़ी खाते हैं।
अब न कहो नहाने को।
विद्यालय में जाने को।
मम्मी मुझको सिगड़ी दे दो,
गर्मी दूर भगाने को।

(पृष्ठ संख्या –109)

पप्पू ने गप्पू को मारा।
चुपके से भरके गुब्बारा।
अज्जू ने मारी पिचकारी।
बिज्जू भूला नफरत सारी।
सब बच्चों के दिल को भाई।
होली आई होली आई।

(पृष्ठ संख्या –120)

प्रस्तुत काव्य कृति में संकलित प्रत्येक रचना बाल मन को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेने की सामर्थ्य से परिपूर्ण है। निस्संदेह कवि का श्रम पूर्ण रूपेण सफल सिद्ध हुआ है।

बलिया उत्तर प्रदेश निवासी शिवानंद सिंह 'सहयोगी' जी की कृति 'टोंटी वाला नल' रचनाकार प्रकाशन से प्रकाशित काव्य–संग्रह है। सहयोगी जी नवगीत विधा के चर्चित और प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। सहयोगी जी के नवगीतकारों में पारंपरिक प्रतिरोधों की अपेक्षा आंचलिक व लोक–चेतना के स्वर मुखर होकर प्रत्यक्ष हुए हैं। सहयोगी जी ने समय के यथार्थ को सूत्र रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। वे आधुनिकता को यथार्थ के धरातल पर उतारकर प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण देखें–

अरी! नई संचार प्रणाली!
जब से तू प्रचलन में आई
चिट्ठी लिखना छोड़ दिया है
बिगड़ा हर संबंध
वाट्सऐप के नए विश्व से
जुड़े हुए हैं लोग
और फेसबुक के माध्यम का
करते सतत प्रयोग

घर बैठे ये मेल कराते
तनिक नहीं संकोच दिखाते
उड़ा कबूतर तोड़ गया है
सदियों का अनुबंध

(पृष्ठ संख्या –35)

सिहरन भरी हवाओं के संग
गोली खेले ठंड।
बैठ गुनगुनी धूप अकेली
जाँत टुंगाती है
भूख–प्यास की साँझ भाड़ में
अन्न भुंजाती है
ठिठुर–ठिठुर टुटही मड़ही में
काँप रहे हैं झंड

(पृष्ठ संख्या –61)

गाँव समाधित इन शहरों में यह नैराश्यजनक घटना है।

बरखा छमछम नाच रही है बर्फीले ओले निकले हैं धुँआ निकलने की चिमनी से लपटों के गोले निकले हैं पानी तड़प रहा नहरों में यह नैराश्यजनक घटना है

(पृष्ठ संख्या –81)

बदरी तो आई थी लेकिन
हँसकर चली गई।
ये अषाढ़ के पहले दिन ही
सूखे–सूखे हैं
धरती की फैलावट के मन
भूखे–भूखे हैं
आए उस अंधड़ में बदली
फँसकर चली गई

(पृष्ठ संख्या –131)

प्रस्तुत संकलन के सभी नवगीत एक से बढ़कर एक मानवीय संवेदनाओं को रेखांकित कर प्रस्तुत करने की सारस्वत साधना के प्रतिफल सिद्ध हुए हैं। कवि ने अपनी चेतना काव्य में पिरोने के लिए किसी भी प्रकार का कोई नवोन्मेषी प्रयोग नहीं किया अपितु धारा में प्रवाहित होती चली आ रही भाव–भूमि को वर्तमान संदर्भों में पिरोकर उसमें नवीनता का संचार किया है। कहीं वर्तनी त्रुटि अथवा टंकण त्रुटि जैसे प्रतिरोधों को दृष्टिगत न रखें तो शेष यह कृति निस्संदेह अनुपमेय है।

शिवानंद सिंह 'सहयोगी' जी की दूसरी कृति 'भुने हुए भुट्टे' भी एक नवगीत संकलन है जोकि पराग बुक्स पब्लिकेशन, गाजियाबाद से प्रकाशित है। इस संकलन में अधिकतर नवगीत कोरोना कालीन महात्रासदी के प्रभाव तथा तत्कालीन मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की छाया में पल्लवित हुए हैं। इन गीतों में कवि की मौलिक अनुभूतियों ने पाठक के हृदय पर गहरी छाप छोड़ने वाली साधर्मिता संचित की है। इस कृति में कुल 85 नवगीत संकलित हैं। कुछ नवगीत उदाहरण स्वरूप देखें–

गाँव छोड़ा इसलिए था
शहर में संभावना थी
चार रोटी तो मिलेंगी
भट्टियों में तन तपाकर
पास की जलवायु में तो
ईंट–भट्टों का धुँआ था
पेट भी था भाड़–सा यह
अधभरा खाली कुँआ था
मर गए उद्यम घरेलू
थे पड़े पगदंडियों पर
जेठ की दो पहियों में
देह की हड्डी गलाकर

(पृष्ठ संख्या –23)

बादल निकले हुए सैर पर
खा सागर का पान।
घोर असंगति
प्रश्नावलियों की वाचकता दूर
किसी खेत के
कोने पर हो जैसे फैला घूर
हिल–हिल झूम रहा पुलई संग
रोपा पिछला धान

(पृष्ठ संख्या –27)

धूप खिली
पटरी पर आए
बंद पड़े सब काम।
मौसम की हल्की वर्षा से
ऊभ–चूभ हैं गेह
देह पसीने में डूबी है
छूट गए हैं स्नेह

लद–लद करके नीचे टपके
पके डाल पर आम।

(पृष्ठ संख्या –50)

बात कहना चाहते जो
निडर हो कह डालिए वह
आप जो कुछ कह रहे हैं
ध्यान से मैं सुन रहा हूँ
साफ मन है
नहीं कोई धृष्टता भी
हाथ जोड़े
सामने है शिष्टता भी
धूप है कुछ चुलबुली–सी
गीत की फुलवारियों में
फूल मनभावन खिले हैं
मगन हो मैं चुन रहा हूँ

(पृष्ठ संख्या –107)

सहयोगी जी का प्रत्येक नवगीत उनकी अंतश्चेतना की सात्विक वृत्ति का साक्ष्य प्रस्तुत करने में पूरी तरह सफल है। कवि के लोकमंगलकारी हृदय से निकला प्रत्येक गीत भारतीय मनीषा की अप्रतिम धरोहर है।

प्रज्ञा भारती प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित 'स्तुति चिंतामणि नामक' उड़ीसा निवासी प्रो. जयंतकर शर्मा जी द्वारा अनूदित कृति है। इस कृति के मूल रचनाकार संत कवि भीम भोई जी हैं तथा कृति की मूल भाषा ओडिया है। भीम भोई की इस कृति में उन्होंने 100 बोलियों में कुल 2000 पद सृजित किए हैं। यह ओडिया भाषा की एक लोकप्रिय कृति है। इस संपूर्ण कृति में कवि मानव–कल्याण तथा उसके मोक्ष की कामना के मार्ग को सुगम बनाने के प्रयास में रत रहा है। परम विद्वान और कुशल अनुवादक डॉ. जयंतकर शर्मा ने अपनी समस्त प्रज्ञा का प्रयोग करते हुए, रचना की आत्मा, उसकी मौलिकता तथा भावप्रवणता का आद्योपांत संरक्षण करते हुए सरल हिंदी में अनुवाद किया है। कुछ उदाहरण देखें–

जय जय जोत रूप से प्रख्यात शून्य में उड़ता केतु,
करुणा की दृष्टि अरूप समष्टि भक्त दुःख दूर हेतु।
सकल संसार प्रभु जी का घर नाम ब्रह्ममय तेज,
अज्ञानी को बड़ा सुज्ञानी को थोड़ा नहीं यह लघुबोझ।

(पहली बोली, पृष्ठ संख्या –41)

अभय की बात धर्म उल्लेखित कौन कर सके व्यर्थ,
बोलें मुख पर चोट लगे उर कहने में असमर्थ।

(छत्तीसवीं बोली, पृष्ठ संख्या –111)

सुज्ञानी पंडित साधू की संगत अन्यत्र कहीं न गति,
गुरु सेवा बिन नहीं मुमकिन उद्धार पाने की स्थिति।

(सत्तावनवीं बोली, पृष्ठ संख्या –153)

अदृश्य स्वरूप ब्रह्म हैं अरूप जिसकी न कोई छाया,
जनम काल से बड़ा है मर्जी से दाना पानी नहीं खाया।

(सतासीवीं बोली, पृष्ठ संख्या –213)

त्रिपुर के जनो कहता जो सुनो भजो महिमा भजन,
कलिकाल घोर होता बड़ा जोर सुन रखो दोनों कान।

(सौवीं बोली, पृष्ठ संख्या –239)

यद्यपि वर्ष 2022 में हिंदी साहित्य में अनेकानेक काव्य कृतियों का प्रकाशन हुआ है परंतु सभी कृतियों का विवेचन प्रस्तुत कर पाना संभव नहीं है। तथापि यथा संभव प्रयास किया गया है कि इस वर्ष की कम से कम ऐसी कृतियों को अवश्य ही समाहित किया जाए जो किसी न किसी प्रकार से हिंदी साहित्य को प्रभावित करने में अपनी भूमिका निभा रही हैं। इस क्रम में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही दृष्टियों की रचनाओं को तथा उनके हिंदी साहित्य पर पड़ने वाले प्रभावों को निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। तदनंतर इस बात को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि किसी भी विशिष्ट बिंदु पर दृष्टि अनिवार्य रूप से गई ही होगी। ऐसी किसी भी स्थिति के लिए समीक्षकों तथा आलोचकों का वृहदाकाश आप सभी सुधी रचनाकारों के लिए खुला ही है। हिंदी कविता सदैव इसी प्रकार प्रगति के पथ पर अग्रसर बनी रहे, इसी आशा और आकांक्षा के साथ सभी रचनाकारों को पुनश्च बधाई व अनंत शुभकामनाएँ।

हिंदी कविता का विस्तृत आकाश सदैव से ही अपने दैदीप्यमान ज्योतिपुंजों से ज्योतिर्मय होता रहा है। नवीनता किसी भी संकल्पना का शृंगार होती है। साहित्य में भी नवीन भावों तथा शिल्प–विधानों के समावेश ने उसे चिरंतन बनाने का प्रयास निरंतर जारी रखा है। वर्तमान साहित्य सुसंपन्न और वैभवपूर्ण है, इस बात में किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है।

❑❑❑

23

हिंदी कहानी



अवध किशोर प्रसाद

कवि और चिंतक। प्रकाशित रचनाएँ– 'काव्यशास्त्र और रूप' (आलोचना),' दर्पण (काव्य)', 'जीवन दीप '(कहानी संग्रह), 'रेत के फूल' (गज़ल संग्रह), 'आदर्श बालक' (बालकथा), 'मधुमातल बहे बयार' (ललित निबंध संग्रह)। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

सभ्यता के विकास के आरंभिक दिनों में जब मनुष्य को भाषा का ज्ञान हुआ होगा और उसने बोलना आरंभ किया होगा, तब अपने मनोगत भावों को दूसरों को सुनाने के लिए एवं दूसरों के मनोगत भावों को सुनने के लिए 'कथनी' का आश्रय लिया होगा। कालक्रम से यही कथनी कहानी के रूप में परिणत हो गई होगी, तभी से कहानी की शुरुआत हुई होगी. इस प्रकार कहानी का स्वरूप आदिकाल से ही निर्मित हुआ, जो वैदिक काल से होता हुआ अनेक उतार–चढ़ावों, पड़ावों एवं मील स्तंभों को पार करता हुआ आधुनिक युग में स्थापित हुआ। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश, समसामयिक यथार्थ और अपने अनुभवों के भीतर से रोचक जीवन प्रसंगों, बहुआयामी रिश्तों और चरित्रों को उकेरकर आज के समय, समाज और जीवन यथार्थ की अंदरूनी छवियों को प्रस्तुत करने वाली आज की कहानियाँ जन–मन को आनंदित, आह्लादित और आत्मविस्मृत करने में सर्वतोभावेन सक्षम हैं। इस दृष्टि से वर्ष 2022 की कहानियों का विश्लेषण सर्वेक्षण महत्वपूर्ण होगा।

वर्ष 2022 की हिंदी कहानियों के सर्वेक्षण के प्रमुख दो आधार हैं– कथाकारों के कहानी संकलन तथा देशभर में प्रकाशित साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियाँ।

इस वर्ष वरिष्ठ से लेकर कनिष्ठ एवं नवागंतुक कथाकारों सहित महिला कथाकारों के ढेर सारे कहानी संकलन प्रकाशित हुए हैं। वरिष्ठ कथाकार क्षमा शर्मा का ग्यारहवाँ कहानी संग्रह 'पराँठा ब्रेकअप' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। 'एक छोटी–सी छलांग से पहले' शीर्षक संकलन की पहली कहानी में कथावाचिका मीना अपने रोजमर्रा की जिंदगी का ब्यौरा प्रस्तुत करती हुई बस यात्रा के क्रम में मिली एक सहयात्री दीपा की दिलचस्प जिंदगी

का वर्णन करती है। कहानी में दीपा के देवर की मातृहीन बच्ची की दर्दनाक मौत संवेदना जगाती है। यह एक कामकाजी औरत के जीवन की व्यस्तता को उद्घाटित करती अच्छी कहानी है। 'एक सदी की आहट' शीर्षक कहानी को कथाकार ने 'कहानी न समझकर लेख मान लेने' की पेशकश की है। इसमें कथाकार ने पुरुष का उपालंभ लेकर आए–दिन लड़कियों पर होने वाले समस्त प्रकार के अत्याचारों, अनाचारों और जुर्म का वर्णन किया है। कथाकार का वर्णन कौशल अद्भुत है। लड़कियों की करुण हत्या, दहेज के लिए जलाए जाने, दहेज के जुगाड़ में पिताओं के दिवालिएपन आदि समस्याओं का उल्लेख लड़के के माध्यम से किया गया है, जो काबिलेतारीफ है। वस्तुतः यह एक व्यंग्य कहानी है, जिसमें सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। 'फेसबुक पोस्ट' शीर्षक कहानी में आधुनिक युग की सबसे अधिक लोकप्रिय चलंतु फेसबुक की गतिविधियों का बड़ा ही सटीक और सार्थक विवरण हुआ है। दो तलाकशुदा कॉलेज की सहेलियाँ सविता और रेखा फेसबुक के जरिए बीस वर्षों के बाद मिलती हैं, एक–दूसरे को अपनी आपबीती सुनाती हैं और जीवन के खट्टे–मीठे एवं कडुवेपन पर विचार–विमर्श करती हैं। शीर्षक के अनुरूप इस कहानी में फेसबुक के कमाल का वर्णन हुआ है। कहानी में कल्पना कम यथार्थ अधिक है। 'कौन सी कसम' एक ही ऑफिस में कार्यरत दो सहकर्मियों नीलू और विवेक की चुहलबाजियों को व्यक्त करती दिलचस्प कहानी है। बिना किसी प्लाट के दोनों की आपसी नोंक–झोंक की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ उसने कसम खा ली थी कि अब दफ्तर में नीलू से कभी बात नहीं करेगा, ऐसे उसने कई बार सोचा था. मगर नीलू के सामने आने पर उसकी सारी प्रतिज्ञाएँ दम तोड़ देती हैं", शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करती है 'मत पूछ तू औरत है' शीर्षक कहानी में नारीजन्य आशंका की अभिव्यक्ति हुई है। इस कहानी में घर में काम करने आए मिस्त्री की अपने सहकर्मी से हुई बातचीत को सुनकर घर में अकेली मालती घबरा जाती है और वह बैंक गए अपने पति रवि को तत्काल लौट आने का आग्रह करती है। 'जिंदगी तेरे कितने नाम' एक दर्द भरी कहानी है. उमेश और शिवा की आपसी बातचीत के माध्यम से कथाकार ने उमेश के जीवन की दर्दभरी दास्ताँ का वर्णन किया है। 'पैंतालिस साल की फिल्म' शीर्षक लंबी कहानी में कॉलेज के जमाने के दो पुराने सहपाठी उमेश और विनीता के बीच होने वाली चुहलबाजियों के क्रम में दोनों के जीवन में होने वाले दुख–दर्द, हास्य–व्यंग्य आदि का वर्णन किया गया है। उमेश और विनीता मित्रवत मिलते हैं। हँसी–मजाक की फुहारों के साथ दोनों में विचारों का आदान–प्रदान चलता रहता है। शीर्षकनामा 'परॉंठा ब्रेकअप' कल्पनाप्रसूत चिंतन प्रधान कहानी है। इस कहानी में कथानायिका तारा के चिंतन तथा उसकी पुत्री अन्नू के साथ होने वाले वार्तालाप के माध्यम से कथाकार ने यह स्पष्ट किया है कि वर्तमान युग में जेनरेशन गैप की प्रक्रिया चल रही है। एक जेनरेशन दूसरे जेनरेशन से कटती जा रही है।

पहली पीढ़ी चाहे जितनी भी तेज दौड़े दूसरी पीढ़ी को पकड़ना तो दूर, उसके पास भी नहीं पहुँच सकती है। 'पीले फूलों वाले दिन' शीर्षक कहानी में कथानायिका सीमा के चिंतन के माध्यम से बाग में खिलने वाले रंग–बिरंगे फूलों की खूबसूरती, एक अविवाहित का आत्मचिंतन एवं एक माँ की चिंताओं का वर्णन किया गया है। छोटे से कथानक को कल्पना के रंगीन चित्रों से सजाकर कथाकार ने एक अच्छी कहानी 'ड्रीम मैन' का सृजन किया है। रिया का विवाह आशु से होता है। किंतु वह रीना मुखर्जी नाम की औरत के साथ गोवा चला जाता है। रिया को इसकी सूचना उसकी फ्रेंड शालीन देती है, बल्कि वह आशु की मधुकरी वृत्तियों का खुलासा भी करती है, तो रिया स्तब्ध रह जाती है। रिया के मन में आशु के प्रति घृणा का भाव भर जाता है और उसके ड्रीम मैन की कल्पना बिखर जाती है। 'रोशनी के अच्छे दिन' शीर्षक कहानी में रोशनी नामक कामवाली की सामान्य–सी जिंदगी की खुशियों का वर्णन करते हुए कथाकार ने निम्नवर्गीय परिवार तथा मध्यवर्गीय परिवार के बीच का अंतर स्पष्ट किया है। 'कोई बताएगा सपनों का पता' स्वप्नलोक का विचरण कराती एक दिलचस्प कहानी है. कथाकार ने एक स्वप्न का जिक्र किया है, जिसमें उसका पति अंकुर और पूर्व प्रेमी निशांत भोजन की मेज पर साथ–साथ बैठे रहते हैं। कहानी में उसी स्वप्न के बहाने जीवन के कटु–मधु अनुभवों का विवरण किया गया है। संकलन की अंतिम 'सेकेंड चांस' एक रोमांचक कहानी है। इसमें सुधांशु और तन्वी के मध्य प्रेम होता है। दोनों विवाह कर साथ रहते हैं। अचानक तन्वी सुधांशु को छोड़कर विवेक से विवाह कर लेती है। किंतु जब उसे विवेक की असलियत का पता चलता है, तो वह उसे छोडकर पुनः सुधांशु के पास आ जाती है। किंतु सुधांशु उसके आग्रह को ठुकरा देता है। जब निराश तन्वी लौटने लगती है तब सुधांशु की मम्मी यह कहकर कि "मकान कहीं टूट जाए, दरार पड़ जाए तो उसे ठीक कराते हैं कि पूरा मकान ढहा देते हैं" तन्वी को रोक लेती है। जिसे सुधांशु स्वीकार लेता है। यह एक सकारात्मक सोच की प्रेम कहानी है। संपूर्ण कहानी कथोपकथन के ताने–बाने पर बुनी गई है।

संकलन की कहानियों में कल्पना की उड़ान, कथोपकथन का बाहुल्य, अंग्रेजी शब्दों की भरमार, लोकप्रिय मुहावरे और सबसे बढ़कर भाषिक तरलता की अद्‌भुत छटा देखने को मिलती है। प्रकृति के रंग–बिरंगे चित्रों, फूलों की खुशबू के बीच कहीं दर्द, कहीं हास्य और कहीं चुहलबाजी से कहानियों में रोचकता का समावेश हो गया है।

'वानप्रस्थ तथा अन्य कहानियाँ' वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का पंद्रहवाँ कहानी संग्रह है। यह के.एल. पचौरी प्रकाशन गाजियाबाद से प्रकाशित हुआ है। इसमें पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं।

हिंदी कहानी साहित्य में किसी प्रवृत्ति विशेष को केंद्र में रखकर कहानी संग्रह लिखने की परिपाटी चल पड़ी है। पिछले वर्ष प्रेम एवं एसिड अटैक को केंद्र में रखकर सुधा ओम ढींगरा के संपादन में क्रमशः 'वैश्विक प्रेम कहानियाँ' तथा 'अम्लघात'

कहानी संग्रहों के प्रकाशन हुए प्रेम और रिश्ते को केंद्र में रखकर पंकज सुबीर ने क्रमशः 'प्रेम और रिश्ते' कहानी संग्रहों का प्रणयन किया। नारी द्वारा पुरुष पर किए गए उत्पीड़न को केंद्र में रखकर मधु अरोड़ा के संपादन में एक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। गोविंद उपाध्याय का प्रस्तुत कहानी संग्रह 'वानप्रस्थ तथा अन्य कहानियाँ' इसी परंपरा की कड़ी है। संग्रह की कहानियों का प्रतिपाद्य 'बुजुर्ग मानसिकता का चित्रण' है। सभी पंद्रहों कहानियों के मुख्य पात्र बुजुर्ग हैं। जिनके माध्यम से एक बुजुर्ग में होने वाली मानसिकता, शारीरिक–स्वाभाविक परिवर्तनों, रोगग्रस्तता आदि का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत किया गया है। चाहे 'केंचुली' के मोहन पांडे हों, 'झुर्रियों वाला बच्चा' के जयंत बाबू हों, 'मुझे मुक्ति चाहिए' के योगेश बाबू, 'सदानंद जी सनकिया गए हैं' के सदानंद जी, 'बूढ़ा आदमी और पकड़ी का पेड़' के रामेसर पाठक या 'दीमक' के राघव पहलवान हों, सबके सब बुजुर्ग हैं और इनके सोचने–समझने, बोलने–बतियाने, जीवन जीने के ढ़ंग का यथातथ्य वर्णन हुआ है। संग्रह में नारी मानसिकता का चित्रण .'कटही' की जयंति अरोड़ा, 'समय चक्र' की अमृता, 'आखरी पड़ाव' की शुभ्रा, 'बाढ़वाली' की सुनयना आदि नारी पात्रों के माध्यम से किया गया है।

संकलन की पहली 'केंचुली' शीर्षक विवरणात्मक कहानी में फोकट गुरु के नाम से प्रचलित मुकुंद पांडे की जीवनगाथा का वर्णन किया गया है, जो पत्नी और परिवार के सदस्यों द्वारा फटकारे जाने एवं उपेक्षित किए जाने के कारण घर से भागकर बनारस चला जाता है और साधुओं की भीड़ में खो जाता है। 'झुर्रियों वाला बच्चा' जयंत बाबू की कहानी है,जो अपने छोटे शराबी बेटे के हुड़दंग के कारण किसी बेटे के पास न रहकर नौकर जंगी की सेवा–सुश्रुषा में अकेले रहते हैं। इस कहानी में जयंत बाबू के माध्यम से एक वृद्ध में होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों को रेखांकित किया गया है। कभी–कभी रोग इतना भयावह हो जाता है कि डॉक्टर भी असमर्थ हो जाता है। ऐसी स्थिति में रोगी को भगवान के भरोसे छोड़ दिया जाता है। तब रोगी की शारीरिक यातना भयावह हो जाती है और वह मुक्ति की कामना करने लग जाता है। 'मुझे मुक्ति चाहिए' शीर्षक कहानी में योगेश बाबू के माध्यम से इसी तथ्य की अभिव्यक्ति हुई है। कहानी में रोग एवं रोग के उपचार की जितनी भी प्रक्रियाएँ हो सकती हैं, कथाकार ने उन सबका यथातथ्य वर्णन एक डॉक्टर की तरह किया है। कथाकार लेखक कम डॉक्टर अधिक है। अक्सर बुढ़ापे में मनुष्य किसी बुरी लत का शिकार हो जाता है, जो उसके तन–मन को दीमक की तरह चाट जाती है। 'दीमक' शीर्षक कहानी में पहलवानी में अव्वल, काम में दक्ष और स्वभाव से हँसमुख राघव पहलवान जब फिरंगी की संगति में पड़कर शराब पीने लगता है, तब उसका शारीरिक क्षरण शुरू हो जाता है और अंत में वह मृत्यु को प्राप्त करता है। कहानी में राघव के उत्कर्ष, अपकर्ष एवं उसकी दर्दनाक मौत की घटनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'बूढ़ा आदमी और मकड़ी का पेड़' वृद्ध मानसिकता की

यथार्थपरक कहानी है। इसमें रामेसर पाठक के वृद्धावस्था में प्रवेश करने के क्रम में उसमें होने वाले परिवर्तनों का सही और सटीक निरूपण हुआ है। कहानी में रामेसर की स्थिति की रोमांचक अभिव्यक्ति हुई है। 'सदानंद जी सनकिया गए हैं'। एक मतिभ्रम वृद्ध की दिलचस्प कहानी है। इस कहानी में सदानंद जी नामक पात्र के वृद्धावस्था की भुलक्कड़ी प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए कथाकार ने वृद्धावस्था में मनुष्य में होने वाली भुलक्कड़ी प्रवृत्ति का सटीक वर्णन किया है। 'कटही' एक कामकाजी औरत की कहानी है। इसमें जयंती अरोड़ा नामक औरत की स्त्री मानसिकता की अभिव्यक्ति दोनों रूपों में हुई है–कार्यकाल के दौरान उसकी रुक्षता, जिस कारण सभी उसे कटही कहते हैं और सेवानिवृत्ति के एक माह पूर्व उसके अंदर की नारी वृत्तियों–दया, माया, ममता, वात्सल्य आदि भावों के विकास, उसका अंतिम वाक्य – "मैं यहाँ अकेली आई थी। अकेली चली जाऊँगी, आप लोगों को धन्यवाद", उसकी बदली हुई मानसिकता को द्योतित करता है। 'बेला के फूल' एक भावनात्मक कहानी है। इसमें ठाकुरों की बेईमानी एवं स्वार्थीवृत्ति का वर्णन हुआ है। इसी तरह 'अजोरिया' पात्रों और रिश्तों की गहमागहमी के बीच एक दुखी व्यक्ति रघुनाथ की कहानी है, जिसे उपकार के बदले अपकार, सुख देने के बदले दुःख–दर्द, निराशा और फटकार मिलती है। इकलौती बेटी अंतरा और दामाद करण के फ्रांस चले जाने पर वयोवृद्ध तारक बाबू के गुस्सा हो जाने की छोटी–सी घटना पर 'कालचक्र' जैसी अच्छी कहानी की रचना की गई है। तारक बाबू इस घटना से विक्षिप्त से हो जाते हैं। किंतु कालक्रम से उनका गुस्सा शांत होता है और उनकी समझदारी भी लौट आती है। स्थितप्रज्ञता की स्थिति में वह महसूस करते हैं कि "किसी के आने–जाने से दुनिया का चक्र नहीं बदलता है। बदलना तो स्वयं को पड़ता है" और वे अपनी पत्नी अमृता के साथ कुल्लू मनाली घूमने जाने का प्रोग्राम बनाते हैं। कहानी के सुखद अंत से कहानी मनोरंजक बन गई है।

शीर्षकनामा 'वानप्रस्थ' शीर्षक के अनुकूल वैसे काली भक्त पुन्नू पाठक की कहानी है, जो गृहस्थाश्रम में रहकर भी वानप्रस्थाश्रम का जीवनयापन करता है। बिजली विभाग से अवकाश ग्रहणकर पुन्नू पाठक काली की शरण में आता है और लोककल्याण के साथ–साथ अपना भी कल्याण करता है। इस कहानी के माध्यम से कथाकार ने यह संदेश दिया है कि प्रतिबद्धता मनुष्य को सफलता देती है। संकलन की अन्य कहानियाँ 'रद्दी', 'बाढ़वाली', 'कमजोर पार्टी', 'आखरी पड़ाव' आदि भी उत्कृष्ट हैं। इनमें भी किसी न किसी रूप में वृद्ध मानसिकता की अभिव्यक्ति हुई है।

'और कितनी परीक्षा' आशा शैली का कहानी संग्रह है. इसका प्रकाशन साहित्यभूमि, नई दिल्ली से हुआ है। इसमें तेरह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की कहानियाँ, जैसा कि शैलेश तिवारी ने लिखा है, "संघर्ष की अविराम कहानी है जिसमें लेखिका की कलम ने तूलिका बनकर आम आदमी के दर्द को संग्रह के कैनवास पर

विभिन्न रंगों से चित्रित किया है"। संकलन की पहली 'पहचान' परिवार के विघटन पर कृतघ्न संतति की कहानी है। अपने इकलौते पुत्र भानु के लिए सर्वस्व का त्याग करने वाली माँ उर्मिला को भानु से दुःख और दर्द ही मिलता है। वह माँ के विरुद्ध केस करता है, किंतु जज अपनी पारखी दृष्टि से नीर–क्षीर विवेक कर उर्मिला को न्याय देता है। कहानी में माँ की ममता, पुत्र की कृतघ्नता एवं एक जज की पारखी दृष्टि का सम्यक विश्लेषण हुआ है। 'बटेसर की चक्की' भावनात्मक कहानी है। इसमें बेटों का माँ के प्रति दुर्व्यवहार और बेटी के सामर्थ्य की अभिव्यक्ति हुई है। बटेसर के बेटे उसकी चक्की को बेच देते हैं किंतु उसकी बेटी सुमित्रा उसे पुनः खरीदकर न केवल पिता के सम्मान को लौटाती है, बल्कि माँ के लिए जीविका का साधन भी मुहैया करती है। पुरुष की ज्यादतियों की शिकार नारी के भीतर का आत्मसम्मान जब जागृत होता है, तब पुरुष को मुँह की खानी पड़ती है। 'अंततः' शीर्षक कहानी की नायिका डॉ. रेवा अपने पूर्व पति जय की ढिठाई से तंग आकर उसे तलाक का पेपर भिजवाकर उसके हौसले को पस्त कर देती है। अपना प्रतिकार पूरा कर वह आधी आबादी को यह संदेश देती है कि 'अन्याय सहना भी अन्याय है अन्याय का प्रतिकार अपेक्षित है'। बुजुर्गों को नजरंदाज कर देने की महानगरीय संस्कृति पर आधारित 'किस्सा एक सिगरेट का' गंभीर भाषा में लिखी गंभीर कहानी है। पिता के सिगरेट पीने की लत पर पिता को सीख देने वाले पुत्र को समझाता पिता अकेले रहने का निर्णय लेकर बेटे और बहू को चौंका देता है। 'शीर्षकनामा 'और कितनी परीक्षा' द्विब्याहता रंजना की दर्द भरी कहानी है। जब रंजना का पति हादसे का शिकार हो जाता है, तब उसके चाचा उसका पुनर्विवाह करा देते हैं, किंतु नामर्द पति के साथ उसका जीवन नर्क में तब्दील हो जाता है, क्योंकि अपनी नामर्दी छिपाने के लिए उसका पति उस पर तरह–तरह से अत्याचार करता है। रंजना की यातनापूर्ण जिंदगी से द्रवित होकर उसके जेठ उसे उसकी बाल सहेली श्रेया के घर छोड़ आते हैं। कथावाचन की शैली में लिखी यह कहानी पुरुषवादी नृशंसता तथा नारी की बेचारगी का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है। 'अनुत्तरित प्रश्न' एक कलाकार के मन की उलझन की कहानी है। इसमें कथानायिका तृष्णा की परेशानी का कारण सरिता का कन्हैया के साथ संबंध है। किंतु उसका समाधान उसकी सहेली रंजना यह कहकर करती है कि "उसने कन्हैया को सीढ़ी बनाया। कन्हैया ने उसका इस्तेमाल किया, तुम्हें बेकार का अपराधबोध हो रहा है।" 'पीढ़ियों का अंतराल' शीर्षक कहानी में पीढ़ियों के बीच की सोच के अंतर को दिखलाया गया है। एक पीढ़ी, पिता नथमल, अपने स्वाभिमान के समक्ष संकट के समय किसी के द्वारा दी जा रही सहायता को सहज स्वीकार करने में हिचकती है, वहीं दूसरी पीढ़ी, पुत्र रामसरन अपने बेटे के इलाज के लिए मिलने वाली सहायता को पूरी व्यावसायिक सोच के साथ स्वीकार करती है। मानसिकता का यह अंतर यह बतलाता है कि हमारे जीवन से नैतिक मूल्य कैसे तिरोहित हो रहे हैं। 'मुन्ना सो रहा

है' मनोवैज्ञानिक कहानी है, जिसमें एक माँ की ममता की अभिव्यक्ति हुई है। तीन पुत्रों की मृत्यु पर आहत माँ की गोद में जब एक बच्चा डाल दिया जाता है, तो उसकी ममता जागृत हो जाती है और उसकी विक्षिप्तता दूर हो जाती है। 'एक थी लड़की' संवेदनात्मक कहानी है। इसमें गीता की गरीबी का वर्णन किया गया है। गीता की स्थिति संवेदना जगाती है। 'आग्रह' भय, कौतुहल, जिज्ञासा और प्रेम जैसे भावों से संपृक्त कहानी है. इसमें कुन्नू नामक लड़की के माध्यम से माँ की प्रताड़ना, कथानायिका की सहानुभूति और श्याम नामक लड़के के प्रति कुन्नू के प्रेम की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। 'पवित्तर अपवित्तर' दलित विमर्श की कहानी में सदियों से कुरीतियों के बंधन में जकड़ी मानसिकता को बदलने की चाहत की अभिव्यक्ति कथानायिका मीरा के सत्प्रयासों के माध्यम से की गई है। माँ जिस बेटे को जन्म, जीवन और संरक्षण देती है, वही बेटा उसे गंगा के तट पर छोड़ आता है। उसकी ममता को एक युवक समझता तो है किंतु उसके लौटने में देर हो जाती है और माँ की ममता गंगा में विसर्जित हो जाती है। 'कहीं देर न हो जाए' एक माँ की ममता के विसर्जन की कहानी है। धार्मिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई संकलन की अंतिम कहानी 'दक्षा दी का श्राद्ध' एक ढोंगी बाबा की कहानी है, जो स्त्रियों के साथ गलत व्यवहार करता था तथा ड्रग्स का सप्लायर और चरस–हफीम का व्यापारी था। सुमेधा बचपन में अपने साथ होने वाले दुराचार का बदला अपनी सहेली के घर प्रवचन देते उस बाबा को पुलिस के हवाले कराकर लेती है। यह कहानी अंधी श्रद्धा से सचेत करती हुई आडंबर तथा पाखंड की पोल खोलती है। अनूठी कथावस्तु पर लिखी गई संकलन की कहानियाँ अनूठी हैं। कहानियों की भाषा में गांभीर्य और भाव में कमनीयता है।

'तुम धन्य हो' साहित्य की प्रायः सभी विधाओं पर महत्वपूर्ण कार्य करने वाले, अवध किशोर प्रसाद की ग्यारहवीं पुस्तक एवं दूसरा कहानी संग्रह है। यह आदर्श प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। 'लड़की हो तो वसंती जैसी' शीर्षक संकलन की पहली कहानी में एक ग्रामीण विद्यालय में हेडमास्टर द्वारा जवान होती लड़कियों के प्रति बरते गए व्याभिचार के कारण लड़कियों की शिक्षा प्राप्ति में उपस्थित व्यवधान तथा वसंती एवं गाँव के वयोवृद्ध अवकाश प्राप्त शिक्षक विकास बाबू के प्रयास से इस समस्या के समाधान का वर्णन किया गया है। कहानी में संयोग का अद्भुत समायोजन हुआ है। 'प्रेम की वापसी' दाम्पत्य प्रेम की कहानी है। प्रेम की टूटती हुई कड़ी को पश्चाताप की डोर से जोड़ा जाता है। बिछड़े पति अखिल और पत्नी शांति को मिलाने में कविता की महत्वपूर्ण भूमिका तथा संयोग के धरातल पर की गई अभिव्यक्ति मार्मिक है। 'मौन सफर की लकीरें' शीर्षक कहानी में सत्ता की अस्थिरता एवं मनुष्य की दिग्भ्रमित स्थिति का रूपक के माध्यम से रोमांचकारी वर्णन किया गया है। मंदिर के सिंहद्वार से समतल मैदानी क्षेत्र तक की यात्रा के क्रम में एक युवक और एक युवती का वार्तालाप कौतुहल

उत्पन्न करता है, तो दोनों का परिचय यथार्थ से साक्षात्कार कराता है। 'फटते कुहरे' भावनात्मक संवेदनशील कहानी है। इसमें एक तेजोदीप्त युवक आनंद के अंतर की बुझती प्रतिभा के दीप को उसकी प्रेमिका अनि द्वारा पुनर्प्रज्वलित कराया जाना यह सिद्ध करता है कि पुरुष के विकास में प्रकृतिस्वरूपा नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कहानी में मनु और श्रद्धा के प्रसंग से इस तथ्य की पुष्टि की गई है। 'दूधवाली' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। इस कहानी में एक ओर प्रेम और दूसरी ओर आदर्श की स्थापना की गई है। जहाँ कथानायक अपनी दूधवाली सारो की गठीली सौंदर्यपूर्ण देहयष्टि के प्रति निर्लिप्त रहता है, वहाँ उसका हमउम्र सदन चाचा उस युवती के शारीरिक गठन और सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है और अपनी मंशा पूर्ण करता है, जिसे दूधवाली पारो भी सहज स्वीकार कर लेती है। उनका प्रेम हद की सीमा पार नहीं करता है। कहानी के दूसरे पक्ष में कथाकार कथावाचक की नैतिकता, उसके आदर्श एवं तत्परिणामस्वरूप उसके सम्मान की अभिव्यक्ति करता है। कथानायक की नैतिकता कहानी में एक नया आयाम प्रदान करती है। 'हमटहल' शीर्षक कहानी में पुत्रवधू द्वारा वृद्ध ससुर सोहनलाल जी की उपेक्षा तथा पुत्री द्वारा पिता को संरक्षण प्रदान करने के प्रति कर्तव्यपरायणता की सम्मिलित अभिव्यक्ति हुई है। इन दोनों घटनाओं के बीच की कड़ी को जोड़ते सोहनलाल जी के हमटहल दरोगा साहब महती भूमिका का निर्वाह करते हैं। कहानी में प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा चलाए जा रहे एन. आर.सी. तथा सी.ए.ए. अभियान पर बहस के उल्लेख से नवीनता का अवगाहन किया गया है। 'कामवाली' अंतर्जातीय विधवा विवाह की कहानी है। इसमें एक विधुर अवकाश प्राप्त अस्सी वर्षीय शिक्षक दिनेश बाबू अपनी अंर्तदृष्टि से एक कामवाली युवती के भीतर होने वाली प्रतिभा से प्रभावित होकर उसकी विधवा माँ से पुनर्विवाह कर उस युवती के जीवन में आशा का संचार ही नहीं करते हैं, बल्कि उसे नवजीवन प्रदान करते हैं। वृद्ध शिक्षक द्वारा किया गया आत्मचिंतन एवं पुत्रों के समक्ष दी गई दलील बड़ी ही सटीक और तर्कपूर्ण है कहानी में मेढ़क–मेढ़की के विवाह और उनके तलाक के प्रसंग के द्वारा मृत किवदंती को पुनर्स्थापित किया गया है। 'काई' शीर्षक कहानी में दो भिन्न प्रवृत्ति की बहुओं का चरित्रोद्घाटन किया गया है। जहाँ बड़ी बहू दमयंती अपने वृद्ध ससुर रबीश बाबू पर लांछन लगाती है, वहीं छोटी बहू सरिता उसके विपरीत वयोवृद्ध ससुर को पिता की श्रेणी में बिठाकर उनके मन में जम गई काई को दूर करने का सफल प्रयास करती है। 'अंतर्वेदना' साहित्यिक परिवेश की कहानी है। एक प्रशासनिक पदाधिकारी अपने ही अहं के कारण अपने वृद्ध पिता को, जिसके काँधे पर चढ़कर उसने दुनिया देखी थी, वृद्धावस्था में उसे अपनी अँगुलियों का सहारा नहीं दे सकने की वेदना से तड़प उठता है। इस कहानी में एक साहित्यकार की उपलब्धि, पदाधिकारी के दंभ तथा एक शिक्षक एवं पिता की अहमियत का वर्णन तर्ककौशल के साथ किया गया है। शीर्षकनामा 'तुम धन्य हो' एक

साहित्यकार के दर्द और कौतुहल की कहानी है, जो नन पेंशनर होने की स्थिति में अपनी पुस्तकों को प्रकाशित नहीं करा पाने के कारण दुखी है। उसके दर्द को, उसके घर में उसके पोते को पढ़ाने आती एक पेंशनर विधवा शिक्षिका समझती है और उससे पुनर्विवाह कर उसके दर्द को दूर करती है। संपूर्ण कहानी भावों के गुंफन, तर्क कौशल एवं संवेदना से परिपूर्ण है। विधवा विवाह के प्रति कथाकार का तर्क –"इसी मोड़ पर तो दो अकेले रहने वालों को हमसफर और हमराही की आवश्यकता होती है। भारतीय संस्कृति इसकी इजाजत न दे न सही, किंतु संस्कृतियों के फेंट के इस युग में सब संभव, सब ग्राह्य और सब स्वीकार्य है" कितना सटीक, कितना सार्थक है.। 'हर पुरुष के भीतर एक नारी होती है, जो उसका संचालन, नियमन और मार्गदर्शन करती है। पुरुष का, जब उस दिव्य नारी की मूर्ति से साक्षात्कार होता है तो उसे जीवन के यथार्थ का बोध होता है'। इसी तथ्य पर लिखी गई 'तुम कहाँ हो' शीर्षक कहानी में कथानायक अपने प्रणय निवेदन पर पत्नी की लगातार असहमति के कारण एक नीरव रात्रि में जल समाधि लेकर जीवन के अंत का निर्णय ले लेता है। किंतु रात्रि की नीरवता में जब अपने ही अंदर विराजमान नारी–मूर्ति से उसका साक्षात्कार और तर्क–वितर्क होता है, तो उसके अंतर्चक्षु खुल जाते हैं और वह अपनी पत्नी के पास लौट आता है। इस कहानी में प्राकृतिक सुषमा के बीच दिव्य नारी मूर्ति की खिलखिलाहट, उसकी तर्कप्रवणता, व्यंग्य, जल समाधि की व्याख्या, मानवती नारी के वैशिष्ट्य का उद्घाटन आदि तथ्य रोमांचक और दिलचस्प हैं। संकलन की अंतिम 'शिष्या पत्नियाँ' अनूठी कथावस्तु पर लिखी गई अनूठी कहानी है। कथानायक अमुकलाल अध्यापन के क्रम में दो शिष्याओं–गीता और कविता से प्रेमालाप कर बैठता है। आत्मचेतना की जागृति पर शहर छोड़कर गाँव तो चला आता है, किंतु गीता और कविता के गर्भवती होने पर उनके माता–पिता अमुकलाल के घर आ जाते हैं। तर्क–वितर्क के बाद अमुकलाल का विवाह दोनों शिष्याओं के साथ हो जाता है।

संकलन की कहानियों में विषय वैविध्य, भाव वैविध्य और तर्कप्रवणता का बाहुल्य है। भाषा सरल, बोधगम्य और कवित्वमयी है। प्रकृति के बहुरंगे चित्रों से भाषा में चारुता एवं कहानियों में रोचकता का समावेश हो गया है।

'अरविंद की चुनिंदा कहानियाँ' डॉ माधव सक्सेना 'अरविंद' की तेरह चुनिंदा कहानियों का संग्रह है। इसका प्रकाशन इंडिया नेशनल प्राईवेट लिमिटेड से हुआ है। संकलन की पहली कहानी 'उद्घाटन' में राजनीति से जुड़े आत्मकेंद्रित और संवेदनहीन लोगों के विकृत रूप का चित्रण हुआ है। यह कहानी समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के शोषण को उजागर करती है। 'मीन माने मछली' शीर्षक कहानी में कनाडा में प्रवास के दौरान एक चीनी छात्रा की मानसिक एवं आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण हुआ है। 'मेरे हिस्से का आसमान' शीर्षक कहानी में एक ओर विदेश प्रवास के क्रम में मनुष्य के ऐकांतिक जीवन की समस्यायों का चित्रण हुआ है, तो दूसरी ओर

क्लबों में अश्लील नृत्य करने वाली लड़कियों के सच को उजागर किया गया है। 'पच्चीसवें माले का फ्लैट' शीर्षक कहानी में अमरीका में होने वाली समलैंगिक संबंधों की स्वीकार्यता की अभिव्यक्ति हुई है। पच्चीसवें माले पर रह रहे श्रीकांत के दोस्त की स्वीमिंग पूल में डूब मरने की घटना संवेदना जगाती है। 'दहशतजदा' शीर्षक के अनुरूप एक दहशतमंद टैक्सी ड्राइवर की कहानी है, जिसकी टैक्सी पर सवार होकर चार गुंडे एक आदमी की हत्या कर देते हैं और उसे यह धमकी दे जाते हैं कि यदि उसने इस घटना का जिक्र किसी से किया तो उसकी भी दुर्गति कर दी जाएगी। 'मेरा भारत महान' शीर्षक कहानी में वाल्टर और उसकी पत्नी कैथरिन के एयरलाइंस के कंफर्म टिकट प्राप्त करने संबंधी कठिनाइयों का वर्णन किया गया है। 'समुद्र' एक बेरोजगार युवक की दर्दभरी कहानी है, जो इंटरव्यू देते–देते थक जाता है। हर बार उसे निराशा मिलती है और वह समुद्र के किनारे बैठ जाता है। 'इत्यादि' शीर्षक कहानी में अमरीका की भाग–दौड़ भरी जिंदगी का वर्णन एक ट्रेन दुर्घटना के हवाले से किया गया है। ट्रेन से गिरकर आदमी की मौत पर यात्री संवेदनशील नहीं होते हैं, बल्कि उन्हें इस बात का गम है कि ट्रेन रुकने से उन्हें अपने गंतव्य पर पहुँचने में देर हो गई। 'आदमी मरा नहीं' संवेदनात्मक कहानी है। इसमें मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति का चित्रण एक मनोरंजक घटना के हवाले से किया गया है। 'चाँद शास्त्री' एक ऐसे मुस्लिम की कहानी है, जो मुस्लिम होते हुए भी हिंदू नाम से जाना जाता है और जो हिंदुओं की सहायता के प्रति हमेशा सचेष्ट रहता है। देश के विभाजन पर ढेर सारी कहानियाँ लिखी गई हैं। संकलन की 'हिंदुस्तान–पाकिस्तान' देश के विभाजन पर लिखी गई मार्मिक कहानी है। 'बीर बहूटी' शीर्षक कहानी में बचपन के बीते पलों की याद ताजा की गई है। समय के साथ छूटते बचपन के सुखद पलों पर कथाकार का चिंतन मार्मिक है। संकलन की अंतिम 'सुरंग' प्रतीकात्मक कहानी है।

जैसा कि समीक्षक डॉ. रमाकांत शर्मा ने कथाकार के लिए कहा है "एक संवेदनशील और सूक्ष्म दृष्टि रखने वाला कहानीकार किसी साधारण–सी बात को भी रोचक कहानी में ढाल सकता है", संकलन की कहानियाँ इस कथ्य की सत्यता को प्रमाणित करती हैं। सामान्य–सी कथावस्तु पर लिखी गई ये कहानियाँ मार्मिक और संवेदना जगाने वाली हैं।

विदेश की धरती पर रहकर भी भारत की संस्कृति, सभ्यता और भाषा की अलख जगाने वाले साहित्यकारों में अरूणा सब्बरबाल का नाम प्रमुख है, जो यूनाईटेड किंगडम में रहकर हिंदी साहित्य, मुख्य रूप से कहानी की रचना में संलग्न हैं। इस वर्ष शिवना प्रकाशन, सीहोर से इनका कहानी संग्रह 'रॉकिंग चेयर' प्रकाशित हुआ है। इसमें शीर्षकनामा 'रोकिंग चेयर' के साथ पंद्रह कहानियाँ–– 'इंग्लिश रोज', 'लाल जोड़ा', 'कील', 'उसका घर', 'छोटा–सा' शीशमहल', 'शब्द कभी मरते नहीं', 'परदेश में पतझड़', अनकहा कुछ, आखरी धागा, महकती बयार, नकाब, अँधेरे के बीच, प्रतिरोध

और उडारी संकलित हैं। संकलन की कहानियों में जैसा कि भूमिका में लेखिका ममता कालिया ने कहा है, "प्रवासी लेखक का बनावटीपन नहीं है, क्योंकि अरुणा ने भारत देश की मिट्टी और हवा–पानी से अपना रिश्ता कायम रखा है।" संकलन की कहानी चाहे 'इंग्लिश रोज' हो, 'छोटा सा शीशमहल' हो, आखरी धागा हो या 'शीर्षकनामा रॉकिंग चेयर हो', सब में भारतीय संस्कृति की महक समाई है।

'काला सोना' रेनू यादव का पहला कहानी संग्रह है। यह शिवना प्रकाशन सीहोर से प्रकाशित हुआ है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की कहानियों में भूमिका लेखक नरेंद्र पुंडरिक के अनुसार "स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है"। चाहे 'काला सोना' की सुलेखा हो, 'वसुधा' की वसुधा हो, 'मुखाग्नि' की राधिका हो, 'अमरपाली' की सोनवा हो या 'मुँहझौंसी' की रूपा हो इन सभी का जीवन संघर्षपूर्ण है। संकलन की पहली 'नचनिया' शादी–विवाह में नृत्य करने वाली की दिलचस्प कहानी है। संपूर्ण कहानी में नृत्यांगना सोनपरी के हाव–भाव, दर्शकों की भंगिमाएँ एवं शहरी बाबू के समक्ष सोनपरी का रहस्योद्घाटन, सबकुछ अद्भुत है। ग्रामीण युवक राजन सोनपरी के रूप में नृत्य करता है, जिस पर शहरी बाबू फिदा हो जाता है। भावावेश में जब वह सोनपरी से लिपट जाता है, तब सोनपरी नामधन्य राजन अपने ब्लाउज के अंदर के सॉट गेंद को निकालकर उसके हाथ में रखकर उसे आश्चर्य में डाल देता है। यह एक मनोरंजक, मर्मस्पर्शी और दिलचस्प कहानी है, जो नाचने वालियों के सच का उद्घाटन करती है। शीर्षकनामा 'काला सोना' देहव्यापार की कहानी है। इसमें सुलेखा नामक लड़की के जीवन के विवरण के बहाने कथाकार ने परिवार और समाज में होने वाले व्यभिचार का सटीक वर्णन किया है। कहानी में पात्रों की गहमागहमी के बीच घटनाओं का समुचित समायोजन हुआ है। 'वसुधा' चरित्र प्रधान कहानी है। इसमें वसुधा नामक ग्रामीण युवती के जीवन के उत्कर्षापकर्ष का वर्णन उसकी महत्वाकांक्षाओं, प्रेम में विचलन और पुत्रवती होने की स्थितियों के संदर्भ में किया गया है। 'मुखाग्नि' विवरणात्मक कहानी है। इसमें पुलवामा में शहीद हुए जवानों को केंद्र में रखकर राधिका के पति मनोज की शहादत पर उत्पन्न दर्दनाक स्थिति का विवरण किया गया है। कहानी में राधिका के पति को मुखाग्नि उसके देवर से न दिलाकर उसकी पुत्री टिंकू, जिसे मनोज जान से भी ज्यादा प्यार करता था, के द्वारा दिलाई जाती है। इस कहानी में पुत्र के नहीं होने की स्थिति में पुत्री द्वारा मृतक पिता को मुखाग्नि दिलाए जाने की नवीन परिपाटी की शुरुआत की गई है। शादी–ब्याह एवं बच्चों के जन्म पर दिए जाने वाले उपहार के कारण मनुष्य शिकस्त में पड़ जाता है। कर्ज की अधिकता कभी–कभी जानलेवा बन जाती है। 'छोछक' शीर्षक कहानी में हरिराम के माध्यम से इसी सत्य की अभिव्यक्ति हुई है. 'कोपभवन' शीर्षक कहानी में समलैंगिकता का समर्थन किया गया है, तो 'टोनहिन' शीर्षक कहानी में गाँव में पनपते, फूलते–फलते अंधविश्वास का वर्णन किया गया है। 'अमरपाली' उस

औरत की कहानी है, जो ठाकुर के प्रेम में अंधी होकर सुहागरात की सेज पर से भाग आती है। ठाकुर उसे शरण और संरक्षण प्रदान तो करता है किंतु उसके गर्भ से उसके दो बच्चों के जन्म लेने पर जब उसकी बदनामी होने लगती है, तब ठाकुर उसे छोड़ देता है तथा उसको घर और जमीन से भी बेदखल कर देता है। अंत में वह पुनः खेतों में काम करने वाली मजदूरिन बन जाती है। इस कहानी में ठाकुरों की ऐय्याशी और सोनवा जैसी लड़कियों की बदकिस्मती की अभिव्यक्ति हुई है। 'चउकव राड़' एक औरत नीलम की कहानी है, जो विवाह के बाद और गौवना होने के पूर्व विधवा हो जाती है। परिवार के लोग उसका पुनर्विवाह एक पाँच वर्ष के बालक के साथ कर देने का निर्णय लेते हैं, किंतु नीलम इस विवाह को, यह तर्क देकर कि ''वह उस लड़के के जीवन से खिलवाड़ नहीं करेगी'', अस्वीकार कर देती है। कहानी में नीलम का चिंतन कहानी को मर्मस्पर्शी बना देता है। 'डर' शीर्षक कहानी में कोरोनाकालीन स्थिति का वर्णन कथावाचक सुधीर के स्वप्न के माध्यम से किया गया है। 'खुखड़ी' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। इसमें बड़े परिवार की स्त्रियों की निरीहता, परवशता एवं निर्भरता की अभिव्यक्ति पाँच पुत्रों, पाँच पुत्रवधुओं और दर्जनों नाती–पोतों से भरे परिवार की मलिकाइन के जीवन की रिक्तता के माध्यम से की गई है, जिसे हमेशा अभाव का दंश झेलना पड़ता है। संकलन की अंतिम 'मुँहझौंसी' उस युग की कहानी है, जबकि ग्रामीण औरतें न घर में सुरक्षित रहती थीं, न बाहर में। घर में जेठ, ताऊ, देवर उनकी अस्मिता लूटने हेतु घात लगाए रहते थे, तो बाहर में शौच के समय गाँव के लुच्चे–लफंगे, शोहदे घात लगाए रहते थे। इस कहानी में रूपा जब अम्ल अटैक से मुँहझौंसी बन जाती है, तब वह गंगाराम के संपर्क में आकर गाँव–घर की असुरक्षित औरतों की अस्मिता की रक्षा का अभियान छेड़ देती है। कहानी में मुँहझौंसी का वक्तव्य काबिलेतारीफ है। कहानियों की भाषा काव्यमयी है। छोटे–छोटे वाक्य सारगर्भित हैं। गोरखपुर की भोजपुरी बोली के शब्दों के बहुल प्रयोग से कहानियों की भाषा में आंचलिकता का समावेश हो गया है।

डॉ. रमाकांत शर्मा ने अभी तक छियासी कहानियाँ लिखी हैं जो उनके सात कहानी संग्रहों में विन्यस्त हैं। 'सफेद तितली' उनका छठा कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लि. दिल्ली से हुआ है। इसमें बीस कहानियाँ संकलित हैं। जैसा कि कथाकार ने 'अपनी बात' में कहा है, "इस संग्रह में शामिल कहानियाँ प्रेम की गहराइयों से उपजी हैं जिनमें प्रेम का भोलापन, पागलपन, आतुरता और समर्पण के साथ–साथ प्रेम की उफनती नदी–सा वह रूप भी शामिल है"। संकलन की सभी कहानियों में कमोबेश प्रेम का उफनता सागर लहराता है। संकलन की शीर्षकनामा पहली 'सफेद तितली' एक चंचल, चुलबुली और मिलनसार लड़की अनिता की कहानी है, जो मुंबई के एक ऑफिस में कार्यरत है। वह खुले दिल की है जिसे हर बात करने वाला अपना समझ बैठता है पर वह किसी की नहीं होती है, यहाँ

तक कि वह अपने पति की भी नहीं हो सकती है और उससे तलाक ले लेती है। उसका दूसरा विवाह रवि से होता है, जिसे वह बेइंतहा प्यार करती है। किंतु गहन बीमारी से ग्रस्त रवि की मौत हो जाती है। रवि की मौत उसे शांत, मौन और निर्वाक बना देती है। सफेद कपड़ों में लिपटी सीट पर बैठी उसे देख कथावाचक कह उठता है———"वह सुंदर चेहरा सफेद कपड़ों में भी अपनी आभा बिखेरता रहता है"। 'वह सच बोल रहा था' शुभम और मानवी की प्रेम कहानी है। उनके बीच अटूट प्रेम है। किंतु शुभम के ऑफिस में कार्यरत पूर्वा नाम की लड़की को लेकर शक के कारण मानवी शुभम को छोड़कर चली जाती है। किंतु मंदिर में पंडित के प्रवचन में प्रेम की व्याख्या सुनकर उसकी आत्मचेतना जाग्रत हो जाती है और वह शुभम के पास लौट आने का मन बना लेती है। 'मैसेज बॉक्स' संजना और कथावाचक के बीच मैसेज आदान–प्रदान क

माध्यम से पनपते प्रेम की कहानी है। कहानी यह संदेश देती है कि 'अच्छी किताबें और अच्छे लोग तुरंत समझ में नहीं आते, उन्हें पढ़ना पड़ता है'। 'मंदिर की सबसे ऊँची सीढ़ी' प्रेम कहानी है। धीरज और मीता एक ही कंपनी के दो भिन्न शहरों में कार्यरत हैं। एक सेमीनार के क्रम में तीन दिनों के साथ से उनमें प्रेम का अंकुर फूटता है, जो परिणति को प्राप्त करता है। मंदिर की सबसे ऊँची सीढ़ी पर बैठा धीरज मीता से प्रश्न करता है ."तुम मुझसे शादी करोगी ?" उत्तर में मीता अपनी मौन स्वीकृति देते हुए उसके कंधे पर अपना सर रख देती है। 'अमली' एक चरित्रप्रधान प्रेम कहानी है। झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाली अमली के दुर्दांत व्यक्तित्व एवं उसके हृदय में बहने वाली प्रेम की अजस्र धारा की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'बहू जी और वह बंद कमरा' एक जिंदादिल औरत की कहानी है, जो आदर्श पत्नी और मर्यादित प्रेमिका थी। 'सजा' अद्‌भुत कथावस्तु पर लिखी अनूठी प्रेम कहानी है। पति के द्‌वारा पत्नी को दी गई सजा अद्‌भुत है। कथाकार के कथन, "प्रिय की प्राप्ति से प्रेम के अधूरेपन ने विश्व की महानतम कहानियों को जन्म दिया है" को सार्थक करती 'खाली कोना' अधूरे प्रेम की मार्मिक कहानी है। इसमें बाल विधवा सुमन और रघुनाथ में प्रेम तो होता है किंतु हठधर्मिता, अंधविश्वास और रूढ़िवादिता से ग्रस्त सुमन का परिवार इसे स्वीकार नहीं करता है और सुमन को मौत के घाट उतार देता है। रघुनाथ विक्षिप्त हो जाता है। 'एक पत्र की मौत' अधूरे प्रेम की कहानी है। इसमें रवि और किरण एक–दूसरे को प्यार करते हैं किंतु किरण के न्यूजीलैंड चले जाने और वहाँ की होकर रह जाने के कारण दोनों मिल नहीं पाते हैं। 'ब्लैक आउट' बाल प्रेम की असफल और अधूरी प्रेम कहानी है। इसमें पुष्पा और नंदलाल के बीच क्रम–क्रम से प्रेम होता है, किंतु नंदलाल का पत्र पुष्पा की बजाय उसकी माँ के हाथ में पड़ जाने से दोनों का स्वप्न भंग हो जाता है। 'उतरती धूप' प्यार में धोखा खाने वाली लड़की की कहानी है जो आजीवन विवाह नहीं करने का प्रण कर लेती है। '1968 ए लव स्टोरी' भी अधूरे प्रेम की कहानी

है। सुरेश और सरिता के बीच प्रेम का अंकुर तो फूटता है किंतु वह अनकहा रहने के कारण पनप नहीं सकता है और दोनों एक–दूसरे से सदा के लिए अलग हो जाते हैं। 'हर सवाल का जवाब नहीं होता' अनेक भावों की मिली–जुली अधूरे प्रेम की कहानी है। उदय और वंदना का बाल प्रेम युवाकाल में परिणति को प्राप्त नहीं कर सकता है, बल्कि अपने पिता से वंदना का संबंध उदय के मन में अनेक अनसुलझे प्रश्न छोड़ जाता है। 'खुला पिंजरा' शीर्षक कहानी में एक मुस्लिम प्रेमी अपनी प्रेमिका को पाने के लिए अपने धर्म का त्याग कर तौहिक से नंदलाल बन जाता है किंतु शक के दायरे में फँसी लड़की के कारण उसका जीवन गर्त में मिल जाता है। 'सत्ताईस साल बाद' एवं 'कोई रास्ता है तुम्हारे पास' अंतद्र्वंद्व की कहानियाँ हैं, तो 'गहरे तक गड़ा हुआ' अपराधबोध की कहानी है।

संकलन की कहानियों में प्रेम, प्रेमाभास एवं अधूरे प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। सरल और कवित्वमयी भाषा में लिखी गई कहानियों में मुहावरे, कहावतें एवं इतर भाषा के शब्दों की भरमार है, जिससे भाषा में सौंदर्य और भावों में कमनीयता का समावेश हो गया है।

समीक्ष्य वर्ष 2022 में रमाकांत शर्मा का सातवाँ कहानी संग्रह 'मैंने तुम्हें माफ किया' भी प्रकाशित हुआ है। यह भी अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लि. दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें चौदह कहानियाँ संकलित हैं।

पौराणिक मान्यता थी कि "जब तक मृतक का कर्मकांड नहीं हो जाता है, उसकी आत्मा भटकती रहती है" से शुरुआत संकलन की शीर्षकनामा पहली कहानी 'मैंने तुम्हें माफ किया' में एक पिता के जीवनकाल में बनी गलतफहमी का बड़ा ही सटीक चित्रण हुआ है। कथानायक के पेट में हमेशा दर्द होता रहता है। डॉक्टरी इलाज के बाद पता चलता है कि उसे लीवर का कैंसर हो गया है, जिसका इलाज असंभव है। बेटा पिता से इस सत्य को बतला नहीं सकता है और पिता को हमेशा इस बात की शिकायत रहती है कि बेटा उसका इलाज नहीं करवाना चाहता है। मृत्यु के बाद जब पिता के दोस्त ओमप्रकाश से पुत्र रो–रोकर सच का खुलासा करता है तो मृतक की आत्मा स्तब्ध रह जाती है और कह उठती है "मैंने तुम्हें माफ किया"। 'भैरवी' माँ की ममता में पगी एक औरत के अंधविश्वास की कहानी है, जो पुत्र मोह के कारण एक तांत्रिक के मायाजाल में अपने पूर्व प्रेमी मयंक के समझाने के फलस्वरूप फँसने से बच जाती है। मयंक प्रिया को तांत्रिक क्रिया की वास्तविकता से अवगत कराता है, तो प्रिया अपना इरादा बदल लेती है। 'चुप रहो तुम' मानव मन का विश्लेषण करती मनोवैज्ञानिक कहानी है। इस कहानी में मानव मन की अनुभूति का विश्लेषण यतीश के माध्यम से किया गया है। यतीश बचपन से ही बातूनी और बतबनक्कड़ था। पत्नी के द्वारा उसकी हर बात पर यह कहने 'चुप रहो तुम' वह मौन साध लेता है, किंतु अंदर ही अंदर बिन बरसे बादल की तरह घुमड़ता रहता है। 'दादी किताब पढ़ने बैठ

गई होगी' रहस्य और रोमांच भरी मार्मिक कहानी है। कथावाचिका गुड़िया दादी से कहानियाँ सुनने के क्रम में हुई अंतरंगता के फलस्वरूप दादी के अतीत की कहानी भी सुनती है। दादी अपने वैधव्य जीवन की परेशानियों, बदनामियों एवं मानसिक यंत्रणाओं का वर्णन करती है। "राजा होना मनुष्यता खोना नहीं है। जो सही मायने में राजा होता है, वह प्रजावत्सल और न्यायप्रिय होता है। प्रजा को संतान की तरह पालने वाला ही राजा लोगों के मन पर राज करता है," जैसे थीम पर लिखी गई 'राजा साहब' शीर्षक कहानी में एक रियासत के राजा की दरियादिली एवं प्रजावत्सलता का चित्रण हुआ है। दो पात्रों के माध्यम से राजा की न्यायप्रियता का मूल्यांकन किया गया है। 'किसी और मिट्टी की बनी' एक अनाम और अनजान रिश्ते की मार्मिक कहानी है जिसमें एक भाड़ेदार समर के प्रति एक मकान मालकिन के मातृत्व की अभिव्यक्ति हुई है। अपने पुत्र की तरह ही चाची नामधन्य मकान मालकिन समर को भी पुत्रवत प्यार देती है। दोनों ही अंत तक एक–दूसरे को भूल नहीं पाते हैं। ''बढ़ती उम्र के साथ–साथ मनुष्य के भीतर बीमारियों के साथ कमजोरियाँ भी बढ़ती जाती हैं और युवाकाल की मान्यताएँ खंडित हो जाती हैं'' इसी सत्य पर आधारित 'भीतर से कितना कमजोर है आदमी' शीर्षक कहानी की रचना हुई है। कथावाचक सुनील के दोस्त मानस के पिता के माध्यम से इस सत्य की प्रामाणिकता सिद्ध की गई है। इस कहानी में जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। 'डबडबाई आँखों की मुस्कान' दो भाइयों के बीच के खटासभरे रिश्ते एवं एक औरत की विवशता, झिझक तथा पति से मनमुटाव की कहानी है। बड़े भाई की निर्ममता एवं स्वार्थी वृत्ति से चिढ़ा हुआ छोटा भाई पत्नी के द्वारा मिलने वाले तर्क पर हमेशा विवाद करता रहता है। किंतु लंबे अर्से के बाद बड़े भाई के आगमन पर जब उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है और भाई के लिए शुद्ध घी और बासमती चावल ला देता है, तो पत्नी की डबडबाई आँखों में मुस्कान दौड़ जाती है। अनावृष्टि एवं अतिवृष्टि के फलस्वरूप उत्पन्न दुर्भिक्ष के कारण किसानों की आत्महत्या पर आधारित 'बित्तेभर की चिड़ियाँ' एक दर्दनाक कहानी है और प्रेरणादायक भी। पहले अनावृष्टि और बाद में अतिवृष्टि से परेशान गाँव का किसान रमेसर गरीबी और साहूकार के ऋण से तंग आकर पेड़ की डाली से फंदा लगाकर आत्महत्या करना चाहता है किंतु एक छोटी–सी चिड़िया उसकी आत्मचेतना को जाग्रत कर देती है और वह बीबी–बेटी के पास घर लौट आता है। 'मेरे हीरोः काशी भैया' चरित्र प्रधान कहानी है। एक ग्रामीण युवक काशीनाथ की जिंदगीनामा का विवरण उसके दोस्त की जुबानी प्रस्तुत किया गया है। अपनी खूबसूरती का भरोसा लेकर वह बालीवुड तो पहुँचता है, किंतु वहाँ की गंदगी उसे रास नहीं आती है और वह अपने गाँव लौट आता है। बाद में वह फौज में भर्ती होकर चीनी बॉर्डर पर शहीद हो जाता है। 'खुशी ढूँढ़ते हुए' गाँव में रहने वाले मजदूर परिवार मंगीलाल, उसकी पत्नी शामली और जवान होती बेटी फूलमती की कहानी है, जो जमींदार की बदनीयती

के कारण रातोंरात गाँव छोड़कर शहर आ जाता है, जहाँ अप्रत्याशित रूप से मंगीलाल को धर्मशाला में चपरासी एवं उसकी पत्नी को साफ–सफाई का काम मिल जाता है। फूलमती पढ़ाई करने लगती है और सपने सँजोने लगती है। उसका सपना सच होता है। वह पढ़–लिखकर एयर होस्टेस बनती है। अपने सहपाठी करण से विवाह कर खुशनुमा जिंदगी जीते हुए अपने माता–पिता को संरक्षण प्रदान करती है। 'ईदी' मुसलमानों का ईद त्यौहार के रूप में मनाए जाने की पूरी प्रक्रिया का विवरण करती एक प्रेम कहानी है। इसमें कथाकार ने कथानायक के चिंतन के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो धर्म और मजहब के नाम पर दहशत फैलाकर सांप्रदायिक दंगों को अंजाम देते है। हिंदू–मुस्लिम एकता का बयान करती यह सकारात्मक सोच की अच्छी कहानी है। 'मुट्ठी भर इंद्रधनुष' एकतरफा प्रेम की अनूठी कहानी है। इसमें प्रखर के विवाह करने के प्रस्ताव को प्रभा ठुकरा देती है, जिससे प्रखर का मुट्ठी में इंद्रधनुष पकड़ रखने का स्वप्न भंग हो जाता है। संकलन की अंतिम 'घिरा हुआ वजीर' एक प्राईवेट इंटर कॉलेज में फिजिक्स पढ़ाने वाले शिक्षक कृष्णदयाल उपाध्याय की दर्द भरी कहानी है। वह आदर्श की प्रतिमूर्ति है। किंतु मजबूरी के कारण वह अपने आदर्श से च्युत हो जाता है, जिसका मलाल उसे जीवन भर रहता है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अपने एक छात्र से इसका खुलासा कर रो देता है। किंतु छात्र का समझाना ———" जब वजीर चारों तरफ से घिर जाता है तो मात निश्चित होती है। पर सर, सिर्फ एक मात से कुशल खिलाड़ी घबरा नहीं जाता। जीतने के लिए वह फिर से सन्नद्ध हो जाता है, फिर से बिसात बिछाता है और सामने वाले के लिए चुनौती बनकर खड़ा हो जाता है। वह जीतता है सर", उसे तसल्ली दे जाता है।

संकलन की कहानियों का थीम और थॉट अपने ढंग में निराला है। भाषा सरल और बोधगम्य है। कहानियों में यत्र–तत्र जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। भाषा भाव को बहाए चलती है।

'मालूशाही.....मेरा छलिया बुरांश' प्रज्ञा का चौथा कहानी संकलन है। यह लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज से प्रकाशित हुआ है। इसमें नौ कहानियाँ संकलित हैं।

संकलन की पहली कहानी 'बुरा आदमी' टुटेजा नामक एजेंट के ऑफिस में कार्यरत देवेंदर की कहानी है, जो टुटेजा की ज्यादती का शिकार उसकी चाकरी से परेशान रहता है। कहानी का कथ्य एक चुटकी धूप की तरह कहानी के अंत में पिरोया गया है, जबकि रात्रिकालीन सड़क यात्रा के समय देवेंदर से उसकी जानी–पहचानी, घर से भागी, हारी–थकी लड़की यीशू मिलती है। देवेंदर काँधे से लिपटी यीशू के कुर्ते में हाथ फिराते हुए अपने ही कथन "मैं बुरा आदमी नहीं हूँ" की याद पर स्वतः झेंप जाता है और वह अपना हाथ हटा लेता है। कहानी में लड़की की समीपता पर लड़के

के भीतर की संवेदना, रास्ते में उठती हुई गगनचुंबी बहुमंजिली इमारतों की प्रासंगिकता आदि का वर्णन अनूठा है। 'शोध–कथा' शीर्षक कहानी में विश्वविद्यालय में शोध के तहत होने वाली समस्त क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं, शोध निर्देशक की उत्सुकता एवं वायवा कराने वाले सुपरवाइजर की लालची वृत्ति आदि का वर्णन हुआ है। शोध कार्य में जितनी भी तिकड़म हो सकती है इस कहानी में उन सबका यथातथ्य विवरण हुआ है। 'फिडेलिटी डॉट कॉम' आधुनिक तकनीक की जानकारी देने वाली मनोरंजक कहानी है। इसमें फिडेलिटी डॉट कॉम से खुलने वाली बेवसाईट पर सामानों की सूची को देखकर पति सुहास एवं पत्नी विनीता एक–दूसरे को उनकी पसंद की वस्तुएँ क्रमशः अंगूठी और बेल्ट गिफ्ट में देकर अपने प्रेम का इजहार करते हैं। 'माटी का राग' गाँव के प्रति प्रेम की भावना से ओतप्रोत ग्रामीण रामअवतार की कहानी है, जो गाँव में दंगा हो जाने के बाद अपने बेटे के पास शहर चला तो जाता है, किंतु कुछ ही दिनों के बाद वह गाँव लौट आता है और गाँव का होकर रह जाता है। 'चमत्कारी कुंड' शीर्षक वैचारिक कहानी में विचारों की शृंखला दर–प्रति–दर बनती है और अंत में यह निष्कर्ष दिया जाता है कि मनुष्य के अंदर जब किसी तत्व की अतिशयता हो जाती है, तो उसकी आत्मा उसे वहन नहीं कर सकती है और उस मनुष्य का अंत हो जाता है। कहानी में विजय नगर का राजा यशोवर्धन अपने अंदर एक–एक कर विचार, कविता और ज्ञान की अधिकाधिक मात्रा को समाहित करता है, जिसे उसका शरीर सहन नहीं कर सकता और चमत्कारी कुंद में प्रवेश करने के बाद उसकी मौत हो जाती है। शीर्षकनामा 'मालूशाही.....मेरा छलिया' राजुला और मालूशाही की लोक कथा पर आधारित कल्पना, रहस्य और रोमांच की कहानी है। जिस प्रकार राजुला और मालूशाही नहीं मिलते है ,उसी प्रकार कहानी में मुक्ता अपने पति मनिल से नहीं मिल पाती है। हमसफर प्रोग्राम के लिए मुक्ता दंपत्ति का इंटरव्यू लेने आई धरा के समक्ष मुक्ता का पति मनिल कभी भी उपस्थित नहीं होता है। मनिल का नही आना रहस्य बना रहता है और उसकी प्रतीक्षा धरा में जिज्ञासा उत्पन्न करती है। इसका रहस्योद्घाटन एक महिला, "उन्हें गुजरे हुए तो वर्षों बीत गए'', कहकर करती है। 'स्याह घेरे' पीत पत्रकारिता के विरुद्ध उठती आवाज के दंश को झेलती पत्रकार अनुभा चौधरी की दर्द भरी कहानी है। उसके रिपोर्टिंग के खिलाफ सोसाइटी के रहवासी खड़े होते हैं। उसका जीना दूभर हो जाता है किंतु न केवल वह, बल्कि सोसाइटी के अधिकारी विनय भी सत्य और न्याय की लड़ाई में उसके साथ खड़े रहते हैं। 'चाल और मात के बीच' चोरी का माल बेचने वाले लड़के की कहानी है, जो अरविंद नामक मोटरसाइकिल सवार को अपनी बातों से लुभा तो लेता है, किंतु कुछ सोचकर अरविंद उसे सामान लौटाकर घर की राह लेता है। कहानी में आधुनिक तकनीक से बनी वस्तुओं के प्रति अरविंद की जानकारी कथाकार की ज्ञान गरिमा को अंकित करती है। संकलन की अंतिम 'ताबूत की पहली कील' कॉलेज के अपग्रेडेशन

के नाम पर होने वाली विश्वविद्यालयीय प्रक्रिया एवं कॉलेज अधिकारियों की राजनीति की कहानी है। इसमें कॉलेज के ग्रेडिंग के नाम पर होने वाली गलत प्रक्रियाओं, अधिकारियों की भ्रष्ट वृत्तियों आदि का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत किया गया है। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ संपूर्ण सच को उजागर करती हैं। संकलन की कहानियों में तथ्यों की विश्वसनीयता, भाषा की सरलता एवं कल्पना की उड़ान है। चाहे 'शोध–यात्रा' हो, 'स्याह घेरे हो', 'चमत्कारी कुंड' हो या ताबूत की पहली कील हो इन सबमें तथ्यों का समायोजन विश्वसनीयता के साथ हुआ है। कहानियाँ लंबी हैं, उबाऊ नहीं। छोटे–छोटे वाक्य सरस, अर्थपूर्ण और सारगर्भित हैं।

'तितली धूप' भालचंद्र जोशी का कहानी संग्रह है। यह राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। भालचंद्र जोशी आदिवासी संस्कृति, लोक कथाओं एवं लोक कलाओं के अधिकृत विद्वान हैं। इनकी कहानियों में आदिवासी संस्कृति एवं ग्रामीण परिवेश की झलक मिलती है। संकलन की कहानियों में ग्रामीण और आदिवासी जीवन की विषम स्थितियों का चित्रण हुआ है। इन आदिवासियों एवं ग्रामीणों की शोषणपूर्ण जिंदगी, गरीबी एवं उदासियों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। 'प्रेम गली अति सांकरी', 'कहाँ नहीं हैं हत्यारे' शीर्षक कहानियों में आदिवासियों के संत्रास एवं उनके साथ होने वाले छल–प्रपंच की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की कहानियों के पात्र जीवन की जकड़न से उत्पन्न होने वाली यंत्रणाओं को साहस और उत्साह के साथ दूर करने का प्रयास करते हैं और उसमें सफल भी होते हैं। 'एक पत्ता चाँद', 'अपवित्र कुंड', 'जंगल', पिशाच' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। इनके पात्र जिजीविषु और संघर्षशील हैं। संकलन की अन्य कहानियों में भी ग्रामीण परिवेश एवं आदिवासी जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। कहानियों में यत्र–तत्र ग्रामीण बोलियों के शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहानियों की भाषा में प्रवाहमयता है।

इन कहानी संकलनों के अतिरिक्त मनोज रूपड़ा का 'दहन', मोहम्मद आरिफ का 'चूक' कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। इनमें क्रमशः पाँच और सात कहानियाँ संकलित है।

वर्ष 2022 की कहानियों की उपलब्धता का दूसरा स्रोत पत्र–पत्रिकाएँ हैं। कहानी केंद्रित ढेर सारी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं– जिनमें दैनिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक पत्रिकाएँ होती हैं। प्रस्तुत है कुछ उपलब्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों का सर्वेक्षण।

दैनिक हिंदुस्तान के रविवारीय फुर्सत अंक में कहानियों का प्रकाशन होता है। किंतु कोरोना काल के प्रभाव के कारण हिंदुस्तान में कहानियों के प्रकाशन की संख्या प्रायः नगण्य हो गई है।

वर्ष 2022 के फुर्सत अंक में कुछ कथाकारों की कहानियों का प्रकाशन हुआ है। इनमें दिवंगत कथाकारों की संख्या अधिक हैं। नकवी शिवशंकर पिल्लै की 'खून का रिश्ता', अहमद नदीम कासमी की 'आलां', आस्कर वाईल्ड की बुलबुल और गुलाब', कृष्ण चंदर की 'पूरे चाँद की रात', रवींद्र कालिया की 'मुहब्बत', सआदत हसन मंटो की 'मिस एडना जैक्सन' आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। ये विश्वप्रसिद्ध कहानीकार हैं। इन कहानियों में प्रेम की अभिव्यक्ति हुई हैं।

'वनिता' नारी विषयक सामग्रियों से पूर्ण मासिकी है। इसके प्रत्येक अंक में नारी विषयक सामग्रियों के साथ कुछ कहानियों का प्रकाशन होता है। इसमें मुख्यरूप से नारी कथाकारों की नारी जीवन से संबंधित कहानियाँ होती हैं। इन कहानियों का प्रतिपाद्य दाम्पत्य जीवन होता है। वनिता के जनवरी अंक में तीन कहानियाँ सम्मिलित हैं। पहली माला वर्मा की 'सॉरी नहीं तो नहीं' पुरुषवादी अहं की कहानी है। इसमें पति मिस्टर सहाय कार को रातभर बाहर छोड़ने की गलती कर बैठने पर पत्नी मिसेज सहाय से सॉरी नहीं कहते हैं। इसी घटना पर कहानी का ताना–बाना बुना गया है। कहानी की पंक्तियाँ ''पति के दिल में अहं भाव जाग्रत था और उधर पत्नी गुस्से में आहत। पत्नी की गलती नहीं थी, किंतु पति एक बार भी सॉरी बोलने को तैयार नहीं" कहानी का प्रतिपाद्य व्यक्त करती है। दीप्ति मित्तल की 'फुलझड़ियाँ' में पति द्वारा बेटी के फोन चेक करने की बात पर पति अविनाश और पत्नी दीक्षा के बीच होने वाली नोंक–झोंक का बड़ा ही दिलचस्प वर्णन हुआ है। लकी राजीव की 'मिठास' "हमारी शादी सचमुच गुड़ की मिठास थी, जो धीरे–धीरे घुल रही थी" जैसे छोटे–से प्लाट पर लिखी गई मनोरंजक कहानी है। इसमें नीरज अपनी पूर्व प्रेमिका नमिता के यादों की केंचुली उतारकर अपनी नई–नवेली पत्नी वसुधा के प्रेम की दुनिया में खो जाता है। वनिता के फरवरी अंक में भी तीन कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। रीता कुमारी की 'स्वाभिमान' पुरुषवादी दर्प की कहानी है। किंतु समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं और पुरुष अपने अहं का परित्याग कर सचाई की धरती पर लौट आता है ,तब दाम्पत्य जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ छा जाती हैं। 'अहं' पति–पत्नी विमल एवं विजया के बीच पड़ गई दरार की कहानी है। किंतु अंत में दोनों का अहंकार शमित होता है और उनके जीवन में खुशहाली छा जाती है। 'आई लव यू स्कंद' एक अद्भुत प्रेम कहानी है शहीद स्कंद के सपनों को पूर्ण करने के लिए उसकी पत्नी बहुल आर्मी में भर्ती होकर सबको चौंका देती है। वनिता के मार्च 2022 अंक में दो कहानियों का प्रकाशन हुआ है। गीता सिंह की 'कठपुतली' शीर्षक कहानी में पति जयंत अपनी पत्नी तविशा को अपने हाथ की कठपुतली समझता है। किंतु तविशा अपना मुँह खोलकर जयंत को उसकी गलतफहमी का अहसास कराती है। सावित्री रानी की 'स्वाद दाम्पत्य का' शीर्षक कहानी में "मियाँ बीवी की लड़ाई जैसे दूध की मलाई, कब आए, कब खाए, कोई जान न पाए" की कहावत पर पति अमित और पत्नी सावी की लड़ाई

का दिलचस्प और मेल का रोमांचक वर्णन हुआ है। वनिता के अप्रैल अंक में एक लंबी धारावाहिक कहानी मीनू त्रिपाठी की 'वो बरसात' प्रकाशित हुई है, जो मई 2022 अंक में समाप्त होती है। यह निस्संतान दंपत्ति शांतनु और केतकी के गंगासराय की यात्रा के दौरान माता–पिता बनने की इच्छा की तृप्ति की कहानी है। उन्हें रास्ते में प्रीतिका और पुतुल नामक लड़कियों को गोद लेने का अवसर मिलता है, जिससे उन्हें अपार खुशी होती है। मई के अंक में नीरज कुमार मिश्रा की 'प्रेम अपना–अपना' शीर्षक कहानी में कथावाचक कोरोना संक्रमित अपनी पूर्व प्रेमिका आरती की बेवफाई को भुलाकर उसके लिए आक्सीजन का सिलेंडर देने का मन बना लेता है। कथावाचक का कथन "आरती ने अपने हिस्से का प्यार अपने तरीके से निभा दिया था और अपने हिस्से का प्यार निभाने की अब बारी मेरी थी" कहानी के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करता है और कहानी के शीर्षक की सार्थकता भी सिद्ध करता है। वनिता के अक्टूबर अंक में दो कहानियाँ शालिनी गुप्ता की 'कूल मॉम' तथा श्री प्रकाश श्रीवास्तव की 'प्रतिफल' प्रकाशित हुई हैं। 'कूल मॉम' में जहाँ सास–बहु के बीच पीढ़ियों की दूरी और अंततः बहन के समझाने पर सास का बदलना दिखलाया गया है, वही 'प्रतिफल' में कामकाजी पति–पत्नी के बीच की नोंक–झोंक और अंत में पति के बदलते रुख का वर्णन हुआ है। दोनों ही कहानियों में दाम्पत्य जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों की दिलचस्प अभिव्यक्ति हुई है। नवंबर 2022 के अंक में तीन कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। आभा श्रीवास्तव की 'तुमने पुकारा होता' वैष्णवी और विनय के दाम्पत्य जीवन के टूटने की कहानी है। विनय से रिश्ता तोड़कर वैष्णवी एकाकी जीवन यापन करने का निर्णय ले लेती है। फिर भी उसे विनय के पुकारने की अपेक्षा रहती है। विनय उसे पुकारता है, किंतु तब तक देर हो जाती है और वैष्णवी अपना जीवन किसी दूसरे को सौंप चुकी होती है। पुष्पा गोयल की 'एक रिश्ता नया' शीर्षक कहानी में माता–पिता की दकियानूसी सोच के कारण अमन और वीनी एक–दूसरे से नहीं मिल पाते हैं, किंतु जब अमन की बेटी और विनी का बेटा एक–दूसरे से प्यार कर बैठते हैं तो विनी और अमन उनके प्रेम को स्वीकार कर एक नया रिश्ता कायम करते हैं। सुधा आदेश की 'अनचीन्ही' शीर्षक कहानी में एक माँ की ममता, स्वार्थपरता एवं कर्तव्य भावना की अभिव्यक्ति हुई है। वनीता के दिसंबर अंक में भी तीन कहानियों का प्रकाशन हुआ है। इन कहानियों में भी दाम्पत्य जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

दयानंद जायसवाल के संपादन में भागलपुर से 'सुसंभाव्य' साहित्यिक त्रैमासिकी का प्रकाशन होता है। इसके प्रत्येक अंक में प्रायः तीन कहानियों का प्रकाशन होता है। इसके जनवरी–मार्च 2022 अंक में तीन कहानियों का प्रकाशन हुआ है। पहली, मदन गुप्ता सपाटू की 'पप्पू पास कर गया' उस जमाने की कहानी है, जब छात्रों के रिजल्ट अखबारों में प्रकाशित होते थे। पप्पू के फर्स्ट क्लास में फर्स्ट आने पर लोगों की प्रतिक्रया, उसके पिता बाबू रामलाल के कलीग्स की बधाइयाँ एवं पप्पू द्वारा

अखबारों का वितरण आदि क्रियाओं में व्यंग्य की अभिव्यक्ति हुई है। दूसरी, डॉ. रंजना जायसवाल की 'एक अकेली' में वैधव्य प्राप्त औरत की ऐकांतिक जिंदगी के दर्द और पीड़ा की अभिव्यक्ति बुआ और सुरभि की जिंदगियों के रूप में हुई है। दोनों ही विधवा हैं। बुआ आश्रम में रहती है और सुरभि अपने भाई के घर। तीसरी, प्रदीप उपाध्याय की 'कुर्सी' विवरणात्मक कहानी है। इसमें स्मृतियों के धुँधलके में पिता की कुर्सी पर बैठे पुत्र की स्मृतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। सुसंभाव्य के अप्रैल–जून अंक में पाँच कहानियों का प्रकाशन हुआ है। शुभद्रा मिश्रा की 'अनसुलझे प्रश्न' चिंतन प्रधान विवरणात्मक कहानी है। इसमें कथावाचिका अपनी आपबीती का बयान करती है। एक दुर्दांत पति के अत्याचारों से ऊबकर एक स्त्री उसके घर से निकलकर उन्मुक्त जीवन जीने में सफल होती है, इसका वर्णन कहानी में किया गया है। श्रीनाथ की 'विद्यारंभ' शीर्षक कहानी में एडमीशन फोबिया की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। सुदीप और मीता दंपत्ति के माध्यम से कथाकार ने आज के युग में बड़े स्कूलों में बच्चे के एडमीशन संबंधी चिंतनधारा की अभिव्यक्ति की है। देवेंद्र कुमार मिश्रा की 'माँ' एक संवेदनशील कहानी है। इसमें दस वर्ष के बेटे चंपक के अचानक घर से भाग जाने पर एक माँ के दर्द की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। डॉ. मो. परवेज की 'कामयाबी' शीर्षक कहानी में वकालत के पेशे में होने वाली पेचीदगी, छल–छद्म आदि की अभिव्यक्ति हुई है। मीनाक्षी जाखेड़ की 'मर्यादा का मान' दो पीढ़ियों के चिंतन की कहानी है। एक पीढ़ी द्वारा बरती गई मर्यादा की सुरक्षा की भावना का निर्वाह दूसरी पीढ़ी भी उसी मुस्तैदी के साथ करती है। अपने लघु आकार में यह एक प्रेरणास्पद कहानी है।

पंकज सुबीर के संपादन में सीहोर, मध्य प्रदेश से प्रकाशित 'विभोम स्वर' कथा केंद्रित वैश्विक साहित्यिक त्रैमासिकी है। इसमें विश्वभर के जाने माने कथाकारों की कहानियाँ प्रकाशित होती हैं।

विभोम स्वर के जनवरी–मार्च 2022 अंक में दस कहानियाँ संकलित हैं। प्रमोद तिवारी की 'डुबोया मुझको होने ने....' चिंतन प्रधान कहानी है। संक्षिप्त 'पी' नाम से प्रचलित पुरुषोत्तम तिवारी के माध्यम से कथाकार ने एक कर्मठ, कार्यकुशल और क्रियाशील व्यक्ति के दोनों पहलुओं–सेवाकाल एवं कार्यमुक्ति का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चित्रण किया है। रमेश खत्री की 'गुनगुनी धूप' आत्मचिंतन परक कहानी है। आत्मचिंतन के क्रम में कथानायक अपने अनुभवों को व्यक्त करता है। उसकी कल्पना में एक शहर है, शहर की गलियाँ हैं, मंदिर और बिखरा हुआ कर्मजाल है. बिना किसी थीम और थॉट के यह एक पठनीय कहानी है। मीतादास की 'जरूरतों के खंभे देह पर ही टिके रहते हैं' सरोगेट मदर की कहानी है। संपूर्ण कहानी में चिंतन, कल्पना और तिलस्म का जाल फैला है। तिलस्म तब टूटता है, जब कथानायिका कथावाचक से कहती है–"मुस्कुराइए कि अब मैं आपकी उलझन नहीं बनूँगी। मैं ही अपने चाचा जी के बच्चे की सरोगेट मदर हूँ। चंदन ही मेरे बच्चे के पिता का नाम है"। इस कहानी

में एक पिता ही अपनी नाबालिग बेटी को पैसे के लालच में सरोगेट मदर बनने के लिए विवश करता है। सपना शिवाले की 'नन्हीं आस' सर्वथा अनजान और अनबूझे रोग 'विल्सन डिजीज' के मरीज बालक की कहानी है, जो रोगग्रस्तता की स्थिति में अपनी आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करता है कि वह भी चलेगा, पढ़ेगा और अपना सारा काम स्वयं करेगा। डॉ. नीहार गीते की 'मैं बोर हो चुकी हूँ यार' धारा प्रवाह भाषा और प्रवाहपूर्ण शैली में लिखी गई एक कल्पनाप्रसूत कहानी है। आशा शैली की 'हाथ है न!' नारी सम्मान और नारी सशक्तिकरण की कहानी है। प्रेम की परिणति विवाह में मानी जाती है, किंतु कहीं–कहीं बिना विवाह के ही प्रेम परिणति को प्राप्त करता है। प्रगति गुप्ता की 'खेल' ऐसी ही कहानी है जिसमें प्रणयबंधन में नहीं बँधने के बावजूद अंजलि और सुभाष का प्रेम बंधन अमोघ है। अलग–अलग विवाह होने के बाद भी उनके बीच प्रेम का रिश्ता कायम रहता है और अँगुलियों के पकड़ने का खेल जारी रहता है। 'नन्हें दरख्त' ज्योत्स्ना कपिल की बाल कलाकार अथर्व की कहानी है। वह एक बाल कलाकार है। उसकी कलाकारी की बढ़ती शोहरत, व्यस्तता और अनंत धन राशि से माता–पिता को प्रसन्नता होती है। उनकी तृष्णा बढ़ती जाती है, किंतु वहीं दूसरी ओर अपने छूटते हुए बालपन पर अथर्व चिंतित रहता है। 'देवदार के आँसू' डॉ. राम कठिन सिंह की दिलचस्प कहानी है। इसका आदि रोमांचक, मध्य दुखद और अंत संवेदनशील है। प्रारंभ में अस्थाना साहब के सुखी दाम्पत्य जीवन का विवरण मधुर है, मध्य में उनके पुत्र समीर और उसकी पत्नी अर्चना के बीच का कलह और अंततः तलाक दुखद है और अंत में समझौते की शर्त के अनुसार माँ के साथ जा रही पोती उर्मिला को चेक भरा लिफाफा देते समय अस्थाना साहब की मनःस्थिति संवेदना जगाती है। कहानी में घटनाओं का समायोजन बड़े ही करीने से हुआ है। डॉ. संध्या तिवारी की 'खिड़की' अव्यक्त प्रेम की अनूठी कहानी है।

विभोम स्वर के अप्रैल–जून अंक में आठ कहानियाँ संकलित हैं। 'झंझट खत्म' लंदन की धरती पर हिंदी का अलख जगाने वाली शिखा वार्ष्णेय की चिंतन प्रधान कहानी है। लंदन के किसी परिचित की अंत्येष्टि में शामिल होने के आमंत्रण पर कथावाचिका का चिंतन अदभुत है। वह लंदन के मृतक की स्थिति से अपनी तुलना करती है, जो दिलचस्प भी है और हास्यास्पद भी। 'पड़ोस' कमलेश भारती की संवेदनशील कहानी है। अपने पड़ोसी के घर के बिकने पर कथानायक भावुक हो जाता है और उसी भावुकता में बहकर उस घर में रहने वाले दो भाइयों की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थितियों का वर्णन कर डालता है। संपूर्ण कहानी में कथानायक के चिंतन की अभिव्यक्ति हुई है। 'अदृश्य डोरियाँ' डॉ. गरिमा संजय दुबे की कहानी है। इसमें औरतों में होने वाली दिखावटीपन, ईर्ष्या, द्वेष आदि भावों की बड़ी ही सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। तीन बहनों में से बीच वाली बहन महिमा अपनी ही बहनों से दिखावा करती है और उनके प्रति ईर्ष्याभाव से भी ग्रस्त रहती है। काफी हाउस में काफी पीते हुए

जब वह कठपुतलियों को अनेक डोरियों से आबद्ध देखती है, तो उसे अपने भीतर की अनेक डोरियों का आभास तो होता है किंतु चाहकर भी अपने को उनसे मुक्त नहीं कर पाती है। भौंडी' डॉ. मंजू शर्मा की कहानी है। इसमें दो रूममेट–– वेदांशी और उषा की बातचीत के माध्यम से बेदांशी के घरेलू झगड़े का वर्णन किया गया है। वेदांशी के माता–पिता के बीच माता द्वारा नोटबंदी के समय में चार लाख रूपए जमाकर रखने पर पिता द्वारा किए गए विवाद के साथ वेदांशी परिवार के प्रत्येक सदस्य की मनोवृत्तियों, आदतों, व्यवहारों एवं हीन मानसिकताओं का यथातथ्य वर्णन कहानी को दिलचस्प और रोमांचक बना देता है। 'प्लेट में लड़की' उपेंद्र कुमार मिश्र की चिंतन प्रधान कहानी है। एक कला प्रदर्शनी में एक प्लेट में कामातुर मुद्रा में एक नग्न लड़की और उसके आस–पास प्लेट में ही कांटे–चम्मच को देखकर प्रदर्शनी में आई लड़की कामिनी के चिंतन के माध्यम से कथाकार ने नारी सशक्तिकरण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाते हुए यह तर्क दिया है कि जब लड़की को खुलेआम नग्नावस्था में प्रस्तुत किया जाता है, तब नारी सशक्तिकरण का ढिंढोरा पीटना व्यर्थ है। सड़कों पर खुलेआम अर्धनग्न अवस्था में घूमती, सिनेमा के पर्दे पर परोसी गई लड़कियों के अर्धनग्न जिस्म पर इस कहानी में व्यंग्य भी है और यथार्थ भी। 'सुरक्षा' डॉ. सुनीता जाजोदिया की कहानी है। इसमें ट्रेन में सफर कर रही अकेली लड़की प्रियंका की सुरक्षा के प्रति चिंतन की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। पूरी यात्रा के क्रम में प्रियंका अपनी सुरक्षा के प्रति सजग रहती है और अंत में यह पाती है कि उसके पति अविनाश का कथन "सारे पुरुष एक समान नहीं होते है" सच साबित होता है। पुरुषवर्चस्ववादी समाज में प्रायः स्त्रियों पर अत्याचार होता है। पुरुष उस पर अन्याय और अत्याचार करना अपना अधिकार समझता है। किंतु जब स्त्रियाँ घूँघट की बंदिश को तोड़कर खड़ी हो जाती हैं, तब वह भी स्वच्छंदता की हवा में साँस ले सकती है। टीना रावल की 'वृंदा' शीर्षक कहानी में कथानायिका वृंदा के माध्यम से इसी सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। विभोम स्वर के अक्तूबर–दिसंबर अंक में आठ कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। दिव्या माथुर की 'ब्लडी कोठी' परिवार में मकान की हिस्सेदारी को लेकर विवाद की कहानी है। 'हाकीम का पाजामा' नीरज नीर की व्यंग्यात्मक कहानी है। इसमें एक हाकिम के पाजामे की चोरी करने वाले अपराधी की सजा के माध्यम से कानून व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है, जिसमें अपराधी स्वच्छंद घूमता है और निरपराध व्यक्ति दंड का भागी होता है। फिर भी लोग कहते हैं, "न्याय हो तो ऐसा ही", अर्चना मिश्र की 'निर्णय सही था' शीर्षक कहानी में एक लड़की के विवाह करने के निर्णय को सही ठहराया गया है। क्योंकि धमकी देने वाले के कारण जो हादसा होता है, उसमें लड़की की कोई गलती नहीं रहती है, बल्कि उसने तो दबंगता और दिलेरी का परिचय देकर अपराधी को पकड़वाने एवं दंड दिलाने में पुलिस और कानून की मदद की थी। सतीश सरदाना की 'बूढ़ा हो गया हुआ पौधा' विवरणात्मक कहानी

है। इसमें कथावाचक द्वारा अपने अस्सी वर्षीय बूढ़े मौसा मुकुंदलाल दुबे की जिंदगीनामा का दिलचस्प विवरण प्रस्तुत किया गया है। शेफालिका सिन्हा की 'सुख विदाई का' अवकाश प्राप्त कॉलेज शिक्षक श्यामाचरण बाबू की कहानी है, जो रिटायर होने के बाद जिस ललक को लेकर अपने छोटे बेटे–बहू के पास बेंगलुरु जाते हैं, वह पूर्ण नहीं हो पाता है, क्योंकि बेटे–बहू यहाँ तक कि पोते–पोती के पास भी उनसे बोलने–बतियाने का समय नहीं होता है। सबकी अपनी–अपनी दिनचर्या और व्यस्तता होती है। ऊबन और थकान महसूस कर वे अपनी पत्नी उमा के साथ अट्ठारह दिनों के बाद ही अपने घर राँची लौट आते हैं। 'अगोचर' हरिप्रकाश राठी की कहानी है। इसमें न्यायप्रिय एडवोकेट सतीश शर्मा के चार वर्षीय बेटे मयंक के खोने एवं पुनः मिलने की रहस्यमयी घटनाओं का मार्मिक वर्णन हुआ है। संदीप तोमर की 'तुम आओगे न' और डॉ. चुम्मन प्रसाद श्रीवास्तव की 'मजबूर' भी अच्छी कहानियाँ हैं।

'किस्सा' अनामिका शिव के संपादन में भागलपुर से प्रकाशित समकालीन कथा साहित्य की मासिकी है। किस्सा के फरवरी–अप्रैल के संयुक्तांक में सत्रह कहानियों का प्रकाशन हुआ है। अंक की पहली, 'चाहत' शिव कुमार शिव की लंबी कहानी है। इसमें प्रेम, रोमांस, दायित्व जैसे अनेक भावों की अभिव्यक्ति हुई है। कथानायक और नीरजा के रोमांस का वर्णन कहानी का मुख्य प्रतिपाद्य है। संतोष दीक्षित की 'अथ मोहल्ले की आत्मकथा' शीर्षक के अनुरूप एक मोहल्ले में रहने वाले सामान्य लोगों. मकेसर प्रसाद, राजेश्वर बाबू, उनके तीन बेटों की दिनचर्या का वर्णन किया गया है। यह एक विवरणात्मक कहानी है। गोविंद उपाध्याय की 'दो परछाइयाँ' दो हमटहल श्रीपति और जोगिंदर की कहानी है, जो एक ही गाँव में रहते हैं और प्रत्येक सुबह साथ–साथ टहलते हैं। उनके बीच की बातचीत के माध्यम से कथाकार ने गाँव की स्थिति का यथातथ्य चित्रण किया है। अशोक गुजराती की 'मेन टू' लिव इन रिलेशन की अधूरी कहानी है। इसमें लिव इन रिलेशन के टूट गए संबंध के बाद पुलिसिया कार्यवाही एवं अदालती फैसले के औचित्य का विश्लेषण किया गया है। 'स्वर्ग की सीढ़ी' निरुपमा राय की सकारात्मक सोच की कहानी है। इसमें बेटे और बेटी के अंतर को मिटाकर उनमें समानता के भाव की स्वीकृति हुई है। 'मुक्ति' सपना शिवाले सोलंकी की कल्पनाप्रसूत चिंतनशील कहानी है। इसमें एक अनाथ भिखारिन बुढ़िया अम्मा के प्रति कथानायिका एवं किराना के दुकानदार उमेश की संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति हुई है। 'पुरखे' राजेंद्र जोशी की सांप्रदायिक दंगे पर आधारित सकारात्मक सोच की कहानी है। इसमें मजहब के नाम पर दंगा फैलाने वालों के कुकृत्यों के वर्णन के क्रम में यह स्पष्ट किया गया है कि मजहब वैर करना नहीं, बल्कि प्रेम से रहना सिखलाता है। श्यामल बिहारी महतों की 'लगाव' शीर्षक कहानी में एक जानवर के प्रति इंसानी प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। दुखना मनुष्य नहीं, एक जानवर था, जिसका खुलासा रहस्यात्मक ढ़ंग से कहानी के अंत में होता है। 'बँधी प्रीत की डोर' आदित्य

अभिनव उर्फ डॉ. सी.पी.श्रीवास्तव की लिव इन रिलेशनशिप की कहानी है। एक ही मल्टीनेशनल कंपनी में कार्यरत दो प्रोग्रामर सहकर्मियों आकांक्षा त्रिपाठी और नीलांबर भटनागर के बीच उभरने वाले प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। किंतु एक ओर माता–पिता के द्वारा विवाह का दबाव और दूसरी ओर नीलांबर के अटूट प्रेमबंधन में बँधी आकांक्षा का दर्द, कहानी का अधूरा अंत पाठक को विस्मय में डाल देता है। 'पहले की चाहत' डॉ. महेशचंद्र पांडेय की कहानी है। अपर्णा के जीवन में पति अर्णव का शराब के नशे में वहशीपन अपर्णा के जीवन में जहर घोल देता है। पिता के परामर्श पर वह एक विधुर जज से विवाह तो कर लेती है, परंतु अर्णव को भूल नहीं पाती है। इसी असमंजस में जज के घर सारी सुख–सुविधाओं के बावजूद सुखी नहीं रह पाती है और अंत में मृत्यु का वरण करती है। इस कहानी में कथाकार ने नारी मन का बड़ा ही सूक्ष्म विश्लेषण किया है। संजय कुमार सिंह की 'जंगल से बाहर' बिना किसी थीम और थॉट की कहानी है। इसमें बहुसंख्यक पात्रों के तर्क–वितर्क का वर्णन हुआ है। 'उड़ चलूँ तुम्हारे संग' शैली बक्शी खडकोलकर की दिलचस्प कहानी है, जिसमें एक स्कूटर की जुबानी एक परिवार की स्थिति का वर्णन हुआ है। मीना धर पाठक की 'पलकों के पीछे' शीर्षक कहानी में एक वृद्धा मधु के दर्द की अभिव्यक्ति हुई है। मधु दर्द के कारण बेचैन होकर तड़पती है, जिसे उसका पति नाटक कहकर नजरंदाज कर देता है। किंतु उसकी बहू अनन्या उसकी सेवा और उपचार में समर्पण भाव से तत्पर रहती है। डॉक्टर को फोन कर मधु को सांत्वना देती है। इस कहानी में एक बहू की सेवा भावना की अभिव्यक्ति हुई है। महेश शर्मा की 'जल जमीन और जीवन' विस्थापन का दर्द व्यक्त करती मार्मिक कहानी है। जलप्लावन के बाद गाँव के लोगों को दूसरे स्थान पर विस्थापित किया जाता है। अपना गाँव और अपनी जमीन छूट जाने के दर्द की अभिव्यक्ति ग्रामीण भुवन के माध्यम से हुई है। रवि शंकर सिंह की 'आपदधर्म' शीर्षक कहानी में कोरोनाकालीन विभीषिका का वर्णन किया गया है। इसमें कोरोना से पीड़ित प्रशून की मृत्यु के बाद श्राद्ध कर्म में पुरानी लीक से हटकर सिर्फ होम–जाप की पहल की जाती है। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ "गाँव में श्राद्ध कर्म के लिए पिंडदान, गोदान आदि कर्मकांडों को छोड़कर होम–जाप करने की पहल पहली पहल थी" शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करती है। शूरवीर रावत की 'लालसा' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। इसमें ग्रामीण पात्रों की करतूतों के माध्यम से ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया गया है। नरेश मौर्य की 'आखरी प्रणाम' एक देशभक्त की भक्ति और कुर्बानी की कहानी है। इसमें इंडियन मिलिट्री इंटेलिजेंस कोर का जासूस रमनदीप सिंह गोपनीय मिशन पर पाकिस्तान जाता है। अपना मिशन पूरा कर लेता है। किंतु पाकिस्तानी सैनिकों की गोलाबारी का शिकार हो जाता है। परंतु घायलावस्था में रेंगते हुए भारत की धरती पर पहुँचकर देश को अंतिम प्रणाम कर शहीद हो जाता है।

वर्ष 2022 की कहानियों के अध्ययन और अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि बड़े कैनवास पर रचित इन कहानियों में वह सबकुछ है, जो आज के समाज में घटित हो रहा है। कथाकारों ने इन सब पर अपनी लेखनी चलाई है और कहानियों का प्रणयन किया है। कोरोना देश की सबसे बड़ी त्रासदी है, जो पिछले वर्षों से घनीभूत होती चली आ रही है। रवि शंकर सिंह की 'आपद धर्म' एवं रेनू यादव की 'डर' कोरोनाकालीन विभीषिका को व्यक्त करती कहानियाँ हैं। 'आपद धर्म' में जहाँ कथाकार ने कोरोना की विभीषिका का वर्णन किया है, वहीं इस अवस्था में अंत्येष्टि क्रिया की नई परिपाटी का उल्लेख किया है। नारी विमर्श और दलित विमर्श नवोन्मेषी समाज की देन हैं। पिछले कई वर्षों से इस आशय की कहानियाँ लिखी जा रही हैं। इस वर्ष भी कथाकारों ने इन पर कहानियों की रचना की हैं। आशा शैली की 'पवित्तर अपवित्तर' दलित विमर्श की कहानी है, तो टीना रावल की 'वृंदा' और गीता सिंह की 'कठपुतली' नारी सशक्तिकरण की कहानियाँ हैं। संस्कृतियों के फेंट ने भारतीय संस्कृति को भी प्रभावित किया है। सेरोगेट मदर और लिव इन रिलेशनशिप भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति की देन है। कथाकारों ने इस आशय की भी कहानियों का प्रणयन किया है। मीता दास की 'जरूरतों के खंभे देह पर ही टिके रहते हैं' और अशोक गुजराती की 'मेन टू' तथा आदित्य अभिनव उर्फ डॉ.एम.पी. श्रीवास्तव की 'बँधी प्रीत की डोर' क्रमशः सेरोगेट मदर और लिव इन रिलेशन की कहानियाँ हैं। प्रेमचंद से विरासत में मिली ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति ने कहानीकारों को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया है। प्रायः प्रतिवर्ष इस पर बहुसंख्यक कहानियों की रचना होती रही है। इस वर्ष भी शूरवीर रावत की 'लालसा', गोविंद उपाध्याय की 'दो परछाइयाँ' और रेनू यादव की 'टोनहिन' ग्रामीण परिवेश को उजागर करती कहानियाँ हैं। 'लालसा' और 'दो परछाइयाँ' में ग्रामीण परिवेश का चित्रण हुआ है, तो 'टोनहिन' में गाँवों में पनपते–विकसते अंधविश्वास का वर्णन हुआ है। विकसते संचार माध्यमों के युग में फेसबुक एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। हर वय और हर श्रेणी के लोगों ने इसका प्रयोग करना शुरू कर दिया है। फेसबुक पर क्षमा शर्मा ने 'फेसबुक पोस्ट' शीर्षक से कहानी लिखकर इसकी प्रासंगिकता सिद्ध की है। अंतर्जातीय एवं विधवा विवाह को भारतीय समाज द्वारा मान्यता प्राप्त हो चुकी है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अंतर्जातीय एवं विधवा विवाह के समर्थन में कहानियाँ लिखी गई हैं। 'कामवाली' और 'तुम धन्य हो' अवध किशोर प्रसाद की ऐसी ही कहानियाँ हैं। सांप्रदायिक दंगे, विस्थापन का दर्द और देशभक्ति की भावना भारतीय समाज और संस्कृति के अंग बन गए हैं। आए दिन देश में दंगे होते रहते हैं। मजदूरी की टोह में अपनी धरती को छोड़ते श्रमिकों को विस्थापन का दर्द झेलना पड़ता है और देश की सुरक्षा के लिए कर्मयोगियों को शहादत देनी पड़ती है। इन सब की भी अभिव्यक्ति कहानियों में हुई है। सुरेंद्र जोशी की 'पुरखे', महेश शर्मा की 'जल, जमीन और जीवन' तथा नरेश मौर्य

की 'आखरी प्रणाम' क्रमशः सांप्रदायिक दंगा, विस्थापन का दर्द एवं देश भक्ति की अभिव्यक्ति करती उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रवृत्ति विशेष को केंद्र में रखकर कहानी संकलनों के प्रकाशन हुए हैं। भालचंद्र जोशी की दस कहानियों के संकलन 'तितली धूप' के केंद्र में आदिवासी जीवन है। गोंविद उपाध्याय की पंद्रह कहानियों के संकलन 'वानप्रस्थ और अन्य कहानियाँ' का प्रतिपाद्य बुजुर्ग की मानसिकता है, तो डॉ. रमाकांत शर्मा की बीस कहानियों का संकलन 'सफेद तितली' का प्रतिपाद्य प्रेम है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वर्ष 2022 की कहानियों का विचारफलक व्यापक, बहुआयामी और बहुसंदर्भी है।

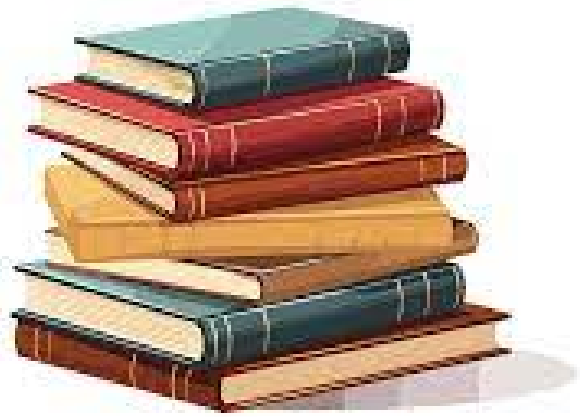

24

हिंदी गज़ल साहित्य



रोहिताश्व कुमार अस्थाना

बाल साहित्य में महत्वपूर्ण लेखन। कई बाल काव्य, बाल उपन्यास, बालकथा, बालनाट्य और बाल जीवनी प्रकाशित। अन्य रचनाएँ–' हिंदी गज़ल : उद्भव और विकास',' जल तरंग बजते हैं (गीत संग्रह)', 'माटी की गंध' (कहानी संग्रह) आदि। अनेक पुस्तकों का संपादन। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा बाल साहित्य का सर्वोच्च सम्मान,' बाल साहित्य भारती' सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

बहुत पहले आधुनिक संदर्भों में समकालीन हिंदी गज़ल को परिभाषित करते हुए मैंने अपनी एक गज़ल के मक़ते में विश्वास व्यक्त किया था कि 'काव्य की चर्चित विधा बन जाएगी/एक दृढ़ विश्वास है हिंदी गज़ल!'

आज मेरे कवि मन की वह आश्वस्ति रंग लाई और हिंदी गज़ल की सर्वत्र धूम मच गई! आज हिंदी गज़ल के पास शोध के अधिकारी विद्वान भी हैं और नए तेवर के साथ गज़ल रचने वाले हिंदी के तमाम गज़लकार भी हैं! आज हिंदी गज़ल की विकास यात्रा अनेक पड़ावों को पार करती हुई लोकप्रियता के नए आयामों की ओर अग्रसर है।

आज प्रतिष्ठित, चर्चित एवं नवोदित गज़लकारों के गज़ल संग्रह नई सज–धज के साथ प्रकाशित एवं चर्चित हो रहे हैं। हिंदी गज़ल के ऐतिहासिक पक्ष को रेखांकित करने वाले अनेक उत्कृष्ट संपादित संकलन भी चर्चा में आ रहे हैं। समकालीन पत्र–पत्रिकाओं में भी हिंदी गज़लों का वर्चस्व है। कई पत्र–पत्रिकाएँ तो हिंदी गज़ल पर केंद्रित विशेषांक भी प्रकाशित कर रही हैं।

आज हिंदी गज़ल को लेकर प्रतिवर्ष इतना काम हो रहा है कि अब वार्षिक आधार पर हिंदी गज़ल का उपलब्धिपरक लेखा–जोखा प्रस्तुत करने का समय आ गया है। अनेक पत्र–पत्रिकाएँ तो अपनी वार्षिकी में साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति हिंदी गज़ल पर भी सर्वेक्षण प्रस्तुत करने लगी हैं। कई विश्वविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रम में हिंदी गज़लें भी सम्मिलित की गई हैं। प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं की वार्षिकी का उपयोग प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र अपने हिंदी विषय के अंतर्गत कर रहे हैं।

गत वर्षों की भाँति वर्ष 2022 भी गज़ल के क्षेत्र में एक उपलब्धिपरक वर्ष रहा

है। हिंदी गज़ल के क्षेत्र में डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति जी सक्रिय एवं धुआँधार लेखन के पर्याय बन चुके हैं। अब तक इनकी उम्दा एवं बेहतरीन गज़लों के 9 संकलन प्रकाशित एवं चर्चित हो चुके हैं। इधर 2022 में इनके 'गज़ल समग्र' के अंतर्गत एनी बुक नामक स्तरीय प्रकाशन ने दो भाग प्रकाशित किए हैं। ये दो भाग हैं– 'फिक्र की सीढ़ियाँ' और 'फ़िक्र–ए–तमाम।' गज़ल संग्रह के प्रथम खंड में 'सोच की तीलियाँ' संग्रह के अंतर्गत 88, 'सन्नाटे का शोर' के अंतर्गत 86, 'आईना गूँगा नहीं' के अंतर्गत 80 तथा 'ख़यालों का सफ़र' में 89 गज़लें प्रस्तुत की गई हैं।

गज़ल समग्र के परिकल्पनाकार भाई अजय प्रजापति जी ने इन्हें सुरक्षित एवं संरक्षित करने के उद्देश्य से अपना सारगर्भित वक्तव्य दिया है। डॉ. मधुसूदन साहा जी ने आलेख में कवि की गज़लों में जन चेतना की तलाश की है। सुप्रसिद्ध गज़लकार एवं वरिष्ठ उस्ताद भाई नासिर अली 'नदीम' का आलेख 'सहज संवेदनशील और दृष्टि संपन्न गज़लकार डॉ. कुमार प्रजापति' की गज़लों का मूल्यांकनपरक उल्लेख प्रस्तुत करता है। डॉ. अंजुम बाराबंकवी जी ने डॉ. कुमार प्रजापति जी को बाकमाल शायर सिद्ध किया है। इसी प्रकार कुमार प्रजापति जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सुश्री सुधा प्रजापति जी ने अपना अंतरंग संवेदनशील एवं मूल्यांकनपरक आलेख प्रस्तुत किया है।

डॉ. कुमार प्रजापति जी की गज़लों में माँ की महिमा को प्रमुखता से रेखांकित किया गया है। यथा– 'माँ की खिदमत से क्यूँ भाग रहा है पगले/वो दुआ देगी तेरा भाग्य सँवर जाएगा।'

हिंदीतर भाषी क्षेत्र राऊरकेला (उड़ीसा) से समर्थ गज़लकार डॉ. कुमार प्रजापति अहंकार की परिधि से ऊपर उठकर अपने बारे में स्वयं स्वीकारते हैं– 'क्या शायरी होती है, मुझे कुछ नहीं मालूम/करता हूँ बयाँ मैं अपने जज्बात गज़ल में।'

इसी प्रकार अभिभावकों को अपने पाल्यों की पढ़ाई–लिखाई पर ध्यान देने की चेतावनी देते हुए कवि कहता है– 'बच्चे को अपना कोई कलम लाकर दीजिए/ऐसा न हो कि हाथ में चाकू दिखाई दें।'

इस प्रकार गज़ल प्रेमी पाठकों एवं मर्मज्ञों को कवि ने चार गज़ल संग्रह, 'गज़ल समग्र' के प्रथम खंड में पढ़ने और सुरक्षित रखने का अद्भुत अवसर प्रदान किया है।

डॉ. कुमार प्रजापति विषयक गज़ल समग्र के द्वितीय खंड में 'भावनाओं की बस्तियाँ' में 91 'संवेदनाओं के इंद्रधनुष' में 99, 'धूप ही धूप' में 91 तथा 'ख्वाहिशों का मेला' में 101 गज़लें संकलित हैं। प्रस्तुत खंड को 'फ़िक्र–ए–तमाम' शीर्षक दिया गया है। समग्र में भाई ज्ञान प्रकाश 'विवेक', अनिरुद्ध सिंहा, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, रामेश्वर वैष्णव आदि के भूमिकापरक आलेख देवनागरी लिपि में रचे–छपे प्रस्तुत खंड के कलेवर में चार चाँद लगाने वाले हैं। सियासत के दुष्परिणामों पर टिप्पणी करते हुए

कुमार साहब पूछ बैठते हैं– 'अजब–सा खौफ़ रहता है/दशहरा और मुहर्रम में/हमारे शहर में/ गंदी सियासत कौन करता है?' इसी संदर्भ में कवि का एक शेर कितना उपयुक्त बन पड़ा है– मौला जाने अच्छे दिन कब आएँगे/खून से लथपथ जन्नत की हर वादी है।'

आज दुनिया जहान की तमाम फिक्रों में बचपन जैसे हमसे दूर होता जा रहा है। बचपन के वह खेल–खिलौने जैसे विलुप्त हो गए हैं। कवि प्रश्न करता है– 'वो गिल्ली, वो डंडा/वो मिट्टी घरौंदा/पसीने से लथपथ/वो बचपन किधर है?'

कवि अपने किरदार से अत्यंत ही मातृभक्त है। कवि का कथन है कि– 'गमों की धूप से बचने की खातिर/ऐ मेरी माँ तेरा आँचल बहुत है।'

अतः कवि टूटते–बिखरते परिवारों को सलाह देते हुए कहता है– 'बाप–माँ है' फरिश्तों की सूरत/बाप–माँ का बहुत ध्यान रखना'।

कवि ने युवा पीढ़ी को निरंतर चलते रहने का संदेश दिया है, क्योंकि चलते रहना ही जीवन है। यथा– 'पैदा कर चलने की हिम्मत/पत्थर भी भगवान लगेगा।'

इस प्रकार वरिष्ठता एवं जीवन के परिपक्वता से अर्जित अनुभवों के आधार पर डॉ. कुमार प्रजापति ने दुनिया–जहान की अपनी खट्टी–मीठी अनुभूतियों को वाणी दी है। गज़ल की उत्पत्ति कितनी कठिन परिस्थितियों में होती है, इसका उल्लेख कवि के एक शेर में देखा जा सकता है ''बहुत खून दिल का किया तो है मैंने/जिगर के लहू से गज़ल लिख रहा हूँ।'

डॉ. कुमार प्रजापति जी के दो गज़ल–समग्र अपने आप में उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि हैं। प्रस्तुत गज़ल समग्र के दोनों खंड शोध की अनंत संभावनाएँ जगाते हैं। निःसंदेह हिंदी गज़ल के इतिहास में डॉ. कुमार प्रजापति के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया जाएगा।

इसी वर्ष पंख प्रकाशन, मेरठ (उ.प्र.) से हिंदी गज़ल के सुपरिचित हस्ताक्षर डॉ. राम गोपाल भारतीय जी की 67 गज़लों को 'तीरगी से लड़ता रहा' शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। सभी गज़लें आम आदमी के दुख–दर्द को रेखांकित करने वाली हैं। यथा– 'हजार साल से बैठे हैं दूर सूरज से/हमें भी धूप का हक़ है हुजूर सूरज से।' इसी प्रकार सियासी हवा का रुख मोड़ने को संकल्पित आम आदमी का बयान द्रष्टव्य है– 'सियासी हवा का भरम तोड़ देंगे/न अब चुप रहेंगे कसम तोड़ देंगे।' पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

इसी प्रकार ज़नाब ऐन. मीम. कौसर साहब का गज़ल संग्रह 'आईने ख्वाहिशों के' जो समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद से इसी वर्ष आया है, अपने आप में उल्लेखनीय है। संकलन में 94 उत्कृष्ट गज़लें संगृहीत हैं। यथा– 'जब क़लम मुंसिफों के टूट गए/सब भरम फैसलों के टूट गए।' X अथवा X 'नूर बिखरा है वफ़ा का कौन

है/शहरे दिल में आईना–सा कौन है?' भाई विजेंद्र सिंह परिहार, राजेंद्र नाथ रहबर, रमेश प्रसून और देवेंद्र माँझी की सारगर्भित भूमिकाओं के परिप्रेक्ष्य में इन गज़लों को पढ़ना और समझना पाठकों के लिए बेहतर होगा।

हिंदी गज़ल के सुचर्चित हस्ताक्षर भाई ऋषि पाल धीमान जी का पाँचवाँ गज़ल संग्रह 'रास्ता दिल का' वर्ष 2022 में ही 'भारतीय ज्ञानपीठ', नई दिल्ली–3 से प्रकाशित हुआ जिसमें इनकी 100 गज़लें संकलित हैं। दैनिक बोलचाल की भाषा में रची गईं ये गज़लें बेमिसाल हैं। कवि की गज़ल के शिल्प पर अच्छी पकड़ है। इनका अप्रतिम कहना भी सर्वथा प्रशंसनीय है। प्रस्तुत संकलन से कवि के कुछ शेर उद्धृत करना सर्वथा प्रासंगिक ही होगा। देखें– 'चलता हूँ इसके साथ/इसे काटता नहीं/इस वास्ते ही वक़्त/मुझे काटता नहीं। X'कर्ज़ों के गम में/खुशियों के संबल तितर बितर/आँगन उदास बहुओं की/पायल तितर–बितर। X अथवा X 'हमने बाँटा प्यार निरंतर/तुमने की तकरार निरंतर।'

इस प्रकार संकलन की समस्त गज़लें पाठकों के दिलों को छूकर उन्हें नई ताज़गी से भर देने वाली हैं।

इसी क्रम में इंदौर के वरिष्ठ कवि एवं गज़लकार श्री चंद्रभान भारद्वाज जी की 74 हिंदी गज़लों का सातवाँ गज़ल संग्रह 'सरल–सा हल नहीं मिलता' श्री विनायक प्रकाशन, इंदौर (म.प्र.) कहानियों वर्ष 2022 में ही प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। इन गज़लों में कवि ने आधुनिक युगबोध को प्रभावशाली ढंग से रेखांकित किया है।

समय की तीव्रगति को कवि के एक शेर में देखा जा सकता है। यथा– 'अश्वगति से वक़्त भारद्वाज सरपट भाग रहा/अपना पोता अपने से ज्यादा सयाना हो गया।'

कवि माँ की महिमा से विशेष प्रभावित है। यथा– 'ज्योति आँखों की लिखी और हृदय की धड़कन/प्यार में माँ ने मुझे चाँद का टुकड़ा लिक्खा।'

आज टूटते–बिखरते जीवन मूल्यों के इस युग में अनेक निराश्रित माता–पिता अपने कुपुत्रों को भी सुपुत्र सिद्ध करने में लगे रहते हैं। उदाहरणार्थ– 'पुत्र जो छोड़ गया उनको अनाथालय में/उसको माँ–बाप सदा कुल का बताते दीया।'

इस संदर्भ में गज़लकार नई युवा पीढ़ी को संदेश देते हुए कहता है– 'खुद रह लेना थोड़े दुख में/अपने माँ–बाप सुखी रखना।'

अपनी बात को रंग देने के लिए भारद्वाज जी ने पौराणिक मिथकों का सुंदर प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ– 'राम वनवास, भारत राज लिखाकर आए/इन हथेली की लकीरों में भी क्या–क्या लिखा।'

कवि की इन गज़लों में सियासत की विसंगतियों पर यत्र–तत्र व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ भी मिलती हैं।

प्रत्येक गज़ल को गज़लकार ने शीर्षक देने का नया काम किया है। उन्होंने अपनी गज़लों के मक़्ता में लय के अनुसार भारद्वाज अथवा भरद्वाज उपनाम का प्रयोग किया है। इनकी गज़लों में दैनिक बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग मिलता है। अपनी गज़लगोई के बारे में इनकी स्वीकारोक्ति है कि– 'न मतला याद रहता है न भारद्वाज 'मक़्ता' ही/अगर हो शेर गोई– में रवानी याद रहती है। 'अथवा' 'काफ़िया जाँचे, बहर परखी, ग़ज़लियत देख ली/शेर गोई में सहज कारीगरी अच्छी लगी।'

गज़ल के कथ्य एवं शिल्प के बारे में गज़लकार की अच्छी पकड़ है। उनकी कहने की जादूगरी तो सचमुच ही कमाल की है। वे आश्वस्त हैं कि– 'न भारद्वाज की हस्ती मिटेगी/उसे गज़लों में ढलना आ गया है।'

श्रेष्ठ कवि एवं उस्ताद शायर डॉ. ब्रह्मजीत गौतम जी की भूमिका कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाली है। हिंदी गज़ल के क्षेत्र में भाई चंद्रभान भारद्वाज जी का महत्वपूर्ण अवदान सदैव रेखांकित किया जाएगा। प्रस्तुत कृति पठनीय एवं संग्रहणीय है।

इसी वर्ष काव्य कुंज परिवार प्रकाशन, संडीला, हरदोई से चर्चित गज़लकार डॉ. कमर खाँ 'वहम' साहब का दूसरा गज़ल संग्रह 'कुछ तो है' प्रकाशित हुआ। डॉ. वहम साहब आत्म प्रचार–प्रसार से दूर रहकर काव्य साधना में स्वांतः सुखाय की भावना से लगे रहते हैं। ये उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं के जानकार हैं। गज़ल के शिल्प पर इनकी अच्छी पकड़ है। इनकी गज़लों पर उर्दू का रंग कुछ अधिक गहरा है। गज़लों में प्रयुक्त उर्दू की कठिन शब्दावली के हिंदी शब्दार्थ नीचे छपे होने के कारण हिंदी पाठकों को इन्हें जानने–समझने में सुविधा होगी।

वहम साहब की समस्त गज़लें एक से बढ़कर एक भाव प्रवण, प्रभावशाली एवं गागर में सागर भरने वाली हैं। उदाहरणार्थ इनकी एक परंपरागत गज़ल से कुछ शेर देखें– 'ज़रा रूख से पर्दा उठाकर तो देखो/मिलेगा सुकूँ मुस्कराकर तो देखो'/कभी आह की घाटियों तक न पहुँचे/ज़िगर–दिल में नश्तर लगाकर तो देखो/ मोहब्बत, वफा, प्यार पहचान मेरी/ मिरे दर पे धूनी रमाकर तो देखो।'

उनकी गज़ल के कुछ शेर नई पीढ़ी के लिए अत्यंत ही संदेशपरक लगते हैं। यथा–'मत कहिए पछताना होगा/खोकर ही कुछ पाना होगा/आस फलों की रखते हो तो पहले/बाग लगाना होगा'

इसी प्रकार प्रस्तुत गज़ल संग्रह का शीर्षक तो सचमुच ही उद्धरणीय बन पड़ा है। ज़रा देखिए– 'तुम किसी जागीर के मालिक अगर/मेरी भी दो ग़ज़ ज़मीं है, कुछ तो है।'

आशा है उर्दू न जानने वाले हिंदी पाठकों के लिए भी यह एक उपयोगी किताब सिद्ध होगी।

वर्ष 2022 में ही सुकवि एवं 'संवदिया' पत्रिका के संपादक भाई मांगन मिश्र 'मार्तंड' जी की 71 जनवादी हिंदी गज़लों का संग्रह 'अँधियारा है यहाँ' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली–2 से प्रकाशित हुई है। जीवन के यथार्थ से जुड़ी ये गज़लें गागर में सागर भरने वाली हैं। यथा– 'अब लोग मेरे ही मोहल्ले के हुए हैं अजनबी/मिलता कहाँ कोई गले हर आदमी खुद में बड़ा।'

इसी प्रकार 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के नारे को रेखांकित करता हुआ 'मार्तण्ड' जी का एक शेर भी उद्धरणीय है। देखिए– 'वे अभी खूब लिख पढ़ रहीं/लड़कियाँ गाँव की बढ़ रहीं? कुल मिलाकर साफ–सुथरी गज़लों का यह संकलन पठनीय एवं संग्रहणीय बन पड़ा है।

इसी वर्ष गुंजन प्रकाशन, मुरादाबाद (उ.प्र.) से वरिष्ठ कवि भाई नरेंद्र गज़ल जी की 108 हिंदी गज़लों का संग्रह 'सीपियों में' शीर्षक से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। आम आदमी की ज़िदगी से जुड़ी हुई इन गज़लों में यत्र–तत्र राजनीतिक विसंगतियों के रंग भी देखने को मिलते हैं। संकलन के एक दो शेर यहाँ उल्लेखनीय बन पड़े हैं। यथा– 'घाट पर हम लाश नहलाने धुलाने में लगे हैं/कुछ हितैषी अब चिकित्सक को बुलाने में लगे है?' X अथवा X 'कौन राजा की हाट है भाई/हर तरफ लूट पाट है भाई?' आम बोलचाल की भाषा में रची ये गज़लें पाठकों के दिलों को छू लेने में समर्थ हैं।

बाल साहित्य के समर्थ कवि एवं लेखक भाई घमंडीलाल अग्रवाल जी की 100 हिंदी गज़लों का संग्रह 'गुलमोहर की छाँव में' इसी वर्ष साहित्य भूमि प्रकाशन, नई दिल्ली–59 से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ है। वे अपनी एक गज़ल के एक शेर में आम आदमी को आईना दिखाते हुए सचेत करते हैं– 'आदमी तो है वही पर कद़ नदारद/जिंदगी से आजकल मकसद नदारद।'

साथ ही जीवन में ठोकरें खाकर सम्हलने और कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देते हुए वे कहते हैं– 'ठोकरें जब रास आईं/हौंसलों को बल मिला/आज में से ही निकलकर/एक सुंदर कल मिला।' पुस्तक पाठकों को प्रभावित करने में सक्षम है।

इसी वर्ष सुकवि भाई रामचरण 'राग' जी की गज़लों का संकलन 'उम्मीद का मौसम' लिटिल बर्ड पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली–2 से प्रकाशित हुआ। अधिकांश गज़लें पाठकों में सकारात्मक सोच जगाने वाली हैं।

इसी प्रकार वर्ष 2022 में ही वरिष्ठ कवि भाई डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ' जी की 101 बेहतरीन गज़लों का संकलन 'बूँद–बूँद गज़ल' शीर्षक से राधा कृष्ण पेपर

बैक्स प्रकाशन, दिल्ली–51 से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। उनकी गज़लों के बारे में उन्हीं का एक शेर तो सर्वथा उद्धरणीय है। यथा– 'ये तल्ख, कभी चुभती/कभी मीठी लगे हैं/ये सच की कसौटी पे/तपाई हुई गज़लें।' इनकी गज़लों में हिंदी के साथ–साथ उर्दू–फारसी एवं अंग्रेजी के बोलचाल के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है।

इसी वर्ष भाई सुरेश पबरा आकाश जी की 86 गज़लें 'सितारों को जगाना है' शीर्षक से 'पहले–पहल प्रकाशन, भोपाल द्वारा पुस्तक रूप में प्रकाशित की गई हैं। सीधी–सरल एवं सपाट शैली में लिखी गई ये गज़लें पाठकों को पसंद आएँगी– ऐसा मेरा विश्वास है।

इसी क्रम में इसी वर्ष भाई चाँद मुंगेरी जी की 94 गज़लें 'क्षितिज के पार' शीर्षक से पुस्तकाकार में, अमन प्रकाशन, नई दिल्ली, कहानियाँ प्रकाशित की गई हैं। सभी गज़लें पाठकों में सकारात्मक चिंतन को जगाने वाली हैं। एक उदाहरण देखें– 'चोट गहरी है मगर उत्साह हर सकती नहीं/गंध चंदन की बिखरकर यूँ ही मर सकती नहीं।' पाठकों के दिलों में रच–बस जाने वाली प्रस्तुत गज़लकृति पठनीय एवं संगहणीय है।

वर्ष 2022 में ही श्वेत वर्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ने सुचर्चित गज़लकार भाई रमेश प्रसून जी की गज़लों का ताज़ा संकलन 'सिर्फ़ तू, सिर्फ़ तू' शीर्षक से प्रकाशित किया है। इन गज़लों में कवि ने दुनिया जहान के दुख–दर्द को संवेदनात्मक धरातल पर प्रस्तुत किया है, जो सीधे पाठकों के दिलों से जुड़ने की सामर्थ्य रखती हैं। उदाहरणार्थ एक शेर प्रस्तुत है– 'दर से दर गलियों से घर अनजाना है/किसको दें आवाज़ नगर बेगाना है।' कृति पठनीय एवं संग्रहणीय है।

इसी प्रकार वर्ष 2022 में ही रिंगी पब्लिकेशन, खन्ना (पंजाब) से प्रकाशित भाई रवि प्रताप सिंह की गज़ल कृति 'सन्नाटे भी बोल उठेंगे' उल्लेखनीय है। इन गज़लों में कवि ने आम आदमी की व्यथा–कथा के बहाने समूचे समकालीन युग–बोध को ही अभिव्यक्ति दी है। उनका एक रोमांटिक शेर तो कमाल का बन पड़ा है– 'कभी करे है मेरा दिल भी रूठ जाने को/मुझे यकीन है आएँगे वो मनाने को।' प्रस्तुत कृति गज़ल प्रेमियों में काफी चर्चित होगी और यह गज़लें पाठकों के दिलों–दिमाग में रच बस जाएँगी– ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

इसी वर्ष भाई अशोक मिजाज़ बद्र की गज़लों का संग्रह 'मैं इकाई हूँ मैं समाज भी' बानी पब्लिकेशंस, भोपाल से प्रकाशित हुआ है। कवि की ये खबसूरत गज़लें पाठकों के हृदय से तादात्म्य स्थापित करने वाली हैं। उदाहरणार्थ–सुनकर मेरी गज़ल को गज़लकार कह उठे/उर्दू गज़ल में हिंदी का लहजा खनक गया।'

सियासत पर बद्र जी की एक टिप्पणी तो सचमुच बेमिसाल है। देखिए– 'सियासी लोग सियासी असर में रहते हैं/वो बाखबर हैं हमेशा खबर में रहते हैं।'

पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय बन पड़ी हैं।

वर्ष 2022 में हिंदी गज़लों के अनेक संपादित संकलन भी प्रकाशित हुए हैं। श्रेष्ठ गज़लकार भाई रमेश कँवल जी के सुसंपादन में –'बेहतरीन गज़लें' एनी बुक पब्लिकेशंस से भव्य रूप में प्रकाशित हुई है जिसमें प्रायः सुचर्चित समकालीन गज़लकारों को सम्मिलित किया गया है। गज़ल के शिल्प पर मजबूत पकड़ रखने वाले डॉ. ब्रह्मजीत गौतम जी का आलेख हिंदी छंदों और गज़ल की बहरों में मात्रा विधान' भी प्रस्तुत कृति में संकलित है। पुस्तक में भाई नवीन चतुर्वेदी जी ने गज़ल के लिए प्रचलित 32 बहरों को सोदाहरण स्पष्ट करने वाला आलेख भी प्रस्तुत किया है। गज़लकारों का सचित्र परिचय भी संकलन में उपलब्ध है। कुल मिलाकर 'बेहतरीन गज़लें' इस वर्ष प्रकाशित होने वाला एक महत्वपूर्ण पठनीय एवं संग्रहणीय संकलन है। इसी वर्ष मनु प्रकाशन, बालाघाट (म.प्र.) से भाई अशोक सिंहासने 'असीम' के संपादन में 'गज़ल के मुसाफिर' शीर्षक से एक गज़ल संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें 19 गज़लकारों की गज़लें सम्मिलित हैं। भाई अशोक अंजुम, शील दुबे 'बेहतर' एवं कबीर मोहम्मद अंसारी 'शफ़क' के अतिरिक्त प्रायः नए किंतु गज़ल के शिल्प से सुपरिचित गज़लकारों को सम्मिलित किया गया है। प्रयास उत्तम तथा पुस्तक पठनीय है।

वर्ष 2022 में ही गुफ्तगू पब्लिकेशन, प्रयागराज से जनाब इम्तियाज अहमद गाज़ी के सुसंपादन में 'आधुनिक भारत के गज़लकार' शीर्षक से भव्य गज़ल संग्रह का प्रकाशन हुआ, जिसमें मरहूम फिराक गोरखपुरी, बशीर बद्र, बसीम वरेलवी, चंद्र भाल सुकुमार, मुनव्वर राणा से लेकर आज तक के एक सौ ग्यारह गज़लकार संकलित हैं। चार सौ पचास पृष्ठीय प्रस्तुत वृहद गज़ल संकलन निश्चय ही पठनीय एवं संग्रहणीय है। शोधार्थियों के लिए तो यह आवश्यक उपयोगी ग्रंथ है।

इसी प्रकार श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली से वर्ष 2022 में ही डॉ. विनय कुमार शुक्ल, आरती देवी एवं भाई रामनाथ रहबर जी के सफल संपादन संचयन में वरिष्ठ गज़लकार भाई ज्ञान प्रकाश विवेक, माधव कौशिक, गणेश गंभीर, ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान, रवि खंडेलवाल, संध्या सिंह, अशोक अंजुम, डॉ. भावना कुँअर, मनोज अहसास आदि तेरह गज़लकारों की 10–10 स्तरीय गज़लें 'गज़ल त्रयोदश (खंड–5) नाम से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ है।

इसी वर्ष सत्य बोध प्रकाशन, दिल्ली–85 ने वरिष्ठ गज़लकार भाई अजय अज्ञात जी के संपादन में 'हरियाणा के युवा गज़लकार' नामक संकलन प्रकाशित किया है, जिसमें हरियाणा के ही 20 युवा गज़लकारों की 6–6 स्तरीय गज़लें संकलित हैं। प्रस्तुत संकलन निश्चय ही हरियाणा की युवा शायरी की उपलब्धियों को रेखांकित करने वाला है।

हिंदी गज़ल के शिल्प, रदीफ, काफ़िया, वज्न एवं बहर के साथ ही उसमें निहित

दोषों पर शास्त्रीय दृष्टिकोण से उस्ताद शायर जनाब कृष्ण कुमार 'बेदिल' ने एक लघु शोधपरक कृति 'गज़ल : अरूज़ के आईने में' लिखी है, जो इसी वर्ष विश्व पुस्तक प्रकाशन, नई दिल्ली–53 से प्रकाशित एवं चर्चित हुई। पुस्तक गज़ल के शोधार्थियों, नवोदित गज़लकारों तथा गज़ल के शिल्प को जानने के इच्छुक गज़ल प्रेमी पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। बहुत पहले भाई आर.पी. शर्मा महर्षि की गज़ल के शिल्प पर प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने वाली एक दो पुस्तकें शुभ तारिका प्रकाशन, अंबाला कैंट से प्रकाशित व चर्चित हुई थीं। वर्ष 2022 में आई भाई बेदिल जी की प्रस्तुत कृति भाई महर्षि जी की उन पुस्तकों की याद दिलाती है। निश्चय ही पुस्तक पठनीय, संग्रहणीय एवं नवोदित गज़लकारों के लिए बहुत उपयोगी है।

वर्ष 2022 में ही वरिष्ठ गज़लकार एवं चिंतक भाई हरेराम समीप जी की समीक्षापरक कृति 'हिंदी गज़ल की पहचान' एनी बुक्स, मुंबई से प्रकाशित हुई है जिसमें 1947 से 2022 तक की महत्वपूर्ण 35 गज़ल कृतियों की मूल्यांकनपरक समीक्षाएँ प्रस्तुत की गई हैं। कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ एवं उनके गज़लकारों के नाम इस प्रकार हैं– निराला कृत 'बेला', शमशेर बहादुर सिंह कृत' सुकून की तलाश', दुष्यंत कृत 'साए में धूप', सूर्यभानु गुप्त कृत 'एक हाथ की ताली', एवं अदम गोंडवी कृत 'समय से मुठभेड़'। हिंदी गज़ल के ऐतिहासिक पक्ष को भी रेखांकित करने वाला प्रस्तुत ग्रंथ शोधार्थियों के लिए विशेष उपयोगी है।

इसी वर्ष श्वेत वर्णा प्रकाशन, दिल्ली से डॉ. भावना जी का ग्रंथ 'हिंदी गज़ल के बढ़ते आयाम' प्रकाशित हुआ है, जिसमें माँ जैसे विभिन्न विषयों को समकालीन हिंदी गज़लों में तलाश करते हुए आलेख प्रस्तुत किए गए हैं। यह पुस्तक भी गज़ल प्रेमियों सहित शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है।

इसी प्रकाशन से वर्ष 2022 में ही भाई डॉ. राजेंद्र वर्मा जी का शास्त्रीय ग्रंथ 'हिंदी गज़ल का शिल्प और सौंदर्य' प्रकाशित और चर्चित हुआ। उक्त सभी ग्रंथ पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। शोधार्थीगण उन्हें पढ़कर लाभ उठा सकते हैं।

यहीं पर मैं श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली को धन्यवाद ज्ञापित करना अपना धर्म समझता हूँ कि उसने हिंदी गज़ल से संबंधित इतनी महत्वपूर्ण कृतियाँ वर्ष 2022 में हिंदी गज़ल संसार के समक्ष प्रस्तुत कीं।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी गज़ल के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस वर्ष पटना से प्रकाशित 'नई धारा' द्वैमासिक पत्रिका ने अपनी प्रकाशन यात्रा के 73 वर्ष पूर्ण करने पर डॉ. शिव नारायण जी के कुशल संपादन में अप्रैल–मई 2022 अंक गज़ल विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया है। इस अंक में डॉ. रामदरश मिश्र एवं डॉ. शिव ओम अंबर जी से हिंदी गज़ल पर केंद्रित बातचीत, हिंदी गज़ल के प्रथम शोध अध्येता डॉ. रोहिताश्व अस्थाना का

संस्मरणात्मक आलेख 'हिंदी गज़ल पर शोध के बहाने', डॉ. वशिष्ठ अनूप का आलेख 'हिंदी गज़ल के एक सक्रिय महारथी– अनिरुद्ध सिन्हा', सुश्री भावना का आलेख 'हिंदी गज़ल में माँ' तथा भाई ज्ञान प्रकाश 'विवेक' का विशेष आलेख 'हिंदी गज़ल की विकास यात्रा' आदि प्रकाशित किए गए हैं। 'विरासत की गज़लें' शीर्षक से नीरज, दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी, चंद्रसेन विराट, कुँवर बेचैन आदि की गज़लें प्रस्तुत की गई हैं। इसके अतिरिक्त गज़ल धारा स्तंभ में श्रद्धेय डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, अनिरुद्ध सिन्हा, ज्ञान प्रकाश विवेक, विज्ञानव्रत, वशिष्ठ अनूप, हरेराम 'समीप', कुमार प्रजापति आदि की कई–कई गज़लें प्रस्तुत की गई हैं। अंत में 'नई धारा' पत्रिका के संपादक भाई शिवनारायण सिंह जी का 'गज़लों के गाँव में' शीर्षक से गज़ल पर जानकारीपरक स्तरीय आलेख संकलित है। कुल मिलाकर 'नई धारा' का यह गज़ल विशेषांक निश्चय ही अप्रतिम, ऐतिहासिक, पठनीय एवं संग्रहणीय बन पड़ा है।

इसी प्रकार श्री नरेंद्र मिश्र के सुसंपादन में 'सोच विचार' (मासिक) वाराणसी के नवंबर–2022 अंक में वरिष्ठ गज़लकार भाई हरेराम 'समीप' जी के गज़ल कौशल पर डॉ. वशिष्ठ अनूप जी का आलेख उनकी गज़लों सहित प्रस्तुत किया गया है, जो पत्रिका की स्तरीयता का प्रमाण है। इस वर्ष पत्रिका के अन्य अंकों में भी खूबसूरत गज़लें पढ़ने–सराहने को मिलती रही हैं।

डॉ. आनंद सुमन जी के कुशल संपादन में देहरादून से 'सरस्वती सुमन' पत्रिका इस वर्ष नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं, जिसके एक अंक में प्रकाशित डॉ रोहिताश्व अस्थाना की गज़ल का मतला ही पाठकों के मन को छू लेता है– 'तुम्हारी माँग का सिंदूर हूँ मैं/मगर तुम से बहुत ही दूर हूँ मैं।' सिंह साहब के सद्प्रयासों से उनकी दिवंगता धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती सिंह जी की प्रेरणा से पत्रिका अत्यंत ही भव्य और नियमित रूप से प्रकाशित होती है। प्रत्येक अंक में अनेक कवियों की श्रेष्ठ गज़लें पाठकों को इस वर्ष भी पढ़ने को मिलती रहीं।

भाई अशोक अंजुम जी के संपादन में उनकी त्रैमासिक पत्रिका 'अभिनव प्रयास' के चारों अंकों में सभी निर्धारित स्तंभों में इस वर्ष भी कवियों की ढेर सारी गज़लें पढ़ने को मिलती रही हैं। भाई अशोक अंजुम एक सहृदय, एवं उत्साही कवि के रूप में जाने, माने और पहचाने जाते हैं। अतः उनकी पत्रिका सदैव गज़लों की बहार लेकर आती है। पत्रिका श्रद्धेय नीरज जी के मार्गदर्शन में प्रकाशित होती रही है, अतः पत्रिका की स्तरीयता और प्रासंगिकता असंदिग्ध है। पत्रिका उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा धर्मयुग पुरस्कार से सम्मानित भी की जा चुकी है।

इसके अतिरिक्त मेरी खोजी दृष्टि देशभर से प्रकाशित होने वाली जिन पत्र–पत्रिकाओं पर पड़ी उनके वर्ष 2022 के अधिकांश अंकों में प्रायः गज़लें पढ़ने और उनसे कुछ सीखने का अवसर मिलता रहा है। ये पत्रिकाएँ हैं– 1. अर्बाबे कलम

(त्रैमासिक) संपादक–डॉ. इकबाल़ बशर, देवास (म.प्र.) 2. हरिगंधा (मासिक) संपादक–डॉ. चंद्रत्रिखा, पंचकूला (हरियाणा) 3. वीणा (मासिक) संपादक–राकेश शर्मा, इंदौर (मध्य प्रदेश) 4. चेतना स्त्रोत (त्रैमासिक) संपादक–गोला कृष्ण शर्मा 'मृदुल', लखनऊ 5. पुष्पगंधा (त्रैमासिक) संपादक–विकेश निझावन, अंबाला शहर 6. सुसंभाव्या (त्रैमासिक) संपादक–दयानंद जायसवाल, भागलपुर (बिहार) 7. पहला अंतरा (त्रैमासिक) संपादक–नरेंद्र दीपक, भोपाल (म.प्र.) 8. रंग चकल्लस (त्रैमासिक) संपादक–असीम चेतन, मुंबई 9. अनंतिम (त्रैमासिक) संपादक–सतीश गुप्ता, कानपुर (उ.प्र.) 10. अदबी उड़ान (त्रैमासिक) संपादक–खुर्शीद शेख खुर्शीद, उदयपुर (राजस्थान) 11. 'गुफ्तगू' (त्रैमासिक) संपादक–नाज़िया ग़ाज़ी, प्रयागराज (उ.प्र.) 12. साहित्य सुरभि (त्रैमासिक) संपादक–सर्वजीत सिंह, चंदौली (उ.प्र.) आदि।

इस प्रकार वर्ष 2022 के हिंदी गज़ल की उपलब्धियों का आकलन करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस समीक्ष्य वर्ष में हिंदी गज़लों के अनेक एकल संकलन छपे, विद्वानों द्वारा संपादित बहुत से संयुक्त हिंदी गज़ल संकलन छपे, हिंदी गज़ल पर अनौपचारिक रूप से शोध और चिंतन की दृष्टि से अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए। हिंदी गज़ल के क्षेत्र में श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली से बहुत–सी पुस्तकें इस वर्ष प्रकाशित एवं चर्चित हुई हैं। लगता है कि गज़ल कृतियों के प्रकाशन पर अब लोगों का ध्यान जाने लगा है। इस दृष्टि से श्वेतवर्णा प्रकाशन ने बहुत ही सराहनीय कार्य किया और कवियों तथा लेखकों के बीच उसकी अच्छी छवि बनती जा रही है। इस प्रकार प्रकाशन संबंधी इन सब गतिविधियों से हिंदी गज़ल उपलब्धियों के स्वर्ण शिखरों का संस्पर्श करने में सफल हुई है। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी पत्र–पत्रिकाओं के हिंदी गज़ल के प्रचार–प्रसार में अपना सहयोग देकर पाठकों का मन मोह लिया। अनेक विश्वविद्यालयों में शोधार्थीगण हिंदी गज़ल से संबंधित नए–नए विषयों पर शोधकार्य करने के लिए इस वर्ष सचेष्ट रहे हैं। इनमें से एक भाई कृष्ण कुमार कनक आगरा विश्वविद्यालय के लिए महात्मा गांधी स्नातकोत्तर बालिका महाविद्यालय, फिरोजाबाद की हिंदी प्राध्यापिका डॉ. संध्या दुबे जी के कुशल निर्देशन में 'हिदी गीति काव्य की नवीन विधा 'गज़ल' पर शोध कार्य करने हेतु सचेष्ट हैं।

हिंदी गज़ल विषयक इन सभी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को देखते हुए मैं प्रस्तुत वार्षिकी के आयोजकों से निवेदन करना चाहूँगा कि क्यों न वे विगत वर्षों से लेकर आज तक की वार्षिक उपलब्धियों को अलग से एक ग्रंथ के रूप में प्रकाशित करके उसे विक्रय हेतु हिंदी गज़ल के सुधी पाठकों को उपलब्ध कराएँ, ताकि हिंदी गज़ल के शोधार्थियों एवं मनीषी विद्वानों को एक स्थान पर एक ही ग्रंथ में समवेत और सुविधाजनक रूप से हिंदी गज़ल की यह विशाल परंपरा और संपदा उपलब्ध हो सके।

निश्चय ही वर्ष 2022 हिंदी गज़ल की अप्रतिम उपलब्धियों के लिए जाना–माना और पहचाना जाएगा।

हिंदी गद्य की विविध विधाएँ

25



शंभु गुप्त

साहित्यालोचन तथा काव्य व कथा–रचना में सक्रिय लेखन। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के स्त्री–अध्ययन विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त। प्रमुख कृतियाँ– 'मैंने पढ़ा समाज', 'दो अक्षर सौ ज्ञान', 'कहानियाँ : समकालीन चुनौतियाँ', 'कहानी : वस्तु और अंतर्वस्तु', 'कहानी : यथार्थवाद से मुक्ति', 'कहानी की अंदरूनी सतह', 'डिबिया में धूप' आदि। युवा आलोचना सम्मान, रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान, स्पंदन आलोचना सम्मान, अर्जुन कवि जनवाणी पुरस्कार, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय आलोचना सम्मान सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

हिंदी में जिन्हें 'गद्य की अन्य विधाएँ' कहा जाता है, इन दिनों उसके लिए एक विशिष्ट अभिधा 'कथेतर' का चलन हो आया है। यह अंग्रेज़ी के नॉन–फ़िक्शन की तर्ज़ पर हिंदी में चलाया गया है। नॉन–फ़िक्शन के विषय में वहाँ कहा गया है कि 'Prose writing that is informative or factual rather than fictional.' हिंदी में भी कथेतर यही जानकारियों/ज्ञान से भरा व तथ्यपूर्ण ग़ैर–कथात्मक सृजन कहा जाता है। बीते समय में इनके लिए प्रचलित 'गद्य की अन्य विधाएँ' संज्ञा में 'अन्य' के प्रति संभवतः साहित्यकारों को आपत्ति थी। 'अन्य' में 'अदरनेस' का भाव संभवतः उन्हें अनुभव हुआ होगा। 'कथेतर' अपेक्षाकृत ज्यादा पुष्ट अभिज्ञानमूलक नाम है।

सन 2022 के कथेतर गद्य साहित्य पर विचार करें तो यह देखकर आश्चर्य होता है कि कथेतर गद्य कथात्मक गद्य से कम नहीं छपा है, बल्कि उसे बराबर की टक्कर दे रहा है।

हिंदी के प्रायः सभी बड़े प्रकाशकों ने बड़ी लगन के साथ लगातार कथेतर पुस्तकें लगातार प्रकाशित की हैं। निश्चय ही, कथात्मक विधाओं; ख़ास तौर पर उपन्यास और कहानी की पुस्तकें अभी भी सर्वाधिक छपती हैं, किंतु कथेतर की ओर रुझान उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाता है। जैसे कि हिंदी के तीन सबसे बड़े साहित्यिक प्रकाशकों– राजकमल प्रकाशन दिल्ली, वाणी प्रकाशन दिल्ली व सेतु प्रकाशन, नोएडा की पुस्तक–सूचियों पर निगाह डाली जाए तो प्रभूत संख्या में कथेतर पुस्तकें वहाँ दर्ज़ मिलती हैं। इसी तरह नेशनल बुक ट्रस्ट, राजपाल एंड सन्स, प्रभात प्रकाशन, नई किताब प्रकाशन, किताबघर

प्रकाशन, संभावना प्रकाशन, सामयिक प्रकाशन, अंतिका प्रकाशन, साहित्य भंडार प्रकाशन, पेंग्विन, हिंद–युग्म, प्रलेक प्रकाशन, अनामिका प्रकाशन, इंडिया नेटबुक्स, आदि लगभग सभी प्रकाशकों ने कथेतर खूब छापा है।

इसके साथ ही, बल्कि इनसे कुछ ज़्यादा ही हिंदी की विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं ने सन 2022 के अपने विभिन्न अंकों में गद्य की अन्य विधाओं पर बड़ी संख्या में विभिन्न रचनाएँ प्रकाशित की हैं। कुछ पत्रिकाओं ने तो कथेतर पुस्तकों की समीक्षाओं पर पूरा एक अंक ही निकाल दिया है। जैसे कि युवा संपादक पल्लव (दिल्ली) के संपादन में निकलने वाली अनियतकालिक पत्रिका 'बनास जन' का यह अक्तूबर 2022 का लगभग सवा सौ पृष्ठों का अंक; जिसकी पंच–लाइन ही है– 'कथेतर का समय'। इस अंक में क्रमशः संस्मरण व यात्रा–वृत्तांत की पाँच–पाँच, आत्मकथा, जीवनी व डायरी की तीन–तीन, रिपोर्ताज की दो, पत्र व निबंध की एक–एक पुस्तकों की अलग–अलग लेखकों द्वारा की गई समीक्षाएँ छपी हैं। यहाँ 'नए रंग' के अंतर्गत 'मृत्यु' व 'जल' ये दो नये विषय–वस्तु–संदर्भ खोजे गए हैं, जिनपर लिखी गई दो पुस्तकों की समीक्षाएँ दी गई हैं। 'शहरनामा' भी एक नई विधा है, जो किसी एक ख़ास शहर पर केंद्रित रचना की भिन्न पहचान है। इस पर भी एक रचना की समीक्षा यहाँ है। यह अंक इन सभी समीक्षाओं की दृष्टि से तो उल्लेखनीय है ही; इसकी सबसे बड़ी उल्लेखनीयता है, कथेतर संबंधी छब्बीस पुस्तकों से एक साथ हमारा गहन परिचय कराना। हो सकता है, इसमें एकाध किताब पिछले साल की भी हो, लेकिन वास्तव में उसकी लोकप्रियता व पठनीयता 2022 में ही स्पष्टतः सामने आई। इन पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है– **संस्मरणः** 'भौकापुर का लड़का', प्रदीप कुमार शुक्ल, 'यही तुम थे', पंकज चतुर्वेदी, 'स्मृति में जीवन' केदारनाथ सिंह, 'केशव, कहि न जाई का कहिये' संजीव बख्शी, 'गाजीपुर में क्रिस्टोफर कॉडवेल' उर्मिलेश; **यात्रा–वृत्तांतः** 'लोग जो मुझ में रह गए' अनुराधा बेनीवाल, 'तुम्हारा नाम क्या है तिब्बत' चंद्रभूषण, 'सार्थवाह हिमालय' अजय सोडानी, 'सुखदेश का सफर' पल्लवी त्रिवेदी, 'अंतिम क्षितिज का प्रदेश', सुलभा कोरे; आत्मकथा : 'मेरा औलियागाँव', शेखर जोशी, 'क्या कहूँ आज' सत्यनारायण व्यास, 'अपनों के बीच अजनबी', फरीद खां; **जीवनीः** 'दूसरा जीवन' गिरधर राठी, 'भूपेन **खख्खरः** एक अंतरंग संस्मरण' सुधीर चंद्रा, 'जो कहि गई न मुझसे', रेणु व्यास; **डायरीः** 'भाप के घर में शीष की लड़की' बाबुषा कोहली, 'सपने सोने नहीं देते' शशांक, 'वारसा डायरी' रवि रंजन; **रिपोर्ताजः** 'एक देश बारह दुनिया' शिरीष खरे, 'लाल चौक' रोहिण कुमार; **निबंधः** 'मिट्टी की परत' संजय व्यास; पत्र 'चिट्ठियाँ रेणु की भाई बिरजू को' **संकलनः** विद्यासागर गुप्ता; संपादकः प्रयाग शुक्ल, रुचिरा गुप्ता; **शहरनामा** '**शहरनामा जबलपुर**', दिनेश चौधरी; नये रंग– **मृत्युः** 'मृत्यु–कथा' आशुतोष भारद्वाज; **जलः** 'नदी **पुत्रः** उत्तर भारत में निषाद और नदी', रमाशंकर सिंह। 'बनास जन' ने ही अपने अंक 56/जून–जुलाई 2022 में भँवर मेघवंशी की

यात्रा– **वृत्तान्त पुस्तक** 'यात्राएँ' की समीक्षा प्रकाशित की है। यह पुस्तक भी 2022 में प्रकाशित हुई है। अभी एक और पत्रिका 'धरती' संपादक– शैलेंद्र चौहान, जयपुर ने अपना 'कथेतर गद्य अंक' निकाला है, जो लगभग ढाई सौ पृष्ठों का है, जिसमें सभी कथेतर विधाओं की अलग–अलग लेखकों की रचनाएँ हैं। इन दोनों पत्रिकाओं के उदाहरण यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं कि यह और आने वाला समय कथेतर विधाओं के लिए काफी उज्ज्वल भविष्य लेकर आने वाला है।

इसी तरह हिंदी की एक और पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' ने अपने दिसंबर 2022–जनवरी 2023 के संयुक्तांक में शशिकुमार सिंह का एक स्तंभ 'किताबों की दुनिया' प्रकाशित किया है, जिसमें एक साथ गत वर्षों में प्रकाशित हुई 100 पुस्तकों का परिचयात्मक विवरण दिया गया है, जिसमें अनेक कथेतर पुस्तकें 2022 में प्रकाशित भी हैं। जैसे कि कथाकार अखिलेश की पुस्तक 'अक्स', जो सेतु प्रकाशन से आई है। 'अक्स' संस्मरण विधा की पुस्तक है। इस पुस्तक में शहर इलाहाबाद तथा अपने अनेक वरिष्ठ साहित्यिक मित्रों पर उन्होंने संस्मरण लिखे हैं। इन पुस्तकों में अनिल यादव का यात्रा–वृत्तांत 'कीड़ाजड़ी' भी शामिल है, जिसमें उत्तराखंड के जनजीवन की कथा है। रिपोर्ताज के अंतर्गत मनदीप पुनिया की पुस्तक 'किसान आंदोलनः ग्राउंड ज़ीरो 2020–21' का विवरण यहाँ है। यह पुस्तक कृषि क़ानूनों के विरुद्ध चले किसान आंदोलन की पूरी पड़ताल करती है। साक्षात्कार के अंतर्गत पल्लव द्वारा संपादित कथाकार काशीनाथ सिंह के साक्षात्कारों की पुस्तक 'बातें हैं बातों का क्या' की चर्चा यहाँ है। राजकमल से प्रकाशित यह पुस्तक काशीनाथ सिंह के साहित्य को समझने में बहुत मदद करती है। देवेश पथसारिया की पुस्तक 'छोटी आँखों की पुतलियों में ताइवान डायरी का उल्लेख भी इस क्रम में किया जा सकता है, जो लेखक के ताइवान प्रवास के दिनों की डायरी है।

सेतु प्रकाशन ने इस वर्ष में कथेतर के अनेकानेक टाइटल छापे हैं। 'अक्स' के अलावा संस्मरण की पुस्तकों में 'अगले वक्तों के हैं ये लोग' (अशोक वाजपेयी), 'घर जाते' (गुलाम मुहम्मद शेख), 'स्मृतियों की रोशनी में' चंद्रकांत पाटिल, 'दुनिया मेरे आगे' (प्रियदर्शन) प्रमुख हैं। यात्रा–संस्मरण के अंतर्गत 'एक सड़क एक जगह' (मंगलेश डबराल), 'अंतिम संग्रीला की धरती मेंः भूटान प्रवास के अनुभव' (रघुबीर चंद) आदि सम्मिलित हैं। सेतु ने विभिन्न साहित्यकारों की जीवनियाँ व आत्मकथाएँ भारी संख्या में छापी हैं। इनमें से कुछ उदाहरण हैं– 'भारतीय राजनीति और मेरा जीवनः रशीद क़िदवई की ज़ुबानीः मोहसिना क़िदवई' (रशीद किदवई), 'दूसरा जीवनः कृष्णा सोबती की जीवनी' गिरधर राठी, 'बापू' (मधुकर उपाध्याय), 'रेणु एक जीवनी' भारत यायावर आदि।

कथेतर गद्य की अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकों में, ज्ञानरंजन की 'उपस्थिति का अर्थ' व 'जैसे अमरूद की खुशबू', हृदयेश जोशी की 'तुम चुप क्यों रहे केदार', यादवेंद्र की

'घने अंधकार में खुलती खिड़की', राजेश जोशी की 'वह हँसी बहुत कुछ कहती थी', भारत यायावर की 'रेणु की तलाश', सुशोभित की 'पवित्र पाप' आदि प्रमुख हैं। डायरी के अंतर्गत 'भारत छोड़ो आंदोलन' एच. वाई. शारदा, 'एक युवक की जेल डायरी' (प्रसाद/प्रस्तुति मधुकर उपाध्याय), 'जंगल पाती पाती' संपादनः मधुकर उपाध्याय आदि प्रमुख हैं।

राजकमल प्रकाशन ने 2022 में जीवनी के अंतर्गत 'ठक्कन से नागार्जुनः एक जीवन यात्रा' शोभाकांत, संस्मरण व आत्मकथा के अंतर्गत 'यही तुम थे' पंकज चतुर्वेदी, 'डालडा की औलाद' विष्णु नागर, 'स्मृति में जीवन' केदारनाथ सिंह, 'तेरी महफिल में लेकिन हम न होंगे' सं. संजीव रंजन, 'राग–अनुराग रविशंकर, 'धारा के विपरीत' गोविंद मिश्र, 'पिंजरे की मैना' पेपरबैक चन्द्रकिरण सौनरेक्सा आदि, यात्रा–वृत्तांत के अंतर्गत 'कच्छ कथाः साझे अतीत की तलाश का सफ़रनामा' अभिषेक श्रीवास्तव, 'विलायत के अजूबे' मिर्ज़ा शेख़ एतेसामुद्दीन, 'पृथ्वी गंधमयी तुम' अनुराग चतुर्वेदी आदि–आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित कीं।

वाणी प्रकाशन ने कथेतर गद्य के अंतर्गत इस वर्ष में अनेक पुस्तकें प्रकाशित कीं; जैसे कि– 'अंदाज़े बयाँ उर्फ़ रवीकथा' संस्मरणः ममता कालिया, 'मीडिया में महिलाओं की भूमिका', साक्षात्कारः संगीता जिंदल, 'यादों के झरोखे' संस्मरणः राजमणि शर्मा, 'वो कागज की कश्ती' संस्मरणः अंजु रंजन, 'पटना डायरी' डायरीः निवेदिता, 'एक कवि को माँगनी होती है क्षमा कभी ना कभी' आत्मकथा/चन्द्रकांत देवताले, 'हर पल का शायर रू साहिर' जीवनीः सुरिन्दर देओल आदि।

अंतिका प्रकाशन ने 2022 में मुख्यतः तीन कथेतर पुस्तकें हमें दीं– 'तुम्हारा नाम क्या है तिब्बत' यात्रा–वृत्तांतः चंद्रभूषण, 'राजकमल चौधरी का सफ़र' जीवनीः सुभाषचन्द्र यादव व 'वे जब याद आये' आत्मकथा/संस्मरण रू रामदेव सिंह।

संस्मरण की अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकों में संकल्प प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित रामनाथ 'सुमन' की 'छायावादयुगीन स्मृतियाँ' तथा प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता से प्रकाशित लाला अमरनाथ के पुत्र लेखक मोहन गुप्त की पुस्तक 'भुलाए न बने' का नाम भी लिया जा सकता है।

नई किताब प्रकाशन, नई दिल्ली ने डायरी विधा पर दो महत्वपूर्ण पुस्तकें इस साल छापीं। एक– 'त्रिलोचन की डायरी'/संपादक–अवधेश प्रधान तथा दूसरी– 'शहर आईना है' बरेली की डायरी/सुधीर विद्यार्थी।

जैसा कि ऊपर संकेत किया गया, हिंदी की प्रायः हर महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका प्रायः अपने प्रत्येक अंक में कथेतर साहित्य से संबंधित रचनाएँ प्रकाशित करती है। यहाँ उदाहरण के तौर पर कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं का उल्लेख किया जाता है। पाठकों के संदर्भ के लिए नामज़द रूप से पत्रिकाओं का उल्लेख किया जा रहा है। विधा के अनुसार कुछ उपलब्ध रचनाओं का विवरण

निम्नानुसार है–

1. निबंधः 'एक अदना, मामूली शब्द' योगेंद्र आहूजा/हंस, 'ढोरमन और कविमान' ज्ञान चतुर्वेदी/कथादेश, 'संकरी दुनिया का आदमी' ज्ञान चतुर्वेदी/कथादेश, 'कव्वों को स्थापित करना' ज्ञान चतुर्वेदी/कथादेश, 'मुंबई का किताब–चोर', गीत चतुर्वेदी/वनमाली, 'सत्कथा कही नहीं जाती', मुकेश वर्मा/वनमाली में निरंतर जारी, 'देवलोक में मंत्रिमंडल की बैठक', अश्विनीकुमार दुबे/साहित्य अमृत, 'बाढ़ में एक संवाद–कथा' हरीश नवल/साहित्य अमृत, 'एक कामकाजी लेखक की डायरी' सुधा कुमारी/साहित्य अमृत, 'वर्षा–जल पर काग़ज़ की नाव', श्रीराम परिहार/रंग संवाद, 'लोकार्पण उत्सव' लालित्य ललित/जनसत्ता वार्षिक अंकः 2022, 'अवतरण' अश्विनी कुमार/जनसत्ता वार्षिक अंकः 2022, 'जो हम देख रहे हैं', सूर्यनाथ सिंह/जनसत्ता वार्षिक अंक 2022, 'यह डाल वसन वासंती' श्रीराम परिहार/रंग संवाद, 'चढ़ते पारे के बारे में', अष्टभुजा शुक्ल/बनास जन, 'हाट–बाजार', 'पेंटिंग–रेखांकन का जुनून', 'हमने भी अंग्रेजी पढ़ी है', विष्णु नागर/बनास जन।

2. संस्मरणः 'इंकलाब जिंदाबाद' अलविदा कहते हुए चले गए नारंग साहब' भारत भारद्वाज/हंस, 'चले गए साहित्य के समाजशास्त्र के आलोचक प्रो. मैनेजर पांडेय', भारत भारद्वाज/हंस, 'मैनेजर पांडेय हमारी चेतना में बने रहेंगे', प्रेमकुमार मणि/हंस, 'मैनेजर पांडेय को याद करते हुए' चंद्रा सदायत/हंस, 'सदी की मधुरतम आवाज–लता मंगेशकर' इंद्रजीत सिंह/कथादेश, 'अरे यायावर रहेगा याद', भारत भारद्वाज/कथादेश, 'सजग लोकधर्मी कवि विजेंद्र', राहुल नीलमणि/कथादेश, 'पुराना गाजियाबाद, हिंडन नदी और मेरा ननिहाल' अशोक अग्रवाल, 'शेखर जोशीः श्रम के सम्मान और शिल्प के सौंदर्य के कथाकार' नवीन जोशी/कथादेश, 'अपने भूले रहने की याद में जीवन : नवीन सागर', अशोक अग्रवाल/कथादेश, 'नेत्र सिंह रावत एक अद्भुत शख्सियत थे', विष्णु नागर/कथादेश, 'गोपीचन्द नारंग के न होने का अर्थ', डॉ. अमरनाथ/वनमाली कथा, 'वल्लभ सिद्धार्थ– जो एक शख्स था आलम में बेमिसाल...', मुकेश वर्मा/वनमाली कथा, 'दुनिया जिसे राजेंद्र यादव कहती है' सुधीर सक्सेना/वनमाली कथा, 'धनंजय वर्मा : एक अपराजेय मन', मुकेश वर्मा/वनमाली, 'या विद्या सा विमुक्तये', वीरेंद्र जैन/साहित्य अमृत, 'एक संघर्षमयी यात्रा– सिद्धेश्वरी देवी', मीनाक्षी प्रसाद/स्त्री–दर्पण, 'लोरी से रुदाली तक' : लता मंगेशकर, अजय बोकिल/रंग संवाद, 'मास्टर फ़िदा हुसैन 'नरसी', शैलेंद्र चौहान/अकार, 'मिले सुर मेरा तुम्हारा', ज़ाहिद ख़ान/अकार, 'सर्वोत्तम से कम....मंजूर नहीं', पद्मा सचदेव पर रणजीत साहा/बनास जन, 'कामरेड दीदी' रामशरण जोशी/बनास जन,' 'धरती' पर 'जीने की कला', 'रचना सिंह/बनास जन, 'त्रिलोचन' अशोक अग्रवाल, 'कविवर त्रिलोचन के संग–साथ' श्याम सुशील/बनास जन, 'शेखर जोशी का पहाड़', नवीन जोशी/बनास जन, 'देवीशरण ग्रामीण : एक असंभव संभावना' सेवाराम त्रिपाठी/बनास जन, 'घर का जोगी जोगना/रमेश कुंतल

मेघ : सौंदर्यान्वेषक और पुरस्कर्ता', मधुरेश/बनास जन, 'साहित्य मनीषी की अद्भुत दास्तान' : विष्णु प्रभाकर, प्रकाश मनु/कथाक्रम, 'फिलिस्तीन की बेबाक पत्रकार शीरीं अबू' कृष्ण कुमार रत्तू/उद्भावना, 'हताशा तोड़नी है तो एजाज़ अहमद का निदान पढ़िए' सत्येंद्र रंजन/उद्भावना, 'गोपीचंद नारंग : एक उर्दू दानिश्वर का जाना', जानकी प्रसाद शर्मा/उद्भावना, 'करोगे याद तो हर बात याद आएगी/गज़ल गायक भूपेंद्र सिंह को याद करते हुए', संजीव श्रीवास्तव/आजकल, 'फिर खेल रहा हूँ पुरानी यादों से', भगवानदास मोरवाल/वर्तमान साहित्य, 'यहाँ कौन है तेरा', भगवानदास मोरवाल/वर्तमान साहित्य; लगातार जारी, 'गोपीचंद नारंग के रंग', खान अहमद फारुक़/वर्तमान साहित्य, 'शीतयुद्धोत्तर हिंदी आलोचना के महत्वपूर्ण विमर्शकारः डॉ. पी. एन. सिंह' रामप्रकाश कुशवाहा/वर्तमान साहित्य, 'ठसक से जिया गया एक भरपूर जीवन', कृष्णा सोबती/अशोक कुमार माहेश्वरी/तद्भव।

3. **रिपोर्ताजः** 'हिजाब की राजनीति', तसलीमा नसरीन/हंस, 'कहानी इंसान के कुदरत से बिछड़ने की' फजल रशीद/कथादेश, 'हिंदू कॉलेज, इंद्रप्रस्थ और कमलेश्वर', प्रभात रंजन/बनास जन।

4. **आत्मकथा/आत्मकथात्मक संस्मरणः** 'आत्मकथा जैसा कुछ', पल्लव/हंस, 'बीस माँओं की बेटी', जमुना बीनी, 'शादियाँ,' अशोक भौमिक, 'टिकोरे', कबीर संजय, 'नो मेंस लैंड', नीलाक्षी सिंह/वनमाली, 'तीन पाती', रुचि भल्ला/दोआबा, 'गाँव की सुबह', मिथिलेश कुमार/दोआबा, 'स्त्री–सा रोता कारख़ाना', सरस्वती रमेश/दोआबा, 'भूली–अभूली यादें', स्मिता वाजपेयी/दोआबा, 'एक अंतहीन सफ़र व ज़ेहन में गूँजती वे अनजान पदचापें', प्रीति सिन्हा/दोआबा, 'हरसिंगार के फूलों से मेरा रिश्ता', उषा निगम/साहित्य अमृत, 'कुर्ला से कोलाबा', अनुराग चतुर्वेदी/बनास जन, 'सुदामा का घर', सत्यनारायण व्यास/बनास जन, 'बिसनाथ का बलरामपुर', विश्वनाथ त्रिपाठी/तद्भव में धारावाहिक।

5. **जीवनीः** 'सपनों की रंगरेज़ एलिजाबेथ', सोनाली पिठवे/रंग संवाद।

6. **डायरीः** 'यायावर की डायरी/खोये हुए दरख्त', सत्यनारायण/कथादेश, 'मुनिया/बालकनी डायरी', श्रद्धा थवाईत, 'यायावर की डायरी/घर का रास्ता', सत्यनारायण/कथादेश, 'यायावर की डायरी/तस्वीर से बाहर', सत्यनारायण /कथादेश, 'आदाब और आवारगी की उपज',/कला डायरी लीलाधर मंडलोई/वनमाली कथा, 'फलटन में खिली सरसों', रुचि भल्ला/दोआबा, 'लिखने के लिए : कल्पना और स्मृतियों से', प्रदीप्त प्रीत/बनास जन, 'बनस्थली डायरी', सुमंत पंड्या/बनास जन; कई अंकों में धारावाहिक जारी, 'अंतिम दिनों में शैलेंद्र त्रिपाठी' कुमार अनिल/वर्तमान साहित्य।

7. **रेखाचित्रः** 'सरोद का शिखरः उस्ताद अली अक़बर ख़ाँ', ज़ाहिद ख़ान/रंग संवाद, 'मन भीगे मौसम मल्हार के' संजय पटेल/रंग संवाद, 'रंग दल बादल के',

शिफाली/रंग संवाद, 'शेखर सेन : ...सो हम फ़कीर हो गये!', स्वरांगी साने/रंग संवाद, 'बेमिसाल बानो' : कव्वाल शकीला बानो भोपाली, आलिम बज़मी/रंग संवाद, 'लय के अवतार : पंडित बिरजू महाराज', स्वरांगी साने/रंग संवाद।

8. **यात्रा–वृत्तांतः** 'नीलमणि, नोबाब और नौ पहाड़ियों वाली घाटी' शम्पा शाह/कथादेश, 'नागफनी के कँटीले जंगल में', जितेन्द्र भाटिया/कथादेश, 'कोविड–19 से पहले का वूहान', सुषमा नैथानी, 'बेतवा और केन किनारे', सुधीर विद्यार्थी/कथादेश, 'पन्ना : हीरा नगरी', निधि अग्रवाल/दोआबा, 'मणिपुर, रत्नों की भूमि', सारिका भूषण /दोआबा, 'लद्दाख की एक अविस्मरणीय यात्रा', किरण निशांत/दोआबा, 'तुंगभद्रा के आर–पार', पद्मावती/साहित्य अमृत, 'सांस्कृतिक–प्रौद्योगिकता और एकता की मूर्ति', राजेश जैन/साहित्य अमृत, 'बोतल में बंद कविता की घाटी', जय श्री पुरवार /कृति बहुमत, 'समाधिस्थ प्रांगण–खजुराहो', रामा तक्षक/हिंदी बुनियाद, 'उगते सूरज की ओर', जीवन सिंह/बनास जन, 'नदी, गल और शिखर' शेखर पाठक/बनास जन, 'फिर आऊँगा तो वैसे ही मिलना', कृष्ण कुमार/तद्भव, 'हुकुम देश का इक्का खोटा', नीलाक्षी सिंह/तद्भव, 'वाह अमेरिका, वाह', मीनाक्षी जोशी/समकालीन भारतीय साहित्य।

9. **साक्षात्कारः** 'हिंदुत्ववादी ताक़तें प्रतिक्रांति का नेतृत्व कर रही हैं', प्रभात पटनायक से राजेंद्र शर्मा की बातचीत/हंस, 'साक्षात्कार से साक्षात्कार–जोन डिडियन' बी. बी. उपाध्याय/कथादेश, 'मैं जिंदगी के हर रंग को देखना चाहता हूँ', मुकेश वर्मा से हरि भटनागर की बातचीत/राग भोपाली, 'अनुभव की गठरी में कल्पना को गूँथते रहना ही लेखन है...' उषा प्रियंवदा से पूनम सिंह, सुदीप्ति एवं कंचन भारद्वाज की बातचीत/परिंदे, 'बंद समाज में यौनिकता एक बड़ा मुद्दा होती है', पंकज बिष्ट के साथ संजय कुंदन की बातचीत/परिंदे, 'लीक तोड़ने का जीवट अभी हिंदी कहानी नहीं अर्जित कर पाई है', रोहिणी अग्रवाल से शशिभूषण मिश्र की बातचीत/परिंदे, 'हर कला में होती है नाटकीयता', देवेंद्रराज अंकुर से विनय उपाध्याय की बातचीत/रंग संवाद, 'नदी से माँगी माँ की बेटी हूँ', लोक गायिका शारदा सिन्हा से अनुलता राज नायर की बातचीत/रंग संवाद, 'कविता लोकगीत की तरह सरल होनी चाहिए', नरेश सक्सेना से विपिन तिवारी और अभिषेक गुप्ता की बातचीत/पक्षधर, 'मनोज रूपड़ा, योगेंद्र आहूजा और ओमा शर्मा से रचना त्यागी की बातचीत', पल–प्रतिपल, 'हिंदी समाज का सौंदर्यबोध घोर सामंतवादी, भोगवादी और धनवादी है', रमेश कुंतल मेघ से रमेश राजहंस एवं हृदयेश मयंक की बातचीत/बनास जन, 'कुछ बचपनः कुछ जीवन', रमेश कुंतल मेघ से अनूप सेठी की बातचीत/बनास जन, 'हम अपनी पारी खेल चुके/शेखर जोशी से बातचीत', नवीन जोशी/आजकल, 'रेत समाधि' कोई फार्मूला लेखन नहीं है और न ही कोई मुहिम है', गीतांजलि श्री से उषा राय की बातचीत/वर्तमान साहित्य, 'पुस्तकों में वर्णित यथार्थ से ज़्यादा भयावह है दलित और श्रमशील समाज की

विषमता', कथाकार रणेंद्र से सावित्री बड़ाइक व जनार्दन की बातचीत/वर्तमान साहित्य, 'बदला लेने की भावना से देश नहीं बनता', असगर वज़ाहत से हारुन रशीद ख़ान की बातचीत/वर्तमान साहित्य, 'यह सब सपना था जो कभी देखा नहीं गया, पर पूरा हो गया', कथाकार अलका सरावगी से अर्पण कुमार की बातचीत/तद्भव, 'कोई अनुभव नितांत एक का नहीं होता, निजी से निजी भी', कथाकार गीतांजलि श्री से अर्पण कुमार की बातचीत/तद्भव।

10. **पत्रः** 'अपना मोर्चा' 'हंस' पत्रिका के स्थाई स्तंभ 'अपना मोर्चा' के अंतर्गत हर अंक में दसियों पत्र प्रकाशित होते हैं। इनमें कुछ पत्र महत्वपूर्ण साहित्यकारों के भी होते हैं, जिनका स्थाई महत्व है।, 'इनबॉक्स', 'वनमाली कथा', मासिक पत्रिका, भोपाल का स्थाई स्तंभ; जिसमें हर अंक में लेखकों व पाठकों के ढेरों पत्र प्रकाशित होते हैं, 'एक ख़त मैकॉले के नाम' प्रियंवद/अकार, 'शील के पत्र ज्ञानरंजन को', शील/अकार, 'ज्ञानरंजन के पत्र संजना कौल को', ज्ञानरंजन/अकार, 'संजना कौल के पत्र ज्ञानरंजन को', संजना कौल/अकार, 'कथाकार ओमा शर्मा का जयशंकर को लिखा पत्र', ओमा शर्मा/पल–प्रतिपल, 'श्याम सुशील का पत्र राधावल्लभ त्रिपाठी के नाम', श्याम सुशील/बनास जन, 'राधावल्लभ त्रिपाठी का पत्र श्याम सुशील के नाम', (राधावल्लभ त्रिपाठी/बनास जन), 'त्रिलोचन के पत्र श्याम सुशील के नाम', (त्रिलोचन/बनास जन), खरपत्तू बाबा (त्रिलोचन जी) के पत्र शिवांक के नाम' (त्रिलोचन/बनास जन), 'त्रिलोचन बाबा के पत्र शिप्रा सिंह के नाम', (त्रिलोचन/बनास जन), 'त्रिलोचन के अस्सी पत्र', (त्रिलोचन/बनास जन), 'आपको हम कभी भुला न सकेंगे', (रमेश कुंतल मेघ के पत्र; अनूप सेठी व सुमनिका सेठी, नीलम अरुण मित्तु, प्रदीप सक्सेना आदि के नाम/बनास जन)।

11. **शहरनामाः** 'सिर्फ शहर नहीं, एक तहजीब का नाम है अलीगढ़' (नमिता सिंह/परिकथा), 'शहरनामा जबलपुर' (दिनेश चौधरी); 'वे दिन–वह बीकानेर!' (हेमंत शेष/बनास जन), 'उदास इबारतों का शहर'/ (मीना झा/तद्भव)।

❑❑❑

हिंदी पत्रकारिता और नई प्रौद्योगिकी

26



राम प्रवेश राय

मीडिया प्रौद्योगिकी, फिल्म अध्ययन, जनसंचार सिद्धांत और कारपोरेट संचार आदि विषयों में शिक्षण और अनुसंधान में सक्रिय। 'क्रेता का अधिकार और उत्पाद सूचना बजट स्मार्ट के एसएआर मूल्य को प्रदर्शित करने का अध्ययन' और 'द बेकडेल टेस्ट एंड हिंदी सिनेमाः महिला सशक्तिकरण का विश्लेषण' चर्चित लेख प्रकाशित। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय के न्यू मीडिया विभाग और पत्रकारिता जनसंचार एवं न्यू मीडिया स्कूल के अधिष्ठाता के रूप में कार्यरत।

मीडिया और संचार विषय में मार्शल मैकलुहन एक बड़े अध्येता हैं जिन्होंने मीडिया के संदर्भ में कई बड़े विचार दिए हैं जो आज भी समीचीन हैं और लगभग सभी विश्वविद्यालयों के संचार पाठ्यक्रमों का मुख्य हिस्सा भी हैं। कैनेडियन अध्येता मार्शल मैकलुहन ने हेरोल्ड इनिस के विचारों को समाहित करते हुए मीडिया और संस्कृति पर अपने विचार रखे हैं और चार प्रकार की मीडिया संस्कृति की बात कही है। (Logan, 2015)

(एक) मौखिक संस्कृति– इसमें मैकलुहन भाषा को मीडिया के रूप में देखते हैं और मानते हैं कि भाषा ही वह माध्यम है जिसमें चीजों के अर्थ को विशिष्ट शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है और यह अभिव्यक्ति का एक श्रेष्ठ माध्यम है। ज्ञान और सूचनाओं की बात करें तो यह मौखिक रूप से एक व्यक्ति या समूह से दूसरे व्यक्ति या समूह तक आदान–प्रदान होती हैं। इस मौखिक संस्कृति में सूचनाओं को सहेजने और पीढ़ी दर पीढ़ी मूल रूप से संचारित करने में समस्या थी, जिसका समाधान (दो) लिपि के रूप में सामने आया और यह मीडिया और संस्कृति की कड़ी में दूसरी महत्वपूर्ण कड़ी बनी। लिपि के विकास ने सूचना और ज्ञान के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन किया है, या यूँ कहें कि एक नया इकोसिस्टम प्रदान किया है। यह वह दौर था जब सूचना और ज्ञान को हस्तलिखित रूप में एकत्रित और सहेजने का कार्य शुरू हुआ। हालाँकि लिखने के साधन सीमित होने के कारण सारगर्भित रूप में लिखने की परंपरा शुरू हुई, जिसमें पत्थरों, भोजपत्रों, ताम्रपत्रों आदि पर लेखन किया गया। फलतः सूक्त रूप में ज्ञानपरंपरा को व्यवस्थित किया जाने लगा। इस संस्कृति में लिखित सूचना का आदान–प्रदान काफी सीमित था और सर्वसुलभ नहीं था। ऐसे में एक बड़ा परिवर्तन तब आया जब जॉन गुटेनबर्ग ने सन् 1450 में प्रिंटिंग मशीन का

आविष्कार किया। मैकलुहन ने इसको (तीन) प्रिंटिंग कल्चर का नाम दिया है। इस आविष्कार ने पुनः संचार के इकोसिस्टम को बदलने का काम किया। प्रिंटिंग मशीन के विकास के साथ सूचना और ज्ञान के प्रचार और पहुँच में तेजी आ गई। अब ज्ञान को विस्तार से प्रस्तुत किया जाने लगा। यही नहीं पुस्तकों की प्रति बनाना अब आसान हो गया था। अब पुस्तक लेखन हस्तलिखित यानी मानव द्वारा न होकर मशीन द्वारा होने लगा था। परिणामस्वरूप पुस्तक की अनेक प्रतियाँ हू–ब–हू बनाना आसान हो गया। इस सुविधा के चलते पुस्तकों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना तथा अनेक व्यक्तियों तक पहुँचाना सुलभ हो गया। ज्ञान के मुख्य स्रोत के रूप में आज जो पुस्तकालय हमारे सामने हैं उसकी सर्वसुलभता प्रिंटिंग मशीन के विकास के बाद ही हो सकी। इसी काल में पत्रकारिता का शुभारंभ माना जा सकता है क्योंकि अब मूर्त रूप में अख़बार छपने और सर्क्युलेट होने लगे। अखबार छपना सूचना प्रसार और सामाजिक जागरूकता की एक अहम कड़ी थी। सामाजिक परिवर्तन/क्रांति लाने और अनेक सामाजिक कुरीतियों को ख़त्म करने में अख़बार का योगदान सर्वविदित है। (चार) रेडियो और टीवी के आविष्कार ने इस इकोसिस्टम में फिर एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। इस परिवर्तन को मैकलुहन इलेक्ट्रॉनिक कल्चर के रूप में देखते हैं। इस सिस्टम में सूचनाओं के आदान–प्रदान में और तेजी आ गई। इससे पूर्व तक सूचना और ज्ञान प्राप्त करने के लिए पढ़ा–लिखा होना एक महत्वपूर्ण योग्यता थी (अख़बारों या किताबों से फर्स्ट हैंड इनफार्मेशन प्राप्त करने के संदर्भ में) किंतु इलेक्ट्रॉनिक संस्कृति आने के बाद यह सीमा टूट गई, अर्थात् जो अख़बार/किताब पढ़ने में सक्षम नहीं थे वह रेडियो और टीवी से समाचार प्राप्त करने में सक्षम हो गए। इस नए इकोसिस्टम में पहले से तीसरे कल्चर तक की समग्रता समाहित है और यही नहीं, एक ही समय में अनेक लोगों तक पहुँच सकने की क्षमता भी है। ज्ञान और परंपरा को श्रव्य/दृश्य माध्यम के रूप में सहेजने और प्रसारित करने में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वरदान साबित हुआ है।

टीवी के विस्तार ने विश्व के किसी भी कोने से सूचना को कहीं भी बैठकर प्राप्त करना सुलभ बना दिया है और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के इसी गुण के कारण मैकलुहन ने 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा दी है, जिसके अनुसार पूरे विश्व में सूचना के आदान–प्रदान में इतनी तेजी आ गई है कि विश्व एक गाँव में तब्दील हो गया है। जहाँ हर किसी को सबके बारे में पता होता है। अभी हाल ही में हुए फीफ़ा कप का मैच पूरे विश्व ने लाइव देखा और जो नहीं देख पाए वो टीवी या रेडियो से अपडेट प्राप्त करते रहे। विश्व के किसी भी हिस्से की खबर टीवी/रेडियो के द्वारा अल्प समय में पूरे विश्व के पास उपलब्ध होती है और यही त्वरित व्यवस्था 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा का आधार है।

मैकलुहन ने कंप्यूटर के बारे में तो कुछ विचार दिए हैं किंतु विशेष रूप से न्यू मीडिया या डिजिटल मीडिया के बारे में कुछ ख़ास नहीं कहा, यदि कह पाते तो निश्चित ही वह डिजिटल/सोशल मीडिया को मीडिया कल्चर के पाँचवें स्वरूप में देखते। पूर्व के चारों वर्गीकरण को आधार मानते हुए ऐसा मानकर चला जा सकता है।

पत्रकारिता

सही मायनों में पत्रकारिता की शुरूआत प्रिंटिंग मशीन के विकास के बाद से मानी जा सकती है, जब अखबार छपना और सामान्य हाथों में बँटना शुरू हो गया। भारत में पत्रकारिता का शुभारंभ 29 जनवरी, 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की के हाथों हुआ। 'हिक्कीज़ गजट' के नाम से कलकत्ता से इसका प्रकाशन अंग्रेजी भाषा में अंग्रेज़ी व्यवस्था के खिलाफ़ ही शुरू हुआ था। परिणामस्वरूप यह लंबी अवधि तक नहीं चल सका। किंतु तब तक अनेक अखबार प्रकाशित होने लगे थे। हिंदी भाषा का पहला अखबार निकालने का श्रेय पंडित युगलकिशोर शुक्ल को जाता है जिन्होंने 30 मई 1826 को 'उदंत मार्तंड' नामक अखबार निकालकर हिंदी पत्रकारिता युग की शुरुआत की। हालाँकि यह अख़बार भी संकटों से घिरा रहा किंतु हिंदी पत्रकारिता का मार्ग भी इसी ने प्रशस्त किया। जिसके कारण हिंदी भाषा के कई अख़बार छपने लगे जैसे– शिवप्रसाद सितारे हिंद का 'बनारस अखबार' (1845), सदासुख लाल का 'बुद्धिप्रकाश' (1850), भारतेंदु हरिशचंद्र का 'कविवचन सुधा' (1867), बालकृष्ण भट्ट का 'हिंदी प्रदीप' (1877), प्रताप नारायण मिश्र का 'ब्राह्मण' (1883), मालवीय जी का 'हिंदोस्थान' (1885), काशी से प्रकाशित 'नागरी प्रचारिणी' पत्रिका (1896) आदि। (admin, 2022)

पत्रकारिता में गेटकीपिंग सिद्धांत मुख्य रूप से प्रयोग होता है। गेटकीपिंग का विचार सर्वप्रथम जर्मन मनोवैज्ञानिक कुर्त लेविन (theory, 2023) ने दिया था और डीफ्लोर तथा शुमेकर जैसे संचार विषय के अध्येताओं ने विस्तार से इसकी चर्चा पत्रकारिता के लिए की है। इसके अनुसार यदि अखबार में कोई खबर छपती है तो उसकी एक पूरी प्रक्रिया है। कई फिल्टर से होकर संपादक द्वारा एक खबर फाइनल की जाती है। खबरों का चयन और उसका स्वरूप निर्धारण संपादक द्वारा किया जाता है, उसकी तथ्यता भी परखना संपादक का ही काम है, पत्रकारिता के पूरे सिस्टम में यही अवधारणा है, यानी संपादक के रूप में एक गेटकीपर बैठा हुआ है जो समाज और पाठक के अनुसार खबरों का चयन और उस खबर का स्वरूप तय करता है। यदि अखबार की बात करें तो किस पृष्ठ पर और कितने कॉलम और फोटो के साथ खबर छपेगी और यदि टीवी की बात करें तो यह खबर कितने मिनट की होगी और उसके साथ कौन–सा विज़ुअल चलेगा यह तय करना संपादक का ही कार्य है।

संपादक इस गेटकीपर का काम अपने अनुभव, ज्ञान, सामाजिक प्रभाव और सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने की समझ के आधार पर करता है।

यह स्थिति लगभग 200 वर्षों से चली आ रही थी किंतु 90 के दशक से इसमें कुछ बदलाव आना शुरू हो गया। यह वही दौर था जब डिजिटल और न्यू मीडिया का प्रयोग शुरू हो रहा था। यहाँ वॉल्टर लिपमैन द्वारा अपनी पुस्तक 'पब्लिक ओपिनियन' (1922) में प्रस्तावित एजेंडा सेटिंग सिद्धांत का ज़िक्र करना आवश्यक है। इस सिद्धांत के अनुसार मीडिया जिस मुद्दे को प्रमुख रूप से उजागर करती है या मुख्य हेडलाइन बनाती है, उसी मुद्दे पर सामान्य जनचर्चा करते हैं या वही मुद्दा सामान्य जनता के लिए चर्चा का मुख्य विषय होता है। जनसामान्य को चर्चा करने के लिए जिन मुद्दों की तलाश रहती है वे मुद्दे मीडिया द्वारा ही सेट किए जाते हैं। न्यू मीडिया के आगमन के बाद इस सिद्धांत की मान्यता भी टूट रही है। अब यह दृष्टिगोचर होने लगा है कि मीडिया द्वारा तय किया गया एजेंडा और पब्लिक की चर्चा का एंजेंडा कभी–कभी भिन्न होता है या पब्लिक अपना एजेंडा तय करने के लिए मुख्यधारा के मीडिया पर अब पूर्णतः निर्भर नहीं रही है। सोशल मीडिया के आने के बाद यह बदलाव काफी दृष्टिगोचर होने लगा है। इस बदलाव को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं से देखा जा सकता है।

संचार को लेकर महान दार्शनिक अरस्तू के दिए विचार आज भी समीचीन हैं, जिनके अनुसार पूरी संचार प्रक्रिया में वक्ता या संप्रेषक ही सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। संदेश क्या है या क्या कहा जा रहा है यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि यह किसके द्वारा कहा जा रहा है महत्वपूर्ण है। अरस्तू ने लोगोस, इथोस और पैथोस की बात कही है, जिसमे संप्रेषक के लिए इथोस सीधे तौर पर जुड़ा है। इथोस अर्थात व्यक्ति की जनसामान्य में पहचान या व्यक्ति की इमेज और विश्वसनीयता। उदाहरण के तौर पर देखें तो महात्मा गांधी के कहने पर हजारों लोग अहिंसा का पालन करते हुए उनके साथ स्वतंत्रता आंदोलन में खड़े रहते हैं तो यह गांधी की लोगों के बीच विश्वसनीयता थी। ऐसा ही पत्रकारिता में भी देखा जा सकता है जैसे गणेशशंकर विद्यार्थी, पंडित मदनमोहन मालवीय, राजा राममोहन राय, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बाबूराव विष्णु पराडकर आदि ऐसे पत्रकारों के नाम हैं जिनकी पहचान एक महान संपादक के रूप में थी और जिनकी लिखी हर बात की विश्वसनीयता जन सामान्य में थी। लोगों के बीच इनके अखबार की पहचान इनकी व्यक्तिगत विश्वसनीयता की भी पहचान थी।

न्यू मीडिया या सोशल मीडिया के आने के बाद भी अरस्तू का यह सिद्धांत यथावत है, यही नहीं सोशल मीडिया के प्रसार के साथ ही अब उन लोगों को भी अपनी बात रखने का मौका मिल रहा है जो पहले काफी सीमित था। किन्हीं कारणों

से किसी पत्रकार को मुख्यधारा के मीडिया से विरत होने के बाद सोशल मीडिया ही एक बड़ा श्रोतावर्ग उपलब्ध करा रहा है, जो उसकी विश्वसनीयता को कायम रखने और जन संवाद करने में सहायक है। वर्तमान में ऐसे कई पत्रकारों को देखा जा सकता है जो मुख्यधारा के मीडिया से विरत होकर यूट्यूब पर अपने चैनल चला रहे हैं और उन्हें लोगों का सहयोग सबस्क्रिप्शन के रूप में मिल रहा है।

नई प्रौद्योगिकी

यदि नई प्रौद्योगिकी की बात करें तो 90 के दशक में आने वाले डिजिटल मीडिया ने पूरे सामाजिक संचार के ताने–बाने में परिवर्तन ला दिया है। पत्रकारिता में तो इसके प्रभाव से खासा परिवर्तन आ गया है और लगातार यह बदलाव जारी भी है। सिर्फ इंटरनेट और कंप्यूटर के आगमन से न्यू मीडिया का आगमन नहीं हुआ, सही मायनों में न्यू मीडिया की अवधारणा तब विकसित हुई जब वेब टू पॉइंट ज़ीरो का आगमन हुआ। वेब टू पॉइंट ज़ीरो इंटरैक्टिव वेब के रूप में जाना जाता है और इस तकनीक ने ही जनसामान्य या यूज़र को अपना कॉन्टेंट साझा करने का मार्ग सुलभ कराया है। उदाहरणस्वरूप देखा जाए तो लोगों के ट्वीट, फ़ेसबुक पोस्ट, ब्लॉग, यूट्यूब वीडियोज़ अब इंटरनेट पर उपलब्ध हैं जो जनसामान्य द्वारा और सेलिब्रिटी/पत्रकार/पॉलिटिशियन किसी के भी द्वारा मोबाइल डिवाइस का प्रयोग कर बनाया और पोस्ट किया जा रहा है।

न्यू मीडिया की अवधारणा है कि वह मीडिया जो मल्टीमीडिया हो यानी एक प्रकार से श्रव्य, दृश्य, टेक्स्ट ग्राफिक आदि का मिश्रित स्वरूप हो, डिजिटल हो, हाइपरटेक्स्ट फेसिलिटी हो इंटरैक्टिव हो, नेटवर्क से जुड़ी हो और साथ ही अपडेट होने की क्षमता भी रखती हो। इस अवधारणा के आधार पर देखें तो अनेक वेब आधारित सेवाएँ दिखाई देती हैं, जैसे ट्विटर, फेसबुक, ब्लॉग, फ़ॉक्सोनॉमी, आर एस एस, ईमेल, सर्च इंजन, वर्चुअल एवं ऑगमेंटेड रिऐलिटी, वीडिओ स्ट्रीमिंग, ओटीटी प्लैट्फॉर्म आदि। यहाँ कुछ शब्द जैसे फॉक्सनोमी आर एस एस, आदि के अर्थ को समझाने के लिए इसको हाइपरटेक्स्ट किया जाना कहीं आसान होता, लिखते समय ही इसको हाइपरटेक्स्ट कर देने से पाठक द्वारा इस शब्द पर सिर्फ एक क्लिक से इन शब्दों का अर्थ पाठक को उसी स्क्रीन पर पढ़ते–पढ़ते मिल जाता।

सामान्य तौर पर लगभग सभी लोग सोशल मीडिया, ओटीटी, वेबसाइट, इंटरनेट आदि से परिचित होंगे और इस परिचय में स्मार्टफोन की भूमिका काफी अहम है। एक सामान्य यूज़र को अपना कॉन्टेंट जैसे फोटो, वीडियो या शब्द शेयर करना अब स्मार्ट फ़ोन से सुलभ है। अनेक ट्रैवल ब्लॉग, स्वयं की वेबसाइट आदि बनाना और संचालित करना अब सिर्फ स्मार्टफ़ोन से ही करना आसान है। उदाहरण के रूप में देखें तो इस सुविधा से यूट्यूबर्स की बाढ़–सी आ गई है। अब तो लगभग हर प्रकार के विषय के

लिए कोई ना कोई यूट्यूब वीडियो उपलब्ध है। कई यूट्यूबर्स तो अपने यूट्यूब चैनल को मॉनिटाइज़ कर पैसे भी कमा रहे हैं। यह मोनिटाइज़ेशन निर्भर करता है उनके फ़ॉलोअर्स की संख्या पर और फिर इस संख्या के आधार पर विज्ञापन का मॉडल काम करना शुरू कर देता है।

पत्रकारिता में न्यू मीडिया का प्रभाव

इस नवीन तकनीक का प्रभाव सबसे तीव्र रूप में पत्रकारिता पर पड़ा है ऐसा कहना गलत नहीं होगा। दो स्वरूपों में इस प्रभाव को देखा जा सकता है पहला पाठक या दर्शक की ओर से त्वरित रिसपॉन्स और यूज़र जेनरेटेड न्यूज़ या सोशल मीडिया पोस्ट, दूसरा मीडिया सेटअप और न्यूज़ क्रिएशन के ढाँचे में परिवर्तन।

यदि पहले बिंदु की चर्चा करें तो पुनः गेटकीपिंग और एजेंडा सेटिंग सिद्धांतों की ओर देखना होगा क्योंकि न्यू मीडिया के आगमन के पहले तक यह सिर्फ पत्रकारों और मुख्यधारा के मीडिया के हाथ में होता था, किंतु कोई गेटकीपर नहीं है और एजेंडा सेटिंग अब सामान्य जनता के हाथ में भी है। वेब टू पॉइन्ट ज़ीरो के आने से अब कंज्यूमर सिर्फ कंज्यूमर नहीं बल्कि प्रोज्यूमर है, यानी अब पाठक या दर्शक सिर्फ़ सूचना प्राप्तकर्ता नहीं बल्कि सूचना निर्माता भी है, और यहीं से सिटिज़न पत्रकारिता की अवधारणा को भी बल मिलता है। जिन सूचनाओं और खबरों को गेटकीपर फ़िल्टर कर प्रकाशन या प्रसारण से रोक देता था अब सोशल मीडिया पर वो खबरें वायरल हो जाती हैं जिससे जनसामान्य को और अधिक सूचना तथा अलग दृष्टिकोण मिल पाता है। कई बार तो यह भी देखने में आया है कि मुख्यधारा का मीडिया खुद सोशल मीडिया से खबरों का चयन करता है। इसके सकारात्मक पक्ष को देखे तो अब जनता से कोई सूचना छुपाना या प्रायोजित एजेंडा सेट करना काफी मुश्किल है क्योंकि जो खबरें मुख्यधारा के मीडिया में नहीं आतीं वो सोशल मीडिया में आ जाती हैं और उस पर डिबेट भी सोशल मीडिया में चलती रहती है।

स्वतंत्र पत्रकार और बुद्धिजीवी वर्ग जो अपनी आवाज़ या विचार लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं आसानी से यूट्यूब चैनल खोल रहे हैं। यही नहीं समाचारों, विचारों और विश्वसनीयता के आधार पर पब्लिक फंड भी प्राप्त किया जा रहा है। मीडिया में क्रॉस मीडिया ओनरशिप से जो सूचना एकाधिकार उत्पन्न हो रहा था, वह अवधारणा अब टूट रही है। सन् 1980 में आई यूनेस्को द्वारा सेटअप मैकब्राइड कमिशन की रिपोर्ट 'मेनी वॉइसेज़ वन वर्ल्ड' (Report, 1980) ने पूरी दुनिया में सूचना प्रवाह के जिस संतुलित प्रवाह की बात की थी वह सोशल मीडिया के आगमन से मुक्त प्रवाह बन गया है। अब यदि इसके नकारात्मक पक्ष की ओर देखें तो यह माध्यम फेक न्यूज़ का अड्डा बनकर भी उभर रहा है। गेटकीपर न होने से बिना जाने–बूझे सूचनाओं को शेयर किया जा रहा है। कई बार तो फेक न्यूज़ को इतने सटीक तरीके से पेश

किया जाता है कि बड़े और मुख्यधारा के मीडिया हाउस भी उसको अपनी खबर बना देते हैं। इस फेकन्यूज़ का सबसे बड़ा नुकसान दंगों के रूप में देश ने देखा है। जिस धार्मिक उन्माद और दंगों का पुरज़ोर विरोध हिंदी के मूर्धन्य पत्रकार स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी हमेशा करते रहे और उन्हीं दंगों को शांत करने में अपने प्राणों की आहुति दे दी। वही उन्माद फेकन्यूज़ और सोशल मीडिया के माध्यम से आसानी से भारतीय समाज के ताने–बाने को कमजोर करने का काम कर रहा है। हालाँकि कोविड काल के दौरान फैक्ट चेक के अनेक तरीके और तकनीकें प्रचलित हुई हैं किंतु अभी जनमानस तक इसकी समझ और पहुँच काफी कम है। इस कड़ी में अब डीपफेक एक नई चुनौती के रूप में सामने है। डीप फेक तकनीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स पर आधारित है जिसमें किसी व्यक्ति के पुराने वीडियो को पढ़कर कर हू–ब–हू उसी आवाज़ और अंदाज़ में एक ऐसे कॉन्टेंट के साथ नया वीडियो बना दिया जाता है जो अमुक व्यक्ति ने कभी बोले ही ना हों। उन्नत तकनीक के प्रयोग से इस काम में इतनी सफाई बरती जा रही है कि जिसका डीपफेक बनाया जाता है वह खुद ही सही–गलत की शिनाख्त कर पाने में सक्षम नहीं होगा। अब तो ये खबरें भी आ रही हैं कि कोरिया में न्यूज़ एंकर के डीपफेक से चैनल चलाए जा रहे हैं यानी एंकर जब स्टूडियो में नहीं होता तब भी वह दर्शकों को न्यूज़ प्रस्तुत करते हुए दिखाई देता है। (Debusmann, 2021) हालांकि ये डीप फेक का सकारात्मक प्रयोग है लेकिन कमोबेश इस तकनीक का नकारात्मक प्रयोग कहीं अधिक हो रहा है।

दूसरा प्रमुख बिंदु है मीडिया सेटअप और न्यूज़ क्रिएशन और डिस्ट्रीब्यूशन। अब समय रियल टाइम रिपोर्टिंग का आ गया है अर्थात न्यूज़ क्रिएशन और डिस्ट्रीब्यूशन लगभग एक साथ चल रहा है ऑनलाइन या ऐप आधारित समाचारों में न्यूज़ को रियल टाइम अपडेट करने का ऑप्शन रहता है और पाठक वर्ग सीधे तौर से खबर पर अपनी प्रतिक्रिया देता है, इस प्रतिक्रिया के आधार पर या अमुक खबर में कुछ नई जानकारी आने से खबर को अपडेट या एडिट करने की जरूरत पड़ती है जो आसानी से ऑनलाइन करना अब संभव है। पहले यह काम सीधे संपादक करता था किंतु धीरे–धीरे यह सब कुछ रिपोर्टर के हाथ में आ रहा है। अब रिपोर्टर ही खबर लिखता है, एडिट करता है, हेड्लाइन लगाता है, फोटो खींचता और लगाता है और उस खबर को पोस्ट करता है। यह एक तरह से कन्वर्जेंस का ही स्वरूप है जिसमें पत्रकारिता की अन्य संस्थाएँ जैसे संपादक, फोटोग्राफर, प्रूफरीडर यह सब एक ही व्यक्ति में समाहित हो रहे हैं। अब लगभग हर मीडिया संस्थान का डिजिटल फुटप्रिंट होना आवश्यक है। फलस्वरूप सभी अखबारों और चैनलों की वेबसाइट मौजूद हैं और कुछ तो सिर्फ ऑनलाइन ही छप रहे हैं या ब्रॉडकास्ट हो रहे हैं।

ब्लॉग और पॉडकास्ट भी काफी तेजी से प्रचलित हो रहे हैं। विचारों के लिए यह माध्यम काफी सशक्त है। न्यूज़ पॉडकास्ट जैसे– थ्री थिंग्स, ग्लोबल न्यूज़ (बीबीसी),

इनफोकस (द हिंदू), द प्रिंट आदि लोगों में खासे प्रचलित हैं। अखबार का पत्रकार अब सिर्फ प्रिंट मीडिया का पत्रकार नहीं है वह पॉडकास्ट पर बोलता है, वेबपेज पर हाइपरटेक्स्ट के साथ लिखता है, यूट्यूब पर चर्चा करता है और समाचार भी प्रस्तुत करता है। कुछ पत्रकारों ने मुख्यधारा का चैनल छोड़कर अपना यूट्यूब चैनल भी शुरू किया है और वह काफी कम समय में अपने फॉलोअर्स की संख्या को बढ़ाने में कामयाब भी रहा है। उनकी संख्या आसानी से लाखों में पहुँच गई है। आम जनता ही इसको सब्सक्राइब कर रही है और फंडिंग भी कर रही है। यह व्यवस्था पत्रकारों की स्वतंत्रता और पब्लिक सपोर्ट से जुड़ा हुआ मुद्दा है। यह एक नई व्यवस्था का उदय है जिसपर अलग से चर्चा की जा सकती है।

ए आई

समाचारों या विचारों के पाठक या श्रोता या दर्शक की बात करें तो अब कस्टमाइज्ड न्यूज़ का चलन बढ़ रहा है। एल्गोरिदम और ए आई तकनीक से व्यक्ति जिस प्रकार का समाचार चाहता है उसी प्रकार का समाचार कई प्लेटफॉर्म से खोजकर उस तक पहुँचाया जा रहा है। लोगों के सर्च बिहेवियर को भी ए आई से लगातार पढ़ा जा रहा है और उसी आधार पर सूचना प्रेषित की जा रही है जो वह चाहता है या जिस प्रकार की सूचना में उसकी रुचि है। पत्रकारिता के साथ–साथ सदा ही विज्ञापन भी चलता रहा हैं। अभी तक अखबार का सर्कुलेशन और चैनल की रीच या टीआरपी ही इसका आधार बनती थी किंतु अब ब्लॉकचेन तकनीक की मदद से एक–एक व्यक्ति के खर्चों को समझना आसान हो गया है। अब ज्यादातर वित्तीय लेनदेन या खरीदारी ऑनलाइन हो रही है तो यह सब कुछ रिकॉर्ड हो रहा है। ब्लॉकचेन तकनीक व्यक्ति के पूर्व खर्चों का लगातार आकलन कर आगामी खर्चों या वित्तीय व्यवहार को सटीक तरीके से पढ़ रहा है और इसी आधार पर समाचार के साथ जो विज्ञापन हमारी स्क्रीन पर आते हैं वो कस्टमाइज्ड होते हैं, या यूँ कहें कि एक ही प्रकार के समाचार को पढ़ने वाले या देखने वाले अलग–अलग व्यक्तियों के स्क्रीन पर उनके वित्तीय क्षमता और पसंद के आधार पर अलग–अलग विज्ञापन आते हैं और यह सब ए आई ऑटोमैटिक कर रहा है।

पहले लगभग सभी मीडिया रिसीवर स्तर पर ब्लाइंड होते थे अर्थात् मीडिया को सटीक तौर पर ये पता नहीं होता था कि उनका पाठक या श्रोता असल रूप में कौन है, यदि एक अखबार या चैनल एक परिवार के द्वारा पढ़ा या देखा जा रहा है जिसमें पाँच सदस्य हों तो वह परिवार ही उस अखबार या चैनल के लिए रिसीवर एंड पर इकाई होता था, लेकिन अब 'मैट्रिक्स ऑफ द न्यूज़ सोसाइटी' सभी मीडिया के पास उपलब्ध है। मैट्रिक्स के आधार पर अब मीडिया या पत्रकार को पता है कि अमुक समाचार को पढ़ने या देखने वाला व्यक्ति कौन है, उसका सब डेमोग्रॉफिक डेटा मीडिया/पत्रकार के पास उपलब्ध है जो न्यूज़ और विज्ञापन को कस्टमाइज्ड करने में मदद करता है।

की वर्ड

समाचार को लिखते समय या वीडियो पोस्ट करते समय अब की वर्ड का ध्यान रखना आवश्यक है। क्योंकि काफी बड़ी मात्रा में न्यूज़ अब सर्चइंजन पर खोजी जाती है। अतः सर्च के हिसाब से उसमें की वर्ड डालना अब उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसकी हेड्लाइन तैयार करना है। जैसे लोग किसी समाचार को उसमें दी गई हेडलाइन को देखकर पढ़ते हैं उसी प्रकार अब की वर्ड के आधार पर उसको खोजा और पढ़ा जा रहा है। यदि किसी पत्रकार ने खबर पोस्ट करते समय एक आकर्षक और व्यंग्यात्मक हेडलाइन लगाई है किंतु उस मुद्दे से जुड़े की वर्ड नहीं डाले तो यह सर्च करने पर पाठक की स्क्रीन पर नहीं आएगा और एक अच्छी न्यूज़ स्टोरी की पहुँच कम हो जाएगी।

ऑनगोइंग न्यूज़

ऑनलाइन न्यूज़ में डेडलाइन विहीन और भौगोलिकताविहीन अवधारणा प्रयोग में आ रही है अर्थात 24/7 ही डेडलाइन है और हर ऑनलाइन सूचना अब वैश्विक है। पूरे विश्व में लगातार सूचना प्रवाह हो रही है। इसका एक छोटा सा उदाहरण अपने फेसबुक पेज पर देखा जा सकता है। यदि हम रात के 2:00 बजे भी कुछ शेयर करें तो कुछ मिनटों में ही लाइक्स और कॉमेंट्स आना शुरू हो जाएंगे, फेसबुक के इस छोटे से समूह में भी कुछ लोग रात के 2:00 बजे ऑनलाइन उपलब्ध हैं और सूचना प्रवाह में भागीदार हैं। यदि वैश्विक स्तर पर देखें तो ये डेटा काफी बड़ा होगा। अतः अब ऑनगोइंग न्यूज़ की अवधारणा विकसित हो गई है जिसमें समाचारों का प्रवाह लगातार चल रहा है। किसी प्रकार का कोई ठहराव नहीं है। जिस प्रकार की बाध्यता अख़बारों के साथ है कि सुबह छप जाने के बाद अब फिर दूसरे दिन ही नई सूचना पाठक को मिलेगी लेकिन टीवी और ऑनलाइन के दौर में ऐसा नहीं है, हर नई ख़बर पूर्व की खबर को ब्रेक कर रही है और लगातार ब्रेकिंग न्यूज़ स्टोरी चल रही है।

मोजो

न्यूज़ क्रिएशन और डिस्ट्रीब्यूशन की इस अवधारणा में मोबाइल फ़ोन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और इसी भूमिका ने मोजो की अवधारणा को जन्म दिया है, मोजो अर्थात् मोबाइल जर्नलिज़्म। अब मोबाइल में ही वीडियो रिकॉर्ड करने, एडिट करने, वॉइस ओवर करने और रीयल टाइम में इस वीडियो को पोस्ट करने की क्षमता और सुविधा है, जिसका प्रयोग आसानी से नए दौर के पत्रकार कर रहे हैं। कोविड के समय मोजो में काफी प्रसार देखने को मिला है। उस दौरान बहुत से पत्रकार मोबाइल पत्रकारिता कर रहे थे और फील्ड रिपोर्टिंग भी अपने मोबाइल से ही कर रहे थे। क्योंकि रिपोर्टिंग के बड़े सेटअप को उस दौरान कैरी करना थोड़ा मुश्किल था। प्रयोग में आसान और त्वरित होने के कारण इसका प्रचलन काफी तेजी से बढ़ रहा

है। इतना ही नहीं इसके महत्व को देखते हुए कई शिक्षण संस्थान मोजो कोर्स भी ऑफर कर रहे हैं। मोबाइल ही अब न्यूज़ क्रिएशन, डिस्ट्रीब्यूशन और रिसीवर तीनों का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है। यह भी एक कारण है कि पाठक की पैसिव ऑडियंस वाली अवधारणा अब पूर्ण रूप से ऐक्टिव ऑडियंस में परिवर्तित हो गई है। जिसमें ऑडियंस सिर्फ सूचना प्राप्त करने वाला नहीं होता बल्कि अपनी प्रतिक्रिया और सूचना को गढ़नेवाला भी होता है, जिसका प्रभाव पत्रकारिता को एक नई दिशा की ओर ले जा रहा है।

संक्रमण काल

न्यू मीडिया के साथ यह पत्रकारिता का सबसे तेजी से परिवर्तित होने वाला दौर है और अभी यह संक्रमण काल में ही है ऐसा कहना गलत नहीं होगा। नई तकनीक खुद काफी तेजी से बदल रही है तो लाज़मी है कि पत्रकारिता भी उसी गति से बदले क्योंकि संचार तकनीकों के साथ पत्रकारिता का सदैव ही चोली–दामन का साथ रहा है। अब ये कहा जाने लगा है कि पत्रकारिता का कार्य सूचनाओं को प्रोसेस करना बन गया है, रिपोर्टर्स को अब गेटकीपर की जगह गेट वाचर कहा जाने लगा है। ऐसा समाचारों की ऑनलाइन उपस्थिति और आर्काइव करने के कारण और साथ ही फील्ड रिपोर्टिंग का प्रयोग कम होने की वजह से हो सकता है। अख़बार के लिए पहले रिपोर्टर को फील्ड में जाकर समाचार लाना पड़ता था परंतु अब बहुत से समाचार और सूचनाएँ ऑनगोइंग जर्नलिज्म के चलते लगातार मिलती रहती हैं। अतः समाचार लिखते समय या टीवी पर प्रस्तुत करते समय ऑनलाइन में उपलब्ध सूचना का सहारा लिया जाता है। इस प्रैक्टिस में कई बार तो किसी समाचार की पृष्ठभूमि काफ़ी अच्छी तैयार हो जाती है और बहुत सारे तथ्य, एंगल और गहरी जानकारी अमुक समाचार में डाल दी जाती है, किंतु कई बार इसके लिए कॉपी–पेस्ट का भी सहारा ले लिया जाता है जो एक सतही रिपोर्टिंग स्टाइल को बढ़ावा देता है। न्यू मीडिया को लेकर ये भी कहा जाता है कि 80 के दशक से पूर्व और पश्चात जन्मे लोगों में एक अनुभव का अंतराल है और 80 के पूर्व जन्मे व्यक्तियों को डिजिटल इमिग्रेंट्स तथा 80 के बाद जन्मे व्यक्तियों को डिजिटल नेटिव की संज्ञा दी गई हैं। ऐसा इसलिए है कि पूर्व के लोगों ने नई तकनीक अलग से सीखी हैं किंतु 1980 के बाद वाले तो इस तकनीक के साथ ही बड़े हुए हैं, क्योंकि अब कंप्यूटर और स्मार्टफ़ोन सबके घरों में है और बच्चे छुटपन से ही इन तकनीकों से खेलते आ रहे हैं, अतः वे ज्यादा टेक फ्रेंडली हैं।

न्यू मीडियायुगीन पत्रकारिता में मूल्य

अनेक प्रकार की सुविधा मिलने और पाठक के हाथ में कॉन्टेंट निर्माण और प्रसार की बागडोर आने के कारण पत्रकारिता के समक्ष कुछ मूल्यगत समस्याएं भी खड़ी हो गई हैं जिसने पूरी सामाजिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है। इंटरनेट

और स्मार्टफ़ोन की सुलभता से अब कोई भी व्यक्ति आसानी से अपनी बात पूरे विश्व के सामने रख सकता है। किसी भी मुद्दे पर अपने वीडियो, ब्लॉग या पोडकास्ट शुरू कर सकता है। फेसबुक पर अपनी बात शेयर करना तो अब आम बात हो गई है। इस प्रोज्यूमर बनने की चाह में सामग्री या सूचना की संख्या में तो खासा इज़ाफ़ा हुआ है किंतु सामग्री की गुणवत्ता में काफी कमी आई है। जितनी संख्या में सामग्री अपलोड हो रही है उस अनुपात में गुणवत्ता काफी कम है। इसका कारण कहीं न कहीं जल्दबाजी और सीरियसनेस का अभाव तथा साथ ही प्राप्त सुविधा का अनुचित प्रयोग हो सकता है।

फेकन्यूज एक बड़ी समस्या के रूप में पत्रकारिता और समाज के सामने है। बिना सोचे–समझे किसी समाचार या सूचना को फॉर्वर्ड करना इसको और हवा दे रहा है। मार्फ इमेजेज, एडिटेड वीडियो, गलत पृष्ठभूमि वाले समाचार, किसी दूसरे स्थान की फोटो किसी दूसरी घटना के साथ जोड़कर दिखाना या पूर्ण रूप से फेक समाचार प्रचारित करना इसमें शामिल हैं। सामान्यतया लोगों की यह मान्यता है कि समाचार के रूप में प्राप्त सामग्री चाहे वह किसी भी माध्यम से आई हो, वह सत्य है। किंतु अब हर समाचार पर विश्वास करने से पूर्व उसको सत्यता की कसौटी पर परखना आवश्यक है। क्योंकि तकनीक की दुनिया फ़ेक से आगे निकलकर डीपफेक तक आ चुकी है जिसमें सही–ग़लत का आकलन करना बहुत कठिन हो जाता है।

ऑनलाइन पाठकों और दर्शकों की एक सामान्य समस्या है गंभीर ना हो पाना और बिना संपूर्ण सामग्री देखे या पढ़े उसको अग्रेषित कर देना। ऑनलाइन पाठक की एक सामान्य प्रवृत्ति है कि वह 300 शब्द से अधिक नहीं पढ़ता और इसी वजह से आधी–अधूरी सूचना के आधार पर अपना विचार बना लेता है तथा अपने परिचितों को फॉर्वर्ड कर अपने अनुसार ही विचार बनाने के लिए प्रेरित भी करता है। पूर्व में जैसा ज़िक्र किया जा चुका है कि अब समाचार को सर्च इंजन की कसौटी पर भी खरा उतरना जरूरी है यानी की वर्ड भी ऐसा होना चाहिए कि जिससे सर्च करने पर वह शुरुआती पृष्ठ पर प्राथमिकता से पाठक की स्क्रीन पर दिखाई दे। किंतु इस तकनीकी शब्दावली का फ़ायदा सामान्य जन से कहीं अधिक तकनीकी रूप से सक्षम शरारती तत्व ज्यादा उठा रहे हैं और फेकन्यूज़ या सूचना को ऐसे प्रस्तुत करते हैं कि सर्च करने पर हर जगह यही सामग्री प्राथमिकता से पाठक को दिखाई देती है।

इसके अलावा एल्गोरिदम आधारित पत्रकारिता यह दबाव बनाती है कि पाठक या दर्शक की रुचि के अनुरूप ही सामग्री परोसी जाए न कि समाज की आवश्यकता और विकास के अनुरूप। पहले पत्रकार सामाजिक हितों को ध्यान में रखकर पत्रकारिता करते थे जैसे राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के खिलाफ पत्रकारिता की जबकि उस समय एक बड़े वर्ग की रूचि इसमें कम थी, किंतु ऐसी पत्रकारिता करके

उन्होंने लोगों के विचारों में परिवर्तन लाए और समाज से एक बुराई का अंत किया। स्वतंत्रता आंदोलन में भी अनेक पत्रकारों ने लोकजागरण का काम उनकी रुचि को न देखकर सामाजिक हित और स्वतंत्रता प्राप्ति को ध्यान में रखकर किया। पत्रकारिता का काम सिर्फ पाठक की रुचि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत कराना नहीं है बल्कि पाठक के विचार और सामाजिक उन्नयन के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराना है। यदि सिर्फ पाठक की रुचि के अनुसार पत्रकारिता की जाएगी तो ऐसी पत्रकारिता मनोरंजन के काफी करीब होगी।

उपसंहार

समाज और पत्रकारिता में बदलाव तो सदैव होते रहे हैं किंतु इन बदलावों की गति इतनी सामान्य रही है कि लोग एक ठहराव ले सकें या धीरे–धीरे उस बदलाव के साथ अपने को ढाल सकें। न्यू मीडिया के आगमन ने पत्रकारिता को जितनी तीव्र गति से परिवर्तित किया है या कर रही है उतनी पूर्व में शायद ही कभी रही हो। इस त्वरित परिवर्तन में एक बड़ी बात है इस सिस्टम का समावेशी होना जो वेब 2 पॉइंट जीरो के आगमन से बन सका है। इस दौर में पत्रकारिता कुछ हाथों तक या कुछ मीडिया हाउसेज या पत्रकारों तक सीमित नहीं है बल्कि एक बड़ा पाठक वर्ग या श्रोतावर्ग अपने विचार वर्तमान पत्रकारिता में दे रहा है। रियल टाइम फीडबैक होने और प्रोज्यूमर की अवधारणा ने अब पत्रकारिता को पूर्णरूप से समावेशी बना दिया है। हालांकि अभी तकनीकी रूप से सक्षम लोग इस सुविधा का अधिक लाभ उठा रहे हैं। किसी भी व्यक्ति का पत्रकारिता में भागीदार बनना अब आसान है किंतु यह परिवर्तन पत्रकारिता में फिलहाल सकारात्मक से अधिक नकारात्मक पहलू की ओर इशारा कर रहा है। फ़ेक सूचना के साथ सतही ज्ञान और समाचार का प्रसार पूरे सामाजिक ताने–बाने के लिए एक खतरा है, किंतु समाज में आ रही जागरूकता इस बड़ी चुनौती का सामना कर सकती (Journalism in the Age of Digital Technology, 2013) है लेकिन ये जागरूकता अभी काफी कम है। समाज में फेक न्यूज़ को लेकर जागरूकता लाना इस दौर में अति आवश्यक है और इस जागरूकता की गति भी तकनीकी विकास की गति के अनुपात में होनी चाहिए। अनेक शिक्षण संस्थानों में फैक्ट चेक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है किंतु इसकी पहुँच जन सामान्य तक नहीं हो पा रही है। अब जरूरत है मीडिया लिटरेसी को गाँव–गाँव तक पहुँचाने की और जितनी जल्दी यह कार्य होगा उतनी ही जल्दी नई प्रौद्योगिकी या न्यू मीडिया के रूप में मिली यह अपार संभावना पत्रकारिता और समाज के लिए वरदान साबित होगी।

हिंदी पत्र पत्रिकाएँ

27



राकेश कुमार सिंह

अनेक पुस्तकें एवं प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित। प्रतिष्ठित पत्रिका 'सबद निरंतर' के संपादक। संप्रति– एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मानविकी एवं संकाय, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी, साबो, पंजाब।

जर्जर, निस्सार एवं प्रतिगामी मूल्यों के प्रतिरोध तथा सामाजिक परिवर्तन में लघु पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बावजूद इसके कि अधिकांश लघु पत्रिकाओं के पास निरंतरता को बनाए रखने के लिए संसाधनों का अभाव होता है, फिर भी जन सहयोग एवं विक्रय के आंशिक सहयोग से ये पत्रिकाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। कुछ पत्रिकाओं को आर्थिक संकट एवं जन सहयोग के अभाव में कई बार दम तोड़ देना पड़ता है अथवा उसकी निरंतरता बाधित होती है। उदय एवं अवसान के इस क्रम का इतिहास भी महत्वपूर्ण नहीं है। इस इतिहास में सामान्य जन का वास्तविक इतिहास प्रतिबिंबित होता है। यही कारण है कि इतिहास लेखन के अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमाणिक स्रोतों में इसकी गणना होती है। ठीक इसके विपरीत किसी पूँजीवादी संगठन, सरकारी या अद्‌र्ध सरकारी पत्रिकाएँ अपने विपुल संसाधन के बावजूद ऐसे दायित्वों का निर्वाह नहीं कर पातीं, इसके साथ ही उनकी गुणवत्ता एवं प्रमाणिकता भी संदिग्ध होती है। अपने स्वामी के हितों का वे तिरस्कार सह नहीं पातीं और उनके पक्ष में या तो तर्क गढ़ने लगती हैं या फिर उनके बचाव में खड़ी होकर उसे सही सिद्‌ध करने में अपनी क्षमता का अपचय करने लगती हैं। अतः अपने उदय एवं कार्यशैली दोनों ही धरातल पर संदिग्ध ठहरती है। इस तथ्य को दृष्टिपथ में रखते हुए सन 2022 की मुख्य लघु पत्रिकाओं का विश्लेषण प्रस्तुत है–

मगध

2022 में प्रकाशित जिन पत्रिकाओं ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है उनमें 'मगध' विशेष उल्लेखनीय है। जनवरी 2022 में इसका प्रवेशांक आया जिसमें विपुल स्तरीय सूचनाएँ शामिल हैं। इसके प्रथम अंक से ही एक आशा बलवती होती जान पड़ती है कि साहित्य जगत में इस पत्रिका का हस्तक्षेप महत्वपूर्ण होगा। यद्‌यपि संपादक का निवेदन है कि प्रवेशांक को जिस तरह लाना चाहते थे, नहीं ला पाए।

निश्चय ही यह संकल्प पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य का संकेतक है। संपादकीय के उपरांत आलोक धन्वा से कुमार मुकुल की बातचीत प्रकाशित है जिसमें निराला और रवींद्रनाथ टैगोर की तुलना करते हुए आलोक धन्वा ने कहा है कि ''रवि ठाकुर भी वहाँ नहीं पहुँचे जहाँ निराला कविता में गए, 'वह तोड़ती पत्थर' पर ऐसी–ऐसी कहानियाँ लिखी हैं कि आपको रूलाई आ जायेगी। (पृष्ठ–9) उन्होंने समीक्षक को हिदायत दी है कि किसी रचनाकार की समीक्षा करते हुए उसके निजी जीवन में न जाएँ। निजी जीवन के तथ्यों को लेखक के लेखन या पॉलिटिक्स पर लागू करना एक तरह से ब्लेकमेलिंग है (पृष्ठ–10) 'आपको किसी चीज से भय नहीं लगता' के उत्तर में आलोक धन्वा कहते हैं कि 'मुझे मृत्यु का भय नहीं है, हाँ, कुत्ते से भय लगता है मुझे। (पृष्ठ–13)। इसमें दूसरा साक्षात्कार अनामिका का विनय कुमार के साथ है, जिसमें वर्त्तमान साहित्यिक परिवेश, कवयित्री का रचना–संसार, निजी अनुभव का बहुत कुछ शामिल है। इस साक्षात्कार को अनामिका के कुछ गिने–चुने साक्षात्कारों में परिगणित किया जा सकता है। मन्नू भंडारी पर सुधा अरोड़ा का स्मृति लेख (मन्नू भंडारी : पारदर्शी व्यक्तित्व की ईमानदार कथाकार) विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें मन्नू भंडारी के साथ–साथ हिंदी साहित्य–जगत विशेषकर कथा–साहित्य का पूरा परिदृश्य मूर्त्तमान हो उठा है। शताब्दी–स्मरण (मैला आँचल : प्रेम का महाआख्यान) में डॉ. रंजना कण्ठ ने रेणु और शतरचंद्र की प्रेम–दृष्टि का सरस विश्लेषण किया है।

आलोक धन्वा, लीलाधर मंडलोई, उदयन वाजपेयी, गोविंद माथुर आदि की कविताओं के अतिरिक्त मनीषा कुलश्रेष्ठ का 'जयपुर : परकोटे के अवगुंठन में' विशेष उल्लेखनीय है। 'मूलनायक' (नाटक, राजेश कुमार) 'आल्वेर कामू और भारत' फ्रांसीसी और हिंदी साहित्य से संबद्ध विधा जिसका अनुवाद आशीष अग्निहोत्री ने किया है, इस अंक की महत्वपूर्ण सामग्रियों में है। रामस्वरूप किसान, संजय कुंदन, राजेश कमल, देवेश पथ सरिया, ज्योति शोभा की कविताओं के साथ–साथ मन्नू भंडारी (गोपाल को किसने मारा), विनय कुमार (बंकबर, थैंक यू), जयनंदन (दुःख ने दुःख से कहा), प्रकृति करगेती (चंदूवों और गैर चंदूवों के बीच वो) और नितिन यादव (आधा सच बनाम भारत का प्रधानमंत्री कौन है) की कहानियाँ नई संवेदनात्मक भूमि का आभास देती हैं। कुल मिलाकर यह अंक नववर्ष के सुखद उपहार की तरह है जिससे भविष्य की अनेक आशाएँ–आकाक्षाएँ जुड़ी हैं।

समय के साखी

'समय के साखी' का जनवरी, 2022 का अंक प्रख्यात लेखक रसूल हमजातोव के उपन्यास 'मेरा दागिस्तान' पर केंद्रित है। यह आरती के संपादन में प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में 'मेरा दागिस्तान' पर राजेश जोशी, बंसत त्रिपाठी, अनुराधा सिंह, राकेश मिश्र, यादवेंद्र पांडेय और मनोज कुलकर्णी आदि की टिप्पणियाँ हैं और शेष भाग

में 'मेरा दागिस्तान : खंड–1' का हिंदी अनुवाद है। इस प्रकार 28 पृष्ठों में रसूल हमजातोव का मूल्यांकन और शेष पृष्ठों में केवल अनुवाद थोड़ा अखरता है।

बनास जन

बनास जन का जनवरी, 2022 अंक–53 हिंदी के प्रख्यात कवि राजेश जोशी पर केंद्रित है। वह एक महत्वाकांक्षी आयोजन है। इस अंक के अतिथि संपादक हैं हिंदी कविता एवं आलोचना के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर प्रो. आशीष त्रिपाठी। संपादकीय के उपरांत राजेश जोशी की कविताएँ हैं। कवि के संग–साथ (खंड) में अशोक आत्रेय, राम प्रकाश त्रिपाठी, शशांक निरूपा जोशी के आत्मीय लेख हैं जिससे राजेश जोशी के व्यक्तित्व, रचना–परिवेश एवं जीवन के अन्य अंतरंग पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। अपने समकालीन रचनाकारों पर लिखना जोखिम का काम समझा जाता है और यह जोखिम तब और अधिक बढ़ जाता है जब लिखने वाला तथा जिससे संदर्भ में लिखा जा रहा है, दोनों एक ही विधा से संबद्ध हों।' मूल्यांकन की देहरी खंड में अजय तिवारी को छोड़कर शेष तीनों (अरुण कलमा, अनामिका, विजय कुमार और कुमार अंबुज) का मुख्य क्षेत्र कविता ही है। इन आलेखों में मूल्यांकन केवल कविता का नहीं है, कवि का भी है जो कवि होने के साथ–साथ एक मनुष्य, एक नागरिक भी हैं। उसके मित्र–दुश्मन, आग्रह–दुराग्रह भी हैं और इन सबके ऊपर उठकर समता के धरातल पर सबसे आत्मीय संबंध स्थापित करने का असामान्य गुण भी है।

'कविता की आँख' (खंड) में प्रफुल्ल शिलेदार, नीलेश रघुवंशी, विवेक निराला, शिरीष कुमार मौर्य, अनिल त्रिपाठी, बसंत त्रिपाठी, जितेंद्र श्रीवास्तव, भरत प्रसाद, अनुराधा सिंह, अनुज लुगुन और विहान वैभव आदि के आलेख राजेश जोशी के रचना–संसार के अलग–अलग पक्षों को विश्लेषित करते हैं तथा उनकी कविताओं के आस्वादन की सुदृढ़ पीठिका तैयार करते हैं। 'कविता संग्रह : मूल्यांकन' (खंड) में मानवेंद्र प्रताप सिंह, संजय कुमार, जीवन सिंह, दिवाकर तिवारी, अंकिता शांभवी वर्मा, अमिष वर्मा, प्रभाकरण हेब्बार इल्लत, रचना सिंह उमादे के आलेख भी राजेश जोशी की कविता एवं उसके विकासक्रम को समझने में सहायक हैं।

राजेश जोशी की एक 'कवि की नोट बुक' पुस्तक बहुचर्चित, बहुप्रिय एवं कुछ विवादित भी रही जिस पर कुछ कवि आलोचकों ने तीखी टिप्पणियाँ की थीं। संपादक ने उस पक्ष को ध्यान में रखते हुए 'नोटबुक में कवि उर्फ कवि की नोटबुक' नामक खंड रखा है जिसमें विनोद तिवारी, प्रभाकर सिंह, योगेश प्रताप शेखर, विशाल विक्रम सिंह के आलेख हैं। इसमें राजेश जोशी की कवि के साथ–साथ आलोचक का पक्ष भी व्यापक ढंग से उभरा है। राजेश जोशी की कहानियाँ भी चर्चित रही हैं जिस पर बलराज पांडेय, नीरजा खरे, ललित श्रीमाली और शशिभूषण मिश्र के आलेख हैं। ललित श्रीमाली और शशिभूषण मिश्र ने उनके किस्सागोई प्रतिभा का विश्लेषण किया है।

राजेश जोशी के नाट्यकर्म पर आभा गुप्ता ठाकुर, मृत्युजंय प्रभाकर व अमितेश कुमार का आलेख भी पठनीय है। और अंत में 'परिप्रेक्ष्य में कविता' शीर्षक खंड में शांति नायर, विवेक कुमार मिश्र, संजीव कुमार दुबे, सुशील कुमार द्विवेदी, पल्लवी प्रकाश, मो. आसिम अंसारी, मनोज विश्वकर्मा और प्रिया भारतीय के आलेख भी द्रष्टव्य हैं। कुल मिलाकर यह एक समृद्ध अंक हैं।

जनवरी–2022 में ही प्रख्यात लेखिका 'मृणाल पांडे' पर केंद्रित 'बनास जन' का अंक काफी चर्चित रहा। हिंदी पत्रकारिता, स्त्री–विमर्श एवं कथा–लेखन में मृणाल पांडे का नाम चर्चित रहा है। साहित्य का संस्कार उन्हें पारिवारिक रिक्य के रूप में प्राप्त हुआ है जिसे अनवरत साधना से उन्होंने और शाणित किया है। इस अंक में संपादक ने उनके लेखन व वाचिक अवदानों का गंभीर मूल्यांकन किया है। विविध पत्रों एवं संस्मरणों से उनके साहित्य–संसार के कई पक्ष उजागर हुए हैं, वरन उनके समकालीन अन्य रचनाकारों के व्यक्तित्व के भी कई अनावरित पक्ष प्रकाश में आये हैं। निश्चय ही ये दोनों अंक महत्वपूर्ण हैं और जब–जब राजेश जोशी एवं मृणाल पांडे के मूल्यांकन की कोशिश होती, ये विशेषांक याद किए जाएंगे।

अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका 'बनास जन' का अंक–61 (दिसंबर, 2022) एक संग्रहणीय अंक है। इस पत्रिका ने जहाँ ख्यातिलब्ध रचनाकारों के साथ–साथ ऐसे नये लेखकों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया है जिनमें पर्याप्त ऊर्जा एवं संभावना है, किंतु उनकी रचनाएँ या तो बहुत प्रकाश में नहीं आई या फिर किसी गुट या खेमे से बाहर रहने के कारण अचर्चित रहे। विनय सौरभ का नाम ऐसे ही कवियों में लिया जा सकता है। ध्यान रहे कि पत्रिका की शुरूआत ही उनके आत्मकथ्य एवं कविताओं से होती है। इसके ठीक बाद शेखर जोशी ने 'मन की बात' लिखी है। यह किसी राष्ट्र के प्रधान के मन की बात न होकर लेखक के मन की बात है जिसमें उसकी स्मृतियों एवं आकांक्षाओं के साथ आम आदमी की आकांक्षाएँ भी समाहित होती चलती हैं। यह वसीयत के रूप में अपनी मृत्यु से मात्र तीन माह पूर्व लिखी गई सामग्री शेखर जोशी के उच्चाशय को व्यक्त करती है। कालजयी कृतियाँ देश व काल की परिधियों का अतिक्रमण कर सदैव जनोपयोगी बनी रहती हैं। इस दृष्टि से विभास वर्मा का 'प्रेमाश्रम' पर केंद्रित आलेख विशेष महत्वपूर्ण है। इस उपन्यास में विभास वर्मा ने 1917 के चंपारण किसान आंदोलन और सन् 1921–22 के अवध के किसान आंदोलन की स्पष्ट अनुगूँज सुनी है। यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि वोल्शेविक क्रांति के उपरांत प्रेमचंद को किसानों की क्रांतिकारी शक्तियों के प्रति विश्वास सशक्त हुआ। उनका यह विश्वास उनकी परवर्ती रचनाओं में भी दृष्टिगत होता है। 'प्रेमाश्रम' की रचना कोई आकस्मिक घटना नहीं है। इस कालावधि में टी.एस. एलिसट का 'द वेस्ट लैंड' तथा जेम्स जॉयस के 'यूलिसिस' (1922 ई.) का प्रकाशन हुआ था। इस प्रकार यह कालखंड विश्व क्लासिक का कालखंड था जो आगामी युगों को अनवरत आलोकित करता रहा। आजादी के

अमृतउत्सव पर नए कोण से विचार करता हुआ अरुण चतुर्वेदी का आलेख उपलब्धियों के साथ–साथ अनुपलब्धियों पर भी विचार करता है, 1942 के विभाजन और 1991 के बावरी मस्जिद ध्वस्त कांड पर भी विचार करता है जिसने कभी एक ही देश के नागरिक रहे लोगों के बीच खाई के पाट को अधिक विस्तार दिया; उन बिंदुओं पर भी इस आलेख में विचार है जो उत्सव के बीच से विषाद को भी प्रसरित करता चलता है। प्रसिद्ध लेखिका फ्रैंचेस्का ओर्सीनी (SOAS लंदन से सेवानिवृत्त) व रविकांत के संयुक्त लेखन में 'हिंग्लिश लाइव मीडिया के आर–पार' भी इस अंक की महत्वपूर्ण सामग्री है। 'क्षणिक और अराजक स्थितियों के बीच शाश्वत या चिरस्थाई की अनवरत खोज' शीर्षक आलेख में संजय कुमार ने यूरोपियन संदर्भ में आधुनिकतावाद पर गंभीर विचार किया है। इस आलेख में आधुनिकवाद के संदर्भ में उठे अनेक विवादों एवं भ्रांत अवधारणाओं को भी स्पष्ट किया गया है और उसे (आधुनिकतावाद को) व्यापक संदर्भों में समझने की चेष्टा की गई है। रश्मि शर्मा (रिंगटोन), सविता पाठक (पापा के लिए चिट्ठी), कैलाश बनवासी (आयुष्मान् पूर्णिमा) और लोकबाबू (मुखविर मोहल्ले का प्रेम) की कहानियाँ इस अंक में प्रकाशित ऐसी कहानियाँ हैं जो अनुभव एवं संवेदना के नए संसार में प्रवेश के लिए आमंत्रित करती हैं। शंकरानंद, हिलाल अहमद, नरेश चंद्रकर और वीणा करमचंदाणी की कविताएँ विशेष रूप से पठनीय हैं। रामशरण जोशी का 'कामरेड दीदी' अरुणिमा दास से जुड़ा संस्मरण है जिसमें रामशरण जोशी और अरुणिमा दीदी ही नहीं पूरा परिवेश है। देश की राजनीतिक–सामाजिक परिस्थितियाँ हैं और उसे सामान्य जनता के हित में परिवर्तित करने की इच्छा और संघर्ष भी। इस अंक की महत्वपूर्ण सामग्रियों में यह भी परिगणित है। प्रभात रंजन का कमलेश्वर विषयक संस्मरण भी दिलचस्प है। शम्स तबरेज का अकबर (मध्यकालीन इतिहास) विषयक आलेख भी इतिहास के एक नए पक्ष को उजागर करता है जिधर सामान्यतः लोगों की दृष्टि नहीं जाती। शुभनीत कौशिक, सुधा चौधरी, माधव हाड़ा, मोहन कृष्ण बोहरा, संजय कुमार और इंदू कुमारी का आलेख भी महत्वपूर्ण है। विशेषकर 'नवजागरण की वैचारिक नियति' शीर्षक आलेख जिसमें कई महत्वपूर्ण तथ्य पहली बार अनावृत हुए हैं। रेनू त्रिपाठी, रीता सिन्हा, राजकुमार और रामेश्वर राय कृत समीक्षाएँ भी अच्छी हैं। कुल मिलकर यह अंक किसी विशेषांक की तरह संग्रहणीय है।

इसके अतिरिक्त 'बनास जन' के अंक–57 में कविवर त्रिलोचन का पुण्य–स्मरण है। त्रिलोचन की रचनाओं को समझने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। अंक–58 (बनास जन) लोकबाबू के 'बस्तर बस्तर' पर केंद्रित है। इस उपन्यास का मूल्यांकन क्रमशः नीरज, अमिय बिंदु, रेणु व्यास, प्रमोद मीणा, प्रियम अंकित, रमेशचंद्र मीणा, जयप्रकाश, रणेंद्र और ईश्वर सिंह दोस्त आदि ने अलग–अलग दृष्टिकोण से किया है। अपनी 'रचना प्रक्रिया' पर लोकबाबू का वक्तव्य विशेष महत्वपूर्ण हैं। 'बनास जन' का अंक–59 'कहानी और उपन्यास' से इतर रचनाओं की परिधि से आवृत्त है। अंक–60

(बनाज जन) में हाल ही में आये लगभग दो दर्जन नये कहानी संग्रहों पर समीक्षा है। कहानी के शिल्प एवं अंतर्वस्तु में जा रहे बदलाव तथा उस बदलाव की बारीकियों को समझने में यह अंक निश्चय ही सहायता प्रदान करेगा।

व्यंग्य–यात्रा

'व्यंग्य–यात्रा' का अंक–70 (जनवरी–मार्च, 2022) अपनी प्रभूत सामग्री के कारण हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। विगम 18 वर्षों से यह पत्रिका हिंदी व्यंग्य–लेखन का प्रतिनिधित्व कर रही है। इसके संपादक प्रेम जनमेजय स्वयं व्यंग्य–लेखन जगत में चर्चित हैं, अतएव सामग्री चयन एवं उसकी गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखते हैं। यह अंक 'कबीरी धार की कविता' पर विशेष है। वैयक्तिक हित–अहित की अपेक्षा वैश्विक हित को वरीयता देनेवाले लेखक ऐसे सभी दवाबों से मुक्त होते हैं जो सत्य की अभिव्यक्ति में बाधा उपस्थित करते हैं। शायद संपादक ने इसी व्यंजन–अंक को ध्यान में रखते हुए यह अंक प्रकाशित किया है। यह पठनीय अंक है।

पक्षधर

हिंदी की गंभीर लघु पत्रिकाओं में 'पक्षधर' का विशेष स्थान है। हिंदी में अंतोनियो ग्राम्शी की चर्चा गंभीर आलोचकों के बीच रही है। इस अंक के अतिथि संपादक विजय झा है जो विगत कुछ दिनों से ग्राम्शी के लेखक का गंभीर अध्ययन कर रहे हैं। यह अंक उनके कठिन परिश्रम का परिणाम है। यद्यपि यह अंक अंतोनियो ग्राम्शी पर केंद्रित है, फिर भी इसके द्वितीय खंड में इतर सामग्री है। ग्राम्शी का चिंतनशील व्यक्तित्व इटली के तानाशाह शासक मुसोलिनी को खटक रहा था। 1921 के अपने भाषण में मुसोलिनी ने यह कहा था कि ''सार्दिनिया से आया यह कुवड़ा और अर्थशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र का यह प्रोफेसर निस्संदेह तेज मस्तिष्क का स्वामी है (The Sardinian hunchback and Professor of economies and philosophy has an unghestionable powerful brain)।'' अतः ग्राम्शी से मुसेलिनी को क्रांति का भय उत्पन्न हो गया। 1920 में इटली में हुई मजदूरों की हड़ताल और मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर कब्जा किए जाने में ग्राम्शी भी संलिप्त थे। समाजवादी पार्टी ने हड़ताल के प्रति ढुलमुल रवैया अपनाया। परिणामतः मजदूरों को पीछे हटना पड़ा। 1922–24 के दौरान ग्राम्शी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में मास्को और वियना में रहे। यहीं ज्युलिया से मिलना हुआ। फिर प्रगाढ़ता बढ़ी और विवाह हुआ। ग्राम्शी इटली में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की हो रही गिरफ्तारी से व्यथित थे। कालांतर में ग्राम्शी को जेल–यातना झोलनी पड़ी और इसी दौरान उन्होंने 'प्रिजन नोटबुक' लिखी जो जन सामान्य के लिए 1948 के आसपास उपलब्ध हो पायी। इस अंक में ग्राम्शी के जीवन संघर्ष, चिंतन, उस चिंतन की वर्तमान प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा है।

जैसा कि विदित है इसके संपादक विनोद तिवारी हैं और इस महत्वाकांक्षी अंक

का संपादन विजय झा ने किया है। अतः इसमें दो संपादकीय हैं। प्रारंभ में संक्षेप में ग्राम्शी का जीवन–परिचय है जो अंतोनियों ग्राम्शी की जीवनी से लिया गया है। इसके उपरांत अंतोनियों ग्राम्शी जूनियर जो अंतोनियों ग्राम्शी के पुत्र ज्युलिआनों के पुत्र हैं, का आलेख है। इसके अनुवादक हैं प्रख्यात चिंतन सुभाष गताड़े। इस आलेख से अंतोनियो ग्राम्शी के जीवन के अनेक पक्ष पहली बार हिंदी में अनावरित हुए हैं। सुभाष गताड़े स्वयं बड़े चिंतक हैं; अतः उनके चयन और अनुवाद में मूल की अवतारणा असंदिग्ध रूप से संभव हुई है। इसके उपरांत 'ग्राम्शी' शीर्षक से विश्वविख्यात इतिहासकार एरिक हॉब्सबॉम का आलेख है जिसमें उन्होंने ग्राम्शी का विस्तृत फलक पर अध्ययन किया है। इसके अनुवादक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रख्यात प्रोफेसर रामकीर्ति शुक्ल हैं। प्रो. शुक्ल एरिक हॉब्सबॉम के गहरे अध्येता हैं एवं उनके निबंधों का अनुवाद भी किया है जो 'नई किताब' प्रकाशन शाहदरा, दिल्ली से पुस्तकाकार प्रकाशित है। 'विचार–दृष्टि' शीर्षक से इस खंड में प्रख्यात चिंतक, एजाज अहमद का आलेख है–''फांसीवाद और राष्ट्रीय संस्कृति'। यह आलेख भी इस अंक में एक उपलब्धि की तरह है। इसके अनुवादक प्रियदर्शन हैं। ग्राम्शी के राजनीतिक शिक्षा–दृष्टि को विश्लेषित करनेवाला आलेख मनोज कुमार का है। 'सहज बोध', आलोचनात्मक विवेक और परिवर्तनगामी राजनीति की शिक्षा : ग्राम्शी के राजनीतिक चिंतन व कर्म का शिक्षाशास्त्रीय विश्लेषण शीर्षक आलेख में उन्होंने शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने के तथ्य को उजागर किया है। शिक्षा का उद्देश्य आलोचनात्मक चिंतन शक्ति का विकास एवं रोजगारपरक होना चाहिए, केवल पारंपरिक ढंग से किताब के कुछ पृष्ठों को स्मृतिपटल पर अंकित करना नहीं। तकनीकी विकास एवं बदलते आर्थिक परिवेश को दृष्टिपथ में रखते हुए शिक्षा की नीतियाँ तय होनी चाहिए। ग्राम्शी का समय आधारभूत सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन का दौर था। 1917 की वोल्शेविक क्रांति के दौर में ग्राम्शी इटली के वामपंथी आंदोलनों में सक्रिय थे। वे सामाजिक राजनीतिक नीतियों एवं परिस्थितियों में परिवर्तन चाहते थे। अपने कारावास के दौरान शिक्षा के प्रश्नों पर गंभीरता से विचार किया। ग्राम्शी ने शिक्षा को मातृभाषा में दिए जाने पर बल दिया। कम–से–कम प्रारंभिक शिक्षा के लिए इसकी अनिवार्यता लगभग सभी स्वीकारते हैं। 'ग्राम्शी की सोच–विचार' शीर्षक गोपाल प्रधान का आलेख भी इस अंक का महत्वपूर्ण आलेख है। 'नव उदारवादी विश्वविद्यालयों में श्रम का वर्ग–विभाजन : पारंपरिक बुद्धिजीवन से आंगिक बुद्धिजीवन की ओर?' शीर्षक आलेख संजय कुमार के गंभीर अध्ययन का परिणाम है। अपने आलेख में उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि ग्राम्शी के समय में उच्चशिक्षा संस्थानों तक समाज के प्रभुत्वशाली वर्गों की पहुँच तक ही सीमित थी, ग्राम्शी ने इस विषय पर गंभीरता से विचार किया है। शुभनीय कौशिक ने अपने आलेख में अंतोनियो ग्राम्शी की इतिहास दृष्टि पर विचार किया है। भारत और ग्राम्शी के वैचारिक दृष्टि की चर्चा अकसर की

जाती है, विशेषकर डॉ. भीमराव अम्बेडकर की वैचारिकता से उन्हें जोड़कर देखा जाता है। इस विषय पर हिलाल अहमद और विनोद शाही के आलेख विशेष अवलोकनीय है। अंत में ग्राम्शी के महत्वपूर्ण पत्रों व ग्राम्शी से संबंधित पुस्तकों की बृहद् सूची दी गई है। द्वितीय खंड में प्रख्यातः कवयित्री कात्यायनी की 10 कविताएँ व कात्यायनी के कविता–कर्म पर सविता सिंह का आलेख है जो कात्यायनी की कविताओं के मर्म तक पहुँचने में सहायक है। प्रख्यात चिंतक नंदकिशोर आचार्य का 'गांधी के साथ होने के मायने' शीर्षक व्याख्यान भी इस अंक का आकर्षण बिंदु है। 'कामायनी' पर रोहिणी अग्रवाल का (कामायनी : जातीय अस्मिता की तलाश में मनुष्य की अवधारणा और वैचारिक प्रतिबद्धता का टकराव) आलेख एवं क्लासिक रचना को नये ढंग से विश्लेषित करने का उपक्रम है। नवजागरण से संदर्भित कर स्त्री प्रश्न को विश्लेषित करने की चेष्टा सुरेश कुमार की व्यापक दृष्टि का परिचायक है। महेश वर्मा एवं लीला मल्होत्रा की कविताओं के अतिरिक्त उपन्यास अंश 'इट्स अर्जेंट' (उस्मान खान) भी महत्वपूर्ण है। राकेश दूबे (चंदू भाई जिंदा हैं) और हर्षवाला शर्मा (माइग्रेट मजदूरों की बीबी और सपनों पर ब्रेक) के अतिरिक्त मधु कांकरिया का 'यहाँ भी वहाँ भी : ढाका डायरी' पठनीय सामग्री है। अंत में पी. रवि, अजय वर्मा, पीयूष कुमार और रामायन राम कृत पुस्तक समीक्षा है। कुल मिलाकर यह एक संग्रहणीय अंक है।

सत्राची

कदमकुआँ, पटना से प्रकाशित मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की पत्रिका 'सत्राची' ने भी कई महत्वपूर्ण अंक प्रकाशित किए हैं। जनवरी–जून, 2022 का संयुक्तांक–34–35 अपनी सामग्री की गुणवत्ता के कारण हमारा ध्यान बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है। संपादकीय के उपरांत 'प्रतिरोध की नई सैद्धांतिकी का उभरता खाका' शीर्षक गोपाल प्रधान के आलेख से पत्रिका में प्रवेश से पत्रिका के गांभीर्य का अनुमाद हो जाता है, इस आलेख में पश्चिमी लेखकों की कई महत्वपूर्ण ग्रंथों के बहाने सैद्धांतिकी की नई संभावनाओं पर विचार किया गया है। यह आलेख सामान्य बुद्धिजीवियों के लिए जितना आकर्षण है, गंभीर शोधार्थियों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। 'क्या है लोकधर्म' शीर्षक आलेख में दिनकर सिंह ने 'लोकधर्म' को व्यापक फलक पर विश्लेषित किया है। महादेवी वर्मा पर आशुतोष पार्थेश्वर का आलेख 'महादेवी की कविताओं के अलग–अलग पाठ' महादेवी की कविताओं का नवीन दृष्टिकोण से मूल्यांकन है। 'बागे–ए–दिल' व 'हिंदनामा' पर कमलेश वर्मा और अंबापाली व 'शहर से दस किलोमीटर' पर कमलानंद झा की समीक्षा विशेष पठनीय है। सन् 2022 के जुलाई–सितंबर अंक भी अपनी सामग्री के कारण ध्यातव्य है। 'जल, जंगल, जमीन और सुंदरलाल बहुगुणा' शीर्षक आलेख (रमेशचंद्र सोनी) विशेष द्रष्टव्य है। प्रेमचंद की कहानियों पर 'प्रेमचंद की कहानियों के हिंदी–उर्दू पाठ की समानता' पर आशुतोष पार्थेश्वर का आलेख और 'बस्तर–बस्तर' (लोकबाबू) पर बलिराज पांडेय

का आलेख अधिक मर्मस्पर्शी है। अक्तूबर–दिसंबर, 2022 के अंक में 'समय के सफरनामे से होता दस्तावेजीकरण' प्रमोद मीणा का आलेख अत्यधिक महत्वपूर्ण है। 'नंदकिशोर नवल की आलोचना–दृष्टि (सुशांत कुमार) और देवेंद्र आर्य की कविताएँ इस अंक का आकर्षण बिंदु है।

कथादेश

हिंदी लघु पत्रिकाओं में 'कथादेश' की अपनी विशिष्ट पहचान है। फरवरी 2022 का अंक 'हिंदी कहानी में नवोन्मेष' पर विशेष है। मिथिलेश प्रियदर्शी (साहिया), श्रीधर करुणानिधि (सेंध) और विवेक असरी (बेकार के लोगों की कहानी) की कहानियाँ हमारी संवेदना के पाट को विस्तार देती हैं। 'साहिया' कहानी पर प्रख्यात कथाकार योगेंद्र आहूजा की टिप्पणी कहानी से कम महत्वपूर्ण नहीं जान पड़ती है। उनकी यह टिप्पणी इस कहानी में ऐसे–ऐसे कर्मों का उद्घाटन करती है जो कहानी को सावधानी से पढ़ने का आग्रह करती है। कहानी लिखते समय जितनी सावधानी लेखक को बरतनी पड़ती है, कुछ उसी तरह की सावधानी की माँग कहानी पाठक से भी करती है। इसी प्रकार 'सेंध' कहानी (श्रीधर करुणानिधि) पर रामकुमार तिवारी की टिप्पणी महत्वपूर्ण है। उनका मानना है कि यह कहानी हमें हमारे समय के आतंरिक और बाह्य यानी वास्तविक यथार्थ के साथ सभ्यता के संकटों से भी साक्षात्कार कराती है और हिंदी कहानी के भविष्य के प्रति आश्वस्त भी करती है। इस कहानी की भाषा में एक ऐसा नैतिक आवेग है कि सारे झूठ और ओट, जिसे आज के मनुष्य ने भाषा से ही अपनी कमजोरियों को झुपाने के लिए अपनी सुविधा से गढ़े हैं–वे ध्वस्त हो जाते हैं और हमारा होना जो हम हैं या जो हम होना चाहते हैं, उभरकर सामने आ जाता है। इसी प्रकार 'बेकार लोगों की कहानी' पर ओमा शर्मा की टिप्पणी विशेष महत्वपूर्ण है। माधव राठौड़ की कहानी पर प्रख्यात कथा–आलोचक जय प्रकाश की टिप्पणियाँ कहानी की संवेदना से साक्षात्कार कराती हैं। कितरेत्सू, बूटा व गोरिल्ला और टोंगारी को जय प्रकाश ने पाल गोमरा के बाद की पीढ़ी की कहानी बताई है। यह ग्राम्यलोक के परिवेश से मायालोक में पहुँचने की एक कितरेत्सु की कहानी नहीं है जहाँ पहुँचने की चेष्टा में अथवा पहुँचकर व्यक्ति लहूलुहान होकर बेदखल हो जाता है। जय प्रकाश के शब्दों में 'अब सवाल यह है कि जिस मायालोक का वह शिकार है, वह आखिर है क्या? दरअसल ग्राम्यलोक जहाँ से वह आया है, शताब्दियों के मानवीय अनुभव से निर्मित और परंपराओं से रक्षाकवच से संरक्षित एक ठहरा हुआ; लेकिन स्पंदित स्पेस है जहाँ मनुष्य इतिहास और स्मृतियों की घनी छाया में जीता है; लेकिन मायालोक का न तो इतिहास है, न समृति। वह ज्वलंत वर्तमान और झिलमिल भविष्य की सतह पर अंधड़ के समान आकर आत्मगौरव से चूर कृत्या की तरह अट्ठहास करता बृहत्काय यथार्थ है। ग्राम्यलोक जो सैकड़ों वर्षों से बना हुआ है, वहीं मायालोक की उम्र कुछ ही दशक है; लेकिन उसने जो जगर–मगर पैदा किया है उसके मोहपाश से लोग बरबस खिंचे चले जा रहे हैं।'

'बांगलादेश : तीसरी आजादी के इंतजार में'...शीर्षक लेख बांगलादेश की आंतरिक स्थिति, बहुला भाषा के प्रभाव, बौद्ध और इस्लाम संस्कृतियों का अद्भुत समन्वय है। इस लेख में जितेंद्र भाटिया ने यह बताया है कि "बांग्लादेश का दूसरी आजादी का युद्ध एक तरह से आयातित उर्दू और स्थानीय बांग्ला के बीच का संघर्ष था जो 1947 की आजादी के पहले दिन से ही शुरू हो गया था। शायद दुनिया के इतिहास में पहली बार कोई देश धर्म की जगह भाषा के आधार पर विभाजित होने वाला था।"

दलित साहित्य के आलोचकों में बजरंग बिहारी तिवारी की पहचान अलग तरह के आलोचकों में है। एक ओर संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रंथों से शाणित उनकी भाषिक क्षमता एवं संवेदनात्मक विस्तार है तो दूसरी ओर देश के कोने–कोने में रहनेवाले दलित, उत्पीड़ित एवं हाशिए पर डाल दिए गए लोगों से उनका गहरा लगाव है; अतः उनकी पीड़ा एवं सदियों के दंश को भी उन्होंने गहरे तक अनुभव किया है। दलित कवियों में अपनी अलग संवेदना के कारण चर्चित कवि मदन वीरा की कविता–संसार का मार्मिक विश्लेषण इस अंक के आकर्षण बिंदुओं में एक है। इस अंक में मदन वीरा की कविताओं के साथ–साथ अपनी सृजन प्रक्रिया पर मदन वीरा का आलेख भी है।

मार्च–अप्रैल–2022 अंक–1 'स्त्री–लेखन' को निवेदित है। इस अंक के अतिथि संपादक यादवेंद्र हैं। 'विरासत' के अंतर्गत सुभद्राकुमारी चौहान की 'कदंब के फूल' कहानी को प्रकाशित किया है। उनकी कविताएँ अधिक प्रचलन में होने के कारण कहानीकार का व्यक्तित्व दब–सा गया, किंतु उनकी कहानियाँ उस दौर के महत्वपूर्ण कथाकारों की कहानियों से टक्कर लेती हैं। इस अंक में तारन गुजराल (सुल्फे की लौ), वितीता परमार (विसर्जन), रचना त्यागी (मखमली कलीनां विच किरकिरी) और जूरी बरुआ (भूतपूर्व) की कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। सुलोचना बर्मा की 'विनोदिनी दासी' और गरिमा श्रीवास्तव का 'आउशवित्ज : एक प्रेम कथा' शीर्षक उपन्यास अंश भी इस अंक की उपलब्धि है। 'आउशवित्ज : एक प्रेम कथा' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से पुस्तकाकार प्रकाशित होकर चर्चित उपन्यास रहा। गीतकार शैलेंद्र पर उनकी पुत्री अलमा शैलेंद्र द्वारा लिखी जा रही पुस्तक का अंश 'याद न जाये बीते दिनों की' इस अंक की रोचक सामग्री है। प्रख्यात संगीतकार अन्नपूर्णा देवी पर स्वपन कुमार बंद्योपाध्याय द्वारा लिखित पुस्तक का अंश भारतीय संगीत की एक महती विभूति से हमारा परिचय कराती हैं। 'बीस माँओं की बेटी' के माध्यम से जमुना बीनी ने पूर्वोत्तर के अरुणाचल प्रदेश के जनजीवन से परिचय कराया है। वे अरुणाचली समाज की धमक लाने वाली हिंदी–जगत की महत्वपूर्ण कथाकार हैं। इस अंक में अनामिका व प्रवासिनी महाकुड़ (ओडिया) की कविताएँ इस अंक को महत्वपूर्ण बनाती हैं। तसलीमा नसरीन पर कल्लोल चक्रवर्ती का संस्मरण भी दिलचस्प है। तसलीमा नसरीन की

कविताओं का कल्लोल चक्रवर्ती द्वारा किया गया अनुवाद भी इस अंक का आकर्षण है। कल्लोल चक्रवर्ती स्वयं कवि हैं, अतः अनुवाद में कविता के मर्म को आहत होने से बचाया है। हिंदी कविता के नयी पीढ़ी की कवयित्रियों में अनुराधा सिंह की ऊर्जा श्लाघनीय है। उनकी कविताएँ भी इस अंक में प्रकाशित हैं। कल्पना दुधाल मराठी, अराम्बम ओंकी मणिपुर, इरोम शर्मिला मणिपुर, पेरुणदेवी तमिल, पारुल खक्खर गुजराती और सीमा शफक की नज्में भी महत्वपूर्ण सामग्री हैं। प्रख्यात अर्थशास्त्री प्रो. बीना अग्रवाल 'सारे फूल आखिर कहाँ गुम हो गए'?, गीता गैरोला 'ये कहानी हो ही नहीं सकती', आर्या झा 'बौना', लघुकथा आदि का लेखन भी रोचक है। 'बांग्ला की स्त्री' आत्मकथाएँ गीता दूबे, 'काहे को व्याहे विदेस' बिपिन चौधरी आदि वैचारिक लेखन से यह अंक और अधिक समृद्ध हुआ है। चीनी कहानी 'मोबाइल बेचने वाली' शेंग केई व ली रुओ चीनी की कविताएँ स्त्री–जीवन की अनेक संवेदनाओं से परिचय कराती है। सुषमा नैथाली का यात्रा–संस्मरण 'कोविड–19 से पहले का वूहान', से रिंग वंग्मो धोम्या 'माँ', संस्मरण खालिल हुसैन 'जवाल पसंद औरत' के अतिरिक्त शहीद जननी जहाँआरा इमाम का '71 के वे दिन' उपन्यास अंश भी इस अंक की महत्वपूर्ण सामग्रियों में है। प्रशांत विप्लवी का 'सवैया हौसैन : महिला प्रतिरोध की मुखर स्वर' (साक्षात्कार अंश) और श्रद्धा श्रीवास्तव कृत 'शिरीष को फूल' समीक्षा पठनीय सामग्री है। कुल मिलाकर यह अंक समकालीन स्त्री–लेखन के विस्तृत परिदृश्य से अवगत कराता है। इस पत्रिका का एक अंक प्रसिद्ध कथाकार एवं चित्रकार प्रभुजोशी पर केंद्रित है। इस अंक के अतिथि संपादक हैं ओमा शर्मा। 04.05.2021 को कोरोना के चपेट में आने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। प्रभु जोशी की प्रथम कहानी 1973 में 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुई थी। उसके उपरांत 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' और 'सारिका' में निरंतर कहानियाँ प्रकाशित होती रहीं। 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 'पितृऋण', 'दस कहानियाँ', उनके कहानियों के मुख्य संकलन हैं। 'नान्या' नामक उपन्यास भी राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। संपादकीय के उपरांत हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवि अनूप सेठी के साथ उनका साक्षात्कार है। चित्रकला और कहानी के प्रश्न पर प्रभु जोशी कहते हैं कि ''चित्रकला और कहानी यानी कुल मिलाकर शब्द...और रंग, लेकिन चित्रकला में एक और विवाद है। यहाँ शब्द है, वहाँ रंग और रेखा है। कई बार यदि आप केवल रंग रूप दें, तो 'कला इटसेल्फ इज अ मेटाफर' रंग का रूपक है, दूसरे रंग के भीतर स्पेश क्रिएटिंग प्रोपर्टी होती है। वह अपने व्यवहार से एक ऐसा अवकाश बना सकता है जो केवल एक शब्द नहीं बना पाता।'' इस महत्वपूर्ण साक्षात्कार में प्रभु जोशी की कहानियों, उपन्यास और चित्रकला के कई रहस्य ही नहीं उद्घाटित होते, वरन कथा और चित्रकला जगत की कई गुत्थियाँ सुलझी हैं और उनके सृजनशील व्यक्तित्व का पूरा प्रतिबिंब मूर्तमान हो उठता है। इस अंक में प्रभु जोशी की कहानियों, संस्मरणों एवं टिप्पणियों में से कुछ चयनित सामग्री दी गई है जिसमें उनकी 'पितृऋण', 'बर्दाश्त के बाहर', 'धूल और धूल

जैसी कहानियाँ' और 'रेत ज्यों तन रहा गया हैं' 'चंद्रकांत देवताले' जैसे संस्मरण तथा नैतिकता के बोझ से बाहर आती भाषा' जैसी टिप्पणियाँ हैं। उनके समकालीनों ने उन्हें आत्मीयता से याद किया है। समकालीनों के आकलन संस्मरण के अंतर्गत ज्ञान चतुर्वेदी 'कोरोना से बचा लिया उसे', अशोक मिश्र 'प्रभुदा में कुछ मैं, मुझमें बहुत कुछ प्रभुदा', प्रकाश कांत 'प्रभु जोशी', लीलाधर मंडलोई 'गहरी नीली उदासी का आलम : प्रभु का जाना' और कैलश मंडलेकर 'प्रभुदा को याद करते हुए' आदि के संस्मरण प्रभु जोशी और समकालीन साहित्य एवं कला जगत के परिवेश का प्रमाणित बिंबन करते हैं। 'कथाकार–कलाकार प्रभु जोशी : अवलोकन और स्मरण' ओमा शर्मा का विशेष आलेख इस अंक का विशेष आकर्षण है। ईश्वर रावल 'प्रभु जोशी की कला–यात्रा', सफदर शामी 'भाषा और रंग दोनों का चितेरा कलाकार', पुनर्वसु जोशी 'जहाँ बहते हुए रंग ही तय करते हैं कृति का होना', जयशंकर 'एक लेखक का होना, न होना', डॉ. कला जोशी 'बालमन का चितेरा : प्रभु जोशी' आदि के आलेख प्रभु जोशी के लेखक और चित्रकार व्यक्तित्व का अलग–अलग दृष्टियों से गंभीर मूल्यांकन करते हैं। प्रभु जोशी के अतिरिक्त मैनेजर पांडेय पर रविभूषण 'मैनेजर पांडेय टोटल मार्क्सवादी आलोचक थे' और श्रीधरम 'मैनेजर पांडेय : सांच की आँच में तपने और तपाने वाले आलोचक' का आलेख अलग से रेखांकित किया जाना चाहिए।

देशधारा

'देशधारा' हिंदी में प्रकाशित नयी पत्रिकाओं में महत्वपूर्ण नाम है। भरत प्रसाद के संपादन में यह पत्रिका मार्य, 2022 में शुरू हुई। जिसमें सुनील कुमार साव व आलोक सिंह की भूमिका उपसंपादक के रूप में निर्दिष्ट हैं। यह वार्षिक पत्रिका है, अतः सामग्री संचयन एवं अन्य योजनाओं को कार्य रूप देने में एक लंबा समय मिल जाता है। यद्यपि यह प्रवेशांक है; किंतु महत्वपूर्ण सामग्री से पूरित है। संपादकीय के उपरांत 'ऊहापोह' (तसलीमा नसरीन की आत्मकथा खंड–2 का अंश) शामिल है। 'जनपथ के संपादक अनंत कुमार सिंह का आत्मवृत 'सृजन–यात्रा के यादगार पड़ाव' न केवल अपनी साहित्यिक–यात्रा का परिचायक है वरन तत्कालीन परिवेश को मूर्तमान करता है। इसी कारण संपादक सुभाष राम के 'खतरों में ही जन्म लेते हैं सपने' जीवन की चुनौतियों को स्वीकारने की प्रेरणा देनेवाला आत्मवृत्त है। इस आत्मवृत्त में ली गई अधिकांश सामग्री पूर्व प्रकाशित हैं जो थोड़ा खटकता भी है। द्वितीय खंड मूल्यांकन का है जिसमें 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्यदर्शन' (मैनेजर पांडेय), भाषा की ज्ञान–'मीमांसा (विनोद शाही), चंद्रकांत देवताले की कविताओं में जनपक्षधरता (सेवाराम त्रिपाठी), मुक्ति आंदोलन की पारस्परिकता–वाम, दलित संदर्भ (बजरंग बिहारी तिवारी), साहित्य में सामाजिक चेतना और मार्क्स (सुशील कुमार) आदि का विश्लेषण है। इनमें से अधिकांश आलेख पूर्व प्रकाशित हैं। संपादक ने शायद पत्रिका के स्वरूप को आकार देने की दृष्टि से ऐसा किया है; किंतु यह खटकता है। इसी प्रकार गद्यांतर के अंतर्गत

'एक कवि की नोटबुक' राजेश जोशी, 'डायरी में आलोचना' राजेंद्र कुमार, 'मसाईमारा के जंगल' शिवमूर्ति व 'माँ, पिता और मैं' दिवाकर मुक्तिबोध आदि सामग्री भी पूर्व प्रकाशित हैं। इस पत्रिका में महत्वपूर्ण बात सामग्री का संयोजन एवं प्रस्तुतिकरण है जो आगामी अंकों का आभास देती है। विजय शर्मा का 'महाभारत और सिनेमा' के अतिरिक्त 'पश्चिमी बंगाल के युवा कवि' मीता दास और 'समकालीन गुजराती कवि' कुशल मेहता की कविताओं का प्रस्तुतिकरण भी श्लाघनीय है। पूर्वोत्तर के रचनाकारों में जमुना बीनी (अरुणाचली जनभाषाओं के कवि), तुनुंग गबिंग 'अरुणाचल के युवा कवि' के लेख भी इस अंक को पठनीय बनाते हैं। कथा के अंतर्गत कृष्ण बिहारी 'कीमा', राकेश कुमार सिंह 'दो कौड़ी का आदमी', गीता श्री 'मुखौटा' और कैलाश बनवासी 'हवा बहुत तेज है' की कहानियाँ पत्रिका के सर्जनात्मक साहित्य के प्रति सकारात्मक रूख को प्रकट करती हैं, लीलाधर जगूड़ी, हरीशचंद्र पांडेय, ए. अरविंदाक्षन, शैलेय, संतोष चतुर्वेदी, आशीष त्रिपाठी, कमलजीत चौधरी, स्मिता सिंहा, यतीश कुमार, विहाग वैभव, मिथिलेश कुमार राय, अनुपम सिंह आदि की कविताएँ इस अंक की उपलब्धि हैं। अंत में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों की समीक्षा हैं। कुल मिलाकर अंक पठनीय है और भविष्य के प्रति आश्वस्त करता है।

समकालीन भारतीय साहित्य

समकालीन भारतीय साहित्य का अंक 219 जनवरी–फरवरी, 2022 समृद्ध अंक है। 'टोनी मॉरसिन का प्रेम' शीर्षक आलेख में विजय शर्मा ने टोनी मॉरसिन के 'लव' उपन्यास के बहाने उनकी साहित्य–दृष्टि एवं शिल्प का विश्लेषण किया है। अमृतलाल नागर पर दीप्ति गुप्ता का संस्मरण इस अंक के प्रति आकर्षण उत्पन्न करता है। सीताकांत महापात्र (ओडिया), प्रियदर्शन, केशव, अरुण आदित्य, उपेंद्र कुमार की कविताएँ भी आँखों को टिकने पर विवश करती हैं। कुल मिलाकर यह संग्रहणीय अंक है।

यथार्थ

'यथार्थ' मजदूर एवं हाशिए के समाज के स्वरों को बल प्रदान करने वाला निजी व जन सहयोग से निकलने वाली पत्रिका है। इसके लगभग सभी अंक पूरी तैयारी एवं स्तरीय सामग्री से युक्त रहते हैं। अप्रैल–मई, 2022 के संयुक्तांक संपादकीय में लिखा है कि 'मंहगाई की असली वजह कॉर्पोरेट मुनाफाखोरी हैं। इसमें राजसत्ता के दिखावे को बेनकाब करते हुए तार्किक एवं वैज्ञानिक ढंग से वस्तु स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। इस अंक में 'मई दिवस व मौजूदा संदर्भ में मजदूर वर्ग का ऐतिहासिक मिशन' शीर्षक आलेख में मजदूरों के उन्नयन के प्रश्न पर न केवल गंभीर विचार किया गया है, वरन एक कार्य योजना भी प्रस्तुत की गई है। सामाजिक–राजनीतिक विषयों पर एम. असीम की टिप्पणियाँ एवं विचार गंभीर माने जाते हैं। श्रीलंका संकट पर 'श्रीलंका संकट : पूँजीवाद का संकट जो इसके उन्मूलन से ही मिटेगा' शीर्षक आलेख में विस्तार

एवं गंभीरता से विचार किया गया है। संकट का तात्कालिक घटनाक्रम, जनजीवन पर उसके प्रभाव, संकट के तात्कालिक कारण व राजनीतिक पहलू व संभावनाओं पर तार्किक एवं कारगर तरीके से बात की गई है। सफाईकर्मी मजदूरों की समस्या को संजय चौधरी ने अमीरों द्वारा फैलाई गई गंदगी को साफ करते और मरते सफाईकर्मीः मूकदर्शक सरकार और हृदयहीन समाज' शीर्षक आलेख में प्रभावशाली ढंग से उठाया है। जहाँ सरकारी तंत्र की विफलता को रेखांकित किया गया है वहीं सामाजिक दायित्वों से मुकरते समाज को भी उन्होंने इस विश्लेषण के जद में लिया है। 'बाहरी और मूलवासी का द्वंद्व' (शैलेंद्र चौहान) इस अंक के महत्वपूर्ण आलेखों में से एक हैं। कविता एवं गज़ल की उपस्थिति (जय चक्रवर्ती व डॉ. सुनील पवार) ने इस पत्रिका को शुष्क एवं केवल सामाजिक–राजनीतिक विमर्श की पत्रिका होने से बचा लिया है। सृजनात्मक लेखन के प्रति भी पत्रिका का सकारात्मक भाव है।

'यथार्थ' का अंक–6, अक्टूबर 2022 देश की आर्थिक, सामाजिक का राजनीतिक संकट के गहराते स्वरूप को विशेष रूप से रेखांकित करता है। संपादक ने संपादकीय की शुरूआत ही इन संकटों के विश्लेषण से किया है। सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन की एक स्पष्ट रूपरेखा संपादक ने प्रस्तुत की है। सहमति–असहमति के प्रश्न को यदि गौण कर दिया जाए, तो संपादक के तर्क अवश्य सशक्त है। प्रख्यात उपन्यासकार जॉन रीड 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' के लेखक की जीवनी प्रगतिशील साहित्य में अभिरुचि रखने वाले पाठकों के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। एलवर्ट बिलियम्स ने जॉन रीड के अनेक अल्पचर्चित, अचर्चित एवं अपरिचित पक्षों को उभारा है। इसी अंक में एम. असीम का 'हिजाब विरोधी आंदोलन' पर केंद्रित 'इरानी कट्टरपंथ व पूँजीवाद दोनों 'जान, जिंदगी, आजादी के दुश्मन' शीर्षक है जो विशेष रूप से पठनीय है। फ्रेडेरिक एंगेल्स का 'द्वंद्ववाद : निषेध का निषेध' अत्यंत महत्वपूर्ण सामग्री है। एम. असीम का आलेख 'भारत में गरीबी के आकड़ों की दरिद्रता' भारत में बढ़ती गरीबी को गहराई से विश्लेषित करता है। यह अंक भी अपने लघु आकर के बावजूद अत्यन्त संग्रहणीय है। 'यथार्थ' का अंक 7, नवंबर, 2022 का केंद्रीय भाव अनूपमणि त्रिपाठी की कविता 'लाश की मौत' है। इस अंक के संपादकीय में संपादक ने मोरवी हादसे को केंद्र में रखा है। संपादकीय का शीर्षक दिया है–'गोरवी–मुनाफे के लिए सामूहिक हत्या।' इसमें 30 अक्तूबर को गुजरात में हुई मोरवी दुर्घटना का विस्तार से विश्लेषण किया है। मोरवी में पुल के गिरने से लगभग 150 लोग मर गए एवं 180 के लगभग घायल हुए और कुछ का तो अभी तक कोई पता नहीं चला। एक ओर घरों में मातम था और दूसरी राजसत्ता चुनावी प्रचार–प्रसार की ओर उन्मुख थी। 19वीं सदी में बने इस पुल को इंजीनियरों ने 2007 में ही असुरक्षित घोषित कर दिया था, किंतु सरकार की ओर से उधर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यही नहीं इस मृत घोषित पुल को घड़ी बनाने वाली एक कंपनी 'ओरेवा' को सौंपा दिया गया जहाँ उसने 'पिकनिक स्पॉट' बनाकर मुनाफा कमाता

रहा। शर्त में यह कहा गया था कि कंपनी पुल की मरम्मत कराएगी, किंतु जब पुल का मूल ढाँचा ही मृत घोषित कर दिया गया था, तो मरम्मत के बल पर उसे कब तक टाला जा सकता था। मरम्मत के बल पर ये कंपनी 15 वर्षों तक मुनाफा कमाती रही। संपादकीय में इस विषय में विस्तार से लिखा गया है। संपादकीय–2 में 'मजदूर अधिकार संघर्ष अभियान' की बढ़ती शक्तियों एवं निर्णायक संघर्ष की ओर उसके बढ़ते कदम को विश्लेषित किया गया है। इस अंक में वोल्शेविक क्रांति के पक्षधर व नायक लेनिन पर विशेष सामग्री दी गई है। 'यथार्थ' के दिसंबर, 2022 अंक–8 में किसान, समस्या पर विस्तार से चर्चा की गई है। किसानों की बद से बदतर होती दशा का इस अंक में विशेष रूप से विश्लेषण किया गया है। 'एमएसपी गारंटी से खरीद गारंटी तक की यात्रा : इसके निहितार्थ पर एक और बहस की आवश्यकता' शीर्षक अपने आलेख में अजय सिंह ने एक वर्ष से भी अधिक चले किसान आंदोलन एवं किसान हित के पक्ष पर विस्तार से बात की है। साथ ही साथ कृषि कानून (तीन काले कानून जिसके विरुद्ध आंदोलन चला था) की वापसी के राजनीतिक पैंतरे को भी उन्होंने स्पष्ट किया है। इसी बिंदु पर उनका एक और आलेख 'वापस लिए गए कृषि कानूनों को चोर दरवाजे से लाने की कोशिश हो रही है। 'फीका विश्व कप 2022 लाखों मजदूरों के शोषण के तांडव एवं हजारों की लाखों के अंबार पर आयोजित हुआ यह मुनाफे का खेल' शीर्षक आलेख में सरकार की नीतियों का विस्तार से गंभीर विश्लेषण किया है। स्तालिन फिर चर्चा में हैं। साम्यवादियों में स्तालिन की छवि मार्क्स और लेनिन से भिन्न है। उनके अवदानों पर अजय सिंहा ने 'आज का युवा वर्ग और स्तालिन की विरासत' शीर्षक आलेख पर तार्किक ढंग से विस्तार से बात की है। कुल मिलाकर इस पत्रिका की सामाजिक उपयोगिता असंदिग्ध है।

समकालीन त्रिवेणी

समकालीन त्रिवेणी, 2022 का अंक–5 'बलिया' (उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक शहर) पर केंद्रित किया है। इस अंक में 'बलिया' के इतिहास, उसके राजनीतिक–सांस्कृतिक अवदानों, आजादी की लड़ाई में भूमिका, विशेषकर 1942 के आंदोलन में बलिया की भूमिका एवं यहाँ की अध्यात्मिक परंपरा पर विस्तार से चर्चा है। 'बलिया' की धरती पर जन्में विभूतियों (मंगल पांडेय, चित्तू पांडेय, जयप्रकाश नारायण, मुरली मनोहर श्रीवास्तव, अयोध्या प्रसाद खत्री, भगवतशरण उपाध्याय, गणेश प्रसाद, बलदेव उपाध्याय, कृष्णदेव उपाध्याय, परशुराम चतुर्वेदी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामसिंहासन सहाय 'मधुर', विश्वनाथ प्रसाद मरदाना, भैरवप्रसाद गुप्त, अमरकांत, केदारनाथ सिंह, चंद्रशेखर) पर इस अंक में चर्चा हुई है; किंतु महामहोपाध्याय रघुनाथ शर्मा, कपिलदेव सिंह, गुलाम गौस, उमाशंकर बलियाटिक जैसे कई महत्वपूर्ण नाम इस अंक में उल्लिखित होने से वंचित रह गए हैं। कुल मिलाकर यह अंक पठनीय है।

बया

यद्यपि 'बया' का जनवरी–जून, 2022, अंक–46 सामान्य अंक है; किंतु अपनी विपुल सामग्री के कारण आकर्षण बन पड़ा है। संपादकीय (सिनेमा का बदलता स्वरूप और ओटीटी प्लेटफॉर्म) में सिनेमा के इस नये माध्यम में अपार संभावनाओं को इंगित किया है। एकांत श्रीवास्तव के कविताओं की बाद 'फिल्मों की नैतिका के नए सवाल' पर हेतु भारद्वाज का आलेख है जिसमें उन्होंने कोरोना काल की विभीषिका का उल्लेख करते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्म का विश्लेषण किया है। इसे 'नेटफ्लेक्स, अमेजन, हॉटस्टार जैसे बड़े घरानों ने पूरा प्रश्रय दिया। और उसने लंबी–लंबी सीरीज बनाकर लोगों की ऊब को दूर किया। ओटीटी के लिए बनने वाली फिल्मों के निर्माताओं के लिए यह एक बहुत बड़ी सुविधा थी कि इसे फिल्मों के निर्माताओं के लिए इसे फिल्मों के सेंसर बोर्ड से पास नहीं कराना पड़ता था। लोगों द्वारा इस सुविधा का दुरुपयोग अधिक हुआ। पहले इसमें भाषा के स्तर पर अश्लीलता एवं विकृति आई, वह यौन संबंधों का निवृत प्रदर्शन बनकर रह गया। इस आलेख में हेतु भारद्वाज ने प्रभावशाली ढंग से विचार व्यक्त किया है। इस अंक में ओटीटी के नकारात्मक पक्षों का भी गंभीरता से अध्ययन किया गया है। संदीप नाईक ने 'ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लोकप्रियता में सेक्स, हिंसा और संस्कृति' में इस विषय पर गंभीरता से विचार किया है। इस अंक में ज्ञानतोष कुमार झा की डायरी 'महामारी और रचनात्मकता' भी कोरोना की विभीषिका के बीच पनपती सृजनशीलता को रेखांकित करती है। संपादक एवं कथाकार श्रीधरम् के कहानी–संग्रह 'की रे हुकुम' पर कमलानंद झा की समीक्षा कहानियों के मर्मोद्घाटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संजय चतुर्वेदी, मुसाफिर बैठा, कादंबरी, अनामिका अनु, जावेद आलम खान, मनीष यादव की कविताएँ एवं राम मेश्राम व पाथ चौधरी मीत की गज़लें भी इस अंक के आकर्षण बिंदु हैं। हरियश राय 'पेड़', प्रह्लाद चंद्रदास 'चाँटा', संजीव बख्शी 'अँजोर जेल', विनय कुमार 'किरण', चंद्ररेखा ढडताल 'तो रूकूँगी दीदी', सतोष दीक्षित 'खुशी की खुशी', सरिता कुमारी 'तस्वीर', राजेश पाल 'किए ठौर' आदि की कहानियाँ इस अंक को विशेष बनाती हैं। कविता की लंबी कहानी 'साम चक्र आईहऽ हो...' भी अपने रोचक भाषा एवं नई संवेदना के कारण अपनी ओर ध्यान आकर्षित करती है। नवनीत नीरव की लंबी कहानी 'नाच' द्रष्टव्य है। कुल मिलाकर यह अंक एक महत्वपूर्ण अंक है।

शीतलवाणी

'शीतलवाणी' जनवरी–जून (संयुक्तांक–2022) का अंक बलराम पर केंद्रित है। कथा और कथा से इतर दोनों ही क्षेत्रों में उनकी महत्वपूर्ण पहचान है। संपादकीय के उपरांत बलराम की कहानियों 'पालनहारे', 'शुभ दिन' व 'कलम हुए हाथ' की बानगियाँ हैं। साथ ही लघु कथाएँ भी शामिल हैं। 'कारा' शीर्षक उपन्यास अंश को पत्रिका ने प्रमुखता दी है। इस प्रकार उनकी लगभग हर विधा का सामग्री दी गई है जिससे उनसे

अपरिचित व्यक्ति भी उनके साहित्यिक व्यक्तित्व से परिचित हो सकें। दूसरे यह कि उनके सर्जनात्मक लेखन से इतना परिचय हो जाए कि पत्रिका में उनकी कृतियों पर मूल्यांकनपरक अन्य लेखकों के लिखे गए आलेखों का आस्वादन कर कसे, इसमें कुछ चर्चित संस्मरण भी हैं जो क्रमशः सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, 'देके अश्क आँखों में, शख्स जो चले गए', कमलेश्वर 'मित्रजीवी और उत्सव प्रेमी कमलेश्वर', प्रभाकर श्रोत्रिय व मनोहर श्याम जोशी 'हिंदी के दो हीरे अनमोल', बाबा नागार्जुन 'तब बाबा के संग वो सोयी सारी रात', काशीनाथ सिंह 'काशी के गुरुकुल में चार दिन', कामतानाथ 'कामना के साथ वाले दिन और रात' आदि को निवेदित हैं। इस अंक में बलराम से लता अग्रवाल का साक्षात्कार भी महत्वपूर्ण है। हिंदी के ख्यातिलब्ध आलोचकों एवं लेखकों ने भी बलराम के लेखन का मूल्यांकन अलग–अलग दृष्टिकोणों से किया है। इस दृष्टि से राजकमल 'इससे अधिक और क्या चाहिए', प्रेम जनमेजय 'बलराम की तीसरी प्रेमिका', चैतन्य त्रिवेदी 'अगर वे न होते तो हम भी', रामशंकर द्विवेदी 'ताप के ताये तल्ख एहसास', दामोदर खड़से 'दूसरों न कोई' आदि के नाम प्रमुख हैं और इनके आलेख इस अंक में शामिल भी हैं। बलराम की पुस्तकों पर विश्वनाथ त्रिपाठी, सेवक राम 'यात्री' और श्रीराम तिवारी, तरसेम गुजराल, रेमती रमण, विवेक मिश्र, रूपसिंह चंदेला, कृष्णमोहन झा, परितोष चक्रवर्ती, सूरज पालीवाल, ज्योतिष जोशी, सुभाष राय आदि ने लिखा है। इस प्रकार यह सफल आयोजन संभव हो सकता। यह अंक न केवल बलराम के व्यक्तित्व व लेखकीय अवदान के मूल्यांकन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है वरन समकालीन रचनाशीलता को समझने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। कुल मिलाकर कथा साहित्य में अभिरुचि रखने वालों के लिए यह अंक अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

चौपाल

'चौपाल' का अंक–16 'जुलाई–2022 से दिसंबर 2022' हिंदी के प्रख्यात कथाकार 'काशीनाथ सिंह' 'घर और बाहर' केंद्रित है। पत्रिका सात खंडों में विभक्त है। प्रथम खंड 'यूँ ही कोई मिल गया था' में माधव हाड़ा 'काशीनाथ सिंह जी, जैसे सदियों से जानता हूँ', दुर्गाप्रसाद अग्रवाल 'काशीनाथ जी मेरे प्रिय रचनाकार', गंगाराम राजी 'काशीनाथ सिंह : एक अविस्मरणीय मुलाकात', हेमंत द्विवेदी 'सत्य न सज्जित होत गुसाई' और दीनबंधु तिवारी 'काशीनाथ सिंह : समय को चाहती आँखें' के संस्मरण हैं जो काशीनाथ सिंह के व्यक्तित्व, लेखकीय कौशल, सामाजिक संबंध और साहित्य–जगत में उनकी उपस्थिति एवं अवस्थिति को प्रकट करते हैं। दूसरे खंड 'जिनसे बनता है घर आँगन' में पारिवारिक सदस्यों के उद्गार हैं जिनमें कुसुम सिंह 'जीवन जो जिया', नीना ठाकुर 'रंगों वाली पेंसिल', स्वस्ति ठाकुर 'तीसरी बेटी और पापा', समीक्षा ठाकुर 'इक याद है के दामन–ए–दिल छोड़ती नहीं' और प्रतिभा सिंह 'बहू के नजरिये से काशीनाथ' शामिल हैं। इन उद्गारों से एक बात प्रकट होती है कि कथाकार काशीनाथ

सिंह सामान्य जीवन में, घर–परिवार, पास–पड़ोस और आत्मीय लोगों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं। काशीनाथ सिंह ने दीर्घवधि तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्य किया, अतः उनके शिष्यों की भी बड़ी तादाद है। गुरु के रूप में उनके व्यक्तित्व पर विशेष रूप से प्रकाश डालने वाला खंड 'गुरु कुम्हार सिख कुंभ हैं' तृतीय है जिसमें बलिराज पांडेय 'गुरुकुल से सीखने को बहुत कुछ मिला', गया सिंह 'काशी के कलमकार काशीनाथ सिंह', संजय राय 'देवदत्तों की दुनिया में काशीनाथ सिंह', शशिकुमार सिंह 'हाँ, मैंने काशीनाथ सिंह को देखा है', शशिकला त्रिपाठी 'अपने–अपने काशीनाथ', शिवकुमार पराग 'देसी ठाठ के अप्रतिम भाषा के बेजोड़ कथाकार' उमाकांत नीलकंठ 'काशीनाथ सिंह : अंदाज़े ज़िंदगी और अंदाजे बयाँ', शैलेंद्र सिंह 'कथाशिल्पी काशीनाथ सिंह', प्रदीप कुमार माली 'अपने–अपने काशीनाथ', विभु प्रकाश सिंह 'मायूसी कुफ्र है' और अभिमन्यु प्रताप सिंह 'पिता पुत्र गरुड़ की बाँहों में' आदि के उद्‌गार काशीनाथ सिंह के व्यक्तित्व के कई पक्षों को उभारते हैं। चतुर्थ खंड 'सफर में हमराह' में श्याम बिहारी श्यामल 'जमीन पर आसमान', प्रह्लाद अग्रवाल 'हर हर महादेव दीदार', रामदेव सिंह 'काशीनाथ सिंह : किस्सागो काशीनाथ', सुभाष राय 'काशी के सबसे बड़े औघड़ काशीनाथ', अरविंद चतुर्वेदी 'जिंदगी की धूप और आख्यान की छाया', सुरेश प्रताप 'गुरुदेव कथाकार काशीनाथ सिंह से जब वर्षों बाद हुई मुलाकात' के संस्मरण काशीनाथ सिंह के लेखकीय परिधि को समझने में सहायक है। पंचम खंड 'कुछ बातें हैं अपने मन की भी' में काशीनाथ सिंह 'मेरी कहानी : एक शुरूआत' का अपनी कहानी से संदर्भित विचार है। षष्ठ खंड 'कुछ कविताएँ काशीनाथ के लिए' में दिनेश कुशवाह, जीवन यदु, रोहिताश्व, उज्ज्वल भट्टाचार्य, रमाकांत नीलकंठ, राजेंद्र आहुति, नवीन कुमार और अलकवीर की कविताएँ हैं। और अंतिम खंड 'और अंत' पल्लव का 'पहली मुलाकात का जादू' शीर्षक संस्मरण हैं। कुल मिलाकर यह अंक पठनीय है और काशीनाथ सिंह के लेखकीय पक्षों के साथ–साथ समकालीन लेखन के कई पक्षों को भी उभारता है।

परिंदे

'परिंदे' अंक–3 (अगस्त–सितंबर–2022) 'इक्कीसवीं सदी 'स्त्री कथा' पर केंद्रित है। अपने संपादकीय में शिवदान सिंह भदौरिया ने इक्कीसवीं सदी के स्त्री–कथा विमर्श पर विचार किया है और इस विशेषांक की उपयोगिता और उपलब्धि पर प्रकाश डाला है। हिंदी कथा–साहित्य में उषा प्रियंवदा श्रेष्ठ लेखिकाओं में गिनी जाती हैं। पूनम सिंह, सुदीप्ति एवं कंचन भारद्‌वाज की उषा प्रियंवदा से साक्षात्कार इस अंक की उपलब्धि है। रश्मि रावत का आलेख 'यथार्थ की तेईस रंगतें' इस अंक में प्रकाशित कहानियों को केंद्र में रखकर स्त्री–लेखन की संवेदना और सरोकार के विश्लेषण का प्रयास है। इस अंक में नीला प्रसाद, शर्मिला बोहरा जालान, अंजू शर्मा, ज्योति चावला, योगिता यादव, ममता सिंह, सपना सिंह, प्रज्ञा, रश्मि शर्मा,

ममता शर्मा, दिव्या विजय, अनीता दुबे, मृदुला शुक्ल, रीता दास राम, पूनम सिंह, सरिता कुमारी, पूर्णिमा सहारन, प्रतिभा चौहान, निधि अग्रवाल, हुस्न तबस्सुम निहाँ की कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। वरिष्ठ कथाकार पंकज बिष्ट से संजय कुंदन की बातचीत और रोहिणी अग्रवाल से शशिभूषण मिश्र की बातचीत इस अंक के दो महत्वपूर्ण साक्षात्कार हैं। संजय कुंदन के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि कथा–जगत में प्रेमचंद, गुलेरी, सुदर्शन, कौशिक जी आदि की ही चर्चा अधिक रही, जबकि उसी दौर में बंगमहिला, शिवरानी देवी, सुभद्राकुमारी चौहान, उषादेवी मिश्र, कमलादेवी चौधरी आदि लेखिकाएँ भी सृजनरत थीं। इनकी चर्चा नहीं के बराबर हुई। इसी प्रकार सातवें दशक में भी बहुत सारी महिला कथाकार आईं जिनमें से कई की तो चर्चा भी नहीं' हुई मसलन शशिप्रभा शास्त्री, मेहरून्निसा परवेज, निरुपमा सेवती, कृष्णा अग्निहोत्री आदि, इसका क्या कारण लगता है, पंकज बिष्ट ने कहा है कि हमारा समाज मूलरूप से परंपरावादी और रूढ़िवादी रहा है जिसमें पुरुषों का हमेशा से वर्चस्व रहते आया है। पुरुषों को लगता है कि औरत भला कैसे रचनाशील हो सकती हैं; लेकिन महिला रचनाकारों की बहुत दिनों तक वे उपेक्षा नहीं कर सकते। महिला रचनाकारों ने इन सबके बावजूद अपनी जगह बनाई। महादेवी वर्मा अपने समय के पुरुष रचनाकारों से कमतर नहीं थीं। उन्हें व्यापक स्वीकृति मिली। उसी प्रकार मन्नू भंडारी ने 'महाभोज' और 'आपका बंटी' जैसी रचना से अपनी विशेष पहचान बनाई। इसी प्रकार वरिष्ठ लेखिका उषा प्रियंवदा से बातचीत में लेखक और प्रकाशक संबंधों को लेकर प्रश्न किए गए हैं जिसका उत्तर उन्होंने निजी अनुभव के आधार पर दिया है। हिंदी कथा आलोचना में अपनी पहचान बना चुके नीरज खरे ने अपने आलेख में 'नियतिवादी के घेरों के भीतर और बाहर' में बीसवीं की कहानी में स्त्री–लेखन के उभार को विशेष रूप से रेखांकित किया है। उनका मानना है कि 20वीं सदी के आखिरी दस वर्षों में महिला कथा–लेखन का असाधारण उभार आया था जिसमें संवेदनात्मक विस्तार एवं अभियक्ति कौशल में नवीनता है। राकेश बिहारी का 'भूमंडलोत्तर कहानी का स्त्री पक्ष' तथा शुभा श्रीवास्तव का 'स्त्री कथा के रंग' शीर्षक आलेख भी श्रमपूर्वक लिखा गया है। पत्रिका में प्रकाशित कथा के नवीन हस्ताक्षरों में ममता सिंह, अणुशक्ति सिंह, निधि अग्रवाल और प्रतिभा चौहान आदि का नाम महत्वपूर्ण है। 'भूमंडलेश्वर कहानी का स्त्री' में राकेश बिहारी ने सूचना क्रांति के उपरांत आई नवीन चेतना के आलोक में नीलाक्षी सिंह, अल्पना मिश्र, कविता, वंदना राग जैसी लेखिकाओं के साथ अणुशक्ति सिंह, निधि अग्रवाल की कहानियों को भी विश्लेषण के केंद्र में रखा है। यह अंक पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है।

साखी–38

'साखी' अंक–38 (दिसंबर, 2022) यद्यपि सामान्य अंक हैं, किंतु इस पत्रिका के

सामान्य अंक भी अत्यंत परिश्रम से निकलता है। अतएव लगभग सभी अंक में कुछ–न–कुछ आकर्षण होता है। संपादकीय के उपरांत (हंगामा है क्यों बरपा) हरीश त्रिवेदी का 'रेत समाधि' पर आलेख है। इस उपन्यास के बुकर पुरस्कार मिलने और अन्य पुरस्कारों की चर्चा करने के बाद लेखक ने 'रेत समाधि' पर अपना मंतव्य रखा है। गुजराती के ख्यातिलब्ध कवि यशचंद्र सितांशु का 'केदारनाथ सिंह' की स्मृति में (कवि का जलता हुआ हाथ भी एक और अंतिम मशाल है) व्याख्यान भी इस अंक का आकर्षण बिंदु है। कवि यशचंद्र सितांशु कवि होने के साथ–साथ गंभीर चिंतक भी हैं। अपने गंभीर, किंतु सरल–सरस भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता सितांशु जी जैसे कवि में ही हो सकती है। 'साखी' हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं एवं विदेशी लेखकों की रचनाएँ भी हिंदी में प्रस्तुत करता रहा है और यह उसके प्रति आकर्षण के कई कारणों में से एक है। इस अंक में संदीप शिवाजी राव जगदाले (मराठी कवि) का वक्तव्य एवं कविताएँ प्रकाशित हैं जो अपनी समकालीन भारतीय कविता के संवेदनात्मक भूमि को विस्तार देती है। कवि अंचित (हिंदी कवि) की कविताएँ व वक्तव्य के बाद 'देवेंद्र कुमार बंगाली कविता सम्मान–1 से सम्मानित कवि सुभाष राय के वक्तव्य एवं कविताएँ हैं। हिंदी के आलोचक रामचंद्र तिवारी पर मधुरेश का (अध्यापक–आलोचक : रामचंद्र तिवारी) आलेख है। 'नयी समीक्षा और कुंतक की विवेचना' (मधुप कुमार) भी इस अंक के पठनीय आलेखों में से एक है। 'सुंदरता सार्वभौमिक है' (रवींद्रनाथ ठाकुर) के उपरांत रघुवीर चौधरी (गुजराती लेखक) की गांधी पर केंद्रित तीन कविताएँ भी ध्यान को आकर्षित करती है। 'आज जब नामवर सिंह और पापा दोनों नहीं है' (अनूपा चौहान, संस्मरण) के बाद हजारीप्रसाद द्विवेदी पर डॉ. धर्मवीर भारती का लेख (जलौघमग्ना सचराचर धरा) भी इस अंक के महत्व आलेखों में से एक है। वंदना मिश्र, अंश प्रिया, कुमारी उर्वशी कृत समीक्षाओं के अतिरिक्त डॉ. चंद्रकला त्रिपाठी कृत उर्मिला शिरीष की 'चाँद गवाह' की समीक्षा विशेष द्रष्टव्य है। इस अंक की गणना भी 2022 की उपलब्धियों के रूप में की जानी चाहिए।

सृजन सरोकार

'सृजन सरोकार' हिंदी के लघु पत्रिकाओं में अपना स्थान बना चुका है। इसके संपादक, प्रधान संपादक गोपाल रंजन हैं और कार्यकारी संपादक कुमार वीरेंद्र। अक्तूबर–दिसंबर–2022, अंक–1, 'गांधी में आज गांधी की खोज' पर केंद्रित है। इस अंक के अतिथि संपादक हैं प्रख्यात अलोचक एवं कवि राजेंद्र कुमार। अपने संपादकीय (गांधी में कौन से गांधी को हमें तलाशना है?) में आज के बढ़ते हिंसक वातावरण एवं धार्मिक उन्माद को दृष्टि पथ में रखते हुए लिखा है, ''भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने की जो उत्साह आज जोर कर रहा है वह राष्ट्रोन्नायक है या राष्ट्रघाती? गांधी होते तो इस प्रश्न पर गंभीरता से सोचने की जरूरत पर जरूर बल देते। भारत को विश्व गुरु होने की अहमन्यता में गर्क होना है या विश्वमानव की परिकल्पना का विनम्र प्रस्ताव

बनकर गौरव पाना है–इसका फैसला करने का धैर्य हमसे छिनता जा रहा है। गांधी भी अपने को हिंदू कहने में लजाते नही थे; लेकिन ऐसा हिंदू कहलाना उन्हें कभी स्वीकार्य नहीं था जो किसी दूसरे धर्म को अपने धर्म से हीन ठहराने में ही अपने हिंदू होने की प्रमाणिकता मानता हो।'' (पृष्ठ–4) कहना न होगा कि धर्म एवं गांधी दोनों की ही व्याख्या बदल गई हैं और लोग इसकी व्याख्या निजी अथवा किसी समुदाय विशेष के हित के आवरण में करना चाहते हैं। वे सामाजिक अस्थिरता को बनाए रखना चाहते हैं। प्रख्यात अर्थशास्त्री अरुण कुमार का आलेख 'गांधी–विचार और मनुष्य की अस्तित्व–रक्षा का प्रश्न' इस अंक का प्रथम आलेख है। इससे पत्रिका के आंतरिक पृष्ठों में प्रवेश के पूर्व ही पत्रिका की गंभीरता का आभास होता है। प्रो. अरुण कुमार गांधी के विचारों को हाशिए पर डालते जाने की प्रवृत्ति से आहत होते हैं। इसका कारण वे गांधी विरोधियों के साथ–साथ इन अनुयायियों की असमर्थता भी मानते हैं जो ऐसा परिवेश निर्मित करने में असमर्थ रहे, जिसमें गांधी–विचार की व्यापक स्वीकृति, खासकर युवावर्ग में संभव हो सके।' उनका मानना है कि गांधी का आचरण और उनका त्याग–भाव भारत की आम जनता और विश्वभर के चिंतनशील व्यक्तियों को बीच उनकी व्यापक स्वीकृति के रूप में फलीभूत हुआ। गांधी के विचारों और उनके कर्म में इतनी एकात्मता थी कि वे सहज ही सर्वाधिक भरोसमंद जननायक मान लिए गए। गांधी पूँजी के 'ट्रस्टीशिप' के पक्षधर थे। पूँजी का उपयोग न्यासी के रूप में समाज के लिए समाज के भरोसे से किये जाने के पक्षधर थे। 'सामान्यतः गांधी को नई पीढ़ी के कुछ युवा पुरातनपंथी मान लेते हैं। लेकिन ऐसा मानना गांधी के संदर्भ में एक भ्रांति को बल प्रदान करना है। गांधी : आधुनिकता और स्वराज' शीर्षक आलेख में अच्युतानंद मिश्र ने इसी तथ्य का विश्लेषण किया है। इस संदर्भ में गांधीजी का टैगोर को लिखे गए पत्र में यह मंतव्य है कि ''मैं तो चाहता हूँ सब देशों की संस्कृतियाँ मेरे घर के चारों ओर अधिक से अधिक निर्बाध रूप में प्रवाहित हो सके। अलबत्ता मैं कभी नहीं चाहूँगा कि उनके तेज झोंके मेरे पाँव ही उखाड़ दे। मैं किसी दूसरे के घर में एक अवांछनीय मेहमान, भिखारी या गुलाम के रूप में रहना भी बर्दाश्त नहीं करूँगा।'' इस प्रकार आधुनिकता उन्हें उसी सीमा तक स्वीकार्य है जहाँ तक वह मानवीय जीवन को उन्नत बना सके। उसकी अधीनता उन्हें स्वीकार्य नहीं। 'गांधी और न्यासी की अवधारणा पर रविभूषण का आलेख महत्वूपर्ण है। महात्मा गांधी ने चंपारण और खेड़ा में किसानों के जागरण का नेतृत्व किया था। यद्यपि गांधी न तो देहात में जनमें थे और न उनका परिवार किसान परिवार था। अवधेश प्रधान में गांधी की किसान–दृष्टि आलेख में गांधी के किसान विषयक दृष्टिकोण को विस्तृत विश्लेषण किया है। 'आज के गांधी और भारतीय राजनीति' (हिलाल अहमद), रवि बाबू, गांधी और चरखा–प्रसंग (कर्मेंदु शिशिर), बदलते भारत में गांधी (सेवाराम त्रिपाठी), प्रार्थना का शिल्प में डूबे गांधी (पंकज पराशर), परंपरा और आधुनिकता : द्धैत और अद्धैत (कुमार प्रशांत), संदेह

बनाम आश्वस्ति (निशिकांत कोलगे) आदि अन्य पठनीय आलेख हैं। गांधीवादी आलोचना पर कुमार वीरेंद्र का आलेख अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसा नहीं कि इस अंक में केवल गांधी का प्रशस्तिगान है, उनसे असहमति भी हैं। कँवल भारती अपने आलेख में महात्मा गांधी से अपनी असहमति तार्किक ढंग से उपस्थित किया है।

स्त्री–दर्पण : स्त्री विमर्श का नया मंच

अगस्त–अक्तूबर, 2022 का 'स्त्री–दर्पण' का यह प्रवेशांक है जो अपने पृष्ठ संख्या नहीं, गुणवत्ता के कारण जानी जाएगी। इस नाम से यद्यपि बहुत पहले इलाहाबाद से पत्रिका निकल चुकी है जिसकी संपादिका रामेश्वरी नेहरू थीं जो पं. जवाहर लाल नेहरू के चचेरे भाई की पत्नी थीं। यह पत्रिका लगभग बीस वर्षों तक चलती रही। फिलहाल उसी नाम से यह अरविंद कुमार और सविता सिंह के संपादन में निकल रही है। प्रथम अंक की सामग्री, गुणवत्ता और संकल्प को देखकर इससे उम्मीद जगती है। 'रेत समाधि' को बुकर पुरस्कार मिलने से यह पुस्तक विशेष चर्चा में आ गई है। यह एक श्रेष्ठ उपन्यास है, अतः लोगों की इसमें अधिक रुचि होगी। गीतांजलि श्री की पहचान बुकर पुरस्कार मिलने के पूर्व भी एक गंभीर लेखिका के रूप में थी, अब उनकी स्वीकृति अंतर्राष्ट्रीय है और यह उनके लिए ही नहीं, हिंदी लेखक समाज के लिए भी सम्मान की बात है। हिंदी की प्रसिद्ध कथाकार प्रत्यक्षा ने 'रेत समाधि' पर संक्षिप्त (विभाजन की क्रूर त्रासदी का मैजिकता रियलिज्म है : रेत समाधि); किंतु गंभीर टिप्पणी की है। प्रत्यक्षा के शब्दों में, ''गीतांजलि के लेखन में कुछ बातें बहुत ठहराव और दृढ़ता से आती हैं। अलग बुनावट और कथानक को बरतती वो हर बार अपने सामाजिक सरोकारों को एक मॉरल कंपस में कसे हुए पैमाने के बरक्स सामने रखती है। चाहे 'वह खाली कमरा है', या 'हमारा शहर उस बरस' या 'रेत समाधि'। हर बार वो अपने कैनवास को जरा और बृहद्, जरा और सघन और परतदार, गाढ़ा और चटक बनाती चलती हैं। हर बार ये नजरिया इस तरह आता है जैसे वो जीवन का, सोचने, समझने और गुनने का एक तरीका हो। उनकी भीतरी बुनावट का जरूरी हिस्सा।' (पृष्ठ–11) 'रेत समाधि' पर विपिन चौधरी की टिप्पणियाँ भी द्रष्टव्य है। प्रो. हर्षबाला शर्मा ने इस पर थोड़ी विस्तार से अपनी राय दी है। 'आर्गेज्म पर विवाद क्यों?' में प्रगति सक्सेना ने अणुशक्ति सिंह के पोस्ट के बहाने लगभग वर्जित से विषय पर खुलकर बात की है। 'कला' पर लिखने वालों में विनोद भारद्वाज महत्वपूर्ण हैं। 'कला में मौलिकता का सवाल' में उन्होंने फिल्म एवं चित्रकला में यांत्रिकता को लेकर अलग–अलग मतों पर विचार किया है। जरूरी मल्ल पारस ने 'सत्यजित राय का सिनेमा और स्त्री चरित्र' में सत्यजित राय की रंगदृष्टि एवं स्त्री–दृष्टि पर गंभीरता से विचार किया है। सविता सिंह के 'खोई चीजों का रोक' पर सुजला और मधु कांकरिया के 'ढलती साँझ का सूरज' पर उर्मिला शिरीष की समीक्षा भी द्रष्टव्य है। कुल मिलाकर यह संग्रहणीय अंक है।

नटरंग

'नटरंग प्रतिष्ठान' की पत्रिका 'नटरंग' का मार्च–जून–2022 अंक 115–16 बंशी कौल पर एकाग्र है। बंशी कौल की प्रतिष्ठा निर्देशक व अभिकल्पक के साथ–साथ लेखक तथ चित्रकार के रूप में भी रही। अपने विराट रंगानुभवों को कारण वे आधुनिक रंगकर्म के पर्याय बन चुके थे। अपने संस्मरण 'रंगकर्म के शुरूआती दिनों और मददगार दोस्त' में स्व. स्वदेश बंधु का स्मरण करते हुए अपने रंगमंचीय जीवन के अनुभवों को साझा किया है। इस अंक के अतिथि संपादक हिमांशु बी. जोशी हैं। ऐसे यह पत्रिका अशोक वाजपेयी व रश्मि वाजपेयी के संपादन में निकलती है। रंगमंच के संदर्भ में बंशी कौल का कथन है कि ''सामान्य अर्थों में और खासतौर पर भारतीय संदर्भ में, अगर रंगमंच जीवन का एक हिस्सा है, तो वह उसका चित्रण भी करता है। वह जीवन की बात करता है और कभी–कभी उसका परिहास भी करता है।'' (भारतीय रंगमचं : परिवर्तन के प्रक्षेप पथ, नटरंग, पृष्ठ–14)

डॉ. अंचना पुरी, राजेश जोशी, अनिल रस्तोगी, रामप्रकाश त्रिपाठी, फरीद वज्मी, उदय शहाजे, सतीश दवे, मोहन जोशी व समता सागर के संस्मरण न केवल बंशी कौल के व्यक्तित्व व कला–दृष्टि पर प्रकाश डालते हैं, वरन समकालीन रंगमंचीय परिदृश्य को आलोचिक करते हैं। मूल्यांकनपरक आलेखों में शिवप्रसाद गौड़ (रंग–विदूषक के नाटकों में रूप–सज्जा व वस्त्र सज्जा) और साक्षात्कारों में नेमिचंद्र जैन, उदय प्रकाश, संगीता गुंदेचा आदि का साक्षात्कार अधिक आकर्षक है। भारतीय रंगमंच एंव बंशी कौल में अभिरुचि रखनेवालों के लिए यह अंक एक अनिवार्य अंक की तरह है जिसे अवश्य पढ़ा जाना चाहिए।

आर्यकल्प

'आर्यकल्प', जून, 2022 अंक–2 'विष्णुचंद्र शर्मा' पर केंद्रित हैं इसके संपादक लोकार्क द्विवेदी एवं सह–संपादक विपुल कुमार हैं। विष्णुचंद्र शर्मा पर इसके पूर्व एक अंक केंद्रित कर चुके हैं। यह उनका उत्तर पक्ष है। संपादक ने संपादकीय में विष्णु चंद्र शर्मा की दो विशेषताओं का उल्लेख किया है–राजनीतिक वर्ग–चेतना और सामाजिक संघर्ष तथा जनता से एकात्म होकर उसके संघर्ष में शामिल होने की प्रवृत्ति। ये दोनों ही विशेषताएँ उनकी आलोचना, रचना और साहित्यिक पत्रकारिता की निकष थीं। 'नरम कलेजा करने वाले बेवाक विष्णु...' शीर्षक संस्मरण में कुमार अनिल ने विष्णुचंद्र शर्मा के बड़े आत्मीय क्षणों का उल्लेख किया है जो उनके व्यक्तित्व को समझने में सहायक है। यह आपसी संवाद व्यक्तिगत संवाद की परिधि पारकर साहित्यिक एवं सामाजिक परिधि में प्रवेश करता है। अज्ञेय और शमशेर दोनों को विष्णुचंद्र शर्मा आत्मालाप के कवि मानते थे। शालिनी मिश्र का संस्मरण 'विष्णुचंद्र शर्मा (बाबा जी) मेरी यादों में' भी मार्मिक एवं पठनीय है। इसमें विष्णुचंद्र शर्मा के कई पत्र हैं। रत्नेश कुमार सिन्हा ने विष्णुचंद्र शर्मा को हिंदी साहित्य का हठयोगी कहा है

'हिंदी साहित्य का हठयोगी : विष्णुचंद्र शर्मा', नजरुल पर केंद्रित पुस्तक 'अग्निसेतु' में उन्होंने 'निराला और नजरूल' शीर्षक से इन दोनों कवियों पर जो विचार किया है, स्वयं उनके व्यक्तित्व से भी मेल खाते हैं। रंजना अरगड़े ने 'अंतरंग : महाभारत में प्रेम–विजय की कविता' में कवि के रूप में विष्णुचंद्र शर्मा की विशेषताओं को रेखांकित किया है, साथ ही उनपर शमशेर बहादुर सिंह की कविता का प्रभाव भी देखा है। इसके अतिरिक्त आनंद प्रकाश 'दृश्य–अदृश्य : नया कथा–प्रयोग', हेतु भारद्वाज 'तपस्वी विष्णुचंद्र शर्मा वाया दृश्य–अदृश्य', बलिराज पांडेय 'बॉड़म को पढ़ते हुए' राजाराम भादू 'बात बोलेगी, हम नहीं : शमशेर पर विष्णुचंद्र शर्मा', शशिकला त्रिपाठी 'अपना पोस्टर के आइने में', चंद्रकला त्रिपाठी 'गहरी पीड़ादायी यादें तमाम : दिल को मला करे है', आशा शर्मा 'अग्निसेतु', राजीव रंजन प्रसाद 'विष्णुचंद्र शर्मा की दृष्टि में शमशेर' और इला सिंह 'मन की चाल जैसी रचनाएँ' के आलेख भी पठनीय है। विष्णुचंद्र शर्मा के संदर्भ में चंद्रकला त्रिपाठी की टिप्पणियाँ महत्वपूर्ण हैं कि ''दर्द चौतरफा है, तोड़ देने वाला दर्द / कलम की मजदूरी, दिल्ली जैसा शहर / पूँजी की वर्चस्व का समय / स्वार्थों, मक्कारियों और लाचारियों में कटा–फटा मध्यवर्ग / इस पीड़ा को लेखक उसकी असलियत में रखना चाहता है। इस पीड़ा में कितने ही लोगों का जीना, जूझना और सहना शामिल होता है। मृत्यु ने जैसे समूचे जिए गए मानवीय और मूल्यवान को यादों में उतार दिया है।'' (पृष्ठ–120–21) कुल मिलाकर यह पठनीय अंक है।

मधुमती

जब समूचा देश असहिष्णु वातावरण में जीने को विवश है, राष्ट्रवाद के नाम पर कुछ उग्र विचारों को प्रश्रय मिल रहा है ऐसे में नेहरू को याद करना लोकतांत्रिक मूल्यों को याद करना है। निजी एवं राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में उनके पास असहमति के लिए पर्याप्त अवकाश था। राजस्थानी साहित्य अकादमी, उदयपुर ने अपनी पत्रिका 'मधुमती' का अंक–11–12 'नेहरू' पर केंद्रित कर लोकतांत्रिक मूल्यों में अपने विश्वास एवं असहिष्णुता के प्रतिरोध का परिचय दिया है। इस अंक के अतिथि संपादक हैं–प्रख्यात आलोचक प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल। यह आकस्मिक नहीं है कि संपादक ने नेहरू और सांप्रदायिकता (विपिन चंद्र) शीर्षक आलेख को प्रमुखता देते हुए प्रथम आलेख के रूप में रखा है। संपादक ने यह अनुभव किया है कि 'नेहरू अपने कार्यों, अपनी सोच और भारत को लेकर अपनी भविष्य दृष्टि के साथ आज भी भारतीय राजनीतिक–सांस्कृतिक चेतना में उपस्थिति के साथ जीवित हैं। निःसंदेह इस उपस्थिति की चमक पिछले कई वर्षों में कम हुई है। इसके दो कारण हैं–संकीर्णता और आक्रामकता। हर संस्करण यह जानता हैं कि नेहरू की चमक कम किए बिना उसकी दाल गल नहीं सकती। इसीलिए नेहरू के विरुद्ध कुत्सा और निंदा के अभियान निरंतर चलते रहे हैं। नेहरू को लेकर जनमानस में दूषित करने का षड्यन्त्र एक दीर्घाविधि से चली आ रही है। ऐसे में निर्भ्रांत रूप में नेहरू को उपस्थित करना कठिन; किंतु आवश्यक कार्य है। कारण कि लोकतंत्र

की रक्षा के लिए हमें बारबार अपने भीतर लोकतांत्रिक मूल्यों का परिष्कार करते रहना होता है। नामवर सिंह ने आकाशवाणी, बीकानेर के लिए दिए 'भारतीय अस्मिता की खोज और जवाहरलाल नेहरू' शीर्षक अपने व्याख्यान में स्वाधीनता आंदोलन का मुख्य लक्ष्य अंग्रेजी सत्ता से मुक्ति के साथ–साथ भारतीय अस्मिता एवं आत्म–गौरवबोध को भी माना है। इस दिशा में नेहरू की पहल ही नहीं, उपलब्धि भी महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि प्रख्यात इतिहासकार आदित्य मुखर्जी जवाहरलाल नेहरू ने विचारों पर बार–बार सोचने पर बल देते हैं। उनका मानना है कि भारत में एक लोकतांत्रिक ढाँचे की नींव रखने में नेहरू की बहुत बड़ी भूमिका थी। यह भूमिका तब और महत्वपूर्ण हो जाती है। नेहरू की यह कोशिश ऐसे समय में दिखाई पड़ती है जब विश्व भारत को पूर्ण लोकतंत्र मानने से इंकार करता है। आधुनिक भारत के निर्माण में नेहरू की भूमिका को रेखांकित करते हुए सतीश कुमार ने लिखा है कि नेहरू इतिहासकार थे, तो इतिहास निर्माता भी थे। इतिहास यह मौका कम लोगों को देता है कि वो राष्ट्र निर्माण के सपने का ताना–बाना भी बुने और उनको उसे तराशने का मौका भी मिले। बेशक नेहरू ऐसे खुशकिस्मत रहनुमा थे। प्रख्यात विचारक प्रो. मणींद्रनाथ ठाकुर ने नेहरू के साहित्यकार रूप एवं प्रधानमंत्री के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षक बताया है। अनिल नौरिया, मनोज कुमार झा, नीरजा सिंह, शकील अख्तर, पीयूष बवेले, अब्दुल अजीम आजमी, आदित्य कृष्णा, पुरुषोत्तम अग्रवाल व अलोक वाजपेयी आदि के आलेखों से विभूषित इस अंक में नेहरू के संपूर्ण लेखन से कुछ आलेख चयनित हैं जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। कुल मिलाकर यह अंक अत्यन्त संग्रहणीय है।

प्रति संसार

वर्तमान की चुनौतियों से पलायन कर, राजसत्ता की क्रूरता में सहयोगी–सहभागी बनकर निजी जीवन के लिए कुछ सुविधाएँ भले ही प्राप्त की जा सकती हैं, किंतु व्यक्ति और समाज का स्थाई हित उनके प्रतिरोध से ही संभव है। इन्हीं सत्संकल्पों से संवलित होकर 'प्रति संसार' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। अक्तूबर 2022 में प्रकाशित यह अंक यद्यपि पत्रिका का प्रवेशांक है, लेकिन इसकी विपुल सामग्री, आलेखों के चयन का विवेक और संपादकीय दृष्टि को देखते हुए यह कहना थोड़ा कठिन हो जाता है कि यह किसी पत्रिका का प्रथम अंक है। एक संसार जो सबके सामने है और जिसमें छल–छद्म, क्रूरता, शोषण, अन्याय व अविवेक का आधिक्य है तथा दूसरा संसार वह जिसमें इन निकृष्टताओं को दूर करने का संकल्प तो है ही, संकल्प के साथ आपसी सद्भाव, मानवीयता, शोषण का प्रतिरोध, न्यायिक मूल्य व सामाजिक हित में अपना हित समझने की विवेकशक्ति भी है। संपादक ने 'अपनी केवल धार' (संपादकीय) में ठीक ही लिखा है कि ''विचार नहीं होती हैं मूर्त्तियाँ। विचार का प्रतीक होती हैं। प्रतीक के बनने–टूटने से विचार नहीं बनता–टूटता। पत्रिका में आलोचनात्मक आलेखों के साथ–साथ कविता, कहानी, संस्मरण और फिल्म समीक्षा भी है। रचनाओं के चयन में

यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि वरिष्ठ रचनाकारों के महत्वपूर्ण लेखन के साथ–साथ नवोदित, किंतु वैचारिक रूप से सशक्त रचनाकारों को भी समुचित स्थान दिया जाय। किसी पत्रिका से यह स्वभाविक अपेक्षा है कि अपने समय के ऊर्जावान् नए रचनाकारों से लोगों को जोड़े। 'प्रति संसार' ने अपने इस दायित्व का समुचित निर्वाह किया है। हिंदी की मौलिक सामग्री के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषा व अंग्रेजी से अनूदित रचनाएँ भी इसमें शामिल हैं। केशल तिवारी, विनोद वर्मा, महेश वर्मा, ज्योति शोभा, वसु गंधर्व, सुधीर रंजन सिंह की कविताओं के अतिरिक्त सत्यनारायण के गीत इस अंक में प्रकाशित है। 'रात के मेहमान' (कहानी) भी अपनी महत्वपूर्ण छाप छोड़ने वाली कहानी है। एजाज अहमद के आलेख (The New Imperial Challenge, 2004, The social Register में प्रकाशित) 'हमारे दौर का साम्राज्यवाद' का पंचमांश का प्रकाशन इस अंक का वैचारिक आकर्षण है। 'सन्नाटे का प्रेत' (यानिस वारिफकिस, अनुवाद–अंबरीश त्रिपाठी) 'कम्युनिस्ट मैकिफेस्टो' की भूमिका का अनुवाद इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि मार्क्स के जन्म के 200 वर्ष बाद उनके विचारों के बारे में आज के विचारकों के दृष्टिकोण में किस प्रकार का परिवर्तन आया है। यह भूमिका इस तथ्य को सूक्ष्मता से निरूपित करती है। चिंतकों की नई पीढ़ी को केंद्र में रखने वाला गोपाल प्रधान का आलेख भी हमें वैचारिक ऊर्जा से सिक्त करता है। विनोद शाही ने अपने आलेख में भारतीय यथार्थवाद के संदर्भ में वामपंथी और दक्षिणपंथी संवाद का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। जया जादवादी के संस्मरण व रमाशंकर सिंह तथा डॉ. आशुतोष शुक्ल के आलेख भी महत्वपूर्ण हैं। कुल मिलाकर यह प्रवेशांक मन पर अच्छा छाप छोड़ता है और भविष्य के प्रति आशान्वित भी करता है।

वर्तमान साहित्य

'वर्तमान साहित्य' हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका रही है। विगत कुछ वर्षों से इसका प्रकाशन अवरुद्ध हो गया था; किंतु संजय श्रीवास्तव के संपादन में नई ऊर्जा से लैस होकर यह प्रकाशित हो रही है। गीतांजलि श्री पर केंद्रित महत्वपूर्ण अंक निकालने के बाद इस पत्रिका ने 'नवजागरणकालीन स्त्री कविता विशेषांक' प्रकाशित किया है। इस अंक के अतिथि संपादक सुजीत कुमार सिंह ने इस अंक की सामग्री चयन में काफी श्रम किया है। पिछले अंकों में इस पत्रिका के सह संपादक के रूप में भी इनका योगदान लक्ष्य किया जा सकता है। संपादक ने अपनी विस्तृत संपादकीय में अनेक संदर्भों से नवजागरण में स्त्री कविता की भूमिका स्पष्ट की है। ये ऐसे संदर्भ हैं जो धीरे–धीरे लोगों की स्मृतिपटल से दूर होते जा रहे हैं। संपादक ने इन कवयित्रियों की महत्वपूर्ण रचनाओं को एक स्थल पर लाकर शोधार्थियों का भी बड़ा हित–साधन किया है। संपादक इस कार्य के लिए बधाई का पात्र है।

इसी पत्रिका का सामान्य अंक (7–8) भी अवलोकनीय है। संपादक ने अपनी

संपादकीय में युवा लेखक की संभावनाओं पर विस्तार से विचार किया है। इस अंक में प्रकाशित असगर बजाहत से हारून रशीद खान की बातचीत से न केवल असगर बजाहत की रचनाधर्मिता के नये पक्ष उजागर होते हैं वरन वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनेक पक्ष उजागर होते हैं। गोपीचंद नारंग पर खान अहमद फारूक का आलेख तथा प्रख्यात आलोचक व चिंतक पी.एन. सिंह पर रामप्रकाश कुशवाहा का आलेख विशेष अवलोकनीय है। 'ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे–धीरे' में प्रख्यात संस्मरण लेखक कुमार पंकज ने रामनाथ सुमन की पुस्तक 'मैंने स्मृति दीप जलाए' और 'छायावादयुगीन स्मृतियाँ' के बहाने छायावाद पर अपने विचार प्रकट किये हैं। 'नामवर सिंह' पर राजकुमार तथ नवजागरण पर समीर कुमार पाठक का आलेख महत्वपूर्ण हैं। प्रियदर्शन मालवीय का 'कोरोना किस कैद–ए–हयात' शीर्षक उपन्यास अंश कोरोना काल में दंश को उजागर करता है। पुस्तक समीक्षा में 'कर्बला–दर कर्बला' की जवरीमल्य पारख कृत और 'खैरियत है हुजूर' महेश कटारे कृत 'उर्मिला शिरीष की' पुस्तक की सुंदर समीक्षा है। कुल मिलकार यह अंक पठनीय है। इस अवधि में आई 'माटी' शीर्षक पत्रिका भी देखी जा सकती है। यह कवि नरेंद्र पुंडरीक के संपादन में 'केदार स्मृति शोध न्यास' से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका का एक दुर्बल पक्ष यह है कि विशेषांकों के व्यामोह डूबती जा रही है। संपादक को इससे बचना चाहिए।

वर्तमान साहित्य का मार्च–मई–2023 अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित हुआ है। यह अंक इस पत्रिका के महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है। समकालीन स्त्री–लेखन को निवेदित यह 'समकालीन महिला लेखन महाविशेषांक' प्रख्यात कथा–लेखिका ममता कालिया के संपादन में आया है। पत्रिका में तीन संपादकीय है–एक संपादकीय संजय श्रीवास्तव की जो 'वर्तमान साहित्य' के अतीत पर प्रकाश डालने एवं सहयोगियों की भूमिका को रेखांकित करने में व्यस्त हो गई है। दूसरी विभूति नारायण राय की संपादकीय 'यह एक सिलसिला है' शीर्षक से प्रकाशित है। इसमें भी पूर्व संपादक का ध्यान मुख्यरूप से पत्रिका के पूर्व प्रकाशित अंकों की सूचना देने तक सीमित है। 'स्त्री रचनाशीलता का आकाश' शीर्षक से तीसरी संपादकीय ममता कालिया की है जो इस 'इस समकालीन महिला लेखन महाविशेषांक' की अतिथि संपादिका हैं। चाहे जो भी हो 'समकालीन महिला लेखन' पर यह एक महत्वपूर्ण विशेषांक है, अतः इसका स्वागत होना चाहिए और हिंदी जगत ने इसका स्वागत किया भी है। ममता कालिया मानती हैं कि समकालीन महिला लेखिकाओं के लेखन में उर्वरता, ऊर्जा एवं उत्साह है और यह सुखद स्थिति है। संपादकीय में वे गीताजंलि श्री का उल्लेख करती हुई लिखती हैं कि 'गीताजंलि श्री' ने उपन्यास 'रेत समाधि' को विश्व सम्मान की पहली पंक्ति में ला दिया। स्त्री कलम को व्यापक प्रतिष्ठा इस गंभीर रचना के माध्यम से प्राप्त हुई। संपादकीय के अंत में उन्होंने लिखा है कि 'सीमा शब्द हमने भूगोल के लिए छोड़ दिया है। साहित्य का आकाश असीम है।

पत्रिका का दुर्गद्वार संस्मरण दीर्घा है जहाँ 'मेरे लिए निर्मल' शीर्षक से निर्मल वर्मा पर उषा प्रियंवदा का संस्मरण है। एक महान लेखिका का निर्मल वर्मा को याद करना और उस याद को साझा करना सुखद अनुभव है। इस संस्मरण से निर्मल वर्मा के लेखक व्यक्तित्व के कई पक्ष अनावृत होते हैं। इसी प्रकार मृदुला गर्ग ने 'आधे सच की पूरक सच्चाईयाँ' शीर्षक से इतिहास में स्त्रियों के उन अवदानों का गंभीर एवं तर्कसंगत विश्लेषण किया है जिसे पुरुषवादी मानसिकता के इतिहासकारों ने मुख्य परिदृश्य से गायब कर दिया। नेता जी सुभाषचंद्र बोस के दल में पुरुषों से तनिक भी कम भूमिका स्त्रियों की नहीं थी; किंतु वे उपेक्षित ही रहीं। ऐसे अनेक संदर्भों को इतिहासकार चारु गुप्ता के हवाले से जाना जा सकता है जिसे मृदुला गर्ग ने अनेकशः उद्धृत किया है।

प्रसिद्ध कवयित्री एवं स्त्री–चिंतक अनामिका ने प्रेमचंद और शिवरानी देवी के दाम्पत्य–जीवन एवं सामाजिक जीवन को 'प्रेमचंद घर में' के बहाने उभारा है। यह विश्लेषण स्त्री–चिंतन की दृष्टि से ही नहीं; प्रेमचंद को नये संदर्भों में समझने की दृष्टि से भी सहायक है। रोहिणी अग्रवाल की पहचान प्रखर स्त्री–विमर्शकारों एवं आलोचकों में होती है। रोहिणी अग्रवाल परंपरा का मूल्यांकन की इस सावधानी से करती हैं कि कहीं अतिरिक्त श्रद्धा के कारण किसी से कोई आवश्यक सवाल करना छूट न जाय। 'समाज से कैफियत माँगते हुए सवाल' शीर्षक अपने आलेख के माध्यम से 'अतीत के चलचित्र' को नये आलोक में देखने की कोशिश की है एक ऐसा आलोक जो उसकी उपलब्धियों के साथ–साथ उसकी सीमाओं की ओर भी इंगित कर सके। पिछले चार–पाँच वर्षों से विशेषकर 'देह ही देश' के प्रकाशन के उपरांत हिंदी में विशेष चर्चित गरिमा श्रीवास्तव का 'देह श्रम : तब और अब' शीर्षक आलेख 'सेक्स वर्कर' के अतीत और वर्त्तमान पर विचार करता है। प्रीति चौधरी का 'सुभद्राकुमारी चौहान' विषयक आलेख जो तत्कालीन अनेक सामाजिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ता है, सुभद्राकुमारी चौहान का नया मूल्यांकन करता है। सीमा आजाद महिलाओं के सामाजिक–सांस्कृतिक व आर्थिक पक्ष को लेकर अधिक सक्रिय रहती हैं। 'औरतें, आंदोलन और संस्कृति' शीर्षक अपने आलेख के केंद्र में 'शाहीनबाग' और 'किसान आंदोलन' में स्त्री–प्रतिरोध को उन्होंने रेखांकित किया है। किसान आंदोलन में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से भले ही कम थी, लेकिन यदि अवदान की दृष्टि से देखें, तो उनका महत्व पुरुष किसानों से किसी प्रकार कम न था। इस अंक में यह आलेख अलग आस्वाद का आलेख है। अलका प्रकाश इस पत्रिका के संपादक से संबद्ध हैं। उनका आलेख 'सत्ता, प्रतिष्ठान और स्त्री अस्मिता' सत्ता के स्वरूप एवं स्त्री–अस्मिता के पक्ष को विस्तार से विश्लेषित करता है। 'हत्याओं के समय में प्रणय विकल कविताएँ' कात्यायनी के इस कविता पर प्रियदर्शन की टिप्पणी और फिर कात्यायनी का अपना पक्ष सामान्य पाठकों के साथ–साथ कवियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। असद जैदी,

अनिल सिंह, प्रियंका दुबे, विमल कुमार, राकेश रेणु, इंद्र कुमार आदि की टिप्पणियाँ भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। कहानियों में उषाकिरण खान 'मुझे मछली बनना है', सारा राय 'बदहवास आदमी और हम', उर्मिला शिरीष 'तिकड़म', नीलाक्षी सिंह 'लय', जयश्री रॉय 'आखिरी कविता', मधु कांकरिया 'बबुआ', प्रज्ञा रोहिणी 'माया मरी न मन मरा' जैसे कथाकारों के साथ ममता सिंह 'स्याही', निधि अग्रवाल 'चाँद और कौवे', जमुनी बीनी 'नीया', काव्या कटारे 'नई लकीरें' जैसी अल्प चर्चित, नयी, किंतु ऊर्जावान् कथा–लेखिकाओं की भी कहानियाँ शामिल की हैं। नीलेश रघुवंशी, जसिंता केरकेट्टा, अनुराधा सिंह, वाजदा खान, प्रिया वर्मा, बीनू शारदा की कविताएँ इस अंक को समृद्ध बनाती हैं।

संवेद

'संवेद' (अंक–127, अगस्त, 2022) का इब्राहीम शरीफ पर केंद्रित अंक देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। इब्राहीम 7वें–8वें दशक में महत्वपूर्ण एवं चर्चित कथाकार रहे हैं जो किसी सुखद स्वप्न के समान अचानक परिदृश्य से गायब हो गए थे। उस दौर के आलोचकों ने भी उनकी प्रतिभा को स्वीकारा और उनके समकालीन कथाकारों ने भी। इब्राहीम ने कहानी को समाज के परस्पर विरोधी स्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन तथा समीक्षा कर आम जनता में जागृति तथा हर तरह की आजादी को भरनेवाली सामाजिक तथा राजनीतिक शक्तियों को मजबूत करने का जरिया माना है। ऐसे में कहानी लेखन उनके लिए शग़ल न होकर जरूरी कार्रवाई है। 1972 ई. में जब उनकी कृति 'अँधेरे के साथ' प्रकाश में आई तो लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी रही। पक्ष–विपक्ष दोनों में तर्क आए। प्रगतिशील मूल्यों की ओर झुके लोगों ने इसका स्वागत किया, तो दक्षिणपंथी लोगों के दंश भी झेलने पड़े। भीष्म साहनी ने इसके बारे में अपनी राय प्रकट करते हुए लिखा है कि 'अगर उपन्यास का इकहरापन इसका दोष है, तो कथानक की सच्चाई इसका सबसे बड़ा गुण भी। लेखक यदि इसी सच को कहने चला था तो वह इस सच्चाई की एक मार्मिक झलक देने में सफल हुआ।'

इब्राहीम शरीफ़ ने 'गर्दिश के दिन' शीर्षक से 'सारिका' में मोहन राकेश के संपादन काल में स्तंभ लिखा था। ये स्तंभ सराहे भी गए। उनके निधन के उपरांत 'जमीन का आखिरी टुकड़ा' शीर्षक कहानी–संग्रह में संकलित कर उसे प्रकाशित किया गया। इब्राहीम जिस कालखंड में अपनी कहानियाँ लिख रहे थे उस काल में जाति एवं संप्रदाय का जहर बुरी तरह घुल रहा था। इसकी स्पष्ट छाप उनकी कहानियों एवं उपन्यास पर देखी जा सकती है। मधुरेश ने उनके कथा–साहित्य के विश्लेषण के संदर्भ में इस तथ्य को विशेष रूप से रेखांकित किया है। स्वयं इब्राहीम के शब्दों में, ''अब भी मेरे अंदर ऐसी घटनाओं और स्थितियों को लेकर घृणा उभरती है, मगर मुसलमान या हिंदू या किसी एक धर्म के लोगों के प्रति नहीं; बल्कि इस देश में जड़ें जमाए बैठी उस गंदी मनोवृत्ति के प्रति कि आज भी हम इंसान को इंसान के रूप में नहीं हिंदू या मुसलमान के रूप में देखते हैं। अपनी समूची आदर्शवादी

विचारधारा तथा समाजवादी प्रचार के बावजूद।'' वास्तव में इनकी कहानियाँ क्षरित होते सामाजिक सद्भाव की कहानियाँ हैं। पत्रिका में संकलित सभी आलेख महत्वपूर्ण हैं और इस कथाकार के कथा–साहित्य को फिर से पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। मधुरेश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, सेवाराम त्रिपाठी, अरविंद कुमार, रमेश उपाध्याय, जितेंद्र भाटिया, सुभाष पंत एवं सुधा अरोड़ा के आलेख विशेष आकर्षित करते हैं। यह अंक संवेद के अत्यंत सग्रहणीय अंकों में से एक है।

वक्त से लड़ती हुई 'परिकथा'

ऐसे तो किसी महत उद्देश्य के प्रति दृष्टि संपन्नता के अभाव में एवं प्रतिबद्धता के बिना किसी पत्रिका की यात्रा कोई विशेष महत्व नहीं रखती, कारण कि पत्रिकाओं की मूल्यवत्ता केवल अंकों की संख्या से निर्धारित नहीं होती, किंतु अपने मूल्यों से बिना किसी समझौता के यदि कोई लघु पत्रिका 100 अंकों की यात्राएँ पूरी कर उसी जोश व गुणवत्ता के साथ अपने पथ पर अग्रसर हो, तो एक सुखद आश्चर्य अवश्य होता है, साथ ही उन साथियों को प्रेरणा एवं आत्मबल भी मिलता है जो विषम परिस्थितियों को झेलते–झेलते हथियार डालने का मन बना चुके हैं। 'परिकथा' पिछले 17 वर्षों से प्रकाशित होती आ रही है, किंतु इस अवधि में न कोई अंतराल आया न अंतराय। यदि कोई बाधा आई भी तो पाठकों को इसका अनुभव नहीं हुआ। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इस अवधि में पत्रिका के प्रकाशन को लेकर संपादक के समक्ष कठिनाइयाँ नहीं आईं, लेकिन संपादक ने अदम्य धैर्य के साथ उसका सामना किया और एक अप्रतिहत योद्धा के समान विषय परिस्थितियों से जूझता रहा, यदि ऐसा नहीं होता, तो अनेक बड़ी–बड़ी पत्रिकाओं ने पिछले कुछ वर्षों में अपना अस्तित्व खो दिया, कुछ केवल इतिहास बनकर रह गईं, इनमें कुछ तो बड़े उद्योगपतियों से प्राणवायु पा रही थीं, ऐसे मे 'परिकथा' की निरंतरता अक्षुण्ण न होती। यह एक आश्वस्ति है।

पत्रिका का 100वाँ अंक विपुल सामग्री के साथ उपस्थित है। संपादक ने अपने संपादकीय में भारतीय समाज की दशा और दिशा पर गहरी चिंता जतायी है। समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों की मौकापरस्ती संपादक को आहत करती है। उसी के शब्दों में, 'जिस देश में व्यापक पैमाने पर गरीबी, असमानता, रोजी–रोटी की समस्या बेरोजगारी चिकित्सा–शिक्षा की अपर्याप्तता, बदहाली जैसी स्थितियाँ हैं वहाँ अपने हितों के संदर्भ में मध्यममार्ग और वाममार्ग के बजाय दक्षिण मार्ग के चुनाव ने बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों, कथाविदों, इतिहासज्ञों और समाजशास्त्रियों को चकित किया।' लेखकों में व्याप्त वैयक्तिता ने समाज को दिग्भ्रमित किया है जबकि उनसे दिशानिर्देश की उम्मीद की जा सकती थी। 'अहो रूप, अहो ध्वनि' के अनियंत्रित घोष से पूरा साहित्यिक परिवेश ही दूषित हुआ–सा जान पड़ता है। समाज को दिशा देने वालों को ही आज दिशानिर्देश की आवश्यकता है।' पत्रिका में प्रकाशित प्रथम आलेख 'भारतीय पुनर्निर्माणः नियमि से

मुठभेड़' (शंभुनाथ) आजादी के बाद के भारतीय समाज का वस्तुनिष्ठ विवेचन है। संभव है, लेखक के मतों से असहमति हो और है भी किंतु जिन ज्वलंत प्रश्नों को लेखक ने उठाया है, वे वर्तमान भारतीय समाज के आवश्यक प्रश्न हैं।

लोक का मानना है कि, 'सत्ता को किसी भी तरह अपने हाथ में रखने की प्रवृत्ति फासिज्म का बुनियादी लक्षण है।' यह प्रवृत्ति समाज की न्यूनतम इकाई व्यक्ति से लेकर क्रमशः परिवार, मोहल्ले, गाँव, प्रखंड, अनुमंडल, राज्य और देश से लेकर महादेश तक में लक्षित की जा सकती है। आज मीडिया की भूमिका निरपेक्ष मूल्यांकन की नहीं रही। वह एक स्वस्थ जनमत तैयार करने के स्थान पर जनमत को नियंत्रित करने का हथियार बन चुकी है। अपनी खबरों को वह त्रिकाल सत्य बनाकर प्रस्तुत करती है जहाँ असहमति के लिए कोई अवकाश नहीं है। शंभुनाथ के गंभीर विचारोत्तेजक एवं तार्किक आलेख से पत्रिका की आंतरिक वस्तु में प्रवेश की सुदृढ़ भूमिका तैयार हो जाती है। इस पत्रिका में दूसरा महत्वपूर्ण आलेख है चंचल चौहान का 'आजादी के बाद का भारत' जिसमें आजादी के बाद के भारत की सामाजिक स्थितियों का विश्लेषण है। इस विश्लेषण में बतलाया है कि किस तरह आजादी के बाद राजसत्ता पूँजीपतियों और बड़े स्वामियों के गठबंधन के हाथों में आई, जिनका साम्राज्यवाद से समझौता है। अपनी स्थापना को उन्होंने मुक्तिबोध के 1954 में लिखे गए एक लेख से संदर्भित किया। इस आलेख में बिड़ला के ब्रिटिश पूँजीवादियों से तथा टाटा के अमेरिकी पूँजीवादियों से संबंध दिखाए गए हैं। उन्होंने आजादी के बाद के भारत को दो कालखंडों में बाँटा है—1947—1990 तथा सन् 1991 से अब तक। इस विभाजन का आधार उन्होंने विश्व पूँजीवाद में हुए रूपांतरण एवं परिवर्तन को बतलाया है। गंभीर विश्लेषण होने के कारण यह आलेख इस अंक के महत्वपूर्ण आलेखों में से एक है। जवरीमल्ल पारख का नाम हिंदी के गंभीर आलोचकों में आता है। फिल्मों के अतिरिक्त पत्रकारिता एवं देश के सामाजिक—राजनैतिक परिदृश्यों पर इनकी गंभीर दृष्टि रहती है। 'धर्मनिरपेक्ष भारत और सांप्रदायिक राजनीति का बढ़ता वर्चस्व' शीर्षक आलेख में उन्होंने हिंदू—मुस्लिम ऐक्य और स्वाधीनता संघर्ष का उल्लेख करते हुए आपसी सद्भाव के महत्व को रेखांकित किया है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया है कि अंग्रेजों ने किस प्रकार दोनों के बीच दरार डालने की बार—बार कोशिश की, किंतु विफल रहे। अंग्रेज जहाँ हिंदुओं के मन में यह बैठाने की कोशिश करते रहे कि उन्होंने 1000 वर्षों तक तुम पर शासन किया है, तुम्हारे धर्म—स्थलों को ध्वस्त किया है, स्त्रियों का अपमान किया और बल प्रयोग कर धर्म—परिवर्तन किया है; उसी प्रकार मुसलमानों के मन में यह बैठाने की कोशिश की, कि तुमने हजारों वर्षों तक शासन किया है। यदि देश आजाद होगा, तो बहुसंख्यक हिंदू तुम्हारे जीवन को नारकीय बना देंगे। तुम्हें गुलामों—सा जीवन व्यतीत करना होगा। परिणामतः इतिहास की इस सांप्रदायिक व्याख्या को हिंदू और मुसलमान दोनों ही वर्गों के अधिकांश लोगों ने स्वीकार कर लिया। इस सांप्रदायिक व्याख्या के

अनुसार हिंदू और मुसलमान दो अलग–अलग राष्ट्र हैं जिनका आपस में मिलकर रहना लगभग असंभव है। स्वाधीनता प्राप्ति के पहले तक तो यह आपसी संघर्ष किसी तरह दबा रहा, किंतु आजादी के बाद संघर्ष विस्फोटक रूप में उभरा जिसका परिणाम देश–विभाजन के रूप में झेलना पड़ा। उसी प्रकार आजादी के संघर्ष का दूसरा आंतरिक विरोध वर्ग व्यवस्था और जातिवाद को लेकर भी था जिस पर राजा राममोहन राय, विवेकानंद, ज्योतिबा फुले और अंबेडकर ने गंभीर चोट किया। श्री पारख ने अपने आलेख में संक्षिप्त, किंतु गंभीर विश्लेषण किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि भातीय संविधान जिन उच्च मूल्यों पर टिका है, भारतीय समाज की भूमिका उसके बहुत अनुकूल नहीं है। सामंती और औपनिवेशिक दौर की विकृतियाँ भारतीय सामाजिक रचना में गहरे धँसी हैं। छोटे–बड़े, धनी–निर्धन, जाति, भाषा, लिंग, धर्म, क्षेत्र, व्यवसाय आदि अनेक विषमताएँ विद्यमान हैं, ऊपरी स्तर पर जो लोग इसे मिटाने का स्वांग करते हैं वे भी इन विकृतियों से लिप्त हैं। आजादी के बाद यदि कुछ राजनैतिक स्वतंत्रता एवं विकास के समान अवसर प्राप्त हुए हैं तो दूसरी ओर ईर्ष्या, लोभ, व्यक्तिवादिता एवं धर्म संप्रदायगत मानसिक संकीर्णताएँ भी कहीं उससे अधिक बढ़ती हैं। ऊपरी धरातल पर सब कुछ ठीक–सा दिखने के बावजूद सब कुछ ठीक नहीं है। लेखक ने गांधी, अंबेडकर और भगत सिंह के विचार को व्यापक संदर्भों में देखने पर बल दिया है। यह आलेख भी इस अंक के महत्वपूर्ण आलेखों में से एक है।

हिंदी कथा साहित्य में शेखर जोशी का विशिष्ट स्थान है। 7 अक्टूबर, 2022 को उनका निधन हो गया। उन्हें संस्मरण करते हुए उन पर कथाकार महेश दर्पण का संस्मरण संपादक ने प्रकाशित किया है। इस संस्मण से शेखर जोशी का पूरा व्यक्तित्व झाँकता प्रतीत होता है। अरुण कमल की गद्य कविताएँ भी हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। नरेश सक्सेना की कविताएँ वर्तमान परिवेश की विडंबनाओं को मूर्त करती हैं जहाँ व्यक्ति ही नहीं, वस्तुएँ भी अपना सामान्य धर्म छोड़ चुकी हैं, यह छोड़ना भी इतना गहरा है कि उसके वास्तविक अस्तित्व का पता भी नहीं चलता। 'कोर्णाक सूर्य मंदिर' शीर्षक कविता में नरेश जी ने प्रभावशाली ढंग से इस विडंबना को व्यंजित किया है। कवि विषम होती परिस्थितियों के समक्ष हथियार डालने के बजाय उससे संघर्ष की प्रेरणा देता है। भले ही इस संघर्ष की परिणति पराजय हो; क्योंकि यह पराजय आगामी जय की सुदृढ़ पीठिका निर्मित करती है। मच्छर के काटने से मरने के बजाय समर में मरना लाख गुना श्रेयस्कर है। अरुण कुमार साहित्य के साथ–साथ देश की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक नब्जों की गहरी पहचान रखते हैं। 'आजादी का अमृत महोत्सव और नया साम्राज्यवाद' शीर्षक अपने आलेख में अरुण कुमार ने पूँजी में आमजन की हिस्सेदारी (आजादी के बाद) के प्रश्न पर गंभीरता से विचार किया है। भारत को स्वाधीनता के हर्ष के साथ विभाजन का विषाद भी मिला है। यह विभाजन भी शांतिपूर्ण तरीके से नहीं हुआ था। दोनों ही ओर से सांप्रदायिक हिंसा हुई। ऐसे में

देश के नवनिर्माण का प्रश्न कोई सरल कार्य नहीं था। इस संदर्भ से जुड़े कई प्रश्नों पर अरुण कुमार ने विस्तार से विचार किया है।

आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग की एक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि वह अपने को सदैव विशिष्ट समझता है। 'भारतीय बुद्धिजीवी : चिराग तले अँधेरा' शीर्षक आलेख में व्यक्ति के भीतर प्रबल होती इस प्रवृत्ति का गंभीर विश्लेषण किया गया है। 'संप्रभुता और लोकवृत' शीर्षक आलेख में विमर्शकार मृत्युंजय ने यह स्पष्ट किया है कि अब विश्व राजनीति अर्थनीति की अनुगामिनी बनकर रह गई है। यही कारण है कि व्यवस्थाएँ एवं सरकारें तो बदलती हैं, किंतु लक्ष्य नहीं बदलते। मृत्युंजय के शब्दों में, 'किसी भी तरह की तानाशाही एक दिशा और एक भूगोल में विजयी होकर तुष्ट नहीं होती, उसके पाँव आक्टोपस की तरह होते हैं। और उनकी जिजीविषा होती है तिलचट्टे की तरह।' साहित्य में समाज प्रतिबिंबित होता है और आज का सामाजिक जीवन बहुत कुछ राजनीति और अर्थनीति से निर्धारित होता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जाति का प्रश्न भी एक जटिल समस्या है जो सामाजिक संरचना में गहरे धँसी है। ओमप्रकाश मीना ने 'हिंदी कथा साहित्य के जरिए आदिवासी राजनैतिक संघर्ष की पड़ताल' शीर्षक आलेख में वर्णवादी साहित्य, इतिहास एवं मिथकों में आदिवासियों के संघर्ष की भ्रामक व्याख्या को विशेष रूप से रेखांकित किया है। अपनी स्थापना के पक्ष में उन्होंने विपुल आदिवासी संदर्भ उद्धृत किए हैं। आदिवासी साहित्य के मूल्यांकन की दिशा में अपेक्षाकृत नवीन एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। इस पत्रिका में 'उर्दू है जिसका नाम' (शकील सिद्दिकी) शीर्ष आलेख बिलकुल भिन्न कोटि का है और अपने विश्लेषण के दायरे में उर्दू के रचनाकारों, आलोचकों और भाषा शास्त्रियों के साथ–साथ अनेक सामाजिक संदर्भों को भी समेटता चलता है। लेखक ने आलेख के प्रारंभ में ही यह चिंता जतायी है कि उर्दू का दायरा उत्तरोत्तर संकुचित हुआ है, बावजूद इसके कि उर्दू साहित्य की लोकप्रियता बहुत प्रभावित नहीं हुई है। सामान्यजन में अभी भी इसका सम्मोहन है। यही कारण है कि इसकी लिपि से अपिरिचित होने के बावजूद अनेक आलोचकों ने इसका विश्लेषण किया है।

सार्वभौमिकता और स्थानीयता के प्रश्न को उठाते हुए आलोचक गोपीचंद नारंग को उद्धृत किया है–'काव्य और साहित्य में स्थानीयता सार्वभौमिकता और स्थानीय संघर्ष बहुत पुराना है, परंतु साहित्य की विशिष्टता स्थानीय सिद्धांतों से ही निर्मित होती है। उर्दू मिली–जुली साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराओं के भीतर से उभरी है और स्वयं भी अपना चित्रांकन करती है। हिंदी, बांग्ला और मराठी से इसका संबंध मूलभूत और आधारभूत है। उसका मानस एवं स्वभाव मिला–जुला हिंदुस्तानी है, परंतु उसमें अरबी और फारसी प्रभावों का रंग चोखा है। उसका काव्यशास्त्र शेष तमाम भारतीय भाषाओं से इस दृष्टि से पृथक है कि उसने अरबी–फारसी तत्वों को इंडिक से आबद्ध करके एक नवीन संस्कृति निर्मित की है। जिसके कारण यह न तो

अरबी–फारसी की कार्बन कॉपी है, न संस्कृत की।' पूरा आलेख जानकी प्रसाद शर्मा, वली दकनी, मीर तकी मीर, गालिब, नजीर मुहम्मद कुली कुबुब शाह, वाजिद अली शाह, मंटा, कृश्न चंदर, इस्मत चुगताई, निदा फाजली, शमशेर, कबीर के विचार एवं साहित्य–वैभव से संदर्भित है। प्रसंग के अनुकूल हिंदी नवजागरण और धर्म निरपेक्षता के संदर्भ में भी उर्दू में भी भूमिका रेखांकित की गई है।

तरसेम गुजराल की पहचान कथाकार और कथालोचक दोनों रूपों में रही है। उन्होंने बलवंत सिंह के प्रसिद्ध उपन्यास 'काले कोस' की मार्मिक समीक्षा की है। देश के विभाजन के उपरांत सांप्रदायिक साझेपन को रेखांकित करने वाला यह उपन्यास भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह उपन्यास हिंदू–मुस्लिम द्वेष के तथ्यों को सामने रखता है तो दोनों के बीच सद्भाव कायम करने की कोशिशें को भी प्रत्यक्ष करता है। इसमें केवल आलोचनात्मक वैचारिक तत्व ही नहीं हैं, वरन सर्जनात्मक लेखन का भी अनुपात अधिक है। इस दृष्टि से सुभाष पंत का उपन्यास अंश (जब घर में एक सुरंग बन गई) महत्वपूर्ण है। मृत्युंजय सिंह द्वारा संपादित 'कथांतर' भाग–1, भाग–2 की विस्तृत समीक्षा उक्त संदर्भ ग्रंथ की उपयोगिता सिद्ध करती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह प्रख्यात कथाकार होने के साथ–साथ अन्य ज्ञानानुशासनों के गंभीर अध्येता रहे है। उन्होंने प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह के भीतर कथाकार के सूत्र तलाशे हैं। शीर्षक दिया है–'नामवर सिंह यदि कहानीकार होते!' डायरी में लिखी गई 'कहानी' विषयक टिप्पणियाँ, कहानियों के शीर्षक एवं कहानी लिखने के विचार आदि को आपस में अनुस्पूत कर लेखक ने पूरा वितान रचा है। नामवर सिंह व उनके कहानी विषयक विचार को समझने के लिए ही नहीं, वरन रचना और रचना–प्रक्रिया की बहुत सारी बारीकियों को समझने के लिए भी इसे अवश्य पढ़ा जाना चाहिए।

'अंतिम प्रणाम' रमाकांत श्रीवास्तव की मशीनीकरण की तीव्र होती प्रक्रिया एवं तदजन्य संवेदना से संबंधित कहानी है। अपने अनुभव एवं संवेदना की नवीनता के कारण ही नहीं, भाषा एवं अभिव्यक्ति के अन्य कौशलों की दृष्टि से भी यह कहानी महत्वपूर्ण है। हरियश राय की कहानी 'चिराग' अंधविश्वास को चीरने वाला चिराग सिद्ध होती है। रूढ़िग्रस्त संस्कारों के कारण लोग दुनिया के ज्ञान–विज्ञान से परिचित होने के बावजूद रूढ़ियों को ढोते चलते हैं। सरल सहज भाषा में महत्वपूर्ण संदेश प्रेषित करने का उनका अपना कौशल है जो उन्हें अन्य कथाकारों से पृथक करता है। कुमार अंबुज मूलतः कवि हैं, किंतु कहानी और आलोचना के क्षेत्र में भी उन्होंने हाथ आजमाए हैं। 'मुझे किसी पर विश्वास नहीं रहा' परिकथा में प्रकाशित कहानियों में अत्यंत महत्वपूर्ण कहानी है। जीवन में बढ़ती यांत्रिकता, शहरीकरण की तीव्र प्रक्रिया एवं छीजते संवेदनात्मक जीवन का स्वभाविक एवं प्रमाणिक चित्रण इस कहानी में प्रभावी ढंग से है। भाषा में काव्यात्मक प्रवाह विशेष रूप से आकर्षित करता है। स्वयं कुमार

अंबुज लिखते हैं–'निचोड़ यह कि ज्यों–ज्यों सभ्यता का विकास होता चला जाता है, उतना ही विश्वास का संकट गहरा जाता है। अब वैश्विक सभ्यता विकास के अंतिम कगार पर है यानी, कृत्रिम बुद्धिमता चलन में आ रही है। हरि भटनागर हिंदी के उन गिने–चुने कथाकारों में हैं जिन्होंने हिंदी कहानी की संवेदना का पाट चौड़ा किया है। विशेषकर हाशिए के लोगों के जीवन का निर्मम यथार्थ उनकी कहानियों में व्यंजित हुआ है। 'आपत्ति' कहानी में सुअरिया के माध्यम से अनेक तथ्य मनोवैज्ञानिक एवं प्रतीक रूप व्यंजित हुए हैं। इस अंक की महत्वपूर्ण कहानियों में 'आपत्ति' अग्रिम है। महेश दर्पण की 'दर्शक' कहानी भी हमें विशेष रूप से आकर्षित करती है। 'बँसफोर बाड़' (सूर्यनाथ सिंह), 'गंगाराम का देश कहाँ है' (राजेंद्र लहरिया), 'गुनाह–ए–इश्क' (उर्मिला शिरीष), 'डॉक्टर फारूकी का क्लिनिक' (वैभव सिंह), 'सॉरी पापा, मैं आपको अनफ्रेंड कर रहा हूँ' (धनंजय चोपड़ा) इस अंक की अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। विजय शर्मा बिना किसी प्रदर्शन के महत्वपूर्ण कार्य करने वाली लेखिकाओं में हैं। मनोरंजन के साधन और उनका भौड़ा–तामसिक प्रदर्शन सिनेमा जगत में सामाजिक मूल्यों के होते क्षरण एवं बढ़ती हुई व्यवसायिकता का प्रमाणिक विश्लेषण है। फूहड़ प्रदर्शन से लोगों की चेतना को विकृत करने का कार्य इधर की फिल्मों ने विशेष रूप से किया है। सिनेमा पर सूरज कुमार का भी आलेख 'नई सदी का सिनेमा' विशेष पठनीय है। विजय कुमार, राकेशरेणु, एकांत श्रीवास्तव, आर.एस. हरनोट, सुषमा सिन्हा, शंकरानंद, निवेदिता झा आदि की कविताएँ इस अंक को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। राकेश रेणु की 'सवाल' कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो हाशिए के व्यक्ति को और हाशिए पर डालने की राजनीति को निवृत्त रूप में प्रस्तुत करती है। प्रख्यात आलोचक सियाराम शर्मा ने 'गाता जाए बंजारा' संस्मरण, रमाकांत श्रीवास्तव की समीक्षा के बहाने कला–जगत के वर्तमान परिप्रेक्ष्य को बिंबित किया है। अनेक अनावृत्त पक्ष उजागर हुए हैं। अनिल अनलहातु ने 'रुई लपेटी आग' 'अवधेश प्रीत' की समीक्षा के बहाने युद्ध की विभीषिका एवं युद्ध के बनते जा रहे नित्य परिवेश को विश्लेषित किया है। सुषमा मुनींद्र 'कोलाहल' और पूनम सिंह 'कबीर' ने अपनी संवेदनात्मक प्रभविष्णुता के कारण विशेष स्थान बनाया है। प्रज्ञा कहानी 'काठ के पुतले' अपनी बुनावट एवं अंतर्वस्तु दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। 'रोशनी के बीच अँधेरे' 'आशीष दशोत्तर' सामाजिक विडंबना को व्यक्त करने वाली कहानी है। 'शहर का चाँद' 'सरिता कुमारी' ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के अंतद्र्वंद्व को व्यक्त करने वाली कहानी है। अनुभव की ताजगी एवं भाषा की सादगी इस कहानी का मुख्य आकर्षण है। मनीष वैद्य गाथा अभी खत्म कहाँ हुई, चंदू तुलसी तराजू, अनिता रश्मि संकल्प, जयमाला सुभाष चौक, अजय मेहताब स्वप्न दंश, शंकर खोह आदि कहानियाँ भी पठनीय हैं। 'खोह' शहद निकालने वाले जोखू के माध्यम से हाशिए पर डाल दिए गए श्रमिक वर्ग का बिंबन है। 'याद करते न बने और भुलाए न बने' महेश दर्पण द्वारा

मोहन गुप्त की पुस्तक 'भुलाए न बने' की मार्मिक समीक्षा है। इस पुस्तक में साहित्य और प्रकाशन जगत के कुछ ऐसे तथ्य हैं जो पहली बार उजागर हुए हैं। 'असंभव के विरुद्ध' 'प्रकाश देवकुलिश, कविता–संग्रह' की अनवर शमीम कृत वस्तुनिष्ठ समीक्षा में महत्वपूर्ण है।

'स्वप्न दंश' अपनी भाषा के कारण विशेष रूप से आकर्षित करने वाली कहानी है। 'परिकथा' ने जिन नई प्रतिभाओं को सामने लाने की भूमिका निभाई है, उनमें सरिता कुमारी भी परिगणित हैं। कुल मिलाकर यह अंक अत्यंत संग्रहणीय है और ऐतिहासिक भी।

❑❑❑

28

हिंदी बाल साहित्य



सुरेंद्र विक्रम

अभिरुचि का विषय– बाल साहित्य, नई कविता और इतिहास लेखनाकृतियाँ– 'नई कविता लघुमानव और नैतिक संक्रमण', 'समकालीन बाल साहित्यः परख और पहचान', बालसाहित्यः परंपरा प्रगति और प्रयोग', 'हिंदी बाल साहित्य विविध परिदृश्य', 'हिंदी बाल साहित्य शोध का इतिहास', 'हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास', आदि 24 कृतियाँ प्रकाशित। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ से दो बार तथा चालीस से अधिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित। संप्रति–लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध क्रिश्चियन कॉलेज में विभागाध्यक्ष।

विगत कुछ दशकों में हिंदी बाल साहित्य को लेकर जो जागरूकता आई है, उसने पिछले सारे रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए हैं। यह सुनते–सुनते कान पक गए थे कि हिंदी में बाल साहित्य का कोई भविष्य नहीं है बाल साहित्य बचकाना साहित्य है, बाल साहित्य में शोध की कोई संभावनाएँ नहीं हैं, बाल साहित्य सृजन में वही लोग हाथ आजमाते हैं जो सब जगह से थके–हारे होते हैं। मगर पिछले दो दशकों में जितना बाल साहित्य पर काम हुआ है, वह चौंकाने वाला है। इस अभूतपूर्व प्रगति का आकलन भले ही उस स्तर पर नहीं हुआ है, लेकिन सच को बरगलाया भी तो नहीं जा सकता है।

कोरोना काल में जब सारी गतिविधियाँ ठप्प पड़ी थीं, तब बच्चों की ऑनलाइन कक्षाओं में बाल साहित्य साँसें ले रहा था। पाठ्यक्रमों में निर्धारित कविताओं–कहानियों से घर बैठे अध्यापक–अध्यापिकाएँ बच्चों को जीवंत बनाए हुए थे। उनके बनाए वीडियो से बच्चों की पढ़ाई तो हो ही रही थी, उनके मनोरंजन का साधन भी यही बने हुए थे। यूट्यूब पर बनाकर डाले गए वीडियो इतने लोकप्रिय हुए कि इनकी अनुगूँज आज भी सुनाई दे रही है। तकनीकी विशेषज्ञ बाल साहित्यकारों ने भी अनेक रोचक वीडियो बनाकर बच्चों को अपनी रचनाओं से जोड़ा। विद्यालयों के दैनिक दिनचर्या में बाल साहित्य की अनुगूँज सुनाई दे रही थी। कोरोना की लहर समाप्त होते ही बाल साहित्य की पुस्तकों की बाढ़ आ गई। प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट सहित अनेक प्राइवेट प्रकाशकों ने बाल साहित्य की सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित कीं। हिंदी बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं, अनेक प्रतिष्ठित बाल साहित्यकारों तथा भारतीय भाषाओं पर केंद्रित तुलनात्मक अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध प्रबंध प्रस्तुत किए गए।

अनेक शोधार्थियों को बाल साहित्य पर पी.एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त हुईं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विभिन्न राज्यों से वर्षों से उठाई जा रही बाल साहित्य अकादमी की माँग पहली बार कार्यान्वित हुई। राजस्थान सरकार ने जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी की स्थापना करके एक ऐतिहासिक फैसला लिया है।

बच्चों को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में महत्व देना ही बाल साहित्य को प्रश्रय देना है। यह भी सच है कि बच्चों की जिज्ञासाएँ अनंत हैं, इसलिए उनके लिए आयु वर्ग को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक साहित्य का प्रकाशन हो, उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायक उन सभी चीजों को विशेष रूप से मुहैय्या कराया जाए जो उनके लिए उपयोगी हैं।उनके खुले संसार का चतुर्दिक विकास हो, उनके जितने भी क्रिया व्यापार हैं सब सक्रिय हों, उनकी हर समस्या का समाधान हमारी प्राथमिकताओं में होना चाहिए।

हिंदी बाल साहित्य लगभग डेढ़ सौ वर्षों की लंबी यात्रा तय करके आज यहाँ पहुँचा है। इस दौरान अनेक उतार–चढ़ाव झेलते हुए इसमें अनेक पड़ाव भी आए हैं। अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों ने इसे बाएँ हाथ से ही सही लेकिन अपनाया है। कुछ वरिष्ठ बाल साहित्यकारों ने तो अपना पूरा जीवन ही लगा दिया। कभी बाल साहित्य की पुस्तकों की अधिकतम पृष्ठ संख्या 32 हुआ करती थी, आज बाल साहित्य मोटे–मोटे ग्रंथों में तब्दील हो गया है। रचनावलियाँ और समग्र भी प्रकाशित हो रहे हैं। कोश भी प्रकाशित हो रहे हैं। यह सब इस अर्थ में भी सुखद है कि अब बाल साहित्य के महत्व को गंभीरतापूर्वक स्वीकार किया जाने लगा है।

सन् 2022 में सबसे अधिक बच्चों की कविताओं और कहानियों की पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि कविताएँ बच्चों को बहुत प्रिय होती हैं। इनसे बच्चे सहज ही अपना तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। कहानियाँ हमारी धरोहर होती हैं जिन्हें बच्चे अपनी दादी–नानी से निरंतर सुनते रहते हैं। मगर आज की पीढ़ी के सामने समस्या यह है कि दादी–नानी के पास न तो समय है और न उन्हें कहानियाँ कंठस्थ हैं। मौलिक कहानियों की बात जाने दीजिए, लोककथाएँ भी दादी–नानी से पीछे छूटती जा रही हैं।

इस वर्ष प्रकाशित डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की 47 बाल कविताओं का संग्रह है– 'खेल खेलना बहुत जरूरी'। इसमें बच्चों के आसपास के परिवेश को प्रमुखता से रेखांकित किया गया है। आपसी रिश्तों को भी इस संग्रह की कविताओं का विषय बनाया गया है। कोरोना की त्रासदी से उबरने के लिए 'मास्क लगाना बहुत जरूरी', 'ऑक्सीजन', 'ऑक्सीमीटर' जैसी कविताएँ भी कवि की ज़द में हैं, तो 'खेल खेलना बहुत जरूरी', 'खाना खाना बहुत जरूरी' और 'यदि मैं फिर बच्चा बन जाऊँ' तथा 'क्यों लड़ते हैं देश'– जैसे विषयों को कवि ने इस संग्रह में स्थान दिया है। कुहू और

रीना के बनाए रंगीन चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक पाठकों द्वारा अवश्य पसंद की जाएगी।

'भालू दादा चले कार' में डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के 30 शिशु गीतों का संग्रह है जिसमें से अधिकांश जानवरों पर केंद्रित हैं। चूहा, बिल्ली, बंदर, भालू, चिड़िया से लेकर चूहा–चुहिया तक मनोरंजन की चाशनी में पगे इन शिशु गीतों में विषय–वैविध्य और मनोरंजन का पूरा ध्यान रखा गया है। अतुल वर्धन के चित्रों ने इनकी गुणवत्ता में और वृद्धि की है। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल के बाल गीतों की पुस्तक 'खेल खेलना बहुत जरूरी' तथा शिशु गीतों की पुस्तक 'भालू दादा चले कार में' भी साज–सज्जा और प्रस्तुति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। रंगीन चित्रों से पुस्तक का न केवल आकर्षण बढ़ा है, बल्कि आँखों को सुखद अनुभूति हो रही है। पुस्तक में प्रयुक्त उत्कृष्ट कागज पुस्तक की गुणवत्ता में चार चाँद लगा रहा है।

'बूँदों की चौपाल' डॉ. आर.पी. सारस्वत के संपादन में प्रकाशित 555 विविधात्मक बाल काव्य संकलन है जिसमें 201 बाल साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रंथ के प्रारंभ में संपादक की विस्तृत भूमिका इस अर्थ में उल्लेखनीय है कि इसी बहाने बाल काव्य के समसामयिक परिवेश का आख्यान प्रस्तुत किया गया है। ऐसे श्रमसाध्य कार्य बाल साहित्य की प्रगति में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाते हैं। इस महत्वपूर्ण संपादन के अतिरिक्त डॉ. आर. पी. सारस्वत ने यह 'बरगद का पेड़' (बालगीत संकलन) तथा 'मन के पुष्प खिलाए रखिए' (किशोर गीत संकलन) का उपहार भी बच्चों को भेंट किया है। इनमें भाँति–भाँति के गीतों की संगति है जो संगीत की लय पर थिरकने के लिए तत्पर हैं। बालगीत संकलन में तो इंटरनेट से लिए गए चित्रों का संयोजन है, मगर किशोर गीतों का संकलन भी बिना किसी चित्र के अपना प्रभाव छोड़ने में समर्थ हैं।

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से प्रकाशित 'जूता जी के डॉक्टर' (राम करन), 'शब्दों की शरारत' (दिशा ग्रोवर) तथा 'सुनो कहानी' (सुरेंद्र विक्रम) इस वर्ष प्रकाशित बाल कविताओं की पुस्तकें हैं। 'जूता जी के डॉक्टर' में आधुनिक परिवेश से जुड़ी हुई विभिन्न विषयों पर केंद्रित 47 छोटी–बड़ी बाल कविताएँ हैं जिनके विषय बहुत रोचक हैं। 'खुशियाँ अगर जलेबी होतीं', 'रंगों के अंदर रंग', 'हवा ने खेद जताया', 'बाल की खाल', 'पेड़ों की चिंता' तथा 'चाँद की ड्यूटी'। प्रज्ञा उपाध्याय के रंगीन चित्रों से सुसज्जित पुस्तक ने गुणवत्ता में अवश्य वृद्धि की है। सुरेंद्र विक्रम का 16 पद्यकथाओं का संकलन कविताओं में 'सुनो कहानी है', जिसमें परंपरागत कथाओं को आज के परिवेश में ढालकर प्रस्तुत किया गया है। बच्चे इन पद्य कथाओं के नवीन स्वरूप को पसंद करेंगे, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए।

'शब्दों की शरारत' दिशा ग्रोवर की 52 बाल कविताओं का संकलन है जिसमें शीर्षक गीत 'शब्दों की शरारत' सहित 'किसने यह पढ़ाई बनाई', 'जल की तितली

मछली', 'कितना जलता है ये सूरज', 'पेड़ चाहते होंगे', 'तरह–तरह की गुदगुदी' तथा 'खेल–कूद भी कैद हुए' जैसे विषयों पर कवयित्री ने अपनी लेखनी चलाई है। विषय–वैविध्य तथा चित्रकार शिवानी का अलंकरण इस संकलन को विशेष सौंदर्य प्रदान कर रहा है।

घमंडीलाल अग्रवाल कई दशकों से बाल साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय हैं और लगातार विभिन्न विधाओं की बेहतरीन पुस्तकों के लेखन और संपादन के द्वारा बाल साहित्य के भंडार को भर रहे हैं। इस वर्ष प्रकाशित उनकी बाल कविताओं की इन पुस्तकों 'हँसी मुफ़्त का टॉनिक' और 'खाओ फल पाओ बल' में उनकी सौ से अधिक रचनाएँ संकलित की गई हैं। पहले संग्रह में प्रकृति, पर्यावरण, जीव–जंतु, मौसम और तीज–त्योहारों पर कविताएँ हैं तो दूसरे संग्रह में अलग– अलग प्रदेशों में पाए जाने वाले फलों पर मज़ेदार कविताएँ हैं। सबसे अच्छे पापा भी घमंडीलाल अग्रवाल की इस वर्ष प्रकाशित बाल कविताओं का संकलन है, जिसमें शीर्षक 'बालगीत' के अतिरिक्त अन्य 35 रचनाएँ हैं। कवि ने इनका गुणगान करते हुए हमारे आसपास की अन्य चीजों को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। मेला, मेहनत, मेरी बहना, मम्मी, मयूरा के साथ सूरज, लाल गुलाब, तितली तथा सपने जैसी विषयक कविताओं को भी इस संकलन में स्थान दिया गया है। पुस्तक में चित्रों का न होना एक सूनापन छोड़ जाता है।

मधु पंत की पुस्तक 'तेईस तराने' में पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियों को गेय कविता के रूप में बच्चों की वय के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में आकर्षक चित्रों के द्वारा प्रस्तुत इन कविताओं में रोचकता का विशेष ध्यान रखा गया है। चूँकि इसमें तेईस कहानियों को ही आधार बनाकर काव्यात्मक प्रस्तुति दी गई है, इसलिए इसका नामकरण 'तेईस तराने' बिलकुल उपयुक्त है।

श्यामपलट पांडेय की दो पुस्तकें 'नई राह है हमें बनानी' और 'ढोल बजाता चूहा आया' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित हुईं, जिनमें क्रमशः 71 और 34 बाल कविताएँ संकलित की गई हैं। संकलन की कविताओं में कहीं जीवन–मूल्यों के महत्व की बात की गई है तो कहीं बच्चों की सीखने–सिखाने की बात है। कुछ कविताओं में घर–परिवार और आपसी रिश्तों का भी ताना–बाना बुना गया है। हमारे आसपास रहने वाले जानवरों से भी इन कविताओं में बच्चों का रागात्मक संबंध स्थापित किया गया है।

'हम धरती के फूल', पुरुषोत्तम तिवारी 'साहित्यार्थी' के 63 बालगीतों का गुलदस्ता है जिसमें भाँति–भाँति के फूल आपस में गुँथे हुए हैं। इनकी खुशबू में ग़ज़ब का आकर्षण है। कुछ कविताओं को छोड़कर अधिकांश कविताएँ थोड़े बड़े बच्चों के लिए हैं। कवि को गाँव–गिराँव से अधिक प्यार है, मगर प्रकृति का बाहुल्य भी उसे मुक्त आकाश में विचरण करने के लिए बाध्य करता है। जंगल का अलग–अलग परिवेश भी कवि को ऐसा प्रभावित करता है कि कहीं वह जंगल में वसंत की बात

करता है तो कभी जंगल में मेला और सैर करने की उसकी अद्‌भुत कल्पना है। 'जंगल में चोरी' एक लंबी पद्‌यकथा का आनंद देती है।

'रामचरितमानस', 'रामायण' हमारे लोकप्रिय धार्मिक ग्रंथ हैं, इनमें ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जिन्हें बच्चों को उनकी सीधी और सरल भाषा में समझाकर उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इन भारी–भरकम ग्रंथों से बालोपयोगी सामग्री का चयन अपने आप में बहुत बड़ा कौशल है। इस कौशल को परिश्रम और अनुभव का लेप लगाकर दीपक गोस्वामी 'चिराग' ने 'बाल रामायण' की रचना करके बच्चों को एक अनोखा उपहार दिया है। उनकी दृष्टि में बालोपयोगी अंशों का चयन खड़ी बोली में करना निश्चय ही चुनौती रही होगी, मगर उन्होंने छंद–विधान, यति, गति, लय और भाषा का ऐसा मणिकांचन प्रयोग किया है कि परंपरागत कथा में कहीं भी फिसलन नहीं है।

'नन्हीं परी'– राजकुमारी चौकसे 'प्रेरणा' की मनभावन 30 बाल कविताओं का संकलन है। इसमें अलग–अलग विषयों की कविताओं में देश, ऋतुएँ, वीर सिपाही, चिड़िया रानी, कोयल काली से लेकर तिरंगा, हरी–सब्जियाँ, जीवन का विज्ञान और अनेक देशों में तबाही फैलाने वाले कोरोना को बाय–बाय कहती कविताएँ हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि टूटते संयुक्त परिवारों से गायब होती दादी भी घर की रौनक के रूप में इस संकलन में उपस्थित हैं। दादी सही अर्थों में पूरे परिवार की धुरी हैं।

'पाँखुरी मुसकाई'– मधुलिका सक्सेना 'मधुआलोक' की 15 बाल कविताओं का संग्रह है जिसमें विषयों की विविधता और बच्चों की रुचियों का विशेष ध्यान रखा गया है। यहाँ तितली जादुई है तो मुर्गा मोटा है, चिड़िया निराली है तो टॉमी प्यारा है। नानी की बात कविता में कई सवाल उठाए गए हैं, अच्छा होता अगर इनके जवाब भी कविता में ही दिए गए होते? रंगीन साज–सज्जा और आवरण प्रभावशाली है।

'प्रकृति के अनुपम रंग–बादल, बारिश और पतंग के संग' यह शीर्षक अनीता सक्सेना की 15 बाल कविताओं के संकलन का है। अच्छा होता कि शीर्षक थोड़ा छोटा होता, जैसा कि पुस्तक में दी गई कविता बारिश–बादल की कहानी है। एक सकोरा कविता में पक्षियों को पीने के लिए पानी रखना कवयित्री की सदाशयता का प्रमाण है। अन्य कविताएँ भी पठनीय हैं।

'अपनी धरती' – डॉ. शशि गोयल की 50 बाल कविताओं का संग्रह है जिसमें वृक्ष की पीड़ा, क्यों देरी से आती धूप, सर्दी अब घर जाओ, बादल का टुकड़ा, कंप्यूटर जी, बागड़बिल्ला तथा कोहरा पर बड़ी मनमोहक कविताएँ हैं। कवयित्री को चंदा से इतना अधिक प्यार है कि उसने चंदामामा की सजा, चंदामामा उमर बताना,,चंदा को ठंड लगी, चंदा का घर, ऐंठा चंदा, चंदा की मूँछें तथा चंदामामा की दौड़ शीर्षक से ढेर सारी कविताएँ एक ही संकलन के लिए लिख डालीं। बच्चों की कविता पुस्तकों

में चित्रों का होना उसकी उपयोगिता को और बढ़ा देता है। इस संकलन में एक भी चित्र का न होना खटकता है।

'तालकटोरा'–शीला पांडेय की 23 बाल कविताओं का संकलन है जिसमें मौसम, प्रकृति, त्योहार के साथ इंद्रधनुष और नोटबंदी पर भी कविताएँ हैं। भइया धौंस जमाता क्यों ? कविता पुस्तक में दी गई है, मगर अनुक्रम में यह छूट गई है। कविताओं की विषयवस्तु अच्छी है, मगर छंदात्मकता का निर्वाह खटकता है। रचनाओं के साथ दिए गए चित्रों में और अधिक परिश्रम की आवश्यकता है।

'मम्मी को कोई समझाए'– अनीता सिन्हा का शीर्षक क्रम में बाल काव्य संकलन है, मगर इसमें शिशुगीतों का भी समावेश है। वस्तुतः यह संकलन शिशुगीतों और बालगीतों का समुच्चय है, जिसमें प्रकृति, परिवेश, फल–फूल, मम्मी–पापा के साथ हाथी, शेर, मछली–तितली आदि को कविताओं का विषय बनाया गया है। संकलन पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि कवयित्री को चूहों से बहुत प्यार है, तभी तो–'चूहों की सभा', 'चूहे की सोच', 'चूहे का सपना', 'चूहे का डर' तथा 'चूहे का बदला' जैसी कविताओं की भरमार है।

शिवचरण चौहान लंबे समय से बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में लगातार लेखन कर रहे हैं। उनकी एक दर्जन से ऊपर पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित उनकी पुस्तक रंग–बिरंगे बालगीत 21 मनमोहक रचनाओं का गुलदस्ता है। इसमें जानवरों पर केंद्रित कविताओं में –'शेर और भालू', गैया और बिलैया तथा मोरनी का मोर अद्‌भुत रचनाएँ हैं। पेड़ और चिड़ियाँ का वार्तालाप बच्चों को खूब पसंद आएगा। रंगीन चित्रों से सजे इस बालगीत संकलन का भरपूर स्वागत होना चाहिए।

वरिष्ठ साहित्यकार सुधा गोयल ने बड़ों के लिए उपन्यास, कहानियाँ, नाटक तथा काव्य संग्रह के साथ बच्चों के लिए भी विभिन्न विधाओं में लेखन किया है। इस वर्ष प्रकाशित उनका बालगीत संग्रह 'कहते फूल हँसो हम जैसे' में उनकी 30 रचनाएँ संकलित की गई हैं। इन कविताओं में आस–पास का परिवेश है तो दादी–नानी से सवाल पूछते बच्चों की टोली। मौसम और प्रकृति पर केंद्रित कुछ अन्य कविताओं में कवयित्री ने बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म निरीक्षण किया है।

डॉ. रंजना शर्मा की 16 लोरियों का संग्रह है 'आ जा री निंदिया'। शिशुओं को आकृष्ट करने के लिए गाई जाने वाली लोरियों का बड़ा समृद्‌ध इतिहास रहा है, मगर अब यह परंपरा धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। शिशुओं को सुलाने, उन्हें चाँद–तारों की सैर कराने के लिए रची गई इन लोरियों में रंगीन, लुभावनी साज–सज्जा और मनमोहक चित्रों ने चार चाँद लगा दिया है। बदलते परिवेश में ऐसे और संग्रहों की आज आवश्यकता है जिससे दादी–नानी के अभाव में पल रहे बच्चों को संस्कार मिल सकें।

'देखो दादू बादल आए'–अशोक कुमार धमेंनियाँ 'अशोक' की 33 बाल कविताओं का संग्रह है जिसमें एक ओर चीन को सबक सिखाती कविता है तो दूसरी ओर जन–गण–मन गाने का संकल्प। लहराते अमर तिरंगे के साथ रामराज्य की परिकल्पना बच्चों को हमारी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ती है। ऐसी ही भावभूमि पर रची गई अन्य कविताएँ भी सहज ही हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। डॉ. राजश्री रावत 'राज' की 40 बाल कविताओं का संकलन – 'अम्मा कहतीं चाँद सलोना' इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि भारत की शान, धरती माता, गाँव–फसलें, चिड़ियाँ, तितली, फल–फूल सभी इसमें उपलब्ध हैं। चलो बचाएँ हम पानी को तथा स्वच्छ भारत अभियान के द्वारा कवयित्री न केवल हमें जागरूक करती हैं बल्कि आगामी पीढ़ियों को सजग और सचेत करते हुए नए पथ पर चलने का आह्वान भी करती हैं।

'साँझ से सुहानी भोर तक' – शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें लोरियों और प्रभातियों की जुगलबंदी है। कुछ ऐसी भी रचनाएँ हैं जो इनकी परिधि में नहीं आती हैं। धीरे–धीरे समाज से इनका प्रचलन समाप्त होता जा रहा है, इस अर्थ में यह संकलन उल्लेखनीय है कि कवयित्री ने खड़ी बोली के साथ कुछ बुंदेली लोरियों को भी इसमें स्थान दिया है। लोरियों और प्रभातियों को अलग–अलग खंडों में बाँटकर पुस्तक में प्रस्तुत करना रचनाकार की सूझ बूझ का परिचायक है।

'नन्हें–मुन्ने गीत' नवोदित रचनाकार शिवम् चौहान के 21 बालगीतों का संकलन है जिसमें अधिकांश रचनाएँ हमारे पास–पड़ोस में दिखने वाले पशु–पक्षियों और जानवरों पर केंद्रित हैं। तितली, भौंरा, कौआ और कोयल, तोता, कबूतर, गिलहरी जैसे जानवरों के साथ गुलाब, मोर, लोमड़ी, बुलबुल पर आधारित कविताओं में बाल मनोविज्ञान की भी पकड़ है। साथ ही मौसमी कविताओं में लौटे बादल, आ गया जाड़ा तथा धूप आदि पर कविताओं का होना संग्रह को समृद्ध बनाता है।

'अम्मा का झबला'– नीलू शुक्ला की 31 बाल कविताओं का संग्रह है, जिसमें कहीं पारिवारिक रिश्तों की मिठास है तो कहीं मेरी अभिलाषा तो कहीं कविताओं के माध्यम से बाल मनोविज्ञान का अलौकिक चित्रण। 'बचपन', 'जीवन का गणित' और बाबूजी जैसी कविताएँ हमें सामाजिक सरोकारों से जोड़ती हैं तो 'चिड़िया', 'तितली', 'बिल्ली', 'फूल–पत्ती', 'गौरैया' आदि कविताओं में समृद्ध विरासत देखने को मिलती है।

'मुझको दूध बिलोने दो'– डॉ. मेजर शक्तिराज की 51 लोरी और प्रभातियों का संग्रह है, जिसका विभाजन 40 लोरियों और 11 प्रभातियों के रूप में अनुक्रमणिका में किया गया है, मगर इसके आवरण और अंदर के पृष्ठ पर बाल कविता अंकित होना खटकता है। लोरियाँ और प्रभातियों का अपना अलग विधान है तथा इनका सृजन विशेष आयु वर्ग के शिशुओं के लिए किया जाता है जबकि बालगीत बड़े बच्चों के लिए लिखे जाते हैं। मेखला, दूध बिलोना जैसे शब्द भी लोरियों के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

'मस्त झूलते लीची लाल'– डॉ. सतीशचंद्र भगत की 21 बाल कविताओं का संकलन है जिसमें कहीं बादलों को आने का आमंत्रण है, तो कहीं बादल आकर आकाश में अगड़म–बगड़म चित्र बनाते हैं। कहीं लीची झूमती है, तो कहीं मनचली पतंग धागे से कटकर झाड़ी में फँस जाती है। अन्य कविताओं में 'पेड़ नीम का', 'चूहे की होली', 'लाल अनार', 'मिठुआ आम' शीर्षक कविताएँ भी पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचती हैं।

उषा सोनी का 40 बाल कविताओं का संग्रह 'बाल सखा' प्राकृतिक उपादानों, जीव–जंतुओं, पर्यावरण, चिड़ियाघर और आपसी रिश्तों को जोड़ता है। पुस्तक में जल के महत्व को बताते हुए महासागर की महिमा का बखान किया गया है। पुस्तकों के महत्व पर केंद्रित कविता बच्चों को संस्कार से जोड़ती है। आपदा बनकर आए कोरोना को जंगल के पशुओं के माध्यम से समझाया गया है। पूरी पुस्तक रंगीन चित्रों से सुसज्जित है, मगर कहीं–कहीं त्रुटियाँ खटकती हैं।

'बच्चे मन के सच्चे'– अशोक कुमार बाजपेयी के 37 बालगीतों का संकलन है। बाजपेयी जी मूलतः बड़ों के रचनाकार हैं, मगर अपने इस पहले संकलन के माध्यम से उन्होंने बाल साहित्य में भी दखल दी है। उन्होंने अपने आत्मकथ्य में इस बात को स्वीकार किया है कि बाल साहित्य लिखना बहुत कठिन है, और यह कठिनाई उनकी बाल कविताओं में सहज ही देखी जा सकती है। उन्होंने परंपरागत विषयों को आधार बनाकर बाल कविताएँ लिखी हैं, मगर इनमें अभी और परिश्रम की आवश्यकता है।

'अकड़म–बकड़म' उपेंद्रनाथ शुक्ला 'सरस' के 27 बालगीतों का संकलन है। शुक्ला जी पेशे से अध्यापक रहे हैं। उन्होंने बच्चों के साथ अपना लंबा समय बिताया है। इस संकलन में उनका अध्यापन अनुभव झलकता तो है, मगर कविताओं की विषयवस्तु में नयापन नहीं है। मेरा तोता, गाय, बादल, होली, दीवाली, मेला, मम्मी–पापा जैसे विषयों पर इतना कुछ पहले से ही बच्चों की कविताओं में लिखा गया है कि नए की गुंजाइश कम रहती है। इन विषयों पर नए ढंग से सोचकर लिखना बहुत श्रमसाध्य कार्य है।

अजीत सिंह राठौर की दो बाल कविताओं की पुस्तकें 'बिल्लो मौसी' और 'चुक्की बिल्ली' में क्रमशः 18 और 17 रचनाएँ हैं। राठौर जी लुल्ल कानपुरी के नाम से हास्य–व्यंग्य के मंचों पर कविता पाठ करते हैं। इधर बच्चों के लिए भी कविताएँ लिखने का उन्होंने मन बनाया और धड़ाधड़, 32–32 पृष्ठों के कई संकलन छपवा लिए। आलोच्य वर्ष में छपे इन संकलनों को पढ़ते हुए ऐसा लगा कि अभी रचनाकार को इस क्षेत्र में आने के लिए कठिन श्रम की आवश्यकता है। उदय नारायण 'उदय' की बाल कविताओं की दो पुस्तकें– 'नन्हीं फुलवारी' और 'किलकारी' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित हुईं। दोनों पुस्तकों में 34–34 कविताएँ हैं। पुस्तकों के आवरण बाल अभिरुचियों के अनुकूल हैं। पुस्तक 'नन्हीं फुलवारी' में 'गुरुत्वाकर्षण', 'सूरज पूरब में

क्यों उगता', 'बदल गए बापू के बंदर' और 'रसगुल्लों की खेती' कविताएँ कवि की आधुनिक सोच पर आधारित हैं, तो 'किलकारी में चाँद तुम कैसे हो'?, आया मेरे गाँव मदारी तथा 'चिड़िया का घोंसला' कविताएँ बच्चों की स्वस्थ मानसिकता की पड़ताल करती हैं।

कमलेश शुक्ला 'कीर्ति' की बाल कविताओं की दो पुस्तकें 'बंदर मामा पहने चश्मा' तथा 'ढोल बजाता हाथी आया' में क्रमशः 21 और 26 बाल कविताएँ संकलित की गई हैं अधिकांश कविताओं के विषयों में पुनरावृत्ति है। भालू–बंदर, सरदी–गरमी, खेल कूद, बरफी–रसगुल्ला पर पहले से बाल कविताओं का अंबार लगा हुआ है। पुस्तक की कविताओं में कोई नयापन नहीं है। जगह–जगह कविताओं में छंद का अवरोध होना भी खटकता है। इक्कीसवीं सदी में बाल कविताओं में नए–नए विषयों पर लिखने की आवश्यकता है।

जया मोहन की बाल कविताओं की दो पुस्तकें 'चटकारा' और 'चिड़ियाघर' भी इसी वर्ष प्रकाशित हुईं। दोनों पुस्तकों की अधिकांश कविताओं में सपाटबयानी है। छंदों का निर्वाह भी बच्चों के अनुकूल नहीं किया गया है। दोनों पुस्तकों के आवरण तो ठीक हैं, मगर अंदर चित्रों का न होना खटक रहा है। कुछ कविताएँ तो गद्य जैसी लगती हैं। कहीं–कहीं सीधे उपदेश भी हैं, इससे रचनाकार को बचना चाहिए था।

'बच्चों की रेल'– राजकुमार जैन राजन की 51 बाल कविताओं का संग्रह है जिसमें विविध विषयों पर रंग बिरंगी कविताएँ संकलित की गई हैं। राजन अपने विद्यार्थी जीवन से बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। पहले 'राकेट' नामक बाल पत्रिका निकालकर उससे बच्चों और बाल साहित्यकारों को जोड़ा, बाद में मौलिक बाल साहित्य लिखकर अपनी जगह बनाई। यह संकलन उनके पूर्व प्रकाशित संकलनों की तरह पाठकों द्वारा पसंद किया जाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ. ओम निश्चल ने बाल साहित्यकार द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी पर पहले समीक्षात्मक पुस्तक लिखी, बाद में तीन खंडों में रचनावली संपादित की। अनेक शोधपरक आलेख लिखने के बाद बच्चों के लिए आधुनिक बालगीतों की दो पुस्तकें . 'कुदरत की लय' और 'पूछ रही है चिया' लिखकर उल्लेखनीय कार्य किया है। 'कुदरत की लय' में 20 बाल कविताएँ तथा पूछ रही है चिया में 17 बाल कविताएँ संकलित की गई हैं। कोरोना काल में घर में बैठे–बैठे बच्चे जब उब गए तो उनकी जिज्ञासा को कवि ने – 'माँ, अब कब स्कूल खुलेंगे' कविता में बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। इन कविताओं का एक अलग मिज़ाज है। इन्हें एक प्रयोग के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

डॉ. ओम निश्चल और डॉ. विनोद कुमार माहेश्वरी के संपादन में प्रकाशित द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी 'बालगीत कोश' को इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकों में महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जाना चाहिए। यह किसी बाल साहित्यकार पर केंद्रित पहला बाल गीत कोश है। इस कोश में माहेश्वरी जी की चुनी हुई बाल कविताएँ संकलित

की गई हैं। आशा है भविष्य में अन्य बाल साहित्यकारों पर भी ऐसे और कार्य संपन्न होंगे।

डायमंड पॉकेट बुक्स लंबे समय से पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी विशेष उपस्थिति के कारण चर्चा में रहा है। यहाँ से प्रकाशित सैकड़ों पुस्तकें पाठकों में अत्यंत लोकप्रिय रही हैं। भारत कथामाला डायमंड बुक्स के निदेशक नरेंद्र वर्मा जी का ड्रीम प्रोजेक्ट है, जिसके तहत उन्होंने पूरे देश और विदेश से चुनकर संपादकों का चयन किया है। इस योजना में प्रकाशित प्रतिष्ठित पुस्तकों में रचनाकारों को ससम्मान स्थान दिया गया है। ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तकों में '21 श्रेष्ठ बालमन की कहानियाँ' 'हिमाचल', 'झारखंड', 'आस्ट्रेलिया' आदि अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण हैं। ऐसी ही अलग–अलग राज्यों से चयनित कहानियों के अनेक संकलन प्रकाशित करके डायमंड पॉकेट बुक्स ने अच्छी पहल की है, इसका व्यापक स्तर पर स्वागत किया जाना चाहिए।

रूपसिंह चंदेल वह नाम है, जिसने हिंदी साहित्य को बड़ी गंभीरता से लेकर अद्‌भुत सृजन किया है। एक समय में रूपसिंह चंदेल ने बच्चों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी थीं। उस समय की बच्चों की पत्र–पत्रिकाओं में उनकी बाल कहानियों की धूम रहती थी। उन्होंने बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर अनेक उत्कृष्ट कहानियाँ लिखीं, जिनपर उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुए। ऐसी ही उनकी चुनी हुई 52 कहानियों का संग्रह 'श्रेष्ठ बाल कहानियाँ' शीर्षक से दो भागों में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह की बाल कहानियों में समय सापेक्ष गतिविधियों को बखूबी रेखांकित किया गया है। इन पुस्तकों के बहाने चंदेल जी की बाल साहित्य यात्रा का पुनःस्मरण सुखद है, वहीं बीच–बीच में लिखी गई उनकी श्रेष्ठ कहानियों का संचयन भी है।

सुधा भार्गव की बाल कहानियों की तीन पुस्तकें 'मिश्री मौसी का मटका, बाल झरोखे से हँसती' – 'गुदगुदाती कहानियाँ' और 'यादों की रिमझिम बरसात' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित हुईं हैं। मिश्री मौसी का मटका की कहानियों में कहीं हास्य का पुट डालकर बच्चों का भरपूर मनोरंजन करने का प्रयास किया गया है तो कहीं विज्ञान की देन को सरल और स्पष्ट शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है। इन कहानियों की क्रमबद्धता में जबर्दस्त आकर्षण है। दूसरी पुस्तक सुधा भार्गव की प्रतिनिधि बाल कहानियों का गुलदस्ता है जिसमें चयनित 20 कहानियों को संकलित किया गया है। इन कहानियों में भी वही आकर्षण है जो पहले संग्रह में है। उनकी तीसरी पुस्तक में भी 20 बाल कहानियाँ संकलित की गई हैं जो यादों के बक्से को खोलकर निकाली गई हैं। सुधा भार्गव वरिष्ठ लेखिका हैं। उन्हें बाल मनोविज्ञान और बालोपयोगी भाषा पर जबर्दस्त अधिकार है। वे अनुभव की आँच में पकी हुई इन आत्मकथात्मक कहानियों को इतनी संजीदगी से प्रस्तुत करती हैं कि आधुनिक परिवेश में पले–बढ़े बच्चे इन्हें पढ़कर दाँतों तले उँगली दबा लेंगे।

इस वर्ष प्रकाशित डॉ. शशि गोयल की बाल कहानियों की पुस्तक–'हरी आँखें' में 20 बालकहानियाँ संकलित की गई हैं। इन कहानियों में कहीं छोटी–सी बचत की बात है तो कहीं पेड़ लगाकर पर्यावरण को शुद्ध और संतुलित करने का संकल्प है। झूठी शान से आने वाली मुस्कुराहट स्थाई नहीं होती है, यह भी इन कहानियों का मंतव्य है। दूसरों की सहायता करना और अपने सपनों की दुनिया को हकीकत में बदलना भी इन कहानियों का उद्देश्य है। बच्चों की कहानियों में चित्रों का होना उनकी गुणवत्ता में चार चाँद लगाता है, मगर पुस्तक में एक भी चित्र का न होना खटकता है।

नीलम राकेश की तीन बाल कहानियों की पुस्तकें– 'चुलबुली कहानियाँ', 'लहरिया पतंग' और 'दीपा का संघर्ष' इस वर्ष प्रकाशित हुईं जिनमें पहली पुस्तक में सात, दूसरी में पंद्रह तथा तीसरी में भी बड़े कलेवर की सात कहानियाँ संकलित की गई हैं। सभी संग्रहों की कहानियों में बच्चों के परिवेश और उनके मनोविज्ञान को बखूबी चित्रित किया गया है। इन कहानियों का ताना–बाना ही ऐसा बुना गया है कि पाठक स्वयमेव इनसे जुड़ते चले जाते हैं। पुस्तकों में दिए गए श्वेत–श्याम चित्रों में वह आकर्षण नहीं है जो बच्चों को अपनी ओर खींच सकें।

सुमन बाजपेयी की 14 बाल कहानियों का संग्रह 'सीक्रेट कोड और अन्य कहानियाँ' इस वर्ष प्रकाशित उल्लेखनीय संकलन है। पुस्तक में कोरोना आपदा के दौरान बड़ों के साथ बच्चों के जीवन में भी आई रिक्ता और परिवर्तन, प्लास्टिक के प्रयोग से होने वाली हानियाँ और बढ़ता प्रदूषण, इक्कीसवीं सदी की हलचल, पर्यावरण के प्रति जागरूकता जैसे विषयों को कहानियों का विषय बनाया गया है। कहानी में लेखिका का यह संकल्प प्रशंसनीय है कि समाज में बेटियों को भी वही सम्मान मिलना चाहिए जो बेटों को मिलता है। त्योहार हमारे जीवन में ऊर्जा का संचार करते हैं, इसलिए उन्हें उल्लास के साथ मनाना चाहिए। ऐसे ही विषयों पर केंद्रित बाल कहानियाँ इस पुस्तक में उपलब्ध हैं, जिन्हें हर बच्चे को अवश्य पढ़नी चाहिए।

'बिंदली और लड्डू'– पवन चौहान की 16 बाल कहानियों का संग्रह है जिनके शीर्षक ही पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। 'खिलौनों को लग गई ठंड' और 'रिया मुस्कुराने लगी', 'तरकीब ने दिलवाया होली का मज़ा' तथा 'निकल गई हेकड़ी' जैसी कहानियों में बाल मनोविज्ञान को बखूबी रेखांकित किया गया है। इन कहानियों की भाषा में रवानगी है, तथा कथा को विस्तार देने का नायाब तरीका है। इन कहानियों को पढ़ते हुए बच्चों को अपने आसपास का परिवेश अवश्य नजर आएगा।

पंकज चतुर्वेदी की 15 बाल कहानियों का संग्रह है। 'बड़े होने का इंतजार'। इन कहानियों में जहाँ एक ओर मनोरंजन है तो दूसरी ओर मानवीय मूल्यों को बनाए रखने का संकल्प है। इस संग्रह की कहानियों में त्योहारों को भी सांस्कृतिक एकता और

भावनात्मक सौहार्द्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हिंदू–मुस्लिम की आपसी एकता की दुहाई ही नहीं बल्कि जीवंत उदाहरण 'प्यार बाँटते चलो' कहानी में देखा जा सकता है। कहानी बड़े होने का इंतजार तथा बचपन की स्मृतियों को संजोकर रखने का उपक्रम है।

'लौट आओ नीनो'– डॉ. अरविंद दुबे की छह विस्तृत विज्ञान बाल कथाओं का संकलन है जिसमें शीर्षक कहानी के अतिरिक्त 'टाइटन की सैर', 'बैलों वाली कार', 'एक शहर की मौत', 'चुड़ैल वाला कुआँ' और 'गुरू जी कहाँ चले'? शीर्षक कहानियों में कथा और विज्ञान दोनों के बीच में ऐसा तालमेल है कि कथाओं से विज्ञान को अलग नहीं किया जा सकता है। विज्ञान के कथ्यों और तथ्यों को परखकर ही कथाओं का ताना–बाना बुना गया है। अपनी इन विज्ञान कथाओं के प्रयोजन पर भी कहानीकार ने बच्चों से सीधा संवाद किया है। वे कहते हैं, ''मेरे हिसाब से तो जो विज्ञान कथा आप और आपके साथियों की समझ में आए, जो आपको सच्ची लगे, जिसे पढ़ने में आपको आनंद मिले, जो आपके विज्ञान का ज्ञान बढ़ाए, वही सच्ची बाल विज्ञान कथा है।''

संकलन की इन कहानियों को पढ़ते हुए ऐसा बार–बार महसूस हुआ कि सचमुच बाल मनोविज्ञान का गहन अध्ययन करने के बाद ही कहानीकार ने अपनी कलम चलाई है। बाल पाठक इन कहानियों का अवश्य स्वागत करेंगे, इसमें कोई दो राय नहीं है।

'पंखों वाली राजकुमारी'– डॉ. अल्पना वर्मा की दस बाल कहानियों का संग्रह है, जिसमें शीर्षक कहानी के अतिरिक्त 'सबक', 'अब पछताए होत क्या', 'मन के जीते जीत', 'सबसे सुंदर बालिका', और 'दीप जल उठे', 'दो मिनट प्लीज', 'आभार', 'हमें भी साँस लेने दो', तथा 'पानी की पीड़ा' विषयक में बच्चों की संवेदनाएँ, उनका मनोविज्ञान तथा उनके आसपास का परिवेश जुड़ा हुआ है। इन कहानियों में यह भी ध्यान में रखा गया है कि हर बच्चे में कुछ न कुछ विशेषताएँ होती हैं, इसलिए उनकी सब जगह तुलना करना उचित नहीं है। बच्चों को उन्मुक्त आकाश में विचरण करने का अवसर भी प्रदान करना चाहिए, मगर उन पर नजर अवश्य रखनी चाहिए।

'नटखट राजू'– डॉ. सतीश चंद्र भगत की छोटी–छोटी सोलह बाल कहानियों का संकलन है जिसमें 'उल्लू दुम दबाकर भागा', 'सबसे बड़ी सफलता', 'माँ का प्यार', 'बदलाव', 'सृष्टि का जन्मदिवस', 'वह बदल गया', 'सुलझ गई समस्या', 'जीवन में आती खुशियाँ', 'अर्णव ने कहा', 'उसने सीख लिया', 'उड़ना पसंद है', 'आँखों से आँसू छलके', 'सोने की ईंट', 'नदी किनारे पेड़ पर' तथा 'माँ की याद' शीर्षक कहानियाँ हैं। इन कहानियों का कथानक चुनते समय लेखक ने आज के बच्चों की जागरूकता पर विशेष ध्यान दिया है। रहस्य–रोमांच के साथ बाल मनोविज्ञान की पकड़ कहानियों की दूसरी विशेषता है, तीसरी विशेषता है कहानियों की भाषा। संग्रह की सभी कहानियों में एक ऐसा बोध है, जो बच्चों की पठनवृत्ति को बढ़ावा देता है। कहानियों

के साथ दिए गए श्वेत–श्याम चित्र उतने आकर्षक नहीं हैं जिससे सहज ही बच्चों का जुड़ाव हो सके।

आलोच्य वर्ष में ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' की कुल छह बाल कहानियों की पुस्तकें प्रकाशित हुईं– 'रोचक विज्ञान कथाएँ', 'साहसिक कहानियाँ', 'गुब्बारे की सैर', 'जादुई कंपास', 'तोते का भूत' और 'अनोखा चोर'। रोचक विज्ञान कथाएँ पुस्तक में कुल 16 बाल कहानियाँ हैं। वैज्ञानिक विषयों से जुड़ी इन कहानियों में जिज्ञासु बच्चों का स्वप्न में अंतरिक्ष यान में उड़ान भरना, वैज्ञानिक सोच से जुड़े सवालों के जवाब खोजना तथा उपदेश को दरकिनार कर कार्य व्यवहार से सीखने वाले बच्चों के सामर्थ्य को कम न आँकना और निस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करना इन कहानियों का मुख्य उद्देश्य है। 'साहसिक कहानियाँ' जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है इसमें बच्चों को साहसिक ढंग से आगे बढ़ने का संदेश है। इसमें बच्चों का साहस जगाने वाली कहानियों के अतिरिक्त सूझबूझ, रोचकता, सरलता और युक्तिसंगत बातों को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

ओमप्रकाश जी के अन्य संग्रहों 'बच्चो सुनो कहानी', 'जादुई कंपास' और 'अनोखा चोर' में कुल मिलाकर 44 बाल कहानियाँ हैं। इन कहानियों को पढ़ते हुए कहानीकार की रचनाधर्मिता का आकलन आसानी से किया जा सकता है। ओमप्रकाश जी की कहानियों में बाल मनोविज्ञान को लेकर स्वस्थ सोच के कारण उनका बच्चों के बीच में रहना और अध्यापन कौशल शामिल है। निरंतर पत्र–पत्रिकाओं में छपने वाले ओमप्रकाश जी का बाल साहित्य समसामयिक समस्याओं का भी निराकरण प्रस्तुत करता है।

डॉ. गोपाल 'निर्दोष' के संपादन में प्रकाशित 'गुल्लक' में 22 बाल साहित्यकारों की कहानियाँ संकलित की गई हैं। समकालीन बाल साहित्य लेखन में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाले दिविक रमेश, उषा यादव से लेकर दलित शौर्य और भावना भट्ट तक की पूँजी से यह गुल्लक समृद्ध है। संपादक ने बच्चों के अंतर्मन को टटोलने वाली, अंधविश्वासों को दूरकर यथार्थ के धरातल पर समृद्ध परंपरा को विकसित करने वाली कहानियों पर विशेष बल दिया है। सब्जबाग दिखाकर भ्रमित करने वाली कहानियों के स्थान पर आधुनिक सोच को विकसित करने वाली कहानियों से गुल्लक पूरी तरह भरी हुई है।

'चूरन चवन्नी का'– अमित सिमटे की बचपन की यादों का गुलदस्ता है, जिसमें कलियाँ, फूल, पंखुड़ियाँ तो हैं ही इसमें पत्तियाँ, घास–फूस और काँटों को भी संजोकर प्रस्तुत किया गया है। तब चिट्ठियों का जमाना होता था, बिनाका गीत माला सुनने का क्रेज़ था। बचपन की एक्सप्रेस में बैठकर सुकून वाला इतवार मनाया करते थे। तब हर मौसम लाजवाब होता था क्योंकि चूल्हे की रोटी में सोंधी खुशबू छिपी होती थी। लेखक ने बचपन की इन यादों को कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

पुस्तक को पढ़ना सही अर्थों में अपने–अपने बचपन को जीना है। पुस्तक का आवरण आकर्षक है, परंतु अंदर के श्वेत–श्याम चित्रों में वह आकर्षण नहीं है।

आलोच्य वर्ष में घमंडीलाल अग्रवाल की बाल कहानियों की तीन पुस्तकें 'सुनहरे पंख', 'दादी का बेंत' और 'सात बाल कहानियाँ' प्रकाशित हुईं। पहले और दूसरे संग्रह में 25–25 कहानियाँ तथा तीसरे संग्रह में शीर्षक से ही स्पष्ट है कि सात बाल कहानियाँ संकलित की गई हैं। इन सभी कहानियों में बच्चों का अपना संसार समाया हुआ है। उनकी कल्पना में सुनहरे सपने अवश्य आते हैं, मगर यथार्थ का धरातल उन्हें जीवन की सच्चाई से जल्द ही परिचित करा देता है। सच्चाई तो यही है कि बहुत ज्यादा हवाई किले नहीं बनाने चाहिए। संग्रह की कहानियों में नैतिक मूल्यों, मैत्री–भाव, जल संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा, ग्राम्य–जीवन, मनोरंजन और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया गया है। बच्चों के लिए प्रकाशित पुस्तकों में चित्रों का विशेष महत्व होता है, मगर तीनों पुस्तकों में एक भी चित्र का न होना सूनापन छोड़ जाता है।

आलोच्य वर्ष में डॉ. मो. साजिद ख़ान की तीन पुस्तकें प्रकाशित हुईं–'लटकनलाल' की मूँछें, 'लेटरबॉक्स ने पढ़ीं चिट्ठियाँ' तथा 'ढाबेवाला महेश'। ढाबेवाला महेश 12 मार्मिक किशोर कहानियों का संकलन है, जिनके 'आकर्षक' शीर्षक पूरी कहानी पढ़ने के लिए आमंत्रित करते हैं – जाने फिर कब मिलें, 'फिर वह कौन था?', 'क्या सजा है चचा मियाँ', 'सच तो यह है कि'..., 'मियाँ लटकन की पतंगबाजी'। इन कहानियों में शहरी और ग्रामीण जीवन का ऐसा संयोग है कि बकौल कहानीकार, जहाँ गाँव की खुशबू मंद नहीं हुई है और शहर की चकाचौंध अभी पूरी तरह हावी नहीं हो पाई है। जहाँ आपसी मेल–जोल है, मनमुटाव है, आँसू और सिसकियाँ हैं, हँसी और चुहल है, बीती यादों की छुअन है पर इन सबके नीचे संवेदना और करुणा की बहती हुई ऐसी खामोश नदी है, जो मन को कहीं छूती है तो कहीं गीला कर देती है।

संकलन की सभी कहानियों में एक ऐसा चुंबकीय आकर्षण है जिसमें पात्रों से अपनापन साफ झलकता है। एक के बाद एक कहानियों में जो छुअन है उससे पाठक आसानी से अपना तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। अच्छा होता कि इन कहानियों के अनुरूप भावनात्मक चित्र भी होते। पूरे संग्रह में एक भी चित्र का न होना खटकता है।

'लटकनलाल की मूँछें' 11 हास्य बाल कहानियों का संग्रह है, जिनके शीर्षक ही गुदगुदी पैदा करते हैं ––– 'घूरा भाग गया', 'कवि चनानंद', 'मच्छर भिन्नूलाल', 'लटकनलाल की मूँछें', 'लड्डन मियाँ की मुर्गी', और 'घोड़ी बिदक गई', 'अँधेरी रात में', 'नया सूटकेस', 'हाय ये चूहे', 'चिरकुट चंद', तथा 'जुम्मन मियाँ का बकरा'। इन सभी कहानियों में हास्य का ऐसा पुट है कि पूरी पुस्तक एक ही बार में पढ़ी जा सकती है। शिवानी के बनाए चित्रों ने भी इन कहानियों में अलग ढंग का आकर्षण पैदा किया है।

'लेटरबॉक्स ने पढ़ीं चिट्ठियाँ' कहानी में चुन्नी और लेटरबॉक्स का संवाद

बिलकुल मौलिक और प्रभावशाली है। लेटरबॉक्स की स्वीकारोक्ति मन को मोह लेती है।

'मैंने चुपके से तुम्हारी सारी चिट्ठियाँ पढ़ी हैं। इसकी सजा तुम मुझे दे सकती हो। चाहो तो इसके बदले तुम मुझसे बहुत सारी कहानियाँ सुन सकती हो।'' लेटरबॉक्स का मानवीकरण रचनाकार की अनोखी सुझबूझ है। समापन तो इतना जबर्दस्त है कि पाठक की आँखें भी भर आती हैं .''वह जैसे–जैसे चिट्ठी पढ़ता जा रहा था, उसके चेहरे के भाव बदलते जा रहे थे। अंत तक आते–आते उसका मन भर आया। आँखें होतीं तो शायद बरस भी पड़तीं।''

'स्वाभिमानी चिड़िया'– उषा सोनी की 40 बाल कहानियों का संग्रह है जिसकी सभी कहानियाँ पंचतंत्र की तरह जंगल के जानवरों पर केंद्रित हैं। अत्यंत आकर्षक मुखपृष्ठ सहित अंदर रंगीन चित्रों से सुसज्जित इन कहानियों में विषय की दृष्टि से जहाँ विविधता है, वहीं प्रस्तुतीकरण पाठकों को बाँधने में पूरी तरह सक्षम है। जल की उपयोगिता के साथ बाढ़ के प्रकोप को भी इसमें दर्शाया गया है। समय का महत्व न समझने वाले को बाद में पछताना पड़ता है। दूसरों से विश्वासघात करने वाले को एकाकीपन ही खा जाता है। संकलन में एक बात अवश्य खटकती है कि हर कहानी के अंत में शिक्षा अवश्य दी गई है। अच्छा होता कि पाठक कहानी पढ़कर मिलने वाली इस शिक्षा को स्वयं हृदयंगम करते।

कुसुमलता सिंह लंबे समय से बच्चों की विभिन्न गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। उनके पास लेखन, संपादन और संयोजन का व्यापक अनुभव है। इस वर्ष प्रकाशित उनकी बाल कहानियों की पुस्तक 'हवा की घंटी' में कुल 10 बाल कहानियाँ संकलित की गई हैं। जीवन में कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, यही शीर्षक कहानी का उद्देश्य है। अन्य कहानियों में भी साहस और रोमांच, त्योहारों की खुशी, भूल का परिणाम, खेलों का महत्व तथा इतिहास बोध आदि को दर्शाया गया है। पुस्तक की हर कहानी में इतने शानदार, नयनाभिराम तथा मनमोहक चित्र लिए गए हैं कि बरबस आँखें टिकी रह जाती हैं। कागज इतना बढ़िया है कि पुस्तक को लंबे समय तक संरक्षित रखेगा। इस वर्ष सुमन बाजपेयी की दो पुस्तकें 'चुलबुली कहानियाँ' और 'गार्डन ऑफ बुक्स' व अन्य कहानियाँ प्रकाशित हुईं। चुलबुली कहानियाँ में संकलित सभी रचनाएँ वास्तव में पाठकों को उस कल्पना लोक में ले जाती हैं, जहाँ सब कुछ अबूझ, कल्पनातीत और रहस्य–रोमांच की गाथा जैसा प्रतीत होता है। किसी तारे का धरती पर आना, साँप छोटे–छोटे जीवों को खाना छोड़कर उनसे दोस्ती कर ले, बिल्ली और चूहों में आपसी सामंजस्य हो जाए तथा जलपरी से बच्चों की अनूठी मित्रता हो जाए, तो सबकुछ न केवल उल्टा–पुल्टा हो जाएगा बल्कि बदलती दुनिया आश्चर्यलोक में चली जाएगी। ऐसी ही चुनिंदा कहानियों से सजी यह पुस्तक बच्चों को अवश्य पसंद आएगी।

'गार्डन ऑफ बुक्स व अन्य कहानियाँ' में कुल 10 बाल कहानियाँ संकलित की गई हैं। शीर्षक कहानी के अतिरिक्त 'एक्जाम मॉनस्टर', 'ब्रैंडी, बैलेंस बिगड़ गया', 'एक शुरुआत', 'वह रात', 'दरवाजे के पीछे', 'पुतला जल गया', 'नए साल की दस्तक' और 'कोरोना बाय–बाय' कहानियों में बच्चों के आसपास का परिवेश, उनकी समस्याएँ, जीवन की ऊहापोह, खेलकूद और कोरोना जैसी महामारी को बाय–बाय करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सुगम रास्ता बताया गया है। इन कहानियों में जीवन की ललक भी प्रतिबिंबित होती है।

पवन कुमार वर्मा बच्चों के लिए लिखने वाले ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने बड़े परिश्रम से अपनी जगह बनाई है 'जंगल की एकता अनोखी दोस्ती', सपनों की दुनिया, 'हम सब साथ हैं', 'मिट्ठू चाचा', 'दादाजी का मौन व्रत' 'पवन कुमार वर्मा की श्रेष्ठ बाल कहानियाँ', 'मटके वाली कुल्फी' जैसे संकलनों के बाद उनकी इस वर्ष प्रकाशित पुस्तक 'अक़्ल बड़ी या भैंस' में 14 चुनी हुई बाल कहानियाँ संकलित की गई हैं। शीर्षक कहानी के अतिरिक्त इसमें 'नन्हीं गिलहरी', 'उदासी दूर हो गई', 'खूब पढ़ो और खूब बढ़ो', 'नया घर', 'लंच बॉक्स', 'भूत पकड़ा गया', 'विश्वास', 'मेरा रोबोट', चतुराई', 'वह घर पहुँच गया', 'कटहल के कोफ्ते', 'घमंडी बादल' और 'मन का काम' शीर्षक कहानियों में संवेदना, विश्वास, आत्मनिर्भरता के साथ प्राणी मात्र में सहजता को बखूबी चित्रित किया गया है। चित्रकार शिवानी के बनाए चित्रों ने पुस्तक में चार चाँद लगा दिया हैं।

'हंगामा और ताबीज'– शशि जैन की 15 बाल कहानियों का संग्रह है। 'ताबीज' कहानी अंधविश्वास का पर्दाफाश करती है। मेहनत और लगन से कोई काम किया जाए तो उसका परिणाम सकारात्मक ही होता है। कहानी का अंत बड़ा प्रेरणादाई है– ताबीज़ से कुछ नहीं होता, लगन और मेहनत जिंदाबाद।'' ऐसे ही 'सड़क', 'मेरा सपना', 'बगीचा', 'मोहल्ला पुस्तकालय', 'परिवर्तन', 'आचार्य द्रोण', 'मुकाबला', 'किसने मारा', 'शोर', 'स्टेशन का हीरो', 'शनि की महिमा', 'हंगामा', 'हिरण पार्क की सैर' तथा 'जादू की गाड़ी' कहानियों में बच्चों को संस्कार, सामाजिक मर्यादा, पर्यावरण संरक्षण आदि से जोड़कर कथाओं को विस्तार दिया गया है। पुस्तक का एक और आकर्षण है– हर कहानी के साथ दिए गए नयनाभिराम रंगीन चित्र। पूरी पुस्तक रंगीन है जिसे बच्चे आसानी से ग्रहण करेंगे।

'मज़ेदार पढ़ाई'– रजनीकांत शुक्ल की 18 बाल कहानियों का संकलन है जिसमें शीर्षक कहानी के अतिरिक्त 'बेफ़िज़ूल की बात', 'गर्मी की छुट्टी', 'अद्भुत सेब', 'महँगी पड़ी शैतानी', 'ऐसे टला ट्रेन हादसा', 'दूसरी आकाशगंगा' से, 'पकड़ा लुटेरा', 'दादी का गाँव', 'बदल गया पंकज', 'ऐसे छूटी आदत', 'भाषा छोटी भाव बड़े', 'नाम करेगा रोशन', 'बाँटो खुशियाँ', 'देना सीख लिया', 'बहादुर लड़की', 'बाटूँगा खुशियाँ' और 'राजू का सपना' कहानियों में कई ऐसी हैं जो निजी अनुभवों पर आधारित हैं। जीवन में अनुशासन का महत्व, आपसी सद्भाव, समय का सदुपयोग,

फल–फूलों का महत्व और बड़ों के प्रति सम्मान की भावना को बड़े कौशल से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के अंदर रंगीन चित्रों ने आकर्षण और बढ़ा दिया है।

समीर गांगुली ने सातवें और आठवें दशक में बच्चों के लिए खूब लिखा और प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं में लगातार छपते रहे। बीच में व्यवधान रहा, अब फिर बड़ी तेजी से बाल साहित्य लेखन में सक्रिय हो गए हैं। हाल ही में उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 'भोला की भोलागिरी' उन्हीं में से एक है। पुस्तकाकार प्रकाशित होने से पूर्व यह हरिभूमि के परिशिष्ट बालभूमि में धारावाहिक प्रकाशित हो चुका है, जिसे 'हिंदी बाल पाठकों द्वारा बहुत पसंद किया गया था। पुस्तक में भोला के ऐसे–ऐसे किस्से हैं कि पढ़कर हँसी छूट जाती है। 'भोला ने प्राण को उड़ते देखा', 'भोला ने मेले में गधा बेचा', 'भोला ने रामलीला में भाग लिया', 'भोला ने जूते का सूप बनाना सीखा' तथा 'भोला हारमोनियम घर लाया' जैसे किस्सों का अपना अलग ही अंदाज है। पुस्तक का आवरण ठीक है, मगर अंदर के श्वेत–श्याम चित्रों में किस्सों के मुकाबले उतना आकर्षण नहीं है।

इस वर्ष प्रकाशित डॉ. शील कौशिक की पुस्तकों– 'बंदर का मोबाइल प्रेम और किटकिट गिलहरी ने पहना चश्मा' में क्रमशः 17 और 14 बाल कहानियाँ हैं। संग्रह की अधिकांश कहानियाँ यथार्थ जीवन से जुड़ी हुई हैं। मनोरंजन इन कहानियों की दूसरी विशेषता है। परी कथाओं को भी इन कहानियों में आधुनिक परिवेश से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है। जीव–जंतुओं के प्रति दया की भावना मनुष्यता की आदर्श सीढ़ी है, इसलिए इन कहानियों में इसे बड़े सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रकृति और पर्यावरण को भी आधार बनाकर कहानियों का ताना–बाना बुना गया है। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते संकट को भी बड़े सहज ढंग से कहानियों में प्रस्तुत किया गया है।

हेमंत यादव की बाल कहानियों के दो संग्रह 'सबसे बड़ी है मानवता' और 'नन्हा चित्रकार' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित हुए। पहली पुस्तक में 16 तथा दूसरी में 17 कहानियाँ संकलित की गई हैं। 'नन्हा चित्रकार' एक दिव्यांग बालक की कथा है जो अपने साहस और आत्मविश्वास के कारण ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। 'चीकू की सूझबूझ', 'सीखा सबक', 'बंटी की भूल' तथा 'लालच का नतीजा' जैसी कहानियों से बच्चों को न केवल प्रेरणा मिलती है बल्कि उन्हें रास्ते के झंझावतों से लड़ने का मजबूत इरादा भी मिलता है। दोनों पुस्तकों के आवरण नयनाभिराम हैं, मगर अंदर के चित्रों में विशेष आकर्षण नहीं है।

'टीनू का पुस्तकालय'– नीना सिंह सोलंकी 12 बाल कहानियों का संकलन है जिसमें जल का महत्व तथा उसका संरक्षण, पुस्तकों की उपयोगिता और पढ़ने की प्रवृत्ति, विज्ञान के चमत्कार, मनोरंजन, दोस्ती का महत्व, अकेलेपन का दर्द तथा त्योहारों का आनंद आदि विषयों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। सभी कहानियों में रचनाकार का निजी अनुभव तो है ही समाज की अच्छाइयों–बुराइयों को भी कहानियों का विषय बनाया गया है। पुस्तक का आवरण पुस्तकालय की छवि लिए

हुए है जो शीर्षक के हिसाब से बिलकुल उपयुक्त है। अंदर के श्वेत–श्याम चित्र और अच्छे होते तो बाल पाठकों को जुड़ने में आसानी होती।

डॉ. कृष्णलता सिंह की 21 बाल कहानियों का संकलन है. 'सेल्फी और इंद्रधनुष'। इसमें 'इंद्रधनुष', 'सफलता का शिखर', 'बिना भित्ति के चित्र बनाना', 'परहित सरिस धर्म नहिं कोय', 'असल जिंदगी का हीरो', 'मेरी प्रेरणा–मेरी दीदी', 'अपहरण', 'जादू की छड़ी', 'जो होता है भले के लिए होता है', 'मुंगेरीलाल के हसीन सपने', 'शह और मात', 'प्रोजेक्ट वर्क', 'अक्ल बड़ी या भैंस', 'सुखद यात्रा', 'नई सुबह', 'सेल्फी का भूत', 'दधीच का देहदान' और 'गुरु दक्षिणा' कहानियों में जीवनमूल्य, देशप्रेम, पर्यावरण, सद्‌गुणों का विकास जैसे विषयों को सूत्र शैली में प्रस्तुत किया गया है। रूद्र की लेह–लद्‌दाख यात्रा और मन उड़ चला विदेश – पेरिस भाग 1 तथा 2 शीर्षक से तो यात्रा संस्मरण लगते हैं, मगर इन्हें कहानी के साँचे में ढालकर विस्तार दिया गया है। पुस्तक के मुखपृष्ठ सहित अंदर के बहुरंगी चित्रों का कहानियों के साथ अद्‌भुत तालमेल है, जो पाठकों को सहज ही आकर्षित करता है।

'रंग–बिरंगी बाल कहानियाँ' में रीता कौशल की बच्चों के परिवेश को समेटती हुई 12 रचनाएँ हैं। इनके शीर्षक हैं. 'तेरा मेरा सबका प्लानेट', 'दूध फैरी', 'खुशबू वाली मोमबत्तियाँ', 'गुनगुन समझ गई', 'खुशी के आँसू', 'नकलची मिक्कू', 'ऐसे सुधरा चिंटू', 'स्कॉलरशिप', 'टैडी दादी', 'लिटिल बॉय बेकरी', 'टेक एंड लीव लाइब्रेरी' तथा 'रिंकी और सिंगापुरी कौवे'। संग्रह की कहानियों में बाल मनोविज्ञान की पकड़, आपसी रिश्तों की महक, मानवीय संवेदनाओं का संवेग और जीवन में आगे बढ़ने का संकल्प साफ–साफ परिलक्षित होता है। कहानियों की भाषा में अविरल प्रवाह है जो हर कहानी को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण है–इसकी रंगबिरंगी प्रस्तुति, मनमोहक साज–सज्जा, उत्कृष्ट मुद्रण और दिल को छू लेने वाला आवरण।

'दिव्या बन गई परी'– डॉ. राजकुमार निजात की 10 रोचक बाल कहानियों का संकलन है जिनमें रहस्य–रोमांच, कौतुहल, पर्यावरण के प्रति जागरूकता, परोपकार की भावना, पारिवारिक सौहार्द्र, पुस्तकों का महत्व आदि को मालाबद्‌ध रूप में पिरोया गया है। कुछ कहानियाँ किशोरों को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं। सभी कहानियों की भाषा–शैली उनके विस्तार को आगे बढ़ाने में सहायक है। पठनवृत्ति को बालमन सहज रूप में स्वीकार करेगा, ऐसी अवधारणा इन्हें पढ़ते हुए बनती है।

लगभग 40 वर्षों से बाल साहित्य सृजन से जुड़े हुए गोविंद शर्मा की इस वर्ष प्रकाशित पुस्तक 'सबकी धरती सबका देश' में 11 बाल कहानियाँ संकलित की गई हैं जिनमें बच्चों की चंचलता, आपसी मेलजोल, वफादारी, संबंधों की पड़ताल, सहयोग की भावना, पर्यावरण संरक्षण, बड़ों का महत्व आदि को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। 'वे पत्थर मेरे थे', 'पेड़ बचा ऐसे', 'जीनू दी गड्‌डी' जैसे शीर्षक ही कहानी पढ़ने की जिज्ञासा प्रकट करते हैं। अन्य कहानियों में भी शिल्प और शैली देखते ही

बनती है। पुस्तक का आवरण लुभावना है, अंदर के चित्र भी अगर आकर्षक और रंगीन होते तो बच्चों द्वारा अधिक पसंद किए जाते।

बाल साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में नाटकों की पुस्तकें इस वर्ष बहुत कम प्रकाशित हुईं। चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित वरिष्ठ बाल साहित्यकार सूर्य कुमार पांडेय की पुस्तक 'चौरी–चौरा जनक्रांति का नया सवेरा' किशोरों के लिए प्रकाशित नाटक है जिसमें अनेक तथ्यों और प्रमाणों सहित बड़े रोचक ढंग से चौरी–चौरा की घटना को प्रस्तुत किया गया है। इक्कीसवीं शताब्दी के बच्चों को इस ऐतिहासिक घटना से परिचित कराने के लिए नाटक में जगह–जगह काव्यात्मक प्रस्तुति से पुस्तक में चार चाँद लग गए हैं।

चौरी–चौरा के हम सपूत, अब बाँधे कफ़न निकलते हैं
ओ हिंदवासियों, विदा करो, हम चलते हैं, अब चलते हैं।
चौरी–चौरा की अमर क्रांति, जनक्रांति न भूल कभी जाना
बलिदान हमारा भारत के चप्पे–चप्पे में पहुँचाना।।

'एक वन दो–दो राजा व अन्य तीन नाटक' जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है इसमें बच्चों के लिए चार लघु नाटक संकलित हैं। शीर्षक नाटक के अतिरिक्त 'सेर पर सवा सेर', 'जमूरा', 'मदारी और सेल्फ़ी बॉय' तथा 'सारा नाटक गुड़ गोबर' नामक नाटकों में शिल्प और कथ्य का अद्‌भुत मिश्रण है। बच्चों के लिए नाटक न केवल पढ़ने के लिए होने चाहिए, अपितु इनका मंचन भी नाटक की अनिवार्य शर्त होती है। इस संग्रह में संकलित नाटकों की भाषा में वह सौंदर्य है, जिससे बच्चे आसानी से अपना तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं। हास्य–व्यंग्य के पुट से सराबोर अंतिम नाटक अपने चुटकीले संवाद के कारण निश्चय ही बाल साहित्य की समद्‌धि में एक अनिवार्य कड़ी बनेगा।

डॉ. हेमंत कुमार के बाल नाटक संग्रह 'खुशियों की दुनिया' में शीर्षक नाटक के अलावा 'कहानी तोते राजा की', 'पोलमपुर का उल्टा–पुल्टा', 'मछुआ और काना बैल' तथा 'बुद्‌धि बड़ी या बैल' कुल पाँच नाटक संकलित हैं। इस संग्रह के अधिकांश बाल नाटकों का मंचन लखनऊ की संस्था 'यायावर रंगमंडल' द्वारा लखनऊ के अतिरिक्त अन्य शहरों में भी हो चुका है। इन नाटकों में संवाद छोटे और भाषा सरल है, इसलिए मंचन की दृष्टि से सर्वथा उपयुक्त हैं। इनकी एक अन्य विशेषता है कि बिना किसी अतिरिक्त तामझाम के इनका मंचन आसानी से किया जा सकता है। संवाद सरल और प्रभावशाली हैं, जिन्हें बच्चे आसानी से मंचित कर सकते हैं।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित बाल उपन्यासों ने भी अपने विषय वैविध्य के कारण बच्चों के बीच में अपनी गहरी पकड़ बनाई। सरकारी, गैर–सरकारी प्रकाशन संस्थानों से अनेक रोचक बाल उपन्यास प्रकाशित हुए। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से समीर गांगुली के दो बाल उपन्यास 'मायावन और धन धना धन' तथा 'मिशन ग्रीन

वार' प्रकाशित हुए। पहले उपन्यास में शेयर मार्केट के बारे में बड़ी सरल भाषा में रोचक जानकारी दी गई है। छोटे–छोटे 14 अध्यायों में विभक्त यह उपन्यास पैसों के महत्व के साथ उसका सही निवेश करने का तरीका बताता है। शेयर मार्केट में निवेश करने से पहले किन–किन चीजों में सावधानी बरतनी चाहिए, उसमें किस प्रकार निवेश करना चाहिए तथा इसके लाभ–हानि को भी उपन्यासकार ने बच्चों को उन्हीं की भाषा में अद्‌भुत ढंग से समझाया है। दूसरे उपन्यास में छोटे–छोटे 13 अध्यायों में, कृषि में विशेष तकनीक और प्रौद्‌योगिकी के माध्यम से भविष्य में होने वाली अलौकिक संभावनाओं की विस्तृत चर्चा की गई है। हर चीज के सकारात्मक और नकारात्मक दो पहलू होते हैं। उपन्यासकार ने दोनों पहलुओं पर विवेचनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला है। ऐसे अनोखे विषयों पर दी गई जानकारियों से आज के बाल और किशोर पाठक निश्चय ही लाभान्वित होंगे।

प्रकाशन विभाग से ही प्रकाशित मधु पंत का उपन्यास 'टुइयाँ' अपनी विशिष्ट शैली और विषयवस्तु के कारण चर्चा में रहा है। 'टुइयाँ' का नामकरण उपन्यासकार की अद्‌भुत सोच का परिणाम है। 'टुइयाँ' के अनोखे अभियानों की फेहरिस्त में उसका 'मूँछ कांड', 'अस्पताल से घर', 'उसका आर्कमिडीज बनना', 'उसका आग जलाओ अभियान', 'उसका सिकंदर बनना', 'आसमान से धरती पर', 'उसकी तीन प्रतिज्ञाएँ', 'उसका हॉस्टल प्रवास', 'उसका कायाकल्प' और 'अभिमन्यु बनने के क्रम में' 'टुइयाँ' की जद्‌दोजेहद में उपन्यास को न केवल सामान्य जीवन के उतार–चढ़ावों से रूबरू कराया गया है, अपितु उसका बालमन पारिवारिक रिश्तों की पूँजी के रूप में उभरकर सामने आता है। 'टुइयाँ' जैसे–जैसे जीवन की जंग में उतरता है, पाठक उससे जुड़ते चले जाते हैं। अंत में अभिमन्यु बनने के क्रम में उसका मार्मिक पत्र पाठक को अंदर तक भिगो देता है।

डॉ. मो. अरशद खान के चार लघु बाल उपन्यासों का संकलन है– 'अनोखी यात्रा'। इसमें शीर्षक उपन्यास के अतिरिक्त 'अंतरिक्ष में हाहाकार', 'कांगों के जंगलों में' तथा 'परियों के देश में' उपन्यास एक ही जिल्द में उपलब्ध हैं। इन उपन्यासों की विशेषता है कि रोचकता और जिज्ञासा से लबरेज आगे क्या होगा? की भावना के साथ रहस्य और रोमांच से भरपूर हैं। कलेवर की दृष्टि से भी ये उपन्यास एक ही बैठक में पढ़े जा सकते हैं। टेक्नोलॉजी और मोबाइल के युग में बच्चों ने बड़े उपन्यासों से दूरी बना ली है, इसलिए ऐसे उपन्यासों की बड़ी आवश्यकता है। इन उपन्यासों की रचना–प्रकिया पर लेखक की आत्मस्वीकृति हमें पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। लेखक कहता है– ''मैंने कोरोना के प्रकोप से जूझते हुए अपने एकांतवास को अवसाद से बचाने के लिए रचा था। भयावह एकांत और आशंका भरे क्षणों को जीतने का इससे बेहतर उपाय मेरे पास नहीं था।''

विजयानंद का लघु उपन्यास 'अपना गाँव'– भारत की बदलती तस्वीर पर

आधारित है। सरपंच और प्रधान के प्रयास से गाँव में न केवल बिजली–पानी का समुचित प्रबंध होता है अपितु अनेक सरकारी योजनाओं का लाभ भी जनता तक पहुँचने लगता है। विकास की गंगा को लाने का प्रयास किसी न किसी भगीरथ को तो करना ही पड़ता है। बिजली आ जाने से तकनीकी दृष्टि से भी गाँवों का अधिक विकास होना सफलता का परिचायक है। अब गाँव भी बदलकर धीरे–धीरे शहर ही हो गए हैं।

'धरोहर'– सुकीर्ति भटनागर का ऐसा बाल उपन्यास है जिसमें मुख्य कथा के साथ बीच–बीच की अवांतर कथाओं ने उपन्यास को न केवल गति प्रदान की है, अपितु वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण के बहाने हमारी धरोहर को सुरक्षित रखने का महत्व भी बताया है। उपन्यास कल्पना और यथार्थ के ताने–बाने से बुना गया है। बकौल रचनाकार. ''कल्पना को सच के साँचे में ढालकर प्रस्तुत करना सरल कार्य नहीं है। इसके लिए यथार्थ जगत की किसी भी घटना या विचार को आधार मानकर काल्पनिक चरित्रों द्वारा कृति को विशिष्ट रूप दिया जाता है। उपन्यास की भाषा बिलकुल सरल, सहज और पात्रों के अनुकूल है। निश्चय ही इससे बच्चों में पठनवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।

'गोलू–भोलू और जंगल का रहस्य'– डॉ. शशि गोयल का जासूसी उपन्यास है, जिसमें बच्चों को ही पात्र बनाया गया है। वे आने वाली अपनी समस्याओं को खुद सुलझाते हैं। वे जंगल में ऐसा साहसिक कारनामा करते हैं कि पाठक दाँतों–तले उँगली दबा लेते हैं। उनकी यायावरी दृष्टि चारों ओर घूमती रहती है। लेखिका ने उपन्यास को इतने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है कि कहीं पर भी पाठक ऊबता नहीं है। उपन्यास कलेवर में भी छोटा है, इसे एक ही बैठक में आसानी से पढ़ा जा सकता है। आज लघु कलेवर वाले ऐसे उपन्यासों की बड़ी आवश्यकता है जिसे बच्चे एक ही बैठक में आसानी से पढ़ सकें।

सुमन बाजपेयी ने बच्चों के लिए हर विधा में लिखा है। उनके पास संपादन और अनुवाद का भी व्यापक अनुभव है। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित उनका बाल उपन्यास 'मंदिर का रहस्य' अपने शीर्षक से ही पाठकों का ध्यान आकृष्ट करता है। छोटे–छोटे अध्यायों में विभक्त इस उपन्यास की यह खूबी है कि इसकी कथा में जिज्ञासा और रोमांच का अद्भुत मिश्रण है। उपन्यास के पात्र तरुण और वरुण छुट्टियाँ बिताने देहरादून जाते हैं। शिवालिक हिल्स में भ्रमण करते हुए उन्हें एक अजीबोगरीब मंदिर मिलता है। खंडहर हो चुके मंदिर का रहस्योद्घाटन उपन्यास में बड़े तार्किक ढंग से किया गया है। इसकी सारी गाथा उपन्यास पढ़कर जानी जा सकती है।

हिंदी बाल साहित्य की प्रमुख विधाओं के अतिरिक्त बालोपयोगी लेखन भी उसका अनिवार्य अंग है। अभिप्रेरक (Motivational) बाल साहित्य इसी के अंतर्गत आता है। कविताओं, कहानियों, नाटकों, उपन्यासों, संस्मरण, यात्रा–वृत्तांत आदि को बच्चे जिस उत्साह से पढ़ते हैं, उसी उत्साह से अभिप्रेरक साहित्य में भी उनकी गहरी

रुचि देखी जा सकती है। हमारे पौराणिक पात्रों को लेकर रचा गया साहित्य आज भी उनके ज्ञान में वृद्धि करता है। राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली की संगोष्ठी में अमर चित्रकथा के प्रेरक और सर्वेसर्वा अनंत पै कई बार इस तथ्य का खुलासा कर चुके हैं कि अमर चित्रकथा के बैनर पर प्रकाशित पौराणिक पात्रों की पुस्तकों के कई–कई संस्करण निकालने पड़ते थे। हिंदी में प्रकाशित ऐसी पुस्तकों के अंग्रेजी संस्करण हिंदी से ज्यादा बिकते थे। अमर चित्रकथा सीरीज की सैकड़ों पुस्तकें इसका प्रमाण हैं। आलोच्य वर्ष में बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं के अतिरिक्त जो साहित्य प्रकाशित हुआ है, उनमें शिवचरण चौहान की दो पुस्तकें 'पर्यावरण प्रहरी'– 'रंग–बिरंगे फूलों की दुनिया'। 'पर्यावरण प्रहरी–हमारे आसपास के पक्षी–चिड़ियों की दुनिया' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पहली पुस्तक में अमलतास, अनार, अशोक, कमल, ब्रह्मकमल, कुमुदिनी, केतकी, कुम्हारिन, गेंदा, गुलाब, गुलमोहर, गुलअब्बास तथा गुलबकावली पुष्पों के बारे में रंगीन चित्रों सहित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है, तो दूसरी पुस्तक में कोयल, कबूतर, गौरैया, पतेना, बया, पपीहा और चातक, हुदहुद, कौआ, कठफोड़वा, किरकिरा, खंजन, गाय, बगुला, गरुण, चकोर, तीतर, बटेर, धनेश, पनडुब्बी, मैना, मुर्गा, फुदकी, लव बर्ड, सारस, सतभैये, हंस, तोता, कनकौआ, फूलचुही, मोर, उल्लू, ललमुनिया, बुलबुल, हारिल, नीलकंठ तथा अबाबील जैसी अनमोल चिड़ियों के बारे में रंगीन चित्र सहित उनकी विशेषताओं का वर्णन किया है।

राही सहयोग संस्थान की बाल साहित्य सीरीज का भाग–9 'मंगल ग्रह के जुगनू'– लेखक–प्रबोध कुमार गोविल, इस वर्ष की प्रकाशित पुस्तक है जिसका निष्कर्ष है कि–

मंगल पर भी हमको नाना, ऐसे बाग मिलेंगे।
सेव, संतरा, चीकू बढ़िया, मीठे आम मिलेंगे।

रेनू सैनी ने वैसे तो बच्चों के लिए कहानियों और चित्रकथाओं की अनेक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं, मगर हमारे अभिप्रेरक महापुरुषों को लेकर स्वामी विवेकानंद पर केंद्रित 'रुको मत, आगे बढ़ो' तथा 'अपने चाणक्य स्वयं बनें' जैसी पुस्तकें लिखकर बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने का न केवल सुगम रास्ता बताया है बल्कि इनसे प्रेरणा ग्रहणकर अपने लक्ष्य तक पहुँचने का संकल्प भी सुझाया है। बच्चे धीरे–धीरे ऐसे प्रसंगों को भूलते जा रहे हैं, उन्हें हमारी धरोहर से जोड़कर जानकारियाँ प्रदान करना भी बाल साहित्य का उद्देश्य है। ऐसी पुस्तकों से बच्चे जुड़कर अपने भावी जीवन को भी सफल बनाते हैं।

गोविंद शर्मा बच्चों के सुपरिचित रचनाकार हैं। उनकी बाल साहित्य की लगभग 50 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित उनकी दोनों पुस्तकों 'यह कालीबंगा है' और 'दादाजी की अंतरिक्ष यात्रा' में बच्चों को बड़ी रोचक जानकारी दी गई है। पहली पुस्तक में जहाँ कालीबंगा गाँव की ऐतिहासिकता, उसके उत्खनन से प्राप्त चीजें और विकसित हड़प्पाकालीन संस्कृति पर प्रमाण सहित अलौकिक जानकारी

दी गई है, वहीं दादाजी की अंतरिक्ष यात्रा के बहाने सप्ताह के सभी दिनों, यूरेनस, नेप्च्यून, ग्रह, सूरज, चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण आदि का कथात्मक शैली में परिचय कराया गया है। पूरे विवरण में लेखक का श्रम साफ झलक रहा है। इसे कहानियों के रूप में भी पढ़ा जा सकता है। इसकी संवाद शैली बड़ी रोचक है। आलोच्य वर्ष में बाल साहित्य पर हुए शोध प्रबंधों को भी पुस्तकाकार प्रकाशित होने का गौरव प्राप्त हुआ। डॉ. सोनाली निनामा (सिसोदिया) का शोध कार्य 'इक्कीसवीं सदी का बाल साहित्य' शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिसे संदर्भ ग्रंथ सूची के अतिरिक्त पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। 'बाल साहित्य का स्वरूप', 'आधुनिक हिंदी बाल' 'साहित्य का स्वरूप', 'आधुनिक बाल साहित्य के सरोकार', 'बाल साहित्य के नव क्षितिज' तथा 'आधुनिक बाल साहित्य की राष्ट्रीय' एवं 'सांस्कृतिक संरक्षण में भूमिका' शीर्षकों में विगत दो दशकों के बाल साहित्य का सांगोपांग अध्ययन किया गया है। हिंदी बाल साहित्य में शोध की बड़ी समृद्ध परंपरा है। शताधिक शोध प्रबंधों में यह प्रबंध अपने ढंग का विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पुस्तक में छपे विवरण से ही यह कष्टदायक सूचना मिली कि डॉ. सोनाली का सन् 2021 में ही निधन हो चुका है। यह जानकारी अत्यंत दुखद है। डॉ. सोनाली में कुछ नया करने की ललक और संभावना दोनों थी, मगर नियति को शायद यह मंजूर नहीं था।

बाल साहित्य के साथ–साथ बाल विमर्श पर भी चिंतन–मनन का पुस्तकाकार प्रकाशन होना शोध की परंपरा को एक नया आयाम देता है। हिंदी बाल साहित्य में बाल विमर्श एक ऐसी ही पुस्तक है जिसमें 'बाल साहित्य–समीक्षा', 'चुनौतियाँ और संभावनाएँ', 'उद्‌भव और विकास', 'बाल साहित्य' का 'वैश्वीकरण', 'बाल मनोविज्ञान की स्थिति', 'बच्चों का शोषण एवं जीवन शैली' सहित 'बाल साहित्य की दशा–दिशा', पत्र–पत्रिकाओं का योगदान तथा प्रमुख बाल साहित्यकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। यह ग्रंथ इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि इससे बाल साहित्य और बाल विमर्श के बीच में एक तालमेल बनेगा जो बच्चों के जीवन में साहचर्य का काम करेगा।

'हिंदी बालः सृजन और संदर्भ' शीर्षक से इस वर्ष प्रकाशित समीक्षात्मक पुस्तक में हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, उसकी विकास यात्रा, बाल नाटक, बाल फिल्में, पर्यावरण चेतना, नैतिक मूल्य आदि विषयों पर विवेचनात्मक आलेख हैं। इन आलेखों में बाल साहित्य के व्यापक परिवेश को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। ऐसे कार्य बाल साहित्य को गति तो प्रदान करते ही हैं, इनसे शोधार्थियों को भी बहुत मदद मिलती है।

इसी वर्ष भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से सुरेंद्र विक्रम की पुस्तक 'बाल साहित्यः परंपरा, प्रगति और प्रयोग' भी प्रकाशित हुई जिसमें बाल साहित्य, प्रतिष्ठित बाल साहित्यकारों और हिंदी बाल साहित्य में शोध की परंपरा पर केंद्रित बीस आलेख संकलित किए गए हैं। इन आलेखों में एक ओर हिंदी बाल साहित्य का इतिहास है

तो दूसरी ओर रवींद्रनाथ टैगोर, हरिवंशराय बच्चन, रामकुमार वर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, शंभु प्रसाद श्रीवास्तव और द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी जैसे बाल साहित्यकारों पर सुचिंतित आलेख हैं। हिंदी बाल साहित्य की पृष्ठभूमि को जानने, उसकी परंपरा, प्रगति और प्रयोग को समझने के लिए आम पाठकों के साथ शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक दिशानिर्देश का काम करेगी।

लोक साहित्य का बाल साहित्य की विकास यात्रा में बहुत बड़ा योगदान है। भोजपुरी एवं असमिया के लोकसाहित्य पर केंद्रित 'भारतीय मानस एवं बाल लोक साहित्य' इस वर्ष प्रकाशित ऐतिहासिक पुस्तक है, जिसमें भोजपुरी लोरी गीत, शिशु खेल गीत, भोजपुरी बाल लोक कथा, बाल लोक गाथा, बाल लोक नाट्य, प्रकीर्ण बाल लोक साहित्य, असमिया बाल साहित्य, कथा साहित्य, बाल लोक काव्य, खेल गीत, उत्सव गीत तथा असमिया बाल लोककथा पर उदाहरणों सहित ऐसी सामग्री प्रस्तुत की गई है जो हमारी धरोहर को संजोकर रखने का संदेश देती है। भोजपुरी के गहन अध्येता डॉ. हरेराम पाठक यह अभिनव प्रयास है, असम में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी का अध्यापन करते हुए उन्होंने असमिया भाषा पर भी गंभीरता से काम किया है और प्रस्तुत पुस्तक में उसे सिलसिलेवार पाठकों के लिए सहज रूप में प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन इस अर्थ में और महत्वपूर्ण है कि जब लोकमानस से लोकसाहित्य धीरे–धीरे क्षीण होता जा रहा है तो ऐसी सामग्री धरोहर के रूप में न केवल हमारा मार्गदर्शन करेगी, अपितु उस समृद्ध परंपरा को भी बार–बार याद दिलाएगी। इसे तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर हमारी संस्कृति और संवेदना के भी दर्शन होते हैं। ऐसे कार्य निरंतर होते रहने चाहिए, इससे शोध की परंपरा को बड़ा बल मिलता है।

राजकुमार जैन राजन ने सन् 2021 में प्रकाशित बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों का लगातार आकलन प्रस्तुत किया था जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ सन् 2022 में प्रकाशित होता रहा। 'वर्ष 2021 का बाल साहित्यः एक आकलन' शीर्षक से यही लेखा–जोखा पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है। बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों के माध्यम से जो बाल साहित्य पाठकों तक पहुँचना चाहिए, इसकी जानकारी देने वाली यह पुस्तक अभिभावकों को अवश्य पढ़नी चाहिए ताकि वे अपने बच्चों के लिए सही, सार्थक और रोचक बाल साहित्य का चयन आसानी से कर सकें।

कुल मिलाकर आलोच्य वर्ष हिंदी बाल साहित्य की दृष्टि से विगत वर्षों की तुलना में समृद्ध ही कहा जा सकता है। इस वर्ष सरकारी, प्राइवेट प्रकाशनों और व्यक्तिगत प्रयासों से बाल साहित्य की अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। कोरोना काल में बंद पड़ी अनेक योजनाएँ एक बार फिर से फलीभूत हुईं। राष्ट्रीय स्तर पर बाल साहित्य पर केंद्रित अनेक आयोजन हुए। सम्मान–पुरस्कार फिर से प्रारंभ हुए तथा साहित्य की अन्य विधाओं की तरह बाल साहित्य ने भी फिर से चर्चा में आकर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। इस वर्ष की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि वर्षों

से प्रतीक्षित बाल साहित्य अकादमी का गठन राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में किया गया। पूरे देश में कई दशकों से बाल साहित्य अकादमी बनाने की माँग लगातार चल रही थी परंतु इसे पहली बार कार्यान्वित करने का श्रेय राजस्थान को मिला।

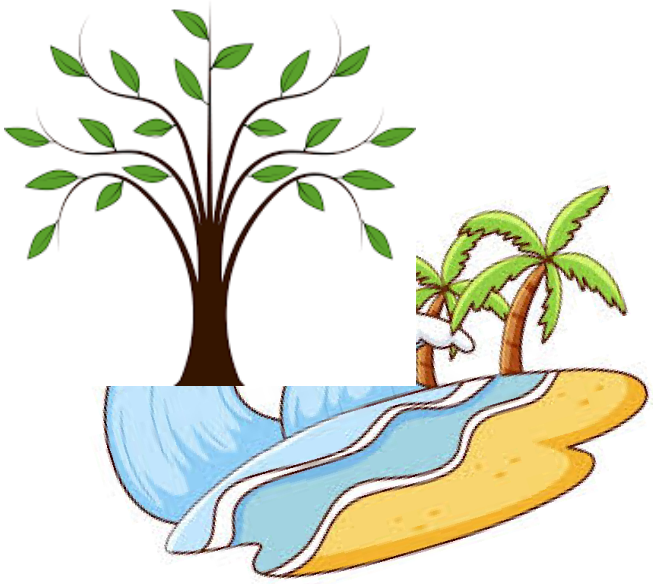

29

हिंदी भाषाविज्ञान



त्रिभुवननाथ शुक्ल

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी एवं भाषाविज्ञान विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय। विशेषज्ञता भाषा विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, कोश विज्ञान, अर्थ विज्ञान, अनुवाद विज्ञान, व्याकरण, शैली विज्ञान। अनेक प्रशासनिक निकायों के सदस्य। तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। रवींद्रनाथ टैगोर साहित्य सम्मान, सुब्रहमण्यम भारती सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से साहित्यभूषण सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

भारतीय भाषाचिंतन पूरे विश्व में भाषाचिंतन का गोमुख है। मेरे इस कथन का आधार है– ब्लूमफील्ड का वह कथन जिसमें उन्होंने अपनी पुस्तक 'लैंग्वेज' में लिखा है– 'पाणिनि' मानव मेधा के उच्चतम स्मारक हैं'। इसी प्रकार की अभिव्यक्ति रॉबिन्स, चॉम्स्की, किआस्पी आदि भाषा वैज्ञानिकों ने की है। इन सभी विद्वानों ने आकंठ स्वीकार किया है कि हमारे भाषाचिंतन का स्त्रोत भारतीय भाषाचिंतन है। यहाँ तक 1980 के आधुनिकतम सिद्धांत फिल्मोरका 'केस ग्रामर' (कारक व्याकरण) का मूलाधार पाणिनि का 'कार प्रकरण' ही है। परंतु दुर्भाग्यपूर्ण संदर्भ यह रहा कि अधिकांश भारतीय भाषा वैज्ञानिकों ने पश्चिमी विद्वानों का अनुकरण किया है और अपनी समृद्ध विरासत की ओर निहारा भी नहीं। इधर कुछ भारतीय विद्वानों ने भारतीय भाषाचिंतन की विरासत की ओर रूख किया। इनमें आचार्य किशोरीदास वाजपेयी 'भारतीय भाषाविज्ञान' पं. विद्यानिवास मिश्र 'संपादित– भारतीय भाषा चिंतन' डॉ. भोलानाथ तिवारी 'भारतीय भाषा विज्ञान की भूमिका' संपादित; डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी 'संपादित–भारतीय भाषाचिंतन' प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल 'वाक् चिंतन की भारतीय परंपरा' उल्लेखनीय हैं।

जहाँ तक 2022 में हुए भाषा और भाषा विज्ञान संबंधी कार्यों का प्रश्न है, वह कम महत्वपूर्ण नहीं कहे जा सकते।

प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– (i) 'हिंदी क्रिया कोश' (2022 अमन प्रकाशन, कानपुर) (ii) 'वृहद अभिनव हिंदी कोश'– भाग एक, भाग दो (अमन प्रकाशन, कानपुर 2022)। 'हिंदी क्रिया कोश' अपनी तरह का पहला क्रिया कोश है। लेखक के अनुसार यह क्रिया कोश डॉ. हरदेव बाहरी की प्रेरणा से तैयार

किया हुआ है। इस कोश में हिंदी एवं उसकी बोलियों की समस्त क्रियाओं की प्रविष्टियाँ दी गई हैं। अभी तक हिंदी की बोलियों में असंख्य क्रियाएँ अविवेचित रह गई थीं। ऐसी तमाम अविवेचित क्रियाओं को इसमें विवेचित किया गया है। कोश के परिशिष्ट में संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश की धातुओं के स्रोतों का उल्लेख किया गया है। इनसे हिंदी के किसी भी शब्द के मूल स्त्रोत को ज्ञात किया जा सकता है। डॉ. बाहरी से लेखक के कई विमर्शों के पश्चात इसकी प्रविष्टियों को अंतिम रूप दिया जा सका है। यह कोश कृति हिंदी भाषा की बहुत बड़ी उपलब्धि है। वर्तमान समय में इस प्रकार के कार्य हिंदी में न के बराबर हैं। जबकि मराठी और अन्य भारतीय भाषाओं में इस प्रकार के अनेक कार्य हुए हैं।

'वृहद अभिनव हिंदी कोश' आज तक हिंदी में बने कोशों से इस अर्थ में अभिनव है कि इसमें आदिकालीन एवं मध्यकालीन साहित्य के तमाम ऐसे शब्दों की प्रविष्टियाँ दी गई हैं, जिनका अभी तक निर्वचन नहीं हो पाया था। साथ ही शब्दों के विशिष्ट प्रयोगों को भी इसमें स्थान दिया गया है। दो भागों में पूर्ण यह कोश हिंदी के अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा लेखक का अपना विश्वास है। इसके परिशिष्ट में भी संस्कृत, पालि, प्राकृत अपभ्रंश और अँग्रेजी शब्द स्त्रोतों को स्थान दिया गया है। हिंदी के द्वितीय भाषाशिक्षण एवं अन्य भाषा शिक्षण (विदेशी भाषा शिक्षण) के लिए भी यह कोश उपयोगी होगा।

भाषाविज्ञान के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो. नरेश मिश्र ने भाषा विज्ञान को अनेक महत्वपूर्ण कृतियाँ दी हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– 'नागरी लिपि और उसकी समस्याएँ', 'हिंदी शब्द समूह का विकास', 'शब्द प्रयोग', 'भाषाविज्ञान और मानक हिंदी', 'हिंदी भाषा और लिपि', 'अनुप्रयुक्त भाषाचिंतन', 'नागरी लिपि', 'भाषा और भाषा विज्ञान' 'प्रयोजनमूलक हिंदी और काव्यांग', 'भाषा और हिंदी भाषा' का इतिहास, 'भाषा विज्ञान' और हिंदी, रामनरेश त्रिपाठी का 'शब्द भंडार' और 'मानक हिंदी और हरियाणवी'।

इसी क्रम में 2022 में वाणी प्रकाशन से उनका एक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुआ है– हिंदी का मानकीकरणः उच्चारण एवं लेखन। हिंदी भारत की मातृभाषा, राजभाषा, व्यावहारिक राष्ट्रभाषा और भारतीय संस्कृति की संवाहिका भाषा है। वर्तमान वैश्वीकरण में हिंदी का सहज प्रयोग वैश्विक धरातल स्पर्श कर चुका है। हिंदी प्रयोग के विस्तार में उसकी संरचना में विविधता होना अवश्यंभावी है। भाषा–प्रयोग की अनुकूलता और श्रेष्ठता के लिए मानकीकरण अनिवार्य है। इस दिशा में इधर अनेक विद्वानों ने कार्य किया है। इसी दिशा में प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल की वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हिंदी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण एक महत्वपूर्ण कृति है। अभी तक इसके दो संस्करण हो चुके हैं।

डॉ. नरेश मिश्र, ने इस विषय पर गंभीर चिंतन करते हुए 'हिंदी मानकीकरण : उच्चारण एवं लेखन' पुस्तक की रचना की है। इसमें हिंदी के मानकीकरण का वैज्ञानिक और व्यावहारिक विवेचन किया गया है। पुस्तक के प्रारंभ में मानकीकरण के आधार तत्वों ऐतिहासिकता, एकरूपता, व्याकरणसम्मत रूप, बोधगम्यता, सर्वग्राहिता आदि का व्यावहारिक परिचय दिया गया है। भाषा के उच्चरित और लिखित रूपों के महत्व को दृष्टिगत कर दोनों के समन्वित मानकीकरण की अनिवार्यता पर बल दिया गया है।

ध्वनि भाषा की लघुतम और महत्वपूर्ण इकाई है। ध्वन्यात्मक भाषा का प्रयोग सर्वाधिक रूप में होता है। हिंदी ध्वनि–मानकीकरण में सर्वप्रथम ध्वनि उत्पादन–प्रक्रिया का उदाहरण सहित चित्रात्मक विवेचन किया गया है। हिंदी स्वरों के मानक उच्चारण, उनके अक्षरात्मक रूप, स्वरगुच्छ आदि का प्रयोगात्मक परिचय दिया गया है। स्वर के साथ व्यंजनों के प्रयोग से उनमें आक्षरिक सहशक्ति विकसित होने के तथ्य को रेखांकित किया गया है। व्यंजनों के उच्चारण और लेखन में स्वर के अपेक्षित सहयोग के साथ उनके शब्दों आदि वृहत्तर इकाइयों में प्रयोग के मानकीकरण पर उपयोगी विचार किया गया है। इसी क्रम में नासिक्य, संघर्षी, पार्श्विक, कुंठित, उत्क्षिप्त आदि व्यंजनों के मानक उच्चारण के साथ महाप्राणीकरण, अकारण अनुनासिकता के विविध रूप, लोप, आगम आदि संदर्भों पर उदाहरणसहित उल्लेखनीय विचार किए गए हैं। लेखन संदर्भ में स्पष्ट है कि भाषा जब लिपि का आधार पा लेती है, तब लिखित रूप सामने आता है। इसमें समय और स्थान पार करने की शक्ति आ जाती है। हिंदी के सभी स्वर आक्षरिक हैं और स्वर के साथ प्रयुक्त होकर व्यंजन ध्वनियाँ (वर्ण) आक्षरिक हो जाते हैं। पुस्तक में नागरी लिपि के चिह्नों के मानकीकरण के साथ उनके द्वित्त, संयुक्त रूपों का सोदाहरण विवेचन किया गया है। स्वर के साथ प्रयुक्त अनुस्वार, अनुनासिक (ध्वन्यात्मक चिह्न) के साथ आगत स्वर आदि–आदि के मानकीकरण का अनुकरणीय विवेचन है। पुस्तक में उच्चारण और लेखन के समन्वित रूप को विशेष महत्व दिया गया हैं, यथा– अन्य उपन्यास आदि मानक हैं, किंतु उच्चारण नियम के अनुसार अर्ध नासिक्य दंत्य 'न' को दो अर्ध 'न् न्' एक साथ उच्चारण ही मानक है। इसी प्रकार 'सभ्य' शब्द मानक रूप में लिखा है, मानक उच्चारण ऐसा नहीं होगा। मानक उच्चारण होगा– 'सब्भ्य'। इसे बोलकर देख भी सकते हैं। ऐसा क्यो बोलते हैं? मानकीकरण के ऐसे सिद्धांतों/आधारों का विस्तार से उपयोगी परिचय दिया गया है। डॉ. नरेश मिश्र की पुस्तक हिंदी मानकीकरण उच्चारण एवं लेखन' हिंदी प्रेमियों और शोधार्थियों के लिए विशेष उपयोगी है।

विजय कुमार वेदालंकार की पुस्तक 'अनुप्रयुक्त भाषण कला' (ज्योति प्रकाशन सोनीपत, हरियाणा 2022) अत्यंत उपयोगी कृति है। विधाता ने सृष्टि की चेतना के साथ चिंतनशीलता के लिए मानव की रचना की है। वाक् शक्ति संपन्नता के साथ

मनुष्य को सृष्टि में श्रेष्ठ स्थान मिला है। मानवी वाक् शक्ति ही समाज निर्माण का आधार बनी है। वाक् शक्ति का मुख्यतः दो रूपों में उपयोग होता है। प्रथम रूप में व्यावहारिक बोलचाल का प्रयोग, जिसमें सरल, सहज, सद्भावपूर्ण स्वाभाविक वाणी का मधुर प्रयोग होता है। कहा भी गया है–

''ऐसी बानी बोलिए, मनका आपा खोए,
औरन को शीतल करे, आपुहिं शीतल होए।''

काव्यशास्त्रीय आचार्य एवं भाषाविद् डॉ. विजय कुमार वेदालंकार ने वक्तृता को निखारने के लिए 'अनुप्रयुक्त भाषण कला' उपयोगी पुस्तक की रचना की है। आपने संकेत किया है कि ऐसी शक्ति संजोने के लिए चिंतन, मनन, अध्ययन करते रहने, प्रेरक संवाद और संभाषण सुनने के साथ अभ्यास करते रहने की आवश्यकता होती है। यदि इस दिशा में अनुकूल जिज्ञासा हुई तो विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय ही नहीं साहित्यिक संस्थाओं और आकाशवाणी आदि में भी वार्ता, वाद–विवाद, परिचर्चा में सम्मिलित होने का अवसर सुनिश्चित हो जाएगा। वेदालंकार सुधी विचारक, सफल अनुप्रेरक शिक्षक हैं। अध्ययन, अध्यापन और सृजन धर्म में अनुकूल भाषा और प्रभावी अभिव्यक्ति सामने आती है। वास्तव में यही उर्जस्वित दिशाएँ आपकी पुस्तक अनुप्रयुक्त भाषण कला' में उभरकर आई है। आपने पुस्तक में भाषण की परिभाषा और स्वरूप की चर्चा करते हुए उसे प्रभावी बनाने वाली शैलियों का विस्तार से परिचय दिया है। निश्चय ही विशिष्ट शैली को अपनाकर आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति से भाषण–कला को प्रभावी रूप मिल जाता है। इसके लिए पुस्तक में दिए गए सूत्रों को हृदयंगम करना होगा।

पुस्तक में विभिन्न क्षेत्रों के सामयिक विषयों पर भाषण के साहित्यिक प्रारूप दिए गए हैं। वैज्ञानिक युग में विज्ञान की उपादेयता, कंप्यूटर युग में विज्ञान की उपादेयता, कंप्यूटर युग में कंप्यूटर शिक्षा, शिक्षण क्षेत्र में 'सहशिक्षा' संस्कृति शिक्षा और मातृभाषा आदि पर प्रभावी चिंतन को लिपिबद्ध किया गया है। समस्याओं पर चिंतन और उनके समाधान के प्रयास से सफलता सुनिश्चित हो जाती है। इस दृष्टि से युवावर्ग की बेरोजगारी, वरिष्ठ नागरिक, नारी सशक्तीकरण और धन बल का प्रभाव आदि महत्वपूर्ण विषयों को अपनाया गया है। जीवन में संस्कार विकसित करने के लिए 'जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान' और परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई आदि विषयों की प्रस्तुति से पुस्तक संस्कारित भाषण–कला में प्रवीणता प्रदान करने की सुंदर भूमिका निभाएगी।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि डॉ. वेदालंकार की पुस्तक अनुप्रयुक्त भाषणकला युवावर्ग में वाक्शक्ति विकसित कर भाषण कला में प्रवीणता प्रदान करेगी।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ से 'भारत की प्रमुख भाषाएँ समकालीन प्रवृत्तियाँ' (संपादक डॉ. दयानिधि मिश्र, 2022) का प्रकाशन हुआ है। इस पुस्तक में

सभी भारतीय भाषाओं पर विभिन्न विद्वानों के महत्वपूर्ण आलेख हैं। इस पुस्तक में भारतीय भाषाओं की एकात्मकता पर प्रकाश डाला गया है। सभी भारतीय भाषाओं में एकात्मकता का आधार उसकी सांस्कृतिक एकता है। ध्वनि, रूप, वाक्य और अर्थ के स्तर पर पारस्परिकता को रेखांकित किया गया है। इन सभी भाषाओं में विभिन्न स्तरों पर अद्भुत समानता दिखाई पड़ती है। पुस्तक में इस बात का भी स्पष्ट संकेत मिलता है कि आर्य एवं द्रविड़ भाषा के रूप में भारतीय भाषाओं का विभाजन पश्चिमी विद्वानों का एक बहुत बड़ा षड्यंत्र था। जबकि दोनों भाषाओं का डी.एन.ए. एक है। आज इसी दृष्टि से भारतीय भाषाओं पर अनुसंधान की आवश्यकता है। इस दिशा में यह कृति हमारा अच्छा मार्गदर्शन करने की सामर्थ्य रखती है। भारतीय भाषाओं पर विभिन्न दृष्टियों से अनुसंधान करने वालों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा अपना विश्वास है। डॉ. दयानिधि मिश्र की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक दृष्टि सराहनीय एवं स्तुत्य है।

नेशनल पब्लिकेशन जयपुर से प्रकाशित पांडेय शशिभूषण 'शीतांशु' की पुस्तक 'शैली विज्ञान : सिद्धांत प्रतिमान और विश्लेषण' (2022) एक महत्वपूर्ण कार्य है। शीतांशु जी की शैली विज्ञान पर और भी कृतियाँ पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं। वे इस क्षेत्र के एक आधिकारिक विद्वान एवं अन्वेषक हैं।

यह हिंदी में शैली विज्ञान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण, मोनुमेंटल ग्रंथ है। इसमें यह प्रतिपादित एवं स्थापित किया गया है कि शैली वैज्ञानिक आलोचना अपनी स्वरूप–प्रक्रिया में कथ्यपरक अर्थान्वेषी आलोचना है। यह लघुतर से वृहत्तर पाठ (Text) के वैशिष्ट्य का सार्थक और साभिप्राय उद्घाटन करती है। यह शैलीमापक्रमी अध्ययन मात्र नहीं है, जिसमें शैली के अभिलक्षणों को रेखांकित कर उसकी गणना–भर कराकर छोड़ दिया जाता है।

इस ग्रंथ में शैली विज्ञान का सर्वांगीण विवेचन है। इसमें शैली विज्ञान के स्वरूप, सिद्धांत एवं प्रकार्य का निरूपण है। सर्जनात्मक साहित्य भाषा और अप्रस्तुति का अंतः संबंध है। अग्र प्रस्तुति और शैली चिह्नक जैसे प्रतिमानों का मौलिक रूप में सांगोपांग, सविस्तार प्रतिष्ठापन है। इतने विस्तार से इनके मौलिक भेद–प्रभेदों का सोदाहरण, गंभीर निरुपण और विवेचन हिंदी को कौन कहे, अँग्रेज़ी में या किसी अन्य पश्चिमी भाषा तक में देखने को नहीं मिलता।

इसके अतिरिक्त चौदह (14) कविताओं, दो (2) उपन्यासों, दो (2) कहानियों और एक (1) नाटक का साभिप्राय, अर्थान्वेषी आलोचन एवं उद्घाटन है। यह ग्रंथ शैली विज्ञान के नाम पर अब तक जो भ्रांत स्थापनाएँ की गई हैं और जो भी उद्भ्रांत आरोप–प्रत्यारोप किए गए हैं, उन सबका युक्तियुक्त खंडन करता है। साथ ही यह साहित्य–पाठों (Text) के अर्थ–गह्वर (Semantic Enclare) में प्रवेश कर सार्थकता और साभिप्रायता को उन्मीलित करने की दृष्टि से शैली वैज्ञानिक आलोचना को

महत्वपूर्ण और अपेक्षित मानता है। इस ग्रंथ में जो कुछ मौलिक रूप में मांसित है वह हिंदी, अँग्रेज़ी के अब तक के प्रकाशित किसी भी ग्रंथ में प्राप्त नहीं है।

यह ग्रंथ हिंदी आलोचना में पहली बार अपने गृहीत पाठों की अंतर्गर्भी सर्जनात्मक अर्थवत्ता का अवबोध कराता है। इससे पहले हिंदी आलोचना ऐसी सर्जनात्मक अर्थान्वेषिता तक नहीं पहुँच पाई थी। दूसरे, इससे पहले किसी भी शैलीविद् का शैलीविश्लेषण भी पाठकी साकल्यपरकता में अर्थ की गहनता, बहुस्तरीयता और बहुआयामिता को निरूपित नहीं कर पाया था। वह या तो खंड–खंड शैलीभापक्रमी पाखंड पर्व बनकर रह गया था या आत्मनिष्ठ उद्भ्रांत अर्थ व्याख्या भर बनकर निष्प्राण हो उठा था।

यह ग्रंथ शैली विज्ञान के सिद्धांत, सर्जनात्मक भाषा–बोध और प्रतिमानों के सम्यक ज्ञान के नजरिए से जितना पठनीय है, उतना ही कविताओं, उपन्यासों, कहानियों और नाटक के गहन अर्थान्वेषी बोध की दृष्टि से भावनीय और संग्रहणीय है। यह शैलीविज्ञान और सर्जनात्मक आलोचना के क्षेत्र में एक अप्रतिस्थापनीय, सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है। मैंने यह जो लिखा है वह सब फ्लैप पर उद्धृत है। वास्तविकता और अधिक पढ़ने पर ज्ञात हो सकेगी। केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा ने 2022 के अंक भाषाविज्ञान पर ही केंद्रित किए हैं। इसी प्रकार अन्य संस्थानों से निकलने वाली पत्रिकाओं ने भी भाषा एवं भाषाविज्ञान पर ही अपना अंक केंद्रित किया है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान की पत्रिका गवेषणा (अक्टूबर–दिसंबर 2022, अंक 130) में भाषा एवं भाषा विज्ञानपरक लेख इस प्रकार हैं। 'काशी का हिंदी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान काशी नागरी प्रचारिणी सभा के विशेष संदर्भ में' (राकेश कुमार दुबे); 'भाषा और संस्कृति का अंतरसंबंध' (साकेत सहाय); 'हिंदी पाठ पूर्व संसाधन (प्राकृतिक भाषा संसाधन के परिप्रेक्ष्य में)' (अंजना किशनपुरी, धीरेंद्रयादव, हर्षलता पटेकर); 'देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी के मानकरूप का विवेचनात्मक अध्ययन' (कृपाशंकर); 'विश्वभाषा की परिकल्पना' (सूर्यप्रसाद दीक्षित) 'बाजार की भाषा और भाषा का बाजारीकरण' 'हिंदी : विकास, विमर्श और प्रतिमानीकरण' (प्रभाकर सिंह); 'आस्ट्रेलिया में हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार' (रेखा राजवंशी); 'संप्रेषण की भाषा के रूप में हिंदी का शिक्षण : दिशाएँ एवं संभावनाएँ' (जी. गोपीनाथन) भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन और हिंदी भाषा शिक्षण' (रमेशचंद्र) और भारत की राष्ट्रभारती हिंदी : सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संप्रेषणपरक भूमिकाएँ' (दिलीप सिंह) इन सभी संदर्भों के अतिरिक्त ऐसे अन्य अनेक विद्वान, भाषा वैज्ञानिक इस दिशा में कार्यरत हैं। इनमें से प्रमुख हैं– प्रो. राम किशोर शर्मा (प्रयागराज) प्रो. चितरंजन कर (रायपुर); प्रो. नरेश मिश्र (रोहतक) प्रो. रामबख्श मिश्र (वाराणसी) प्रो. राजनाथ भट्ट (वाराणसी) डॉ. चतुर्भुज सहाय (आगरा), प्रो. सुरेश कुमार (दिल्ली); प्रो. कृष्ण चंद दुबे (वाराणसी) डॉ. अभिनव कृष्ण मिश्र

(वाराणसी) डॉ. उषा सिन्हा (लखनऊ) एवं डॉ. सुरूचि मिश्र (बिलासपुर) आदि प्रमुख हैं। भाषा एवं भाषा विज्ञान के चिंतन में लगे हुए इन विद्वानों का कुछ न कुछ प्रकाशन होता ही रहता है।

यद्यपि यह कहना एक कटु सत्य होगा कि इस दिशा में कार्य करने वाले विद्वानों की संख्या एवं गुणवत्ता में कमी आती जा रही है। इतना होते हुए भी भारत में भाषा एवं भाषा विज्ञान के चिंतन का भविष्य सुंदर होगा, ऐसा मेरा अपना विश्वास है।

❑❑❑



संपर्क सूत्र

1. कविता कर्मकार द्वारा धनौधर कर्मकार, सेपोन (सेपन उच्च माध्यमिक विद्यालय के पास) जिला– शिबसागर, पो.–सिपोन, असम–785673

   फोन– 9854541188, ई मेल– karmakarkavita@gmail.com

   Kavita Karmakar, C/o Dhanudhar Karmakar, Sepon (Near Sepon Higher Secondary School) Dist :- Sibsagar, Sepon, Assam-785673

2. डॉ. अरुण होता, 2 एफ, धर्मतल्ला रोड, क़स्बा, कोलकाता, 700042

   फोन– 9434884339, ई मेल–ahota5@gmail.com

   Arun Hota, 2F, Dharmatalla Road, Kasba, Kolkata-700042

3. डॉ. जुबैदा एच. मुल्ला, बैथुल हाशमी, मकान नं.–152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक–580031

   फोन–9845231816, ई मेल– zubeda.h.mulla@gmail.com

   Zubeda H Mulla, Baithul Hashmi, House No-152, Tajnagar, Hubli, Dharwad, Karnataka-580079

4. डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रभुप्रिया, 39, III लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बैंगलुरू–560079

   फोन–9880781278, ई मेल–tgprabhashankar@yahoo.com

   T.G. Prabhashankar 'Premi', Prabhupriya, 39, III lane, III block, III stage, Baseshwar Nagar, Bengaluru-560079

5. डॉ. महाराजकृष्ण भरत, शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली ब्राह्मणा, मुट्ठी, जम्मू–181205

   फोन–9419113462, ई मेल–profmaharajkrishen@gmail.com

   Maharaj krishna Bharat, Sharda Colony, Vidyadhar Nivas, Patoli Brahmana, Mutthi, Jammu-181205

6. डॉ. चंद्रलेखा डिसौजा, 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को–द–गामा, गोवा–403802

   फोन–9823258550, ई मेल–chanda.dsouza@gmail.com

   Chandralekha D'souza, 4, Shashisadan, first floor, Mandavel, Vasco-Di-gama, Goa-403802

7. हरीश मंगलम, प्रकंप, 7 दुर्गा कृपा सोसायटी, नियर कीर्तिधाम तीर्थ, चाँदख़ेडा, अहमदाबाद–382424

   फोन–9408229253, ई मेल–prakamp1979@yahoo.com

   Harish Mangalam, Prakamp, 7, Durga krupa Society, Near Kirtidham Teertha, chandkheda, Ahmedabad-382424

8. डी. एम. भद्रेसरिया, ए/22, सोना पार्क शॉपिंग, द्वारा पब्लिकेशंस, नियर स्नेह प्लाजा क्रॉस रोड, आई. ओ. सी. रोड चाँदखेड़ा, अहमदाबाद–382424

   फोन–9924721659, ई मेल–dmforagc@gmail.com

   Dinu Bhadresariya, A/22, Sona park shopping C/o publications, Near Sneh plaza cross road, I.O.C Road, Chandkheda-382424

9. श्री ओम गोस्वामी, 181, पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मूतवी (जम्मू)–180001

   फोन– 9419203453, ई मेल–om_goswami47@gmail.com

   Om Goswami, 181, Pahariya street, Jammutavi, Jammu-180001

10. डॉ. पी. राजरत्नम, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, तमिलनाडु, थिरुवारुर, नीलाकुडी, तमिलनाडु–610005

    फोन–9486067330, ई मेल– rajaretnampdkt@gmail.com

    P. Rajaratnam, Dept. of Hindi, Central University of Tamilnadu, Thiruvarur, Neelakudi, Tamilnadu-610005

11. डॉ. जी. मोहन राव, 3–97, सारीपल्ली गाँव, पेंडुरथी मंडल विशाखापत्तनम, आंध्रप्रदेश–531173

    फोन–8555022835, ई मेल–gmohan2930@gmail.com

    G. Mohan Rao, 3-97, Saripalli Village, Pendurathi Mandal, Visakhapattanam, Andhra Pradesh-531173

12. श्री ज्ञानबहादुर छेत्री, चानमारी, तेजपुर (गुवाहाटी)– 784001

फोन–9435084499, ई मेल–gyanbahadurkshetri@gmail.com

Gyanbahadur Chhetri, Chanmari, Tejpur, Guwahati-784001

13. प्रो. फूलचंद मानव, साहित्य संगम 239, दशमेश एनक्लेव, ढकौली (जीरकपुर के पास), चंडीगढ़, पंजाब–140603

फोन–9316001549, ई मेल–phulchandmanav@gmail.com

Phulchand Manav, Sahitya Sangam, 239, Dashmesh Enclave, Dhakouli (Near Jirakpur), Chandigarh, Punjab-140603

14. डॉ. सुब्रत लाहिड़ी, 63–ए, साउथ सिंथी रोड़, कोलकाता–700030

फोन–9830391409, ई मेल–lahirisubrat98@gmail.com

Subrata Lahiri, 63A, South Sinthi Road, Kalkata-700030

15. प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी, बोडो विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, कामरुप (मेट्रो), असम–781014

फोन–9435144323, ई मेल–swarna@gauhati.ac.in

Swarnaprabha Chainari, Deptt. of Bodo, Guwahati University, Kamrup Metro Assam-781014

16. डॉ. हजारीमयुम सुवदनी देवी, वांखै, थांगपात, मपाल, इंफाल–795001

फोन–0385–2444943, 9774452826, ई मेल–hsubadani.devi@gmail.com

Hajarimayum Suvadani Devi, Wankhe, Thangpaat, Mapal, Imphal-795001

17. डॉ. सुवर्णा अशोक जाधव, हंसमणी सोसायटी, प्लाट नं.–22, सर्वे नंबर, 132/ए, दांडेकर ब्रिज (पेट्रोल पंप के पीछे), सिंहगढ़ रोड, पुणे, महाराष्ट्र–411030

फोन–9819626647, ई मेल–goldanj@gmail.com

Suvarna Ashok Jadhav, Hansmani Society, Plot No. 22, Survey No., 132/A, Dandekar Bridge (Behind Petrol Pump), Singhgarh Road, Pune, Maharashtra-411030

18. डॉ. बी. अशोक, 'साकेत' दर्शन नगर, 225, कुडप्पनक्कुन्नु, पी.ओ त्रिवेन्द्रम, केरल–695043

फोन–9496253860, ई मेल–asoksaketh16@gmail.com

Ashok B. 'Saket', Darsha Nagar, 225, Kudappanakunnu, p.o-Thiruvananthapuram, Kerala-695043

19. श्री वैद्यनाथ झा, मकान नं.–405, बी–ब्लॉक, हुडा सिटी सेक्टर–56, गुरुग्राम, हरियाणा–122011

    फोन–9582221968, ई मेल–vaidyanath1949@gmail.com

20. प्रोफेसर रवि प्रकाश टेकचंदानी, प्रोफेसर, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007

    फोन–9540079735, ई मेल–ravitekchandanidu@gmail.com

21. कुमार वीरेंद्र, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज–211002

    फोन–9955971358, ई मेल–kumarbirendra496@gmail.com

22. डा. तरसेम गुजराल, 444ए, राजा गॉर्डन पोस्ट ऑफिस बस्ती बावाखेल, जालंधर, पंजाब–144002

    फोन– 9463632855, ई मेल–gujraltarsem@gmail.com

23. प्रोफेसर अवध किशोर प्रसाद द्वारा श्री कुमार राकेश ग्रीन फिल्ड स्कूल, ए–2 ब्लॉक, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली–110029

    फोन–9999191008, ई मेल–akpdkundhur1940@gmail.com

24. कृष्ण कुमार 'कनक', कनक–निकुँज, ठार मुरली नगर, गुँदाऊ लाइन पार, फिरोजाबाद, उत्तरप्रदेश–283203

    फोन–7017646795, 9259648428, ई मेल–kanakkavya@gmail.com

25. रोहिताश्व कुमार अस्थाना, निकट बावन चुंगी चौराहा, 802, आलु थोक उत्तरी हरदोई, उत्तरप्रदेश–241001

    फोन–7607983984, 05852–232392, ई मेल–asthanasandesh@gmail.co

26. प्रो. शंभु गुप्त, 21, सुभाष नगर, एन. ई. बी. अग्रसेन सर्किल के पास, अलवर, राजस्थान–310001

    फोन–8600552663, ई मेल–shambhugupt@gmail.com

27. डॉ. राम प्रवेश राय, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म मास कॉम्यूनिकेशन एंड न्यू मीडिया, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, कैंपस–1, नियर एच. पी. सी. ए. क्रिकेट स्टेडियम, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश–176215

    फोन–8894562222, ई मेल–rprai1981@hpcu.ac.in

28. राकेश कुमार सिंह, डी–750 गली नंबर–4, अशोकनगर, शाहदरा, दिल्ली–110093

    फोन–8434482099, ई मेल–rk.singh3180@gmail.com

29. डॉ. सुरेंद्र विक्रम, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज, (लखनऊ विश्वविद्यालय) आवास–सी–1245, एम. आई. जी. राजाजीपुरम, लखनऊ, उत्तर प्रदेश–226017

    फोन–8960285470, ई मेल–vikram.surendra7@gmail.com

30. डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, 56, अशोक नगर, आधार तल, जबलपुर, मध्यप्रदेश–482004

    फोन–9425044685, ई मेल–tnshukla13@gmail.com

❑❑❑

पंजी संख्या. 10646/61
ISSN 0523-1418

भाषा (दवैमासिक)
BHASHA-BIMONTHLY
पी. ई. डी. 3053-2023
700



वार्षिकी 2022

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–110066
दूरभाषः– 011–20862356
एक्सटेंशन– 253/213/217
bhashaunit@gmail.com
www.chd.education.gov.in
www.chdpublication.education.gov.in